



श्रीभगवत्-पुष्पदन्त-भूतचलि-प्रणीतः

# षट्खंडागमः

श्रीवीरसेनाचार्य-विरचित-धवला-टीका-समन्वितः ।

तस्य तृतीय खण्डः

## बन्ध-स्वामित्व-विचयः

हिन्दीभाषानुवाद तुलनात्मकटिप्पण-प्रस्तावनानेकपरिशिष्टे सम्पादित

सम्पादक

नागपुरस्थ-नागपुरगद्दाबिद्यालय-संस्कृताध्यापक एम् ए, एल् एल् ग्री, डी लिट् इत्युपाधिधारी

हीरालालो जैनः

सहसम्पादक

बालचन्द्र सिद्धान्तशास्त्री

सशोधने सहायकी

न्या. बा, सा सू, प देवकीनन्दन

सिद्धान्तशास्त्री

डा नेमिनाथ-त्तनय-आदिनाथ

उपाध्याय, एम् ए, डी लिट

प्रकाशक

श्रीमन्त शेट शिंतायराय लक्ष्मीचन्द्र

जैन-साहित्योद्धारक-फड कार्यालय

अमरावती ( बरार )

वि.स. २००४ )

वीर निर्माण-सन् २४७३

( ई.स. १९४७

मूल्य रूप्यरु-दशकम्

प्रकाशक—

श्रीमन्त श्रेष्ठ मितारणाय लक्ष्मीचन्द्र,  
जैन साहित्योद्धारक-फंड-कार्यालय  
अमरावती ( बरार )



मुद्रक—

टी. एम्. पाटील  
मैनेजर  
सरस्वती प्रिंटिंग प्रेस, अमरावती

THE  
**ṢAṬKHAṆḌĀGAMA**

OF  
PUSPADANTA AND BHŪTABALI  
WITH  
THE COMMENTARY DHAVALĀ OF VĪRASENA

---

VOL. VIII  
**BANDHA-SWĀMITVA-VICAYA**

*Edited*  
*with introduction, translation, indexes and notes*  
BY

Dr HIRALAL JAIN, M A, LL B, D Litt,  
C P Educational Service, Nagpur-Mahavidyalaya, Nagpur

---

ASSISTED BY

Pandit Balchandra Siddhānta Shāstrī

*with the cooperation of*

Pandit DEVAKINANDAN  
Siddhānta Shāstrī

\*

Dr A N UPADHYE  
M A, D LITT

*Published by*

Shrimant Sesh Shitabrai Laxmichandra,  
Jana Sāhitya Uddhārakā Fund Kāryālaya,  
AMRAOTI ( Berar )

---

1947.

Price rupees ten only.

---



*Published by—*

Shrimant Seth Shitabrai Laxmichandra,  
Jaina Sahitya Uddharaka Fund Karyalaya  
AMRAOTI [ Berar ]



*Printed by—*

T M Patil, Manager,  
Saraswati Printing Press,  
AMRAOTI ( Berar )

# विषय-सूची

	पृष्ठ
१ प्राक्कथन	१
१ प्रस्तावना	
_Introduction	
१ विषय-परिचय	१
२ बन्ध-स्वामित्व-विचयकी विषय सूची	-९
३ शुद्धि-पत्र	१७
२	
मूल, अनुवाद और टिप्पण बन्ध-स्वामित्व-विचय	१-३९८
१ ओषधी अपेक्षा व प्रस्वामित्व	१
२ आदेशकी " "	९३
३	
परिशिष्ट	
१ बन्ध-स्वामित्व-विचय-सूत्रपाठ	१
२ अत्रतरण-गाथा-सूची	२१
३ न्यायोक्तियाँ	"
४ ग्रन्थोल्लेख	... २२
५ पारिभाषिक शब्द-सूची	... .. "

## प्राक्-कथन



षट्खण्डागम सातवें भाग गुरदास जीके प्रकाशित होनेके दो वर्ष पश्चात् यह आठवां भाग बन्धस्वामि जीके विचय पाठशालाके हाथ पहुच रहा है । इस भागके साथ षट्खण्डागमके प्रथम तीन खण्ड पूर्णतः निद्वन्द्वसारके समुच्च उपस्थित हो गये । कागज, मुद्रण व व्यवस्थादि सम्बन्धी अनेक कठिनाइयों व असुविधाओंके होते हुए भी यह कार्य गतिशील बना ही रहा है, इसका श्रेय ग्रन्थमालाके सस्थापक श्रीमत् सेठजी व अय अधिकाारी, मेरे सहयोगी प वाडचन्द्रजी शास्त्री तथा सरस्वती प्रेसके मैनेजर श्रीयुत टी एम् पाटीलको है जो इस कार्यको विशेष रुचि और अपनत्वके साथ निगाहते जा रहे हैं । इन सभका मैं हृदयसे अनुगृहीत हू । उर्हींके सहयोगके बलपर आगेका कार्य भी समुचित रूपसे चलता रहेगा, ऐसी आशा है । नवें भागका मुद्रण प्रारम्भ हो गया है ।

**प्रस्तावना**

## INTRODUCTION.

---

The present volume contains the complete third part (khanda) of the Satkhandāgama. It is called Bandha sāmīttavīcaya which means 'Quest of those who bind the Karmas'. Out of the 148 varieties of Karmas, it is only 120 that are capable of being produced directly by the soul. The author of the Sūtras has mentioned, in the form of questions and answers, the spiritual stages (Gunasthānas) and the detailed conditions of life and existence (Mārganāsthānas) in which specified Karmas may be forged. Forty-two Sūtras are devoted to the Gunasthāna treatment and the rest 282 to the Mārganāsthāna. The commentator has enlarged the scope of the treatment of the subject by raising twenty-three questions and answering them in relation to all the Karmas. In this way, good many details about the Karma Siddhānta have been exposed, and the whole work is very important for a thorough study of Jaina Philosophy.

---

## विषय-परिचय

इस खण्डका नाम घन्धस्वामित्व-विचय है, जिसका अर्थ है बंधके स्वामित्वका विचय अर्थात् विचाणा, मीमासा या परीक्षा। तदनुसार यदा यह विवेचन किया गया है कि कौनसा कर्मबन्ध किम किम गुणस्थानमें व मार्गणास्थानमें सम्भव है। इस खण्डकी उत्पत्ति इस प्रकार बतलाई गई है —

कृति आदि चौबीस अनुयोगद्वारोंमें उठवें अनुयोगद्वारका नाम बन्धन है। बंधनके चार भेद हैं—ग्रन्ध, बन्धक, बन्धनीय और बन्धविग्रह। ग्रन्धविग्रह चार प्रकारका है—प्रकृति, स्थिति, अनुभाग और प्रदेश। इनमें प्रकृतिग्रन्ध दो प्रकारका है—मूळ प्रकृतिबन्ध और उत्तर प्रकृतिबन्ध। सत्प्ररूपणा पृष्ठ १२७ के अनुसार उत्तर प्रकृतिबन्ध भी दो प्रकारका है, एकैकोत्तरप्रकृतिबन्ध और अब्धोगादुत्तरप्रकृतिबन्ध। एकैकोत्तरप्रकृतिबन्धके समुत्कीर्तनादि चौबीस अनुयोगद्वार हैं जिनमें बारहवा अनुयोगद्वार घन्धस्वामित्व विचय है।

इस खण्डमें ३२४ सूत्र हैं। प्रथम ४२ सूत्रोंमें शेष अर्थात् केवल गुणस्थानानुसार प्ररूपण है, और शेष सूत्रोंमें आदेश अर्थात् मार्गणानुसार गुणस्थानोंका प्ररूपण किया गया है। सूत्रोंमें प्रश्नोत्तर क्रमसे केवल यह बतजाया गया है कि कौन कौन प्रकृतिया किन किन गुणस्थानोंमें बन्धको प्राप्त होती हैं। किन्तु धनञ्जकारने सूत्रोंको देशामर्शक मानकर बन्धव्युच्छेद आदि सम्बन्धी त्रेयीस प्रश्न और उठाये हैं और उनका समाधान करके बन्धोदयव्युच्छेद, श्लोदय-परोदय, सान्तर-निरन्तर, सप्रलय अप्रयय, गति-सयोग व गति-स्वामित्व, बन्धाध्वान, बन्ध-व्युच्छित्तिस्थान, सादि-अनादि व ध्रुव अद्रुव बन्धोंकी व्यवस्थाका स्पष्टीकरण कर दिया है, जिसमें विषय सार्वांगपूर्ण प्ररूपित हो गया है। इस प्ररूपणाकी कुछ विशेष व्यवस्थायें इस प्रकार हैं—

सान्तरबन्धी—एक समय बंधकर द्वितीय समयमें जिनका बन्ध निश्चान्त हो जाता है वे सान्तरबन्धी प्रकृतिया हैं। ये ३४ हैं—असातावेदनीय, खीवेद, नपुसकवेद, अरति, शोरु, गरुगति, एकैन्द्रियादि ४ जाति, समचतुरस्रसस्थानको छोड़ शेष ५ सस्थान, वज्रर्षभनाराच-सहननको छोड़ शेष ५ सहनन, नररुगयानुपूर्वी, आताप, उद्योत, अप्रशस्तविहायोगति, स्थानर, सूक्ष्म, अपर्याप्त, साधारणशरीर, अस्थिर, अशुभ, दुर्मग, दुस्वर, अनादेय और अयशकीर्ति।

निरन्तरवन्धी— जो प्रकृतियां जघन्यसे भी अतर्मुहने काठ तक निरन्तर रूपसे बधनी हैं वे निरन्तरवन्धी हैं। वे ५४ हैं— ध्रुववन्धी ४७ (देखिये पृ ३), आयु ४, तीर्थर, आहारकशरीर और आहारकशरीरगोपग।

सान्तरनिरन्तरवन्धी— जो जघन्यसे एक समय और उत्तरगत एक समयसे लेकर अतर्मुहनेके आगे भी बधनी रहती हैं वे सांतरनिरन्तरवन्धी प्रकृतियां हैं। वे ३२ हैं— सातावेदनाय, पुरुषवेद, हास्य, रति, निर्धगति, मनुष्यगति, देवगति, पचेन्द्रिय जानि, औदारिकशरीर, वैक्रियिकशरीर, समचतुरस्रस्थान, औदारिकशरीरगोपग, वैक्रियिकशरीरगोपग, बर्जर्म-स्हन, तिर्थगलानुपूर्वी, मनुष्यगलानुपूर्वी, देवगलानुपूर्वी, परमात, उद्गास, प्रशस्तविद्यायोगति, प्रस, वादर, पयाप्त, प्रदेवशरीर, स्थिर, शुभ, सुभग, सुस्वर, आदेय, यशकीर्ति, नीचगोत्र और ऊचगोत्र।

गतिसयुक्त— प्रश्नके उत्तरमें यह प्रकृतियां प्रकृतियां प्रकृतियोंके साथ चार गतियोंमें कौनसा गतियोंका बध होता है। जैसे— मिथ्यादृष्टि जीव ५ ज्ञानारणको चारों गतियोंके साथ, उच्चगोत्रको मनुष्य व देवगतिके साथ, तथा यशकीर्तिके नरत्त्वानिके बिना शेष ३ गतियोंसे सयुक्त बधना है।

गतिस्वामित्वमें विरक्षित प्रकृतियोंको बाधनेवाले कौन कौनसी गतियोंके जीव हैं, यह प्रकृतित्व किया गया है। जैसे— ५ ज्ञानारणको मिथ्यादृष्टिसे अमयत गुणस्थान तक चारों गतियोंके, सयतासयत तिर्थव व मनुष्य गतिके, तथा प्रमचादि उपरिम गुणस्थानवर्ती मनुष्यगतिके ही जीव बाधने हैं।

अध्यानमें विरक्षित प्रकृतिका बध किस गुणस्थानमें किम गुणस्थान तक होता है, यह प्रकृतित्व किया गया है। जैसे— ५ ज्ञानारणका बध मिथ्यादृष्टिसे लेकर सूक्ष्मसांप्रदाय गुणस्थान तक होता है।

सादि बध— विरक्षित प्रकृतिके बधको एक नर व्युच्छेद हो जानेपर जो उपशमश्रेणीसे भ्रष्ट हुए जीवके पुन उत्तमा बध प्रारम्भ हो जाता है वह सादि बध है। जैसे— उपशात बधाय गुणस्थानसे भ्रष्ट होकर सूक्ष्मसांप्रदाय गुणस्थानको प्राप्त हुए जीवके ५ ज्ञानारणका बध।

अनादि बध— विरक्षित कर्मके बधके व्युच्छिन्नस्थानको नहीं प्राप्त हुए जीवके जो उत्तमा बध होता है वह अनादि बध कहते हैं। जैसे— अपने बन्धव्युच्छिन्न स्थान तक सूक्ष्मसांप्रदाय गुणस्थानको प्राप्त हुए जीवके ५ ज्ञानारणका बध।

पुत्र बन्ध—अभिव्य जीवोंके जो ध्रुवबन्धी प्रकृतियोंका बन्ध होता है वह अनादि-अनन्त होनेसे ध्रुव बन्ध कहलाता है ।

ध्रुवबन्धी प्रकृतिया ४७ हैं— ५ ज्ञानारण, ९ दर्शनारण, मिथ्यात्व, १६ कषाय, मय, जुगुप्सा, तैजस व कार्मण शरीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुत्त्व, उपघात, निर्माण और ५ अतराय ।

अध्रुव बन्ध— मय जीवोंके जो कर्मय होता है वह विनश्वर होनेसे अध्रुव बन्ध है ।

अध्रुवबन्धी प्रकृतियों—ध्रुवबन्धी प्रकृतियोंसे शेष ७३ प्रकृतिया अध्रुवबन्धी हैं ।

इनमें ध्रुवबन्धी प्रकृतियोंका सादि, अनादि, ध्रुव और अध्रुव चारों प्रकार तथा शेष प्रकृतियोंका सादि व अध्रुव बन्ध ही होता है ।

उक्त व्यवस्थायें यथासम्भव आगेकी तालिकाओंमें स्पष्ट की गई हैं—

### बन्धोदय-तालिका

संख्या	प्रकृति	स्वोन्मयबन्धी आदि	सान्तरबन्धी आदि	बन्ध किस गुणस्थानसे किस गुणस्थान तक	उदय किस गुणस्थानसे किस गुणस्थान तक	पृष्ठ
१-५	ज्ञानारण ५	स्वो- बन्धी	निरन्तरबन्धी	१-१०	१-१२	७
६-९	चक्षुदर्शनारणादि ४	"	"	"	"	"
१०-११	निद्रा, प्रचञ्छा	स्व-परो	"	१-८	"	३५
१२-१४	निद्रानिद्रादि ३	"	"	१-२	१-६	३०
१५	सातापेदनीय	"	सा निर	१-१३	१-१४	३८
१६	असातापेदनीय	"	सान्तरबन्धी	१-६	"	४०
१७	मिथ्यात्व	स्वो	नि	१	१	४२
१८-२१	अनन्तानुबन्धी ४	स्व-परो	"	१-२	१-२	३०
२२-२५	अप्रत्यारयानारण ४	"	"	१-४	१-४	४६
२६-२९	प्रत्यारयानारण ४	"	"	१-५	१-५	५०
३०-३२	सम्बलनक्रोधादि ३	"	"	१-९	१-९	५२, ५५
३३	सम्बलनछोम	"	"	"	१-१०	५८



सख्या	महति	स्वोदयवर्धी भादि	सात्तरवर्धी भादि	बन्ध क्रिम गुणस्थानते क्रिम गुणस्थान तक	उदय क्रिम गुणस्थानते क्रिम गुणस्थान तक	पृष्ठ
३४ ३५	हास्य, रति	स्व-परो	सा निर	१-८	१-८	९५
३६ ३७	भरति, शोक	"	सा	१-६	"	४०
३८ ३९	मय, जुगुप्सा	"	नि	१-८	"	५९
४०	नपुसम्भेद	"	सा	१	१-९	४२
४१	स्त्रीभेद	"	"	१-२	"	३०
४२	पुरुषभेद	"	सा नि	१-९	"	५२
४३	नारकायु	परो	नि	१	१-४	४२
४४	तिर्यगायु	स्व-परो	"	१-२	१-५	३०
४५	मनुष्यायु	"	"	१, २, ४	१-१४	६१
४६	देवायु	परो	"	१-७ (३सो छोड)	१-४	६४
४७	नरकगति	"	सा	१	"	४२
४८	तिर्यगगति	स्व परो	सा नि	१-२	१-५	३०
४९	मनुष्यगति	"	"	१-४	१-१४	४६
५०	देवगति	परो	"	१-८	१-४	६६
५१ ५४	एकेन्द्रियादि ४ जाति	स्व-परो	सा	१	१	४२
५५	पचेन्द्रिय जाति	"	सा नि	१-८	१-१४	६६
५६	औदारिकशरीर	"	"	१-८	१-१४	६६
५७	वैक्रियिकशरीर	परो	"	१-४	१-१३	४६
५८	आहारकशरीर	"	नि	१-८	१-४	६६
५९	तैजसशरीर	स्वो	"	७-८	६	७१
६०	कार्मणशरीर	"	"	१-८	१-१३	६६
६१	औदारिकअगोपांग	स्व परो	"	"	"	"
६२	वैक्रियिकअगोपांग	परो	सा नि	१-४	"	४६
६३	आहारकअगोपांग	"	नि	१-८	१-४	६६
				७-८	६	

६४	निर्माण	स्वो	नि	१-८	१-१३	६६
६५	समचतुरस्रसंस्थान	स्व-परो	सा नि	"	"	"
६६	न्यग्रोधपरिमण्डलसंस्थान	"	सा	१-२	"	३०
६७	स्वातिसंस्थान	"	"	"	"	"
६८	कुन्जकसंस्थान	स्व-परो	सा	१-२	१-१३	३०
६९	वामनसंस्थान	"	"	"	"	"
७०	हुण्डकसंस्थान	"	"	१	"	४२
७१	वज्रवृषभनाराचसंज्ञन	"	सा नि	१-४	"	४६
७२	वज्रनाराचसंज्ञन	"	सा	१-२	१-११	३०
७३	नाराचसंज्ञन	"	"	"	"	"
७४	अर्धनाराचसंज्ञन	"	"	"	"	"
७५	कीलिनसंज्ञन	"	"	"	१-७	"
७६	असंप्राप्तसृपाटिकासंज्ञन	"	"	"	"	"
७७	स्पर्श	स्वो	नि	१	"	४२
७८	रस	"	"	१-८	१-१३	६६
७९	गन्ध	"	"	"	"	"
८०	वर्ण	"	"	"	"	"
८१	नरकगत्यानुपूर्वी	परो	सा	"	"	"
८२	निर्यग्गत्यानुपूर्वी	स्व-परो	सा नि	१	१, २, ४	४२
८३	मनुष्यगत्यानुपूर्वी	"	"	१-२	"	३०
८४	देवगत्यानुपूर्वी	परो	"	१-४	"	४६
८५	अगुरुलघु	स्वो	नि	१-८	"	६६
८६	उपघात	स्व-परो	"	"	१-१३	"
८७	परघात	"	सा नि	"	"	"
८८	आताप	"	सा	"	"	"
८९	उद्योत	"	"	१	१	४२
९०	उच्छ्वास	"	"	१-२	१-५	१०
९१	प्रशस्तविद्यायोगि	"	सा नि	१-८	१-१३	६६
		"	"	"	"	"

संख्या	प्रकृति	स्त्रीद्वयवाची आदि	साभरवाची आदि	यद्य कित गुणस्थानसे किम गुणस्थान सक	उदय किम गुणस्थानसे किम गुणस्थान सक	पृष्ठ
९२	अप्रशस्तिविहायोगति	स्व-परो	सा	१-२	१-१३	३०
९३	प्रत्येकशरीर	"	सा नि	१-८	"	६६
९४	सागरशरीर	"	सा	१	१	४२-
९५	ब्रह्म	"	सा. नि	१-८	१-१४	६६
९६	स्थानर	"	सा.	१	१	४२
९७	सुभग	"	सा नि	१-८	१-१४	६६-
९८	दुर्भग	"	सा	१-२	१-४	३०
९९	सुस्वर	"	सा. नि	१-८	१-१३	६६
१००	दुस्वर	"	सा	१-२	"	३०
१०१	शुभ	स्वो	सा. नि	१-८	"	६६
१०२	अशुभ	"	सा	१-६	"	४०
१०३	बादर	स्व-परो	सा. नि	१-८	१-१४	६६
१०४	सूक्ष्म	"	सा	१	१	४२
१०५	पर्याप्त	"	सा नि	१-८	१-१४	६६
१०६	अपर्याप्त	"	सा	१	१	४२
१०७	स्थिर	स्वो	सा नि	१-८	१-१३	६६
१०८	अस्थिर	"	सा	१-६	"	४०
१०९	आदेय	स्व-परो	सा नि	१-८	१-१४	६६
११०	अनादेय	"	सा	१-२	१-४	३०
१११	यशकीर्ति	"	सा नि	१-१०	१-१४	७
११२	अयशकीर्ति	"	सा	१-६	१-४	४०
११३	तीर्थंकर	परो	नि	४-८	१३-१४	७३
११४	उच्चगोत्र	स्व परो	सा नि	१-१०	१-१४	७५
११५	नीचगोत्र	"	"	१-२	१-१	३०
	अन्तराय ५	स्वो	नि	१-१०	१-१२	७

प्रत्यय-तालिका ( पृ. १९-२४ )

गुणस्थान	मिथ्यात्व ५	अविरति १२	कषाय २५	योग १५	समस्त ५०
मिथ्यात्व	५	१२	२५	२३ आहारदिक्रमे रहित	५५
सासादन		"	"	"	९०
मिश्र		"	२१ अन-तानुगधिचतुष्कसे रहित	१० आ द्विक, औ मि, वै मि ष कार्मणसे रहित	४३
असयत		"	"	१३ आहारदिक्रसे रहित	४६
देशसयत		११ प्रसअस- यम रहित	१७ अप्रत्याख्यानचतुष्कसे रहित	९ आ द्विक, औ मि, वै द्वि ष कार्मणसे रहित	३७
प्रमत्त			१३ प्रत्याख्यानचतुष्कमे रहित	११ आहारदिक्रसे सहित उपर्युक्त	२४
अप्रमत्त			"	९ आहारदिक्रसे रहित उपर्युक्त	२२
अपूर्वकरण			"	"	"
अनिवृत्ति- करण भा १			७ नोरुपाय ६ से हीन	"	१६
भा २			६ नपुसकवेदसे हीन	"	१५

गुणस्थान	मिथ्यात्व ५	अविरति १२	कृपाप २५	योग १५	समस्त ५७
अनिवृत्ति- कारण भा ३			५ स्त्रीदसे हीन	९ आ द्विक, औ मि, वे द्वि व कार्मणसे रहित	१४
भा ४			४ पुरुपनेत्रसे हीन	"	१३
भा ५			३ सम्बन्धनकारसे हीन	"	१२
भा ६			२ सम्बन्धनमानसे हीन	"	११
भा ७			१ सम्बन्धनमायासे हीन	"	१०
सूक्ष्मसाध्य राय			"	"	"
उपशांत कथाय				"	"
धीनमोह				"	९
सयोग- केवटी				"	"
अयोग- केवटी				७ सय व अनुभय मन और वचन, औ द्विक, कार्मण	७

# विषय-सूची

क्रम न	विषय	पृष्ठ	क्रम न	विषय	पृष्ठ
१	ध्रुवलाकारका मगलाचरण	१	१४	ध्रुवराश्या प्रकृतियोंका निर्देश	१७
२	बन्ध स्वामित्व विचयका द्वा प्रकारसे निर्देश	"	१५	निरन्तरबन्ध और ध्रुवबन्धमें विशेषता	"
३	बन्ध स्वामित्व विचयका अथवा	२	१६	मूल और उत्तर प्रत्ययोंकी विस्तृत प्ररूपणा	१९
४	बन्ध व मोक्षका स्वरूप	३	१७	गनिसंयोगादिप्रियक प्रश्नोंका उत्तर	२८
५	बन्ध स्वामित्व विचयका निरुत्तरार्थ	"	१८	निद्रानिद्रादिक पञ्चास प्रकृतियोंके बन्धस्वामित्व आदिका विचार	३०
६	ओघसे बन्ध स्वामित्व विचयके चौदह जीवन्मासोंका निर्देश	४	१९	निद्रा और प्रचला प्रकृतिके बन्धस्वामित्व आदिका विचार	३१
७	चौदह गुणस्थानोंमें प्रकृतिबन्ध व्युत्प्रेक्षकी प्रतिष्ठा	५	२०	सातापेदनीयके बन्धस्वामित्व आदिका विचार	३८
८	व्युत्प्रेक्षके भेद और उनका निरूपणार्थ	"	२१	असातापेदनीय आदि छह प्रकृतियोंके बन्धस्वामित्व आदिका विचार	४०
	ओघकी अपेक्षा बन्धस्वामित्व	७-९२	२२	मिथ्यात्व आदि सोलह प्रकृतियोंके बन्धस्वामित्व आदिका विचार	४२
९	पाच ज्ञानावरणीय आदिके बन्धकोंकी प्ररूपणामें तेईस प्रश्नोंका उद्भावना	७	२३	अप्रत्याख्यानारणीय आदि नौ प्रकृतियोंके बन्धस्वामित्व आदिका विचार	४६
१०	प्रकृतियोंकी उदयव्युत्प्रेक्ष	९	२४	प्रत्याख्यानारणचतुष्कके बन्धस्वामित्व आदिका विचार	५०
११	प्रकृतियोंके बन्धोद्भवकी पूर्ण परता	११	२५	पुरुषवेद और सत्त्वजनकोषके बन्धस्वामित्व आदिका विचार	५२
१२	पाच ज्ञानावरणीयादिकोंने बन्धके स्वामी व उम्मेके व्युत्प्रेक्षस्थानकी प्ररूपणा करते हुए उन तेईस प्रश्नोंका उत्तर	१२	२६	सत्त्वजन मान और मायाके बन्धस्वामित्व आदिका विचार	५५
१३	सान्तर, निरन्तर और सान्तर निरन्तर रूपसे बन्धनेवाली प्रकृतियोंका निर्देश	१६			

क्रम न	विषय	पृष्ठ	क्रम न	विषय	पृष्ठ
२७	सज्जलन लोभके बन्धस्वामित्व आदिका विचार	५८	४१	तीर्थंकर प्रकृतिके स्वामित्वका विचार	१०३
२८	हास्य, रति, भय और जुगुप्साके बन्धस्वामित्व आदिका विचार	५९	४२	प्रथम तीन पृथिवीयोंमें बन्ध स्वामित्वका विचार	१०४
२९	मनुष्यायुके बन्धस्वामित्व आदिका विचार	६१	४३	चतुर्थ, पंचम और छठी पृथिवीमें बन्धस्वामित्व आदिका विचार	१०५
३०	देवायुके बन्धस्वामित्व आदिका विचार	६८	४४	सातवीं पृथिवीमें शानावरणीय आदिके बन्धस्वामित्वका विचार	"
३१	देवगति आदि सत्साहस प्रकृति योंके बन्धस्वामित्व आदिका विचार	६६	४५	सातवीं पृथिवीमें निद्रानिद्रा आदिके बन्धस्वामित्वका विचार	१०९
३२	आहारकशरीर और आहारक शरीरागोपागके बन्धस्वामित्व आदिका विचार	७१	४६	सातवीं पृथिवीमें मिथ्यात्व आदिके बन्धस्वामित्वका विचार	१११
३३	तीर्थंकर प्रकृतिके बन्धस्वामित्व आदिका विचार	७३		तिर्यग्गतिमें—	
३४	तीर्थंकर प्रकृतिके विशेष कारणोंकी आशंका	७६	४७	तिर्यंच, पचेन्द्रिय तिर्यंच, पचेन्द्रिय तिर्यंच पद्याप्त और पचेन्द्रिय तिर्यंच योजनमतिर्योमें शानावरणीय आदिके बन्ध स्वामित्वका विचार	११२
३५	तीर्थंकर प्रकृतिके बन्धके सोलह कारणोंकी प्ररूपणा	७८	४८	निद्रानिद्रा आदिके बन्ध स्वामित्वका विचार	११९
३६	तीर्थंकर प्रकृतिके उदयका माहात्म्य	९१	४९	मिथ्यात्व आदिके बन्ध स्वामित्वका विचार	१२३
	ओदेशकी अपेक्षा बन्धस्वामित्व गतिमार्गणा ९३-३९८		५०	अप्रत्याख्यानावरणचतुष्केके बन्ध स्वामित्वका विचार	१२५
३७	नरकगतिमें शानावरणीय आदिके बन्धस्वामित्वका विचार	९३	५१	देवायुके बन्धस्वामित्वका विचार	१२६
३८	निद्रानिद्रादिके बन्धस्वामित्वका विचार	९८	५२	पचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्तोंमें शानावरणीय आदिके बन्ध स्वामित्वका विचार	१२७
३९	मिथ्यात्व आदिके बन्धस्वामित्वका विचार	१०१		मनुष्यगतिमें—	
४०	मनुष्यायुके बन्धस्वामित्वका	१०२	५३	मनुष्य, मनुष्यपर्याप्त और मनुष्यनियोंमें ओषके समान बन्धस्वामित्वकी प्ररूपणा	१३

क्रम न	विषय	पृष्ठ क्रम न	विषय	पृष्ठ
५४	मनुष्य अपर्याप्तोंमें पचेन्द्रिय तिर्यच अपर्याप्तोंके समान बन्ध स्वामित्वकी प्ररूपणा	१३४	६६ मनुष्यायुके बन्धस्वामित्वका विचार	१५४
	देवगतिमें—		६७ तीर्थकर प्रकृतिके बन्ध स्वामित्वका विचार	"
५५	देवोंमें पाच ज्ञानावरणीय आदिके बन्धस्वामित्व आदिका विचार	१३७	६८ अनुदिशोंसे लेकर सर्वार्थसिद्धि तक पाच ज्ञानावरणीय आदिके बन्धस्वामित्वका विचार	१५५
५६	निद्रानिद्रा आदिके बन्ध स्वामित्वका विचार	१४१	इन्द्रियमार्गणा	
५७	मिथ्यात्व आदिके बन्ध स्वामित्वका विचार	१४३	६९ एकेन्द्रिय, बाहर, सूक्ष्म, पर्याप्त अपर्याप्त, विकलत्रय पर्याप्त अपर्याप्त, तथा पचेन्द्रिय अपर्याप्तोंमें पचेन्द्रिय तिर्यच अपर्याप्तोंके समान बन्धस्वामित्वकी प्ररूपणा	१५८
५८	मनुष्यायुके बन्धस्वामित्वका विचार	१४४	७० पचेन्द्रिय और पचेन्द्रिय पर्याप्तोंमें पाच ज्ञानावरणीय आदिके बन्ध स्वामित्वके विचारमें बन्धक आदि विषयक तर्कस प्रश्नोंके एक द्विसयोगादि भर्गोंकी प्ररूपणा	१७०
५९	तीर्थकर प्रकृतिके बन्धस्वामित्व आदिका विचार	१४५	७१ एक जीवोंमें निद्रानिद्रा आदिके बन्धस्वामित्वका विचार	१७४
६०	भवनवासी, वानव्यन्तर और ज्योतिषी देवोंमें कुछ विशेषताके साथ सामान्य देवोंके समान बन्धस्वामित्व आदिकी प्ररूपणा	१४६	७२ निद्रा और प्रचलके बन्ध स्वामित्वका विचार	१७७
६१	सौधर्म और इज्ञान कल्पवासी देवोंमें सामान्य देवोंके समान बन्धस्वामित्वकी प्ररूपणा	१४७	७३ सातापेदनीयके बन्धस्वामित्वका विचार	"
६२	सनत्कुमारसे लेकर सहस्रार कल्प तकके देवोंमें प्रथम पृथि वीस्थ नारकियोंके समान बन्ध स्वामित्वकी प्ररूपणा	१४८	७४ असातापेदनीय आदि छह प्रकृतियोंके बन्धस्वामित्वका विचार	१७८
६३	आनत कल्पसे लेकर नौ त्रैधेयक तक पाच ज्ञानावरणीय आदिके बन्धस्वामित्वका विचार	१४९	७५ मिथ्यात्व आदिके बन्धस्वामित्वका विचार	१८०
६४	निद्रानिद्रा आदिके बन्धस्वामित्वका विचार	१५२	७६ अप्रत्याख्यानावरणीय आदिके बन्धस्वामित्वका विचार	१८२
६५	मिथ्यात्व आदिके बन्ध स्वामित्वका विचार	१५३		



क्रम न	विषय	पृष्ठ क्रम न	विषय	पृष्ठ
७७	प्रत्याख्यानापरणचतुष्के बन्ध स्वामित्वका विचार	१८४	योगमार्गणा	
७८	पुरपवेद और सज्वलनत्रोयके बन्धस्वामित्वका विचार	"	८९ पाच मनोयोगी, पाच वचनयोगी और षाययोगी जीवोंमें सत्र प्रवृत्तियोंके बन्धस्वामित्वकी बोधके समान प्ररूपणा	२०१
७९	सज्वलन मान और मायाके बन्धस्वामित्वका विचार	१८५	९० उक्त जीवोंमें सातावेदनीय विषय यक बन्धस्वामित्वकी कुछ विशेषता	२०२
८०	सचलन लोभके बन्धस्वामित्वका विचार	"	९१ औदारिककाययोगियोंमें मनुष्य गतिके समान बन्धस्वामित्वकी प्ररूपणा	२०३
८१	हास्य, रति, भय और जुगुप्साके बन्धस्वामित्वका विचार	१८६	९२ उक्त जीवोंमें सातावेदनीयके बन्धस्वामित्वकी मनोयोगियोंके समान प्ररूपणा	२०५
८२	मनुष्यायुके बन्धस्वामित्वका विचार	"	९३ औदारिकमिश्रकाययोगियोंमें पाच घानावरणीय आदिके बन्ध स्वामित्वका विचार	"
८३	देवायुके बन्धस्वामित्वका विचार	१८७	९४ निद्रानिद्रा आदिके बन्ध स्वामित्वका विचार	२०९
८४	देवगति आदिके बन्धस्वामित्वका विचार	"	९५ सातावेदनीयके बन्धस्वामित्वका विचार	२१२
८५	आहारकशरीर और आहारक अगोपागके बन्धस्वामित्वका विचार	१९१	९६ मिथ्यात्व आदिके बन्धस्वामित्वका विचार	२१३
८६	तीर्थंकर प्रकृतिके बन्धस्वामित्वका विचार	"	९७ देवचतुष्के बन्धस्वामित्वका विचार	२१४
	कायमार्गणा		९८ वैभ्रियिककाययोगियोंमें देव गतिके समान बन्धस्वामित्वकी प्ररूपणा	२१५
८७	पृथिवीकायिक, जलकायिक, घनरूपिकायिक, निर्गोद जीव बादर सूक्ष्म पर्याप्त अपयाप्त तथा बादर घनरूपिकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्त अपयाप्तोंमें पंचेन्द्रिय तिर्यच अपयाप्तोंके समान बन्धस्वामित्वकी प्ररूपणा	१९२	९९ वैभ्रियिकमिश्रकाययोगियोंमें देव गतिके समान बन्धस्वामित्वकी प्ररूपणा	२२२
८८	तेजकायिक व वायुकायिक बादर सूक्ष्म पर्याप्त अपयाप्तोंमें कुछ विशेषताके साथ पंचेन्द्रिय तिर्यच अपयाप्तोंके समान बन्ध स्वामित्वकी प्ररूपणा	१९९	१०० उक्त जीवोंमें त्रियगायु और मनुष्यायुके व घाभावकी विशेषता	२२९

क्रम नं	विषय	पृष्ठ क्रम न	विषय	पृष्ठ
१०१	आहारक व आहारकमिश्र काय योगियोंमें पाच ज्ञानावरणीय आदिके बन्धस्वामित्वका विचार	२२०	११४ हास्य व रतिसे लेकर तीर्थकर प्रकृति तक ओघके समान प्ररूपणा	२५४
१०२	कार्मणकाययोगियामें पाच ज्ञानावरणीय आदिके बन्ध स्वामित्वका विचार	२३०	११५ जपगतप्रेदियोंमें पाच ज्ञानावरणीय आदिके बन्ध स्वामित्वका विचार	२६४
१०३	निद्रानिद्रा आदिके बन्ध स्वामित्वका विचार	२३७	११६ सातावेदनीयके बन्धस्वामित्वका विचार	२६५
१०४	सातावेदनीयके बन्धस्वामित्वका विचार	२३८	११७ सज्जलनक्रोधके बन्धस्वामित्वका विचार	२६६
१०५	मिथ्यात्र आदिके बन्ध स्वामित्वका विचार	२३९	११८ सज्जलन मान और मायाके बन्धस्वामित्वका विचार	२६७
१०६	देवगति आदिके बन्ध स्वामित्वका विचार	२४१	११९ सज्जलनलोभके बन्धस्वामित्वका विचार	२६८
वेदमार्गणा			कपायमार्गणा	
१०७	रुी, पुरुष और नपुंसकवेदियोंमें पाच ज्ञानावरणीय आदिके बन्धस्वामित्वका विचार	२४२	१२० क्रोधरुपायी जीवोंमें पाच ज्ञानावरणीय आदिके बन्धस्वामित्वका विचार	२६९
१०८	निद्रानिद्रा आदि द्विस्थानिक प्रकृतियोंके बन्धस्वामित्वकी ओघके समान प्ररूपणा	२४५	१२१ द्विस्थानिक प्रकृतियोंकी ओघके समान प्ररूपणा	२७२
१०९	निद्रा और प्रचलाकी ओघके समान प्ररूपणा	२४८	१२२ निद्रासे लेकर प्रत्याख्यानावरण चतुष्क तक ओघके समान प्ररूपणा	२७४
११०	असातावेदनीयकी ओघके समान प्ररूपणा	२४९	१२३ पुरुषवेदादिकी ओघके समान प्ररूपणा	२७५
१११	मिथ्यात्व आदिक एकस्थानिक प्रकृतियोंकी ओघके समान प्ररूपणा	"	१२४ हास्य व रतिसे लेकर तीर्थकर प्रकृति तक ओघके समान प्ररूपणा	"
११२	अप्रत्याख्यानावरणायकी ओघके समान प्ररूपणा	२५१	१२५ मानरुपायी जीवोंमें पाच ज्ञानावरणीय आदिके बन्ध स्वामित्वका विचार	"
११३	प्रत्याख्यानावरणायकी ओघके समान प्ररूपणा	२५४	१२६ द्विस्थानिक आदि प्रकृतियोंकी ओघके समान प्ररूपणा	२७६

क्रम न	विषय	पृष्ठ नम न	विषय	पृष्ठ
१२७	हास्यरति आदिकी ओघके समान प्ररूपणा	२७७	१४० मन पर्ययज्ञानियोंमें पाच ज्ञानावरणीय आदिके बंध स्वामित्वका विचार	२९५
१२८	मायाकपायी जायोंमें पाच ज्ञानावरणीय आदिके बंध स्वामित्वका विचार	"	१४१ निद्रा और प्रचलाके बन्ध स्वामित्वका विचार	"
१२९	द्विस्थानिक आदिकी ओघके समान प्ररूपणा	"	१४२ नातावेदनीयके बंधस्वामित्व का विचार	२९६
१३०	हास्यरति आदिकी ओघके समान प्ररूपणा	२७८	१४३ शेष प्रवृत्तियोंकी कुछ विशेषताके साथ ओघके समान प्ररूपणा	"
१३१	लोभकपायी जायोंमें पाच ज्ञानावरणीय आदिके बन्ध स्वामित्वका विचार	"	१४४ केवलज्ञानियोंमें सातावेदनीयके बंधस्वामित्वका विचार	२९७
१३२	शेष प्रवृत्तियोंकी ओघके समान प्ररूपणा	"	सयममार्गणा	
१३३	अकपायी जीवोंमें सातावेदनीयके बंधस्वामित्वका विचार	"	१४५ सयत जीवोंमें मन पर्ययज्ञानियोंके समान बंध स्वामित्वकी प्ररूपणा	२९८
	ज्ञानमार्गणा	"	१४६ सातावेदनीयके बन्धस्वामित्वमें कुछ विशेषता	"
१३४	मतिअज्ञानी, धृतअज्ञानी और विभगज्ञानियोंमें पाच ज्ञानावरणीय आदिके बंधस्वामित्वका विचार	२७९	१४७ सामायिक छेदोपस्थापनशुद्धिसयतोंमें पाच ज्ञानावरणीय आदिके बंधस्वामित्वका विचार	"
१३५	एकस्थानिक प्रवृत्तियोंकी ओघके समान प्ररूपणा	२८५	१४८ शेष प्रवृत्तियोंके बंध स्वामित्वकी मन पर्ययज्ञानियोंके समान प्ररूपणा	३००
१३६	आभिनिबोधिक, धृत और अवाधिज्ञानी जीवोंमें पाच ज्ञानावरणीय आदिके बंध स्वामित्वका विचार	२८६	१४९ परिहारशुद्धिसयतोंमें पाच ज्ञानावरणीय आदिके बन्ध स्वामित्वका विचार	३०३
१३७	निद्रा व प्रचलाकी ओघके समान प्ररूपणा	२८७	१५० असातावेदनीय आदिके बंध स्वामित्वका विचार	३०५
१३८	नातावेदनीयके बंधस्वामित्वका विचार	२८८	१५१ देवायुके बंधस्वामित्वका विचार	३०६
	शेष प्रवृत्तियोंकी ओघके समान प्ररूपणा	२८९	१५२ आहारशरीर और आहार शरीरगोपागके बंधस्वामित्वका विचार	३०७

क्रम न	विषय	पृष्ठ	क्रम न	विषय	पृष्ठ
१५३	सूक्ष्मसाम्परायिक सयतोंमें पाच ज्ञानावरणीय आदिके बन्धस्वामित्वका विचार	३०८	१६५	तेज और पद्मलेइयावालोंमें पाच ज्ञानावरणीय आदिके बन्धस्वामित्वका विचार	३३३
१५४	यथाख्यातविहारशुद्धिसयतोंमें सातावेदनीयके बन्धस्वामित्वका विचार	३०९	१६६	द्विस्थानिक प्रकृतियोंकी ओघके समान प्ररूपणा	३३७
१५५	सयतासयतामें पाच ज्ञानावरणीय आदिके बन्धस्वामित्वका विचार	३१०	१६७	असातावेदनीयकी ओघके समान प्ररूपणा	३३९
१५६	असयत जीवोंमें पाच ज्ञानावरणीय आदिके बन्धस्वामित्वका विचार	३१२	१६८	मिथ्यात्व आदिके बन्धस्वामित्वका विचार	३४०
१५७	द्विस्थानिक प्रकृतियोंकी ओघके समान प्ररूपणा	३१७	१६९	अप्रत्याख्यानावरणीयकी ओघके समान प्ररूपणा	३४१
१५८	एकस्थानिक प्रकृतियोंकी ओघके समान प्ररूपणा	"	१७०	प्रत्याख्यानावरणकी ओघके समान प्ररूपणा	३४३
१५९	मनुष्यायु और देवायुके बन्धस्वामित्वका विचार	"	१७१	मनुष्यायुकी ओघके समान प्ररूपणा	"
१६०	तीर्थंकर प्रकृतिके बन्धस्वामित्वका विचार	३१८	१७२	देवायुकी ओघके समान प्ररूपणा	३४४
	दर्शनमार्गणा		१७३	आहारकशरीर और आहारक शरीरागोपागके बन्धस्वामित्वका विचार	"
१६१	चक्षुदर्शनी और अचक्षुदर्शनी जीवोंमें ओघके समान बन्धस्वामित्वकी प्ररूपणा	"	१७४	तीर्थंकर प्रकृतिके बन्धस्वामित्वका विचार	३४५
१६२	सातावेदनीयके बन्धस्वामित्वमें कुछ विशेषता	३१९	१७५	पद्मलेइयावालोंमें मिथ्यात्व दण्डकी नारकियोंके समान प्ररूपणा	३४६
१६३	अवधिदर्शनी जीवोंमें अवाधि ज्ञानियों और केवलदर्शनी जीवोंमें केवलज्ञानियोंके समान बन्धस्वामित्वकी प्ररूपणा	"	१७६	शुक्ललेइयावालोंमें तीर्थंकर प्रकृति तक ओघके समान प्ररूपणा	"
	लेइयामार्गणा		१७७	उक्त जीवोंमें सातावेदनीयके बन्धस्वामित्वकी मनोयोगियोंके समान प्ररूपणा	३५६
१६४	कृष्ण, नील और कापोत लेइयावालोंमें असयतोंके समान बन्धस्वामित्वकी प्ररूपणा	३२०	१७८	द्विस्थानिक और एकस्थानिक प्रकृतियोंकी नवप्रवेयकविमानवासी देवोंके समान प्ररूपणा	"

क्रम न	विषय	पृष्ठ क्रम न	विषय	पृष्ठ
	भयमार्गणा			
१७०	भय जीर्णोंमें ओषधके समान बन्धस्वामित्वकी प्ररूपणा	३५८	१९१ साताघेदनीयके बन्धस्वामित्वका विचार	३७५
१८०	अभय जीर्णोंमें पाच पाना वरणीय आदिके वध स्वामित्वका विचार	४५९	१९२ असाताघेदनीय आदिके बन्धस्वामित्वका विचार	३७६
	सम्यक्तत्वमार्गणा			
१८१	सम्यग्दृष्टि और क्षायित्वसम्य ग्दृष्टि जीर्णोंमें आमिनियाधि शानियोंके समान वध स्वामित्वकी प्ररूपणा	३६३	१९३ अत्र याग्यानावरणीयकी अधिशानियोंके समान प्ररूपणा	"
१८२	साताघेदनीयके बन्धस्वामित्वमें कुछ विशयता	३६४	१९४ उक्त जीर्णोंमें आयुके बन्धका जमाव	३७७
१८३	वेदसम्यग्दृष्टियोंमें पाच पानावरणीय आदिके बन्ध स्वामित्वका विचार	"	१९५ प्रत्याख्यानावरणचतुष्टये बन्ध स्वामित्वका विचार	"
१८४	असाताघेदनीय आदिके बन्ध स्वामित्वका विचार	३६७	१९६ पुण्यवेद और सज्जलान्त्रोषधके बन्धस्वामित्वका विचार	"
१८५	अप्रत्याख्यानावरणाय आदिके बन्धस्वामित्वका विचार	३६९	१९७ सज्जलन मान और मायाके बन्धस्वामित्वका विचार	३७८
१८६	प्रत्याख्यानावरणचतुष्टये बन्ध स्वामित्वका विचार	३७०	१९८ सज्जलनलोभके वध स्वामित्वका विचार	"
१८७	देवायुके बन्धस्वामित्वका विचार	३७१	१९९ हास्य, रति, भय और जुगुप्साके बन्धस्वामित्वका विचार	३७९
१८८	आहारकशरीर और आहारक शरीरागोपागके बन्धस्वामित्वका विचार	३७२	२०० देवपति आदिके बन्ध स्वामित्वका विचार	"
१८९	उपरामसम्यग्दृष्टियोंमें पाच पानावरणीय आदिके बन्ध स्वामित्वका विचार	"	२०१ आहारकशरीर और आहारक शरीरागोपागके बन्धस्वामित्व का विचार	३८०
१९०	निद्रा और प्रचलके बन्ध स्वामित्वका विचार	३७४	२०२ सासादनसम्यग्दृष्टियोंकी मति शानियोंके समान प्ररूपणा	"
			२०३ सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंकी अस यतोंके समान प्ररूपणा	३८३
			२०४ मिथ्यादृष्टियोंकी अभय जीर्णोंके समान प्ररूपणा	३८६
			२०५ सश्री जीर्णोंमें ओषधके समान बन्धस्वामित्वकी प्ररूपणा	"

क्रम न	विषय	पृष्ठ क्रम न	विषय	पृष्ठ
२०६	सातावेदनीयके बन्धस्वामित्व की चक्षुदर्शनी जीवोंके समान प्ररूपणा	३८७	२०८ आहारक जीवोंमें ओघके समान बन्धस्वामित्वकी प्ररूपणा	३९०
२०७	असही जीवोंमें अभव्योंके समान बन्धस्वामित्वकी प्ररूपणा	३९	२०९ अनाहारक जीवोंमें कर्मण काययोगियोंके समान बन्ध स्वामित्वकी प्ररूपणा	३९१

## शुद्धि-पत्र

पृष्ठ	प	अशुद्ध	शुद्ध
८	१८	किस गुणस्थान तक	किस गुणस्थानसे किस गुणस्थान तक
९	४	उचयसो	उचयसो
१३	७	योच्छिज्जदि	योच्छिज्जदि
१५	६	यज्जति	यज्जति
११	११	यघमाणाणि ।	यघमाणाणि
१२	१२	यघति	यघति
२५-२६		दश प्रकृतियां तथा दर्शनावरणकी स्वोदयसे ही बंधती हैं,	दश प्रकृतियों तथा दर्शनावरणकी चार ही प्रकृतियोंको बांधनेवाले सब गुणस्थान स्वोदयसे ही बांधते हैं,
१६	६	पुच्छण पडिचण्ण ।	पुच्छण पडिचण्ण वुच्चदे ।
२२	२२	ये तीन प्रश्न प्राप्त होते हैं ।	इन तीन प्रश्नोंका उत्तर कहते हैं ।
१८	८	इथि	इत्थि
२३	२३	अशुभ, पांच	अशुभ पांच
२४	२४	विद्यायोगति स्यावर	विद्यायोगति तथा स्यावर
२४	८	दु धावीसा	दुधावीसा
२५	२०	हं	हं
३२	७	उदयवोच्छेदो	उदयवोच्छेदादो
३५	५	कदि गदिया	कदिगदिया
३८	३	वुच्चदे	वुच्चदे

पृष्ठ	प	अशुद्ध	शुद्ध
४३	११	गिरयगहपाभोग्गाणुपुत्रि	गिरयगह गिरयगहपाभोग्गाणुपुत्रि
"	२६	नारकायु और	नारकायु, नरकगनि और
४९	७	ध्रुवबधो ।	ध्रुवबधो
"	१७-२१	सर्प काल क्यों नहीं पाया जाना ?	शका—सर्पकाल औदारिकशरीरका ध्रुव बन्ध और अनादिक बध भी क्यों नहीं पाया जाता ?
"	२३	अनादि रूपसे ध्रुव बधका	अनादि एव ध्रुव बधका
५०	४	बधा ॥ २० ॥	बधा। एदे बधा, अथसेसा अथधा ॥२०॥
"	१५	बधक हैं ॥ २० ॥	बधक हैं । ये बधक हैं, शेष अबन्धक हैं ॥ २० ॥
५२	५	दुविहाभावादो	ध्रुवियाभावादो <sup>१</sup>
"	१८	दो प्रकारके बधका	ध्रुव बधका
"	२५	x x x	२ प्रतिशु दुविहामावादो इति पाठ ।
५३	६	गयपच्चओ	सगपच्चओ <sup>१</sup>
"	२०	गतप्रलय है, अर्थात् उसका प्रलय ऊपर बतला ही चुके हैं,	स्वनिमित्तक है,
"	२३	अनुभागोदयसे अथवा अनन्तगुण-हानिसे हीन	अनुभागोदयकी अपेक्षा अनन्तगुणे हीन
"	३०	x x x	
५५	२०	क्योंकि, वहां	१ प्रतिशु ' गयपच्चओ ' इति पाठ । क्योंकि, [ मिथ्याच और सासादन गुण-स्थानमें ]
७८	१४	अतदीपक	अतदीपक
९१	१०	लोकस्स	लोकस्स
"	"	अच्चणिज्जा वदणिज्जा	अच्चणिज्जा पूजणिज्जा वदणिज्जा
"	१५	अर्चनीय, वदनीय,	अर्चनीय, पूजनीय, वदनीय,
९२	१९	पांच मृष्टियों अर्थात् अगोंसे	पांच मृष्टियों अर्थात् पांच अगों द्वारा भूमिस्पर्शसे
९९	४	बधो	बधो
१०४	२२	द्वितीय दण्डकमें (१)	द्वितीय दण्डक अर्थात् निद्रानिद्रा आदि द्विस्थानि - इतियोंमें



सिरि भगवंत-पुष्कदत-भूदवलि-पणीदो

## छत्रखंडागमो

सिरि-वीरसेणाडरिय-चिरइय-धवला-टीका समणिगदो  
तस्म तदियसडो

### बंधसामित्तविचओ

साहूज्झाडरिए अरहते तदिऊण<sup>१</sup> सिद्धे नि ।  
जे पच लोगवाले<sup>२</sup> वोच्छ वधस्स मामित्त ॥

जो सो बंधसामित्तविचओ णाम तस्स इमो दुविहो णिडेसो  
ओधेण आदेसेण य ॥ १ ॥

किमट्टमिद सुत्त वुच्चदे ? सवधामिहेर्यै-पओजणपदुप्पायणट्ट । जो सो वधसामित्तविचओ

साधु, उपाध्याय, आचार्य, अरहत ओर सिद्ध, ये जो पच लोकपाल अर्थात्  
लोकोत्तम परमेष्ठी हैं उनको नमस्कार करके उनके स्थामित्तको कहते हैं ।

जो वधस्वामित्तविचय है उसका यह निर्देश ओष और आदेशकी अपेक्षासे दो  
प्रकार है ॥ १ ॥

शका—यह सूत्र क्यों कहा जाता है ?

समाधान—सम्बन्ध, अभिधेय ओर प्रयोजनके उतलानेके लिये उक्त सूत्र कहा  
गया है ।

‘ जो वह वधस्वामित्तविचय है ’ इससे सम्बन्ध कहा गया है । वह इस प्रकार

१ प्रतिपु ‘ मट्टिउण ’ इति पाठ ।

२ अ आनयो ‘ लोगवाले ’ इति पाठ ।

३ प्रतिपु ‘ सवधामिहिय ’ इति पाठ ।



पृष्ठ	प	अशुद्ध
१७०	१	सातर गिरतरो ।
१९४	५	आदेज्ज-जसक्त्ति
"	१७	आदेय, यशकीर्ति
१९७	३	अत्थगईय
"	१७	अर्थापत्तिसे
१९९	५	पज्जत्तापज्जजाण
२३४	८	मिच्छाहट्ठीसु
२७८	११	॥ १०५ ॥
३१०	२	रदि-सोग
"	१५	रति, शोक
३१६	२४	नरकगति
३५८	४	घेच्छिज्जदि
३६७	१०	जसक्त्तिणामाणं
"	२७	अयशकिर्त्ति
३८०	१	असजसम्मादिट्ठिप्पहुडि
"	१२	मदिणाणिमगो
"	२३	मतिज्ञानियोके
"	२४	× × ×

शुद्ध
सातर गिरतरो,
आदेज्ज [ अणादेज्ज ] जसक्त्ति
आदेय, [ अनादेय ], यशकीर्ति
अत्थ गईय
इस पर्यायमें
पज्जत्तापज्जत्ताण
मिच्छाहट्ठीसु
॥ २०५ ॥
रदि अरदि सोग
रति, अरति, शोक
नरकगति
घोच्छिज्जदि
अजसक्त्तिणामाण
अयशकीर्त्ति
असजदसम्मादिट्ठिप्पहुडि
मदिअण्णाणिमगो'
मतिअज्ञानियोके
१ प्रतिपु मदिणाणिमगो इति पाठ ।



सिरि भगवंत-पुष्कदत-भूदबलि-पणीदो

## छक्खंडागमो

सिरि-वीरसेणाइरिय-विरइय-धवला-टीका-समणियो  
तस्स तदियत्तडो

### बंधसामित्तविचओ

माहूवज्जाइरिए अरहते उदिऊण' सिद्धे वि ।  
जे पच लोग्गाले' वोच्छ वधस्स सामित्त ॥

जो सो बंधसामित्तविचओ णाम तस्स इमो दुविहो णिहेसो  
ओघेण आदेसेण य ॥ १ ॥

किमट्ठमिद सुत्त वुच्चदे ? सनधाभिहेर्यै-पओजणपदुप्पायणट्ठ । जो सो वधसामित्तविचओ

साधु, उपाध्याय, आचार्य, अरहत ओर सिद्ध, ये जो पच लोकपाल अर्थात्  
लोकोत्तम परमेष्ठी हैं उनको नमस्कार करके वधके स्वामित्तको कहते हैं ।

जो वधस्वामित्तविचय है उसका यह निर्देश ओष और आदेशनी अपेक्षासे दो  
प्रकार है ॥ १ ॥

शका—यह सूत्र न्यों कहा जाता है ?

ममाधान—सम्बन्ध, अभिधेय ओर प्रयोजनके मतलबानेके लिये उक्त सूत्र कहा  
गया है ।

‘ जो वह वधस्वामित्तविचय है ’ इससे सम्बन्ध कहा गया है । वह इस प्रकार

१ प्रतिपु ‘ वद्धिउण ’ इति पाठ ।

२ अ जाप्रयो ‘ लोक्काले ’ इति पाठ ।

३ प्रतिपु ‘ सवधामिहिय ’ इति पाठ ।

णामेति एदेण सनधो कहिदो । त जहा— रुदि वेदगात्तिचदुवीसअणिओगहारोसु तत्थ वधण  
मिदि छट्ठमणिओगहार । त चउच्चिह वधा नधगा वधणिज्ज वधविहाणमिदि । तथ वधो णाम  
जीवम्म कम्माण च सनध णयमम्मिदूण पक्खेदि । जग्गो ति अहियागं एकारसअणिओगहारोहि  
वधग पक्खेदि । नधणिज्ज णाम जहियागं तेरीसजग्गणाहि नधजोग्गमनधनेग्ग च पोग्गलदत्त  
पक्खेदि । ज त नधविहाण त चउच्चिह पयडि ट्ठिदि-अणुभाग-पदेसवधो चेदि । तत्थ  
पयडिनधो दुविहो मूलपयडिनधो उत्तरपयडिनधो चेदि । जो सो मूलपयडिवधो सो दुविहो  
एग्गमूलपयडिनधो अब्बोगाढमूलपयडिनधो चेदि । जो सो अत्रोगाढमूलपयडिनधो सो दुविहो  
भुजगारवधो पयडिद्धानधो चेदि । तथ उत्तरपयडिनधस्म समुक्खिणाओ चदुवीसअणिओग  
हारणि भवति । तेसु चदुवीसअणिओगहारोसु वपसामित्त णाम अणिओगहार । तस्सेव वध  
सामित्तविचया ति मण्णा । जा सो वपसामित्तविचयो वधण-वधविहाणप्पसिद्धो [ सो ]  
पमाहसरूवेण अणाडिणिहणो । जो सो ति वयणेण जेण सो सभालिदो तेण एसो णिद्वेसो  
सनधपरूवओ । एसो चेव अभिदर्यपक्खओ वि । त जहा— जीव-कम्माण मिच्छतामजम  
कपाय जोगेहि एयत्तपरिणामो नधो । उत च—

हे— टटि, वेदना आदि चोरीस अनुयोगद्वारामें वन्धन नामक जो छटा अनुयोगद्वार है यह  
चार प्रकार है— रध, वधरु, रन्धनीय और रन्धविधान । उनमें वन्ध नामक अधिकार  
जाय और वमोंक सम्यग्धरा नयनी अपेक्षा करके निरूपण करता है । वन्धक अधिकार  
ग्यारह अनुयोगद्वारोंसे वन्धकोंका निरूपण करता है । वन्धनीय नामक अधिकार तेईस  
धमणाओंसे वधयोग्य और अरन्धयोग्य पुद्गल द्रव्यका प्ररूपण करता है । जो वन्ध  
विधान है वह चार प्रकार है— प्रवृत्तिरन्ध, स्थितिबन्ध, अनुभागवन्ध और प्रदेशरन्ध ।  
उनमें प्रवृत्तिरन्ध दो प्रकार है— मूलप्रवृत्तिरन्ध और उत्तरप्रवृत्तिरन्ध । जो मूलप्रवृत्तिरन्ध  
है वह दो प्रकार है— एर-एरमूलप्रवृत्तिरन्ध और अत्रोगाढमूलप्रवृत्तिरन्ध । जो  
अत्रोगाढमूलप्रवृत्तिरन्ध है वह दो प्रकार है— भुजगारवध और प्रवृत्तिस्थानवन्ध ।  
इनमें उत्तरप्रवृत्तिरन्ध समुक्खितन करनेवाले चोरीस अनुयोगद्वार है । उन चोरीस  
अनुयोगद्वारोंमें वन्धस्वामित्य नामक अनुयोगद्वार है । उसका ही नाम वन्धस्वामित्यविचय  
है । जो वन्धस्वामित्यविचय रन्धन अनुयोगद्वारने अन्तगत रन्धविधान अधिकारके भीतर  
प्रसिद्ध है वह प्रवाहरूपसे अनादिनिधन है । ' जो सो ' इस वचनसे चूनि उसका स्मरण  
कराया गया है इसलिये यह निदर्श सम्यग्धरा निरूपण है, और यही अभिधेयका भी  
निरूपण है । यह हम प्रकार है— जीव और वमोंका मिध्यात्व, असयम, कपाय और  
योगोंसे जो एकर परिणाम होता है उसे वन्ध कहते हैं । कहा भी है—

वप्रेण य सजोगो पोगलदव्येण होइ जीनस्स ।

वपो पुण णिण्णेओ णत्रिओओ पमोक्करो' दु ॥ १ ॥

एदस्स वधस्स सामित्त वधमामित्त, तस्स विचओ [ वधसामित्तविचओ, विचओ ]  
निचारणा मीमांसा परिकरणा इदि एयट्ठो । तस्स नधसामित्तविचयस्स इमो दुविहो णिद्वेसो त्ति  
जेणेद सुत्त देसामामिय तेणेत्य पओजण पि परूवेदव्व । किमट्ठमेत्थ नधस्स सामित्त उच्चदे ?  
सत-दव्व-खेत्त-फोसण-कालतर-भावप्पात्रहुव-गडरागडव्वगततेण अवगयाण चोदसगुणट्ठाणाण  
अणवगदे नधविसेमे वधगत वधकारणगडरागर्डओ च सम्म ण णव्वति त्ति काऊण चोदस-  
गुणट्ठाणाणि अहिकिच्च अप्पाउआणमणुगहट्ठ वधविसेसो उच्चदे । तस्स णिद्वेसो दुविहो  
ओधोदेमभेएण । तिविहो णिण्ण होदि ? ण, वयणपओगो हि णाम परट्ठो । ण च परो वि  
दुणयवदिरित्तो अत्थि जेण तिविहा एयविहा वा परूवणा होज्ज त्ति । ओषणिद्वेसो दव्व-  
ट्ठियणयाणुगहट्ठो, डयरो वि पज्जवट्ठियणयस्स ।

जीवना पुद्गल द्रव्यसे जो बन्ध सहित सयोग होता है उसे बन्ध और बन्धके  
वियोगको मोक्ष जानना चाहिये ॥ १ ॥

इस बन्धका जो स्वामित्य है वह बन्धस्वामित्य है । उसका जो विचय है वह  
बन्धस्वामित्वविचय है । विचय, निचारणा, मीमांसा और परीक्षा, ये समानार्थक शब्द हैं ।  
' उस बन्धस्वामित्वविचयका यह दो प्रकारका निर्देश है ' चूँकि यह सूत्र देशामर्शक है  
इस लिये यहा प्रयोजन भी कहना चाहिये ।

शंका—यहा बन्धके स्वामित्यको किस लिये कहा जाता है ?

समाधान—सत्त्व, द्रव्य, क्षेत्र, स्पर्शन, काल, अन्तर, भाव, अल्पबहुत्व और गत्या  
गति बन्धक रूपसे जाने गये चोदह गुणस्थानोंके बन्धविशेषके अज्ञात होनेपर बन्धकत्व  
व बन्धनिमित्तक गति आगतिका भले प्रकार ज्ञान नहीं हो सकना, ऐसा जानकर चोदह  
गुणस्थानोंका अधिकार करके अत्पायु शिष्योंके अनुग्रहके लिये बन्धविशेष कहा जाता है ।  
उसका निर्देश ओघ और आदेशके भेदमे दो प्रकार है ।

शंका—यह निर्देश तीन प्रकारका क्यों नहीं होता ?

समाधान—नहीं होता, क्योंकि वचनका प्रयोग परके लिये होता है, ओर पर भी  
दो नयोंको छोडकर है नहीं जिससे तीन प्रकार या एक प्रकार प्ररूपणा होसके ।

ओघनिर्देश द्रव्यार्थिक नयवालोंका और इतर अर्थात् आदेशनिर्देश पर्यायार्थिक  
नयवालोंका अनुग्रहकर्ता है ।

१ प्रतिपु ' पमोक्खा ' इति पाठ ।

ओघेण वंधसामित्तविचयस्स चोदसजीवसमासाणि णादव्वाणि  
भवन्ति ॥ २ ॥

‘जहा उद्देसो तथा णिद्देसो’ ति जाणावणद्वमंघेणेनि उच । वधसामित्तविचयस्सेत्ति  
मवधे छट्ठी दद्वव्वा । अथवा, वधसामित्तविचय इदि निसयत्त्खणमत्तमीए छट्ठीणिद्देसो  
कायव्वो । पुव्वमवगया चेव चोदमजीवसमामा, पुणो ते एत्थ किमदु परूविज्जते ? ण एस  
दोसो, निस्सरणालुअसिस्ससभालणदुत्तादो ।

मिच्छाइट्ठी सासणसम्माइट्ठी सम्मामिच्छाइट्ठी असजदसम्माइट्ठी  
सजदासजदा पमत्तसंजदा अप्पमत्तसजदा अपुव्वकरणपइट्ठुव्वसमा  
खवा अणियट्ठिवादरसांपराइयपहट्ठुव्वसमा खवा सुहुमसांपराइयपइट्ठु-  
व्वसमा खवा उवसत्तकसायवीयरागछट्ठुमत्था खीणकसायवीयरायछट्ठु-  
मत्था सजोगिकेवली अजोगिकेवली ॥ ३ ॥

ओपनी अपेक्षा वधसामित्तविचयके चोदह जीवसमास जानने योग्य हैं ॥ २ ॥

‘जसा उद्देश वेम्मा निद्देश होना है’ इसके ज्ञापनार्थ ‘ओघसे’ वेम्मा कहा है ।  
‘वधसामित्तविचयके’ यह सम्बन्धमें पठनी विभक्ति जानना चाहिये । अथवा ‘वध  
सामित्तविचयमें’ इस प्रकार त्रिपयाधिररण लक्षण सप्तमी विभक्तिके स्थानमें पठनी  
विभक्तिका निर्देश करना चाहिये ।

शका—चोदह जीवसमास पूर्वमें जाने हैं ना चुके ह, फिर उननी यहा प्ररूपणा  
किसलिये की जाती है ?

समाधान—यह कौर्दे शेष नहीं है, क्योंकि, यह कथन निस्सरणशील शिष्योंके  
स्मरण करानेके लिये है ।

मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्पगदृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि, अमयतसम्पगदृष्टि, सयतामयत,  
प्रमत्तसपत, अप्रमत्तमयत, अपूर्वरूपप्रविष्ट उपशमक व क्षपक, अनिशुचिवादरसाम्परायिक-  
प्रविष्ट उपशमक व क्षपक, सम्माम्परायिकप्रविष्ट उवशमक व क्षपक, उपशान्तरूपाय वीत-  
रागउत्तमस्स, क्षीणरूपाय वीतरागछट्ठमथ, सयोगिकेवली और १०० ये चोदह जीव-  
हैं ॥ ३ ॥

एदस्स सुत्तस्स अत्थो जहा जीवङ्गणे वित्थेण परूविदो तथा एत्थ परूवेदच्चो,  
विसेसामावादो । एव चोदसण्ह जीवममासाण सरूव समालिय वधमामित्तपररूपवद्दमुत्तरसुत्त  
मणदि—

**एदेसिं चोदसण्हं जीवसमासाणं पयडिवंधवोच्छेदो कादव्वो  
भवदि ॥ ४ ॥**

जदि जीवसमासाण पयडिवंधवोच्छेदो चेव उच्चदि तो एदस्स गथस्स वधसामित्त-  
विचयसण्णा कध धडदे ? ण एम दोसो, एदम्मि गुणङ्गणे एदासिं-पयडीण वधवोच्छेदो होदि  
चि कहिदे हेट्टिल्लगुणङ्गणाणि तासिं पयडीण वधसामियाणि चि सिद्धीदो । किं च वोच्छेदो  
दुनिहो उप्पादाणुच्छेदो अणुप्पादाणुच्छेदो चेदि । उत्पाद सत्त्व, अनुच्छेदो विनाश अभाव  
नीरूपिता इति यावत् । उत्पाद एव अनुच्छेद उत्पादानुच्छेद, भाग एव अभाव इति यावत् ।  
एसो दव्वट्टियणयव्ववहारी । ण च एसो एयतेण चप्पलओ, उत्तरकाले अप्पिदपज्जायस्स

इस सूत्रका जयं जेसे जीवस्थानमें विस्तारमें कहा गया है वैसे ही यहा भी  
कहना चाहिये, क्योंकि, जीवस्थानसे यहा कोई विशेषता नहीं है । इस प्रकार चौदह  
जीवसमासोंके स्वरूपका स्मरण करार बन्धस्वामित्यके निरूपणार्थ उत्तर सूत्र कहते हैं—

इन चौदह जीवसमासोंके प्रकृतिबन्धव्युच्छेदका कथन करने योग्य है ॥ ४ ॥

शंका—यदि यहा जीवसमासोंका प्रकृतिबन्धव्युच्छेद ही कहा जाता है तो फिर  
इस ग्रन्थका 'बन्धस्वामित्य' यह नाम केने घटित होगा ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, इस गुणस्थानमें इतनी प्रकृतियोंका  
बन्धव्युच्छेद होता है, ऐसा कहनेपर उससे नीचेके गुणस्थान उन प्रकृतियोंके बन्धके  
स्वामी है, यह स्वयमेव सिद्ध हो जाता है । दूसरी बात यह है कि व्युच्छेद दो प्रकारका  
है—उत्पादानुच्छेद और अनुत्पादानुच्छेद । उत्पादका अर्थ सत्त्व ओर अनुच्छेदका अर्थ  
विनाश, अभाव अथवा नीरूपीपना है । 'उत्पाद ही अनुच्छेद उत्पादानुच्छेद' (इस  
प्रकार यहा कर्मधारय समास है) । उक्त कथनका अभिप्राय भाषको ही अभाव बतलाना  
है । यह द्रव्यार्थिक नयके आश्रित व्यग्रहार है । और यह एकान्त रूपसे अर्थात् सर्वथा  
मिथ्या भी नहीं है, क्योंकि, उत्तरकालमें विवक्षित पर्यायके विनाशसे निश्चय द्रव्य पूर्व

विणासेण विसिद्धद्वयस्स पुब्विल्लकाले वि उरलमादे । दच्चट्टियणयम्मि मनाण पज्जायाण कथमभावो ? को भणदि तेसिं तवाभावो' ति, किंतु ते तत्थ अप्पहाणा अवित्रन्निखाया अणपिया इदि तेसिं दच्चत्तमेण ण तत्थ पज्जायत्त । कथमथिययमेण अदवाण पज्जायाण दच्चत्त ? ण, दच्चदो एयतेण तेसिं पुग्गुद्दाणमणुत्तलभादो, दच्चमहाणाण चेतुत्तलमा । जदि एव ता भावस्स दुचरिमादिमु समएणु चग्गिममण इय अभाववत्तहो विण्ण कीरदे ? ण एम दोसो, दुचरिमाणीण चरिमसमयस्सेव अभावण सह पच्चावचीए अभावादो । दच्चट्टियस्स कथमभाववत्तहो ? ण एम दोसो, 'यत्थि न तद् द्वयमत्तिल्लध वत्तन' इति दो वि णए अविलविज्जण डिट्ठणेगमणवस्स भावाभाव वत्तहारविरोहामादादो । अनुत्पाद असत्त्व, अनुच्छेदो

बालमें भी पाया जाता है ।

शका—द्रव्यार्थिन नयमें विद्यमान पर्यायोंका अभाव कैसे होता है ?

समाधान—यह कौन कहता है कि उनका वहा अभाव होता है, किन्तु वे यहाँ अग्रधान, अविश्रुत अथवा अनिर्णित हैं, इसलिये उनके द्रव्यपना ही है, पर्यायपना वहा नहीं है ।

शका—द्रव्यार्थिन नयने वहासे द्रव्यसे भिन्न पर्यायोंके द्रव्यत्व कैसे सम्भव है ?

समाधान—यह शका ठीक नहीं, क्योंकि, पर्याय द्रव्यसे संबंधा भिन्न नहीं पायी जातीं, किन्तु द्रव्यस्वरूप ही वे उपगन्ध हातीं हैं ।

शका—यदि ऐसा है तो फिर पदाथके अन्तिम समयके समान द्विचरमादि समयोंमें भी अभावका व्यवहार क्यों नहीं किया जाता ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, द्विचरमादिक समयोंके अन्तिम समयके समान अभावके साथ प्रत्यासक्ति नहीं है ।

शका—द्रव्यार्थिककी अपेक्षा पर्यायोंमें अभावका व्यवहार कैसे होता है ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं, क्योंकि, 'जो है वह दोनोंका अतिममण कर नहीं रहता' इस लिये दोनों नयोंका आग्रयकर स्थित नैयमनयके भाव व अभाव रूप व्यवहारमें कोई विरोध नहीं है ।

अनुत्पादका अर्थ असत्त्व और अनुच्छेदका अर्थ विनाश है । अनुत्पाद ही अनुच्छेद

निनाश, अनुत्पाद एव अनुच्छेद ( अनुत्पादानुच्छेद ) असत् अभाव इति यावत्, सत्-  
असत्त्वविरोधात् । एसा पञ्चमद्विषयव्यवहारो । एतथ पुण उप्पादानुच्छेदमस्मिदूण जेण  
सुत्तकारेण अभावव्यवहारो कदो तेण भासो चेत्त पयडिवधस्स परूविदो । तेणेदस्स गथस्स  
वधसामित्तविचयसण्णा घडदि त्ति ।

**पंचणं णाणावरणीयाणं चट्ठहं दंसणावरणीयाणं जसकित्ति-  
उच्चागोद पंचणहंमंतराडयाणं को वधो को अवंधो ? ॥५ ॥**

वधो वधमो त्ति भणिद होदि । पयडिसमुत्तिकत्तणाए णाणावरणादीण सरूव परूविद-  
मिदि णेह परूविज्जदे, पउणरुत्तियादो । को वधो को अवंधो त्ति णिदिसादो एद पुच्छा-  
सुत्तमासकियसुत्त वा । किं मिच्छाइट्ठी वधो किं सामणसम्भाइट्ठी किं मम्मामिच्छाइट्ठी किं  
असज्जदसम्भाइट्ठी एव गतूण किं जजोगी किं सिद्धो वधो त्ति तेणेत्त पुच्छा कायव्वा । एद  
देसामासियसुत्त । किं वंधो पुव्व वोच्छिज्जदि किमुदओ पुव्व वोच्छिज्जदि किं दो वि सम  
वोच्छिज्जति, किं सोदएण एदासिं वधो किं परोदएण किं स-परोदएण, किं सातरो वधो किं

अर्थात् असत्का अभाव होता है, क्योंकि सत्के अस्त्यका विरोध है । यह पर्यायार्थिक  
नयके आश्रित व्यवहार है । यहापर चूकि सूत्रकारने उत्पादानुच्छेदका आश्रय करके ही  
अभावका व्यवहार किया है, इसलिये प्रकृतिबन्धका सद्भाव ही निरूपित किया गया है ।  
इस प्रकार इस ग्रन्थका ' वन्धन्यामित्तविचय ' नाम सगत ही है ।

पाच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, यशकीर्ति, उच्चगोत्र और पाच अन्तराय,  
इनका कौन वन्धक है और कौन अवन्धक है ? ॥ ५ ॥

' वन्ध ' शब्दसे यहा वन्धकका अभिप्राय प्रकृत किया गया है । चूकि प्रकृतिसमु-  
त्कीर्तन चूलिकामें ज्ञानावरणादिकोंका स्वरूप कहा जा चुका है, अत एव अत्र उनका स्वरूप  
यहा नहीं कहा जाता, क्योंकि ऐसा करनेसे पुनरुक्ति दोष आवेगा ।  
' कौन वन्धक और कौन अवन्धक ' इस निर्देशसे यह पृच्छासूत्र अथवा आशकासूत्र है,  
ऐसा समझना चाहिये । इसीलिये क्या मिथ्यादृष्टि वन्धक है, क्या सामान्यसम्यग्दृष्टि  
वन्धक है, क्या सम्यग्मिथ्यादृष्टि वन्धक है, क्या असत्यतसम्यग्दृष्टि वन्धक है, इस प्रकार  
जाकर क्या अयोगी वन्धक है, क्या सिद्ध जीव वन्धक है, ऐसा यहा प्रश्न करना  
चाहिये । यह देशामर्शक सूत्र है । इसलिये यहा क्या वन्धकी पूर्वमें व्युत्पत्ति होती  
है ( १ ) क्या उदयकी पूर्वमें व्युत्पत्ति है ( २ ) या दोनोंकी साथ ही व्युत्पत्ति होती  
है ( ३ ) क्या अपने उदयके साथ इनका वन्ध होता है ( ४ ) क्या पर प्रकृतियोंके उदयके  
साथ इनका वन्ध होता है ( ५ ) या अपने व पर दोनोंके उदयसे इनका वन्ध होता है ( ६ )



णितरो बधो किं सातरणितरो, किं सपचओ किमपच्चओ, किं गइमजुत्तो किमगइमजुत्तो,  
कदिगदिया सामिणो अमामिणो, किं वा उधद्दाण, किं चग्मिसमए वधो वोच्छिज्जदि किं पढम-  
समए किमपढमअचरिमसमए वधो वोच्छिज्जदि, किं सादिगो नओ किं अणादिओ, किं खुवो किमदुवो  
त्ति, तेणेदानो तेरीमपुच्छओ पुच्चिन्पुच्छाए अनम्मूदाओ त्ति दठव्वाओ । एत्थुनउज्जतीओ  
आरिसगाहाओ—

वया उरिही पुण सामिनद्दाण पच्चवपिही य ।  
एदे पचणिओगा मग्गणठाणेसु मग्गेउता' ॥ २ ॥  
बरोदय पुअ न मम उ गियएण ऊत्स उ पेण ।  
अण्णदरस्सुदएण व सातरणिगपतर का च ॥ ३ ॥  
पच्चय सामित्तपिही मजुत्तद्दाणएण तह चेय ।  
सामित्त पेय उ पयटीण टाणमासेउ ॥ ४ ॥  
बरोदय पुअ न मम व स-पेदेण तदुभएण ।  
सातर णितर न चग्मिदेर सादिआदीया ॥ ५ ॥

यथा सान्तर उन्ध होता है (७) कथा निरन्तर उन्ध होता है (८) या सान्तर निरन्तर  
उन्ध होता है (९) कथा सन्निमित्तक उन्ध होता है (१०) या अनिमित्तक (११) कथा  
गतिसयुक्त उन्ध होता है (१२) या गतिसयेतसे रहित (१३) कितनी गतिगले जीव  
स्वामी है (१४) और कितनी गतिगले स्वामी नहीं है (१५) धन्धाध्यान कितना है अर्थात्  
धन्धकी सीमा किस गुणस्थान तक है (१६) कथा अन्तिम समयमें उन्धकी उच्छिञ्जिती  
है (१७) कथा प्रथम समयमें उन्धकी उच्छिञ्जिती होती है (१८) या यत्नके समयमें  
(१९) उन्ध कथा सादि है (२०) या कथा अनादि (२१) कथा ध्रुव उन्ध होता है (२२)  
या अध्रुव (२३) ये तर्हिस प्रश्न पूर्वोक्त प्रश्नके अन्तगत हैं, ऐसा जानना चाहिये। यहाँ  
उपयुक्त आरंभ गाथाएँ—

उन्ध, धन्धत्रिधि, धन्धस्वामित्व, अध्वान अधात् उन्धसीमा और प्रत्ययत्रिधि, ये  
पाच नियोग प्रागणास्थानोंमें खोजने योग्य हैं ॥ २ ॥

उन्ध पूर्वमें है, उदय पूर्वमें है, या दोनों साथ हैं, किस कर्मका उन्ध निजके उदयके  
साथ होता है, किसका परके साथ, और किसका अपतरके उदयके साथ, कौन प्रकृति  
सान्तरउन्धगाली है, और कौन निरन्तरउन्धगाली, प्रथयत्रिधि, स्वामित्वत्रिधि तथा गति  
सयुक्त धन्धाध्यानके साथ प्रष्टनियोंका स्थानका आश्रयकर स्वामित्व जानना चाहिये ॥३-४॥

उन्ध पूर्वमें, उदय पूर्वमें या दोनों साथ होते हैं, वह उन्ध स्वोदयसे परोदयसे या  
दोनोंके उदयसे होता है, उक्त उन्ध सान्तर है या निरन्तर, यह अन्तिम समयमें होता है  
या इतर समयमें, तथा धद सादि है या अनादि है ॥ ५ ॥

एत्थ एदासु पुच्छासु विसमपुच्छाणमत्थो वुच्चदे । त जहा— वधवोच्छेदो एत्थेव सुत्तसिद्धो त्ति त मोत्तूण पयडीणमुदयवोच्छेद ताव वत्तइस्सामो । मिच्छत्त-एइदिय-वीइदिय-तीइदिय-चउरिदियजादि-आदाव-थार-सुहुम-अपजत्त-साहारणाण दसण्ह पयडीण मिच्छाइत्तिस्स चरिमसमयम्मि उदयवोच्छेदो । एत्तो महाकम्मपयडिपाहुडउववसो । चुण्णिणसुत्तकत्ताराणसुवएसेण पचण्ण पयडीणमुदयवोच्छेदो, चहुजादि-थारणाण सासणसम्मादिट्ठिम्हि उदयवोच्छेदम्बुवगमादो । अणताणुवधिकोह-माण-माया-लोहाण सासणसम्माइत्तिचरिमसमए उदयवोच्छेदो । सम्मा-मिच्छत्तस्स सम्मामिच्छाइत्तिम्हि उदयवोच्छेदो । अपच्चक्खाणावरणकोह-माण-माया-लोह-णिरयाउ-देवाउ-णिरयगइ-देवगइ-वेउव्वियमरीर-वेउपियसरीर-अगोवग-चत्तारिआणुपुच्चि-दुभग-अणादेज्ज-अजसकित्तीण सत्तारसण्णमेदासिं पयडीण असजदसम्मादिट्ठिम्हि उदयवोच्छेदो । पच्चक्खाणा-वरणकोह-माण माया-लोह-तिरिक्खाउ तिरिक्खगइ-उज्जेव णीचागोदानमट्ठण्ण पयडीण सजदा-सजदम्मि उदयवोच्छेदो । णिदाणिदा पयलापयला थीणगिद्धि-आहारसरीरदुगाण पचण्ण पयडीण

इन प्रश्नोंमें विषम प्रश्नोंका अर्थ कहते हैं। यह इस प्रकार है— चूँकि ध्व-व्युच्छेद यहाँ ही सूत्रसे सिद्ध है अत एव उसको छोड़कर प्रकृतियोंके उदय-व्युच्छेदको कहते हैं। मिथ्यात्व, एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय जाति, आताप, स्थावर, सूक्ष्म, अपर्याप्त और साधारण, इन दश प्रकृतियोंका उदयव्युच्छेद मिथ्यादृष्टि गुण-स्थानके अन्तिम समयमें होता है। यह महाकर्मप्रकृतिप्राभृतका उपदेश है। चूणिसूत्रोंके कर्ता यतिगृपभाचार्यके उपदेशसे मिथ्यात्व गुणस्थानके अन्तिम समयमें पाच प्रकृतियोंका उदयव्युच्छेद होता है, क्योंकि, चार जाति और स्थावर प्रकृतियोंका उदयव्युच्छेद सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें माना गया है। जनन्तानुयन्धी क्रोध, मान, माया और लोभका उदयव्युच्छेद सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानके अन्तिम समयमें होता है। सम्यग्मिथ्यात्त्रका उदयव्युच्छेद सम्यग्मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें होता है। अप्रत्याख्याना-वरण क्रोध, मान, माया, लोभ, नारकायु, देवायु, नरकगति, देवगति, वैक्रियिकशरीर, वैक्रियिकशरीरागोपाग, चार आनुपूर्वी, दुर्भग, अनादेय और अयशकीति, इन सत्तरह प्रकृतियोंका उदयव्युच्छेद अमयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें होता है। प्रत्याख्यानावरण क्रोध, मान, माया, लोभ, तिर्यगायु, तिर्यग्गति, उद्योत और नीच गोत्र, इन आठ प्रकृतियोंका उदयव्युच्छेद सयतासयतगुणस्थानमें होता है। निद्रानिद्रा, प्रचलाप्रचला, स्त्यानशुद्धि, आहारशरीर और आहारशरीरागोपाग, इन पाच प्रकृतियोंका उदयव्युच्छेद प्रमत्तसयत

१ प्रतिपु 'णमिउणत्तागण' इति पाठ ।

२ मिच्छे मिच्छादाव सुहुमतिथ सोगणे अणेइदी । धावरवियल मिस्से मिस्स च य उदयवोच्छेदणा ॥  
गो क २६५

३ अयदे विदियत्ताया वेणुव्वियत्तक णिरय देवाऊ । मय्य तिरियाणुपुच्चि दुम्मगणदि न अच्चमय ॥  
गो क २६६

७ व २

मत्तसजदमि उदयवोच्छेदो' । अद्वणारायण-र्रीलिय असपत्तेस्रट्टसरिरसपडण वेदगममत्ताण  
 च्चदुण्ह पयडीण अप्पमत्तमजदमि उदयवोच्छेदो । हस्स रदि-अरदि सोग मय दुगुछाण छण  
 पयडीणमपुञ्जणमि उदयवोच्छेदो । इत्थि पवुसय पुरिसवेद-कोह माण-मायामज्जणाय छण  
 पयडीणमणियत्तिमि उदयवोच्छेदो । लोभसजलणस्स एक्कस्स च्च सुहममापराडयचरिमसमयमि  
 उदयवोच्छेदो । वज्जणारायण णासायणमरीमघडणाय दोण्ण पयडीण उवसनकमासमि  
 उदयवोच्छेदो' । णिद्वा पयलाण दोण्ह पि खीणकमायदुचरिममयमि उदयवोच्छेदो ।  
 पघणाणारणीय चउदमणाणणीय पचतराइयाण चोहमण्ण पयडीण खीणकमायचरिमसमयमि  
 उदयवोच्छेदो' । ओरालिय तेत्ता कम्मइयमरीम-उमठाण ओरालियसरिरअगोणग वज्जिसहवइ  
 णासायणमरीमघडण वण्ण गध रस फास अगुरुअलहुज-उत्पाद-परघादुस्साम-दोविहायगदि-  
 पत्तेसरिर थिराथिर-सुहामुह-सुम्पर दुस्पर णियिणाणमेगुणतीसपयडीण सजोगिकेत्तमि उदय

गुणस्थानमें होता है । अर्धनागच, कीलित, असप्राप्तसुपाटिकासहनन और वेदकसम्यक्त्वं  
 इन चार प्रकृतियोंका उदययुच्छेद अप्रमत्तसयत गुणस्थानमें होता है । हास्य, रति, अरति  
 शोक, भय और जुगुप्सा, इन छह प्रकृतियोंका उदययुच्छेद अपूर्वस्मरण गुणस्थानमें  
 होता है । स्त्री, नपुंसक और पुरुषवेद, सज्जन क्रोध, मान और माया, इन छह प्रकृतियोंका  
 उदययुच्छेद अनिवृत्तिकरण गुणस्थानमें होता है । केवल एक सज्जलन लोभका उदय  
 व्युच्छेद सूक्ष्मसाम्प्रायिक गुणस्थानके अन्तिम समयमें होता है । वज्जनाराच और  
 नाराच शरीरसहनन, इन दो प्रकृतियोंका उदयव्युच्छेद उपशान्तकषाय गुणस्थानमें  
 होता है । निद्रा और प्रचला दोनों प्रकृतियोंका उदययुच्छेद क्षीणकषाय गुणस्थानके  
 द्विचरम समयमें होता है । पाच ज्ञानारण्यीय, चार दशनाघरणीय और पाच अन्तराय, इन  
 चौदह प्रकृतियोंका उदययुच्छेद क्षीणकषाय गुणस्थानके अन्तिम समयमें होता है ।  
 औदारिक, तैजस्य और कामण शरीर, छह सस्वान, औदारिकशरीरामोपाग, वज्जर्षभनाराच  
 सहनन, वण, गच, रस, स्पश, अगुरुकलपुक, उपघान, परघात, उच्छ्वास, दो विहायो  
 गतिया, प्रत्यक्षशरीर, स्थिर अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुस्वर, दुस्वर और निर्माण, इन उनतीस  
 प्रकृतियोंका उदयव्युच्छेद सप्तोपनिषत्ती गुणस्थानमें होता है । दो वेदनीय मनुष्यायु,

१ देश वदियकमाया निरावाउजात णाच निगियगरी । छट्ठ आरादुग धाणनिय उदयवोच्छिणा ॥  
 गो क २६७

२ अपमत्ते सम्पत्त अनिमित्तियमहदी य पुञ्जमिह । छव्वच षाकसाया अणियहीभागमगेह ॥ वेदतिय  
 कोह-माण मायामज्जणमेव सुहुप्पे । सुहुमा लाहा सते वज्जणाय णाराय ॥ गा क २६८-२६९

३ खीणकमायदुचरिम णिद्वा पयला य उदयवोच्छिणा । णाणतसायदमय दमणचचारि कम्मिहि ॥  
 गो क २७०

बोच्छेदो<sup>१</sup> । देवेदणीय मणुस्माउ-मणुस्सगइ-भचिंदियजादि तस-नादर पज्जत्त सुभग आदेज्ज-जसगित्ति तित्थयर-उच्चागोदाण तेरसण्ह पयडीणमजोगिकेवल्लिहि उदयबोच्छेदो<sup>१</sup> । एत्थ उवसहारगाहा—

दस चट्टुरिगि सत्तारस अट्ट य तह पच चैय चउरो य ।

छच्छक एग दुग दुग चोइस उगुतीस तेरसुदयनिही<sup>१</sup> ॥ ६ ॥

एवमुदयबोच्छेद परुविय कासि पयडीण बधो उदए फिट्ठे वि होदि, कासि पयडीण बधे फिट्ठे नि उदओ होदि, कासि बधोदया सम बोच्छिज्जत्ति ति तुन्चदे । त जहा— देवाउ देवगइ वेउव्वियसरीर वेउव्वियअगोवग देवगइपाओग्गाणुपुव्वि-आहारदुग-अजसकित्तीण-मट्टण्ण पयडीण पढममुदओ वोन्निज्जत्ति पच्छा बधो । एत्थ उवसहारगाहा—

देवाउ देवउक्काहारदुअ च अजसमट्टण्ह ।

पढममुदओ विणस्मदि पच्छा बधो मुणयेव्वो ॥ ७ ॥

मनुष्यगति, पचेन्द्रियजाति, ब्रह्म, वादर, पर्याप्त, सुभग, आदेय, यशकीर्ति, तीर्थकर और उच्चगोत्र, इन तेरह प्रकृतियोंका उदय-बुच्छेद अयोगिकेवली गुणस्थानमें होता है । यहा उपसहारगाथा—

दश, चार, एक, सत्तरह, आठ, पाच, चार, छह, छह, एक, दो, दो, चोदह, उनतीस और तेरह, (इस प्रकार ब्रह्मश मिथ्याद्यै आदि चोदह गुणस्थानोंमें उदयव्युच्छिन्न प्रकृतियोंकी सख्या है) ॥ ६ ॥

इस प्रकार उदय-बुच्छेदको कहकर अब किन प्रकृतियाका बन्ध उदयके नष्ट होनेपर भी होता है, किन प्रकृतियोंका उदय बन्धके नष्ट होनेपर भी होता है, ओर किन प्रकृतियोंका बन्ध व उदय दोनों साथ ही व्युत्तिष्ठत होते हैं, इस बातको कहते हैं । वह इस प्रकार है— देवायु, देवगति, वैक्रियिकशरीर, वैक्रियिकआगोपाग, देवगतिप्रायोग्यानु-पूर्णा, आहारकशरीर, आहारकआगोपाग ओर अयशकीर्ति, इन आठ प्रकृतियोंका प्रथम उदयका विच्छेद होता है, पश्चात् बन्धका । यहा उपसहारगाथा—

देवायु, देवचतुष्क अर्थात् देवगति, देवगत्यानुपूर्णा, वैक्रियिकशरीर और वैक्रियिक-आगोपाग, तथा आहारकशरीर, आहारक आगोपाग एव अयशकीर्ति, इन आठ प्रकृतियोंका पहिले उदय नष्ट होता है, पश्चात् बन्ध, ऐसा जानना चाहिये ॥ ७ ॥

१ तदियेक्कज गिमिण विर सुद सर गदि-उराल तेचदुग । सटाण वण्णागुदवउक्क-पवेय जोगिहि ॥ गो क २७१

२ तदियेक्क मणुसगदी पचिंदिय-सुभग तस तिगादेज । जम तिय मणुवाउ उच्च च अजोगिचरिमिहि ॥ गो क २७२

३ गो क २६३

४ देवउक्काहारदुग्गज्जमदेवाउगाण सो पच्छा । गो क ४००

मिच्छत्त-अणत्ताणुपुत्तिउक्क-अपन्चक्खणाणारणचउक्क पच्चन्तराणाणारणचउक्क-तिग्णि-  
संजन्म पुग्गिस्वेद हस्स रदि-भय-दुगुल्ल एइदियं-वीडदिय-तीडदिय-चउग्गिदियजादि-मणुसगड-  
पाओर्याणुपुत्ति आदाव थावर सुहुम अपज्जत-साहारणाण एकतीसपयडीण वधोदया मम वोच्छि-  
वज्जति । एत्थ उअसहारगाहाओ--

मिच्छत्त मय दुगुत्ता हस्स-ई पुग्गि थारगादावा ।

सुहुम जाडचउक्का साहारणय अपज्जत्त ॥ ८ ॥

पण्णस वसाया तिणु छोहेणकेण आणुपुग्गी य ।

मणुमाण एदासि समग वधोत्तुच्छेदो ॥ ९ ॥

पचनाणावरणीय णवदसणावरणीय दोनेयणीय लोहमजलण-इन्धि णवुमयवेद अरइ-सोग-  
णिरयाउ तिरिक्खाउ मणुस्साउ णिरयगइ तिरिक्खगइ-मणुस्सगइ-पचिदियजाइ-ओरालिय तेजा-  
कम्मइयसरीर-छसठाण ओरालियमरीरअगोरग छसडवण-वण्णचउक्क-णिरयगइ-तिरिक्खगइपाओ-  
ग्गाणुपुत्ति अगुरुअल्लुअचउक्क उच्चोव दोविहायगड तम वादर पज्जत-पत्तेयमग्गि थिराथिर-सुहा-  
सुइ-सुमग दुमग सुस्सर-दुस्सर ओदेज्ज-अणादेज्ज जसगिति तिग्णिण नित्थयर णीउच्चगोद पच

मिथ्यात्व, चार अन-तानुध-धी, चार अप्रत्याख्यानावरण, चार प्रत्याख्यानावरण,  
तीन सज्जलन, पुरुषवेद, हास्य, रति, भय, जुगुप्सा, एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरि-  
न्द्रियजाति, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, आताप, स्थावर, सूक्ष्म, अपर्याप्त और साधारण, इन  
इकतीस प्रकृतियोंका बन्ध च उदय दोनों साथ व्युच्छिन्न होते हैं । यहा उपसहारगाथायें--

मिथ्यात्व, भय, जुगुप्सा, हास्य, रति, पुरुषवेद, स्थावर, आताप, सूक्ष्म, एकेन्द्रिय  
आदि चार जाति, साधारण, अपर्याप्त, सज्जलनलोभके बिना पन्द्रह कषाय और मनुष्य  
गत्यानुपूर्वी, इन प्रकृतियोंका बन्ध युच्छेद और उदयव्युच्छेद साथ ही होता है ॥८-९॥

पाच क्षानाररणीय, नौ दर्शनावरणीय, दो वेदनीय, सज्जलनलोभ, स्ववेद, नपुंसक  
वेद, अरति, शोक, नारकायु, तिर्यगायु, मनुष्यायु, नरकगति, तियगति, मनुष्यगति, पचे  
न्द्रियजाति, औदारिक, तैजस और कामण शरीर, छह सस्थान, औदारिकशरीरामोषाग, छह  
सहजलन, घणादिक चार, नरकगत्यानुपूर्वी, तिर्यगगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, अगुरुल्लु आदिक चार,  
उघोत, दो निहायोगति, प्रस, वादर, पर्याप्त, प्रत्येक शरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुभग,  
दुभग, सुस्वर, दुस्वर, आदिस, अनादिस, यशकीति, निर्माण, तीर्थकर, नीचगोत्र, उच्चगोत्र

१ अमनी ' दुगुत्ताणमिदिय ' इति पाठ ।

२ मिच्छत्तादावण णराउ थावरचउक्काण । पण्णरक्कायअयदुग्ग हस्सदु चउजादि पुग्गिस्वेदाण । सम  
मुक्करीवाण ससिगसादाण पुच्च तु ॥ गो क ४००-४०१

तराइयाणमेगामीदिपयडीण पढम बधो वोञ्जिदि, पच्छा उदओ । एत्थ उवमहारगाहा-

पुबुत्तपसेमाओ एगासीढी हवति पयटीओ ।

ताण उबुच्छेदो पुव पच्छेदउच्छेत्ते ॥ १० ॥

सेसाण जहावसरमत्थ भणिस्सामो ।

मिच्छादिट्टिप्पहुडि जाव सुहुमसांपराइयसुद्धिसंजदेसु उवसमा  
खवा वंधा । सुहुमसांपराइयसुद्धिसजदद्वाए चरिमसमयं गंतूण वंधो  
वोच्छिजदि । एदे वंधा, अवसेसा अवंधा ॥ ६ ॥

एदस्स सुत्तस्स अत्थो वुचंदि । त जहा- मिच्छाडिट्टिप्पहुडि जाव सुहुमसांपराइय  
खवगा 'त्ति एदेण वयणेण अद्धानि जाणानिदि । 'एदे वधा, अवसेसा अवधा त्ति' एदेण  
वधस्स सामित्त जाणानिदि । 'सुहुमसांपराइयसुद्धिसजदद्वाए चरिमसमय गतूण वधो वोच्छि  
जदि' त्ति एदेण ति 'किं चरिमसमए वधो वोञ्जिदि त्ति' पुच्छाए पढम [अपढम-]  
अचरिमपडिसेहमुहेण पडिउत्तरो दिण्णो । अजमेसाण पुच्छाण ण परिच्छेओ कदो । तेणेद

और पाच अन्तराय, इन इन्ध्यासी प्रकृतियोंका पहिले बन्ध नष्ट होता है, पश्चात् उदय ।  
यहा उपसंहारगाथा—

पूवाक् प्रकृतियोंसे शेष जो इन्ध्यामी प्रकृतिया गहनी ह उनना बन्धन्युच्छेद  
पहिले और उदयन्युच्छेद पश्चात् होता है ॥ १० ॥

शेष प्रश्नोंका अर्थ यथाक्रम रहेंगे—

मिथ्यादृष्टिमे लेकर सूक्ष्मसाम्प्रायिकशुद्धिमयत उपगामक व क्षण तक उपर्युक्त  
ज्ञानावरणादि प्रकृतियोंके बन्धक हैं । सूक्ष्मसाम्प्रायिककालके अन्तिम समयमें जाकर बन्ध  
व्युच्छिन्न होता है । ये बन्धक हैं, शेष अबन्धक हैं ॥ ६ ॥

इस सूत्रका अर्थ कहते हैं । यह इस प्रकार है— 'मिथ्यादृष्टिमे लेकर सूक्ष्मसाम्प्रायिक  
क्षण तक' इस बचनसे बन्धाध्वान्नाशित किया है । 'ये बन्धक हैं, शेष अबन्धक  
हैं' इससे बन्धका स्वामित्व ज्ञापित किया है । 'सूक्ष्मसाम्प्रायिकशुद्धिमयतकालके अन्तिम  
समयमें जाकर बन्ध व्युच्छिन्न होता है' इससे भी 'क्या अन्त समयमें बन्ध व्युच्छिन्न  
होता ?' इस प्रश्नका प्रथम और [अप्रथम] अक्षरम समयके प्रतिषेधमुखसे प्रत्युत्तर  
दिया गया है । शेष प्रश्नोंका निर्णय यहा सूत्रमें नहीं किया गया । इसीलिये यह देशामर्शक

देसामासियसुत्तं, तम्हा ण्थ लीणन्थाण परूवणं कम्मामो । त जहा— किं वयो पुञ्ज  
 वोच्छिञ्जदि, किमुदओ पुञ्ज वोच्छिञ्जदि, किं दो वि सम वोच्छिञ्जति, एदासिं तिण्ण पुच्छण  
 बुत्तरो बुच्चदे । एदासिं सोलमण्ण पयडीण वयो पुञ्ज वोच्छिञ्जदि सुहुममापराइयचरिमसमए,  
 उदओ पन्था वोच्छिञ्जदि, पचनाणावरणीय चउदमणावरणीय-पचतराइयाण खीणकमान-  
 चरिमसमए, जसक्ति उच्चागोदानमजोगिचरिमसमए उदयमोच्छेददसणादो । किं सोदएण,  
 किं परोदएण, किं सोदयपरोदएण एदासिं वयो ति पुच्छमस्मिदूण बुच्चदे । एत्थ ताव एदेण  
 सवधेण सोदएण परोदएण सोदय परोदएण नञ्जमाणपयडिपरूवण कम्मामो । त जहा— गिरयाउ-  
 देवाउ गिरयगइ-देवगइ वेउव्वियसरीर आहारसरीर-वेउव्विय-आहारसरीरगोपग-गिरयगइ-देवगइ-  
 पाओग्माणुपुव्वि निन्धयगमिदि एदाओ एक्कारसपयडीओ परोदएण वज्जति । एत्थ उव  
 सहारगाहा—

तित्थयर गिरय-देवाउअ-वेउव्वियउक्क दा वि आहारा ।

एक्कारसपयडीण यो इ परोदए बुत्तो ॥ ११ ॥

पचनाणावरणीय- [ चउदमणावरणीय ] मिच्छत्त तेजा कम्मइयसरीर-वण्णचउक्क  
 अगुरुअलहुअ विराधिर सुरासुह णिमिण पचतराइयमिदि एदाओ सत्तमीमपयडीओ सोदएण

सूत्र हे और देशामशंक होनेसे यहा लीन अर्थात् अतर्निहित अर्थोंका प्ररूपणा करने हैं ।  
 यह इस प्रकार है— क्या बंध पूर्वमें व्युच्छिन्न होता है, क्या उदय पूर्वमें व्युच्छिन्न होता  
 है, या क्या दोनों साथ व्युच्छिन्न होते हैं ? इन तीन प्रश्नोंका उत्तर कहते हैं— इन सोलह  
 प्रकृतियोंका बंध उदय व्युच्छिन्नसे पहिले सूक्ष्मसांप्रदायिक गुणस्थानके अन्तिम समयमें  
 व्युच्छिन्न होता है, तत्पश्चात् उदयका व्युच्छिन्न होती है, क्योंकि पाच ज्ञानावरणीय,  
 चार दर्शनावरणीय और पाच अंतराय, इन चांदह प्रकृतियोंका क्षीणरूपय गुणस्थानके  
 अन्तिम समयमें, तथा यशस्वति व उच्चगोत्र इन दो प्रकृतियोंका अयोगिकेउलीके अन्तिम  
 समयमें उन्त्य बुच्छेद देखा जाता है । 'क्या सोदयमे, क्या परोदयमे, या क्या सोदय  
 परोदयसे इनका बन्ध होता है ?' इस प्रश्नका आश्रयकर उत्तर कहते हैं । अत्र यहा पहिले इस  
 सम्बन्धसे सोदय, परोदय और सोदय-परोदयसे बधनेवाली प्रकृतियोंका निरूपण करते  
 हैं । यह इस प्रकार है— नारकायु, देवायु, नरकगति, देवगति, वैत्रियिकशरीर, आहारक  
 शरीर, वैत्रियिकशरीरगोपाग, आहारकारारागोपाग, नरकगत्यानुपूर्वी, देवगत्यानुपूर्वी  
 और तीर्थकर, ये ग्यारह प्रकृतिया परोदयसे उचती हैं । यहा उपसहारगाथा—

तीर्थकर, नारकायु, देवायु, वैत्रियिकशरीरादि छह और दोनों आहारक, इन  
 ग्यारह प्रकृतियोंका बन्ध परोदयमे कहा गया है ॥ ११ ॥

पाच ज्ञानावरणीय, [ चार दर्शनावरणीय ], मिथ्यात्व, तैजस और कार्मण शरीर,  
 चार, अगुरुअलहुक, स्थिर, आस्थिर, शुभ, अशुभ, निर्माण और पाच अंतराय, ये

वृक्षति । पचदसणावरणीय देवेदणीय सोलसकसाय णवणोकसाय तिरिक्खाउ-मणुस्साउ-  
तिग्गिक्खगइ मणुस्सगइ एइदिय वीइदिय तीइदिय चउररिंदिय-पचिंदियजादि-ओरालियसरीर छ-  
सटाण-ओरालियसरीरअगोवग छसघडण-तिरिक्खगइ मणुस्सगइपाओग्माणुपुव्वि-उवघाद परघाद-  
उस्सास-आदाव उज्जोव-दोनिहायगदि तस थावर-चादर सुहुम पज्जत अपज्जत-पत्तेय साधारण-  
सरीर सुभग-दुभग सुस्सर-दुस्सर आदेज्ज-अणादे-ज-जसकिति-अजसकिति-णीचु-चागोदमिदि  
एदाओ वासीदिपयडीओ सोदय-परोदण वृक्षति । एत्थ उवसहारगाहाओ—

णाणतराय-दसण-यिरादिचउ तेजकम्मदेहाइ ।

णिमिण अगुरुल्लहुअ णणचउक्क च मिच्छत्त ॥ १२ ॥

सत्तानीसेदाओ वृक्षति इ सोदण पयडीओ ।

सोदय-परोदण णि वृक्षतप्सेसियाओ इ ॥ १३ ॥

एत्थ णाणावरणतराइयदसपयडीओ दसणावरणस्स चत्तारि पयडीओ चेव वधमाणाणि ।  
सव्वगुणद्वाणाणि सोदण चेव वधति, मिच्छाइडिप्पहुडि जाव खीणकसाया ति एदासिं  
णिरतरोदयादो सोदण वृक्षमाणपयडीणमन्भते पादादो वा । जसकितिं मिच्छाइडिप्पहुडि

सत्ताईस प्रकृतिया स्वोदयसे वधती ह । पाच दर्शनावरणीय, दो वेदनीय सोलह कपाय, नौ  
नोकपाय, तिर्यगायु, मनुष्यायु, तिर्यग्गति, मनुष्यगति, एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरि  
न्द्रिय, पचेन्द्रिय जाति, औद्धारिकशरीर, छह सस्थान, औद्धारिकशरीरागोपाग, छह सहनन,  
तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, उपघात, परघात, उच्छवास, आताप,  
उद्योत, दो विहायोगति, व्रस, स्थानर, नादर, सूक्ष्म, पयास, अपर्याप्त, प्रत्येक, साधारण  
शरीर, सुभग, दुर्भग, सुस्वर, दुस्वर, आदेय, अनादेय, यशकीर्ति, अयशकीर्ति, नीचगोत्र  
ओर उच्चगोत्र, ये व्यासी प्रकृतिया स्वोदय परोदय दोनों प्रकारसे वधती ह । यहा  
उपसहारगाथायै—

पाच ज्ञानावरण, पाच अन्तराय, दर्शनावरण चार, स्थिर आदिक चार, तैजस और  
कार्मण शरीर, निर्माण, अगुम्फलपुक, वर्णादिक चार और मिथ्यात्व, ये सत्ताईस प्रकृतिया  
तो स्वोदयसे वधती ह और शेष प्रकृतिया स्वोदय परोदयसे वधती ह ॥ १२-१३ ॥

यहा ज्ञानावरण व अन्तरायकी दृश प्रकृतिया तथा दर्शनावरणकी चार ही प्रकृतिया  
वधनेवाली ह । ये अपने बन्ध योग्य स्व गुणस्थानोंमें स्वोदयसे ही वधती ह, फ्याँकि,  
मिथ्यादृष्टिसे लेकर क्षीणकपाय गुणस्थान तक इनका निरन्तर उदय रहता है, अथवा  
इनका पतन स्वोदयसे वधनेवाली प्रकृतियोंके भीतर है । यशकीर्ति प्रकृतिको मिथ्यादृष्टिसे

१ इर णिरयाऊ तित्थ वेणुवियङ्कमहारामिदि जेमि । परउदयेण य वधो मिच्छ सुहुमस पादीओ ॥  
तेजदुग वणचऊ थिर-सुहउल्लयुव णिमिण धुवउदया । सोदयवधा सेसा वासीदा उमयवधाओ ॥ गो क ४०२ ४०३



जाय अमनस्यमाद्दिति सोदण वि परोदण वि वधति, एदेसु दोण एवकदरस्सुदय चादे । उवरिमा सोदण चेव वधति, सन्नामनदप्पहुडिउरिमेसु गुणदोणेषु अजमकिति उदयाभायादे । उच्चागाद मिच्चाइडि प्पहुडि जाय मज्जदासज्जदा ति एदे सोदण परोदण वि वज्जति, एत्थ दोण गोदानसुदयसभायादे । उरिमा पुण सोदण चेव वधति, तथ पीचागोदस्सुदयाभायादे । तम्हा' जसकिति उच्चागोदाणि सोदय परोदयनधा इदि सिद्ध ।

एदामि नथो किं सातरो किं णिरतरो किं सातर निरतरो ति एदासिं पुच्छण पहिक्कण । एत्थ एदेण अत्थमनयेण तान सातर णिरतर सातरणिरतरोण वज्जमाणपयडीओ जाणविमो । त जहा— पचणाणावरणीय णउदसणावरणीय मिच्छत सोलमरुमाय भय दुगुळा आउचउक्क आहार तेरा-कम्मइयमरर आहाग्गरीरअगोपग वण्ण गध रम फास अगुरुजलहुअ उववाड णिमिण तिथयर पंचतराइयमिदि एदाओ चउवण्ण पयडीओ णिरतर वज्जति । तत्थ उवमहारगाहा-

सत्तेताठ धुवाओ तिथयरारार-आउचत्तारि ।

चउरण पयटाओ वज्जति णिरतर सत्ता' ॥ १४ ॥

लेकर असयतमम्यगदष्टि तर स्वोदयसे भा राधते ह और परोदयमे भी वाधते हैं, क्योंकि, इन गुणस्थानोंमें यशकींति और अयशकींतिमेंसे किसी एकका उदय रहता है । असयत मम्यगदष्टिसे ऊपरके गुणस्थानमें जीव स्वोदयसे ही वाधते ह, क्योंकि, सयतासयतसे लेकर उपरिम गुणस्थानोंमें अयशकींतिका उदय नहल रहता । उच्चगोत्रमें मिथ्यादष्टिसे लेकर सयतासयत तकके जीव स्वोदयमे जार परोदयमे भी राधते हैं, क्योंकि, यहा दोनों गोत्रोंका उदय सम्मज हे । परन्तु इससे ऊपरके जीव स्वोदयमे ही वाधते हैं, क्योंकि, यहा नीचगोत्रका उदय नहल रहता । इस कारण यशकींति और उच्चगोत्र प्रकृतिया स्वोदय परोदयम राधनेवालीं ह, यह मित्र हाता ह ।

अर 'उत्त सालह प्रकृतियोंका वध क्या सान्तर है, क्या निरन्तर है, और क्या सान्तर निरन्तर ह ?' ये तीन प्रश्न प्रान्त होते हैं । यहा इस अर्थसमग्रन्धमे पहिले सान्तर निरन्तर और सात्तर-निरन्तर रूपसे वधनेवाली प्रकृतियोंका बोध कराते ह । वह इस प्रकार है—पाच भ्रानावरणीय, ती दशनावरणीय, मिथ्यात्व, मोलह कपाय, भय, दुगुप्सा आयु चार, आहारकशरीर, तैमकशरीर, कामणशरीर, आहाग्गरीरागोपाग, वर्ण, गध, रम, स्पश, अगुरुजलपुक उपघान, निमाण, तीर्थकर ओग पाच अतराय, ये चौवन प्रकृतिया निरन्तर वधतीं ह । यहा उपसहारसाथा—

संतारोस धुवप्रकृतिया, तीधकर, आहारकशरीर, आहारकशरीरागोपाग और चार आयु, ये सव चौवन प्रकृतिया निरन्तर वधतीं ह ॥ १८ ॥

काओ ध्रुववधियपयडीओ ? एदाओ चैत्र आउचउन्क तित्थयराहारदुयविरहिदाओ ।  
एदासिं परूवणाहाओ—

णाणतरायदसय दसण णर मिच्छ सोलस कमाया ।

भयकम्म दुगुच्छा नि य तेजा कम्म च वण्णचट्ट ॥ १५ ॥

अगुरअलहु-उत्ताद गिमिण णाम च होंति सगदाल ।

वओ चउत्त्रियणो धुवन्नीण पयटिनओ ॥ १६ ॥

गिरतरवधस्स धुवन्धस्स को निसेसो ? जिस्से पयडीए पच्चओ जत्थं कत्थ वि जीणे  
अणादि-धुवभायेण लब्भइ सा धुववधपयडी । जिस्से पयडीए पच्चओ<sup>१</sup> गियमेण सादि अद्धओ  
अतोमुहुत्तादिकालानट्टाई सा गिरतरवधपयडी । जिस्से जिस्से पयडीए अद्धान्खण्ण धधवोच्छेदो  
समवइ सा सातरवधपयडी । असादावेदणीय-इत्थि-णतुमयवेद-अरइ-सोग-गिरयगइ-जाइचउक्क-  
हेट्ठिमपचसठाण-पचसघडण-गिरयगइपाओग्गाणुपुत्थि-आदाबुज्जोव-अप्पसत्थविहायगइ-यानर-

शका—ध्रुवन्धी प्रकृतिया कोनसी ह ?

समाधान—चार आयु, तीर्थंकर जोर दो आहारसे रहित ये उपर्युक्त प्रकृतिया ही  
ध्रुवप्रकृतिया हैं । इन प्रकृतियोंकी निरूपक गाथायें—

ज्ञानारण और अतरायकी दश, नौ दर्शनावरण, मिथ्यात्व, सोलह कषाय, भयकर्म  
जुगुप्सा, तैजस और कामेण शरीर, वर्णादिक चार, अगुरकलधु, उपघात और निर्माण  
नामकर्म, ये सतालीस ध्रुवन्धी प्रकृतिया ह । इनका प्रकृतिग्रन्थ सादि, अनादि, ध्रुव पव  
अधुव रूपसे चार प्रकारका होता है ॥ १५-१६ ॥

शका—निरन्तरग्रध और ध्रुवग्रधमें क्या भेद है ?

समाधान—जिस प्रकृतिका प्रत्यय जिस किसी भी जीवमें जनादि एव ध्रुव भावसे  
पाया जाता है वह ध्रुवग्रधप्रकृति है, और जिस प्रकृतिका प्रत्यय नियमसे सादि एव अध्रुव  
तथा अन्तर्मुहूर्त आदि काल तक अग्रस्थित रहनेवाला है वह निरन्तरग्रधप्रकृति है ।

जिस जिस प्रकृतिका कालक्षयसे बन्धव्युच्छेद सम्भव है वह सान्तरवन्धप्रकृति  
है । असातवेदनीय, खीरेद, नपुसकुरेद, अरति, शोक, नरकगति, जाति चार, अधस्तन  
पाच सस्थान, पाच सहनन, नरकगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, आताप, उद्योत, अप्रशास्तविहायो-

१ घादिति मिच्छ-कमाया भय तेजगुरुग गिमिण वण्णचओ । सतेनालधुनाण धदुधा सेसाणय वु दुधा ॥  
गो क १२४

२ प्रतिपु 'पओज्जय' इति पाठ ।

३ प्रतिपु 'पचओ' इति पाठ ।

सुहृम-अपज्जत्त माहाग्ण अयिग्-असुह दुभग-दुस्सर-अणाएज्ज अनसकित्ती एदाओ चोत्तीसपय-  
 डीओ सातर वज्जति' । अयेमेसाओ वतीम पयडीओ सातर गिरतर वज्जति । तामिं णामणिंदसे  
 कीरेदे । त जहा -- मादावेदणीय पुग्गिसेदे हम्म-रत्ति-तिरिक्खगइ मणुस्सगइ-देवगइ पच्चिदिय-  
 जादि-ओगल्लिय-वेउच्चियमग्गि-ममचउरमसउण-ओरात्तिग्-वेउच्चियसरीरअगोणग्-वज्जरिसह-  
 चउण्णारायणमरीग्मघडण-तिरिक्खगइ मणुस्सगइ-देवगइपाओग्गणुपुच्चि-परचादुस्साम-पसत्थ-  
 विहायगइ-तम चादग्-पञ्चत्त-यत्तेयमग्गि यिग् सुह सुभग सुस्सर आदेज्जे जमकित्ति-णीचुचागोद-  
 मिदि सातर गिरत्तेण वज्जमाणपयडीओ' । एत्थ उवमहारगाहाओ --

इयि णउसयणेा जात्तउक्क अत्ताइ गिरयदुग् ।

आराउ चोत्ताग् सोगासुह पचमठाणा ॥ १७ ॥

पचासुहमपटणा विहायगइ अप्पसयिया अणे ।

धान-सुहमासुहदम चोत्तासिट् सातरा मग् ॥ १८ ॥

गति, स्थान, सूक्ष्म, अपर्याप्त साधारण, अस्थिर, अशुभ, दुर्भग, दुस्वर, अनद्वेष और  
 अयशस्वति, ये चोत्तास प्रकृतिया सातर रूपमे ग्रथनी ह । शेष वत्तीस प्रकृतिया  
 सात्तर निरन्तर रूपमे ग्रथनी ह । उनका नामनिर्देश किया जाता है । वह इस प्रकार  
 है -- सानावेदनीय, पुग्गिसेदे, हास्य, गति, निर्यग्गति, मनुष्यगति, देवगति, पच्चिन्द्रियजाति,  
 औदारिकशरीर, वैत्रियिक्खशरीर, समचउरमसउण, औदारिकशरीरगोपाग वैक्रियिक्ख  
 शरीरगोपाग, उच्चपभयअनाराचशरीरसहनन, तियग्गतिप्रायोग्यानुपूया, मनुष्यगति  
 प्रायोग्यानुपूर्वी, देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, पर्याप्त, उच्छवास, प्रशस्तविहायोगति, अस,  
 चादग्, पर्याप्त, प्रत्येअद्वारा, स्थिर, शुभ, सुभग, सुस्वर, जादेय, यशस्वति,  
 नीचगोय और उच्चगोय, ये सात्तर निरन्तर रूपसे वत्तेघाली प्रकृतिया है । यहा  
 उपसहारगाथायें --

स्त्रियिदे, मणुसक्खेदे, जाति चार, असात्तावेदनीय, नरक्कगति, नरक्कगतिप्रायोग्यानु  
 पूर्वी, आत्ताप, उद्योत, जराणि, शोक, अशुभ, पाच सस्थान, पाच अशुभ सहनन, अयशस्व  
 विहायोगति स्थान, सूक्ष्म पर अशुभ आदि अय एग्, इस प्रकार ये वत्तीस  
 प्रकृतिया यहा सात्तर ग्रथनी ह ॥ १७-१८ ॥

१ गिरयदुग्-जाद्वक्क सक्खि-मठाणपणपणग् ॥ दुग्गमणादाउदुग् धानरत्तग् अत्तादमत्तिवी । अद  
 घो चद सात्तरा होंति चोत्तीमा ॥ गो क ४ ४-४० ।

२ प्रलीपु ' सुग्गा दुस्सर जाद्वक्क ' इति पाठ ।

३ हर ण गि चोत्तासिय-वग्गिचियदुग् पमअग्गि वज्ज । पग्घाउदुग् ममचउर पच्चिदिय तपदस साद ॥ इस  
 अदुग् मग्गिचियवक्खि सात्तरा होंति । अदुग् पुण पच्चिउर गिरतग् हाति वत्तीमा ॥ गा क ४०६-४०७ ॥

सातरणिरतेण य वत्तीसत्तसेसियाओ पयटीओ ।

वत्तनि पच्चयाण ढुपयागण त्तसगयाओ ॥ १९ ॥

एत्थ पचणाणानरणीय चउदसणानरणीय-पचत्तराडियपयडीओ णिरत्त वज्झंति, धुव-  
वधित्तादो । जसकित्ती सातर णिरतर वज्झदि' । कुदो ? मिच्छाडिट्ठिप्पहुडि जाण पमत्तो ति  
सातर-णिरतर वज्झड, पडिवक्खअजमकित्तीए नममभादो । उररि णिरतर वज्झड जसकित्ती,  
पट्टिक्खपयटीए वधाभावादो । तेण जमकित्ती वधेण मातर-णिरतरा । उच्चागोद मिच्छाडिट्ठि-  
सामणमम्माडिट्ठिणो सातर वधति, पट्टिक्खपयटीए तत्थ वधसभावादो । उवरिमा पुण णिरतर  
वधति, पडिवक्खपयडीए तत्थ नयाभावादो । भोगभूमिमु पुण मज्जगुणट्टाणजीना उचागोदं  
चेव णिरतर वधति, तत्थ पत्तकाले देवगड मोत्तूण अण्णगड्ढेण नयाभावादो । तेण उचागोद  
पि वयेण सातर-णिरतर ।

एदासिं पयडीण किं सपचओ वधो किमपचओ त्ति पुच्छिदे उच्चदे— सपच्चगो  
वधो, ण णिकारणो । एत्थ ताण पच्चयपरूवणा कीदो । त जहा— मिच्छत्तामजम कमाय-

शेष वत्तीसत्त प्रकृतिया मूल व उत्तर भेद रूप दो प्रकार प्रत्ययोंके वशीभूत होकर  
सान्तर निरन्तर रूपसे पधती है ॥ १९ ॥

यहा पांच ज्ञानावरण, चार दर्शनावरण जोर पांच अन्तराय प्रकृतिया निरन्तर  
वधती है, क्योंकि, य प्रकृतिया ध्रुववर्धी है । यशस्वीतिंको जीव सान्तर निरन्तर रूपसे  
वाधते है । इसका कारण यह है कि मिथ्यादृष्टिसे लेकर प्रमत्त गुणस्थान तक यह प्रकृति  
सान्तर निरन्तर पधती है, क्योंकि, यहा इसकी प्रतिपत्ती अशस्वीतिना वन्ध सम्भव है ।  
प्रमत्त गुणस्थानसे ऊपर यशस्वीतिं प्रकृति निरन्तर पधती है, क्योंकि, वहा प्रतिपक्ष  
प्रकृतिसे वन्धना अभाव है । इसीलिये यशस्वीति वन्धसे सान्तर निरन्तर है । उच्चगोत्रको  
मिथ्यादृष्टि आग सामादनसम्यग्दृष्टि जीव सान्तर वाधते है, क्योंकि, उनमें प्रतिपक्ष  
प्रकृतिका न्य सम्भव है । परन्तु उपरितन गुणस्थानपती जीव उसे निरन्तर वाधते हैं,  
क्योंकि, वहा प्रतिपक्ष प्रकृतिना वन्ध नहीं रहता । तथा भोगभूमियोंमें सर्व गुणस्थानपती  
जीव केरत उच्चगोत्रको ही निरन्तर वाधते है, क्योंकि, वहा पर्याप्तकालमें देवगतिको  
छोटकर अन्य गतियोंका वन्ध नहीं होता । इसलिये उच्चगोत्र में वन्धसे सान्तर निरन्तर है ।

' इन प्रकृतियोंका क्या सप्रत्यय अर्थात् सकारण पध होता है या क्या अप्रत्यय  
अर्थात् अकारण वन्ध होता है ? ' इस प्रश्नका उत्तर कहते है— इन प्रकृतियोंका वन्ध  
सकारण होता है, अकारण नहीं । यहा पहिले प्रत्ययोंकी प्ररूपणा की जाती है । वह इस

[५३] । एषः कर्त्तव्यः कर्मिणः विनाशितोऽस्ति तः पश्यते ॥  
 एतेऽपि एवमेव विनाशितोऽस्ति कर्मिणः पश्यते । एषः कर्मिणः पश्यते  
 विनाशितोऽस्ति कर्मिणः पश्यते ॥५४॥ एतेऽपि एवमेव विनाशितोऽस्ति  
 कर्मिणः पश्यते । एतेऽपि एवमेव विनाशितोऽस्ति कर्मिणः पश्यते ॥  
 एतेऽपि एवमेव विनाशितोऽस्ति कर्मिणः पश्यते ॥  
 एतेऽपि एवमेव विनाशितोऽस्ति कर्मिणः पश्यते ॥  
 एतेऽपि एवमेव विनाशितोऽस्ति कर्मिणः पश्यते ॥  
 एतेऽपि एवमेव विनाशितोऽस्ति कर्मिणः पश्यते ॥  
 एतेऽपि एवमेव विनाशितोऽस्ति कर्मिणः पश्यते ॥  
 एतेऽपि एवमेव विनाशितोऽस्ति कर्मिणः पश्यते ॥  
 एतेऽपि एवमेव विनाशितोऽस्ति कर्मिणः पश्यते ॥  
 एतेऽपि एवमेव विनाशितोऽस्ति कर्मिणः पश्यते ॥

इनमें आहारक और आहारकमिथको कम कर देनेपर निर्वाणस्य  
 प्रत्यय पचन (५५) होते है। इन प्रत्ययोंसे निर्वाणस्य सूत्रोक्त सोलह प्रकृतियों  
 वाधता है। इनमें पाच निर्वाणप्रत्ययोंको अलग कर देनेपर पचास (५०) प्रकृतियों  
 हैं। इन प्रत्ययोंसे सामान्यमन्य दाष्ट सूत्रोक्त सोलह प्रकृतियोंको वाधता है। इन  
 प्रत्ययोंसे आहारकमिथ वैश्विकमिथ काम्य और चार अन्त्यावृत्तियों को अलग  
 कर देनेपर तेजालीस प्रत्यय होते हैं (५३)। इन प्रत्ययोंसे सप्तविंशति  
 प्रकृतियोंको वाधता है। तेजालीस प्रत्ययोंमें आहारकमिथ वैश्विकमिथ और इन  
 प्रत्ययोंको मिला देनेपर छयालीस प्रत्यय होते हैं (५६)। इन प्रत्ययोंसे अष्टविंशति  
 विरहित सोलह प्रकृतियोंको वाधता है। इन अष्टविंशति दाष्टिके प्रत्ययोंमें चार  
 अप्रत्याख्यानांतरण आहारकमिथ वैश्विक, वैश्विकमिथ काम्य और चार  
 इन नौ प्रत्ययोंको कम कर देनेपर सैंतीस प्रत्यय होते हैं (३५)। इन प्रत्ययोंसे सत्त  
 विरहित सोलह प्रकृतियोंको वाधता है। इन सत्तासयतके सैंतीस प्रत्ययोंमें चार  
 प्रत्याख्यान और ग्यारह अमयम प्रत्ययोंको कम कर देनेपर दोष दारिद्र्य रहते हैं ॥  
 आहारक और आहारकमिथको मिला देनेपर चौबीस प्रत्यय होते हैं (२५)। इन प्रत्ययोंसे  
 प्रमत्तसयत विरहित सोलह प्रकृतियोंको वाधता है। इन चौबीस प्रत्ययोंमें अष्ट  
 द्विकको कम कर देनेपर दारिद्र्य प्रत्यय होते हैं (२२)। इन प्रत्ययोंसे अष्टविंशति और

अस्त्विमिच्छत्' । एवमेदे मिच्छत्पञ्चया पच । ५ । ।

असजमपञ्चओ दुग्निहो हृदियामजम-पाणामजमेभेण । तत्थ हृदियासजमो छ्विहो परिम रम रूप-गध मद्-णोडदियासजमेभेण । पाणामजमो त्रि छ्विहो पुढ्वि आउ तेउ वाउ-वणप्फद्दि-तसामजमेभेण । अमजमसत्त्वसमासो वारम । १० । कषायपञ्चओ पचवीसग्निहो सोल्लम्कसाय-णउणोक्रमायमंण' । कसायपञ्चयसमासो एतो । २५ । जोगपञ्चओ त्रिविहो मण-वचि कायजोगभेण । सच्च मोस-मञ्चमोस-अमञ्चमोसभेण चउव्विहो मणजोगो । वचिजोगो त्रि चउव्विहो मच्च मोस सच्चमोस अमञ्चमोसभेण' । कायजोगो सत्तविहो ओरालिय-ओरालियमिस्म वेउव्विय-वेउव्वियमिस्म आहार आहारमिस्म-कम्मउयकाय-जोगभेण । एदेमि मत्त्वसमामो पण्णारम । ३० । सच्चपञ्चयसमासो सत्तावण

है । इस प्रकार ये मिथ्यान्त्र प्रत्यय पाच ( ५ ) है ।

असत्यम प्रत्यय इन्द्रियात्म्यम और प्राण्यत्म्यमे भेदसे दो प्रकार है । उनमें इन्द्रियात्म्यम स्पर्श, रस, रूप, गन्ध, शब्द और बोद्धिन्द्रिय जनित जन्मयमके भेदसे छह प्रकार है । प्राण्यत्म्यम भी पृथिवी, अप, तेज, वायु, धनस्पति और वन जीवोंकी विराधतामे उत्पन्न असत्यमके भेदसे छह प्रकार है । सत्र जन्मयम मिल्कर सत्त्व ( १० ) होते हैं ।

कषायप्रत्यय सोल्लह कषाय और नो नोरुपायके भेदसे पच्चीस प्रकार है । यह कषाय प्रत्ययोंका योग पच्चीस ( २५ ) हुआ ।

योगप्रत्यय मन, पचन और काय योगके भेदसे तीन प्रकार है । मनोयोग चार प्रकार है— सत्यमनोयोग, मृपामनोयोग, सत्य-मृपामनोयोग और असत्य मृपामनोयोग । वचनयोग भी सत्यवचनयोग, मृपावचनयोग, सत्य मृपावचनयोग और असत्य मृपावचनयोग भेदसे चार प्रकार है । नाययोग औदारिक, ओदारिकमिथ्र, वक्त्रियिक, वैक्त्रियिक मिथ्र, आहारर, आहाररमिथ्र, और कर्मण नाययोगके भेदसे सात प्रकार है । इनका सर्वयोग पन्द्रह ( १५ ) होता है । सत्र प्रत्ययोंका योग सत्तावन ( ५७ ) हुआ ।

१ मत्त्वदर्शन ज्ञान चाग्निणि कि मोक्षमात्त स्याद्ध नरोत्थयनस्पतापमिञ्च मद्यय । म मि ८, १ सत्यमन्त्रन ज्ञान-चारिणाति मोक्षमात्त कि स्याद्ध न वदि मत्विद्धन सद्यय । त ग ८, १, २८, कि वा मवेन वा जेनो धर्मो वितादिदक्षण । इति यत्र मत्विद्धन मनेर् सात्तयिन् हि तत् । त मा ५, ५

२ अत्रता 'सच्चमोम अम वमान अम' सच्चमामभेण चउव्विहो मणजोगो । वचिचेतो त्रि कत्रतो 'सच्चमाम अमचमोम सच्चमोम सच्च मोम असच्चमोम अमचमोमभेण ३०' इति पाठ ।

[ ५७ ] । एत्थ आहारदुगमणिदे मिन्त्राष्टिपडिनद्वपया पचचयाम होति [ ५७ ] ।  
 एदेहि पचएहि मिच्छाईही सुत्तुत्तमाल्मपयडीओ वधदि । एत्थ पचमिउत्तापचचयमु अत्र  
 णिदेसु पयामपचया होति [ ५७ ] । एदेहि पचणहि मापयाम्माईही सुत्तुत्तमाल्मपयडीओ  
 वधदि । पयामपचयमु ओरालियमिम्म उअनियमिम्म कम्मइय अणताणुअचउपक्वसु अत्र  
 णिदेसु तेदाल पचया होति [ ५३ ] । एदेहि पचणहि मम्मामिच्छाईही माल्मपयडीओ वधदि ।  
 तेदालपचयमु ओरालियमिम्म उअनियमिम्म कम्मइयपचयमु पणिरत्तेसु गणाल पचया [ ५ ] ।  
 एदेहि पचणहि अमत्तमम्माईही अप्पिमाल्मपयडीओ वधदि । एदेसु अमत्तमम्माईहि  
 पचयसु अपचयणचउत्त-ओरालियमिम्म-उअनिय-उअनियमिम्म-कम्मइय-त्तमात्त-त्तमे  
 अणिदेसु सत्ततीसपचया हाति [ ३७ ] । एदेहि पचणहि मत्तमत्तमे अप्पिमाल्म  
 पयडीओ वधदि । एदेसु सत्तमत्तमे मत्ततीमपचयसु पचयणचउत्त-एककाम  
 असत्तमपचयसु अणिदेसु अत्तमेसा वारीम, तथ आहारदुगे पणिरत्ते चउत्तम पचया  
 होति [ २३ ] । एदेहि पचएहि पत्तमत्तमे अप्पिमाल्मपयडीओ वधदि । एदेसु चउत्त  
 पचयसु आहारदुगमणिदे वारीम पचया होति [ २३ ] । एदेहि पचणहि अप्पिमत्तमत्त

इनमेंसे आहारक और आहारकमिथको अत्र करदनेपर मिथ्यादृष्टिसे सम्बद्ध  
 प्रत्यय पचयन ( ५५ ) हात है । इन प्रत्ययोंसे मिथ्यादृष्टि सूत्रेण सोलह प्रकृतियोंको  
 बाधता है । इनमेंसे पाच मिथ्यात्तप्रत्ययोंको अलग करदनेपर पचास ( ५० ) प्रत्यय हाते  
 हैं । इन प्रत्ययोंसे सासादनसम्बन्धदृष्टि सूत्रेण सोलह प्रकृतियोंको बाधता है । इन पचास  
 प्रत्ययोंमेंसे औदारिकमिथ, वैभिविकमिथ, कामण और चार अतन्नानुगन्धी प्रत्ययोंका  
 अलग करदनेपर तेतालीस प्रत्यय होने हैं ( ४३ ) । इन प्रत्ययोंसे सम्यग्मिथ्यादृष्टि सोलह  
 प्रकृतियोंको बाधता है । तेतालीस प्रत्ययोंमें औदारिकमिथ, वैभिविकमिथ और धर्मण  
 प्रत्ययोंका मिलानेपर छयालीस प्रत्यय हात हैं ( ४१ ) । इन प्रत्ययोंसे असयतसम्बन्धदृष्टि  
 निवक्षित सोलह प्रकृतियोंको बाधता है । इन असयतसम्बन्धदृष्टिके प्रत्ययोंमेंसे चार  
 अप्रत्याग्यानाउरण, औदारिकमिथ, वैभिविक, वैभिविकमिथ, कामण और वसासयम,  
 इन नौ प्रत्ययोंको कम करदनेपर सैतीस प्रत्यय होने हैं ( ३७ ) । इन प्रत्ययोंसे सयतासयत  
 निवक्षित सोलह प्रकृतियोंका बाधता है । इन सयतासयतके सैतीस प्रत्ययोंमेंसे चार  
 प्रत्याग्यान और ग्यारह असयत प्रत्ययोंको कम करदनेपर शेष वारिस रहते हैं, उनमें  
 आहारक और आहारकमिथको मिला देनेपर चौतीस प्रत्यय होते हैं ( २४ ) । इन प्रत्ययोंसे  
 प्रमत्तसयत निवक्षित सोलह प्रकृतियोंको बाधता है । इन चौतीस प्रत्ययोंमेंसे आहारक  
 द्विकको कम करदनेपर बाइस प्रत्यय होने हैं ( २० ) । इन प्रत्ययोंसे अप्रमत्तसयत और

अपुञ्चकरणपङ्कटउत्तममा' खना च अपिदसोलसपयडीओ वधति । एदेसु चैव उष्णोक्त्वाएसु  
 अवाणिदेसु सोलस ह्येति । १६ । एदेहि पचएहि पदमअणियट्टी सोलस पयडीओ वधदि । एत्थ  
 णुसयवेदे अणदि पण्णारस होति । १५ । एदेहि पचएहि निदियअणियट्टी अपिदपयडीओ  
 वधदि । एदेसु इत्थियेदे अवाणिदे चोइस होति । १४ । एदेहि पचएहि तदियअणियट्टी  
 अपिदपयडीओ वधदि । एत्थ पुरिसवेदे अणदि तेरह होति । १३ । एदेहि पचएहि  
 चउत्थअणियट्टी अपिदपयडीओ वधदि । पुणो एत्थ कोधमजलणे अवाणिदे वारस होति  
 । १२ । एदेहि वाग्गसपचएहि पचमअणियट्टी अपिदपयडीओ वधदि । पुणो एत्थ माण-  
 सजलणे अवाणिदे एक्कारस होति । ११ । एदेहि पचएहि उट्टुअणियट्टी अपिदपयडीओ  
 वधदि । एदेहिंतो मायासजलणे अवाणिदे दस होति । १० । एदेहि पचएहि सत्तमअणियट्टी  
 अपिदपयडीओ वधदि । एदेहि चैव दसहि पचएहि सुद्धमसापराइयो' नि अपिदसोलसपयडीओ  
 वधदि । दससु लोभसजलणे अणदि णर ह्येति । ९ । एदे उवसतरूमाय-स्त्रीणरूमाएहि  
 वज्जमाणपयटीण पचया । एदेहिंतो मज्झिमदो-दोमणअधिजेगे अणिय ओरालियमिस्त-

अपूर्वकरणप्रविष्ट उपशमक एत क्षपक जीव विप्रक्षित सोलह प्रकृतियोंको वाधते ह ।  
 इन्हीं प्रत्ययोंमेंसे छह लोकपायोंको अलग करदेनेपर सोलह होते ह (१६) । इन प्रत्ययोंसे  
 प्रथम अनिवृत्तिकरण सोलह प्रकृतियोंको वाधता हे । इनमेंसे नपुंसकवेदको अलग कर  
 देनेपर पन्द्रह होते ह (१५) । इन प्रत्ययोंसे द्वितीय अनिवृत्तिकरण विप्रक्षित प्रकृतियोंको  
 वाधता ह । इनमेंसे स्त्रीवेदको कम करदेनेपर चौदह होते ह (१४) । इन प्रत्ययोंसे तृतीय  
 अनिवृत्तिकरण विप्रक्षित प्रकृतियोंको वाधता हे । इनमेंसे पुंस्ववेदको अलग करदेनेपर  
 तेरह होते ह (१३) । इन प्रत्ययोंसे चतुर्थ अनिवृत्तिकरण विप्रक्षित प्रकृतियोंको वाधता  
 है । पुन इनमेंसे कोधसजलनको अलग करदेनेपर बारह होते ह (१२) । इन बारह  
 प्रत्ययोंसे पचम अनिवृत्तिकरण विप्रक्षित प्रकृतियोंको वाधता हे । पुन इनमेंसे माणसज-  
 लको कम करदेनेपर ग्यारह होते ह (११) । इन प्रत्ययोंसे छटा अनिवृत्तिकरण विप्रक्षित  
 प्रकृतियोंको वाधता है । इनमेंसे मायासजलनको अलग करदेनेपर दस होते ह (१०) । इन  
 प्रत्ययोंसे सप्तम अनिवृत्तिकरण विप्रक्षित प्रकृतियोंको वाधता है । इन्हीं दश प्रत्ययोंसे  
 सुद्धमसापराधिक भी विप्रक्षित सोलह प्रकृतियोंको वाधता हे । इन दश प्रत्ययोंमेंसे  
 लोभसजलनको अलग करदेनेपर नौ प्रत्यय होते ह (९) । ये नौ उपदान्तरूपाय और  
 क्षीणरूपाय जीवोंके द्वारा वार्धा जानेवाली प्रकृतियोंके प्रत्यय ह । इनमेंसे मध्यम

१ अत्रतो 'अपुञ्चकरणपङ्कटउत्तममा' इति पाठ ।

२ प्रतिपु 'सापराइया' इति पाठ ।



अस्मद्भ्यः कायनेषु पत्रिभ्योः सत्तं होति । ७ । एंहि सन्दि पच्यति सजोगिनिषो  
 वधति । एत उपसंहारगाथाओ —

चतुष्पञ्चदशो यथा पत्रम उग्रमिति निरुद्धभा ।  
 मिम्ममत्रिदिशो उग्रमिदृग च सैगदमष्टि ॥ २० ॥

उग्रमिदृग च पुत्र द्रपचओ जोगपच्यओ निष्ण ।  
 मस्यपच्यया मत्रु अट्टणग एति मत्तमा ॥ २१ ॥

पणपणगा इ वणगा निराउ प्राउ मत्तनीमा य ।

चतुशीम ऽ जगसा सायम एगुग चाप णउ सत्तं ॥ २२ ॥

सपथि एगममद्भ्यउत्तरुत्तरपच्यए चोदमनीउसमायेसु भणिस्सामो । त जहा—

दो दो अर्थात् मृगा और सत्यमृगा मन और वचन योर्गोषो अल्प पच्ये अंदादिमिध्र य  
 कामण काययोगो मित्वा दनेपर सात होते हैं ( ७ ) । इन सात प्रत्ययोंके संयोगी पिन  
 [ एक सापत्वेदनीयको ] बाधते हैं । यहा उपसंहारगाथायें—

प्रथम गुणस्थानमें चारों प्रत्ययोंके बाध होता है । इससे ऊपर तीन गुणस्थानोंमें  
 मिथ्यात्परो लोढक शेष तीन प्रत्ययसमुच्च बाध होता है । द्वेषमयत गुणस्थानमें  
 मिथ्यरूप अर्थात् विरलाविरतरूप द्वितीय प्रत्यय और क्वाय य योग ये दोष दोनों उपरिम  
 प्रत्यय रहते हैं । इसके ऊपर पांच गुणस्थानोंमें क्वाय और योग इन दो प्रत्ययोंके निमित्तसे  
 बाध होता है । पुन उपशातमोहादि तीन गुणस्थानोंमें क्वाय योगनिमित्तक बाध होता  
 है । इस प्रकार गुणस्थान क्रममें आठ क्रमोंके ये सामान्य प्रत्यय हैं ॥ २०-२१ ॥

पचयन, पचास, तेतालीस, छयालीस, सैंतीस, चौतीस, दो घाट घाईस, दो  
 सौह और इसके आगे नौ तरु एक एक क्रम अर्थात् पन्द्रह, चौदह, तेरह, बारह,  
 ग्यारह, दश, नव, ना, नौ और सात, इस प्रकार क्रममें मिथ्यात्पदि अपूर्णकरण  
 तरु आठ गुणस्थानोंमें, अनिष्टुत्तररणके सात भागोंमें तथा सूक्ष्ममापरायादि संयोग  
 केजली तक दोष गुणस्थानोंमें बाधप्रत्ययोंकी सख्या है ॥ २० ॥

अथ एक समर्थमें हेनेवाले उत्तरोत्तर प्रत्ययोंके चौरह जीवसमासोंमें कहते हैं ।

१ अपत्रा 'उवगितिण्वपच्यइआ', वाप्रता 'उवगितिण्व च पच्यइआ' इति पाठ ।

२ अप्रता 'समग्लेर्महि', वाप्रती 'दसइदेसदि' इति पाठ । चतुष्पञ्चदशो वधा पत्रमे णत्तरानि  
 निपच्यइया । मिस्सागदिदिउ उवगितुम च देसइदेगमि ॥ गो क ७८७

३ गो क ७८८

४ पच्यणो पणनाता निराउ धादात् सपत्तमा य । चतुर्विंशता वार्तीमा वार्तीमयपुत्ररलो वि ॥ धूले  
 धोडगपहुदो ण्णए जाप हादि दस ठाण । सुदुसादिदु दय णवप जोगिभिह सत्तया ॥ गो क ७८९-७९०

५ अत्रती 'पच्यइ' इति पाठ ।

तत्थ ताप मि-ठाइडिस्म, जहण्णेण दस पच्चया । पचसु मिच्छतेसु एक्को । एक्केण इदिएण एक्क काय जहण्णेण निराहेदि [ ति ] दोणिण अमजमपच्चया । अणताणुवनि-  
चउक्क विमज्जिय मिच्छत गयस्स आपलियमेत्तकालमणताणुवनिचउक्कस्सुदयाभावादो  
चारससु कमाएसु तिणिण कसायपच्चया । तिसु वेदेसु एक्को । हस्स रदि-अरदि सोगदोसु  
जुगलेसु एककदर जुगल । दससु जोगेसु एक्को जोगो । एवमेदे सत्त्वे वि जहण्णेण दस  
पच्चया [ १० ] । पचमु मिच्छतेसु एक्को । एक्केण इदिएण उक्काए निराहेदि ति सत्त असजम-  
पच्चया । सोल्लेसु कमाएसु चत्तारि कमायपच्चया [ ३ ] । तिसु वेदेसु एक्को । हस्स रदि-  
अरदि सोगदोजुगलेसु एक जुगल । भय दुगुठाओ दोणिण । तेरसेसु जोगपच्चएसु एक्को ।  
एवमेदे सत्त्वे वि अट्टारस होति [ १८ ] । एवमेदेहि दम-अट्टारसजहण्णुक्कस्सपच्चएहि मिच्छा-  
इड्डी अप्पिदसोल्लमपयडीओ वधड ।

एक्केणदिएण एक्क काय निराहेदि ति दोअमजमपच्चया । सोल्लेसु कमाएसु  
चत्तारि कमायपच्चया । तिसु वेदेसु एक्को वेदपच्चओ । हस्स रदि अरदि सोगदोजुगलेसु  
एककदर जुगल । तेरससु जोगेसु एक्को । एव जहण्णेण सामणस्स दस पच्चया होति [ १० ] ।  
उक्कसेण सत्तरस पच्चया होति, मिच्छत्तस्सुदयाभावादो [ १७ ] । एवमेदेहि जहण्णुक्कस्स-

यह इस प्रकार है—उनम मिथ्यादृष्टिके जघन्यमेदश प्रत्यय होते हैं । पाच मिथ्यात्त्रयोंमेंसे एक, मिथ्यादृष्टि एक इन्द्रियसे एक कायकी जघन्यसे विराधना करता है, इस प्रकार दो असयम प्रत्यय, अनन्तानुबन्धिचतुष्टयका विसयोजन करने मिथ्यात्त्रको प्राप्त हुए जीवके आवलीमान काल तक अनन्तानुबन्धिचतुष्टयका उदय न रहनेसे चारह कर्मायोंमें तीन कर्माय प्रत्यय, तीन वेदोंमें एक, हान्य रति और अरति शोक इन दो युगलोंमेंसे एक युगल, तथा दश योगोंमें एक योग, इस प्रकार ये सब ही जघन्यमेदश प्रत्यय होते हैं (१०) । पाच मिथ्यात्त्रयोंमें एक, एक इन्द्रियसे छह कर्मायोंकी विराधना करता है, अतः सात असयम प्रत्यय, सोल्लह कर्मायोंमें चार कर्माय प्रत्यय, तीन वेदोंमें एक, हान्य रति और अरति शोक इन दो युगलोंमें एक युगल, भय व जुगुत्सा दो, तेरह योग प्रत्ययोंमेंसे एक, इस प्रकार ये सभी अठारह होते हैं (१८) । इस प्रकार इन जघन्य दश और उत्कृष्ट अठारह प्रत्ययोंसे मिथ्यादृष्टि जीव विवक्षित सोल्लह प्रकृतियोंकी राधता है ।

एक इन्द्रियसे एक कायकी विराधना करता है इस प्रकार दो असयम प्रत्यय, सोल्लह कर्मायोंमें चार कर्माय प्रत्यय, तीन वेदोंमें एक वेद प्रत्यय, हान्य रति और अरति शोक इन दो युगलोंमें एक युगल, तेरह योगोंमें एक योग, इस प्रकार सामान्यसम्यग्दृष्टिके जघन्यमेदश (१०) और उत्कर्षसे सत्तरह प्रत्यय होते हैं, क्योंकि, उसके मिथ्यात्त्रका उदय नहीं रहता (१७) । इस प्रकार क्रमसे इन जघन्य और उत्कृष्ट दश व सत्तरह प्रत्ययोंसे

दस सत्तारमपञ्चदशि मामणमम्मादिद्वि अण्दिमोत्तमपयटीश्रो नरणि ।

एक्केणिदिण्ण एक्क काय विरोहेदि ति दो अमंनमपञ्चया । अणताणुवधि चटुक्कपदिरित्तधारमरुमाण्णु तिण्णि रुमायपञ्चया । तिसु वेदसु एक्को । हम्म रदि अग्दि सोगदो जुगलेसु एक्क । त्ससु जोगेसु एक्को । एग्गेदे मन्ने वि णय हँति । ७ । एक्केणिदिण्ण छक्काण विरोहेदि ति मत्त अमंनमप चया । अणताणुवधिविरोहिदनात्मकमाण्णु तिण्णि रुमायपञ्चया । तिसु वेदसु एक्को । हम्म रदि-अग्दि सोगदो जुगलेसु एक्कर जुगल । दो भय दुगुछाओ । दमसु जोगेसु एक्को । एग्गेदे मंत्तम पञ्चया । १६ । एदेहि जहण्णुक्कससणर मोत्तसप चण्हि मम्माभि उट्टी अमंनदमम्माइद्वि च अण्दिमोत्तमपयटीश्रो वधदि ।

एक्केणिदिण्ण एक्क काय विरोहेदि ति दो असजमपञ्चया । अणताणुवधि-अ चक्काणचउत्तरिरोहिदअट्टकमाण्णु त्ते रुमायपञ्चया । तिसु वेदसु एक्को । हम्म रदि-अग्दि सोगदो जुगलेसु एक्क । णजोगेसु एक्को । एग्गेदे अट्ट । ८ । एक्केणिदिण्ण पक्काण विरोहेदि ति छअमजमपञ्चया । दो कसायपञ्चया । एक्को वेदपञ्चओ । हम्म रदि-अग्दि सोग

सामादनसम्यग्दष्टि विरक्षित सालह प्रणितियाँके रात्रता है ।

एक इन्द्रियसे एक वायकी विराधना करता है इस प्रकार दो असंयम प्रत्यय, अनन्तावधिचतुष्टयके छोड़कर शेष बारह क्पायोंमें तीन क्पाय प्रत्यय, तीन वेदोंमें एक, हान्य रति और अग्नि शोक इन दो युगलोंमेंसे एक, दश योगोंमेंसे एक, इस प्रकार ये सभी नौ प्रयय होते हैं ( ९ ) । एक इन्द्रियसे छह कायोंकी विराधना करता है इस प्रकार सात असंयम प्रत्यय, अनन्तावधिचतुष्टयके रहित बारह क्पायोंमें तीन क्पाय प्रत्यय, तीन वेदोंमें एक, हान्य-रति और अग्नि-शोक इन दो युगलोंमें एक युगल, भय और जुगुप्सा ये दो, दश योगोंमें एक, इस प्रकार ये सोलह प्रत्यय होते हैं ( १६ ) । इन ज्ञान्य और उत्कृष्ट नौ और सोलह प्रत्ययोंसे सम्यग्मिव्याहृष्टि और असंयतसम्यग्दष्टि जोय विरक्षित सोलह प्रणितियाँके राधता है ।

एक इन्द्रियसे एक वायकी विराधना करता है इस प्रकार दो असंयम प्रत्यय, अनन्तावधिचतुष्टय और अप्रत्यारयानावर्णचतुष्टयके रहित आठ क्पायोंमें दो क्पाय प्रत्यय, तीन वेदोंमें एक, हान्य रति और अग्नि-शोक इन दो युगलोंमें एक, नौ योगोंमें एक, इस प्रकार ये आठ प्रयय हात ह ( ८ ) । एक इन्द्रियसे पांच कायोंकी विराधना करता है इस प्रकार छह असंयम प्रत्यय, दो क्पाय प्रत्यय, एक वेद प्रत्यय, हान्य-रति और अग्नि शोक इन दो युगलोंमेंसे एक, भय और जुगुप्सा, तथा नौ योगोंमेंसे एक, इस

दोण्हं जुगलणमेन्कदर । भय दुगुछाओ । णजजेगुसु एन्को । एन्मेदे चोदम । १४ । एदेहि जहण्णुक्कस्मअट्ट-चोदसपञ्चएहि सजदासजदो अप्पिदसोलमपयडीओ वधदि ।

चदुसजलणेसु एक्को कसायपञ्चओ । तिसु वेदेसु एक्को । हस्म रदि अरदि-सोग-दोण्हं जुगलणमेन्कदर । णजसु जेगुसु एन्को । एन्मेदे पच जहण्णेण पञ्चया । ५ । एक्को कमायपञ्चओ । एको वेदपञ्चओ । हस्म रदि अरदि-सोगदोण्णेण जुगलणमेन्कदर । भयदुगुछाओ । णवसु जेगुसु एन्को । एन्मेदे सत्तुक्कस्मपञ्चया । ७ । एन्मेदेहि जहण्णुक्कस्सपच-सत्त-पञ्चएहि पमत्तसजदो अप्पमत्तमजदो अपुञ्चकरणो च अप्पिदपयडीओ वधदि ।

एन्को सजलणकमाओ । एन्को जेगो । एन्मेदे जहण्णेण दो पञ्चया । २ । । उन्कस्सेण तिण्णि वेदेण सह । ३ । । एदेहि जहण्णुक्कस्सदो-तिण्णिपञ्चएहि अणियट्टी अप्पिदसोलसपयडीओ वधदि ।

लोभकमाओ एक्को । [ एक्को ] जोगपञ्चओ । एन्मेदेहि जहण्णेण उन्कस्सेण वि दोहि पञ्चएहि सुहमसापराडओ अप्पिदपयडीओ वधदि । ऊपर उन्मत्तकमाओ क्षीणकमाओ सजोगी च एक्केण चैव जेगेण वधति । एत्थ उवमहारगाहा—

प्रकार ये चौदह प्रत्यय ह । इन जघन्य ओर उत्कृष्ट आठ उ चोदह प्रत्ययोंसे सयतामंयत जीव विवक्षित मोलह प्रवृत्तियोंको बाधता हे ।

चार सजलनोंमेंसे एक कयाय प्रत्यय, तीन वेदोंमेंसे एक, हास्य रति ओर अरति शोक इन दो युगलोंमेंसे एक, तथा नौ योगोंमेंसे एक, इस प्रकार जघन्यसे ये पाच प्रत्यय हे ( ५ ) । एक कयाय प्रत्यय, एक वेद प्रत्यय, हास्य-रति और अरति शोक इन दो युगलोंमेंसे एक युगल, भय ओर जुगुप्सा, तथा नौ योगोंमेंसे एक, इन प्रकार ये सात उत्कृष्ट प्रत्यय ह ( ७ ) । इस प्रकार इन जघन्य ओर उत्कृष्ट पाच व सात प्रत्ययोंसे प्रमत्तसयत, धममत्तसयत और अपूर्णकरण गुणस्थानवर्ती जीव विवक्षित प्रवृत्तियोंको बाधता हे ।

एक सजलनकयाय ओर एक योग इस प्रकार ये जघन्यसे दो प्रत्यय ( २ ), तथा उत्कर्षसे वेदके साथ तीन ( ३ ), इस प्रकार इन जघन्य ओर उत्कृष्ट दो व तीन प्रत्ययोंसे धनिवृत्तिकरण गुणस्थानवर्ती जीव विवक्षित सोत्तह प्रवृत्तियोंको बाधता हे । लोभकयाय एक और एक योग प्रत्यय, इस प्रकार इन जघन्य व उत्कर्षमें भी दो प्रत्ययोंसे सूक्ष्मसाप्प-रायिक जीव विवक्षित प्रवृत्तियोंको बाधता हे । इसमें ऊपर उपशातकयाय, क्षीणकयाय और सयोगिकेवर्ती फेरल एक योगसे ही बन्धक हे । यहा उपसहारगाहा—

दम अट्टरम अस्य सत्त्वात् णत्र सोलम च दोणं तु ।

अट्ट य चोदस पणय मत्त निष् ट्ट नि द्द एयमप च' ॥ २३ ॥

किं गडमजुतो ? एदिस्मे पुच्छाए चोदसजीवसमामपडिउद्धो उत्तरो वुच्चदे । त जहा— मिच्छाइड्डी चदुगणिसजुत यन्ति । णक्किरे उच्चागोद णिरय तिरिक्खगइ मोत्तूण दुगणिसजुत वधदि । जसकित्ति णिरयगदि मोत्तूण तिगदिसजुत वधदि । मासणो चोदसपयडीओ णिरयगइ मोत्तूण तिगदिसजुत वधति । उच्चागोद णिरय तिरिक्खगइओ मोत्तूण दुगदिसजुत वधति । जसकित्ति पुण णिरयगइ मोत्तूण तिगडसजुत वधदि । सम्मामिच्छाइड्डी असत्तम्ममाइड्डी च सोलमपयडीओ णिरयगइ तिरिक्खगइओ मोत्तूण दुगडसजुत वधदि । सजदामज्जदपहुडि जाय अपुव्वकरणद्वाए मखेजे भोगे गत्तूण डिदा ति अपिदसोल्मपयडीओ देवगदिसजुत वधति । उवग्गिमा जगदिसजुत वधति ।

कादिगदीया सामिणो ? एदिस्मे पुच्छाए परिहारो वुच्चदे— मिच्छादिड्डी चदुगदिया

मिव्यात्व गुणस्थानमें दोह व जडारह, मासादनमें दग्ग च सत्तरह, दो गुणस्थानोंमें अधान् मिध्र और अपरितसम्यग्दष्टिमें नौ व सोलह, सयतासयतमें आठ और चोदह, प्रमत्तसयतादिक तीनमें पाच व सात, अनित्युत्तिङ्गणमें दो व तीन, सूक्ष्म साम्परायमें दो, तथा उपशात्तम्पाय, शोणम्पाय पर सयोगिजेरणी गुणस्थानोंमें एकमात्र, दस प्रकार एक जीवने एक समयमें जन्म्य व उत्पष्ट उन्धप्रत्यय पाये जाते ह ॥ २३ ॥

'कौनसा गतिस सयुक्त राधक हे ?' इस प्रश्नका चोदह जीवसमात्मसे सम्बद्ध उत्तर रहते हे । वह इन प्रकार हे— मिव्यादाष्टि जाय चारों गतियोंसे सयुक्त उक्त प्रतियोंका राधक हे । विशेष इतना हे कि उच्चगोत्रको नरकगति और तिर्यग्गतिको छोडकर शय ने गतियोंसे सयुक्त राधता ह । यशस्वीनिका नरकगतिको छोडकर तीन गतियोंसे सयुक्त राधता ह । सात्वतान् गुणस्थानम चोदह प्रतियोंको नरकगतिको छोड तीन गतियोंसे सयुक्त राधता हे, उच्चगोत्रको नरक व तिर्यग्गतिका छोड शय दो गतियोंसे सयुक्त राधता हे । निन्तु यशस्वीनिको नरकगातिको छोड शय तीन गतियोंसे सयुक्त राधता हे । सम्यग्मिव्यादाष्टि और असयतसम्यग्दष्टि जीव सोलह प्रतियोंको नरकगति व तिर्यग्गतिको छोड दो गतिसयुक्त राधते ह । सयतासयतमें लेकर अपुव्वकरण कालने मर्यात बहुभाग जानर म्रित जीव त्रिपिक्षित सोलह प्रतियोंको देवगतिसयुक्त राधते ह । इससे ऊपरके जीव अगतिसयुक्त राधते ह ।

'उक्त प्रकृतियोंक मितने गतिवाते चल रहते हे— मिव्यादाष्टि चारों गतियोंक ज' .

ह ? इस प्रश्नका परिहार  
१५५ - १६, सम्यग्मिव्या

सामिणो । सामणसम्माइड्डी सम्मामिच्छाइड्डी असजदसम्माइड्ढिणो वि चदुगदिया सामिणो । दुगदिसजदामजदा सामिणो । उवरिमा मणुसगदिया चेव । अद्दाण सुत्तसिद्ध । पढम-अपढमचरिम चरिमसमयनधवोच्छेदपुच्छाविमयपरूवणा वि सुत्तसिद्धा चेव ।

किं सादिओ किमणादिओ किं धुवो किमद्धुवो बंधो त्ति एदिस्से पुच्छाए वुच्छदे—  
चोद्दमपयडीण वधो मिच्छाइड्ढिस्म सादिओ, उवसमसेडिम्हि नधवोच्छेद कादूण हेद्दा ओदरिय वधस्सादिं करिय पडिवण्णमिच्छत्ताण सादियनधोनलभादो । अणादिगो, उवसम-सेडिमणारूढमिच्छादिड्ढिजीणण वधस्म आदीए अभावादो । धुवो वधो, अभवियमिच्छादिट्ठीण वधस्म वोच्छेदाभावादो । अद्धुवो, उवसम-एनगमेडिं चडणपाओग्गमिच्छाइड्ढिनधस्स धुवत्ता-भावादो । जसकित्ति उच्चागोदाण पि एए चेव । णरि अणादि धुवनधा णत्थि, अजसकित्ति-णीचागोदाण पडिवन्त्ताण मभनादो । सच्चगुणट्ठाणेषु सेसेसु चोद्दसधुवपयडीओ सादि-अणादि-अद्धुवमिदि तिहि वियण्णेहि वज्जति । धुवमगो णत्थि, तेसिं भनियाण णियमेण वधवोच्छेद-

दृष्टि और असयतसम्बन्धदृष्टि भी चारों गतियोंके जीव स्वामी है । दो गतियोंके सयतासयत जीव स्वामी है । उपनिम गुणस्थानवर्ती मनुष्यगतिके ही जीव स्वामी हैं । बन्धध्वान सूत्रसे सिद्ध है । प्रथम, अप्रथम अचरम और चरम समयमें होनेवाले बन्धव्युच्छेद-सम्बन्धी प्रश्नाविषयक प्ररूपणा भी सूत्रसिद्ध ही है ।

अथ 'क्या सादिक बन्ध होता है, क्या अनादिक बन्ध होता है, क्या ध्रुव बन्ध होता है, या क्या अध्रुव बन्ध होता है?' इस प्रश्नका उत्तर कहते हैं— चौदह प्रकृतियोंका बन्ध मिथ्यादृष्टिके सादिक होता है, क्योंकि, उपशमश्रेणीमें बन्धव्युच्छेद करके पुन नचि उतरकर बन्धका प्रारम्भ करके मिथ्यात्वको प्राप्त हुए जीवोंके सादिक बन्ध पाया जाता है । अनादिक बन्ध होता है, क्योंकि, उपशमश्रेणीपर नहा चढ़े हुए मिथ्यादृष्टि जीवोंके बन्धके आदिका अभाव है । ध्रुव बन्ध होता है, क्योंकि, अभय मिथ्यादृष्टि जीवोंके बन्धका कभी व्युच्छेद नहीं होता । अध्रुव बन्ध होता है, क्योंकि, उपशम और क्षपक श्रेणीपर चढ़नेके योग्य मिथ्यादृष्टि जीवोंका बन्ध ध्रुव नहीं होता । यशस्विति और उच्चगोत्र प्रकृतियोंका भी मिथ्यादृष्टिके इसी प्रकार ही बन्ध होता है । विशेष इतना है कि इन दोनों प्रकृतियोंका उसके अनादि और ध्रुव बन्ध नहीं होता, क्योंकि, इनकी प्रतिपन्नभूत अयशस्विति और नीच गोत्रका बन्ध सम्भव है । शेष मय गुणस्थानोंमें चौदह ध्रुवप्रकृतिया आदि, अनादि और अध्रुव इन तीन विषयोंमें यधती है । उहा ध्रुव भग नहीं है, क्योंकि, उन भव्य जीवोंके

सभवादे । जसकिति-उच्चांगोदाण पुण उधो सच्चगुणद्वणेषु सादि-अद्वयो चैव ।

णिद्वाणिद्वा पयलापयला थीणगिद्धि-अणंताणुवंधिकोह-माण-  
माया लोभ इत्यिवेद तिरिक्साउ तिरिक्खगइ-चउसठाण-चउसघडण-  
तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुवि उज्जोव-अप्पसत्थविहायगइ दुभग-दुस्सर-  
अणादेज्ज णीचागोदाणं को वधो को अवधो ? ॥ ७ ॥

एऽ पुच्छासुत्त देमामासिय च । तेण किं मिच्छाडड्डी वधओ किं सासणसम्माइड्डी  
वधओ किं सम्मामिच्छाडड्डी वधओ एव गतूण किमनेगी किं मिद्दा वधओ, किमेदेसिं कम्माण  
वधो पुत्र वोच्छिज्जदि, किमुइओ, किं दे। पि सम वोच्छिज्जति, एदाओ किं सोदएण वज्जति  
किं परोदएण, किं सोदय-पंगदएण, किं सातर वज्जति, किं णिरतर वज्जति, किं सातर णिरतर  
वज्जति, किं पच्चएहि वज्जति, किं पच्चणहि णिणा वज्जति, किं गडसजुत्त वज्जति, किमगइ-  
सजुत्त वज्जति, कदिगदिया एदेसिं वधमामिणो होति, कदिगदिया ण होति, किं वा उधद्वान्ण,  
किं चरिमसमए वधो वोच्छिज्जदि, किं पढममए, किमपढम अचरिमसमए वधो वोच्छिज्जदि,

नियमने उध-पुच्छेद सम्भव हे । परन्तु यशस्विति ओर उच्चगोत्र प्रकृतियाका बन्ध सर्व  
गुणस्थानोंमें सादि ओर अधुन ही होता है ।

निद्रानिद्रा, प्रचलाप्रचला, स्थानगृद्धि, अनंतानुन्धी क्रोध, मान, माया, लोभ,  
सोपेद, तिर्यगायु, तिर्यगति, चार सस्थान, चार सहनन, तिर्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, उचोत्त,  
अप्रशस्तनिहायोगति, दुर्भग, दुस्वर, अनदिय और नीचगोत्र, इन प्रकृतियोंका कौन बन्धक  
है और कौन अनन्तर ? ॥ ७ ॥

यह पृच्छसूत्र भी देशामर्शज है । अतएव क्या मिथ्यादृष्टि बन्धक है, क्या साम्ना  
दनसम्प्रादृष्टि उधर है, क्या मन्थमिथ्यादृष्टि उधर है, इस प्रकार जाकर क्या अयोगी  
बन्धक है, क्या सिद्ध बन्धक है, क्या इन कर्मोंका बन्ध पूर्वमें व्युच्छिन्न होता है, क्या  
उदय पूर्वमें व्युच्छिन्न होता है, क्या दोनों साथ ही व्युच्छिन्न होते हैं ये प्रकृतियां क्या  
स्वोदयमें बधती हैं, क्या परोदयसे उधती हैं, क्या स्वोदय परोदयसे बधती हैं, क्या  
सातर बधती हैं, क्या निरतर बधती हैं, क्या सातर निरतर उधती हैं, क्या प्रत्ययोंसे  
बधती हैं, क्या णिणा प्रत्ययोंसे उधती हैं, क्या गतिसयुक्त उधती हैं, क्या अगतिसयुक्त  
बधती हैं इन कर्मोंके उधर स्वामी निर गतियोंवाले होते हैं व निर गतियोंवाले नहीं  
होते, यथास्थान नितना है, क्या चरम समयमें बन्ध व्युच्छिन्न होता है, क्या प्रथम  
समयमें बन्ध व्युच्छिन्न होता है, क्या अप्रथम अचरम समयमें बन्ध व्युच्छिन्न होता है,

किमेदामिं सादिओ वधो, किमणादिओ, किं धुवो, किमद्दुवो वधो ति एदाओ पुच्छओ एत्थ  
 ऋदन्नाओ । एदासिं पुच्छणमुत्तरपरुवणइमुत्तरसुत्त भणदि—

**मिच्छाइट्ठी सासणमम्माइट्ठी वंधा । एदे वंधा, अवसेसा  
 अवंधा ॥ ८ ॥**

एद देसामामियसुत्त, सामित्तद्वाणपरुवणदारेण पुच्छसुत्तुद्धिट्ठसव्वत्थपरुवणादो ।  
 सामित्तमद्वाण च सुत्तादो चेत्त णव्वदि ति ण तेसिमत्थो वुत्तदे । किमेदासिं वधो पुत्त  
 वोच्छिज्जेदे, किमुदओ पुत्त वोच्छिज्जेदे, एदस्सन्थो वुत्तदे— थीणगिद्धितियस्स पुत्त वधो  
 वोच्छिणो, पच्छा उदयस्स वोच्छेदो, मामणमम्मादिट्ठिचरिमसमए वधे फिट्ठे सते पच्छा  
 उवरि गतूण पमत्तमजदग्गि उदययोच्छेदोत्तलभादो । अणताणुगधिचउक्कस्स वधोदया सम  
 फिट्ठति, सामणसम्माइट्ठिचरिमसमए एदेमि वधोदयाण जुगत्त वोच्छेददसणादो । इत्थिवेदस्स  
 पुत्त वधो पच्छा उदओ वोच्छिणो, सासणमि वधे वोच्छिणं पच्छा उवरि गतूण अणि-  
 यट्ठिम्ह उदययोच्छेदादो । एव तिरिक्खाउ-तिरिक्खण्ड तिरिक्खण्डपाओग्गणुपुत्ति-उज्जोव-

—

क्या इन प्रकृतियोंका सादिक ग्रन्थ है, क्या अनादिक ग्रन्थ है, क्या ध्रुव ग्रन्थ है, या  
 क्या अध्रुव ग्रन्थ है, इस प्रकार ये प्रश्न यहाँ करना चाहिये । इन प्रश्नोंका उत्तर कहनेके  
 लिये अगला सूत्र कहते हैं—

उपर्युक्त प्रकृतियोंके मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि जीव वन्धक है । ये वन्धक  
 हैं, शेष जीव अनन्धक हैं ॥ ८ ॥

यह देशामशोक सूत्र है, क्योंकि, वन्धके स्त्रामित्त और अध्यानकी प्ररूपणा द्वारा  
 वह पृच्छासूत्रमें उद्दिष्ट मन व्योका निरूपण करता है । वन्धस्त्रामित्त और अध्यान  
 चूकि सूत्रसे ही जाना जाता है अतः इन दोनोंका अर्थ यहाँ नहीं कहा जाता । 'क्या इनका  
 ग्रन्थ पहिले व्युत्तिन्न होता है या उदय पहिले व्युत्तिन्न होता है ?' इसका अर्थ कहते  
 हैं— स्त्रान्मद्युद्धि आदि तीन प्रकृतियोंका पूर्वमें वन्ध व्युत्तिन्न होता है, तत्पश्चात् उदयका  
 व्युत्तेद होता है, क्योंकि सासादनसम्यग्दृष्टिके चरम समयमें वन्धके नष्ट होनेपर पश्चात्  
 ऊपर जाकर प्रमत्तस्यतमें इनके उदयका व्युत्तेद पाया जाता है । अनन्तानुबन्धिचतु  
 ष्यका वन्ध जोर उदय दोनों साथ नष्ट होते हैं, क्योंकि, सासादनसम्यग्दृष्टिके चरम  
 समयमें इनके वन्ध और उदयका एक साथ व्युत्तेद देखा जाता है । स्मृतिदका पूर्वमें  
 वन्ध पश्चात् उदय व्युत्तिन्न होता है, क्योंकि, सासादनगुणस्थानमें वन्धके व्युत्तिन्न  
 होनेपर तत्पश्चात् ऊपर जाकर अनिर्वाचित्करण गुणस्थानमें उदयका व्युत्तेद होता है ।  
 इसी प्रकार तिर्यग्गामु, तिर्यग्गति, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वों, उद्योत और नीचगोत्र प्रकृति



पीचागोदाणि, सासणमि नधनोच्छेदे जदि पञ्चा उवर्णि गतूण सजदासजदमि उदय-  
वोच्छेदादो, तिरिक्काणुपुञ्जीए असजदसम्माडडिम्हि उदयनोच्छेदुपलभादो । एण मज्झिम-  
चदुसअणाणि, सासणमि वधे थक्के सते उवरि गतूण सजोगिम्हि उदयनोच्छेदादो । एव  
चेव मज्झिमचदुसअणणाणि, मामणमि नधे थक्के मते उवरि अपमत-उवसतकसाएसु कमेण  
दोण्ण दोण्णमुदयक्खयदसणादो । एण अप्पसत्थनिहायगदीए, सामणमि वधे थक्के सते  
उवरि सनैगिम्हि उदयनोच्छेदादो । एण दुभग अणादेज्जाण वत्तञ्च, सासणमि वधे थक्के  
उवरि असजदसम्मादिडिम्हि उदयनोच्छेदो । एण दुस्सरस्स नि वत्तञ्च, सासणमि नधे थक्के  
सजोगिकेवलिम्हि उदयनोच्छेदादो ।

किं सोदण्ण किं परोदण्ण किमुभण्ण वञ्चति ति पुच्छाए उत्तरो वुचोदे । त जहा-  
धीणगिद्वित्तिथिमिद्विवेत् तिरिक्काउअ तिरिक्कगइ चदुमअणाणि चदुसअणणाणि तिरिक्क  
गदिपाओग्गाणुपुञ्चि उज्जेण अप्पसत्थनिहायगदिमणानाणुनधिचदुम्क दुभग-दुम्मग-अणादेज्ज  
पीचागोदाणि च मिच्छादिडि-सासणसम्माडडिणो सोदण्ण नि परोदण्ण नि वधति, विरोहा

योंसा पूर्वमें वन्ध युञ्जित होता है, तत्पश्चात् उदयना व्युच्छेद होता है, क्योंकि सासा-  
दनगुणस्थानमें वन्धका व्युच्छेद हो जानेपर पश्चात् ऊपर जानर सयतासयत गुणस्थानमें  
उदयका व्युच्छेद होता है, तथा त्रियगतिप्रायोग्यानुपूर्वमें उदयना व्युच्छेद असयत  
मध्यगदृष्टि गुणस्थानमें पाया जाता है । इसी प्रकार मध्यम चार सस्थानोंका पूर्वमें वन्ध  
युञ्जित हाना है, तत्पश्चात् उदयना व्युच्छेद होता है, क्योंकि सामादन गुणस्थानमें  
वन्ध के रक जानेपर ऊपर जानर सयोगकेपली गुणस्थानमें उदयका व्युच्छेद होता है ।  
इसी प्रकार ही मध्यम चार सहनन ह, क्योंकि, सासादनगुणस्थानमें इनके वन्धके रक  
जानेपर ऊपर अप्रमत्तसयत और उपशान्तकषाय गुणस्थानोंमें क्रमसे दो दो सहननोंका  
उदयक्षय देखा जाता है । इसी प्रकार अप्रशस्तनिहायोगतिका भा कथन करना चाहिये,  
क्योंकि, सासादनगुणस्थानमें वन्धके रक जानेपर ऊपर सयोगकेपलीम उदयना व्युच्छेद  
होता है । इसी प्रकार दुर्भग और अनादेयका कथन करना चाहिये, क्योंकि, सामादनमें  
वन्धके रक जानेपर ऊपर असयतमध्यगदृष्टिमें उदयना व्युच्छेद होता है । इसी प्रकार  
दुस्सरका भी कहना चाहिये, क्योंकि, सामादनमें वन्धके रक जानेपर सयोगकेपलीमें  
उदयका व्युच्छेद होता है ।

‘उपयुक्त प्रकृतिया क्या स्रोदयसे क्या परोदयमे या क्या स्र परोदय उभयरूपसे  
वधती हैं?’ इस प्रश्नका उत्तर कहते हैं। यह इस प्रकार है—स्थानगुद्वित्रय, खावेद, त्रियं  
गायु त्रियगति, चार सस्थान, चार सहनन, त्रियगतिप्रायोग्यानुपूर्व, उद्योत, अप्रशस्त  
निहायोगति, अन तानुधिचचनुष्क, दुभग, दुस्सर, अनादेय और नीचगोत्र, इन प्रकृतियोंको  
मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यगदृष्टि स्रोदयसे भी और परोदयसे भी बाधते हैं, क्योंकि,

भावाद्दो ।

किं सातर किं गिरतर किं सातर गिरतर वज्जति ति एदस्सत्थो बुच्चदे— थीण-  
गिद्धितियमणताणुनधिचउत्तक च गिरतर उज्जड', पुनरपित्तादो । इत्थिवेदो मिच्छाइट्ठि सासण-  
सम्मादिट्ठिहि मातर उज्जड, वधगद्दाए खीणाए नियमेण पडिनस्सपयडीण वधसभवाद्दो ।  
तिरिस्सखाउअ मिच्छाइट्ठि-सामणमम्मादिट्ठिहि गिरतर उज्जड, अद्धास्सएण वधस्स थन्कणा-  
भावाद्दो । तिरिस्सखगड-तिरिस्सखगडपाओग्गाणुपुञ्जीओ मातर गिरतर वज्जति ।

होदु मातरवधो, पडिवक्खपयडीण वधुवलभादो, ण गिरतरवधो, तस्स कारणाणु-  
वलभादो ति वुत्ते बुच्चदे— ण एस दोसो, तेउत्तकाइय-वाउक्काइयमिच्छाइट्ठिण सत्तमपुढनि-  
णेइयमिच्छाइट्ठिण च भवपडिनद्धमकिलेमेण गिरतरवधोवलभादो । सासणसम्माइट्ठिणो दोण्ण  
पयडीणमेदामिं करं गिरतरवधया ? ण, सत्तमपुढनिमामणाण तिरिस्सखगड भोत्तणणगर्इण वधा-  
भावाद्दो ?

इसमें कोई विरोध नहीं है ।

‘ उक्त प्रवृत्तिया क्या सान्तर, क्या निरन्तर, या क्या सान्तर निरन्तर पधती ह ? ’  
इसका अर्थ कहते हैं—स्त्यानगृद्धिजय और अनन्तानुगन्धिचतुष्क निरन्तर पधती ह,  
क्योंकि, ये ध्रुवगन्धी प्रवृत्तिया ह । स्त्रीवेदको मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि सान्तर  
वाधते हैं, क्योंकि, गन्धकालके क्षीण होनेपर नियममे प्रतिपक्ष प्रवृत्तियोंका वन्ध सम्भव  
है । तिर्यगायुको मिथ्यादृष्टि ओर सासादनसम्यग्दृष्टि निरन्तर वाधते हैं, क्योंकि, कालके  
क्षयसे गन्धके स्फुटनेका अभाव है । तिर्यग्गति और तिर्यग्गतिप्रयोग्यानुपूर्विको सान्तर-  
निरन्तर वाधते हैं ।

शका—प्रतिपक्षभूत प्रवृत्तियोंके गन्धकी उपलब्धि होनेसे सान्तर गन्ध भले ही  
हो, किन्तु निरन्तर गन्ध नहीं हो सक्ता, क्योंकि उसके कारणोंका अभाव है ?

समाधान—इस शकाका उत्तर कहते हैं कि यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि,  
तेजकायिक और वायुकायिक मिथ्यादृष्टियों तथा सप्तम पृथिवीके नारकी मिथ्यादृष्टियोंके  
भयसे सम्बद्ध सङ्केशके कारण उक्त दोनों प्रवृत्तियोंका निरन्तर गन्ध पाया जाता है ।

शका—सासादनसम्यग्दृष्टि इन दोनों प्रवृत्तियोंके निरन्तर गन्धक कैसे हैं ?

समाधान—यह शका ठीक नहीं, क्योंकि, सप्तम पृथिवीके सासादनसम्यग्दृष्टियोंके  
तिर्यग्गतिको छोड़कर अन्य गतियोंका गन्ध ही नहीं होता ।

१ अ-आप्रलो ‘ गिरिय ’ इति पाठ ।

२ अ-आप्रया ‘ वधय ’ कपती ‘ वधिय ’ इति पाठ ।

चदुसत्राण चदुमघद्वण-उज्जोर अप्पमत्थत्रिहायगदि-दुभग-दुस्वर-अणादेज्जाणमित्थि  
वेदभगो, सात्तरवधित पडि भेदाभाजादो । णीचागोदस्स तिरिस्सत्तगदिभगो, तेउ वाउक्काडएसु  
सत्तमपुद्विणेरइएसु च णीचागोदस्स णिरत्तर उधुत्तभादो ।

किं पच्चणहि वज्जति किं तेहि विणा, एदस्सत्थो बुच्चदे— मिच्छादिद्वी मिच्छता  
सजम कसाय जोगमण्णिदचदुहि मूलपचएहि पणवण्णुत्तरपच्चएहि दस अट्टारमगगसमय  
सभविजहण्णुक्कस्मपच्चएहि य एदाओ पयडीओ वधदि । सामणमम्माइद्वी मिच्छत मोचूण  
तीहि मूलपचएहि पचासुत्तपच्चएहि एगसमयसभविददस मत्तारमजहण्णुक्कस्मपच्चएहि य  
एदाओ पयडीओ वधदि । णवग्गि तिरिक्खाउअस्स वेउत्त्रियमित्थ-कम्मदयपच्चएहि विणा  
तेउण्ण ओगत्त्रियमित्थेण च विणा सत्तताल पचया मिच्छाद्वि-सामणण' होंति ।

गदमजुत्तपुच्छाप अयो बुच्चदे । त जहा — वीणगिद्वितिय-अणताणुत्तचउक्क  
च मिच्छाद्वी चउगइसजुत्त, सासणो णिग्गयईए विणा तिगडसजुत्त वधड । इत्थिवेद मिच्छा  
इद्वी सासणो च णिग्गयईए विणा तिगडमजुत्त वधड । तिरिक्खाउ-तिरिक्खगड तिरिक्ख

चार मस्थान, चार सहनन, उद्योत, अप्रशस्नविहायोगनि, दुर्भग, दुस्वर और  
अनात्थ प्रकृतिया एतेषु समान ह, क्योंकि, सात्तरगधित्तके प्रति इन प्रकृतियोंमें  
स्वीयेदसे धोद भेद नहीं है । नीचगोत्र तियग्गतिके समान है, क्योंकि, नेज्जायिक और  
वायुवायिन तथा सत्तम पृथिवाने नाग्नियोंमें नीचगोत्रका निरन्तर बन्ध पाया जाता है ।

अथ 'सुमान् प्रकृतिया कया प्रत्ययोंसे उधती है या कया उनके विना ?' इसका  
अर्थ कहते हैं—मिध्याद्वि जीव मिध्यात्त, असयम, कपाय और योग समावाले चार मूल  
प्रत्ययोंमें, पन्चन उत्तर प्रत्ययोंसे, तथा एक समयमें सम्भव होनेवाले दश और अठारह  
जघन्थ च उट्टए प्रत्ययोंसे इन प्रकृतियोंको बाधते ह । सासादनसम्यग्द्वि मिध्यात्वको  
छोडकर शेष तीन मूल प्रत्ययोंमें, पन्नास उत्तर प्रत्ययोंसे, तथा एक समयमें सम्भव दश  
और सत्तरह जघन्थ च उट्टए प्रत्ययोंसे इन प्रकृतियोंको बाधते हैं । विशेष यह कि तिर्य  
गायुके वैत्रियमित्थि त्रिा कामण काययोगके विना मिध्याद्विके तिरपन, तथा वैत्रियिक  
मित्थि, कामण और औदारिकमित्थिके विना सासादनसम्यग्द्विके सतालस प्रत्यय होते हैं ।

गतिमयुक्त प्रदनका उत्तर कहते हैं । वह इस प्रकार है—स्थानगृद्धि आदि तीन  
रूपा अनन्तानुगधित्तुत्तके मिध्याद्वि जीव चारों गतियोंसे सयुक्त और सासादन  
सम्यग्द्वि नरकगतिके विना तीन गतियोंसे सयुक्त बाधता है । स्वियेदको मिध्याद्वि और  
सासादनसम्यग्द्वि नरकगतिके विना तीन गतियोंसे सयुक्त बाधता है । तियगायु, तिर्यगति,

गडपाओग्माणुपुत्रि-उज्जेवे मिच्छाइट्ठी सासणो च तिरिक्खगइसजुत्त वधति । चउसठाण-  
चउसघडणाणि मिच्छाइट्ठी सासणसम्माइट्ठी तिरिक्ख-मणुसगइसजुत्त वधति । अप्पसत्थ-  
विहायगइ दुभग दुस्सर-अणादेज्ज णीचागोदाणि मिच्छाइट्ठी देवगईए विणा तिगइसजुत्त, सासणो  
देव-णिरयगईहि विणा दुगदिसजुत्त वधदि ।

कदि गदिया सामिणो ति बुत्ते शीणगिद्धितिय-अणताणुवधिचउक्कादिपयडीण वधस्म  
चउग्गइमिच्छाइट्ठी सासणसम्मादिट्ठिणो सामी । वधद्वान्ण सासणचरिमसमए वधवोच्छेदो च  
सुत्तणिद्धिट्ठो ति ण पुणो बुच्चदे ।

किमेदासिं पयडीण सादिओ ववओ ति पुच्छासन्नद्धो अत्थो बुच्चदे । त जह्वा—  
धीणगिद्धितिय अणताणुवधिचउक्काण ववो मिच्छाइट्ठिमिह सादिओ अणादिओ धुवो अद्भवो  
च । सामणम्मि अणाडधुवेण विणा दुवियप्पो । सेमाण पयडीण वधो मिच्छाइट्ठी मासणोसु  
सादिगो अद्भवो च ।

## णिहा-पयलाणं को बंधो को अबंधो ? ॥ ९ ॥

एद पुच्छसुत्त देसामासिय, तेणेत्थ पुच्चिल्लपुच्छाओ सच्चाओ पुच्छिदच्चाओ ।

तिर्यग्गतिप्रयोगानुपूर्वीं ओर उद्योतको मिथ्यादृष्टि ओर स्मादादनसम्यग्दृष्टि तिर्यग्गतिसे  
सयुक्त वाधते ह । चार स्थान और चार महननोंको मिथ्यादृष्टि ओर सासादन-  
सम्यग्दृष्टि तिर्यग्गति व मनुष्यगतिसे सयुक्त वाधते ह । अमरास्तत्रिहायोगति, दुर्भग, दुस्वर,  
अनादेय और नीचगोत्रको मिथ्यादृष्टि देवगतिके विना तीन गनियोंसे सयुक्त, चार स्मा  
दानसम्यग्दृष्टि देव व नरक गतिके विना दो गतियोंसे सयुक्त वाधता ह ।

किन्तु गतिराले जीव स्वामी होते हैं, ऐसा कहनेपर उत्तर कहते हैं—स्थान  
शुद्धिप्रय और अनन्तानुबन्धिचतुष्क आदि प्रवृत्तियोंके बन्धके चारों गतियाँवाले मिथ्या-  
दृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि स्वामी ह । बन्धाध्वान और सासादनके चरम समयमें होने-  
वाला बन्धव्युच्छेद सूत्रसे निदिष्ट है, अत उमें किन्से नहीं कहते ।

‘ क्या इन प्रवृत्तियोंका सादिक बन्ध हे ? ’ इस प्रश्नसे सम्यग् अर्थको कहते ह ।  
यह इस प्रकार है— स्थानशुद्धिप्रय और अनन्तानुबन्धिचतुष्क बन्ध मिथ्यादृष्टि गुण-  
स्थानमें सादिक, अनादिक, ध्रुव और अध्रुव रूप होता है । सासादन गुणस्थानमें अनादि  
और ध्रुवके विना दो प्रकारका होता है । दोष प्रवृत्तियोंका बन्ध मिथ्यादृष्टि और सासादन  
दोनों गुणस्थानोंमें सादिक व अध्रुव होता है ।

निद्रा और प्रचला प्रकृतियोंका कौन बन्धक है और कौन अबन्धक ? ॥ ९ ॥

यह पृच्छामूत्र देशामर्शक है, अनण्य यहा सर पूवाक मदन पूछना चाहिये ।

पुच्छिमिस्तस्य सदेहिणामण्डमुत्तरसुत भणदि -

मिच्छाद्विष्टिपहुडि जाव अपुव्वकरणपविट्टसुद्धिसंजदेसु उवसमा  
खवा वधा । अपुव्वकरणद्वाए सखेज्जदिमं भागं गंतूण वंधो  
वोच्छिज्जदि । एदे वधा, अवसेसा अवंधा ॥ १० ॥

एद पि देसामामियसुत, वधद्वाण नभसामि अमामिणो च अपुव्वकरणद्वाए अपदम  
अचरिममए वधयोच्छेद च भणिदूण सेसत्वे सच्चिय अनट्टाणादो । अपुव्वकरणद्वाए पदम  
सत्तमभागे णिहा पयलाण वधो धन्कदि ति एत्थ वत्तन्व । कथमेद णव्वदे ? परमगुरुवएसादो ।

किमेदेसिं कम्माण उयो पुत्र पच्छा मममुदएण वोच्छिज्जदि ति पुच्छाए णिच्छओ  
कीरेदे । एदेसिं वधो पुत्र विणस्सदि', पच्छा उदयस्स वोच्छेदो, अपुव्वकरणद्वाए पदममत्तम  
भागे वधे थके सते उवरि गतूण खीणकमायस्स दुचरिमसमयमिह उदयवोच्छेदादो ।

किं सोदएण परोदएण सोदय-परोदएण नज्जति ति पुच्छाए वुच्छेद- एदाओ दो वि  
पयडीओ सोदय-परोदएण वज्जति, णाणातरायपचक्रमेव एदामिं धुयोदयत्ताभावादो । किं

शमयुक शिष्यके सदेहको दूर करने के लिये उत्तर सूत्र कहते हैं—

मिथ्यादृष्टिमें लेकर अपूर्वकरणप्रविष्टशुद्धिसयतोंमें उपशमक और क्षपक तक बन्धक  
हैं । अपूर्वकरणकालके मन्व्यातर्पे भाग जाकर बन्ध-युच्छेद होता है । ये बन्धक हैं, शेष  
जीव अबन्धक हैं ॥ १० ॥

यह भी वंशामर्शक सूत्र है, क्योंकि वह बन्धाध्यान, बन्धहजामी अस्वा मी तथा  
अपूर्वकरणकालके अग्रयम अचरम समयमें होनेवाले बन्धव्युच्छेदको कहकर शेष अर्थोंको  
सूचित कर अवस्थित है । अपूर्वकरणकालके प्रथम सत्तम भागमें निद्रा और प्रचला  
प्रवृत्तियोंका बन्ध रुक जाता है, देसा यहा कहना चाहिये ।

शका—यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—यह परम गुरुके उपदेशसे जाना जाता है ।

'क्या इन दोनों कर्मोंका बन्ध उदयसे पूर्व, पश्चात् अथवा साधमें व्युच्छिन्न होता  
है ?' इस प्रश्नका निर्णय करते हैं—इनका बन्ध पूर्वमें नष्ट होता है तत्पश्चात् उदयका  
व्युच्छेद होता है, क्योंकि, अपूर्वकरणकालके प्रथम सत्तम भागमें बन्धके रुक जानेपर  
ऊपर जाकर क्षीणकयाय गुणस्थानके द्विचरम समयमें उदयका व्युच्छेद होता है ।

'दोनों कर्म प्रवृत्तिया क्या स्वोदय, क्या परोदय या क्या स्वोदय-परोदयसे बंधती हैं ?'  
इस प्रश्नका उत्तर कहते हैं—ये दोनों ही प्रवृत्तिया स्वोदय परोदयसे बंधती हैं, क्योंकि, पाच  
ज्ञानावरण और पाच अंतरायके समान इन दोनों प्रवृत्तियोंके धुयोदयका अभाव है ।

१ प्रतिपु पुव्व व नत्तमदि' इति पाठ ।

सांतर गिरतर सातर-गिरतर वञ्जति ? एदाओ गिरतर वञ्जति, सत्तेतालधुवपयडीसु पादादो । किं पञ्चएहि वधदि ति पुञ्जाए वुच्चदे— मिच्छाइडी चदुहि मूलपञ्चएहि पणवण्णणाणा-समयुत्तरपञ्चएहि दस अट्टारसएगसमयजहण्णुकस्सपञ्चएहि, सासणो मिच्छत्तेण विणा तिहि मूलपञ्चएहि पचासुत्तरपञ्चएहि दस सत्तारसएगसमयजहण्णुकस्सपञ्चएहि, सम्मामिच्छाइडी तिहि मूलपञ्चएहि तेदालुत्तरपञ्चएहि एगसमयणव-सोलसजहण्णुकस्सपञ्चएहि, असजदसम्माइडी तिहि मूलपञ्चएहि छादालुत्तरपञ्चएहि एगसमयणव-सोलसजहण्णुकस्सपञ्चएहि, सजदासजदो मिस्सा-सजमेण सहिदकसाय जोगदोमूलपञ्चएहि सत्ततीसुत्तरपञ्चएहि एगममइयअट्ट-चोइसजहण्णुकस्सपञ्चएहि, पमत्तमजदो दोहि' मूलपञ्चएहि चदुवीसुत्तरपञ्चएहि एगसमयपच-सत्तजहण्णुकस्स-पञ्चएहि, अप्पमत्तसजदो अपुच्चरुणो च दोहि मूलपञ्चएहि वार्वासुत्तरपञ्चएहि एगममयपच-सत्तजहण्णुकस्सपञ्चएहि वधति ।

शका—उक्त दोनों प्रकृतिया क्या सान्तर, निरन्तर या सान्तर निरन्तर बधती है?

समाधान—ये दोनों प्रकृतिया निरन्तर बधती ह, क्योंकि, ये सतालीस ध्रुव प्रकृतियोंके अन्तर्गत ह ।

‘ये प्रकृतिया किन किन प्रत्ययोंसे बधती ह ?’ इस प्रश्नका उत्तर कहते हैं—मिथ्यों द्वापि जीव चार मूल प्रत्ययोंसे, पचयन नाना समय सम्बन्धी उत्तर प्रत्ययोंसे, तथा दश और अठारह एक समय सम्बन्धी जघन्य व उत्कृष्ट प्रत्ययोंसे निद्रा एव प्रचला प्रकृतियोंको बाधते हैं । सासादनसम्यग्दृष्टि मिथ्यात्वके जिना तीन मूल प्रत्ययोंसे, पचास उत्तर प्रत्ययोंसे, तथा दश और सत्तरह एक समय सम्बन्धी जघन्य व उत्कृष्ट प्रत्ययोंसे उक्त प्रकृतियोंको बाधते हैं । सम्यमिथ्यादृष्टि तीन मूल प्रत्ययोंसे, तैतालीस उत्तर प्रत्ययोंसे, तथा एक समय सम्बन्धी नौ व सोलह जघन्य व उत्कृष्ट प्रत्ययोंसे उक्त प्रकृतियोंको बाधते ह । असयतसम्यग्दृष्टि तीन मूल प्रत्ययोंसे, छयालीस उत्तर प्रत्ययोंसे, तथा एक समय सम्बन्धी नौ और सोलह जघन्य व उत्कृष्ट प्रत्ययोंसे उक्त प्रकृतियोंको बाधते हैं । सयतासयत मिथ्र अस्यम (सयमा-सयम) के साथ कपाय एव योग रूप दो मूल प्रत्ययोंसे, सैंतीस उत्तर प्रत्ययोंसे, तथा एक समय सम्बन्धी आठ व चौदह जघन्य और उत्कृष्ट प्रत्ययोंसे उक्त प्रकृतियोंको बाधते हैं । प्रमत्तसयत दो मूल प्रत्ययोंसे, चौतीस उत्तर प्रत्ययोंसे, तथा एक समय सम्बन्धी पांच और सात जघन्य व उत्कृष्ट प्रत्ययोंसे उक्त प्रकृतियोंको बाधते हैं । अप्रमत्तसयत और अपूर्वकरणगुणस्थानवर्ती जीव दो मूल प्रत्ययोंसे, चाईस उत्तर प्रत्ययोंसे, तथा एक समय सम्बन्धी पांच और सात जघन्य व उत्कृष्ट प्रत्ययोंसे उक्त प्रकृतियोंको बाधते हैं ।

गइसजुतत्रधपुच्छाए यत्थो— मिच्छाइट्ठी चउगइमजुत्त, सासणो तिगइसजुत्त, सम्मामिच्छाइट्ठी अमजदमम्माइट्ठी देव-मणुस्सगइमजुत्त, उवरिमा देवगइसजुत्त णिदा-पयत्तओ दो वि नथति । कदिगादिया सामी, एदिस्से पुच्छाए बुच्चदे— मिच्छाइट्ठी सासणसम्माइट्ठी सम्मामिच्छाइट्ठी असजदसम्माइट्ठी चउगइया, दुगदिसजदासजदा, उवरिमा मणुस्सगइया सामी । अद्धान सुगम । वोच्छिण्णपदेमो वि सुगमो । किं सादिओ त्ति पुच्छाए बुच्चदे— मिच्छाइट्ठिमिहि णिदा-पयत्तण वधो मान्णो अणादिओ धुवो अद्दुवो त्ति चटुनियणो । सासणादिगुणट्ठाणेषु तिवियणो, धुवत्ताभावादो । सेस सुगम ।

### सादावेदणीयस्स को वंधो को अवधो ? ॥ ११ ॥

बंधो वधयो त्ति धेत्तव्यो । एद पुंठासुत्त देसामासिय, सामिपु-छ णिदिसिदूण मेम-पुच्छानिमयणिदेमाकरणादो । तणेत्थ मव्वपुच्छओ णिदिसिदव्वाओ । पुच्छिदमिस्सससयफुमण्ड-मुत्तसुत्त भणदि—

गनिसयुक्त बन्धसम्बन्धी प्रश्नका अर्थ कहने हैं— मिथ्यादृष्टि जीव चारों गतियोंमें सयुक्त, सासादनमग्यदृष्टि तीन गतियोंसे असयुक्त, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असयत सम्यग्दृष्टि देव व मनुष्य गतिसे सयुक्त, तथा उपरिम जीव देवगतिसे सयुक्त निद्रा व प्रचला दोनों प्रकृतियोंको बाधने हैं ।

‘कितने गतियोंवाले जीव उक्त दोनों प्रकृतियोंके स्वामी ह ?’ इस प्रश्नका उत्तर कहते हैं— मिथ्यादृष्टि, सासादनमग्यदृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असयतसम्यग्दृष्टि चारों गतियोंवाले, दो गतियोंवाले सयतासयत, तथा उपरिम जीव मनुष्यगतिवाले स्वामी होते हैं । बन्धाध्यान सुगम है । चरम समयादिरूप बन्ध व्युच्छिन्नप्रदेश भी सुगम है । ‘उक्त प्रकृतियोंका बन्ध क्या सादि है ?’ इस प्रश्नका उत्तर कहते हैं— मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें निद्रा और प्रचला प्रकृतियोंका बन्ध सादिक, अनादिक, ध्रुव और अध्रुव इस प्रकार चारों तरहका होता है । सासादनादि गुणस्थानोंमें ध्रुव बाधके न होनेसे शेष तीन प्रकारका बन्ध होता है । शेष सूत्राथ सुगम है ।

सादावेदनीयका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ ११ ॥

‘बन्ध’ शब्दसे बन्धकरूप अर्थ ग्रहण करना चाहिये । यह पृच्छास्त्र देशामर्शक है, क्योंकि, यह क्यामित्थियक पृच्छाका निर्देश करके शेष पृच्छाविषयक निर्देश नहीं करता । इसलिये यहा सब पृच्छाओंका निर्देश करना चाहिये । शक्यायुक्त शिष्यके सशयको बरनेके लिये उत्तर सूत्र कहते हैं—

मिच्छादृष्टिप्पहुडि जाव सजोगिकेवलि ति वंधा । सजोगिकेवलिअद्दाए चरिमसमयं गंतूण वंधो वोच्छिज्जदि । एदे वंधा, अवसेसा अवंधा ॥ १२ ॥

एद पि सुत्त देसामासिय, सामित्तमद्धान् ग्रन्थविणासट्टाण च भणिदूण्णेसिमत्थाणम-  
णिहेसादो । तेणिदेरसिं परूवणा कीरदे । त जहा— एदस्म वधो पुच्चमुदओ पच्छा  
वोच्छिज्जदि, सजोगिचरिमसमये वधे वोच्छिज्जणे सते पन्छा अजोगिचरिमसमए उदयवोच्छेदादो ।  
सादावेदनीय मिच्छादृष्टिप्पहुडि जाव सजोगिकेवलि ति सोदएण परोदएण वि चज्जदि,  
सादासादोदेयाण परात्तदिदसणादो, स-परोदएहि ग्रन्थविरोहाभावादो च । मिच्छादृष्टिप्पहुडि  
जाव पमतो ति सातरो वधो, तत्थ पडिग्रन्थपयडीए वधमभवादो । उवरि गिरतरो,  
पडिक्खपयडीए वधाभावादो । जम्हि जम्हि गुणट्टाणे जत्तिया जत्तिया मूलपच्चया णाणा-  
समयउत्तपच्चया एगसमयजहण्णुक्कस्सपच्चया च बुत्ता ताणि गुणट्टाणाणि तेत्तिएहि  
पच्चएहि सादावेदनीय वग्गति ।

मिथ्यादृष्टिमे लेकर सयोगिकेवली तक सातावेदनीयके बन्धक हैं । सयोगिकेवलिकालके  
अन्तिम समयको प्राप्त होकर बन्ध व्युच्छिन्न होता है । ये ग्रन्थक हैं, शेष जीव अग्रन्धक  
हैं ॥ १२ ॥

यह भी सूत्र देनामर्शक है, क्योंकि, वह स्वामित्व, बन्धाध्वान और बन्धविनाश  
स्थानको कहकर अन्य अर्थोंका निर्देश नहीं करता । इस कारण अन्य अर्थोंकी प्ररूपणा  
करते हैं । यह इस प्रकार है— सातावेदनीयका ग्रन्थ पूर्वमें और उदय पश्चात् व्युच्छिन्न  
होता है, क्योंकि, सयोगिकेवलीके अन्तिम समयमें बन्धके व्युच्छिन्न होनेपर पीछे अयोग-  
केवलीके अन्तिम समयमें उदयका व्युच्छेद होता है । सातावेदनीय मिथ्यादृष्टिमे लेकर  
सयोगिकेवली तक स्वोदयमे और परोदयसे भी बधता है, क्योंकि, यहा साता और  
असाताके उदयमें परिवर्तन देखा जाता है, तथा स्य परोदयसे बन्ध होनेमें कोई विरोध भी  
नहीं है । मिथ्यादृष्टिसे लेकर प्रमत्त गुणस्थान तरु सातावेदनीयका बन्ध सान्तर है,  
क्योंकि, यहा प्रतिपक्ष प्रवृत्ति ( असाता ) का ग्रन्थ सम्भव है । प्रमत्त गुणस्थानसे ऊपर  
निरन्तर बन्ध है, क्योंकि, यहा प्रतिपक्ष प्रवृत्तिके ग्रन्थका अभाव है । जिस जिस गुणस्थानमें  
जितने जितने मूल प्रत्यय, नाना समय सम्बन्धी उत्तर प्रत्यय और एक समय सम्बन्धी जघन्य  
घ उन्मृष्ट प्रत्यय बंधे गये हैं, वे गुणस्थान उतने प्रत्ययोंसे सातावेदनीयको बाधते हैं ।



मि छाइडी गिरयगईए विणा तिगइसजुत्त । अप्पसत्थाए तिरिस्सगईए-सह कथ सादधो ? ण, गिरयगइ व अन्नतियअप्पमत्थत्ताभावो' । एव सामणो वि । सम्मामि छाइडी असज्जसम्माइडी दुगइमजुत्त वधति गिरय-तिरिस्सगईए विणा । उवग्गिमा देवगइसजुत्त । अपुव्वकरणस्स चरिमसत्तममागप्पहुडि उररे अगदिमजुत्त वधति । मिच्छाडिट्ठि-सामणसम्माइट्ठि-सम्मामिच्छाइट्ठि-अमज्जदसम्माइट्ठिणो चदुगदिया, दुगदिसज्जदासज्जदा सामिणो, सेसा मणुस गदीए वेव । वधद्दाण वधवो-उद्देवद्दाण च सुगम सुत्तुत्तादो । सन्वेसु गुणइण्णेषु सादा वेदणीयस्स धधो सादि अद्दुवो, सादासादाण परात्तणमरूणेण वधादो ।

**असादावेदणीय अरदि सोग अधिर असुह-अजसकित्तिणामाणं को वधो को अवंधो ? ॥ १३ ॥**

एद पुच्छासुत्त देसामामिय, तेणेत्य सन्वपुच्छओ कायव्वाओ । अधवा, आमकिय

मिध्यावृष्टि जीव नरकगतिके विना तीन गतियोंसे सयुक्त सातावेदनीयको याघते हैं ।

शका—अप्रशस्त तियग्गतिके साथ कैसे सातावेदनीयका बन्ध होना सम्भव है ?

सामाधान—नहीं, क्योंकि तिर्यग्गति नरकगतिके समान अत्यन्त अप्रशस्त नहीं है ।

इसी प्रकार सासादनसम्भ्यवृष्टि भी तीन गतियोंसे सयुक्त सातावेदनीयको याघते हैं । सम्यग्मिध्यावृष्टि और असयतसम्भ्यवृष्टि नरक और तियग्गतिके विना दो गतियोंसे सयुक्त याघते हैं । उपरिम जीव देवगतितसे सयुक्त याघते हैं । अपूर्वकरणके अन्तिम स्वप्न भागसे लेकर ऊपरके जीव अगतिसयुक्त याघते हैं । मिध्यावृष्टि, सासा दनसम्भ्यवृष्टि, सम्यग्मिध्यावृष्टि एवं असयतसम्भ्यवृष्टि चारों गतियोंवाले तथा दो गतियों वाले सयत्तामयत स्वामी हैं । शेष जीव मनुष्यगतिके ही स्वामी हैं । यथा-वान और पञ्चभ्युच्छेदस्थान मृत्योक्त होनेसे सुगम हैं । सय गुणन्यायोंमें साता और असाताके परियन्त बन्ध होनेसे सातावेदनीयका बन्ध सादि और अघुय है ।

अमातावेदनीय, अग्नि, शोक, अस्थिर, अशुभ और अयशकीर्ति नामकर्मका को पधक और कौन अवधक है ? ॥ १३ ॥

एह पुच्छाम्म देसामासक है, इत्थल्लिये यहा सय प्रश्नोंको करन्ता चाहिये । अथवा

अ-अपला 'अपपत्तामासादा', आश्री 'अपपत्तामावण', मप्रती 'अपपत्तामासादा' इति पाठ ।

सुत्तमेदमिदि दद्वत्र । तणिण्णयजणण्डमुत्तरसुत्त भणादि—

**मिच्छादिद्विष्यहुडि जाव पमत्तसंजदा वधा । एदे वंधा, अवसेसा  
अवंधा ॥ १४ ॥**

एद देसामासिय सुत्त, पुच्छिदत्थानमेगदेम छिन्दिण्ण अण्डाणादो । तणेदेण सूडदत्थाण अत्थपरूवणा कीरेदे । असादावेदणीयम्म पुच्च वधो उदओ पच्छा वोच्छिण्णो, पमत्तसजदम्मि वधवोच्छेदे सते पच्छा अजोगिचरिमसमयम्मि उदयवोच्छेदादो । एवमरदि-सोगाण, पमत्त-मजदम्मि वधे णट्टे सते अपुच्चचरिममयम्मि उदयवोच्छेदादो । अधिर-असुहाण पि एव चेव वत्तच्च, पमत्तम्मि वधे विणट्टे सजोगिचरिमसमयम्मि उदयवोच्छेदादो । अजमगित्तीण्ण पुच्चमुदओ वोच्छिज्जदि पच्छा नपो, असजदसम्मादिद्विम्मि उदए णट्टे पच्छा पमत्तमजदम्मि वधवोच्छेदादो ।

असादावेदणीय अग्नि सोगा सोदय परोदएहि नज्जति, उदयस्म भुवत्ताभावादो ।

यह आशका सूत्र है ऐसा समझना चाहिये । उसके निदचयोत्पादनार्थ उत्तर सूत्र कहते हैं—

मिथ्यादृष्टिसे लेकर प्रमत्तमयत तक बन्धक है । ये बन्धक हैं, शेष जीव अबन्धक हैं ॥ १४ ॥

यह देशामशक सूत्र है, क्योंकि वह पूछ हुए अर्थोंके एक देशको छुकर अथ स्थित है । इस कारण इसके द्वारा सूचित अर्थोंकी प्ररूपणा की जाती है । असादावेद नीयका पूर्वमें बन्ध और पश्चात् उदय व्युच्छिन्न होता है, क्योंकि, प्रमत्तगुणस्थानमें बन्धव्युच्छेद होजानेपर पीछे अयोगकेवलीके अन्तिम समयमें उदयका व्युच्छेद होता है । इसी प्रकार अरति और शोकका बन्ध पूर्वमें और उदय पश्चात् व्युच्छिन्न होता है, क्योंकि, प्रमत्तसयतमें बन्धके नष्ट होजानेपर पीछे अपूर्वकरणके अन्तिम समयमें उदयका व्युच्छेद होता है । अस्थिर और अशुभ प्रवृत्तियोंका भी इसी प्रकार ही बन्धोदयव्युच्छेद कहना चाहिये, क्योंकि, प्रमत्तसयतमें बन्धके नष्ट होनेपर सयोगकेवलीके अन्तिम समयमें उदयका व्युच्छेद होता है । नियशक्तिता पूर्वमें उदय व्युच्छिन्न होता है, पश्चात् बन्ध, क्योंकि असयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें उदयके नष्ट होजानेपर पीछे प्रमत्तसयत गुणस्थानमें बन्धका व्युच्छेद होता है ।

असादावेदनीय, अरति और शोक प्रवृत्तिया स्तोत्रय परोदयसे बधती हैं, क्योंकि,

१ अ-आमयो ' नियजणण्ड ' इति पाठ ।

एवमजमकित्ती वि, उदयस्म अद्भुतक्षण भेदाभावादे । णरि मन्दाजदम्पहुडि उवरी  
 परोदण्णेन वधो, तत्थ जमकित्ति मौत्तण अवराण उदयाभावादे । अधिर-असुहाण सोत्तण्णेव  
 वधो, धुवोदयत्तादे । एदामिं छण्ण पयडीण मिच्छाइत्तिप्पहुडि छमु वि गुणद्वारेणु सान्ते  
 वधो । कुदो ? एदासिं पडिन्नुत्तपयडीणोत्त वधवात्तेदाभावादे । णाणाण्णादिमोत्तमपयडीण  
 जे पच्चया पल्लविदा एदेसु छमु गुणद्वारेणु तेहि चेत्त पच्चगहि एदाजे छण्णयडीओ नञ्जति ।  
 असात्त जरदि मोगे मिच्छाइत्ती चउगडमजुत्त, सामणो गिरयगड भोत्तूण तिगइसजुत्त, सम्मा  
 मिच्छाइत्ति-असजदसम्मान्निट्टिणो देत्त मणुमगटसजुत्त, उवरीमा देवगडसजुत्त वधति । ए  
 अधिर असुभ अजमकित्तीण, भेदाभावात्ते । चउगडमिं छइत्ति मामणमम्मादिट्टि-सम्मानिच्छइत्ति-  
 असजदसम्मादिट्टिणो सामी । दुगडसजदासजत्ता सामी । पमत्तमजदा मणुमा चेत्त । वधद्वारेण  
 वधवोत्तेद्वारेण च सुगम । एत्ताओ छ वि पयडीओ वधेण मादि अद्भुताओ ।

मिच्छत्त णवुसयवेद-गिरयात्त गिरयगइ एइदिय-वेइदिय-तीइ-  
 दिय चउरिंदियजादि-हुडसटाण असपत्तसेवट्टसरीरसघडण-गिरयगइ-

इनका उदय ध्रुव नहीं है । इसी प्रकार अयशकालि भी स्यादय परोदयसे त्रयती है, क्योंकि,  
 उदयनी अभ्रुवतानी अपेक्षा इसके उक्त तीनों प्रकृतियोंसे कोई भेद नहीं है । विशेष  
 इतना है कि सयतामयतम लेकर आग इसका बन्ध परादयसे ही होता है, क्योंकि वहा  
 यशकालिका छोडकर अयशकालिका उदय नहीं रहता । अस्थिर और अशुभ प्रकृतियाका  
 बन्ध सरोदयसे ही होता है, क्योंकि, व ध्रुवादयी प्रकृतिया ह । अस्थिर और अशुभ प्रकृतियोंका मिथ्या  
 दृष्टि आदि छहों गुणर ज्ञानमें सात्त्विक त्रय हाना है । इस छहों प्रकृतियोंका मिथ्या  
 प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्ध युच्छेदका अभाव है । ज्ञानावरणादि सोत्त प्रकृतियोंके जो प्रत्यय  
 इन छह गुणरज्ञानमें कहे गये ह उहाँ प्रत्ययोंस हा ये छह प्रकृतिया वधती है । असाता  
 वेदनीय, अरति और मोक्ष प्रकृतियोंके मिथ्यादृष्टि जीव चारों गतियोंमें सयुक्त, सामा  
 दनसम्यग्दृष्टि नरकगतिना छोडकर तीन गतियोंसे सयुक्त, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असयत  
 सम्यग्दृष्टि देव मनुष्य गतियोंसे सयुक्त, तथा उपरिम जीव देवगतिसे सयुक्त वाधते ह ।  
 इसी प्रकार अस्थिर, अशुभ और अयशकालि प्रकृतियोंका भी गतिसयुक्त बन्ध जानना  
 चाहिये, क्योंकि, उनस इनके कोई भेद नहीं है । चारों गतियोंके मिथ्यादृष्टि, सासादन  
 सम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असयतसम्यग्दृष्टि स्वामी ह । दो गतियोंके सयता  
 सयत स्वामी ह । प्रमत्तसयत मनुष्य ही स्वामी होते हैं । बन्धाज्ञान और बन्धयुच्छेद  
 र ज्ञान सुगम हैं । ये छहों प्रकृतिया वधस सादि एव अभ्रुव ह ।

मिथ्यात्व, नपुसकवेद, नारकायु, नरकगति, एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय  
 ज्ञान, हुण्डमस्थान, अमप्राप्तमृपाटिकाग्रहण, नरकगतिप्रायोग्यानुपवी, आताप, स्थावर,

पाओग्गाणुपुन्वि आदाव थावर-सुहुम-अपज्जत्त साहारणसरीरणामाणं  
को वंधो को अवधो ? ॥ १५ ॥

एद पुच्छामुत्त देमामासिय, तेणेत्थ सत्रपुच्छाओ कायन्वाओ । पुन्विदसिस्सत्त  
समयविणामणइमुत्तरसुत्त भणदि—

मिच्छाइट्ठी वंधा । एदे वंधा, अवसेसा अवंधा ॥ १६ ॥

एद देमामासियसुत्त, सामित्तद्वाणाण दोण्ण चेय परूवणादो । तेणेदेण सुइदत्थाणं  
परूवण कीरेदे— मिच्छत्तस्स वपोदया मम वोच्छिज्जति, मिच्छाइट्ठिचरिममए वधोदययोन्नेद-  
दमणादो । एइदिय गीइदिय-नीइदिय चउरिंदियजादि-आदाय थावर सुहुम-अपज्जत्त साहारण-  
सरीरण मिच्छत्तभगो, मिच्छाइट्ठिम्हि वधोदययोच्चेद पडि एदासिं मिच्छत्तेण सह भेदाभावादो ।  
णवुमयवेदस्म पुत्र वधवोच्चेदो पच्छा उदयस्म', मिच्छाइट्ठिम्हि वधे णट्ठे सत्ते पच्छा अणि-  
यट्ठिम्हि उदययोन्नेदादो । एय णिरयाउ-णिरयगडपाओग्गाणुपुन्विणामाण वत्तत्र, मिच्छाइट्ठिम्हि

सूक्ष्म, अपर्याप्त और साधारणशरीर नामकर्मका कौन बन्धक है और कौन अनन्धक है ?  
॥ १५ ॥

यह पृच्छाम्भूत देशामर्शक है, इसलिये यहा पूर्योक्त सत्र प्रश्नाको करना चाहिये ।  
पूछनेवाले शिष्यका मशय नष्ट करनेके लिये उत्तर सूत्र कहते हैं—

मिथ्यादृष्टि जीव बन्धक है । ये बन्धक है, शेष जीव अनन्धक है ॥ १६ ॥

यह देशामर्शक सूत्र है, क्योंकि, वह अन्धस्वामित्य और अन्धाध्वान इन दोनोंका  
ही प्ररूपण करता है । इस कारण इससे सूचित अर्थोकी प्ररूपणा करते हैं—मिथ्यात्व  
प्रवृत्तिका बन्ध और उदय दोनों साथ व्युत्तिष्ठ होते हैं, क्योंकि, मिथ्यादृष्टि गुणस्थानके  
अन्तिम समयमें इसके बन्ध और उदयका व्युत्तेद देखा जाता है । ऐकन्दिय, द्वीन्द्रिय,  
त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय जानि, आताप, स्थावर, सूक्ष्म, अपर्याप्त और साधारणसरीर  
प्रवृत्तियोंका बन्धोदय युच्चेद मिथ्यात्व प्रवृत्तिके ही समान है, क्योंकि, मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें  
हानेवाले बन्धोदय युच्चेदके प्रति इनका मिथ्यात्वके साथ जोई भेद नहीं है । नपुंसकपदेका  
पूर्वमें बन्ध युच्चेद और पश्चात् उदयका युच्चेद होता है, क्योंकि, मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें  
बन्धके नष्ट होजानेपर पीछे अनिवृत्तिरूपण गुणस्थानमें उदयका व्युत्तेद होता है । इसी  
प्रकार नारकायु और नरकगतिप्रयोग्यानुपूर्वी नामकर्मका बन्धोदययुच्चेद कहना चाहिये,  
क्योंकि, मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें बन्धके नष्ट होजानेपर पीछे असयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें

बधे ण्डे सते पच्छा असनदसम्माइडिम्हि उदयवोच्छेदादो । एव हुडसठाण असपत्तेवट्ट-  
सरीरसपडणाय पि वत्तन्न, मिच्छाडिडिम्हि बधे फिडे मने पच्छा जहाकमेण सजोगिकेवलि  
अप्पमत्तसजद्रेसु उदयवोच्छेदादो ।

मिच्छतम्म सोदएणेव बधो । गिरयाउ गिरयगइ गिरयगइपाओग्गाणुपुव्विणामाओ परो-  
दण्णेव बज्जनि, सोदएण सगउपस्म विरोहादो । णुमुयवेद एडदिय वीडदिय-तीडदिय-चउरि-  
दियजादि हुडमठाण अमपनमेवट्टमरीरसपडण आदान थावर-सुहुम-अपज्जत्त-साहारणसरीराणि  
सोदय परोदएहि नज्जति, उभयथा नि विरोहाभाजादो ।

मिच्छत गिरयाउअ च गिरतरवधिणो, धुवउधित्तादो अद्धाक्खएण बधविणासा  
भावणो । अवसेममउपयडीओ मात्र बज्जनि, तामि<sup>१</sup> पडिक्कउपयडिबधमभवादो ।

चटुहि मूलपच्चएहि पचउचामणाणासमयउत्तरपच्चएहि दस अट्टारमणसमयउत्तरणु  
क्कत्तपच्चएहि य मिच्छाडिडी एदाओ पयडीओ बधइ । णवरि वेउव्विय वेउव्वियमिस्स-  
ओगलियमिम्म कम्मइयपच्चएहि तिणा एगवचामपच्चएहि गिरयाउअ बधत्ति वत्तव्व । एव

इनक उदयका व्युच्छन्न हाता है । इसी प्रकार हुण्डसस्थान आर असप्राप्तसृष्टिकासहननका  
भी कहना चाहिये, क्योंकि, मिथ्याहाष्टि गुणस्थानमें वन्दने नष्ट होजानेपर पीछे यथा  
क्रमसे मर्यादके इन्हीं और अग्रमत्तमयत गुणस्थानमें इनके उदयका युच्छेद होता है ।

मिथ्यात्वका स्वोदयसे ही बध हाता है । नारकायु, नरकगति और नरकगति  
प्रायेतयापुर्ण्य नामकम परोदयसे ही बधते हैं, क्योंकि, स्वोदयसे इनके अपने बन्धका  
विरोध है । नपुमकउद, एकैन्द्रिय, हीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय जाति हुण्डसस्थान,  
असप्राप्तसृष्टिकासहनन, आनाप, स्थावर, सूक्ष्म, अपयान्न और माधाराणशरीर स्वोदय  
परोदयसे बधते हैं, क्योंकि, दोनों प्रकारसे भी इनका बन्ध होनेमें कोई विरोध नहीं है ।

मिथ्यात्व और नारकायु प्रवृत्तिया निरन्तर बधनेवाली हैं, क्योंकि धुववन्धी  
हानसे वारम्भयसे इनके उच्छेदविनाशका अभाव है । शप मत्र प्रवृत्तिया निरन्तर बधती  
हैं, क्योंकि, उनकी प्रतिपक्ष प्रवृत्तियोंके वारम्भकी सम्भावना है ।

चार मूल प्रत्ययोंमें, पञ्चजन जाना समय मन्वन्धी उत्तर प्रत्ययासे, तथा दश ध अडा  
रह एक समय मन्वन्धी जघय णव उट्टए प्रत्ययोंसे मिथ्याहाष्टि इन प्रवृत्तियोंको बाधता  
है । विशेष इतना है कि वैश्विक, वैश्विकमिथ्य और वैश्विकमिथ्य और कामण काययोग  
प्रत्ययोंके बिना यह इपयाधन प्रत्ययोंमें नारकायुको बाधता है, ऐसा कहना चाहिये । इसी

१ शब्द 'तामि' इति पाठ ।

[गिरयगड-] गिरयगड्पाओग्गाणुपुञ्जीण । नेड्दिय तेड्दिय-चउरिदिय सुहुम-साहारण अपञ्जत्ताण वेउच्चियदुगेण विणा तेत्तणा पन्चया ।

मिच्छत्त चउगडसजुत्त, णनुमयवेद देवगड्ण विणा तिगडसजुत्त, गिरयाउ-गिरय-गड-गिरयगड्पाओग्गाणुपुञ्जिणामाओ गिरयगडसजुत्त, हुडमठाण देवगड मोत्तूण तिगडसजुत्त, असपत्तमेवद्वमरीरमघडण-अपञ्जत्तणामाओ तिरिक्ख-मणुमंगडसजुत्त, मेसाओ तिरिक्खगड-सजुत्त वधति ।

मिच्छत्त-णनुसयवेद-हुडमठाण असपत्तमेवद्वमरीरमघडणाण चउगडमिच्छाड्डी सामी । एड्दिय-आदाव थावणामाण वधम्म गिरयगड मोत्तूण तिगडमिच्छाड्डी सामी । मेसाण पयडीण तिरिक्ख मणुसगडमिच्छाड्डी सामी । वधद्धाण वधवोच्छेदद्दणं च सुगम । मिच्छत्तस्म वधो सादि-जणादि धुव-अद्भुवगेण चउत्तिहो । मेसाण वधो सादि-अद्भुवो ।

प्रकार [ नरकगति और ] नरकगतिप्रायोग्यानुपूर्विके भी इफ्याउन प्रत्यय है । द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुन्द्रिय, मूहम, स्वाधारण और अपर्याप्त प्रकृतियोंके त्रैत्रियिकद्विकके विना तिरपन प्रत्यय है ।

मिथ्यात्वके चार गतियोंमे सयुक्त नपुसकवेदके त्रेत्रगतिके विना तीन गतियोंसे सयुक्त, नारकायु, नरकगति और नरकगतिप्रायोग्यानुपूर्विके नामकर्मके नरकगतिसे सयुक्त, हुण्डमस्थानके देवगतिके छोड तीन गतियोंमे सयुक्त, असप्राप्तखपाटिकाशरीरसहनन और अपर्याप्त नामकर्मके निर्यग्गति व मनुष्यगतिये सयुक्त, तथा शेष प्रकृतियोंके निर्यग्गतिसे सयुक्त थाधते है ।

मिथ्यात्व, नपुसकवेद, हुण्डमस्थान और असप्राप्तखपाटिकाशरीरसहनन प्रकृतियोंके चारों गतियोंके मिथ्यादृष्टि स्वामी है । एकेन्द्रिय, आताप और स्थावर नामकर्मके वधके नरकगतिके छोड शेष तीन गतियोंके मिथ्यादृष्टि स्वामी है । शेष प्रकृतियोंके निर्यग्गति व मनुष्यगतिके मिथ्यादृष्टि स्वामी है । बन्धाधान और बन्धयुच्छेदस्थान सुगम है । मिथ्यात्वक, वध सादि, जनादि, धुत्र और अधुत्र भेदसे चार प्रकार है । शेष प्रकृतियोंका बन्ध सादि ओर अधुव होता है ।

१ अत्रता ' णनुमयवेद व देवगड्ण ' इति पाठ ।

२ अतिवृ ' वधवाच्छिडणाय ' इति पाठ ।

अपचक्राणावरणीयकोष माण-माया-लोभ मनुसगड-ओरा-  
लियसरीर-ओरालियसरीरअगोत्रग-उज्जरिसहवडरणारायणसंघडण-  
मनुसगडपाओग्गाणुपुत्रिणामाण को वंधो को अबंधो ? ॥ १७ ॥

सुगम ।

मिच्छादृष्टिपहुडि जाप अमजदमम्मादृष्टी वंधा । एदे वधा,  
अवसेसा अवधा ॥ १८ ॥

एद देसामामियसुत, सामिच्छाणाण' चैव परूणादो । तेणेदेण सूइत्थपरूवणा  
कीरेदे । त वटा— अपचक्राणावरणीयउत्तकस्य मनुसगडपाओग्गाणुपुत्रिणामाण वधोदया  
मम वोठिउज्जति, एककम्हि अमजदमम्मादृष्टिदोण विणामुत्तमादो' । मनुसगडए पुच  
वधो पच्छा उदओ वोच्छिणो, अमजदसम्मादिदृष्टिदो वधे णट्टे पच्छा अजोगिचरिमसमयमि  
उदयवोच्छेदादो । एमओरालियसरीर ओरालियसरीरअगोत्रग-उज्जरिसहवडरणारायणसंघडणाण ।  
णपरि सजोगिचरिमसमण उदयवोच्छेदो ।

अप्रयास्यानावरणीय कोष, मान, माया, लोभ, मनुष्यगति, औदारिकरारि, औदा-  
रिकरारिगोपाग, उज्जर्यभउज्जनाराचसहनन और मनुष्यगतिप्रायोगयानुपूर्वा नामकर्मका कौन  
बंधक और कौन अबंधक है ? ॥ १७ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

मिथ्यादृष्टिमें लेकर अमयतसम्यग्दृष्टि तक बंधक हैं । ये बन्धक हैं, शेष जीव  
अबन्धक हैं ॥ १८ ॥

यह देशामशास्त्र सूत्र है, क्योंकि, यह केवल धम्मरामि व और उधाध्यानका ही  
निरूपण करता है । इसी कारण इस सूत्रसे सूचित अर्थकी प्ररूपणा करते हैं । यह इस  
प्रकार है—अप्रत्ययत्थालावरणचतुष्क और मनुष्यगतिप्रायोगयानुपूर्वी नामकर्मका बंध और  
उदय दोनों सादरमें व्युत्पन्न होते हैं, क्योंकि, एक अमयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें दोनोंके  
विनाश पाये जाते हैं । मनुष्यगतिसा पूर्वमें बन्ध और पश्चात् उदय व्युत्पन्न होता है,  
क्योंकि असयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें उदयके नष्ट होनेपर पीछे अयोगकेवलीके अन्तिम  
समयमें उदयका व्युत्पन्न होता है । इसी प्रकार औदारिकरारि, औदारिकरारिगोपाग  
और उज्जर्यभउज्जनाराचसहननना पूर्वमें उध और पश्चात् उदय व्युत्पन्न होता है । विशेष  
इतना है कि सयोगके अन्तिम समयमें उदयना व्युत्पन्न होता है ।

१ प्रतिपु 'सामिच्छाणाण' इति पाठ ।

२ प्रतिपु 'सम्मादिदृष्टि' इति पाठ ।

३ प्रतिपु विणामुत्तमादो' इति पाठ ।

अपञ्चकखाणावरणचउत्क्रादीण सव्वेसिं मोदय-परोदएहि वधो, त्रिरोहाभावादे ।  
णत्तरि सम्मामिच्छाड्ढि-असजदसम्मादिट्ठीसु मणुसगइदुगोरालियदुग वज्जरिमहमपडणोण परो-  
दओ वधो । अपञ्चकखाणावरणचउत्क्रादीणो णित्तरो, धुवन्धित्तादे । मणुसगइ-मणुसगइपा-  
ओग्गाणुपुच्चिन्धो मिच्छाड्ढि-सासणमम्माड्ढीण सातर-णित्तरो, आणदादिदेनेसु णित्तवध  
लद्धण अण्णत्थ सातरवधुवलभादे । सम्मामिच्छाड्ढि अजदसम्माड्ढीसु णित्तगे, देव णेरइय-  
अपिददोगुणट्ठाणेसु अण्णगइ आणुपुञ्जीण वधाभावादे । एवमोरालियसरीर-ओरालियसरीर-  
अगोयग वज्जरिसहसघडणाण वत्तव । कुदो ? आंगालियसरीरस्म सत्रदेव-णेगइएसु तेउ-  
वाउत्क्राड्ढसु च णित्तव नुवलभादे, अण्णत्थ सातरवधदमणादे, ओरालियसरीरअगोवगस्म  
सत्रणेगइएसु सणन्कुमारदिदेवेसु च णित्तव नध लद्धण ईमाणादिहेट्ठिमेदेवाण मिच्छाड्ढि-  
सासणेसु तिरिकल-मणुस्सेसु च सातरवधुवलभादे, वज्जरिमहसघडणस्म देव-णेगइयमम्मा-  
मिच्छाड्ढि-असजदसम्मादिट्ठीसु णित्तव न लद्धण अण्णत्थ मातरनुवलभादे ।

अप्रत्याख्यानावरणचतुष्क जादिक मन्त्रका स्वोदय परोदयसे रन्ध होता हे, क्योंकि,  
'देवा ह्येतेमं कोइ विरोध नहीं है । प्रिदोय यह हे कि सम्यग्मिथ्यादृष्टि ओर असयतसम्यग्  
दृष्टि गुणस्थानमें मनुष्यगतिदिक, आदारिकदिक पर उज्जर्षभसहननका परोदय रन्ध  
होता है ।

अप्रत्याख्यानावरणचतुष्क रन्ध निरन्तर है, क्योंकि, 'ये चारों प्रकृतिया ध्रुव  
बन्धी है । मनुष्यगति ओर मनुष्यगतिप्रयोग्यानुपूर्विका रन्ध मिथ्यादृष्टि ओर सासादन  
सम्यग्दृष्टिके सान्तर निरन्तर ह, क्योंकि, आनतादि देवोंमें निरन्तर बन्धको प्राप्तकर अन्यत्र  
सान्तर रन्ध पाया जाता हे । सम्यग्मिथ्यादृष्टि ओर असयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें निर-  
न्तर बन्ध है, क्योंकि, देवों पर नारन्नियोंके इन प्रिदक्षित दो गुणस्थानोंमें अन्य गति व  
जानुपूर्विके बन्धका जभाव है । इसी प्रकार औदारिकशरीर ओर आदारिकशरीरगोपाग और  
उज्जर्षभसहननके भी रहना चाहिये । इसका कारण यह कि औदारिकशरीरका सर्व देव  
नारन्नी तथा तेजकायिक व प्राणकायिक जीवोंमें निरन्तर रन्ध पाया जाता है, अन्यत्र  
यही बन्ध सान्तर देखा जाता है, औदारिकशरीरगोपागका सब नारन्नियोंमें और  
सान्तकुमार पर्य माहेन्द्र कल्पके देवोंमें भी निरन्तर बन्ध पाकर ईशानादिक अधस्तन देवोंके  
मिथ्यादृष्टि व सासादन गुणस्थानोंमें तथा तिरिच और मनुष्योंमें सातर रन्ध पाया जाता  
है, उज्जर्षभसहननका देव ओर नारन्नी सम्यग्मिथ्यादृष्टि व असयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें  
निरन्तर रन्ध पाकर अन्यत्र सान्तर रन्ध पाया जाता हे ।



अपञ्चकखानापरणचउक्क चउगुणद्राणजीवा णाणापरणपञ्चगहि चउ वधति । एव मणुसगइ मणुसगइपाओग्गाणुपुञ्जीण पि चदुसु गुणद्राणेसु पञ्चया परूवेदव्वा । पञ्चि सम्माभिच्छाइडिस्म वादात्पञ्चया वत्तया, ओरालियकायजोगपञ्चयाभागादे । असज् सम्माइडिस्म चोदालपञ्चया, ओरालियकायजोग ओरालियमिस्मकायजोगपञ्चयाणमभागादे । एवओरालियसरीर ओरालियमरीरअगोवग-वज्जग्गिमहमघडणण पि पञ्चयपरूवणा मसुसगइए ३ कायव्वा ।

अपञ्चकखानाचउक्क मिच्छाइडि चउगडसजुत्त, सासणो णिरयगईए विणा तिगड-सजुत्त, सेसा दो वि देव-मणुमगडसजुत्त उधति । मणुमगइ मणुमगडपाओग्गाणुपुञ्जीओ सज्-गुणद्राणजीवा मणुसगइसजुत्त उधति । ओरालियमरीर ओरालियअगावगाइ मिच्छाइडि सासण सम्मादिडिणो तिरिकप मणुमगइससुत्त, सम्माभिच्छाइडि अमजदमम्मादिडिणो मणुसगडसजुत्त वधति । एव वज्जग्गिमहउग्गारायणमघडणस्य वि उत्तय, भेदाभावादे ।

अपञ्चकखानाचउक्कअधम्य चउगइमिच्छाइडि-सासणमम्मादिडि सम्माभिच्छाइडि असज्दमम्मादिडि मामी । मणुमगइ मणुमगइपाओग्गाणुपुञ्चि ओरालियसरीर-ओरालियअगोवग

अप्रत्याख्यानानापरणचतुष्कको चार गुणस्थानोंके जव भानापरणप्रत्ययोंमे ही बाधते हैं । इसी प्रकार मनुष्यगति और मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वीके भी प्रत्ययोंकी चारों गुणस्थानोंमें प्ररूपणा करना चाहिये । विशेषतया यह है कि सम्यग्मिध्यादष्टिके ध्यालीम प्रत्यय कहना चाहिये, क्योंकि, उसके औदारिककाययोग प्रत्ययका अभाव है । असयत सम्यग्दष्टिके चयालीम प्रत्यय कहना चाहिये, क्योंकि, उसके औदारिककाययोग और औदारिकमिश्रकाययोग प्रत्ययोंका अभाव है । इसी प्रकार औदारिकशरीर, औदारिक शरीरारागपाग और वज्जग्गिमसहननके भी प्रत्ययोंकी प्ररूपणा मनुष्यगति नामकर्मके समान करना चाहिये ।

अप्रत्याख्यानानापरणचतुष्कको मिध्यादष्टि चार गतियोंसे सयुक्त, सासादनसम्यग्दष्टि नरकगतिके घिना तीन गतियोंसे सयुक्त, और शेष दोनों गुणस्थानमें जीव देव व मनुष्य गतिसे सयुक्त बाधते हैं । मनुष्यगति और मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वीको मव गुणस्थानोंके जीव मनुष्यगतिसे सयुक्त बाधते हैं । औदारिकशरीर और औदारिकअगोपागको मिध्यादष्टि और सासादनसम्यग्दष्टि तियरगति पञ्च मनुष्यगति सयुक्त बाधते हैं, सम्यग्मिध्यादष्टि और असयतसम्यग्दष्टि मनुष्यगतिमे सयुक्त बाधते ह । इसी प्रकार वज्जग्गिमसहननका भी गतिसयाग कहना चाहिये, क्योंकि, उक्त प्रवृत्तियोंसे इसके कोई भेद नहीं है ।

अप्रत्याख्यानानापरणचतुष्कक यधम चारों गतियोंके मिध्यादष्टि, सासादनसम्यग्दष्टि, सम्यग्मिध्यादष्टि और असयतसम्यग्दष्टि स्वामी ह । मनुष्यगति, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, औदारिकशरीर, औदारिकअगोपाग और वज्जग्गिमसहनन प्रवृत्तियोंके चारों

वज्जरिसहवडरणारायणसरीरसघडणाण चउगइमिच्छाइडि-सासणसम्मादिट्ठी सामी । दुगइसम्मा-  
मिच्छाइडि-असज्जदमम्मादिट्ठी सामी । वपड्ढाण वधणहपदेसो वि सुगमो ।

अपच्चक्रखणचउत्कर्मधो मिच्छाइडिम्हि चउव्विहो, धुववधित्तादो । संसेसु गुणट्ठाणेषु  
तिविहो, पुनत्ताभावादो । मणुमगइ ओगलियसरीर ओरालियसरीरअगोवग-वज्जरिसहवडरणारा-  
यणमघडण-मणुमगट्ठाओग्गाणुपुञ्जिणामाण यधो सव्वगुणट्ठाणेषु सादि-अद्दुवो, पडिक्ख-  
पयडिक्खसभवादो । ओरालियसरीरस्स णिच्चणिगोदेसु सव्वकाल वेउव्विय आहारसरीरवध-  
विरहिदेसु धुववगो । अणादियधधो च ऋण्ण लब्धे ? ण, पडिक्खपयडिक्खसत्तिसम्भाव  
पडुच्च अणादि-पुत्रभाजापरूवणादो, चउगइणिगोदे मोत्तूण णिच्चणिगोदेहि एत्थ अहियारा-  
भावादो वा । वपवत्ति पडुच्च पुण वपस्म अणादियधुवत्त ण विरुज्जेदे ।

गतियोंके मिथ्यादृष्टि व साम्याद्वनमन्यदृष्टि स्वामी हं । को गतियोंके सम्यग्मिथ्यादृष्टि और  
असत्यतन्मन्यदृष्टि स्वामी हं । बन्धाध्यान और ग्रन्थनष्टप्रदेश अर्थात् जिस स्थान तक ग्रन्थ  
होना है तथा जहा ग्रन्थकी युञ्जित्ति होती है वह जानना भी मुगम है ।

अप्रत्याख्यानांतरणचतुष्फला ग्रन्थ मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें चारों प्रकारका है, क्योंकि,  
ये चारों प्रकृतिया ध्रुववन्धी ह । शेष गुणस्थानोंमें इनका ग्रन्थ तीन प्रकारका है, क्योंकि,  
वहा ध्रुव ग्रन्थ नहीं होता । मनुष्यगति, आहारिकशरीर, आहारिकशरीरगोपाग, वज्रर्षभ-  
वज्रनागचसहनन और मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी नामकर्मका ग्रन्थ सब गुणस्थानोंमें सादि  
घ अर्धुव है, क्योंकि, इनकी प्रतिपक्ष प्रकृतियोंका ग्रन्थ सम्भव है । सर्वकाल वैकृतिक  
ओर आहारक शरीरोंके ग्रन्थमें रहित नित्यनिगोदी जीवोंमें आहारिकशरीरका ध्रुव ग्रन्थ  
होता है ।

शंका—नित्यनिगोदी जीवोंमें आहारिकशरीरका अनादि ग्रन्थ भी क्यों नहीं  
पाया जाता ?

समाधान—नहीं पाया जाता, क्योंकि, प्रतिपक्ष प्रकृतियोंकी ग्रन्थशक्तिके सद्  
भाजकी अपेक्षा करके अनादि रूपसे ध्रुव ग्रन्थका प्ररूपण नहीं किया गया । अथवा  
चतुर्गतिनिगोदोंको अर्थात् चारों गतियोंमें होकर पुन निगोदम आये हुए जीवोंको छोड़कर  
नित्यनिगोदोंका यहा अधिकार नहीं है । परन्तु ग्रन्थकी अभिव्यक्तिकी अपेक्षा करके ग्रन्थके  
अनादि ओर ध्रुव होनेमें कोई विरोध नहीं है ।

पञ्चखाणावरणीयकोध-माण माया-लोभाणं को वंधो को  
अबंधो १ ॥ १९ ॥

सुगममेद सुत ।

मिच्छाद्विद्विपहुडि जाव संजदामंजदा वंधा ॥ २० ॥

एद देसामामियसुत्त, मामित्तद्वाणाणमेव पञ्चखाणादो । तेणे थ अबुत्तथाणं परुवणा  
कीरदे । त जहा— एदामि पयटीण नधोत्त्या सम वोच्छिण्णा, मज्जदामजदमि वधस्सेव  
उदयवोच्छेदमणादो । एदामि चउण्ण पि नधो सोदय-परोदण्हि, कोधादीण वधकाले तस्सेव  
उदए पि होदज्वमिदि णियमाभाणो । एदामि चदुण्ण पि णिरत्तो नो मत्तेत्तालीमणुव  
यत्तपयडीसु पाणादो । मिच्छाद्विद्विआदिपचगुणङ्गाणेमु जे पञ्चया परुविदा मूलुत्तरमेएण तेहि  
पञ्चण्हि एदाओ वज्जति ति तेसु तेसु गुणङ्गाणेसु ते ते चेव पञ्चया वत्तया, वधस्त  
पञ्चयममूहकज्जत्तादो । अथवा, एदामि पयटीण नधस्स पञ्चखाणपयडीए' उदममामण

प्रत्यारयानानागणीय क्रोध, मान, माया और लोभका कौन बन्धक और कौन अबन्धक  
है ? ॥ १९ ॥

यह मूल सुगम है ।

मिथ्यादृष्टि लेकर सयतामयत तक बंधक है ॥ २० ॥

यह देशामर्ग मूल है क्योंकि, यह बन्धस्वामित्व और वधाधानका ही निरूपण  
करता है । इस कारण यहा अनुक्त अर्थोंकी प्ररूपणा करते हैं । वह इस प्रकार है—इन  
चारों प्रकृतियोंका बन्ध और उदय दोनों सा ए ही मूलुत्तर होते हैं, क्योंकि, सयतामयत  
गुणस्थानमें उरके समान इनके उदयका भी व्युच्छेद दखा जाता है । इन चारों ही  
प्रकृतियोंका एव सोदय परोदयसे होता है, क्योंकि, प्राधातिकोंके उधकारमें उसका ही  
उत्थ भी होना चाहिये ऐसा कोई नियम नहीं है । इन चारोंका ही निरन्तर बन्ध होता है,  
क्योंकि, ये चारों प्रकृतिया मतागत मूलुत्तर प्रकृतियोंमें आती हैं ।

मिथ्यादृष्टि आदि पाच गुणस्थानोंमें जो मूल व उत्तर प्रत्यय बंधे  
गये हैं उन प्रत्ययोंमें ये प्रकृतिया प्रधानी हैं, अत एव उन उन गुण  
स्थानोंमें उहीं उहीं प्रत्ययोंमें कहना चाहिये, क्योंकि, बन्ध प्रत्ययसमूहका  
है । अथवा, इन प्रकृतियोंके वधका प्रत्यय प्रत्याख्यान प्रकृतिका उदयसामान्य है ।

पचओ । सेसकसायाणमुदओ जोगो च पचओ ण होदि, एत्तो उररि तेसु सेतेसु वि एदासिं वधाभावादो । ण मिच्छत्ताणताणुत्रवि-अपचकसाणांरणाणमुदओ नि एदासिं वधस्म पचओ, तेण विणा नि वधुवलभादो । जस्सण्णय-वदिरेगेहि जस्मण्णयवदिरेगा होति [त] तस्म कज्जमियर च कारण । ण चेद पचकसाणोदय मुच्चा अण्णत्थत्थि' तम्हा पचचस्साणोदओ चेव पचओ त्ति सिद्ध । मिच्छाड्ढिग्धि णट्टवधसोलसपयडीण वधस्म मिच्छत्तोदओ चेव पचओ, तेण विणा तासिं वधाणुवलभादो । सामणम्मि णट्टवधपणुवीमपयडीण अणताणुवधीणमुदओ चेव पचओ, तेण विणा तासिं वधाणुवलभादो । असजदमम्मादिग्धिग्धि णट्टवधणपयडीण वधस्स अपचकसाणोदओ कारण, तेण विणा तासिं वधाणुवलभादो । पमत्तमजदम्मि णट्टवध-उप्पयडीण वधस्म पमादो पचओ, तेण विणा तदणुवलभादो । एवमण्णत्थ वि जाणिय वत्तव ।

एदाओ पयटीओ मिच्छाड्ढी चउगइसजुत्त, मासणो गिरयगईए' विणा तिगइसजुत्त,

शेष कषायार्द्रा उदय ओर यत्न प्रत्यय नहा हे, क्योंकि, पाचवें गुणस्थानके ऊपर उनके रहनेपर भी इनका ग्रन्थ नहीं होता । मिथ्यात्व, अनन्तानुबन्धी और अप्रत्याख्यानारण प्रकृतियोंका उदय भी इन प्रकृतियोंके बन्धका प्रत्यय नहीं है, क्योंकि, उनके उदयके बिना भी इनका ग्रन्थ पाया जाता है । जिसके अन्वय और व्यतिरेकके साथ जिसका अन्वय और व्यतिरेक होता है वह उमका नार्थ ओर दूसरा कारण होता है । और यह बात प्रत्याख्यानारणके उदयको छोटेकर ग्रन्थ है नहीं, इसलिये प्रत्याख्यानारणका उदय ही अपने बन्धका प्रत्यय है, यह बात सिद्ध हुई । मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें व्युच्छिन्न सोलह प्रकृतियोंके ग्रन्थका प्रत्यय मिथ्यात्वका उदय ही है, क्योंकि, उसके बिना उन सोलह प्रकृतियोंका ग्रन्थ पाया नहीं जाता । सासादनगुणस्थानमें व्युच्छिन्न पच्चीस प्रकृतियोंके बन्धका अनन्तानुबन्धितुक्का उदय ही प्रत्यय है, क्योंकि, उसके बिना इन पच्चीस प्रकृतियोंका ग्रन्थ पाया नहीं जाता । असयतमभ्यग्दृष्टि गुणस्थानमें व्युच्छिन्न नौ प्रकृतियोंके बन्धका अप्रत्याख्यानारणका उदय कारण है, क्योंकि, उसके बिना उनका बन्ध पाया नहीं जाता । प्रमत्तसयत गुणस्थानमें व्युच्छिन्न छह प्रकृतियोंके बन्धका प्रत्यय प्रमाद है, क्योंकि, उसके बिना उनका ग्रन्थ पाया नहीं जाता । इसी प्रकार अन्यत्र भी जानकर कहना चाहिये ।

इन प्रकृतियोंको मिथ्यादृष्टि चारों गतियाँसे संयुक्त, सासादनमभ्यग्दृष्टि नरक-

१ प्रतिपु 'अण्णत्थत्थि' इति पाठ । २ अप्रतो 'गिरयगई' आ मप्रयो 'गिरयगई' इति पाठ ।

पादादो । पुरिसवेदनओ सातरो । कुदो ? मिच्छाडडि सासणेसु पडिअखपयरीण बधु वलभादो । गिरतरौ नि, पम्म-सुक्केल्लेस्सियतिरिअए-मणुममिच्छाडडि-सासणसम्मादिद्वीसु मग्गा मिच्छाडडिआदिउवरिमगुणट्टाणेसु च गिरतरअधुवलभादो ।

एदामि पच्चयपरुणणे कीरमाणे पुथ पुअ जे पच्चया मलुत्तरणाणेगसमयभेयमिण्णा गुणट्टाणाण परुणिदा ताणि गुणट्टाणाणि तेहि पच्चएहि एदाओ पयडीओ वधति ति पुथ-परुवणा णत्थि, भेदाणुअलभादो । अवा पुरिसवेदो गयपच्चओ, अवगदवेदेसु तच्चघाणु-वलभाणे । कोथमजलणो सज्जलणकामयस्स ति वाणुभागोदयपच्चओ, उवसमसेडिमिह कोथ चरिमाणुभागोदयादो अणतगुणहीणेण वृणाणुभागोदएण कोअसज्जलणस्स वधाणुअलभादो । मिच्छाडडि सासणे च गिरयगईए पिणा पुरिसवेद तिगइसजुत्त वधइ । गिरयगईए सइ पुरिसवेदो क्खिण उज्जेदे ? ण, अचताभावेण पडिसिद्धत्तादो । सम्मामिच्छाडडि असज्ज सम्मादिद्वी च दुगइसजुत्त, तेमि गिरय निरिक्खगईए वधाभावादो । सज्जदासअदण्णुडि उवरिमा

धुररधी प्रतियोगे मध्यमे आया हे । पुरूपेदको अत्र सान्तर ह । इसरा कारण यह कि मिथ्यादृष्टि ओर स्वासादन गुणस्थानोंमें प्रतिपक्ष प्रतियोगका बन्ध पाया जाता हे । वही बध निरन्तर भी हे, क्योंकि, पक्ष पक्ष शुद्ध लेख्यागाले तियच व मनुष्य मिथ्यादृष्टि और स्वासादनसम्यग्दृष्टियोंमें तत्र सम्यग्मिथ्यादृष्टि आदि उपरिम गुणस्थानोंमें भी निरन्तर बध पाया जाता ह ।

इन दोनों प्रतियोगके प्रत्ययोंका प्ररूपण करनेपर मूल, उत्तर तथा नाना व एक समय सम्यग् ही प्रत्ययोंके भेदसे भिन्न पृथक् पृथक् जो प्रत्यय जिन गुणस्थानोंके बधे गये हे वे गुणस्थान उन प्रत्ययोंसे इन प्रतियोगोंसे राधेन हे, जत इनकी पृथक् प्रत्ययप्ररूपणा नहीं हे, क्योंकि, उनसे यहा कोई भेद नहा पाया जाता । अवा पुरूपेद गतप्रत्यय हे, अर्थात् उसका प्रत्यय उत्तर एता ही चुक हे, क्योंकि, अपगतवेदियोंमें उसका बन्ध नहीं पाया जाता । सज्जलनक्रोधना वध सज्जलनरूपायके तीव्र अनुभागादयनिमित्तक हे, क्योंकि, उपशमश्रेणोंमें क्रोधके अतिम अनुभागादयने अवा अनन्तगुणहानिसे हीन अनुभागादयसे सज्जलनक्रोधना वध नहा पाया जाता ।

मिथ्यादृष्टि ओर स्वासादनसम्यग्दृष्टि नरकगतिके बिना पुरूपेदको तीन गतियोंसे संयुक्त राधेन हे ।

शुद्धा—नरकगतिर साथ पुरूपेद क्या नहीं वधता ?

समाधान—नहीं राधता, क्योंकि, यह अत्यन्ताभाव रूपसे प्रतिषिद्ध हे ।

सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असत्यतमस्यग्दृष्टि दो गतियोंसे संयुक्त राधते हे, क्योंकि, इनके नरकगति और नियगतिके राधना अभाव हे । स्वतासंयतसे लेकर उपरिम जीव

देवगडसजुत्त, सेसगईण तत्थ वधाभावादो । अपुव्वकरणसत्तमसत्तभागप्पहुडि उवरिमा अगदिसजुत्त वधति, तत्थ गडकम्मस्स वधाभावादो । एव कोधमजलणस्म वि वत्तन्व । णव्वरि मिच्छाडड्डी चउगडसजुत्त प्रथड, तत्थ णिरयगईए सह वप्रविरोहाभावादो । पुरिसवेदवधस्स चउगडमिच्छाडड्डी सासणसम्माडड्डी सम्मामिच्छाडड्डी असुजदम्ममादिट्ठिणो सामी । दुगडसजदा-सजदा सामी, देव णिरयगईसु तदभावादो । उपरिमा मणुसगईए सामी, अण्णत्थ पमत्तादीण-मभावादो । पुरिसवेदवधो मव्वगुणट्ठणेषु साट्ठिणो अद्धवो, पट्ठिवन्नपयडीण वधुवलभादो । णियमेण सम्मामिच्छाडड्डीपहुडि उवरिमेसु वधनिणामदसणादो । कोऽसजलणस्म मिच्छाडड्डीमिह चउत्तिहो नथो, धुववपत्तादो । उपरिमेसु तिप्पिहो, पुत्ताभावादो ।

## माण मायसंजलणानं को वंधो को अवंधो ? ॥ २३ ॥

सुगममेद ।

देवगतिसे सयुक्त गंधने ह, क्योंकि, वहा जेप गतियोंका बन्ध नहीं होता । अपूर्वकरणके सातवें सप्तम भागसे लेकर उपरिम जीव जगतिमयुक्त पुरुषवेदको बाधते ह, क्योंकि, वहा गतिकर्मका बन्ध नहीं होता । इसी प्रकार सञ्चलनको प्रके भी कहना चाहिये । विदोष इतना हे कि मिथ्यादृष्टि उसे चार गतियोंसे सयुक्त गंधता हे क्योंकि, वहा नरकगतिके साथ उसके बन्ध होनेमें कोई विरोध नहीं हे ।

पुरुषवेदके बन्धके चारों गतियांजाले मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि जेव असयतसम्यग्दृष्टि स्वामी ह । दो गतियोंजाले सयतासयत स्वामी ह, क्योंकि, देव व नरक गतिमें सयतासयताका अभाव है । ऊपरके जीव मनुष्यगतिके ही स्वामी ह, क्योंकि, दूसरी गतियोंमें प्रमत्तसयतादिकोंका अभाव हे । पुरुषवेदका बन्ध सत्र गुणस्थानोंमें सादिक व अधुत्र हे, क्योंकि, वहा प्रतिपन्न प्रकृतियोंका बन्ध पाया जाता है, नियमसे सम्यग्मिथ्यादृष्टिमें लेकर उपरिम गुणस्थानोंमें प्रतिपक्ष प्रकृतियोंका बन्ध विनाश देखा जाता है । सञ्चलनकोधका मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें चारों प्रकारका बन्ध होता है, क्योंकि, वह धुत्रबन्धी है । उपरिम गुणस्थानोंमें तीन प्रकारका बन्ध होता हे, क्योंकि, वहा ध्रुव बंधका अभाव हे ।

सञ्चलन मान और मायाका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ २३ ॥

यह सत्य सुगम है ।

मिच्छाद्दृष्टिपहुडि जाव अणियट्टिवादरसांपराइयपविट्टुवसमा  
खवा वंधा । अणियट्टिवादरद्वाए सेसे सेसे सखेज्जाभागं गंतूण वंधो  
वोच्छिज्जदि । एदे वधा, अवमेसा अवधा ॥ २४ ॥

‘मिच्छाद्दृष्टिपहुडि जाव अणियट्टिवादरसांपराइयपविट्टुवसमा खवा वधा’ एदेण  
सुत्तावयेण उच्यते गद्यगण्य विणा गुणद्वयण्ययमममित्त च वुत्त । ‘अणियट्टिवादरद्वाए  
सेसे सेसे सखेज्जाभागं गंतूण वंधो वोच्छिज्जदि’ एतेण सुत्तावयेण उच्यते अणियट्टिवादर  
कोषसत्त्वो विण्ठे जो अरंममे अणियट्टिवादर सखेज्जभागे तस्मिं मरेजेने खडे करे  
तत्थ बहुभागे गंतूण एयभागायमेमं माणमत्तलणम्म उरंमोच्छेदो । पुणो तस्मिं एगखंडे  
सखेज्जखंडे कडे तत्थ बहुखंडे गंतूण एगखंडायमेमे मायामत्तलणमयोच्छेदो ति । कथमेद  
णत्थे ? ‘सेसे सेसे सखेजे भागे गंतूणति’ मिच्छादिंसादो । कस्ययपाहुडुसुत्तेणेद सुत्त  
विरुज्जदि ति वुत्ते सत्थ विरुज्जिड, किंतु एयत्तगहो एत्थ ण कायत्तो, इदमेव त चेव

मिथ्यादष्टिमे लकर अनिवृत्तिकरणनादरसांपराइयप्रविष्ट उपशमक व क्षपक तत्र  
वधक ह । अनिवृत्तिकरणनादरकात्के शेष शेषमे सरयात बहुभाग जाकर उच्यते सुच्छिन्न होता  
है । ये वधक ह, शेष जीव अनधक है ॥ २४ ॥

‘मिथ्यादष्टिमे लकर अनिवृत्तिकरणनादरसांपराइयप्रविष्ट उपशमक व क्षपक  
तत्र वधक है इस सूत्राययसे वन्धध्यान जाव गतिगत वन्धस्वामित्यके विना गुण  
स्थानगत वन्धस्वामित्य नी कहा गया है । ‘अनिवृत्तिकरणनादरकात्के शेष शेषमे सरयात  
बहुभाग जाकर उच्यते सुच्छिन्न होता है’ इस सूत्रावयव द्वारा उच्यते स्थानकी  
प्ररूपणा की गई है । स्वल्पललाधक विनष्ट हेतुपर जो शेष अनिवृत्तिकरणनादर  
सख्यातवा भाग रहता है उसके सख्यात खण्ड करनेपर उनमें बहुभागोंकी विताकर एक  
भाग शेष रहनेपर सखेज्जलमानया उच्यते पुन्येद होता है । पुन एक खण्डके सरयात  
खण्ड करनेपर उनमें रहत खण्डोंका विताकर एक खण्ड शेष रहनेपर सखेज्जलमानयाका  
वध उच्यते होता है ।

शंका—यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—‘शेष शेषमे सरयात बहुभाग जाकर’ इस वीरमा जर्वात दो धार  
निदानमे उक्त प्रकार दोनों प्रकृतियोंका व्युच्छेदकाल जाना जाता है ।

शंका—क्यायमाभूतके सूत्रमे तो यह सूत्र विरोधने प्राप्त होगा ?

समाधान—देसी आत्मा होनेपर कहते हैं कि सचमुचमें क्यायमाभूतके सूत्रसे  
इह सूत्र विरुद्ध है, परन्तु यहां जकात्तमह नहीं करना चाहिये, क्योंकि, ‘यही सत्य है’

सच्चमिदि सुदकेनलीहि पच्चमखणाणीहि वा विणा अवहारिज्जमाणे मिच्छतप्पसगादो ।  
 कथ सुत्ताण विरोहो ? ण, सुत्तोवसहारारणमसयलसुदधारयाइरियपरतताण विरोहसभवदसणादो ।  
 उवसहारारण कथ पुण सुत्त जुज्जेदे ? ण, अमियमायरजलस अलिंजर-उड-घडी-सराबुदचण-  
 गयस्स नि अमियचुवलभादो ।

सपहि एदेण सूइदत्थाणं परूवणा कीरदे । त जहा— एदासिं दोणण पयडीण  
 वधोदया अक्कमेण वोच्छिज्जति, उदए विणेइ वधाणुपलभादो । ण च उदयद्वाक्खएण  
 उदयस्स विणासो एत्थ विवन्निअओ, सतोवसम-खएहि समुप्पणुदयाभावेण अहियारादो ।  
 एंदासिं सोदय-परोदएहि वधो, णिरतरवधीण सातरुदयाण सोदएणव नधन्निरोहादो । णिरतर-  
 वंधीओ, धुवनधीहि सह पादादो । मिच्छाइट्टिप्पहुडि जे पच्चया मूलत्तरणणेगसमयभेयभिण्णा  
 पुच्च परूविदा तग्गुणविमिट्टीजीवा तेहि चेप पच्चएहि एदाओ पयडीओ वधति, पच्चयतरा-

या 'घडी सत्य है' पेसा श्रुतकेवलियों अथवा प्रत्यक्षमानियोंके विना निश्चय करनेपर  
 मिथ्यावका प्रसंग होगा ।

शका—सूत्रोंके विरोध कैसे हो सकता है ?

समाधान—यह शका ठीक नहीं, क्योंकि, अल्प धुतके धारक आचार्योंके परतत्र  
 सूत्र व उपसहारोंके विरोधभी सम्भारना देखी जाती है ।

शका—उपसहारोंके सूत्रपना कैसे उचित है ?

समाधान—यह भी शका ठीक नहा, क्योंकि, अलिंजर ( उट्टिशोप ), घट, उटी,  
 शगव व उदचन आदिमें स्थित भी अमृतसागरके जलमें अमृतत्व पाया ही जाता है ।

अब इस सूत्रके द्वारा सूचित अर्थोंकी प्ररूपणा करने हैं । वह इस प्रकार है— इन  
 दोनों प्रकृतियोंका बन्ध और उदय दोनों एक साथ व्युत्थित होने हैं, क्योंकि, इनके उदयके नष्ट  
 होनेपर फिर बन्ध नहीं पाया जाता । और यहा उदयकालके क्षयसे होनेवाला उदयका विनाश  
 विवक्षित नहीं हैं, क्योंकि, मत्वोपशम या सत्प्रक्षयसे उत्पन्न उदयाभावका अधिकार है ।  
 इन दोनों प्रकृतियोंके स्वोदय परोदयसे बन्ध होता है, क्योंकि, निरन्तरबन्धी और सान्तर  
 उदयवाली प्रकृतियोंके स्वोदयसे ही बन्ध होनेका विरोध है । ये निरन्तरबन्धी प्रकृतिया हैं,  
 क्योंकि, ये ध्रुवबन्धी प्रकृतियोंके साथ आती हैं । मिथ्यादृष्टिसे लेकर मूल, उत्तर व नाना  
 पय एक समय समबन्धी भेदोंसे भिन्न जो प्रत्यय पूर्वमें कहे जा चुके हैं, उन गुण  
 स्थानोंसे निश्चित जीव उन्हीं प्रत्ययोंसे इन प्रकृतियोंको बाधते हैं, क्योंकि, अन्य प्रत्ययोंका

१ अप्रती ' सुचोवसहागणा ' आ मारला ' सुचोवसहागणा ' इति पाठ ।

२ अ-आप्तयो ' सहिदधाण ' , अप्रती ' सहिदधाण ' इति पाठ ।



भावादो । अपरा, एदासिं मज्जलोदयविमेमो चेव पन्चओ, तेण विणा नधाणुपलभाणे ।

मिच्छादिद्वी चउगडमजुत्त, तस्स सज्जगडवधेहि विरोहाभावादो । मामणो तिगइमनुत्त, तस्स णिरयगइवधेण मह विरोहाणे । मम्मामिच्छाद्वी अमजदसम्मादिद्वी च दुगडमजुत्त नति, तेमि णिरय तिगिक्कगईहि मह विरोहादो । उपरिमा देवगड अगइमजुत्त वा नति, तेमि मेमगईहि मह विरोहादो । मिच्छाद्वी सामणमम्मदिद्वी मम्मामिच्छाद्वी अमजदसम्मादिद्वी चउगइया, दुगडमजदामजदा, मेमा मणुस्सगइया सामी । वपद्धान वधेणेच्छिण्णद्धान च सुत्तुद्विद्विमिदि सुगम । मिच्छाद्विस्स चउविद्वो वधो, वुत्तवधित्तादो । मेमाण विविद्वो, पुत्ताभावादो ।

लोभसज्जलणस्स को वधो को अवधो ? ॥ २५ ॥

सुगम ।

मिच्छाद्विद्विप्पहुडि जाव अणियद्विवादरमांपराइयपविट्ठउत्तसमा सवा वंधा । अणियद्विवादरद्वाए चरिमसमय गत्तूण वंधो वोच्छिज्जदि । एदे वधा, अवसेसा अवधा ॥ २६ ॥

अभाव है । अधया, इन प्रकृतियोंका सञ्जनका उदयविरोध ही प्रत्यय है, क्योंकि, उसके बिना इनका बन्ध पाया नहीं जाता ।

मिथ्यादृष्टि है चार गतियोंसे सयुक्त बाधता है, क्योंकि, उसके सब गतियोंके बन्धके साथ कोई विरोध नहीं है । सामान्यसम्यग्दृष्टि तीन गतियोंसे सयुक्त बाधता है, क्योंकि, उसके नरकगतियधने का प्रविरोध है । सम्यग्मिथ्यादृष्टि जोर अमयतसम्यग्दृष्टि दो गतियोंसे सयुक्त बाधते है, क्योंकि, उनके नरक व तिर्यग्गतिये साथ बन्ध होनेमें विरोध है । उपरिम जीव देवगतिये सयुक्त या गतिमयोगसे रहित बाधते हैं, क्योंकि उनके दोष गतियोंसे साथ बन्ध होनेमें विरोध है । मिथ्यादृष्टि, सामान्यसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और अमयतसम्यग्दृष्टि चारों गतियोंवाले, दो गतियोंवाले सयतासयत, और दोष गुणस्थानधर्ती जीवमनुष्यगतिवाले सामी है । न धाध्यान और वधव्युच्छिन्नस्थान चूनि सूत्रप्रतिपादित है उन सुगम है । मिथ्यादृष्टिसे इनका चारों प्रकारका बन्ध होता है, क्योंकि, ये ध्रुवधर्मी प्रकृतिया है । दोष जीवोंके ध्रुवबन्धका अभाव होनेसे तीन प्रकारका ही बन्ध होता है ।

सञ्जनलोभना कौन बन्धक और कौन अनधक है ? ॥ २५ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

मिथ्यादृष्टिमे लेकत अनियुक्तिनादरमाप्परायिकप्रविष्ट उपशमक और क्षपक तरु बन्धक है । अनियुक्तिनादरकात्के अन्तिम समयको प्राप्त होकर बन्ध व्युच्छिन्न होता है । ये बन्धक दोष जीव अनधक है ॥ २६ ॥

‘मिच्छाइट्ठिप्पहुडि०’ एदेण सुत्तानयणेण वधद्वान्ण गुणद्वान्णयसामित्तं च परूविद ।  
 ‘अणियट्ठिचादर०’ एदेण वधविणद्वद्वान्णपरूवणा कदा । एदेसिं तिण्णं चैवत्थाणं परूवणा  
 कदा ति देसामासियसुत्तमेद । तेणेदंणं सूइदत्थाणं परूवणा कीरदे । त जहा—

वधो पुत्र्य वोच्छिज्जदि पच्छा उदओ, अणियट्ठिचरिमसमए वधे वोच्छिण्णे सुहुम-  
 सापराइयचरिमसमए उदयवोच्छेटुवलभादो । लोभमजलणस्स सोदय-परोदएहि वधो, धुवो-  
 दयत्ताभावादो । णिरतरो वधो, धुववधित्तादो । पन्चयपरूवणाए माणसजलणभगो । गडमजुत्त-  
 सामित्तद्वान्ण-वधवोच्छिण्णद्वान्णपरूवणाओ सुगमाओ । मिच्छाइट्ठिस्स चउव्विहो वधो, धुव-  
 वधित्तादो । सेसाणं तिण्हो वधो, धुवत्ताभावादो ।

हस्स-रदि-भय दुगुंछाण को वंधो को अवंधो ? ॥ २७ ॥

सुगम ।

‘मिथ्यादृष्टिसे लेकर अनिवृत्तिरादरसाम्परायिकप्रतिष्ठ उपशमक और क्षपक तक  
 बन्धक ह’ इस सूत्राज्ञ द्वारा बन्धाधान और गुणस्थानगत बन्धस्यामित्यकी प्ररूपणा  
 की गई है । अनिवृत्तिरादरकालके अन्तिम समयको प्राप्त होकर पन्च व्युच्छिन्न होता है’  
 इस सूत्राज्ञ द्वारा पन्च व्युच्छिन्नस्थानका निरूपण किया गया है । चूँकि सूत्र द्वारा इन्हीं  
 तीन अर्थोंकी प्ररूपणा की गई है, अतएव यह देशामर्शक सूत्र है । इस कारण इसके द्वारा  
 सूचित अर्थोंका निरूपण करते हैं । यह इस प्रकार है—

सज्वलनलोभका पन्ध पूर्वमें व्युच्छिन्न होता है, पश्चात् उदय, फयॉकि, अनिवृत्ति-  
 करणके अन्तिम समयमें पन्धके व्युच्छिन्न होजानेपर सूक्ष्मसाम्परायिकके अन्तिम समयमें  
 उदयका व्युच्छेद पाया जाता है । सज्वलनलोभका सोदय परोदयसे बन्ध होता है,  
 फयॉकि, उसके ध्रुवोदयत्वका अभाव है । बन्ध उसका निरन्तर है, फयॉकि, वह ध्रुवग्रन्धी  
 है । प्रत्ययोंकी प्ररूपणा सज्वलनमानके समान है । गतिमयुक्तता, स्वामित्व, अध्यान और  
 बन्धव्युच्छिन्नस्थानकी प्ररूपणाए सुगम है । मिथ्यादृष्टिके चारों प्रकारका बन्ध होता है,  
 फयॉकि, वह ध्रुवग्रन्धी प्रकृति है । शेष जीवोंके तीन प्रकारका बन्ध होता है, फयॉकि,  
 उनके ध्रुवग्रन्धका अभाव है ।

हास्य, रति, भय और जुगुप्सा प्रकृतियोंका कौन बन्धक है और कौन अबन्धक  
 है ? ॥ २७ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

परोत्पण, किं सातर किं गिरतर किं मातर गिरतर, किं पञ्चएहि किं तेहि विणा, किं गइसजुत किमगइसजुत वज्जइ, एदम्म नधम्म कदिगदिया मामी असामी वा, किं बधडाण, किं चरिमसमए वधो वोच्छिज्जदि किं पढममए किमपढम अचरिमसमए वधो वोच्छिज्जदि, किं सादिओ किमणादिओ किं धुवो किमद्धुवो वधो ति एदाओ पुच्छओ एत्थ कायवजाओ । पुणे पुच्छिज्जदज्जाणुग्गहइ उत्तरसुत्त भणदि—

मिच्छाइट्ठी सोसणसम्माइट्ठी असंजदसम्माइट्ठी वंधा । एदे वधा,  
अवसेसा अवधा ॥ ३० ॥

एत्थ वधद्वान्ण गुणद्वान्णाणि अस्सिदूण वधसामित्त च उच्च, तेण इदरत्थाण परूज्जाणी कीरदे । त जहा— मसुम्माउअस्स पुत्र भयो वोच्छिज्जदि पन्था उदओ, असंजदसम्मा दिट्ठिहि णट्टवधस्स मणुसाउअस्स अजोगिचरिमसमए उदययोन्हेट्टुअलभादो । मिच्छाइट्ठी सोसणसम्मादिट्ठिणो सोदणण पगेदणण वि मणुसाउअ वरति, अविरोहादो । असंजदसम्मादिट्ठी परोदण्णेन, सोदणण सह तथ वधविरोहादो । गिरतरो वधो, उज्जमाणभयो पडिवक्खपयडीए

पथ सातर, क्या निरन्तर, या क्या सान्तर निरन्तर हे, क्या प्रत्यक्षांसे या क्या उनसे बिना ही बन्ध होता है क्या गतिसयुक्त या क्या अगतिसयुक्त बन्ध होता है, इसके बाधके कितनी गतियोंको रजामी अथवा अरजामी है, बन्धाध्यान क्या है, क्या चरम समयमें व प्रव्युत्थित होता है क्या प्रथम समयमें, या क्या अप्रथम अचरम समयमें बन्ध व्युत्थित होता है, क्या सादिन, क्या अनादिन, क्या ध्रुव या क्या अध्रुव वच होता है, इन प्रश्नोंको यहा करना चाहिये । फिरसे पृच्छायुक्त जनोंके अनुग्रहके लिये उत्तर सूत्र कहते हैं—

मिध्यादष्टि, सामादनमम्यग्दष्टि और अमयतमम्यग्दष्टि उन्त्यक है । ये बन्धक हैं,  
श्रेय जीन अनन्धक है ॥ ३० ॥

इस सूत्रमें वधाध्यान और गुणध्यान जनोंका आग्रयकर उन्त्यस्वामित्य ही कहा गया है, इसलिये अथ अर्थोकी प्ररूपणा करते हैं । यह इस प्रकार है— मनुष्यायुजा पूर्वमें बन्ध व्युत्थित होता है पश्चात् उदय, क्योंकि, असयतसम्यग्दष्टि गुणस्थानमें मनुष्यायुके बाधके व्युत्थित होतानेपर अयोग्येअलंके अन्तिम समयमें उदयका व्युत्थेद पाया जाता है । मिध्यादष्टि और सामादनमम्यग्दष्टि अन्त्य और परादयसे भी मनुष्यायुको बाधते हैं, क्योंकि, इसमें कोई निरोध नहीं है । अमयतमम्यग्दष्टि परादयसे ही मनुष्यायुको बाधते हैं, क्योंकि, अन्त्यादय सात्र बन्ध हातेका इत गुणध्यानमें निरोध है । इसका बाध निरन्तर है, क्योंकि, बाध्यमान भयमें प्रतिपक्ष प्रवृत्तिके बाधके बिना इसके बन्धकी

घषेण णिणा ऋषपरिसमत्तिदमणादो । ऋषविरोहो अतरमिदि किण्ण घेष्पदे ? ण, षडिवक्ख-  
पयडिनधरुदतरेण एत्थ पओजणादो । मिच्छादिद्विस्स मूलुत्तण्णोणसमयजहण्णुक्कस्सपच्चया  
णाणारणहिं वुत्ता चेत्त होंति । णरि णाणामयउत्तकस्सपच्चया तेत्तण्ण होंति, वेउत्तिय-  
मिस्स-कम्मइयाणमभावादो । मासणस्स णाणामयउत्तकस्सपच्चया सत्तेतालीस, ओरालियमिस्स-  
वेउत्तियमिस्स-कम्मइयाणमभावादो । अमजदसम्माइद्विस्स मणुस्माउअ वधमाणस्स मूलपच्चया  
तिण्णि, मिच्छत्ताभावादो । एगसमइयजहण्णुक्कस्सपच्चया णव सोल्लस । णाणासमयउत्तरपच्चया  
वादाळ, ओगलिय-ओगलिप्रमिम्म-वेउत्तियमिस्स कम्मइयाणमभावादो । तिण्णि वि गुणङ्गाणाणि  
मणुस्सगइमजुत्त ऋषति, तन्ऋस्स अण्णमईहि मह विरोहादो । चउगइमिच्छाइद्वि-सामण-  
सम्माइद्विणो सामी । दुगइअसजदसम्मादिद्विणो सामी, तिरिक्ख-मणुस्सगइद्विअसजद-  
सम्मादिद्वीण मणुस्माउअरेण विरोहादो । वधद्धाण सुगम । ऋषोत्तेदो असजदसम्मादिद्विस्स  
अपद्धम अचरिममए । मणुस्माउअस्स वणो सादि-अद्धवो, ऋषस्स सुवत्ताभावादो ।

समाप्ति देखी जाती है ।

शका—बन्धका विरोध ही अन्तर है, ऐसा क्या नहीं ग्रहण करते ?

ममाधान—ऐसा ग्रहण इसलिये नहीं करते कि यहाँ प्रतिपक्ष प्रकृतिके बन्ध  
द्वारा किये गये अन्तरमे प्रयोजन है ।

मिथ्यादृष्टिके मूल और उत्तर नाना व एक समय सम्बन्धी जगन्मय एव उत्कृष्ट  
प्रत्यय ब्रह्मावरणमे ब्रह्मे हुए ही होते हैं । विशेष इतना है कि नाना समय सम्बन्धी उत्कृष्ट  
प्रत्यय तिरपण होते हैं, क्योंकि, वैकल्पिकमिश्र और कामण काययोगना यहाँ अभाव है ।  
सासादनसम्यग्दृष्टिके नाना समय सम्बन्धी उत्कृष्ट प्रत्यय सत्तालीस होते हैं, क्योंकि, यहाँ  
औदारिकमिश्र, वैकल्पिकमिश्र और कामण काययोगोंका अभाव है । मनुष्यायुको बाधने  
वाले असयतसम्यग्दृष्टिके मूल प्रत्यय तीन होते हैं, क्योंकि, उसके मिथ्यात्वका अभाव है ।  
एक समय सम्बन्धी जगन्मय व उत्कृष्ट प्रत्यय नौ और सोलह होते हैं । नाना समय सम्बन्धी  
उत्तर प्रत्यय च्यालीस होते हैं, क्योंकि, यहाँ औदारिक, औदारिकमिश्र, वैकल्पिकमिश्र  
और कामण काययोगोंका अभाव है ।

तीनों ही गुणस्थान मनुष्यगतिमे संयुक्त बाधते हैं, क्योंकि, उसके बन्धका  
अन्य गतियोंके साथ विरोध है । चारों गतियोंवाले मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि  
स्वामी हैं । दो गतियोंवाले असयतसम्यग्दृष्टि स्वामी हैं, क्योंकि, तिर्यग्गति और मनुष्य  
गतिमें स्थित असयतसम्यग्दृष्टियोंके मनुष्यायुबन्धमे विरोध है । बन्धाधान सुगम है ।  
बन्धसंयुक्तेद असयतसम्यग्दृष्टिके अप्रथम अचरम मन्मयमे होता है । मनुष्यायुका बन्ध  
सादि बाधते हैं, क्योंकि, उसके बन्धके सुवत्ताका अभाव है ।

देवाउअस्स को वंधो को अवंधो ? ॥ ३१ ॥

सुगम ।

मिच्छाइट्ठी सासणसम्माइट्ठी असंजदसम्माइट्ठी संजदासंजदा  
पमत्तसजदा अप्पमत्तमंजदा वधा । अप्पमत्तसंजदद्दाए संखेज्जदिभागं  
गंतूण वंधो वोच्छिज्जदि । एदे वधा, अवसेसा अवधा ॥ ३२ ॥

‘मिच्छाइट्ठिप्पहुट्ठि’ एदेण सुत्तात्रयेण वरद्धान् गुणगयसामित्त च परुविद ।  
‘अप्पमत्तमजदद्दाए’ एदेण वधत्रिणइट्ठान् परुविद । तिण्ण चेत्त परुवणानो देसामासिय  
सुत्तमिण । तेणेदेण सुइदत्थे भणिस्सामो । त जहा— एदस्स पुच्चमुदआ वोच्छिज्जदि पच्छ  
वधो, देवाउअस्स अमजदसम्माइट्ठिचरिममए वोच्छिण्णुदयस्स अप्पमत्तद्दाए सखेज्जदिभाग  
गंतूण वधवोच्छेदुवलमादो । परोदएणेत्त वधो, सोदएणेदस्स तित्थयरस्सेव वधविरोहादो ।  
णिरत्तो वधो, पडिवक्खपयडिवधकयतराभावादो ।

मिच्छाइट्ठिम्म देवाउअ वधतस्स चत्ताग्गि मूलपच्चया । एगममइया जहण्णुत्तकस्स

देवायुका कौन बन्धक और कौन अवधक है ? ॥ ३१ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

मिथ्यादृष्टि, सासादनमम्यगृष्टि, असयतमम्यगृष्टि, सयतामयत, प्रमत्तमयत, और  
अप्रमत्तमयत बंधक है । अप्रमत्तसयतकालके सरयातनें भाग जाकर बन्ध व्युच्छिन्न होता  
है । ये बन्धक हैं, शेष जीव अवन्धक हैं ॥ ३२ ॥

‘मिथ्यादृष्टि आदि अप्रमत्तसयत तक बंधक है’ इस सूत्राश द्वारा बन्धा  
घाल और शुणस्थानगत स्वामित्वकी प्ररूपणा की गई है । ‘अप्रमत्तसयतकालके  
सख्यानवे भाग जाकर बंध व्युच्छिन्न होता है’ इससे बंधविनष्टस्थानकी प्ररूपणा की  
है । इन तीन अर्थोंकी ही प्ररूपणा करनेसे यह सूत्र देवामार्शक है । इस कारण इसमें  
सूचित अर्थोंको कहते हैं । यह इस प्रकार है— देवायुका पूर्वमें उदय व्युच्छिन्न होता है  
पश्चात् बन्ध, क्योंकि, असयतमम्यगृष्टिके अन्तिम समयमें इसके उदयके व्युच्छिन्न  
होनेपर पश्चात् अप्रमत्तकालके सरयातनें भाग जाकर बंध व्युच्छेद पाया जाता है ।  
इसका बंध पर्यगदयसे ही होता है, क्योंकि, तीर्थकर प्रकृतिके समान द्रोदयसे इसके  
बंध होनेका विरोध है । बन्ध इसका निरंतर है, क्योंकि, प्रतिपक्ष प्रकृतिके बंधसे किये  
गये अंतरका यहां अभाव है ।

देवायुको बाधनेवाले मिथ्यादृष्टिके मूल प्रत्यय चार होते हैं । एक समय सम्बन्धी

पञ्चया दस अट्टारस । पाणासमयउक्कस्सपञ्चया एककवचास, वेउव्विय-वेउव्वियमिस्स-ओरालियमिस्स-कम्मइयपञ्चयाण तत्थाभावादो । सासणसम्मादिट्ठिस्स पञ्चया देवाउअ वपमाणस्स पाणावरणपधतुल्ला । णवरि पाणासमयउक्कस्सपञ्चया छादाल, वेउव्विय-वेउ-व्वियमिस्स-ओरालियमिस्स-कम्मइयपञ्चयाणमभावादो । असज्जदसम्मादिट्ठिपञ्चयपरूवणाए पाणावरणमगे । णवरि पाणासमयउक्कस्सपञ्चया चादाल, वेउव्विय-वेउव्वियमिस्स-ओरालियमिस्स-कम्मइयपञ्चयाणमभावादो । उवरिमेसु गुणङ्गाणेसु पञ्चया देवाउअस्स पाणा-वरणतुल्ला ।

सन्वे देवगइसज्जुत्त, अण्णगइबधेण देवाउअवधस्स निरोहादो । तिरिक्ख-मणुस्सगइ-मिन्हाइट्ठी मासणसम्माइट्ठी असज्जदसम्माइट्ठी सज्जदासज्जदा सामी । उवरिमा मणुसा चैव, अण्णत्थ महव्वयाणमणुत्तभादो । वधद्धाण सुगम । अप्पमत्तद्धाए सप्पेज्जदिभागे गदे देवाउअस्स वधवोच्छेदो । अप्पमतद्धाए सखेज्जेसु भागोसु गदेसु देवाउअस्स बधो वोच्छिज्जदि ति केसु वि सुत्तपोत्थएसु उवलम्भइ । तदे एत्थ उवएस लद्धण वत्तव्व । देवाउअस्स बधो मादिओ अद्धुवो, अद्धुववधित्तादो ।

जघन्य व उत्कृष्ट प्रत्यय क्रमशः दश और अठारह होते हैं । नाना समय सम्बन्धी उत्कृष्ट प्रत्यय इक्यायन होते हैं, क्योंकि, यहाँ वैकियिक, वैकियिकमिथ, औदारिकमिथ और कामेण प्रत्ययोंका अभाव है । देवायुको राधनेवाले सासादनसम्यग्दृष्टिके प्रत्यय ज्ञानावरणके बन्धके समान हैं । विशेष इतना है कि नाना समय सम्बन्धी उत्कृष्ट प्रत्यय व्यालीस होते हैं, क्योंकि, वैकियिक, वैकियिकमिथ, औदारिकमिथ और कामेण प्रत्ययोंका यहाँ अभाव है । असयतसम्यग्दृष्टिकी प्रत्ययपरूपणा ज्ञानावरणके समान है । विशेषता यह है कि नाना समय सम्बन्धी उत्कृष्ट प्रत्यय व्यालीस हैं, क्योंकि, वैकियिक, वैकियिकमिथ, औदारिकमिथ और कामेण प्रत्ययोंका यहाँ अभाव है । उपरिम गुणस्थानोंमें देवायुके प्रत्यय ज्ञानावरणके समान हैं ।

सभी जीव देवगतिसे सयुक्त राधते हैं, क्योंकि, जय गतियोंके बन्धके साथ देवायुके बन्धका निरोध है । तिर्यक् और मनुष्य गतिके मिथ्यादृष्टि सासादनसम्यग्दृष्टि असयतसम्यग्दृष्टि और सयतान्मयत स्वामी हैं । उपरिम जीव मनुष्य ही स्वामी हैं, क्योंकि, दूसरी गतियोंमें महावर्तोंका अभाव है । बन्धाध्यान सुगम है । अप्रमत्तकालके सख्यातवें भागके वीत जानेपर देवायुका बन्ध-न्युच्छेद होता है । अप्रमत्तकालके सख्यात बहुभागोंके वीत जानेपर देवायुका बन्ध व्युच्छिन्न होता है, ऐसा किन्हीं सूत्रपुस्तकोंमें पाया जाता है । इस कारण यहाँ उपदेश प्राप्तकर फहना चाहिये । देवायुका बन्ध सान्निध्य अष्टय है, क्योंकि यह अध्वरन्धी है ।

देवगह पांचिदियजादि वेउव्विय तेजा कम्मइयसरीर -समचउरस  
 संठाण वेउव्वियसरीरअगोपग वणण गध रस फाम देवगहपाओग्गाणु-  
 पुव्वि अगुरुवलहुव-उपघाद परघाद-उस्साम-पसत्थविहायगइ-तस वादर  
 पज्जत्त पत्तेयसरीर यिर सुभ सुभग सुस्सर आदेज्ज णिमिणणामाण को  
 वधो को अवधो ? ॥ ३३ ॥

सुगम ।

मिच्छाहट्टिप्पहुडि जाव अपुव्वकरणपइट्टउवसमा खवा वंधा ।  
 अपुव्वकरणद्वाए सस्सेज्जे भागे गतूण वधो वोच्छिज्जदि । एदे वधा,  
 अवसेसा अनधा ॥ ३४ ॥

जेणेदेण सुत्तेण नधद्वाण गुणगयमामित ननिणट्टट्टाण नि य वुत्त तेणेद देसामामिय ।  
 ततो एदेण सूइदत्थपरुणणा कीरदे— देवगइ-देवगइपाओग्गाणुपुव्वि-वेउव्वियसरीर-वेउव्विय  
 अगोपगणामाण पुव्वमुदओ वोच्छिज्जदि पठा वणो, अमनदसम्मादिट्टिम्हि णट्टोदयाणमेदामि  
 चउण्ण पयडीणमपुव्वकरणद्वाए सस्सेज्जेसु भागोसु गदेसु नधो-च्छेदुवलभादो । तेजा कम्मइय-

देवगति, पचेन्द्रियजाति, वैकियिक, तैजस व कार्मण शरीर, समचतुरस्रमस्थान,  
 वैकियिकशरीरागोपाग, वर्ण, गण, रस, स्वश, देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, अगुरुशु, उपघात,  
 परघात, उच्छ्वास, प्रशस्तविहायोगति, त्रम, नादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, स्थिर, शुभ, सुभग,  
 सुस्वर, आदिय और निमाण, इन नामकर्म प्रकृतियोंका कौन वन्धक और कौन अनन्धक  
 है ? ॥ ३३ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

मिथ्यादृष्टिमे लेकर अपूर्णकरणप्रतिष्ठ उपभक्त न क्षपक तत्र वन्धक हे । अपूर्णकरण  
 कालके मर्यादा बहुभागोको विताकर इनको वन्ध व्युच्छिन्न होता है । ये वन्धक हे, शेष  
 जीव अनन्धक है ॥ ३४ ॥

चूंकि इस सूत्रके द्वारा न वाधान, गुणस्मानगत समाहित्य और नधनिष्ठस्थानका  
 ही निदर्श किया गया है अतएव यह देशामशक सूत्र है । इस कारण इसने द्वारा सूचित  
 अर्थोका प्ररूपणा करते हैं—देवगति, देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, वैकियिकशरीर और वैकियिक  
 शरीरागोपाग नामनमका पूनमें उदय-व्युच्छिन्न हाता है पश्चात् नध, क्योंकि, असयतसम्य  
 दृष्टि गुणस्थानमें इन चारों प्रकृतियोंके उदयने नष्ट होजानेपर पश्चात् अपुव्वकरणकालके  
 सन्ध्यात बहुभागोको विताकर इनका वन्ध-व्युच्छेद पाया जाता है । तैजस व कार्मण शरीर-

सरीर समचउरससठाण वण्ण-गध रस फाम अगुरुअलहुअ उवघाद परघाद उस्सास-पसत्थविहाय-  
गइ-पत्तेयसरीर धिर सुभ सुस्सर-णिमिणणामाण पुव वधो वो छज्जदि पच्छा उदओ, अपुव्व-  
करणहि गट्टवधाण एदामि पयडीण मज्जेगिचरिमसमयम्मि उदयनेच्छेदुव्वलभादो । पचिदिय-  
जादि तस-चादर पज्जत्त सुभगादेज्जाण पि एवं चेव । उपरि एटासिमज्जेगिचरिममए उदओ  
वोच्छिण्णो ।

देवगइ-देवगइपाओग्गाणुपुव्वि-नेउत्तियसरीर-नेउत्तियसरीर-अगोरगणामाण परोदएण  
सत्त्वगुणद्वारेणु नभो, परोदाण्ण वज्जमाणएक्कासपयडीहि सह पादादो । तेजा कम्मइय वण्ण-  
गध रस फास अगुरुअलहुअ धिर सुभ णिमिणणामाओ सोदएणेव वज्जति, धुवोदयत्तादो । पचि-  
दियजादि-तम-चादर पज्जत्ताण मिच्छाडडिहि वधो सोदय परोदओ । उवरि सोदओ चेव,  
तथ पडिउत्तुदयाभादादो । समचउरससठाण पसत्थविहायगइ सुस्सराण सत्त्वगुणद्वारेणुसु  
सोदय परोदओ, पडिउत्तुदयमभादादो । सुभगादेज्जाण मिच्छाडडि-सामणमग्गाडडि सम्मामिच्छा-  
डडि अमज्जदसम्मादिडीसु सोदय परोदओ । उपरि सोदओ चेव, पडिउत्तुदयाभादादो । उवघाद-

समचतुरस्रसस्थान, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुत्त्वु, उपघात, परघात, उन्वृत्तान्,  
प्रशस्तविहायोगति, प्रत्येकशरीर, स्थिर, शुभ, सुस्वर और निर्माण नामकर्मका पूर्वमें उन्ध  
युन्धिष्ठ होता है पश्चान् उदय, क्योंकि, अपूर्वकरणमें उन्धने नष्ट होजानेपर पश्चात्  
सयोगनेपलीके अन्तिम समयमें इन प्रकृतियाका उदय युन्धे पाया जाता है । पचेन्द्रिय-  
जाति, तम, चादर, पर्याप्त, सुभग और अद्वैत, इनका भी उन्धेदय युन्धे इन्हीं प्रकार है ।  
विशेषतया यह है कि इनका उदय अयोगकेपलीके अन्तिम समयमें व्युत्तिष्ठ होता है ।

देवगति, देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, त्रिक्रियकशरीर और त्रिक्रियकशरीरारोगोपागना  
उन्ध सत्त्व गुणस्थानोंमें परोदयमें होता है क्योंकि, ये प्रकृतिया परोदयमें उन्धनेवाली ग्यारह  
प्रकृतियोंके साथ जाती है । तैजस प्रकामण शरीर, वण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुत्त्वु, स्थिर  
शुभ और निर्माण, ये नामकर्मप्रकृतिया स्त्रोदयसे ही उन्धती है, क्योंकि, वे धुवोदयी हैं ।  
पचेन्द्रिय जाति, तम, चादर और पर्याप्त प्रकृतियोंका उन्ध मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें स्त्रोदय  
परोदयसे होता है । इसके ऊपर स्त्रोदयसे ही होता है, क्योंकि, वहा प्रतिपक्ष  
प्रकृतियाके उदयका अभाव है । समचतुरस्रसस्थान, प्रशस्तविहायोगति और सुस्वरका  
सत्त्व गुणस्थानोंमें स्त्रोदय परोदय उन्ध है, क्योंकि, इनकी प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके उदयकी  
सम्भावना है । सुभग और अद्वैत प्रकृतियोंका उन्ध मिथ्यादृष्टि, सामाद्वैतसम्यग्दृष्टि,  
सम्यग्मिथ्यादृष्टि एवं असत्यतमस्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें स्त्रोदय परोदयमें होता है । इसके  
ऊपर स्त्रोदयमें ही होता है, क्योंकि, वहा प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके उदयका अभाव है ।



परघाद-उस्साम पत्तेयसरीरण मिच्छाइडि-सासणसम्माइडि-असज्जदसम्मादिड्डीसु सोदय परोदओ  
 बधो, अपज्जत्तकाले परघादुस्सासाणमुदयाभावे वि, विग्गहगदीए उवघाद पत्तेयसरीरण  
 उदयाभावे वि, मिच्छाइडिभिह पत्तेयसरीरस्स साहारणसरीरोदए सुते वि बधुवलभादो । अब  
 सेसाण सोदओ चैव, अपज्जत्त साहारणसरीरोदयाणमभावादो । णवरि परघादुस्सासाण पमत्तामि  
 सोदय परोदओ बधो ।

तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गय रस-फास अगुरुखलहुव-उवघाद-णिमिणाण गिरतरो बधो,  
 धुवबधित्तादो । देवगइ देवगइपाओग्गाणुपुत्वि वेउच्चियसरीर वेउच्चियसरीरअगोवगाण मिच्छा  
 इडि-मासणमम्मादिड्डीसु सातर गिरतरो । कुत्ते ? अमखेज्जवासाउअतिरिक्ख मणुस्सेसु गिरतर  
 बधुवलभादो । उवरि गिरतरो चैव, एगसमएण बधुवरमाभावादो । समचउरससठाण-पमत्तय  
 विहायगइ सुभग सुस्सर आदेज्जाण सातर-गिरतरो मिच्छाइडि-मामणमम्मादिड्डीसु, भोगभूमिएसु  
 गिरतरबधुवलभादो । उवरि गिरतर, पडिवन्खपयडिन्नाभावादो । पच्चिदियजादि-त्तस वादर-

उपघात, परघात, उन्मत्त और प्रत्येक शरीर प्रकृतियोंका मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि,  
 और असत्यतन्म्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें स्वोदय परोदय बन्ध है, क्योंकि, अपर्याप्तकालमें परघात  
 और उन्मत्तवास प्रकृतियोंके उदयका अभाव होनेपर भी उनका बन्ध, त्रिग्रहगतिमें उपघात और  
 प्रत्येकशरीरके उदयका अभाव होनेपर भी उनका बन्ध, तथा मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें  
 प्रत्येकशरीरका साधारणशरीरके उदयके होनेपर भी बन्ध पाया जाता है । शेष गुणस्थान  
 धनी जीवोंके उनका बन्ध स्वोदय ही है क्योंकि, यहा अपर्याप्त और साधारणशरीरके  
 उदयका अभाव है । विशेषता यह है कि परघात और उन्मत्तवासका प्रमत्त गुणस्थानमें  
 स्वोदय परोदय बन्ध है ।

तेजस व कार्मेण शरीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुत्त्व, उपघात और निर्माण,  
 इनका निरन्तर बन्ध है, क्योंकि, य धुपउन्धी प्रकृतिया ह । देवगति, देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी,  
 वैश्विकशरीर और वैश्विकशरीरानोपाग, इनका बन्ध मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्य  
 दृष्टि गुणस्थानोंमें सान्तर निरन्तर है । इसका कारण यह है कि असत्यतावर्षासुक्त तिर्यच  
 और मनुष्योंमें निरन्तर बन्ध पाया जाता है । इसमें ऊपर निरन्तर ही बन्ध है, क्योंकि,  
 एक समयसे बन्धका नाश नहीं होता । समचतुरस्रसम्यान, प्रशस्नाविहायोगति, सुभग,  
 सुन्दर और आदेय प्रकृतियोंका बन्ध मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टियोंमें सान्तर  
 निरन्तर है, क्योंकि, भोगभूमिजोंमें उनका निरन्तर बन्ध पाया जाता है । ऊपर  
 निरन्तर ही बन्ध है क्योंकि, यहा प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धका अभाव है । पचेन्द्रिय

पञ्जत्त पत्तेयसरीराण मिच्छाइडिग्धि मातर गिरतरो वधो । कुदो ? सणक्कुमारादिदेव णेरइएसु भोगभूमिएसु च गिरतरवधुवलभादो । सासणादिसु गिरतरो, पडिवन्खपयडिबधाभावादो । परवाहुस्सासाण मिच्छाइडिग्धि सातर-गिरतरो, देव-णेरइएसु भोगभूमिए च गिरतरवधुवलभादो । सासणादिसु गिरतरो, अपञ्जत्तव-भाभावादो । थिर सुमाण मिच्छाइडिग्धि जाव पमतो त्ति सातरो । उतरि गिरतरो, णिप्पडिवक्खपयडिबधादो ।

देवगइ देवगइपाओग्गाणुपुञ्चि-वेउध्वियदुगाण मिच्छाइडिग्धि सासणसम्मादिट्ठीसु ओरा-लियमिस्स कम्मइय वेउध्वियदुगाभावादो एक्कवचास-छाएदालीसपच्चया । सम्मामिच्छा-दिट्ठिमि चालीसपच्चया, वेउध्वियकायजेगामावादो । असजदसम्मादिट्ठिमि चोदालीस-पच्चया, वेउध्वियदुगाभावादो । असेसाण पयडीण पच्चया सव्वगुणट्ठाणेसु [ णाणावरण- ] पच्चयतुल्ला, निसेसकारणाभावादो । जदि अत्थि तो चित्थिय वत्तव्वो ।

देवगइ-देवगइपाओग्गाणुपुञ्चिओ सव्वगुणट्ठाणजीवा देवगइसजुत्त वधति, अण्णगईदि मह विरोहादो । वेउध्वियसरीर वेउध्वियसरीरअगोपगाणि मिच्छाइट्ठी देव णेरइयगइसजुत्त ।

जाति, प्रस, राद्र, पर्याप्त आर प्रत्येकशरीरका मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें सान्तर निरन्तर बन्ध है। इसका कारण यह है कि सनत्तुमारादि देवों, नारकियों और भोगभूमिजोंमें निरन्तर बन्ध पाया जाता है। सासादन आदि उपरिम गुणस्थानोंमें इनका निरन्तर बन्ध है, क्योंकि, वहा प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धका अभाव है। परघान और उच-वचासका मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें सान्तर निरन्तर बन्ध है, क्योंकि, देव, नारकी और भोगभूमिजोंमें निरन्तर बन्ध पाया जाता है। सासादन आदि उपरिम गुणस्थानोंमें इनका निरन्तर बन्ध है, क्योंकि, वहा अपर्याप्तके बन्धका अभाव है। म्थिर और शुभ प्रकृतियोंका बन्ध मिथ्यादृष्टिमें लेकर प्रमत्त तक सान्तर है। ऊतर निरन्तर है, क्योंकि, यह प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धसे रहित है।

देवगति, देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वीओ और चैक्रियिकछिकके प्रत्यय मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें क्रमसे इत्याजन ओर छयालीस ह, क्योंकि, यहा औदारिकामिध, धारमण और चैक्रियिकछिक प्रत्ययोंका अभाव है। सम्यग्मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें ग्यालीस प्रत्यय ह, क्योंकि, वहा चैक्रियिक काययोगका अभाव है। असयत्तसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें चवालीस प्रत्यय ह, क्योंकि, वहा चैक्रियिकछिकका अभाव है। शेष प्रकृतियोंके प्रत्यय सर्व गुणस्थानोंमें [ घानावरणके ] प्रत्ययोंके समान हैं, क्योंकि, विशेष कारणोंका अभाव है। और यदि हैं तो विचारकर कहना चाहिये।

देवगति और देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वीको सत्र गुणस्थानोंके जीव देवगतिसे सयुक्त बाधते ह, क्योंकि, अन्य गतियोंके साथ उनके बन्धका विरोध है। चैक्रियिकशरीर और चैक्रियिकशरीरगोपागको मिथ्यादृष्टि जीव देवगति घनरकगतिमें सयुक्त बाधते हैं। उपरिम

उपरिमगुणद्वेषेसु देवगडमजुत्त नपति, सेमगुणद्वेषाण णिरयगइउधेण सह विरोहदो ।  
 पंचिदियनादि-तेना कम्मदय णण गण-रम-फाम अगुरुअलहुअ उअवाद् परवाद्-उस्तास-तम-  
 वाद्दर पजत्त पत्तेयमरीर णिमिणणामाओ मि-आइड्डा चउगइमजुत्त, सामणो निगइमजुत्त,  
 मम्मामिच्छादिद्वि-अमजदमम्मादिद्विणो दुगइमजुत्त, उपरिमा देवगइमजुत्त नथति । समचउरस  
 सठाण पसत्त्वविहायगइ धिग्-सुभ सुभग सुस्सर आदेजणामाओ मि-आइड्डि सामणसम्मदिद्विणो  
 तिगइमजुत्त, णिरयगइ उभावाद्दो । सम्मामि-आइद्वि-असजदमम्मदिद्विणो दुगइमजुत्त,  
 णिरय तिग्गिक्कगइणमभावाद्दो । उपरिमा देवगइमजुत्त, नत्थ सेमगइण वधाभावाद्दो ।

देवगदि देवगदिपाओग्माणुपुत्रि-वेउत्रियमरीर वेउत्रियमरीरअगोउगणामाण वधसम  
 निरिक्ख मगुसमगड मि-आइद्वि-सामणसम्मदिद्वि मम्मामि-आइद्वि-असजदमम्मदिद्वि मज्जदासजदा  
 सामी । उपरिमा मणुमा चैव, अण्णत्थ तेमिमभावाद्दो । पंचिदियजादि तेना-कम्मइयसरीर  
 समउरसमठाण णण गण रम फाम-अगुरुअलहुव-उअवाद्-परवाद्-उस्तास-पसत्त्वविहायगइ  
 तम-वाद्दर पजत्त-पत्तेयमरीर धिग्-सुभ सुभग सुस्सर आदेज णिमिणणामाण चउगउमि-आइद्वि-  
 सामणसम्मदिद्वि मम्मामि-आइद्वि अमजदमम्मदिद्विणो, दुगइमज्जदासजदा, मणुमगइपमत्तादो

गुणरजानामे देवगतिस सयुक्त वाधने ह, क्योंकि, शेष गुणरजानोंका नररुगतियन्धने साथ  
 विरोध है । पंचेन्द्रियज्ञानि, तजस च कामण शरीर, वण, गन्ध, रस, स्पश, अगुरुअलहु, उपघात,  
 परघात, उच्छ्वास, त्रस, वाद्दर, परवाण प्रत्येकशरीर और निर्माण नामकमौके मिथ्यादृष्टि  
 चाग गतियोंसे सयुक्त, सासादनसम्यग्दृष्टि तीन गतियोंसे सयुक्त, सम्यग्मिथ्यादृष्टि च  
 असयतसम्यग्दृष्टि दो गतियोंसे सयुक्त, तथा उपरिम जीव देवगतिसे सयुक्त वाधने ह ।  
 समचतुरस्रसंज्ञान, प्रसस्तविहायोगति, स्थिर, शुभ, सुभग, सुस्सर और आदेय नाम  
 कर्मोंके मिथ्यादृष्टि च सासादनसम्यग्दृष्टि तीन गतियोंसे सयुक्त वाधने ह, क्योंकि, इनके  
 वाधने साथ इनके नररुगतिस उक्का अभाव है । सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असयतसम्य  
 दृष्टि दो गतियोंसे सयुक्त वाधते हैं, क्योंकि, उनके नररुगति और निर्यग्गतिसे वाधका  
 अभाव है । उपरिम जीव देवगतिसे सयुक्त वाधते हैं क्योंकि, उनमें शेष गतियोंके बन्धका  
 अभाव है ।

देवगति, देवगतिप्रार्थो यानुपूर्वा, चैत्रियिकशरीर शेष त्रिक्रियिकशरीरानोपास  
 नामकमौके उधके त्रियेच वमनुष्य गतिगले मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्या  
 दृष्टि, असयतसम्यग्दृष्टि और सयतासयत स्त्रीमी ह । उपरिम जीव मनुष्य ही स्त्रीमी  
 ह, क्योंकि, अन्यत्र प्रमत्तसयतादिकोंका अभाव है । पंचेन्द्रियज्ञानि, तजस च कामण शरीर,  
 समचतुरस्रसंज्ञान, प्रसस्तविहायोगति, त्रस वाद्दर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, स्थिर, शुभ, सुभग, सुस्सर, आदेय  
 निर्माण नामकमौके यन्धके चारों गतियोंगले मिथ्यादृष्टि सासादनसम्यग्दृष्टि,  
 सम्यग्मिथ्यादृष्टि च असयतसम्यग्दृष्टि दो गतियोंगले सयतासयत, तथा मनुष्यगतिके

सामी । वनद्धाण सुगम । अपुन्यकरणद्ध मत्तखडाणि काऊण ठखडाणि उपरि चडिय सत्तम-  
खडावमेमे वधो वोच्छिज्जदि । सुत्ताभावे सत्त चेव खडाणि कीरति ति कथ णत्वे ? ण,  
आडरियपरपरागदुनदेमादो । तेजा-रुम्मडयमरीर-पण्ण गप रम फाम-अगुरुलहुव-उपघाद-  
णिमिण्णामाणं मि-अडिद्धिद्धि चउत्थिहो वधो, पुनरवितादो न उपरिमगुणेषु तिविहो,  
धुत्ताभावादो । अत्तेमाओ पयडीओ मादि अद्धवियाओ, पडिपत्तपयडिपधसभवादो, पर-  
घादुस्सामाणमपज्जत्तमजुत्त वत्तमाणाले पडिपत्तपयडीए जभावे वि वधाभावुत्तलभादो ।

आहारसरीर-आहारसरीरअंगोवगणामाणं को वधो को  
अवंधो ? ॥ ३५ ॥

सुगममेद ।

अप्पमत्तसजदा अपुव्वकरणपइट्टुव्वसमा खवा वधा । अपुव्व-  
करणद्वाए संखेजे भागे गंतूण वधो वोच्छिज्जदि । एदे वंधा,  
अवसेसा अवधा ॥ ३६ ॥

प्रमत्तसयतादिन स्यामी ह । प्रत्याख्यान सुगम हे । अपूर्वकरणकालके मान खण्ड करने छह  
खण्ड ऊपर बढकर सातवें खण्डके शेष रहनेपर उनका वन्ध व्युच्छिन्न होता है ।

श्रुता—सूत्रके जभावेमें सात ही खण्ड किये जाते ह यह किस प्रकार शत  
होता है ?

समाधान—नहीं, यह आचार्यपरम्परागत उपदेशसे जान होता ह ।

तेजस व सामेण शरीर, पूर्ण, मन्त्र, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, उपगत ओर निर्माण  
नामकमौका मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें चारों प्रकारका वन्ध ह, क्योंकि, ये उपग्रन्थी प्रकृतिया  
ह । उपरिम गुणस्थानमें तीन प्रकारका वन्ध हे, क्योंकि, उहा ध्रुव वन्ध नहीं है । शेष  
प्रकृतिया सादि व अधुव वन्धमे युक्त ह, क्योंकि, उनकी प्रतिपक्ष प्रकृतियोंका वन्ध सम्भव  
हे, परघात नार उच्छ्रयामने अर्थात् तद्युक्त पाधनेके काठमें प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके वन्धके  
अभावमें भी उनका वन्ध नहा पाया जाता ह ।

आहारसरीर और आहारसरीरगोपाग नामकमौका कौन वन्धक और कौन  
अवन्धक है ? ॥ ३५ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

अप्रमत्तसयत और अपूर्वकरणप्रतिष्ठ उपग्रमक व क्षपक वन्धक हैं । अपूर्वकरण-  
कालके सरयात बहुभागोंको विताकर वन्ध व्युच्छिन्न होता है । ये वन्धक हे, शेष जीव  
अवन्धक हैं ॥ ३६ ॥

एद देसामामियसुत, उधद्वान, सामित्त निणद्वड्डाण वि य' परूवणादो । तेणेदेण सुइदत्याण परूवणा कीरदे— एदामिसुदओ पुव्व वोच्छिज्जेदि पच्छा यधो, पमतमजन्मि णद्वोदयाणमेदासिमपुत्रमरणम्मि बधभोच्छेदुवलभादो । परोदएणेउ एदाओ वज्जति, आहार दुगोदयरिगहिदअण्णमतेसु चेउ बधोउलभादो । णिरतर वज्जति, पडिवक्खपयडीण बधेण निणा बधमाणादो' । पच्चयपरूवणाए मूलुत्तरणाणिगममयजहण्णुककस्सपच्चया णाणानरणस्सेव वत्तवा । [जदि] चहुमजलण णउणोकमाय-जोगा चानीम चेव आहारदुगस्स पच्चया तो मन्वेसु अण्णमत्तापुत्रकणेसु आहारदुगउधेण हादव्व । ण चेव, तहाणुउलभादो । तदो अण्णेहि वि पच्चएहि होदव्वमिदि ? ण एउ देसो, इच्छिज्जमाणत्तादो । के ते अण्णे पच्चया जेहि आहार दुगस्स बधो होदि ति बुते बुच्छेदे— तित्थयराडरिय नहुसुद-पउयणाणुरागो आहारदुग पच्चओ । अण्णमाणा वि, मण्णमादेसु आहारदुगवधस्साणुवलभादो । अपुव्वस्सुचरिमैसत्तमभोगे

यह देशामर्शक सूत्र है, क्योंकि यह यन्त्राधान, सामित्त और उन्धविनष्टस्थानका ही प्ररूपण करता है। इसी कारण इस सूत्रमें सूचित अर्थोंकी प्ररूपणा करते हैं— इन दोनों प्रकृतियोंका उदय पूर्वमें युच्छिजन होता है, पश्चात् उन्ध, क्योंकि प्रमत्तसयतमें इनके उदयके नष्ट राजानेपर अपूर्वकरणमें बध युच्छेद पाया जाता है। ये दोनों प्रकृतिया परो वयसे बधती है, क्योंकि, आहारद्विकके उन्धसे रहित अप्रमत्तसयतोंमें अथात् अप्रमत्त और अपूरकरण गुणस्थानोंमें ही इनका उन्ध पाया जाता है। उक्त दोनों प्रकृतियोंका उन्ध निरन्तर होता है, क्योंकि, प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बधके जिना इनके उन्धका सद्भाव पाया जाता है। प्रत्ययप्ररूपणमें मूल उ उत्तर नाना एउ एक समय सम्यग्धी जघन्य उरुए प्रत्यय शानायरणके समान ही कहना चाहिये।

शुक्रा—चार सज्जलन, नौ नोकपाय और नौ योग, इस प्रकार यदि त्राईस ही आहारद्विकके प्रत्यय हैं ना सउ अप्रमत्त और अपूर्वकरण सयतोंमें आहारद्विकका बध होना चाहिये। परन्तु ऐसा है नहा, क्योंकि, पैसा पाया नहीं जाता। अत एव अन्य भी प्रत्यय होना चाहिये ?

समाधान—यह कोई दाप नहीं है, क्योंकि, अय प्रत्ययोंका मानना अभीष्ट ही है।

शुक्रा—ये अन्य प्रत्यय शूनसे हैं निभके द्वारा आहारद्विकका उन्ध होता है ?

समाधान—इस शकके उत्तरमें कहते हैं— तीर्थंकर, आचार्य, बहुश्रुत अर्थात् उपाध्याय और प्रउचन, इनमें अनुगाग करना आहारद्विकका कारण है। इसके अतिरिक्त प्रमादका अभाव भी आहारद्विकका कारण है, क्योंकि, प्रमाद सहिद जीवोंमें आहारद्विकका बन्ध पाया नहीं जाता।

१ अमरी ति २५' हाउ पाठ ।

२ श्रीउ 'अनुनादुधमि' इति पाठ ।

३ आ-काप्रयो 'अण्णमाणा' हाउ पाठ ।

किण्ण वधो ? ण, तत्थ तित्थयराडरिय नहुसुद-पवयणविमयरागजणिदससरागभावादो । देवगइसुजुत्तो आहारदुगषधो, अण्णगईहि सह तन्नवधविरोहादो । मणुमा चेव सामी, अण्णत्थ तित्थयराडरिय-नहुसुदरागस्स मंजममहियस्स अणुत्तलभादो । वधद्धान वधविणट्टद्धान च सुगम, सुत्तणिट्टित्तादो । मादिओ अद्दुवो च वधो, आहारदुगपच्चयस्स मादि-सपन्नवमाणत्त-दसणादो ।

तित्थयरणामस्स को वंधो को अवंधो ? ॥ ३७ ॥

सुगम ।

असंजदसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव अपुव्वकरणपइट्टउवसमा खवा वंधा । अपुव्वकरणद्वाए संखेज्जे भागे गंतण वंधो वोच्छिज्जदि । एदे वंधा, अवसेसा अवंधा ॥ ३८ ॥

एद देसामामियसुत्त, सामित्त-वधद्धान-वधविणट्टद्धानाण चेव परूरणादो । तेण्णेण

अका—अपुव्वकरणके उपरिम सप्तम भागमें इनका बन्ध क्या नहीं होता ?

समाधान—नहीं होता, क्योंकि वहाँ तीर्थंकर, आचार्य गुरुश्रुत और प्रयचन विषयक रागसे उत्पन्न हुए संस्कारोंका अभाव है ।

आहारद्विकका बन्ध देवगानिसे संयुक्त होता है, क्योंकि, अन्य गतियोंके साथ उसके बन्ध होनेका विरोध है । इनके बन्धके मनुष्य ही स्वामी हैं, क्योंकि, अन्यत्र तीर्थंकर, आचार्य और गुरुश्रुत विषयक राग समय सहित पाया नहीं जाता । बन्धाध्वान और बन्धविनष्टस्थान सुगम है, क्योंकि, ये सूत्रमें ही निदिष्ट हैं । दोनों प्रकृतियोंका सादिक और अधुव बन्ध होता है, क्योंकि, आहारद्विकका प्रत्यय सादि जोर सपर्यन्तमान देखा जाता है ।

तीर्थंकर नामकर्मका कौन बन्धक और कौन अवन्धक है ? ॥ ३७ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

असयतसम्यग्दृष्टिसे लेकर अपूर्वकरणप्रतिष्ठ उपशमक और क्षपक तक बंधक हैं । अपूर्वकरणकालके सख्यात बहुभागोंको निताकर बन्ध युच्छिन्न होता है । ये बन्धक हैं, शेष जीव अवन्धक हैं ॥ ३८ ॥

यह देशामशोक सूत्र है, क्योंकि वह न्यामित्त, बन्धाध्वान और बन्धविनष्टस्थानका

सुदृढत्ववर्णन कम्मामो— तित्थयरस्स पुत्र यथो गो छजादि पच्छा उदओ, अपुव्वकण  
 छसत्तमभागचरिसममण णट्टवधम्म तित्थयरम्म सजोगिपढमसमण उदयस्मादिं कादूण  
 थनोमिचरिसममण उत्रयोत्तेदुत्तभादो । पगेदण्णेय यथो, तित्थयरकम्मुदयमभाट्टाणु  
 सनोमि-अनोमिजिणेषु तित्थयरनधाणुत्तभादो । गिरनरो नरो, मगवधत्ताग्णे सते' अद्दाम्मसएण  
 यधुत्तरमाभादो । अमत्तदम्माम्मिद्दी दगडसजुत्त यवति, तित्थयरनधस्स णिग्ग्य तिरिस्सखइ  
 यथेहि सह त्रिरोहादो । उत्तरिमा देवगडसजुत्त, मणुमगदट्टिदजीजाण तित्थयरवधस्स देवगड  
 मोत्तण अण्णगईहि सह त्रिरोवादो । तिगणिअमत्तदम्माम्मिद्दी सामा, तिरिक्कत्तगई' तित्थयरस्स  
 यथाभादो । मा होदु तत्थ तित्थयरम्मत्तस्स पारभो, त्रिणाणमभादो । किंतु पुत्र  
 वद्धतिरिक्कत्तजाण पच्छा पड्डिण्णमम्मत्तादिगुणेहि तित्थयरकम्म यथमाणाण पुणो तिरिस्से  
 सुण्णणाण तित्थयरम्म यधस्स सामित्त ए' मत्ति ति युत्ते— ण, उद्धतिग्गिक्ख मणुस्साउआण  
 जीजाण उद्धणिरय देवाउजाण जीजाण व तित्थयरकम्मस्स यथाभादो । त पि

ही प्ररूपण करता है। इसी कारणन इसका द्वारा सूचित अधोका घणन करते हैं—  
 तीर्थंकर नामकमका पूर्वमें उच्युच्छिन्न होता है, पश्चात् उच्य, कयाकि अपूर्णकरणके छत्रे  
 सत्तम भागके अंतिम समयम य धने नष्ट हुआजानेपर तीर्थंकर नामकमका मयोगकेवर्गके  
 प्रथम समयमें उदयका प्रारंभ करने अयोगकरनेके अन्तिम समयम उदयका व्युच्छेद  
 पाया जाता है। इसका उन्ध परोदयमें ही होता है, क्योंकि, जहा तीर्थंकरकमका उदय  
 सम्भव है उा मयोगकरना और अयनकेवर्गके जिनमें तीर्थंकरका उच्य पाया नहीं जाता।  
 यच इसका निरंतर है कयाकि, अपन कारणके हीोपर कालक्षयसे यधका विश्राम  
 नहीं होता। अत्यन्तसम्यग्दाष्ट्र इमे दोगतियोंमें सयुक्त पाधतेहैं, क्योंकि, तीर्थंकर प्रकृतिके  
 वन्दना नरक न नियन्त्र गतिय के न उके साय त्रिरोध है। उपरिम जीव देवगतियमें सयुक्त  
 पाधतेहैं, क्योंकि मनुष्यगतियमें स्थित जीवोंके तावकर प्रकृतिके उन्धका देवगतिको  
 छाद्यकर अय गतियोंके साय त्रिरोध है। तीन गतियोंके अत्यन्तसम्यग्दाष्ट्र जाव इसके  
 कारणे स्वामा है, कयाकि, तिर्यग्गतिक साय तावकरक यचना अभाव है।

शंका—तियग्गतियमें तीर्थंकरकमके वधका प्रारंभ भले ही न हो, क्योंकि, वहा  
 जिनाना अभाव ह। किंतु त्रिहोने पूरम तिर्यग्गायुको पाध लिया हे उनके पीछे सम्य  
 कयादि गुणोंके प्राप्त होजानेसे तीर्थंकरकमका वावकर पुन तियर्चोंमें उत्पन्न होनेपर  
 तीर्थंकरके वधका समाप्तिपाया जाता ह।

ममागतान —इसके उत्तरमें कहते है कि ऐसा होना सम्भव नहीं है, क्योंकि,  
 त्रिहोने पूरमें त्रिर्वेच व मनुष्य आयुका उच्य करलिया है उन जीवोंके नरक व देव आयुओंके  
 वधसे सयुक्त जीवान समान तीर्थंकरकमके उन्धका अभाव ह।

शंका—उह भा कैसे सम्भव हे ?

१ प्रतियु ' छत ' इति पाठ ।

२ प्रतियु ' गरहि ' इति पाठ ।

कुदे ? पारद्वतित्ययरत्रभवादा<sup>१</sup> तदियभवे तित्ययरसतकम्मियजीवाण मोक्खगमण-  
णियमादो<sup>२</sup> । ण च तिरिक्ख मणुस्सेसुप्पणमणुससम्माइट्ठीण देवेषु अणुप्पज्जिय देव-  
णेरइएसुप्पणणाव मणुस्सेसुप्पत्ती अत्थि जेण तिरिक्ख मणुस्सेसुप्पणमणुससम्माइट्ठीण तदियभवे  
णिखुई होज्ज । तम्हा<sup>३</sup> तिगइअसजदसम्माइट्ठिणो चेव सामिया त्ति सिद्ध । सादिओ  
अद्दुवो च चरो, चधकारणाण मादि-मातत्तदसणादो । तित्ययरकम्मस्स पच्चयपरूवणइमुत्तर-  
सुत्त भणदि—

समाधान —क्याकि, जिस भयमें तीर्थंकर प्रकृतिका उत्तर प्रारम्भ किया गया है  
उसस तृतीय भयमें तीर्थंकर प्रकृतिके सत्रयुक्त जीवोंने मोक्ष जानेका नियम है ।  
परन्तु तियच जोर मनुष्योंमें उत्पन्न हुए मनुष्य सम्यग्दृष्टियोंकी देवोंमें उत्पन्न न होकर  
त्रेच नारकियोंमें उत्पन्न हुए जीवोंके समान मनुष्योंमें उत्पत्ति होती नहीं जिससे कि तिर्यंच  
च मनुष्योंमें उत्पन्न हुए मनुष्य सम्यग्दृष्टियोंकी तृतीय भयमें मुक्ति हो सके । इस कारण  
तीन गतियोंके जन्मयत्तसम्यग्दृष्टि ही तीर्थंकरप्रकृतिके उत्पत्तिके स्वामी ह, यह बात सिद्ध  
होती है ।

निशपार्थ—यहा शकाकारण कहना है कि जिन जीवने पूर्वमें तिर्यंगाणुको ग्रह लिया  
है वह यदि पश्चात् सम्यक् प्रादि गुणोंको प्राप्त कर तीर्थंकर प्रकृतिका बन्ध प्रारम्भ करे  
और तत्पश्चात् मरणको प्राप्त होकर तिर्यंचोंमें उत्पन्न हो, तो वह तीर्थंकर प्रकृतिके उत्पत्तिका  
स्वामी क्यों नहीं हो सकता ? इसके उत्तरमें आचार्य कहते हैं कि यह सम्भव नहीं है, कारण  
कि तीर्थंकर प्रकृतिको बाधनेके भयसे तृतीय भयमें मोक्ष जानेका नियम है । परन्तु यह बात  
उक्त जीवमें घन नहीं सकती, क्योंकि, तिर्यंगाणुको ग्रहनेप्राप्त जीव द्वितीय भयमें तिर्यंच  
होकर सम्यग्दृष्टि होनेसे तृतीय भयमें देव ही होगा, मनुष्य नहीं । अत एव कोई भी तिर्यंच  
तीर्थंकर प्रकृतिके बन्धका स्वामी नहा होसकता ।

तीर्थंकर प्रकृतिका सादिक च अधुव बन्ध होता है, क्योंकि, उसके बन्धकारणोंके  
सादि सान्ता देखी जाती है । तीर्थंकर कर्मके प्रत्ययोंके निरूपणार्थ उत्तर सूत्र कहते हैं—

१ अप्रतो ' तिथ्यरत्रेयस्स ववामावादा', आ काप्रया ' तिथ्यरत्रेयवामावादा' इति पाठ ।

२ एतच्च तीर्थंकरनामस्य मनुष्यगतयेन वर्तमान पुण्य स्त्री नपुंसकी वा तीर्थंकरभवाद् वृष्यत्तृतीयमत्र  
प्राय बद्धमास्मते । प्र सा १०, ३१३-१९

३ प्रसिद्ध ' त जहा' इति पाठ ।



कदिहि कारणेहि जीवा तित्थयरणामगोद' कम्मं वंधति ?

॥ ३९ ॥

कः तित्थयरस्स णामकम्मावयवस्स गोदसण्णा ? ण, उच्चागोदऽत्राणिभावित्रेण तित्थयरस्स वि गोदत्तमिद्धीदो । मेसकम्माण पच्चए अभणिदूण तित्थयरणामकम्मस्सेव किमिदि पच्चयपरूवणा कीन्दे ? सोलकम्माणि मिच्छत्तपच्चयाणि, मिच्छत्तोदएण विणा एदमि वधा भावादो । पणुमीकम्माणि अणताणुवधिपच्चयाणि, तदुदएण विणा तेसि वधाणुवलमादो । दस कम्माणि असजमपच्चयाणि, अपच्चस्वाणावरणोदएण विणा तेमि वधाभावाणे । पच्चक्खाणावरणचदुक्क सगमामण्णोदयपच्चय, तेण विणा तत्रयाणुवलमादो । छक्कम्माणि पमादपच्चयाणि, पमादेण विणा तेमि वधाणुवलमादो । देवाउअ मज्झिमविमोहिपच्चइय, अप्पमतद्धाए सखेत्तदिभागे गदे अडविमोहिद्वानमपादेदूण मज्झिमविसोहिद्वाने चैव देवाउअस्स

किनने कारणामे जीव तीर्थकर नाम गोत्रकर्मको नाधते है ? ॥ ३९ ॥

शका—नामकमक अत्रयवभूत तीर्थकर कर्मको गोत्र स्वया कमे सम्भव है ?

समाधान—यह शका ठीक नहीं, क्योंकि, उच्च गोत्रके बन्धना अत्रिनाभापी होनेसे तीर्थकरकर्मको भी गोत्रत्व निश्च है ।

शका—शेष कर्मोंके प्रत्ययाकी न कहकर केवल तीर्थकर नामकर्मको ही प्रत्यय प्ररूपणा क्या की जाती है ?

समाधान—सोल्ह कम मिध्यात्वनिमित्तक है, क्योंकि, मिध्यात्वके उदयके विना इनके बंधका अभाव है । पच्चोस कम अनन्तानुवाधनिमित्तक है, क्योंकि, अनन्तानु बन्धी कर्मायक उच्च विना उनका उच्च नहीं पाया जाता । दस कर्म असयमनिमित्तक है, क्योंकि, अप्रत्याख्यानावरणके उदय विना उनका बन्ध नहीं होता । प्रत्याख्यानावरण चतुष्क अपने ही सामान्य उच्यनिमित्तक है, क्योंकि, उससे विना प्रत्याख्यानावरण चतुष्कका उच्च पाया नहीं जाता । छह कर्म प्रमादनिमित्तक है, क्योंकि, प्रमादके विना उनका बंध नहीं पाया जाता । देवायु मध्यम विगुद्धिनिमित्तक है, क्योंकि, अप्रमत्तबालका सव्यालता भाग दीत जानेपर अत्रिणय विगुद्धिके स्त्रानको नै पाकर मध्यम विगुद्धि

१ तित्थयरणामगोयकम्म—ताथक्खवनिवधन नाम तीर्थकरणम्, तच्च गान्ध कर्मविशेषे क्वचित्कारात् ताथक्खवनिवधनम् । अ. श. पृ. २३२३

२ अ. श. पृ. 'तर्चद्वानाणुवधादो', कादवी 'उद्वद्वानाणुवधादो' इति पाठ ।

बधवोच्छेददंसणादो । आहारदुग्ग विसिद्धरागसमण्णिदसजमपञ्चइय, तेण विणा तच्चधाणु-  
वलभादो । परभवणिवधमत्तावीसकम्माणि हस्म-रदि भय-दुग्गुछा-पुरिसवेद-चदुसजलणाणि च  
कमायविममपञ्चइयाणि, अणुहा एदेसिं भिण्णट्ठाणेषु बधवोच्छेदाणुववत्तीदो । सोलमकसायाणि  
सामण्णपञ्चइयाणि, अणुमेत्तकसाए वि सते तेसिं बधुवलभादो । सादावेदणीय जोगपञ्चइय,  
सुहुमजोगे वि तस्स बधुवलभादो । तेण मच्चकम्माण पञ्चया जुत्तिवलेण णच्चति ति ण  
भणिदा । एदस्स पुण तित्थयरणामकम्मस्स बधपञ्चओ ण णव्वदे— णेद मिच्छत्तपञ्चइय,  
तत्थ उधाणुवलभादो । णासजमपञ्चइय, सज्जेदेषु वि वधदसणादो । ण कमायसामण्णपञ्चइय,  
कसाए सते वि बधवोच्छेददसणादो बधपारभाणुवलभादो वा । ण कसायमददा कारण,  
तिव्वकमाएसु णेरइएसु वि बधदसणादो । ण ति वकसाओ कारण, मदकसाएसु सच्चद्वेदेवेषु  
अपुव्वकरणेषु च वधदसणादो । ण सम्मत तन्नधकारण, सम्मादिट्ठिस्स' वि तित्थयरस्स  
वधाणुवलभादो । ण केवल दसणविसुज्झदा कारण, खीणदसणमोहाण पि केसिं वि वंधाणु-

स्थानमें ही देवायुका ब-धव्युच्छेद देखा जाता है । आहारद्विक विशिष्ट रागसे सयुक्त  
नयमके निमित्तमें बधता है, क्योंकि, ऐसै सयमके बिना उसका बन्ध नहीं पाया जाता ।  
परभवणियन्धक सत्ताईस कर्म एव हास्य, रति, भय, जुगुप्सा, पुण्यवेद और चार सज्वलन  
कपाय, ये सय कर्म कपायविशेषके निमित्तसे बधनेवाले हैं, क्योंकि, इसके बिना उनके  
भिन्न स्थानोंमें बन्धव्युच्छेदकी उपपत्ति नहीं बनती । सोलह कर्म कपायसामान्यके  
निमित्तसे बधनेवाले हैं, क्योंकि, अणुमात्र कपायके भी होनेपर उनका बन्ध पाया जाता  
है । सातावेदनीय योगनिमित्तक है, क्योंकि, सूक्ष्म योगमें भी उसका बन्ध पाया जाता  
है । इस प्रकार चूकि सत्र कर्मोंके प्रत्यय युक्तिबलसे जाने जाते हैं, अत उनका यहा कथन  
नहीं किया गया । किन्तु इस तीर्थंकर नामकर्मका बन्धप्रत्यय नहीं जाना जाता— कारण कि  
यह मिध्यात्वनिमित्तक तो हो नहीं सकता, क्योंकि, मिध्यात्वके होनेपर उसका बन्ध नहीं  
पाया जाता । असयमनिमित्तक भी नहीं है, क्योंकि, सयतोंमें भी उसका बन्ध देखा जाता  
है । कपायसामान्यनिमित्तक भी वह नहीं है, क्योंकि, कपायके होनेपर भी उसका बन्ध  
व्युच्छेद देखा जाता है, अथवा कपायके होनेपर भी उसके बन्धका प्राग्भू नहीं होता । कपाय  
मन्दतानिमित्तक भी इसका बन्ध नहीं हो सकता, क्योंकि, तीव्रकपायवाले नारकियोंके  
भी उसका बन्ध देखा जाता है । तीव्र कपाय भी इसके बन्धका कारण नहीं है, क्योंकि,  
मन्दकपायवाले नर्वाधसिद्धिविमानवासी देवों और अपूर्वकरणगुणस्थानवर्ती जीवोंमें भी  
उसका बन्ध देखा जाता है । सम्यक्त्व भी उसके बन्धका कारण नहीं है, क्योंकि, सम्य  
गृष्टिके भी तीर्थंकर कर्मका बन्ध नहीं पाया जाता । केवल दर्शनविशुद्धता भी उसका  
कारण नहीं है, क्योंकि, दर्शनमोहका क्षय करचुकेनेवाले भी किन्हीं जीवोंके उमका बन्ध

मलवदिरित्तमम्हसणभावो दमणविमुञ्जदा णाम । कथं ताए एक्काए चेव तित्थयरणाम-  
कम्मस्स धधो, मरसम्माइट्ठीण तित्थयरणामकम्मउधपसगादो ति ? वुच्चदे— ण तिमूढा  
वोदत्तमलवदिरोगेहि चेव दमणविमुञ्जदा सुद्धणयाहिप्पाण्ण हांदि, किंतु पुत्तिल्लगुणोहि  
सरूव लद्धणं द्विदमम्हसणस्स माहण पासुअपरिच्छागे साहण समाहिमधारणे माहण वेज्जा  
वच्चजेगे अरहतभतीए बहुसुदभतीए पवयणभतीए परयणवच्छलदाए परयणे पहावणे  
अभिन्खण णाणोउजोगलुत्तणे' पयहाण विमुञ्जदा णाम । तीए दमणविमुञ्जदाए एक्काए  
वि तित्थयरकम्म धधति ।

अधया, विनयसपण्णदाए चेव तित्थयरणामकम्म धधति । त जहा— विणओ  
तिनिहो णाण दमण चरित्तविणओ ति । तत्थ णाणविणओ णाम अभिन्खणभिन्खण णाणोव  
जोगलुत्तदा बहुसुदभती परयणभती च । दमणविणओ णाम परयणेसुउड्डसच्चभानसदहण  
तिमूढादो ओमरणमड्डमलच्छणमरहत सिद्धभती एण लवपडिउज्जणदा' लद्धिसवेगसपण्णदा

सम्यग्दर्शन भाव होता है उसे दर्शनविशुद्धता कहते हैं ।

शका—केवल उस एक दर्शनविशुद्धतासे ही तीर्थंकर नामकर्मका रन्ध कैसे  
सम्भव है, क्योंकि, जसा माननेसे सब सम्यग्दृष्टियाके तीर्थंकर नामकर्मके धधका प्रसंग  
आयेगा ?

समाधान—इस शकाके उत्तरमें कहते हैं कि शुद्ध नयके अभिप्रायसे तीन  
मूढताओं और आठ मत्रोंमें रहित होनेपर ही दर्शनविशुद्धता नहीं होती, किंतु  
पूर्वोक्त गुणोंसे अपने निजस्वरूपको प्राप्तकर स्थित सम्यग्दर्शनकी साधुओंकी प्रासुक  
परित्याग, साधुओंकी समाधिसधारणा, साधुओंकी वैषावृत्तिका संयोग, अरहतभक्ति,  
बहुश्रुतभक्ति, प्रवचनभक्ति, प्रवचनवत्सलता, प्रवचनप्रभाषना और अर्भीक्षणज्ञानोपयोग  
युक्ततामें प्रवर्तनका नाम विशुद्धता है । उस एक ही दर्शनविशुद्धतासे ही तीर्थंकर कर्मको  
धाधते हैं ।

अधया, विनयसम्पन्नतासे ही तीर्थंकर नामकर्मको धधते हैं । यह इस प्रकारके  
ज्ञानविनय, दर्शनविनय और चारिविनिनयके भदसे विनय तीन प्रकार है । उनमें चारया  
ज्ञानोपयोगसे युक्त रहनेके साथ बहुश्रुतभक्ति और प्रवचनभक्तिका नाम ज्ञानविनय है ।  
आगमोपदिष्ट सध पदायोंके अर्धानके साथ तीन मूढताओंसे रहित होना, आठ मत्रोंकी  
छोड़ना, अरहतभक्ति, सिद्धभक्ति, क्षण लप्रतिशुद्धता और लब्धिसवेगसम्पन्नताको दर्शन

१ प्रतिशु 'सरूवद्धण', मत्रों 'सत्त्वलद्धण' इति पाठ ।

२ आकाशयो 'दसचणेण' इति पाठ ।

३ अ काशयो 'परिवन्धणता', आशयो 'परिवन्धणदा' इति पाठ ।

च' । चरित्तनिणओ णाम सीलव्वदेसु णिरदिचारदा आत्तासएसु अपरिहीणदा जहाथामे तहा तवो च । साहूण पासुगपरिच्चाओ तेसिं समाहिंस'भारण तेसिं वेज्जावच्चजोगजुत्तदा पवयण-वच्छल्लादा च णाण दसण-चरित्ताण पि विणओ, तिरयणममूहस्स साहु-पययण ति ववएसोदो । तदो विणयमपण्णदा एक्का वि होदूण सोलमावयवा । तेणेदीए विणयसपण्णदाए एक्काए नि तित्थयरणामरुम्म मणुआ वधति । देव णेरइयाण कधमेसा सभवदि ? ण, तत्थ वि णाण-दसणविणयाण सभजदसणादो । कध तिसमूहकज दोहि चैव सिञ्जेदे ? ण एस दोसो, मट्टिया-जल सूरणकदेहिंतो समुप्पजमाणसूरणकटकुग्गस्स तक्कद दुदिणेहिंतो चैव समुप्पजमाणस्सुवलभादो, दोहि तुरगेहि कट्टिजमाणसदणस्स' धलजतेणेकेणेव देयेण विजाहरेण मणुएण वा कट्टिजमाण-

नियम कहते हैं । शील त्तोंमें निरतिचारता, आवश्यकोंमें अपरिहीनता अर्थात् परिपूर्णता, और शक्त्यनुसार तपका नाम चाग्निनियम है । साधुओंके लिये प्रासुक् आहारादिकका दान, उनकी समाधिका धारण करना, उनकी वैयावृत्तिमें उपयोग लगाना, और प्रवचन-घत्सलता, यह ज्ञान, दर्शन एवं चारित्र तीनोंको ही नियम है, क्योंकि, रत्नत्रय समूहको साधु व प्रवचन सद्भा प्राप्त है । इसी कारण चूकि नियमसम्पन्नता एक भी होकर सोलह श्रवणवर्षसे सहित है, अत उस एक ही नियमसम्पन्नतासे मनुष्य तीर्थंकर नामरुर्मको वाधते हैं ।

शुक्रा— यह नियमसम्पन्नता देव-नारकियोंने कैसे सम्भज है ?

समाधान— उक्त शका ठीक नहीं, क्योंकि, देव-नारकियोंमें भी ज्ञाननियम और दर्शननियमकी सम्भावना देखी जाती है ।

शुक्रा— तीनों नियमोंके समूहसे सिद्ध होनेवाला फाय दोसे ही कैसे सिद्ध हो सकता है ?

समाधान— यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, मट्टी, जल और सूरणकदसे उत्पन्न होने वाला सुरणकदका अक्षुर उसके फन्द और दुर्दिन अर्थात् वर्षासे ही उत्पन्न होता हुआ पाया जाता है, अथवा दो घोड़ोंसे खींचा जानेवाला रथ चलवान् एक ही देव, विद्याधर या मनुष्यसे

१ अरन्त मिद्ध चइय सुदे य धम्मे य साधुग्गे य । आयरिय उवञ्जाण सुपवयणे दसण चावि ॥ भर्ता पूया वण्णजण च णायगमवण्णवादस्स । आमाणपरिआरा दयणविणओ ममामेण ॥ म आ ४७-४८,

२ प्रतिपु ' तिरयण ' इति पाठ ।

३ अत्रती ' कट्टिजमाणसेदसणस्स ', आत्रतो ' नदिजमाणसेदसणस्स ', आत्रती ' कट्टिजमाणसे दसणस्स ' इति पाठ ।

स्वल्भावो वा । जदि दोहि चैव तित्थयरणामक्रम वज्रादि तां चरित्तिणिणो किमिदि त्त्वारणमिदि बुद्धे ? ण एम दोमो, णाण दसणत्तिणयक्त्विरोहिचरणत्तिणो ण होदि ति पदुप्पायणफल्तादो ।

अथवा, सीलव्रतोंमें निरतिचारतासे चैव तित्थयरणामक्रम वज्रादि । त जहा—  
हिंसालिय चोन्नम परिग्गेहेहितो निरदी वद णाम । वत्परिरक्खणं सील णाम ।  
सुरायण मासभक्खण सोह माण माया-लोह-हस्म रइ सोग भय दुग्गुच्छिन्वि-पुरिम णवुमपयेयापि  
आमो अदिचारो, एदेसि तिणामो निरदिचारो सपुण्णदा, तस्य भायो निरदिचारदा । तीपे  
सीलव्रतोंमें निरतिचारतासे तित्थयरणामक्रमस्य धवो होदि । कथमेत्य सेमपण्णरमण  
सभवो ? ण, सम्मद्दमणेण राण लपडिजुज्जण लद्धिसयेगसपण्णत्त-साहुसमाहिसिथा

कींचा गया पाया जाता है ।

शुका—यदि दो ही विनयोंसे तीर्थंकर नामकर्म बाधा जा सकती है, तो फिर चारित्रविनयको उसका कारण क्यों कहा जाता है ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं, क्योंकि, ज्ञान-व्रतविनयके कायका विरोधी चारित्रविनय नहीं होता, इस बातको सूचित करनेके लिये चारित्रविनयको भी कारण मान लिया गया है ।

अथवा, शील व्रतोंमें निरतिचारतासे ही तीर्थंकर नामकर्म बाधा जाता है । वह इस प्रकारसे—हिंसा, असत्य, चौर्य, अद्रव्य और परिग्रहसे विन्त होनेका नाम व्रत है । व्रतोंकी रक्षामें शील कहते हैं । सुरायण, मासभक्षण, क्रोध, मान, माया, लोभ, हास्य, रति, शोक, भय, जुगुप्सा, खौजद, पुत्रपुत्रवेद एव नपुसक्केद, इनके त्याग न करनेका नाम अतिचार और इनके विनाशका नाम निरतिचार या सम्पूर्णता है, इसके भावको निरति चारता कहते हैं । शील व्रतोंमें इस निरतिचारतासे तीर्थंकर कर्मका ध्वंस होता है ।

शुका—इसमें दोष पन्द्रह भावनाओंकी सम्भावना कैसे हो सकती है ?

समाधान—यह ठाक नहीं, क्योंकि क्षण लक्ष्मतिजुज्जता, लब्धि सवेगसम्पत्ता,

१ अपत्री ' परिग्रहण ', आ कपल्ला ' परिग्रहण ' इति पाठ ।

२ अहिंसादिषु व्रतेषु तत्रनिपालनाभ्यु च नोपवचनादेसु शीलपु निरतया वृत्ति क्षात्र व्रतव्यतिचार ।  
स पि ६, २४ चारित्रविकल्पेषु शील व्रतेषु निरतया वृत्ति शील व्रतेष्वनतिचार — अहिंसादिषु  
व्रतेषु × × × निरतया वृत्ति माय-वाद् मनसा शील व्रतेष्वनतिचार इति न्ययत । त रा-६, २४, ३ धालानि च  
मदानि च शील व्रतश्च अथापि समागच्छेद तस्मिन्, तत्र शीलानि उत्तरयुगा नवानि मूल्युगा तेषु निरतिचार  
सद् तीर्थकरनामकम वधार्ताति विधिप्रयोग । प्रन पृ ८३

३ अत्रती ' निरतिचारदीप ', आ-वापया ' निरतिचार तीर्थ ' इति पाठ ।

रण-चेजात्रचजोगजुत्त-पासुअपरिचाग-अरहत-बहुसुद पवयणभक्ति-पवयणपहाउणल-स्खणसुद्धि-  
जुत्तेण विणा मीलव्वदागमणदिचारत्तस्म अणुअत्तीदो । अमखेज्जगुणाए, सेडीए, कम्म-  
णिअरणहेदू वद णाम । ण च सम्मत्तेण विणा हिंमालिय चोज्जअमपरिग्गहविरडभेत्तेण सा  
गुणसेडिणिज्जरा होदि, दोहिंतो चेवुप्पज्जमाणकज्जस्म तत्थेकादो ममुप्पत्तिविरोहादो । होदु  
णाम एदेसिं मभत्तो, ण णाणविणयस्म ? ण, उदव्व णअदत्थसमूह-तिहुवणविसएण अभिक्खण-  
मभिक्खणमुअजोगविसयमापज्जमाणेण णाणविणएण विणा सीलअदणियअणसम्मत्तुप्पत्तीए  
अणुववत्तीदो । ण तत्थ चरणविणयाभात्तो वि, जहाथामतवाअसयापरिहीणत्त पवयणवच्छलत्त-  
ल-स्खणचरणविणएण विणा सीलअदणिरदिचारत्ताणुअवत्तीदो । तम्हां तदियभेद तित्थयर-  
णामकम्मअधस्स कारण ।

आनामएणु अपरिहीणदाए— समदा अणु-वदण-पडिक्कमण-पच्चस्खाण-विओसग्गभेएण

साधुसमाधिधारण, चेयात्रत्ययोगयुक्तता, प्राप्तुपरित्याग, अरहतभक्ति, बहुश्रुतभक्ति,  
प्रयत्नभक्ति और प्रयत्नप्रभावना लक्षण शुद्धिसे युक्त सम्यग्दर्शनके बिना शील व्रतोंकी  
निरतिचारता बन नहीं सकती । दूसरी बात यह है कि जो असख्यात गुणित श्रेणीसे  
कर्मनिर्जराका कारण है वही व्रत है । और सम्यग्दर्शनके बिना हिंसा, असत्य, चौर्य,  
अब्रह्म और परिग्रहसे विग्न होने मात्रसे वह गुणश्रेणीनिर्जरा हो नहीं सकती, क्योंकि,  
दोनोंसे ही उत्पन्न होनेवाले कार्यकी उनमेंसे एकके द्वारा उत्पत्तिका विरोध है ।

शका— इनकी सम्भावना यहा भले ही हो, पर ज्ञानविनयकी सम्भावना नहीं  
हो सकती ?

समाधान— ऐसा नहीं है, क्योंकि वह द्रव्य, जो पदार्थोंके समूह और श्रिभुजनको  
विषय करनेवाले एव नार नार उपयोगविषयको प्राप्त होनेवाले ज्ञानविनयके बिना शील  
व्रतोंके कारणभूत सम्यग्दर्शनकी उत्पत्ति नहीं बन सकती ।

शील व्रतविषयक निरतिचारतामें चारित्र्यविनयका भी अभाव नहीं कहा जासकता  
है, क्योंकि यथाशक्ति तप, आचर्यकापरिहीनता और प्रयत्नवन्सलता लक्षण चारित्र्य  
विनयके बिना शील व्रतविषयक निरतिचारताकी उपपत्ति ही नहीं बनती । इस कारण यह  
तीर्थंकर नामकमेंके बन्धना तीसरा कारण है ।

आचर्यकमें अपरिहीनतासे ही तीर्थंकर नामकर्म बधता है— समता, स्तर,

स्वुलभादो वा । जदि दोहि चैव तित्थयरणामरुम्म वज्जादि तो चरित्तणिणओ किमिदि तक्कणमिदि बुच्चदे ? ण एम दोमो, णाण दमणणिणयरुज्जविगेहिचरणणिणओ ण (दोहि ति पदुप्पायणफलत्तादो ।

अथवा, शीलव्रतेशु निरतिचारदाए चैव तित्थयरणामरुम्म वज्जड । त जहा—  
हिंसालिय चोज्जम्भ परिग्गहेहिंतो निरदी वद णाम । वट्ठपरिरन्धण' शील णाम ।  
सुरायण मासभरुक्षण कोह माण माया-लोह-हम्म रद्द सोग भय दुग्गुच्छिन्धि-पुरिम णवुमयेयापरि  
घागो अदिचारो, एदेसि निणासो निरदिचारो मपुण्णदा, तस्म भाओ निरदिचारदा । तीए'  
शीलव्रतेशु निरतिचारदाए तित्थयरकम्मस्स वधो होदि । कधमेत्थ सेमपण्णरसण्य  
समन्ना ? ण, सम्मदसणेण खण लणपडिनुज्जण लद्धिमयेगमपण्णत्त-साहममाहिसथा

खींचा गया पाया जाता है ।

शका—यदि दो ही चिनयोसे तीयकर नामकम वाधा जा सकता है, तो फिर चारित्रविनयको उसका कारण क्यों कहा जाता है ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं, क्योंकि, ज्ञान-इशानविनयके वायका विरोधी चारित्रविनय नहीं होता, इस बातको सूचित करनेके लिये चारित्रविनयको भी कारण मान लिया गया है ।

अथवा, शील व्रतोंम निरतिचारतामे ही तीथकर नामकम वाधा जाता है । वह इस प्रकारसे—हिंसा, असत्य, व्यैथ, अद्रव्य और परिग्रहसे विरत होनेका नाम व्रत है । व्रतोंकी रक्षामे शील कहते हैं । सुरायण मासभक्षण, क्रोध, मान, माया, लोभ, हान्य, रति, शोक, भय, जुगुप्सा, खींचिद, पुरुषवेद एत नपुसकवेद, इनके त्याग न करनेका नाम अतिचार और इनके विनाशका नाम निरतिचार या सम्पूजता है, इसने भावको निरति चारता कहते हैं । शीत्र व्रतोंमें इस निरतिचारतामे तीर्थकर कर्मका वन्ध होता है ।

शका—इसमें दोष पन्द्रह भावनाओंकी सम्भावना कैसे हो सकती है ?

समाधान—यह ठीक नहीं, क्योंकि क्षण लक्षप्रतिबुद्धता, लक्षि सवेगसम्पन्नता

१ अथवा ' पतिव्रक्षण ' , जा वापल्लो ' पतिव्रक्षण ' इति पाठ ।

२ अहिंसादि नैवेद्य तत्रतिपालनायेंतु च कायवज्जनायित्तु शील्लेषु निरतया वृत्ति शील व्रतेष्वनतिचार ।  
म नि ६, २४ चारियविक्कणेषु शील्ल व्रतेषु निरतया वृत्ति शील व्रतेष्वनतिचार — आर्यादि  
व्रतं X X X निरतया वृत्ति काय वाग् मनसा शील व्रतेष्वनतिचार इति कथ्यत । त ए ६ २४, ३ शालानि च  
व्रतानि च शीत्र व्रतम् अथापि समागमद्वेद, पस्विन् तन चीनानि उत्तराणाम् व्रतानि मूल्युणा तेषु निरतिचार  
सन् तीर्थेभ्यः नामकम वधनात्तति विवेकधरा । प्रब पृ ८३

३ अथवा ' निरतिचारदीए ' , आ-का-यो ' निरतिचार तीए ' इति पाठ ।

मह्वयाण विणासण-मलरोहणकारणाणि जहा ण होमति तहा करेमि ति मणेणालोचिय चउ-  
रामीदिलम्बवदसुद्धिपडिग्गहो पच्चक्खाणं णाम । सरौराहारेमुं हु मण-चयण-पवुत्तीओ  
ओसारिय ज्ञेयम्मि एअग्गेण चित्तणिरोहो विओसग्गो णाम । एदेमि छणमावासयाण  
अपरिहीणदा अपडदा आनामयापरिहीणदा । तीए आनासयापरिहीणदाए एक्काए वि  
तित्थयरणामकम्मस्स ववो होदि । ण च एत्थ मेसकारणणमभावो, ण च दसणविसुद्धि-  
निणयसपत्ति वदमालणिरदिचार सणलपडिनेह लद्धिसवेगसपत्ति-जहाधामतव-साहुममाहिसधा-  
रण-वेज्जात्रच्चजोग-पासुअपरिन्चागारहत-वहुसुद पवयणभत्ति पयणणच्छल-प्पहावणाभिकखण-  
णाणोवजोगुत्तदाहि विणा छावासएमु णिरदिचारदा णाम सभग्गि । तम्हा एद तित्थयर-  
णामकम्मउधस्स चउत्थकारण ।

सण-लपडिजुञ्जणदाए— खण-लना णाम कालविसेसा । सम्मदमण णाण-वद सील-  
गुणाणमुज्जालण कलकपन्नालण मधुक्खण वा पडिजुञ्जण णाम, तस्स भायो पडिजुञ्जणदा ।  
सण लव पडि पडिजुञ्जणदा खण लवपडिजुञ्जणदा । तीए एक्काए वि तित्थयरणामकम्मस्स

मलेत्पादनके कारण जिस प्रकार न होंगे धैरा करता है, ऐसी मनसे आलोचना करके  
चौरासी लाख व्रतोंकी शुद्धिके प्रतिग्रहका नाम प्रत्यारपान है । शरीर व आहारमें मन एव  
उचनकी प्रवृत्तियोंको हटाकर ध्येय उस्तुकी ओर एकाग्रतामें चित्तका निरोध करनेको व्युत्सर्ग  
कहते हैं । इन छह आवश्यकोंकी अपरिहीनता अर्थात् अलण्डताका नाम आवश्यकपरि-  
हीनता है । उस धक ही आवश्यकपरिहीनतामें तीर्थंकर नामकर्मका उन्ध होता है । इसमें  
शेष कारणोंका अभाव भी नहीं है, क्योंकि दर्शनविशुद्धि, विनयसम्पत्ति, व्रत शीलनिरति-  
चारता, क्षण लयप्रतिबोध, लघि सवेगसम्पत्ति, यथादाकि तप, साधुसमाधिगधारण,  
वेधाप्रत्ययोग, प्रासुरूपरित्याग, अरहन्तभक्ति, गृह्युतभक्ति, प्रवचनभक्ति, प्रवचनउत्सलता,  
प्रवचनप्रभापना और अर्माक्ष्ण ज्ञानोपयोगयुक्तता, इनके बिना छह आवश्यकोंमें निरति-  
चारता सम्भव ही नहीं है । इस कारण यह तीर्थंकर नामकर्मके उन्धका चतुर्थ कारण है ।

क्षण लयप्रतिबुद्धतासे तीर्थंकर नामकर्म उचता है— क्षण और लय ये कालविशेषके  
नाम हैं । सम्यग्दर्शन, ज्ञान, व्रत आग शील गुणोंमें उज्ज्वल करने, मलको धोने अथवा  
जलनेका नाम प्रतिबोधन और इसके मायका नाम प्रतिबोधनता है । प्रत्येक क्षण व लयमें  
होनेवाले प्रतिबोधको क्षण-उप्रतिबुद्धता कहा जाता है । उस एक ही क्षण लयप्रतिबुद्धतासे

१ णामादाण छण अनोगपरिजण नियरणेण । पच्चक्खाण णेय जणाणय चागमं गले ॥ मला २७  
अनागतदोषापोहन प्रयाग्यानम् । त रा ६, २४, ११

२ प्रतिपु ' सरौराहागसु ' इति पाठ ।

३ द्वासिखयणियमादिह जहुत्तमाणेण उच्चालम्हि । जिणगुणधित्तणजुवो वाउरमग्गो इशुणिसग्गो ॥  
मूला २८ परिमितमाग्गविपया शररि ममन्निशुत्ति कायोमग्गं । त रा ६, २८, ११



छावाम्या ह्येति । मत्तु मित्त मणि-पाहाण सुवण्ण-मट्टियासु' राग देसाभागे ममदा गाम' । तीदा  
 गागद-वट्टमाणकालविमयपचपरमेसराण भेदमरुज्ज गमो अरहताण गमो जिणाणमिच्चादिणो  
 क्कागे दव्वट्टियणिउपणो धरो' गाम । उसहाजिय समवाहिणदण-सुमइ-पउमप्पइ-सुपाम  
 चदप्पह पुप्फदत-सीयल-सेयस-वासुपुज्ज विमलणत यम्म-सति-कुधु अर-मल्लि-सुणिसुव्वय-मि  
 णेमि-याम-वट्टमाणदिनिन्धयराण भरहादिकेउलीण आइरिय-चइत्तालयदीण मेय काज्ज  
 णमोक्कारो गुणययभेदमल्लीणो सहकलावाउलो गुणाणुसरणसरुओ वा उदणा' गाम । पच  
 महव्वएसु चउरामीदिलक्कपगुणगण'कटिएसु म्मुप्पण्णरुउरुपनरत्ताण पडिक्कमण' गाम ।

धन्दना, प्रतिक्रमण, प्रत्याख्यान और व्युत्सर्गके भेदसे छन्द आवश्यक होते हैं । शत्रु भिन्न,  
 मणि-पाहाण और सुवण मूर्च्छित्तासं राग द्वयने अभावने समता कहते हैं । अतीत,  
 अनागत और वर्तमान काल त्रिययक पाच परमेष्ठियोंके भेदको न करके 'अरहन्तोंको  
 नमस्कार, जित्तोंको नमस्कार' इत्यादि द्र-यावैयैकनिचधन नमस्कारका नाम स्तव है ।  
 श्रपभ, अजित, सम्मय, अमितन्दन, सुमति, पद्मप्रम, सुपार्थ्व, चन्द्रप्रम, पुष्पदत,  
 दीतल, धेयास, वासुपुज्य, विमल, अनन्त, यम, शान्ति, कुधु अर, मल्लि, मुनिसुव्वत,  
 नमि, नेमि, पार्थ्व और वधमालादि तीर्थकर तथा भरतादित्र केशरी, आचार्य एव चेत्यालया  
 दिकोंके भेदको करके अथवा गुणगत भेदके आश्रित शब्दकलापसे व्याप्त गुणानु  
 स्मरण रूप नमस्कार करनेकी धन्दना कहते हैं । चारामी तात् गुणोंके समूहसे सयुक्त  
 पाच महाव्रतोंमें उत्पन्न हुए मलने धेनेका नाम प्रतिश्रमण है । महाव्रतोंके त्रिनाश य

१ समदा धवा य वदण पत्तिक्कमण तह्व पादन् । पच्चक्खण विसणो करणीया वयया इपि ॥  
 मूला २२ सामास्य चउरामीध वदणय पत्तिक्कमण । पच्चक्खण च तथा काओमणो हएदि छट्ठो ॥ मूला  
 ७, १५ यडावयकत्तिपा — सामासिय चतुर्निशान्तित्र वदना प्रतिश्रमण प्रथारथान काओसर्भधेति । त रा  
 ६, २४, ११ स किं त आरस्सय ? जाउत्सय छविह पणत्त त जहा — सामास्य चउवायधवा वदणय पत्ति  
 क्कमण काउत्सणो पच्चक्खण स त आरस्सय । न दामूव ४४

२ अर्थो 'पत्तिशासु', आ काययो 'मत्तियासु' इति पाठ ।

३ जीवित्त मरणे त् मालाभ सजोप विपत्रागि य । बधुरि सुद दुक्खादिह समदा सामास्य गाम ॥  
 मूला २३ तत्र सामासिय सवसात्रयमानमूर्च्छित्तक्षण चित्तम्यक्तन ज्ञान प्रीतिमानम् । त रा ६, २४, ११

४ उसहादिजिणवराण धामणिदाह गुणाद्युक्तेति च । कउण जत्थिणूण य तिसुदिपणमा धवा जेओ ॥  
 मूला ४४ चतुर्निशाभेत्तत्र तीथरुणत्तवृत्तनम् । त रा ६, २४, ११

५ अर्थो 'गुणगणभेदमणि'णो, आ-वाप्रयो 'गुणगयमदमणि'णा इति पाठ ।

६ अरहण सिद्धपत्तिना तत्र-सुद गुण गुरुण रादीण । किदियम्मैणिदरंण य तियरणमोचण पणमो ॥  
 मूला २५ वदना त्रिभुद्धि दशमना चतु गितेनति दादनामनता । त रा ६, २४, ११

७ प्रतियु 'हरखणगुणगा' इति पाठ ।

८ दव्वे छते कान् मारे य कयात्राहाहाण्य । विण्ण-गरइणहुतो मण वच कायेण पडिक्कमण ॥  
 मूला २६ अतीतदोषनिवृत्तन् प्रतिक्कमणम् । त रा ६, २४, ११

कारणाण संभवाद्दो, जदो जहायामो णाम ओघनलस्म धीरस्म' णाणदसणकल्दिस्स होदि । ण च तत्थ दसणविसुज्जदादीणमभावो, तहा तपतस्म अण्णहाणुववत्तीदो । तदो एद सत्तम कारण ।

साहूण पासुअपरिच्चागदाए—अणतणाण-दसण वीरिय विरइ-खइयसम्मत्तादीण साहया साहू णाम । पगदा ओमरिदा आसना जम्हा त पासुअ, अधवा ज णिरवज्ज त पासुअ । किं ? णाण दसण-चरित्तादि । तस्म परिच्चागो विसज्जण, तस्स भावो पासुअपरिच्चागदा । दयातुद्धीए माहूण णाण-दसण-चरित्तपरिच्चागो दाण पासुअपरिच्चागदा णाम । ण चेद कारण घरत्थेसु सम्भवदि, तत्थ चरित्ताभावाद्दो । तिरयणोत्तदेसो णि ण घरत्थेसु अत्थि, तेसि दिड्ढिवादादिउत्तरिमसुत्तोत्तदेसणे अहियाराभावाद्दो । तदो एद कारण महेसिण चेव होदि । ण च एत्थ सेसकारणाणमसभनो । ण च अहत्तादिसु अभत्तिमते णत्तपदत्थविसयसद्धहेणुम्मुक्के सादिचारसीलज्जदे परिहीणावासाए णिरज्जो णाण दसण-चरित्तपरिच्चागो सम्भवदि, विरोहाद्दो । तदो एदमद्दम कारण ।

सभी शेष कारण सम्भव ह, क्योंकि, यथायाम तप ज्ञान-दर्शनसे युक्त सामान्य बलवान् और धीर व्यक्तिके होता है, ओर इसलिये उसम दर्शनविशुद्धतादिकोंका अभाव नहीं होसकता, क्योंकि, ऐसा होनेपर यथायाम तप वन नहीं सकता । इस कारण यह तीर्थकर नामकग्रन्थका सातवा कारण है ।

साधुओंके द्वारा विहित प्रासुक अर्थात् निरवद्य ज्ञान-दर्शनादिकके त्यागसे तीर्थकर नामकर्म बधता है—अनन्तज्ञान, अनन्तदर्शन, अनन्तशीर्ष, विरति और क्षायिक सम्यक्त्वादि गुणोंके जो साधक ह वे साधु कहलाते हैं । जिससे आसन्न दूर हो गये ह उसका नाम प्रासुक है, अथवा जो निरवद्य है उसका नाम प्रासुक है । यह ज्ञान, दर्शन व चारित्रादिक ही तो सकते हैं । उनके परित्याग अर्थात् विसर्जन करनेका प्रासुकपरित्याग और इसके भावको प्रासुकपरित्यागता कहते ह । अर्थात् दयालुद्धिसे साधुओं द्वारा किये जाने वाले ज्ञान, दर्शन व चारित्रिके परित्याग या दानका नाम प्रासुकपरित्यागता है । यह कारण गृहस्थोंमें सम्भव नहीं है, क्योंकि, उनमें चारित्रका अभाव है । रत्नत्रयका उपदेश भी गृहस्थोंमें सम्भव नहीं ह, क्योंकि, छष्टिवादादिक उपरिमश्रुतके उपदेश देनेमें उनका अधिकार नहीं है । अत एव यह कारण महर्षियोंके ही होता है । इसमें शेष कारणोंकी अमभावना नहा है, क्योंकि अरहतादिकोंमें भक्तिसे रहित, नौ पदार्थविषयक श्रद्धानसे उन्मुक्त, सातिचार शील व्रतोंसे सहित और आवश्यकोंकी हीनतासे न्युक्त होनेपर निरवद्य ज्ञान, दर्शन व चारित्रका परित्याग विरोध होनेसे सम्भव ही नहीं है । इस कारण यह तीर्थकर नामकम ग्रन्थका आठवा कारण है ।

वधो । एतन्नि पुत्र्य व संसृष्टाणाणामतन्भाष्यो दरिमेदन्वो । तदो एद तित्थयरणामकम्  
वधस्स पचम कारण ।

लद्धिसनेगसपण्णदाए— सम्मदयण णाण-चरणेषु जीवस्म समागमो लद्धी णाम ।  
हरिमो मतो सनेगो णाम । लद्धीए मनेगो लद्धिमनेगो, तस्म सपण्णदा सपत्ती । तीए नित्थया  
णामकम्मस्म एक्काए नि वधो । क्व लद्धिमनेगसपयाए संसृष्टाणाण भभयो ? ण मेस  
कारणेहि णिणा लद्धिसनेगस्स सपया जुञ्जदे, निरोहादो । लद्धिसनेगो णाम तित्थयरोहलो,  
ण सो दसणनिमुञ्जदादीहिं णिणा सपुण्णो हेदि, णिणटिसेहादो हिरण्ण-सुवण्णादीहिं णिणा  
अद्धो' च्च । तदो अप्पणो अतोत्तिमेमकारणा लद्धिसनेगसपया छट्ट कारण ।

जहाथामे तहा तवे— उलो वीरिय यामो इदि एयट्टो । तत्रो टुविट्टो वाहिरो अन्नं  
तरो चेदि । वाहिरो अणसणादिओ, अन्नतरो णिणयादिओ । एसो सच्चो वि तत्रो तारसविहो ।  
जहाथामे तहा तवे सने तित्थयरणामकम् वज्जड । कुदो ? जहाथामतत्रे मयलसेमत्तित्थयर-

तीर्थंकर नामरमंसा बन्ध होता है । इसमें भी पुर्यंके समान शेष कारणोंका अन्तर्भाव  
दिखलाना चाहिये । इसीलिये यह तीर्थंकर नामरमके बन्धना पाचया कारण है ।

लद्धिमवेगसम्पन्नतासे तीर्थंकर रमसा बन्ध होता है— मम्यग्दशन, सम्यग्दान  
और सम्यक्चारित्र्यमें जो जीवका समागम होता है उसे लद्धिव कहते हैं, और हर्ष व  
सन्तुष्टि भावका नाम सवेग है । लद्धिवे या लद्धिम सवेगका नाम लद्धिसनेग और  
उसकी सम्पन्नताका एव सम्पत्ति है । इस एक ही लद्धिमवेगसम्पन्नतासे तीर्थंकर  
नामकका बन्ध होना है ।

शंका—लद्धिसवेगसम्पन्नतामें शेष कारणोंकी सम्भावना कैसे है ?

समाधान—क्योंकि, शेष कारणोंके बिना विरुद्ध होनेसे लद्धिमवेगकी सम्पन्नताका  
संबन्ध ही नष्ट होसकता । इसका कारण यह निरन्तरप्रयत्नित हर्षका नाम लद्धिमवेग है ।  
और यह वृत्तान्तविशुद्धतादिशोकके बिना सम्पूर्ण होता नहीं है, क्योंकि, इसमें हिरण्य सुवर्णा  
दिकोंके बिना धनाढ्य हाणके समान विरोध है । अत एव शेष कारणोंको अपने अन्तर्गत  
करनेवाली लद्धिमवेगसम्पन्नता तीर्थंकर कमबन्धना छटा कारण है ।

शास्त्रानुसार तपसे तीर्थंकर नामरम उच्यते हे— यत्र, धीय और याम (स्थामन्)  
ये सम्प्रानायक शब्द हैं । तप दो प्रकार है— ग्राह्य और आभ्यन्तर । इनमें अनशनादिकथा  
नाम ग्राह्य तप और त्रिनयादिकथा नाम आभ्यन्तर तप है । छह ग्राह्य तप छह आभ्यन्तर  
इस प्रकार मिश्रकर यह सत्र तप वारह प्रकार है । जैसा वल हो वैसा तप करनेपर तीर्थंकर  
नामक उच्यते है । इसका कारण यह है कि यथाशक्तितपमें तीर्थंकर नामरमके बन्धके

दमम कारण ।

अग्रहत्तमतीए— खनिदत्रादिकम्मा केवलणाणेण द्विदमन्वद्वा अरहता णाम । अधवा, णिद्विविदद्वकम्माण चाइदवादिकम्माण च अरहतेति सण्णा, अरिहणण पडि दोण्ह भेदा-भावादो । तेसु भत्ती अरहत्तमती । ताए तित्थयरकम्म नज्झइ । कधमेत्थ सेसकारणाण सभयो ? बुच्चदे— अरहत्तमुत्ताणुड्डाणाणुवत्तण तदणुड्डाणपामो वा अग्रहत्तमती णाम । ण च एसा दमणविसुज्झदादीहि विणा सभयइ, निरोहादो । तदो एसा एककारमम कारण ।

घहुसुदमतीए— चारमगपारया नहुसुदा णाम, तेसु भत्ती-तेहि वक्खाणिद-आगमत्थाणुवत्तण तदणुड्डाणपामो ना- नहुसुदमती । ताए नि तित्थयरणामकम्म बज्झइ, दमणविसुज्झदादीहि विणा एदिस्ये जमभयादो । एद चारमम कारण ।

चाहिये । इस प्रकार यह दशाज्ञा कारण है ।

अरहन्तभक्तिसे तीर्थकर नामकम बधता है— जिन्होंने घातियाकर्मोंको नष्ट कर कवल-ज्ञानके द्वारा सम्पूर्ण पदार्थोंको देख लिया है वे अरहन्त ह । अथवा, आठों कर्मोंको दूर कर देनेवाले और घातिया कर्मोंको नष्ट करनेवालोंका नाम अरहन्त है, क्योंकि कर्म शत्रुके विनाशके प्रति दोनोंमें कोई भेद नहीं है । ( अर्थात् 'अरहन्त' शब्दका अर्थ चकि 'कर्म-शत्रुको नष्ट करनेवाला' है, अत एव जिन प्रकार चाण घातिया कर्मोंको नष्ट कर देनेवाले सयोगी और अयोगी निज 'अरहन्त' शब्दके वाच्य ह उसी प्रकार आठों कर्मोंको नष्ट कर देनेवाले सिद्ध भी 'अरहन्त' शब्दके वाच्य होसकते ह, क्योंकि, निरस्त्यर्थकी अपेक्षा दोनोंमें कोई भेद नहीं है ।) उन अरहन्तोंमें जो गुणानुरागरूप भक्ति होती है वही अरहन्तभक्ति कहलाती है । इस अरहन्तभक्तिसे तीर्थकर नामकम बधता है ।

शका—इसमें शेष कारणोंकी सम्भावना कैसे है ?

समाधान—इस शकाका उत्तर देने है कि अरहन्तके द्वारा उपदिष्ट अनुष्ठानके अनुकूल प्रवृत्ति करने या उक्त अनुष्ठानके स्पर्शको अरहन्तभक्ति कहते हैं । और यह दर्शनविशुद्धतादिकोंके विना सम्भव नहीं है, क्योंकि, ऐसा होनेमें विरोध है । अतएव यह तीर्थकर कर्मग्रन्थका ग्यारहवा कारण है ।

बहुश्रुतभक्तिसे तीर्थकर नामकम बधता है— जो चाण्ह अगोंक पारगामी है वे बहुश्रुत कहे जाते ह, उनके द्वारा उपदिष्ट आगमार्थके अनुकूल प्रवृत्ति करने या उक्त अनुष्ठानके स्पर्श करनेको बहुश्रुतभक्ति कहते हैं । उससे भी तीर्थकर नामकम बधता है, क्योंकि, यह भी दर्शनविशुद्धतादिक शेष कारणोंके विना सम्भव नहीं है । यह तीर्थकर नामकमग्रन्थका बारहवा कारण है ।

साहूण समाहिसधारणदाए— दसण-णाण चरित्तिसु सम्ममज्झाण समाही णाम । सम्म साहूण धारण सधारण । समाहीण मधारण ममाहिसधारण, तस्म भागो समाहिसधारणदा । ताए तित्थयरणामकम्म वज्झदि ति । केण पि कारणेण पदत्तिं समाहिं ददुण सम्मादिट्ठी पवयण वञ्छलो पवयणप्पहापओ णिययसणणो सील-वदादिचारज्जिओ अरहतोदिसु भत्तो सत्तो जदि धरेदि त समाहिसधारण । कुदो एदमुपलभदे ? स-सहपउजणादो । तेण वज्झदि ति बुत्त होदि । ण च एत्थ मेमकारणाणमभागो, तदत्थित्तस्म दरिसिदत्तादो । एवमेद णवम कारण ।

साहूण वेज्जापच्चजोगुत्तदाए— व्यापृते यत्तिकयेने तद्वैयापृत्यम् । जेण सम्मत्त-णाण अरहत उहुसुदभत्ति पयणपच्छल्लादिणा जीवो जुज्जइ वेज्जापच्चे सो वेज्जापच्चजोगो दसण विसुज्झदादि, तेण जुत्ता वेज्जापच्चजोगुत्तदा । ताए एवविहाए एक्काए वि तित्थयरणामकम्म वधइ । एत्थ सैसकारणाण जहामभेवेण अनब्भानो वत्तयो । एवमेद

साधुओंकी समाधिसधारणतासे तीर्थकर नामकर्म वधता है— दर्शन, ध्यान व चारित्र्यमें सम्यक् अवस्थानदा नाम समाधि है । सम्यक् प्रकारमें धारण या साधनका नाम सधारण है । समाधिना सधारण समाधिसधारण ओर उसके भावका नाम समाधि सधारणता है । उससे तीर्थकर नामकर्म वधता है । किसी भी कारणसे गिरती हुई समाधिको देखकर सम्यग्दृष्टि, प्रवचनवत्सल, प्रवचनप्रभाकर, विनयसम्पन्न, शील व्रता तित्थारजित और अरहतादिकोंमें भक्तिमान् होकर चूकि उसे धारण करता है इसीलिये यह समाधिसधारण है ।

शंका—यह कहासे जाना जाता है ?

समाधान—यह 'सधारण' पदमें किये गये 'स' शब्दके प्रयोगसे जाना जाता है ।

इस समाधिसधारणसे तीर्थकर नामकर्म वधता है, यह अभिप्राय है । इसमें शेष कारणोंका उभाव नहीं है, क्योंकि, उनका अस्तित्व कहा दिखना ही चुके हैं । इस प्रकार यह नौवा कारण है ।

साधुओंकी वैयापत्ययोगयुक्ततासे तीर्थकर नामकर्म वधता है— व्यापृत अर्थात् रोगादिसे 'यापृत' साधुके त्रिपयमें जो किया जाता है उसका नाम वैयापृत्य है । जिस सम्यक् व, ध्यान, अरहन्तभक्ति, उहुश्रुतभक्ति एवं प्रवचनवत्सलत्वादिसे जीव वैयापृत्यमें गता है वह वैयापृत्ययोग अर्थात् दर्शनविशुद्धतादि गुण हैं, उनसे सयुक्त होनेका नाम वैयापृत्ययोगयुक्तता है । इस प्रकारकी उन एक ही वैयापृत्ययोग युक्ततासे तीर्थकर नामकर्म वधता है । यहा शेष कारणोंका यथासम्भव अन्तर्भाव कहना

१ प्रथि 'सांगदादि' इति पाठ ।

२ आ-वाण्या 'पञ्जगादाण बन्नादि' इति पाठ ।

पयणणपहानणदाए— आगमदुस्स पयणमिदि सण्णा । तस्स पहावण णाम वण्णजणण तव्वुद्धिकरण च, तस्स भात्तो पयणणपहावणदा । तीए तित्थयरकम्म वज्झइ, उक्कदुपयणणपहानणस्स दसणविसुज्जदादीहि अत्रिणाभावादे । तेणेद पण्णरसम कारण ।

अभिक्षणमभिक्षण णाणोत्रजोगजुत्तदाए — अभिक्षणमभिक्षण णाम बहुवारमिदि भणिद होदि । णाणोत्रजोगो ति भावसुद दव्वसुद वापेक्खदे । तेषु मुहुम्महुजुत्तदाए तित्थयरणामकम्म उज्झइ, दसणविसुज्जदादीहि त्रिणा एदिस्से अणुनवत्तीदे । एदेहि सोलसेहि कारणेहि जीवा तित्थयरणामकम्म वधति । अथवा, मम्मदसणे सते सेसकारणाण मज्जे एगदुगादिसजोगेण वज्झदि<sup>१</sup> ति उत्तव ।

जस्स इणं तित्थयरणामगोदकम्मस्स उदएण सदेवासुरमाणुसस्स लोकस्स अब्बणिज्जा वंदणिज्जा णमंसणिज्जा णेदारा धम्म-तित्थयरा जिणा केवलिणो हवन्ति ॥ ४२ ॥

प्रवचनप्रभावनासे तीर्थंकर नामकर्म यथता हे— आगमायंका नाम प्रवचन हे, उसके वर्णजनन अर्थात् कीर्तिविस्तार या वृद्धि करनेको प्रवचनकी प्रभावना और उसके भावको प्रवचनप्रभावना कहते हैं । उससे तीर्थंकर कर्म वधता है, क्योंकि, उत्कृष्ट प्रवचनप्रभावनाका दर्शनत्रिशुद्धतादिकोंके साथ अविनाभाव है । इन्हींलिये यह पन्द्रहवा कारण है ।

अभीक्षण अभीक्षण क्षानोपयोगयुक्ततासे तीर्थंकर कर्म वधता हे— अभीक्षण अभीक्षणका अर्थ 'यद्गत वाग' है । क्षानोपयोगस भावश्रुत अथवा द्रव्यश्रुतकी अपेक्षा है । उन ( भाव व द्रव्य श्रुत ) में वाद वाद उद्युक्त रहनेसे तीर्थंकर नामकर्म वधता है, क्योंकि, दर्शनत्रिशुद्धतादिकोंके बिना यह अभीक्षण अभीक्षण क्षानोपयोगयुक्तता बन नहीं सकती ।

इन सोलह कारणासे जीव तीर्थंकर नामकर्मको पावते हैं । अथवा, सम्यग्दर्शनके होनेपर शेष कारणोंमेंसे एक दो यादि कारणोंके न्ययोगसे तीर्थंकर नामकर्म वधता है, ऐसा कहना चाहिये ।<sup>१</sup>

जिन जीवोंके तीर्थंकर नाम-गोत्रकर्मका उदय होता है वे उसके उदयसे देव, असुर और मनुष्य लोकके अर्चनीय, वदनीय, नमस्करणीय, नेता, धर्म-तीर्थके कर्ता जिन व केवली होते हैं ॥ ४२ ॥

— — —

१ तापेत्तानि पोत्तसत्ताणानि मग्गमायमानानि व्यस्तानि समस्तानि च तीर्थंकरनामप्रसंगेत्तरकारणानि प्रसेत्तानि । स गि ६, २४ त रा ६, २४, २३ तीर्थंकरनामस्मणि पाठशत कारणाययुयनिशम् । यस्तानि समस्तानि च भवति सद्गायमानानि ॥ इ पु ३४, १४९ एत गुणा समस्ता व्यस्ता वा तीर्थंकरान्म आधवा भवतीति । स सू भाय ६, २३

पयणभतीए— मिद्धतां चारहगाणि पयण', प्रकृष्ट प्रकृष्टस्य वचन प्रयचनमिति व्युत्पत्ते । तस्मिन् भती नत्थ पदुप्पादिदत्थाणुड्डाण । ण च अण्णहा तत्थ भती ममभइ, असपुण्णे सपुण्णवहारविरोहादो । तीए तित्थयरणामरुम्म उज्जइ । एत्थ मेमकारणणमनम्भाओ वतन्तो । एवमेदं तेरसम कारण ।

पयणचन्द्रदाए— पयण मिद्धतो चारहगाड, तथ भजा देम महव्वरणो अमभइ सम्माइट्ठिणो च पयणा । कुणे एत्थ जाकारस्म अस्मण ? 'एण छच्च समाणा' ति' सुत्तेण आत्विबुद्धीण कयअकारत्तादो । तेषु अणुगगो जाकारा ममेदभाओ पयणचन्द्रदा णाम । तीए तित्थयररुम्म उज्जइ । कुदो ? पचमहव्वदादिआगमथनिमयस्सुनरुड्डाणुरागसम दमणविसुज्जत्तिहि अविणाभावादो । तेषो चोदसम कारण ।

प्रयचनभक्तिसे तीर्थकर नामकर्म यधता है— मिद्धान्त या यारह अर्गोका नाम प्रयचन है, क्योंकि, 'प्रकृष्ट वचन प्रयचन, या प्रकृष्ट ( सर्वत्र ) के वचन प्रयचन है 'पेसी व्युत्पत्ति है । उस प्रयचनमें कहे हुए अध्या अनुष्ठान करना, यह प्रयचनमें 'भक्ति' कही जाती है । इसके बिना अन्य प्रकारसे प्रयचनमें भक्ति सम्भव नहीं है, क्योंकि, असम्पूर्णमें सम्पूर्णने व्यग्रहारका विरोध है । इस प्रयचनभक्तिमें तीर्थकर नामकर्म यधता है । इसमें शेष कारणोंका जन्तर्भाव कहना चाहिये । इस प्रकार यह तेरहवा कारण है ।

प्रयचनवत्सलताम तीर्थकर नामकर्म यधता है— मिद्धान्त या यारह अर्गोका नाम प्रयचन है, इसमें हंतिराजे देशवती, महावती और अस्तयतन्मध्यगट्टि प्रयचन कहे जाते हैं ।

शुका—इसमें अकारण धरण क्यों नहीं होता, अर्थात् 'प्रयचनमें होनेवाले' इस विग्रहके अनुसार 'प्रयचन' होना चाहिये, न कि 'प्रयचन' ?

समाधान—'अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ये छह स्वर और ए, ओ, ये दो सन्ध्यक्षर, इस प्रकार ये आठों म्बर अविरोध भावमें एक दूसरेके स्थानमें आदेशको प्राप्त होते हैं । इस सूत्रमें आदि बुद्धिरूप आ के स्थानपर अ का आदेश हो गया है ।

उन प्रयचनों अर्थात् दर्शनती, महावती और अस्तयतसम्भ्यगट्टियोंमें जो अनुराग, आकाशा अथवा 'ममेद' बुद्धि होती है उसका नाम प्रयचनवत्सलता है । उससे तीर्थकर कर्म यधता है । इसका कारण यह है कि पाच महाव्यतादिरूप आगमार्थविषयक उत्कृष्ट अनुरागका दर्शनविशुद्धतादिकोंके साथ अविनाभाव है, अर्थात् उक्त प्रकार प्रयचनवत्सलता दर्शनविशुद्धतादि शेष गुणोंके बिना नहीं बन सकती । इसीलिये यह चौदहवा कारण है ।

१ प्रयचन इत्येवम् तद्विषयान्तरयन्ता सभा वा प्रयचनम् । प्रवृ पृ ८२

२ एण छच्च समाणा दोणिण अ सञ्जक्खण सग उड्ड । अण्णोणस्सविरोहा उन्ति सन्न समाएत्त ।

आदेसेण गदियाणुवादेण गिरयगदीए णेरइएसु पंचणाणावरण-  
छदंसणावरण-सादासाद-वारसकसाय-पुरिसवेद-हस्स-रदि-अरदि-सोग-  
मय-दुसुंछा-मणुसगदि-पच्चिंदियजादि-ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीर-  
समचउरससंठाण-ओरालियसरीरअंगोवंग वज्जरिसहसघडण-वण्ण गंध-  
रस-फास-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वि-अगुरुलहुग-उवघाद-परघाद-  
उस्सास-पसत्थविहायगदि-त्तस-वादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-थिराथिर-सुहा-  
सुह-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज जसकित्ति-अजसकित्ति-णिमिणुच्चागोद-  
पचंतराइयाणं को वंधो को अबंधो ? ॥ ४३ ॥

एद देसामामियपुञ्जासुत्त, तेणेदेण मूडदमन्त्रपुच्छाओ एत्थ वत्तन्नाओ । एव  
पुच्छिदमिस्मणिन्ठयज्जणहमुत्तरसुत्त भणदि—

मिञ्छाइट्ठिप्पहुडि जाव असंजदसम्मादिट्ठी वंधा । एदे वंधा,  
अबंधा णत्थि ॥ ४४ ॥

एद देसामामियसुत्त, सामित्तद्धानाण चेत्त परूवणादो । तेणेदेण सूडदत्थाण परूवण

आदेशकीं अपेक्षा गतिमार्गणानुमार नरकगतिमे नारकियेमें पाच ज्ञानावरण, छद  
दर्शनावरण, सातावेदनीय, अमातावेदनीय, नारह कपाय, पुरुषवेद, हास्य, रति, अरति, शोक,  
मय, जुगुप्सा, मनुष्यगति, पचेन्द्रियजाति, औदारिक तैजम व कार्मण शरीर, समचतुरस्रसस्यान,  
औदारिकशरीरागोपाग, वज्रर्षमसहनन, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, मनुष्यगतिप्रायोगयानुपूर्वी,  
अगुरुअलसुक, उपघात, परघात, उच्छ्वास, प्रशस्तनिहायोगति, त्रस, वादर, पर्याप्त, प्रत्येक-  
शरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुभग, सुस्वर, आदिय, यशकीर्ति, अयशकीर्ति, निर्माण,  
उच्चगोत्र और पाच अन्तराय, इन कर्मोका कौन बन्धक और कौन अनन्धक है ? ॥ ४३ ॥

यह पृच्छासूत्र देशामर्शक है, इसी कारण इसके द्वारा सूचित सब पृच्छाओंको  
यहाँ कहना चाहिये । इस प्रकार पृच्छायुक्त शिष्यके निश्चयजननार्थे उत्तर सूत्र कहते हैं—

मिथ्यादृष्टिको आदि लेकर असयतमम्यगृष्टि तक बन्धक हैं । ये बन्धक हैं, अयन्धक  
नहीं हैं ॥ ४४ ॥

यह देशामर्शक सूत्र है, क्योंकि, यह बन्धस्वामित्व और बन्धाभ्यानका ही निरूपण  
करता है । इसी कारण इसके द्वारा सूचित अर्थाधी प्ररूपणा करते हैं— पाच ज्ञानावरणीय,



तिथ्यगणामगोद्रुम्मस्मेति एव 'उदयो तेनेति' दोष्ण पदानम-ज्ञाहोरो काययो,  
 अण्णहा अत्याणुत्भायो । जस्म जेमि जीवाण टण एदस्म तिथ्यरणामगोद्रुम्मस्म उदयो  
 तेण उदण्ण मदेरासुग-माणुमस्म लोगस्म अचचणिज्जा ति मयधो काययो । चरु थलि-पुष्प-  
 फरु गव धूव-दीपादीहि मगभत्तिगामो अ-चणा णाम । एत्थि मह अउदवय-कप्पफस्स  
 महामह सन्वदोभदादिमहिमानिहाण पृत्ता णाम । तुट्टु णिड्डियिड्डकम्मो केवलणाणेण दिट्टसन्वदो  
 धम्ममुहुमिड्डगार्द्धो ए पुट्टाभयदाणे। मिट्टारिवालओ दुट्टणिग्गहस्सो देव ति पसमा वदणा  
 णाम । परहि मुट्टीहि तिणिंदचलणेसु णियदण णमयण । धम्मो णाम मम्मदमण-आण-  
 चरित्ताणि । एदेहि ससार सायर तरति ति एत्थि तिथ' । एदस्म वम्म-नित्यस्म कत्ताग जिणा  
 केवल्लिणो णेदारा च भवति ।

उपमाणाणुगमा समना ।

सूत्रों 'तीर्थकर नाम गोधनमका' यहा 'उदय' ओर 'उत्तसे' इन दो पदोंका  
 अन्वयार्थ करना चाहिये, अथवा अर्थही उपस्थित नहीं होती। निम्नके अर्थान् जिन  
 जीवोंके, यह जगत् इस तीर्थकर नाम गोधनमका उदय होता है वे उसके उदयसे देव,  
 अमुर एव मनुष्योंमें परिपूर्ण लोकके सर्वनीय होते हैं, ऐसा समझ करना चाहिये। चरु,  
 वलि, पुष्प, फल, गव, धूव ओर दीप आदिकोंसे अपनी भक्ति प्रकटित करनेका नाम  
 जगना है। इनके साथ पुण्ड्रपत्र, कल्पवृक्ष, महामह और सर्वतोभद्र, इत्यादि महिमा  
 विधानसे पूजा करते हैं। आप अष्ट कर्मोंके नष्ट करनेवाले, केवलज्ञानमें समस्त पदार्थोंको  
 देखनेवाले, धर्ममुख शिष्टोंकी गोष्ठिमें अभयदान देनेवाले, शिष्टपरिपालक और दुष्टनिग्रह  
 कारक देव हैं, ऐसी प्रशंसा करनेका नाम उदना है। पाच मुष्टियां अर्थात् अर्गोंमें जिनेद्र  
 देवसे चरणोंमें गिरनेको नमस्कार कहते हैं। धमका अर्थ सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और  
 सम्यक्चारित्र्य है। चूँकि इनसे समस्त सागरको तरत है इन्हींको इन्हें तीर्थ कहा  
 जाता है। इस वम तीर्थके कर्ता जिन, केवली और नेता होते हैं।

इस प्रकार -गोत्रानुगम समाप्त हुआ ।

१ मरुटि ज्ञान-वृत्तानि धम धम नरा विदु । १ आ ३

२ न भाग दमण चरित्तमात्रा तणियवत्त्वमाशाओ । समानत्रा य तारु तण त भावओ तिथं ॥  
 विद्या १०२८

असजदसम्मादिडीसु सोदय-परोदएहि वज्जति, अपज्जत्तकाले ष्ठेमिमुदयाभाजादो । णवरि पत्तेयसरीरस्स उवघादभगो, विग्गहगदीए चेव उदयाभाजादो । सेसेसु दोसु सोदएणेव एदासिं वधो, तेमिं तत्थ अपज्जत्तकालाभाजादो । पुरिसवेद मणुसगइ ओरालियमरीर-समचउरससठाण-ओरालियसरीरअगोवग वज्जरिमहमवडण मणुसगइपाओग्गाणुपुच्चि-पमत्थविहायगइ सुभग-सुस्वर-आदेज्ज-जमकिति उच्चोगोदाण चदुसु गुणट्ठाणेषु परोदएणेव नधो, गिरएनु एदामिमुदय-निरोहादो ।

पचणाणारणीय-उद्मणावरणीय-वाग्मकपाय-भय दुगुछा-पच्चिदियजादि-ओरालिय-तेजा-कम्मइयमरीर ओरालियसरीरअगोवग-वण्ण-गत्र रस फास अगुरुगलहुग-उवघाद-परघाद - उस्मास-त्तम-यादर-पज्जत्त पत्तेयमरीर-णिमिण पचतराडयाण गिरतरो वधो, गिर्यगइमिह गिरतर-वधित्तादो । सादासाद-हस्म रदि-अरदि सोग-धिराधिर-सुभासुभ-जमकिति अजसकित्तीण सातरो वधो, सत्रगुणट्ठाणेषु पडिवक्खपयडीए वधुवलभादो । पुरिमवेद मणुसगइ समचउरससठाण वज्जरिसहसवटण-पमत्थविहायगइ-सुभग सुम्मर आदेज्ज-मणुसगइपाओग्गाणुपुच्चि-उच्चोगोदाण मिञ्जादिदि-मासणमम्मादिडीसु सातरो नधो, पडिवक्खपयडिवधुवलभादो । णवरि मणुसगइ-

प्रकृतिया मिथ्यादृष्टि और असयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें स्वोदय परोदयसे वधती है, क्योंकि, अपर्याप्तकालमें इनका उदय नहीं रहता। विशेष इतना है कि प्रत्येकशरीरका वन्ध उपघातके समान है, क्योंकि, केवल विप्रवृत्तिमें ही उसका उदय नहीं रहता। शेष दो गुणस्थानोंमें स्वोदयमें ही इनका वन्ध होता है, क्योंकि, शेष दोनों गुणस्थान नारकियोंके अपर्याप्त-कालमें होते नहीं हैं। पुण्यवेद, मनुष्यगति, औदारिकरुजगीर, समचतुरस्रसस्थान, औदारिकशरीरागोपाग, वज्रपमसहनन, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, प्रशस्तविहायोगति, सुभग, सुस्वर, आदेय, यशकीर्ति और उच्चगोत्र प्रकृतियोंका चारों गुणस्थानोंमें परोदयसे ही वन्ध होता है, क्योंकि, नारकियोंमें इनके उदयका विरोध है।

पाच ज्ञानावरणीय, उद्द दर्शनावरणीय, वाग्म रूपाय, भय, जुगुप्सा, पचेन्द्रिय-जाति, औदारिक तैजस व चार्मण शरीर, औदारिकशरीरागोपाग, चर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, उपघात, परघात, उच्छ्वास, भ्रम, यादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, निर्माण और पाच अन्तराय, इनका निरन्तर वन्ध है, क्योंकि, ये प्रकृतिया नरकगतिमें निरन्तर वधती हैं। साता व असाता चेदनीय, हान्य, रति, अरति, शोक, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, यशकीर्ति और यशशक्ति प्रकृतियोंका सान्तर वन्ध है, क्योंकि, सब गुणस्थानोंमें इनकी प्रतिपक्ष प्रकृतियोंका वन्ध पाया जाता है। पुरुषवेद, मनुष्यगति, समचतुरस्रसस्थान, वज्रपमसहनन, प्रशस्तविहायोगति, सुभग, सुस्वर, आदेय, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी और उच्चगोत्र, इनका मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें सान्तर वन्ध है, क्योंकि, यहा इनकी प्रतिपक्ष प्रकृतियोंका वन्ध पाया जाता है। विशेषता इतनी है कि तीर्थकर

कस्तामो—पचणाणावरणीय-ऊदसणावरणीय सादाभाद चारमरुमाय हस्स-रदि-अरदि सोग भय  
 दुगुळा-पचिंदियजादि तेजा कम्मइयमरीग-वण्ण-गध-रम फास-अगुरुगलहुअ-उपघाद-परघाद-  
 उस्सास-तस-वादर-पन्नत्त पत्तयसरीर धिराधिर-सुहासुह-अजमकित्ति-णिमिण पचतराइयाण पदेमि  
 भेत्य बधोदयवोच्छेदो णत्थि, निरोहाभावादो । पुरिसोद-मणुमगइ-ओरालियमरीर-ममचउस  
 सठाण-ओरालियसरीरअगोवग-वज्जरिसहसचटण-मणुमगइपाओरगाणुपुत्ति-पमत्थिनिहायगइ-  
 सुभग-सुम्भ-आदेज्ज नमकित्ति उच्चगोद्राणमुदओ एत्थ णत्थि चैव, निरोहादो । नम्हा एय  
 पदासु पयईसु बधोदयवोच्छेदाण पुत्रापुच्चविचारो णत्थि ।

पचणाणावरणीय चदुदमणावरणीय पचिंदियजादि तेजा कम्मइय वण्ण गध रम-फास-  
 अगुरुअलहुअ-तस नादर पन्नत्त धिराधिर सुभासुभ अजसकित्ति णिमिग पचतराइयाण सोदओ  
 भयो । णिहा पयला सादाभाद-नारसरुमाय हस्स-रदि अरदि-सोग भय दुगुळाओ सोदय परो  
 दएहि वज्जति, सवगुगहणेसु परावत्तणोदयादो । उपघाद मिच्छाडट्टि असजदसम्मादिद्वीसु  
 सोदय-परोदएहि वज्जइ, विग्गहगदीए उदयाभावादो । सामणमम्मादिद्वि सम्मामिच्छादिद्वीसु  
 सोदएण वज्जइ, तेमि नत्थ उपत्तोए अभावादो । परघादुस्सास-पत्तेयसरीराणि मिच्छाडट्टि

छह दर्शनावरणीय, सातावेदनीय, जसातावेदनीय, चारह कपाय हास्य, रति, अरति,  
 शोक, भय, जुगुप्सा, पचिंदियजाति, तेजस व कामेण शरीर, उर्ण, मन्ध, रस, स्पर्श,  
 अगुरुलघु उपघात, परघात, उ-वास, वस, वादर पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, स्थिर, अस्थिर,  
 शुभ, अशुभ, अयशकीर्ति, निर्माण और पाच अनगाय, इनके बन्ध और उदयका यहा  
 ग्युच्छेद नहीं होता, क्योंकि, इसमें कोई विरोध नहीं है अथवा इनका बन्धोदय-गुच्छेद  
 यथासम्भव उन उपरिगुणस्थानोंमें हाता है जो नररुगतिमें सम्भव नहीं है । पुरुषवेद,  
 मनुष्यगति, आदारिकशरीर, समचतुरस्रस्थान, औदारिकशरीरारोगोपाग, वज्रभसहनन,  
 मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वों, प्रशस्तविहायोगति, सुभग, सुम्भ, आदेय, यशकीर्ति और  
 उच्चगोत्र, इन कर्मोंका उदय यहा है ही नहीं, क्योंकि, नाराधियोंमें इनके उदयका विरोध  
 है । इसलिये यहा न प्रकृतियोंमें उ-व्युच्छेद और उदय-गुच्छेदकी पूर्वापरताका विचार  
 नहीं है ।

पाच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, पचेन्द्रियजाति, तेजस उ कामेण शरीर,  
 उर्ण, मन्ध, रस, स्पर्श अगुरुलघु, वस, वादर, पर्याप्त, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ,  
 अयशकीर्ति, निर्माण और पाच अतराय, इनका स्वोदय बन्ध है । निद्रा, प्रचला, साता  
 य भ्रमाता वेदनीय, चारह कपाय, हास्य, रति, अरति, शोक, भय और जुगुप्सा, ये प्रकृतिया  
 स्वोदय-परोदयसे बधती है, क्योंकि, इनका सब गुणस्थानोंमें परिवर्तित उदय रहना है ।  
 उपघात प्रकृति मिच्छाट्टि और असयनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें स्वोदय-परोदयसे बधती  
 है, क्योंकि, विप्रहगतिमें इसका उदय नहीं रहता । सामादनसम्यग्दृष्टि और सम्यग्मिच्छा  
 दृष्टि गुणस्थानोंमें यहा प्रकृति स्वोदयसे बधती है, क्योंकि, सासादनसम्यग्दृष्टि और  
 सम्यग्मिच्छादृष्टियोंकी नाराधियोंमें उत्पत्ति नहीं है । परघात, उच्छ्वास और प्रत्येकशरीर

तदे एदामि पुत्र पच्छा ना वधोदयवोच्छेदनिचारो णत्थि, सतासताण मण्णिकासविरोहादो । अप्पमत्थविहायगइ दुमग-दुस्सर-अणादेज्ज-णीचागोदाण पुत्र वधो वोच्छिज्जदि पच्छा उदओ, सासणम्मि णट्टनयाण अमज्जदमम्मादिट्ठिम्हि उदयवोच्छेदुवलमादो ।

अप्पमत्थविहायगइ-दुस्सर-अणताणुनधिचउक्काण सोदय-परोदएण वधो, अद्दुवोदय-त्तादो । णत्थि अप्पमत्थविहायगदि-दुस्सराण सासणमम्मादिट्ठिम्हि सोदओ चैव अत्थि । तिरिक्खाउ तिरिक्खगइ-चउसठाण चउमचडण-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुत्थि-उज्जोअ-थीणगिद्धि-तियाण परोदएणेव वधो, एत्थ एदेसिमुदयामात्तादो । दुमग अणादेज्ज णीचागोदाण सोदएणेव वधो, णेरइएसु एदेमि पडिज्जखाण उदयामात्तादो ।

थीणगिद्धितिय-अणताणुनधिचउक्काण गिरतरो वधो । इदियवेद-चउमठाण-चउसघउण-उज्जोअ-अप्पमत्थविहायगइ दुमग-दुस्सर अणादेजाण सातरो वधो, पडिवन्खपयडिज्जधमभवादो । तिरिक्खाउअस्स गिरतरो वधो, पडिज्जन्खपयडिज्जधेण विणा नधविरामुवलमादो । तिरिक्खगइ-पाओग्गाणुपुत्थि तिरिक्खगइ णीचागोदाण मात्त गिरतरो वधो, छसु पुढीसु सात्ते होदूण सत्तमपुढिन्निम्हि गिरतरेणेव वधदमणादो । जदि पडिवन्खपयडिज्जधमस्मिदूण धक्कमाणनधा

है । इसीप्रिये इन प्रकृतियोंके पूर्वमें अथवा पश्चात् ग्रन्थोदय-ग्रन्थोदय-विचार नहीं है, क्योंकि, सत और असत् वस्तुके सन्निकर्षना विरोध है । अप्रशस्तविहायोगति, दुर्भंग, दुस्वर, अनादेय और नीचगोत्रका पूर्वमें ग्रन्थ व्युत्पन्न होता है, पश्चात् उदय, क्योंकि, सासादनगुणस्थानमें ग्रन्थके नष्ट होजानेपर असयतमम्यगदृष्टि गुणस्थानमें इनका उदय बुच्छेद पाया जाता है ।

अप्रशस्तविहायोगति, दुस्वर और अनन्तानुबन्धिचतुष्का स्वोदय परोदयसे ग्रन्थ होता है, क्योंकि, ये अष्टत्रययी प्रकृतियाँ हैं । विशेष इतना है कि अप्रशस्तविहायोगति और दुस्वरका सासादनमम्यगदृष्टि गुणस्थानमें स्वोदय ही ग्रन्थ होता है । तिर्यगायु, तिर्यगति, चार सस्थान, चार सहनन, तिर्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, उद्योत और स्थानगृह्णित्य, इनका परोदयमें ही ग्रन्थ होता है, क्योंकि, यहा इनके उदयका अभाव है । दुर्भंग, अनादेय और नीचगोत्रका स्वोदयसे ही ग्रन्थ होता है, क्योंकि, नारकियोंमें इनकी प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके उदयका अभाव है ।

स्थानगृह्णित्य आदिक तीन और अनन्तानुबन्धिचतुष्का निरन्तर ग्रन्थ होता है । छविद, चार सस्थान, चार सहनन, उद्योत, अप्रशस्तविहायोगति, दुर्भंग, दुस्वर और अनादेय, इनका सान्तर ग्रन्थ होता है, क्योंकि, इनकी प्रतिपक्ष प्रकृतियोंका ग्रन्थ सम्भव है । तिर्यगायुका निरन्तर ग्रन्थ होता है, क्योंकि, प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके ग्रन्थके बिना इसके ग्रन्थकी निश्चान्ति पायी जाती है । तिर्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, तिर्यगति और नीचगोत्रका सान्तर निरन्तर ग्रन्थ होता है, क्योंकि, छह पृथिवियोंमें इनका सान्तर ग्रन्थ होकर सातवीं पृथिवीमें निरन्तर रूपमें ही ग्रन्थ देता जाता है ।

अद्भुतो च, अद्भुतवित्तो ।

निद्राणिहा पयलापयला धीणगिद्धि-अणताणुबंधिकोध-माण-  
माया-लोभ इत्येवेद तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइ-चउसठाण-चउसंघडण-  
तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुब्बि उज्जोव अप्पसत्थविहायगइ दुभग दुस्सर-  
अणादेज्ज णीचागोदाण को बंधो को अवंधो ? ॥ ४५ ॥

सुगम ।

मिच्छाद्विती सासणसम्माद्विती बंधा । एदे बंधा, अवसेसा अवंधा  
॥ ४६ ॥

सत्त्वाणि त्रयमामित्तसुत्ताणि देसामासियाणि ति दड्ढव्याणि । तेणेदेण सूइदत्थपरुवण  
कस्सामो । त जहा— अणताणुबंधिकउक्कस्म बंधोदया सम वोच्छिज्जति, सासणचरिमसमयम्मि  
एदस्स सम बंधोदयरोच्छेदुवलभादो । धीणगिद्धिनिय इत्येवेद निग्गिक्खाउ-तिरिक्खगइ चउ-  
सठाण चउसंघडण तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुब्बि-उज्जोवाण णिरयगदीए उदओ णत्थि, विरोहादो ।

प्रकृतियोंका बन्ध सादि अधुय ही है, क्योंकि, ये प्रकृतिया अधुयबन्धी हैं ।

निद्रा निद्रा, प्रचला प्रचला, स्थानगृद्धि, अनन्तानुबन्धी क्रोध, मान, माया, लोभ,  
स्त्रीवेद, तिर्यगायु, तियग्गति, चार मस्थान, चार सहनन, तियग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी, उद्योत,  
अप्रशस्तविहायोगति, दुभग, दुस्वर, अनादेय और नीचगोत्र इन प्रकृतियोंका कौन बन्धक  
और कौन अवन्धक है ? ॥ ४५ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

मिच्छाद्विती और सामादनमम्यद्विती बन्धक हैं । ये बन्धक हैं, शेष नारकी अवन्धक  
हैं ॥ ४६ ॥

यत्तस्वामित्तरे मय सूत्र देशामशक ह, येसा समझना चाहिये । इसी कारण  
इस सूत्रमें मूर्ति अर्थकी प्ररूपणा करते ह । पर इस प्रकार है— अनन्तानुबन्धि  
चतुष्कका बन्ध और उदय दोनों माथमें व्युत्थित होने हैं, क्योंकि, सामादनगुणस्थानके  
चरम समयमें अनन्तानुबन्धिचतुष्कका साथ ही बन्धोदय बुच्छेद पाया जाता है । स्थान  
गृद्धि भाक्तिक मान, स्त्रीवेद, तिर्यगायु, तियग्गति, चार मस्थान, चार सहनन, तियग्गति  
प्रायोग्यानुपूर्वी और उद्योत, इनका नरकवर्तमें उदय नहीं है, क्योंकि, देसा होनेमें विरोध

तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइ-तिरिक्खगइपाओग्माणुपुन्नि-उज्जेवाणि मिच्छाइट्ठि-सासण-सम्मादिट्ठिणो तिरिक्खगइमज्जुत्तं वधति । सेसाओ दुट्ठाणपयडीओ दुगइसज्जुत्तं वधति । सच्चासिं पयडीण णेरइया सामी । नधद्धाण वधविणट्ठट्ठाण च सुगम । धीणगिद्धितिय-अणताणुवधि-चउक्काण मिच्छाइट्ठिम्हि चउत्तिहो वधो । सासणे सादि-अद्दुवो । सेसाण पयडीण वधो सादि-अद्दुवो चैव ।

मिच्छत्त-णवुंसयवेद-हुंडसंठाण-असंपत्तसेवट्टसरीरसंघडणणामाणं  
को वंधो को अवंधो ? ॥ ४७ ॥

सुगम ।

मिच्छाइट्ठी वंधा । एदे वंधा, अवसेसा अवंधा ॥ ४८ ॥

एदेण सुइदथाण परूणणा कीरदे— मिच्छत्तस्स वधोदया सम वोच्छिज्जति, मिच्छाइट्ठिचरिमसमए वधोदयवोच्छेददसणादो । णवुंसयवेद हुंडसठाण असंपत्तसेवट्टसरीरसंघडण-णामाण पुच्च वधो वोच्छिज्जदि पच्छा उदओ, मिच्छाइट्ठिचरिमसमए णट्टनधाणमेदासिं असंजदसम्मादिट्ठिम्हि उदयवोच्छेदुवलभादो । णत्ररि अमंपत्तसेनट्टमरीरसंघडणस्स पुच्चावर-

तिर्यंगायु, तिर्यग्गति, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी और उद्योत प्रकृतियोंको मिथ्यादृष्टि एव सासादनमन्यग्दृष्टि तिर्यग्गतिसे संयुक्त वाधते है । शेष छिन्यान प्रकृतियोंको दो गतियोंमें संयुक्त वाधते है । सब प्रकृतियोंके नारकी स्वामी ह । वन्धाध्यान और वन्ध विनष्टस्थान सुगम हैं । स्थानगृद्धित्रय और अनन्तानुगन्धिचतुष्कका मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें चारों प्रकारका रन्ध होता है । सासादनमें ग्वादि और अधुच रन्ध होता है । शेष प्रकृतियोंका वन्ध सादि २ अधुच ही होता है ।

मिथ्यात्व, नपुसकवेद, हुण्डसस्थान और असंप्राप्तमृपट्टिकाशरीरसहनन नामकर्मका कौन वन्धक और कौन अनन्धक है ? ॥ ४७ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

मिथ्यादृष्टि वन्धक है । ये वन्धक हैं, शेष नारकी जीव अवन्धक हैं ॥ ४८ ॥

इस सूत्रसे सूचित अर्थोंकी प्ररूपणा करते हैं — मिथ्यात्वप्रकृतिका वन्ध और उदय दोनों एक साथ द्युच्छिन्न होते हैं, क्योंकि, मिथ्यादृष्टि गुणस्थानके चरम समयमें इसके वन्ध और उदयका व्युच्छेद देखा जाता है । नपुसकवेद, हुण्डसस्थान और असंप्राप्तमृपाटिकाशरीरसहनन नामकर्मोंका पूर्वमें वन्ध द्युच्छिन्न होता है, परन्तु उदय, क्योंकि, मिथ्यादृष्टि गुणस्थानके चरम समयमें वन्धके नष्ट हो जानेपर असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें इनका उदयव्युच्छेद पाया जाता है । विशेष इतना है कि असंप्राप्त-

सातरवधपयडी बुच्चटि तो उज्जोपस्म पडिक्खधयपयडीए अणुज्जोवसरूवाए अभावादो उज्जोपेण गित्तरवधिणा होदन्वमय यधनिणामा अन्धि ति जदि सातरत्त बुच्चदि तो नित्य यराहारदुगाउजाण पि सातरत्त पमज्जदि ति ? ग्थ परिहारो बुच्चदे— ज बुत्त पडिक्ख-पयडिन्धमस्सिदूण थक्कमाणयवा मानरयधि ति त सातरवधीसु पडिक्खत्तपयडिक्खविणामाव दङ्गण बुत्त । परमयदो पुण एगममय यधिदूण निदियममए जिस्से यधविरामो दिस्सदि सा सातरवधपयडी । जिस्से यधकालो जहण्णो वि अनोमुहुत्तमेत्तो सा गित्तरवधपयडि ति धेतव ।

पञ्चयपरूवणे कीरमाणे चउठाणियपयडिभगो । णवरि तिरिक्खाउअस्म मिच्छाइदिदि एगुणयचाम पच्चया, पेउव्वियमिस्स-कम्मइयपच्चयाणमभावादो ।

शुक्रा—यदि प्रतिपक्ष प्रकृतिके बन्धका आश्रय करके बन्धविधास्तिको प्राप्त होनेवाली प्रकृति सातरवध प्रकृति कही जाती है तो उद्योतकी प्रतिपक्षभूत अनुद्योत स्वरूप प्रकृतिका अभाव होनेसे उद्योतको निरन्तररधी प्रकृति होना चाहिये । अथवा बन्धका विनाश है, इस कारणसे यदि सान्तरना कही जाती है तो फिर तीर्थकर, आहारत्रिक और वायु कर्मोंक भी सातरताका प्रसंग आता है ?

समाधान—यहा उपर्युक्त शक्यता परिहार कहते हैं — प्रतिपक्ष प्रकृतिके बन्धका आश्रय करके बन्धविधास्तिको प्राप्त होनेवाली प्रकृति सान्तररन्धी है, इस प्रकार जो कहा है यह सातररधी प्रकृतियामें प्रतिपक्ष प्रकृतिके बन्धके अविनाशको देखकर कहा है । वास्तवमें तो एक समय यधर द्वितीय समयमें जिस प्रकृतिकी बन्धविधास्ति देखी जाती है वह सातरवध प्रकृति है । जिसका बन्धकाल अघन्य भी अन्तमुहूर्तमात्र है वह निरन्तरवध प्रकृति है, ऐसा ग्रहण करना चाहिये ।

प्रत्ययप्ररूपणा करते समय चतुस्थानिक ( चार गुणस्थानोंमें यधनेवाली ) प्रकृतियोंके समान ही प्रत्ययप्ररूपणा करना चाहिये । विशेष इतना है कि तिर्यगायुके मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें यहा उनचान् प्रत्यय हैं, क्योंकि, वैश्विकमिध्र और कर्मण प्रत्ययोंका अभाव है ।

१ प्रत्यु 'काला' इति पाठ ।

२ यानां प्रकृतीना णयन समग्रानं बध, उत्पत्त समयवादाय यावदतर्ह्युर्न न परत, ता सातरवधा अन्तर्मन्तय पि मानतो विउदलक्षणानरपन्ति नभो यानो ता सातरा इति श्रुत्वत् । अन्तमुहूर्तोपरि निश्चिद्यमानकभृद्विजानिमस सातरवधा इति फलितार्थे । ××× जधयेनापि या अन्तमुहूर्तं यधयेस्तर्था नयन्ते ता निरन्तरवधा निगतमत्तमन्तमुहूर्तमध्ये ध्यवउदरक्षण यस्य ताशो नभो यानामिति श्रुत्वत्, अतमुहूर्तमयापिचिन्वन्नवृत्तेजानिमस इति यावत् । क प्र पृ १४-१५

मिच्छाइट्ठी सासणसम्माइट्ठी असंजदसम्माइट्ठी वंधा । एदे वंधा, अवसेसा अवंधा ॥ ५० ॥

एदेण सूइदत्थस्स परूवण कस्सामो—एत्थ वधोदयाण पुव्वावरवोच्छेदविचारो णत्थि, वध मोत्तूण उदयाभावादो । परोदण वधति, गिरयगदीए मणुस्ताउअस्स उदयविरोहादो । गिरतर वधति, एगसमएण वधुवरमाभावादो । मिच्छाइट्ठिस्स एगूणवणपच्चया, वेउ-  
च्चियमिस्स-कम्मइयपच्चयाणमभावादो । मामणस्स चोहाल असजदसम्मादिट्ठिस्स चालीस पच्चया । सेस सुगम । मणुमगइसजुत्त वधति । गेरइया मामी । वधद्धाण वधविणइट्ठाण च सुगम । सादि-अद्धवो वधो, अद्धववधित्तादो ।

तित्थयरणामकम्मस्स को वंधो को अवंधो ? ॥ ५१ ॥

सुगम ।

असंजदसम्मादिट्ठी वंधा । एदे वधा, अवसेसा अवंधा ॥ ५२ ॥

तित्थयरवधस्स उदयादो पुव्व पच्छा वोच्छेदो होदि त्ति सणिकासो णत्थि, तित्थयर-

मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि और असयतसम्यग्दृष्टि वन्धक हैं । ये वन्धक हैं, शेष नारकी जीव अवन्धक हैं ॥ ५० ॥

इस सूत्रसे सूचित अर्थकी प्ररूपणा करते हैं — यहा वन्ध और उदयके पूर्व या पश्चात् व्युच्छेद होनेका विचार नहीं है, क्योंकि, वन्धको छोडकर नारकीयोंमें इसके उदय नहीं रहता है । नारकी जीव इसे परोदयसे याधते हैं, क्योंकि, नरकगतिमें मनुष्यायुके उदयका विरोध है । निरन्तर याधते हैं, क्योंकि, एक समयमें इसके वन्धका विश्राम नहीं होता । मिथ्यादृष्टिके उनचास प्रत्यय होते हैं, क्योंकि, वैक्रियिकमिश्र और कार्मण प्रत्ययोंका यहा अभाव है । सासादनके चवालीस और असयतसम्यग्दृष्टिके चालीस प्रत्यय होते हैं । शेष प्रत्ययप्ररूपणा सुगम है । मनुष्यायुको नारकी जीव मनुष्यगतिसे सयुक्त याधते हैं । नारकी जीव स्वामी ह । वन्धाधान और वन्धवित्तस्थान सुगम हैं । इसका वन्ध सादि व अघ्रव होता है, क्योंकि, यह अघ्रववन्धी प्रकृति है ।

तीर्थकर नामकर्मका कौन वन्धक और कौन अवन्धक है ? ॥ ५१ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

असयतसम्यग्दृष्टि वन्धक हैं । ये वन्धक हैं, शेष नारकी अवन्धक हैं ॥ ५२ ॥

तीर्थकर प्रकृतिके वन्धका उदयसे पूर्व अथवा पश्चात् व्युच्छेद होता है, इस प्रकार



षयोदयोच्छेदविचारो णत्थि, यध मोत्तूण उदयाभावादो ।

मिच्छत्त णवुसययेद-हुडसठाणण सोदओ वणे । णरि हुडसठाणम्म स-परोदओ वि,  
विग्गहगदीए' तस्सुदयाभावादो । असपत्तमेवट्टमरीग्गमण्डणम्म परोदओ वधो, नत्थ सप  
डणस्सुदयाभावादो । मिच्छत्तस्स णिरत्तरो वणे, धुववधित्तादो । सेमाण तिण्ण सानरो, एणम्मएव  
धधुवरमदसणादो ।

पच्यया चउट्टाणियपयडिपच्यणहि ममा । एदाओ पयहीओ चत्तारि वि दुग्गसउव  
पञ्चति । णेरइया सामी । [ वधद्वान् ] वधणिणट्टट्टाण च सुगम । मिच्छत्तस्स चउन्विहो  
वधो, धुववधित्तादो । सेमाण मादि-अद्धो, धुववधित्तामानादो ।

मनुस्साउअस्स को वधो को अवंधो ? ॥ ४९ ॥

सुगम ।

रूपाटिकाशरीरसहननके पूर्व या पश्चात् रंधोदयव्युच्छेद होनेका विचार नहीं है, क्योंकि,  
बन्धको छोड़कर वहा इसके उदयका अभाव है ।

मिथ्यात्व, नपुंसकप्रेद और हुण्डसस्थानका सोदय बन्ध होता है । विशेष यह है  
कि हुण्डसस्थानका बन्ध स्वोदय परोदयसे भी होता है, क्योंकि, विग्रहगतिमें उसका उदय  
नहीं रहता । अन्तर्गतरूपाटिकाशरीरसहननका बन्ध परोदयसे होता है, क्योंकि,  
नारकीयोंमें सहननका उदय नहीं रहता । मिथ्यात्वका बन्ध निरन्तर होता है, क्योंकि, वह  
धुववधी प्रवृत्ति है । शेष तीन प्रवृत्तियोंका सात्तर बन्ध होता है, क्योंकि, एक समयमें  
उनके बन्धका विधाम देखा जाता है ।

प्रत्ययोंकी प्ररूपणा चतुस्थानिक प्रकृतियोंके प्रत्ययोंके समान है । ये चारों ही  
प्रवृत्तियाँ दो गतियोंसे सयुक्त बंधती हैं । नारकी जीव स्वामी है । [ बन्धाज्जान ] और  
बन्धविनष्टस्थान सुगम हैं । मिथ्या-प्रवृत्तिका बन्ध चारों प्रकारका होता है, क्योंकि, वह  
धुववधी प्रवृत्ति है । शेष प्रवृत्तियोंका सादि व अधुव बन्ध होता है, क्योंकि, ये धुवबन्धी  
नहीं हैं ।

मनुष्यायुका कौन बन्धक और कौन अवन्धक है ? ॥ ४९ ॥

यह स्व सुगम है ।

मिच्छाइट्ठी सासणसम्माइट्ठी असंजदसम्माइट्ठी वंधा । एदे वंधा, अवसेसा अवंधा ॥ ५० ॥

एदेण सुइदत्थस्स परूवण कस्सामो— एत्थ वधोदयाण पुञ्जावरवोच्छेदविचारो णत्थि, बध मोत्तूण उदयाभावादे । परोदएण वधति, गिरयगदीए मणुस्साउअस्स उदयविरोहादे । गिरतर वधति, एगसमएण वधुअरमाभावादे । मिच्छाइट्ठिस्स एगूणवणपच्चया, वेउ-व्वियमिस्स-कम्मइयपच्चयाणमभावादे । मासणस्स चोइल असजदसम्मादिट्ठिस्स चालीस पच्चया । सेस सुगम । मणुसगइसजुत्त वधति । गेरइया सामी । वधद्धान वधत्तिणइट्ठान च सुगम । सादि-अद्धवो वणो, अद्धववत्तितादे ।

तित्थयरणामकम्मस्स को वंधो को अवंधो ? ॥ ५१ ॥

सुगम ।

असजदसम्मादिट्ठी वंधा । एदे वंधा, अवसेसा अवंधा ॥ ५२ ॥

तित्थयरवधस्स उदयादेो पुञ्ज पच्छा वोच्छेदो होदि त्ति सण्णिकासो णत्थि, तित्थयर-

मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि और असयतसम्यग्दृष्टि बन्धक हैं । ये बन्धक हैं, शेष नारकी जीव अनन्धक हैं ॥ ५० ॥

इस सूत्रसे सूचित अर्थको प्ररूपणा करते ह — यहा उन्ध और उदयके पूर्य या पश्चात् व्युच्छेद होनेका विचार नहीं है, क्योंकि, बन्धको छोडकर नारकीयोंमें इसके उदय नहीं रहता है । नारकी जीव इमे परोदयसे बाधते हैं, क्योंकि, नरकगतिमें मनुष्यायुके उदयका विरोध है । निरन्तर बाधते हैं, क्योंकि, एक समयमें इसके उदयका विधाम नहीं होता । मिथ्यादृष्टिके उनचास प्रत्यय होते ह, क्योंकि, वैकियिकमिथ्र और कामेण प्रत्ययोंका यहा अभाव है । सासादनके चवालीस और असयतसम्यग्दृष्टिके चालीस प्रत्यय होते ह । शेष प्रत्ययप्ररूपणा सुगम है । मनुष्यायुको नारकी जीव मनुष्यगतिसे सयुक्त बाधते हैं । नारकी जीव न्नामी ह । उन्धाध्यान और उन्धविनष्टस्थान सुगम हैं । इसका उन्ध सादि व अधुव होता है, क्योंकि, यह अधुवउन्धी प्रवृत्ति है ।

तीर्थकर नामकर्मका कौन बन्धक और कौन अनन्धक है ? ॥ ५१ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

असयतसम्यग्दृष्टि बन्धक हैं । ये बन्धक हैं, शेष नारकी अनन्धक हैं ॥ ५२ ॥

तीर्थकर प्रकृतिके उन्धका उदयसे पूर्य अथवा पश्चात् व्युच्छेद होता है, इस प्रकार

लियसरीरअंगोवंग वज्ररिसहसंधडण वण्ण गंध-रस-फास-अगुरुवलहुव-  
उवघाद परघाद-उस्सास पसत्थविहायगड-तस-चादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-  
धिराधिर-[ सुहा- ] सुह-सुगम सुस्सर-आदेज्ज जसकित्ति-णिमिण पंच  
तराहयाणं कौ वधो को अवधो? ॥ ५५ ॥

सुगम ।

मिच्छादिद्विष्णुहृडि जाव असंजदसम्मादिद्वी वंधा । एदे वंधा,  
अवधा गत्थि ॥ ५६ ॥

एदेण देसामासियसुत्तेण मूडट्थपरुवण कस्सामो— एत्थ उदयादो वधो पुब्ब  
पच्छा न चोच्छिण्णो ति विचारो गत्थि, एत्थ तस्स असभयादो । पचण्णाणावरणीय चउदसणा  
वर्णीय-परिचिदियनादि-तेजा कम्मडय-वण्ण गंध-रस-फास-अगुरुगल्हुग-तस चादर पज्जत्त धिरा-  
धिर सुभासुभ अजसकित्ति णिमिण पचतराइयाण सोदओ वधो, एदेसिं धुवोदयत्तादो । निहा  
पयला सादासाद-धारसकमाय-रूस्स-रदि अरदि-सोम मय-टुगुछाण मोदय परोदओ वधो, अद्दवो-  
दयत्तादो । उवघाद-परघाद उस्साम पत्तेयमरीराण मिच्छाद्विष्णुहृडि सोदय परोदओ वधो । सेसेसु

वज्रर्षमसहनन, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, उपघात, परघात, उच्छ्वास, प्रशस्तविहायो  
गति, प्रस, चादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुभग, सुस्वर, आदेय,  
यशकीर्ति, निर्माण और पाच अन्तराय, इनका कौन बन्धक और कौन अवन्धक है ? ॥५५॥

यह मूय सुगम है ।

मिथ्यादृष्टिसे लेकर असयामम्यदृष्टि तक बन्धक हैं । ये बन्धक हैं, अनन्धक नहीं  
हैं ॥ ५६ ॥

इस देशामशोक मूयके द्वारा सूचित अथकी प्ररूपणा करते हैं— यहा उदयसे  
बन्ध पूर्वमे या पश्चात् व्युच्छिन्न होता है, यह विचार नहीं है, क्योंकि, यहा उसकी  
सम्भावना नहीं है । पांच बानावरणीय, चार दशनावरणीय, पचोद्वयजाति, तेजस व  
धार्मण शरीर, वण, राच, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, प्रस, चादर, पर्याप्त, स्थिर, अस्थिर,  
शुभ, अशुभ, यशकीर्ति, निर्माण और पाच अन्तराय, इनका स्त्रोदय बन्ध होता है,  
क्योंकि, य धुवोदयो प्रकृतियां हैं । निहा, प्रचला, साता व असाता घेदनीय, धारह कपाय,  
हास्य, रति, अरति, शोक, मय और जुगुप्साका स्त्रोदय परोदय बन्ध होता है, क्योंकि,  
ये धाधुयादयो प्रकृतियां हैं । उपघात, परघात, उच्छ्वास और प्रत्येकशरीर, इनका मिथ्या

सोदओ चेर, तेसिमेत्य अपज्जत्तकाले अभावादो । पुरिसवेद-ओरोलियेसरीर संमचउरससठाण-ओरालियसरीरअगोवग-वज्जरिसहसघडण-पसत्थविहायगइ-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-जसकित्तीण परोदओ वधो, एदेसिमुदयस्स एत्थ विरोहादो ।

पचणाणावरणीय छदसणावरणीय वारहरुसाय-भय-दुगुछा-पचिंदियजादि-ओरालिय-तेजा कम्मइयसरीर ओरालियसरीरअगोवग वण्णचउक्क-अगुरुवलहुव-उवघाद-परघाद-उस्सास-तस वादर-पज्जत्त-यत्तेयसरीर णिमिण-यचतराइयाण णिरतरो बंधो, एत्थ धुववधित्तादो । सादा-साद हस्स-रदि-अरदि-सोग-थिराथिर-सुभासुभ-जसकिति-अजसकित्तीण सातरो वधो, सव्वगुण-ट्टाणेसु एदासिमेगाणेगसमयवधसभवादो । पुरिसवेद समचउरससठाण वज्जरिसहसघडण-पसत्थ-विहायगइ सुभग सुस्सर आदेज्जाण मिच्छादिट्ठि-मासणसम्मादिट्ठीसु सातरो वधो, एगाणेग-समयवधसभवादो । मम्मामिच्छादिट्ठि-असजदसम्मादिट्ठीसु णिरतरो वधो, पडिवक्खपयडीणं वधाभावो ।

एदाओ पयडीओ वधतमिच्छाइट्ठिस्स मूलपच्चया चत्तारि । णाणासमयउत्तरपच्चया

दृष्टि गुणस्थानमें स्वोदय परोदय बन्ध होता है । शेष गुणस्थानोंमें स्वोदय ही बन्ध होता है, क्योंकि, मिथ्यादृष्टिको छोड़कर शेष गुणस्थान यहा अपर्याप्तकालमें नहीं होते । पुरुषवेद, औदारिकशरीर, समचतुरस्रस्थान, औदारिकशरीरानोपाग, वज्रर्षभसहजन, प्रशस्तविहायोगति, सुभग, सुस्वर, आदेय और यशकीर्ति प्रकृतियोंका परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, इनके उदयका यहा विरोध है ।

पाच ज्ञानावरणीय, छह दर्शनावरणीय, वारह कषाय, भय, जुगुप्सा, पचेन्द्रिय-जाति, औदारिक तेजस व कामेण शरीर, औदारिकशरीरानोपाग, वर्णादिक चार, अगुरु लघु, उपघात, परघात, उच्छ्वास, अस, वादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, निर्माण और पाच अन्तराय, इनका निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, ये प्रकृतिया यहा ध्रुवबन्धी हैं । साता व भसाना वेदनीय, हास्य, रति, अरति, शोक, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, यशकीर्ति और अयशकीर्ति प्रकृतियोंका सान्तर बन्ध होता है, क्योंकि, सत्र गुणस्थानोंमें इनका एक और अनेक समय तक बन्ध सम्भव है । पुरुषवेद, समचतुरस्रस्थान, वज्रर्षभसहजन, प्रशस्तविहायोगति, सुभग, सुस्वर और आदेय, इन प्रकृतियोंका मिथ्यादृष्टि व सासादन सम्बन्धदृष्टि गुणस्थानोंमें सान्तर बन्ध होता है, क्योंकि, यहा इनका एक अनेक समय तक बन्ध सम्भव है । सम्पत्तिमिथ्यादृष्टि और असत्यतसम्बन्धदृष्टि गुणस्थानोंमें उनका निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, यहा इनकी प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धका अभाव है ।

इन प्रकृतियोंको बाधनेवाले मिथ्यादृष्टि नारकीके मूल प्रत्यय चार, नाना समय

सपडण-तिरिक्खगइपाओग्गणुपुत्री-उज्जोवाण पुत्र पच्छा वधोदयनोच्छेदविचारी पत्थि,  
एदामिमेत्थ उदयामावादो ।

अणताणुबधिचउक्कस्स सोदय परोदएण वधो, अद्दुवोदयत्तादो । अप्पत्तयविहायगइ-  
दुस्मरणे मिच्छाइद्विम्हि सोदय-योगेदएण नधो, अपज्जत्तकाले एदामिगुत्तयामादाओ । सासणे  
सोदएणेव वधो, तस्से य अपज्जनकालाभादाओ । दृभग अणादेज्जणीचागोदाण सोदएणेव  
वधो, धुवोदयत्तादो । धीणगिद्धितिय इत्थिवेद-तिरिक्खगइ-चउमठण-चउमपडण तिरिक्खगइ  
पाओग्गणुपुत्री-उज्जोवाण परोदएणेव वधो । कुदो ? विस्समादो ।

धीणगिद्धितिय अणताणुबधिचउक्क तिरिक्खगइ-तिरिक्खगइपाओग्गणुपुत्री-णीचा-  
गोदाण गिरत्तो नधो । कुदो ? एत्थ धुववधित्तादो । सेसाण मात्तो, एगसमएण हि वधोच्छे-  
दुवलमादो । पच्चया चउट्टाणपयडिपच्चयममा । एदाओ सज्वपयडीओ तिरिक्खगइसजुत्त  
वधनि । गेरइया सामी । वधद्वान्न वधविणइट्टाण च सुगम । धीणगिद्धितिय-अणताणुबधि  
चउक्काणं मिच्छाइद्विम्हि चउत्तिहो नधो, धुववधित्तादो । सासणम्मि सादि अद्दुवो । सेसाण

ग्यानुपूर्वी और उद्योत, इनके पूर्वमें या पश्चात् वन्धोदयव्युच्छेद होनेका विचार नहीं है,  
क्योंकि, यहा इनके उदयका अभाव है ।

अनन्तानुबधिचतुष्क स्वोदय-परोदयसे वन्ध होता है, क्योंकि वे अधुवोदयी  
हैं । अपश्चात्तविहायोगति और दुस्सरका मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें स्वोदय परोदयसे वन्ध  
होता है, क्योंकि, अपश्चात्कालमें इनका उदय नहीं रहता । सासादन गुणस्थानमें  
स्वोदयसे ही इनका वन्ध होता है, क्योंकि, इस गुणस्थानका यहा अपश्चात्कालमें अभाव  
है । दुर्भग, अनादेय और नीचगोत्र, इनका स्वोदयसे ही वन्ध होता है, क्योंकि, ये प्रकृतिया  
धुवोदयी हैं । स्थानगुडि आदिक तीन, खावेद तिर्यग्गति, चार स्वस्थान, चार सहनन,  
तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी और उद्योत, इनका परोदयसे ही वन्ध होता है । इसका कारण  
स्वभाव ही है ।

स्थानगुडि आदिक तीन, अनन्तानुबधिचतुष्क, तिर्यग्गति, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानु  
पूर्वी और नीचगोत्र, इनका निरन्तर वन्ध होता है, क्योंकि, यहा वे धुववन्धी हैं । दोष  
प्रकृतियोंका सान्तर वन्ध होता है, क्योंकि, एक समयसे इनका वन्ध व्युच्छेद पाया जाता है ।  
प्रत्ययोंकी प्ररूपणा अतुस्थानिक प्रकृतियोंके समान है । इन सब प्रकृतियोंको तिर्यग्गतिसे  
सजुत्त वापते हैं । नारकी जीव इनके वन्धके स्वामी हैं । वन्धाध्यात और वन्धधिनस्थान  
सुगम हैं । स्थानगुडि आदिक तीन और अनन्तानुबधिचतुष्कका मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें  
वारी प्रकारका वन्ध होता है क्योंकि, ये धुववन्धी प्रकृतिया हैं । सासादनगुणस्थानमें

वेउच्चियसरीरअंगोवग वण्ण गंध रस-फास-देवगदिपाओग्गाणुपुव्वी-  
अगुरुवल्लहुव्व-उवघाद-परघाद-उस्सास-पसत्थविहायगइ-तस-वादर-  
पज्जत्त पत्तेयसरीर [ थिरा- ] थिर-सुहासुह सुभग सुस्सर-आदेज्ज-जस-  
कित्ति-अजसकित्ति णिमिण-उच्चागोद पचंतराइयाणं को वंधो को  
अबंधो ? ॥ ६३ ॥

सुगम ।

मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव संजदासंजदा वंधा । एदे वंधा, अबंधा  
णत्थि ॥ ६४ ॥

। एदस्स सुत्तस्स अत्थो वुच्चदे— देवगइ-त्रेउच्चियसरीर वेउच्चियसरीरअंगोवग देवगइ-  
पाओग्गाणुपुत्ति उच्चागोदाण तिरिक्खेसु उदयाभात्तादो पुव्व पच्छा वधोदयवेच्छेदविचारो  
णत्थि, सतासताण सण्णिकामनिरोहादो । अन्नमेमपयडोसु पि एम विचारो णत्थि, अत्थगदीण  
एदामि वधोदयवेच्छेदाभात्तादो । पचणाणानरणीय-चट्टुदसणाणणीय-वेउच्चिय-तेजा कम्मइय-  
सरीर वण्ण-गव रस फाम अगुरुवल्लहुव्व [ थिरा ] थिर-सुभासुभ णिमिण पचतराइयाण सोदओ

व कार्मण शरीर, समचतुरस्रसस्थान, वैक्रियिकशरीरागोपाग, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, देवगति-  
प्रायोग्यानुपूर्वी, अगुरुलघु, उपमात, परघात, उच्छ्राम, प्रशस्तनिहायोगति, त्रस, वादर,  
पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुभग, सुस्वर, आदेय, यशकीर्ति,  
अयशकीर्ति, निर्माण, उच्चगोत और पाच अन्तराय, इनका कौन बन्धक और कौन अबन्धक  
है ? ॥ ६३ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

मिथ्यादृष्टिमें लेकर सयतासयत तक बन्धक हैं । ये बन्धक हैं, अबन्धक नहीं  
है ॥ ६४ ॥

इस सूत्रका अर्थ कहते हैं— देवगति, वैक्रियिकशरीर, वैक्रियिकशरीरागोपाग,  
देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वा और उच्चगोत, इनका तिर्यच्योमें उदय न होनेसे बन्धोदय युच्छेदकी  
पूर्वापरताका विचार नहीं है, क्योंकि, सत् और असत्की समानताका विरोध है । शेष  
प्रकृतियोंमें भी यह विचार नहीं है, क्योंकि, अर्थगतिसे इनके बन्धोदय-युच्छेदका अभाव है ।

पाच शानावरण, चार दर्शनावरण, वैक्रियिक तेजस व कार्मण शरीर, वर्ण, गन्ध,  
रस, स्पर्श, अगुरुलघु, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, निर्माण और पाच अन्तराय,

सम्मामिच्छाइट्टी असंजदसम्माइट्टी वंधा । एदे वंधा, अवसेस  
अबंधा ॥ ६२ ॥

एदस्स अत्थो बुच्चदे— एत्थ वंधादो उदओ पुच्च पच्छा वा वोच्छिण्णो ति  
विचारो णत्थि, एदासिमेत्थ उदयाभानादो । एदासिं परोदएणेव वधो, णिरयगदीए उदया  
भानादो । णित्तरो वधो, एगसमएण वधुक्कमाभावादो । पच्चया चउट्टाणियपयडिपच्चयतुल्ला ।  
मणुमगइसजुत्त सम्मामिच्छाइट्टि असंजदसम्मादिट्टिणो वधति । णेरइया सामी । वधद्धान  
वधण्णिण्डड्डाण च सुगम । सादि-अद्धमग्धो, अद्धववत्तादो सम्मामिच्छाइट्टि-असंजदसम्मा  
इट्टिण्णिव्वाणुग्गमणे णियमादो वा ।

तिरिक्खगदीए तिरिक्खा पंचिदियतिरिक्खा पंचिदियतिरिक्ख  
पज्जत्ता पंचिदियतिरिक्खजोणिणीसु पंचणाणावरणीय छदंसणावर  
णीय सादासाद अट्टकसाय पुरिसवेद हस्स रदि-अरदि-सोग-भय-दुग्गुछा  
देवगइ पंचिदियजादि वेउन्विय-तेजा-कम्मइयसरीर-समचउरससठाण

सम्यग्मिध्यादष्टि और असयतसम्यग्दष्टि बन्धक हैं । ये बन्धक हैं, शेष गुणस्थानवर्ती  
अबन्धक हैं ॥ ६२ ॥

इसका अर्थ कहते हैं— वधसे उदय पूर्वमें व्युत्थित होता है या पश्चात्, यह  
विचार यहा नहीं है क्योंकि, इनका यहा उदय नहीं है । इनका परोदयसे ही बन्ध हाता  
है, क्योंकि, नरकगतिमें इनके उदयना अभाव है । बन्ध निरन्तर होता है, क्योंकि, एक  
समयसे इनके बंधका विधाम नहीं होता । इनके प्रत्यय चतुस्थानिक प्ररतियोंके प्रत्ययोंके  
समान हैं । सम्यग्मिध्यादष्टि और असयतसम्यग्दष्टि मनुष्यगतिसे सयुक्त पांघते हैं ।  
सारथी स्वामी है । बंधाग्रान और बंधविनष्टस्थान सुगम हैं । सादि व अधुव बंध होता  
है, क्योंकि वे अधुमग्धी हैं, अथवा सम्यग्मिध्यादष्टि और असयतसम्यग्दष्टियोंके  
मुक्तिगमनमें नियम होनेसे भी सादि व अधुम बन्ध होता है ।

तिर्यग्गतिमें तिर्यच, पचेन्द्रिय तिर्यच, पचेन्द्रिय तिर्यच पर्याप्त और पचेन्द्रिय तिर्यच  
योनिमनियोंमें पाच ज्ञानारणीय, छह दर्शनारणीय, साता व असाता वेदनीय, आठ कषाय,  
पुरुषवेद, हास्य, रति, अरति, शोक, भय, लुगुप्सा, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, वैकियिक तैजस

१ मित्सातिरद उच्च मणुवदुग्ग सत्तमे हवे वधा । मिच्छा सात्तणम्ममा मणुवदुग्गुच्च ण वधति ॥  
२ अ काप्रयो 'णियमामावादी' इति पाठ ।

अमजदमम्मादिट्ठीसु नधो सोदयपरोदओ, एत्थ पडिवक्खुदयदसणादो । मजदासजदेसु सोदओ चेव, तत्थ पडिवक्खणमुदयाभावादो । मिच्छादिट्ठिमानणसम्मादिट्ठि सम्मामिच्छादिट्ठि-असजदसम्मादिट्ठीसु अजमकित्तीए नधो सोदय-परोदओ, एत्थ पटिवक्खुदयदसणादो । सजदा-सजदेसु परोदओ, तत्थ पडिवक्खपयडीए चेव उदयदसणादो । देवगदि-वेउच्चियसरीर-वेउच्चियसरीरअगोत्रग-देवगदिपाओग्गाणुपुन्वी-उच्चागोदाण परोदओ नधो, एदासिमेत्थ उदय-विरोहादो ।

पचणाणारणीय छदसणाणरणीय-अट्ठकमाय-भय-दुगुछा तेजा कम्मइयसरीर वण्ण-ग-रस-फाम अगुरुगलहुव उपधाद-णिमिण पचतराइयाण गिरतरो वधो, उववधित्तादो । सादासाद-हस्म रदि-अरदि-सोग-धिरायिर-सुभासुभ-जसकित्ति अजमकित्तीण सातरो वधो, एगसमएण उधुमरमदसणादो । पुरिसनेदस्म मिच्छाइट्ठि-मामणेषु सातरो गिरतरो च वधो, पम्म-सुक्क-लेस्मिएसु गिरतर-वधदमणादो । सेमगुणट्ठाणेषु गिरतरो, पडिवक्खयडिक्खभावादो । पच्चि-

--

दृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, सम्यग्निर्गम्यादृष्टि व असयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें सोदय परोदय होता है, क्योंकि, इन गुणस्थानोंमें प्रतिपक्ष प्रकृतियोंका उदय देखा जाता है। सयतासयतोंमें इनका सोदय ही ग्रन्थ होता है, क्योंकि, उनमें प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके उदयका अभाव है। मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, सम्यग्निर्गम्यादृष्टि और असयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें अयशकीर्तिका ग्रन्थ सोदय परोदय होता है, क्योंकि, इन गुणस्थानोंमें उसकी प्रतिपक्ष प्रकृतिका भी उदय देखा जाता है। सयतासयतोंमें उसका परोदय ग्रन्थ होता है, क्योंकि, उनमें प्रतिपक्ष प्रकृतिका ही उदय देखा जाता है। देवगति, वैक्रियिकशरीर, वैक्रियिक शरीरानोपाग, देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी और उच्चमोत्र, इनका उदय ग्रन्थ होता है, क्योंकि, तिर्यचोंमें इनके उदयका विरोध है।

पाच ज्ञानारणीय, छह दर्शनाणरणीय, आठ कवाय, भय, जुगुप्सा, तैजस व कामिण शरीर, वण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुल्लु, उपपात, निर्माण और पाच अन्तराय, इनका निरन्तर ग्रन्थ होता है, क्योंकि, ये ध्रुवग्रन्धी प्रकृतिया हैं। साता व असाता वेदनीय, हाम्य, रति, अरति, शोक, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, यशकीर्ति और अयशकीर्ति, इनका सान्तर ग्रन्थ होता है, क्योंकि, एक समयमें इनके ग्रन्थका विधाम देखा जाता है। पुरुषवेदका मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टियोंमें सान्तर व निरन्तर ग्रन्थ होता है, क्योंकि, पद्म और शुक्ल लक्ष्यावाले जीवोंमें निरन्तर ग्रन्थ देखा जाता है। शेष गुण-स्थानोंमें निरन्तर ग्रन्थ होता है, क्योंकि, वहा प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके ग्रन्थका अभाव है।



धधो, ध्रुवोदयत्तादो । निहा पयला सादामाद-अडुकुमाय पुरिसवेद-हम्स-रदि-अदि सोग भय  
 दुगुछा समचउरमसठाण पसत्त्वविहायगड सुम्मगण म-उट्टापेसु मोदय-पगेदओ वधो । णवी  
 जोणिणीसु पुरिसवेदनधो परोदओ । उवनादवधो मिच्छादिट्टि सामणमम्मादिट्टि असजदसम्मा  
 दिट्टीण सोत्थ परोदओ, विग्गहगदीए उवचाटस्सुदयाभावादो । सम्मामिच्छादिट्टि सदा  
 सजदाण सोदओ चेव, तेमिमपज्जत्तकालाभावादो । परघादुस्ताम-पत्तयसरीराण मिच्छादिट्टि  
 सासणसम्मादिट्टि-असजदसम्मादिट्टीसु मोदय पगेदओ, एदामिमपज्जत्तकाले उदयाभावादो ।  
 सेसदोगुणट्टापेसु मोदओ वधो । णरि जोणिणीसु असजदसम्मादिट्टी एदाओ सोदण्णव  
 नधदि, तत्थदस्स अपज्जत्तकालाभावादो । तम वादर पज्जत्त पचिंदियजादीओ मिच्छादिट्टी  
 सोदय परोदण्ण वधड, पडिवक्खपयडीण उदयमभावादो । अउमेसा सोदण्णेण, तत्थ पडि  
 वक्खपयडीणमुदयाभावादो । पचिंदियतिरिक्ख पचिंदियतिरिक्खपज्जत्त पचिंदियतिरिक्ख  
 जोणिणीसु मोदण्णेण सच्चगुणट्टापेसु वधो, एत्थ पडिवक्खपयडीणमुदयाभावादो । णरि  
 पचिंदियतिरिक्खेसु मिच्छादिट्टीण पज्जत्तस्म मोदय-परोदओ वधो, तत्थ पडिवक्खपयडीए  
 उदयसभावादो । सुभगादेज्ज जसकित्तीण मिच्छादिट्टि-सामणमम्मादिट्टि सम्मामिच्छादिट्टि

इनका सोदय रन्ध होता है, क्योंकि, ये ध्रुवोदयी प्रकृतियां हैं । निद्रा, प्रचला, साता व  
 अमाता वेदनीय, आठ कषाय, पुरुषवेद, हाम्य, रति, भरति, शोक, भय, जुगुप्सा, समचतु  
 रद्वसस्थान, प्रशस्तविहायोगनि आर सुम्भर, इनका सब गुणस्थानोंमें स्वोदय-परोदय  
 बन्ध होता है । विशेष इतना है कि योनिमती तिर्यचोंमें पुरुषवेदका रन्ध परोदयसे होता  
 है । उपघातका रन्ध मिथ्यादृष्टि, सामादनसम्पगदृष्टि और असयतसम्पगदृष्टि जीवोंके  
 स्वोदय परोदय होता है, क्योंकि, विप्रहगतिके उपघातका उदय नहीं होता । सम्यग्मिथ्या  
 दृष्टि और सयतसयतोंके स्वोदय ही बन्ध होता है, क्योंकि, उनके अपर्याप्तकालका अभाव  
 है । परघात, उच्छ्वास और प्रत्येकशरीरका रन्ध मिथ्यादृष्टि, सामादनसम्पगदृष्टि और  
 असयतसम्पगदृष्टि गुणस्थानोंमें स्वोदय परोदय होता है, क्योंकि, इन प्रकृतियोंका अपर्याप्त  
 कालमें उदय नहीं होता । शय दो गुणस्थानोंमें स्वोदय रन्ध होता है । विशेषता यह है कि  
 योनिमतियोंमें असयतसम्पगदृष्टि जीव इन्हें स्वोदयसे ही वायता है, क्योंकि, योनिमतियोंके  
 अपर्याप्तकालमें असयतसम्पगदृष्टि गुणस्थानका अभाव है । वस, वादर, पर्याप्त और पचे  
 न्द्रिय आति, इनको मिथ्यादृष्टि जीव स्वोदय परोदयने बाधता है, क्योंकि, यहा इनको  
 प्रतिपक्ष प्रकृतियोंका उदय सम्भव है । शय गुणस्थानरत्नों स्वोदयने ही बाधते हैं, क्योंकि,  
 उन गुणस्थानोंमें प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके उदयका अभाव है । पचेन्द्रिय तिर्यच, पचेन्द्रिय  
 तिर्यच पर्याप्त और पचेन्द्रिय तिर्यच योनिमतियोंमें स्वोदयसे ही सब गुणस्थानोंमें बन्ध  
 होता है, क्योंकि, इनमें प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके उदयका अभाव है । विशेषता यह है कि  
 पचेन्द्रिय तिर्यचोंमें मिथ्यादृष्टियोंके पर्याप्त प्रकृतिका स्वोदय परोदय बन्ध होता है, क्योंकि,  
 यहा प्रतिपक्ष प्रकृतिका उदय सम्भव है । सुभग, आदेय और यशकौर्तिका रन्ध मिथ्या

सन्धामि पयडीण वंधस्स तिरिक्खा चेव सामी । वधद्वाण वधविणड्डवाण च सुगम ।  
पचणाणावरणीय छदसणावरणीय अड्डकसाय-भय दुग्घा तेजा रुम्मइय-वण्ण-गध-रस-फास-  
अगुरुल्लहुव उवघाद-णिमिण पचतराडयाण मिच्छाड्डिहि चउच्चिहो नभो, सेसेसु तिविहो,  
सुवामावादे । अत्रमेसाण पयडीण सादि अद्धवो ।

णिद्वाणिद्वा पयलापयला-थीणगिद्धि-अणंताणुवंधिकोध-माण-  
माया-लोभ-इत्थिवेद-तिरिक्खाउ-मणुसाउ-तिरिक्खगइ-मणुसगइ-ओरा-  
लियसरीर चउसंठाण-ओरालियसरीरअंगोवंग-पंचसंघडण-तिरिक्खगइ-  
मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वी-उज्जोव-अप्पसत्थविहायगइ-दुभग-दुस्सर-  
अणादेज्ज णीवागोदाणं को वंधो को अवंधो ? ॥ ६५ ॥

सुगममेद ।

मिच्छाड्डिटी सासणसम्माइटी वंधा । एदे वंधा, अवसेसा अवंधा  
॥ ६६ ॥

सब प्रकृतियोंके बन्धके तियच ही स्वामी ह । बन्धाध्यान और बन्धविनष्टस्थान  
सुगम है । पाच धानावरणीय, छह दर्शनावरणीय, आठ कपाय, भय, जुगुप्सा, तैजस च  
कार्मण शरीर, वर्ण, मन्व, रस, स्पर्श, अगुरुल्लहु, उपघात, निर्माण और पाच अन्तराय,  
इनका मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें चारों प्रकारका बन्ध होता है । शेष गुणस्थानोंमें तीन  
प्रकारका बन्ध होता है, क्योंकि, उनमें ध्रुव बन्धका अभाव है । शेष प्रकृतियोंका सादि च  
अधुव बन्ध होता है ।

निद्रानिद्रा, प्रचलाप्रचला, स्त्यानगृद्धि, अनन्तानुबन्धी क्रोध, मान, माया, लोभ,  
धौवेद, तिर्यगायु, मनुष्यायु, तिर्यग्गति, मनुष्यगति, औदारिकशरीर, चार सस्थान, औदारिक-  
शरीरागोपाम, पाच सहनन, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वा, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वा, उद्योत,  
अप्रशस्तनिहायोगति, दुर्भग, दुस्वर, अनादेय व नीचगोत्र, इनका कौन बन्धक और कौन  
अबन्धक है ? ॥ ६५ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि बन्धक हैं । ये बन्धक हैं, शेष जीव अबन्धक  
हैं ॥ ६६ ॥

पचणावावणीय-छह दर्शनावणीय-अडकसाय-अरदि-मोग भय-डुगुछा-पचिदिपजादि-  
 तेना-कम्मइयसरीर-वण्ण गध-रस-फाम-अगुरुगलहुग-उवघाद-परघाद-उस्माम-तस-चादर पजत्त-  
 पत्तेयमीर णिमिण पचतराइयाण मिच्छाड्डी चउगडसजुत्ताण, सासणो णिरयगईए विणा तिगड  
 सजुत्ताण, मेसा देवगडसजुत्ताण वजया । सादवेदणीय हस्म-रदीओ मिच्छाड्डी सामणो च णिय  
 गईए विणा तिगडसजुत्त, मेसा देवगडसजुत्त ववति । एव जसकिंति पि ववति, तिसेसाभावादो ।  
 अमादवेदणीय-अजसकिन्तीओ मिच्छाड्डी चउगडसजुत्त, सासणो तिगडसजुत्त, सेसा देवगडसजुत्त ।  
 पुरिसवेद मिच्छाड्डी सासणो च णिरयगईए विणा तिगडसजुत्त, सेसा देवगडसजुत्त ऋणि ।  
 समचउरममठाण पसथविहायगइ सुभग सुस्मर आदेज्जाणमेव चैव वत्तव । देवगदि देव  
 गदिपाओगाणुपुव्वीओ सव्वे देवगडसजुत्त ववति । [ वेउव्वियसरीर ] वेउव्वियसरीर  
 अगोवगाणि मिच्छाड्डी देव-णिरयगडसजुत्त, सेसा देवगडसजुत्त । थिर सुभाण सादभगो ।  
 अथिअसुहाण असादभगो । उच्चागोद मिच्छाड्ढि सासणसम्माइडिणो देव मणुसगइसजुत्त,  
 सेसा देवगडसजुत्त ववति ।

पाच ज्ञानावरणीय, छह दर्शनावरणीय, आठ कषाय, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा,  
 पचेन्द्रिय जाति, नैजस थ कामंण शरीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, उपघात,  
 परघात, उच्छ्वास, धस, धादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, निर्माण और पाच अन्तराय, इन  
 प्रकृतियोंके मिथ्यादृष्टि चारों गतियोंसे सयुक्त, सामादनसम्पग्दृष्टि नरकगतिके विना  
 तीन गतियोंसे सयुक्त, और शेष जीव देवगतिके सयुक्त बन्धक ह । सातावेदनीय, हास्य  
 और रतिके मिथ्यादृष्टि एव सासादनसम्पग्दृष्टि नरकगतिके विना तीन गतियोंसे सयुक्त,  
 तथा शेष जीव देवगतिके सयुक्त बाधते ह । इसी प्रकार यशस्वीतिके भी  
 बाधते ह, क्योंकि, इसके कोई विशेषता नहीं है । असातावेदनीय और अयशस्वीतिका  
 मिथ्यादृष्टि चारों गतियोंसे सयुक्त, सासादन तीन गतियोंसे सयुक्त, और शेष जीव  
 देवगतिके सयुक्त बाधते ह । पुष्पवेदके मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्पग्दृष्टि नरकगतिके  
 विना तीन गतियोंसे सयुक्त और शेष जीव देवगतिके सयुक्त बाधते ह । समचतुरस्र  
 सम्भान, प्रदानविहायणति, सुभग, सुस्वर और आदिय प्रकृतियोंका गतिसंयोग भी इसी  
 प्रकार कहना चाहिये । देवगति और देवगतिप्रायोग्यानुपूर्विके मत्र देवगतिके सयुक्त  
 बाधते ह । [ वैत्रियिकशरीर ] और वैत्रियिकशरीरागोपागके मिथ्यादृष्टि देव व नरकगतिके  
 सयुक्त तथा शेष देवगतिके सयुक्त बाधते ह । स्थिर और शुभ प्रकृतियोंका गतिसंयोग  
 सातावेदनीयके समान है । अस्थिर और अशुभ प्रकृतियोंका गतिसंयोग असातावेदनीयके  
 समान है । उच्चगोचरके मिथ्यादृष्टि और सामादनसम्पग्दृष्टि देव व मनुष्य गतिके सयुक्त,  
 तथा शेष तिर्यच देवगतिके सयुक्त बाधते ह ।

भावाद्दो । सेसपयडीण वधो सादि अद्दुयो, अद्दुवधित्तादो ।

मिच्छत्त णवुंसयवेद-णिरयाउ-णिरयगइ-एइंदिय वीइंदिय तीइं-  
दिय-चउरिंदियजादि-हुंडसंठाण-असंपत्तसेवट्टसंघडण-णिरयगइपाओ-  
ग्गाणुपुव्वि-आदाव-थावर-सुहुम अपज्जत्त साहारणसरीरणामाणं को  
वंधो को अवंधो ? ॥ ६७ ॥

सुगम ।

मिच्छाइट्ठी वंधा । एदे वंधा, अवसेसा अवंधा ॥ ६८ ॥

एदस्म अरथो वुच्चदे— मिच्छत्त एइंदिय-वीइंदिय-तीइंदिय चउरिंदिय आदाव-  
थानर-सुहुम अपज्जत्त साहारणाण वधोदया सम वोच्छिउणा, मिच्छाइइं मोत्तूणेदासिं उवरिमेसु  
उदयाभावाद्दो । णवुंसयवेद-हुंडसंठाण-असंपत्तमेवट्टमघडणाण वधवोच्छेदो चेव णोदयस्स,  
सत्तगुणेसुदयदसणादो । णिरयाउ णिरयगइपाओग्गाणुपुव्वीण तिरिक्खगदीए उदयाभावाद्दो पुव्व  
पच्छा वधोदययोच्छेदविचारो णत्थि ।

वन्ध सादि न जन्धुव होता हे, कयांकि चे जन्धुवन्धी ह ।

मिथ्यात्व, नपुसकवेद, नारकायु, नरकगति, एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरि-  
न्द्रिय जाति, हुण्डमन्थान, असंप्राप्तसृपाटिकाशरीरमहनन, नरकगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, आताप,  
स्थावर, सूक्ष्म, अपर्याप्त और साधारणशरीर नामकमौका कौन वन्धक और कौन अनन्धक  
है ? ॥ ६७ ॥

यह स्र सुगम है ।

मिथ्यादृष्टि वन्धक है । ये वन्धक ह, शेष तिर्यच अवन्धक है ॥ ६८ ॥

इसका अर्थ कहते हैं— मिथ्यात्व, एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय,  
आताप, स्थावर, सूक्ष्म, अपर्याप्त और साधारण, इनका वन्ध और उदय दोनों साथ  
व्युच्छिन्न होते ह, कयांकि मिथ्यादृष्टि गुणस्थानको छोड़कर उपरिम गुणस्थानोंमें इन  
प्रकृतियोंके उदयका अभाव है । नपुसकवेद, हुण्डमन्थान और असंप्राप्तसृपाटिकासहनन,  
इनके वन्धका ही 'युच्छेद' ह, उदयका नहीं, कयांकि स्र गुणस्थानोंमें इनका उदय देखा  
जाता है । नारकायु और नरकगतिप्रायोग्यानुपूर्वीका तिर्यग्गतिमें उदय न होनेसे  
इनके पूर्व या पश्चात् वन्धोदयव्युच्छेद होनेका विचार नहीं है ।

सातर-णिरतरो ।

एदासि पन्चया मन्वगुणेषु पचद्वाणियपयडिपचएहि तुल्ला । णवरि तिरिक्ख  
 मणुस्साउआण मिच्छाइट्टिमिह कम्मइयपन्चओ णत्थि । पच्चिदियतिरिक्खपज्जत्त-पच्चिदिय  
 तिरिक्खजोणिणीसु ओरालियमिम्म कम्मइयपन्चया णत्थि । चउत्तिहेसु तिरिक्खेसु मामणे  
 ओरालियमिम्म कम्मइयपन्चया णत्थि, अपज्जत्तकाले तस्माउन-भाभादादो ।  
 थीणगिद्धितिय अणताणुनधिचउक्काण मिच्छाइट्टी चउगडमजुत्त, मामणे तिगड  
 संजुत्त वधओ । इत्थिवेद णिरयगडेए विणा तिगडमजुत्त, मणुमाउ-मणुमगडपाओग्गाणुपुच्चीओ  
 मणुमगडसजुत्त, तिरिक्खाउ तिरिक्खगडपाओग्गाणुपुच्ची-उज्जोत्ताणि तिरिक्ख-मणुमगडसजुत्त, ओग  
 लियसंरीर चउसठाण ओरालियसंरीर-अगोत्त-पचमघटणाणि तिरिक्ख-मणुमगडसजुत्त, अपसत्थ  
 निहायगड दुभग दुस्सर-अणादेज्ज णीचागोदाणि दग्गदीए विणा तिगडमजुत्त वधति । एदासि  
 पयडीण वधस्स तिरिक्खा सामी । वधद्वाण वधनिणट्टडाण च सुगम । थीणगिद्धितिय  
 अणताणुनधिचउक्काण मिच्छाइट्टिमिह चउत्तिहो वधो । सामणे दुविहो, अणादिधुवा

सातर निरतर वध होता है ।

इन प्रकृतियोंके प्रत्यय सय गुणस्थानोंमें पचस्वयानिन् प्रकृतियोंके समान है ।  
 विशेषता कन्ल यह है कि तिर्यंगायु और मनुष्यायुना मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें कामण प्रत्यय  
 नहीं होता । पचेन्द्रिय तिर्यच पर्यात्त और पचेन्द्रिय तिर्यच येनिमतियामें औदारिकमिथ्र  
 व कामेण प्रत्यय नहीं हाते । चार प्रकारके तिर्यचोंमें सासादन गुणस्थानमें औदारिकमिथ्र  
 और कामण प्रत्यय नहीं होने, क्योंकि, अपयत्तकार्त्तमें उसके जायुना उन्व नहा होता ।  
 च यागृद्धित्रय और अनन्तानुबधिचतुष्कारे मिथ्यादृष्टि चारों गतियोंसे संयुक्त  
 और सामादनसम्भगदृष्टि तीन गतियोंसे संयुक्त वन्धन है । खंवेदनेो नरकगतिके विना  
 तीन गतियोंसे मयुत्त, मनुष्यायु पर मनुष्यगतिप्रयोगयानुपूर्वको मनुष्यगतिसे मयुत्त ।  
 तिर्यंगायु, नियमगतिप्रयोगयानुपूर्वको तिर्यचगतिसे संयुक्त । औदारिकशरीर,  
 चार संस्थान, औदारिकशरीरारोगोपाण और पाच सहननको नियमगति व मनुष्यगतिसे  
 संयुक्त, तथा अपशस्नविहायागति, दुर्भग, दुस्सर, अनादेय और नीचगोत्रको देवगतिके  
 विना तीन गतियोंसे संयुक्त राधन ह । इन प्रकृतियोंके उधरे तिर्यच स्वामी हैं ।  
 च धाप्पान और वधावेनस्वयान सुगम हैं । स्थानगृद्धित्रय और अनन्तानुबधिचतुष्का  
 मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें चारों प्रकारका वध हाता है । सामादन गुणस्थानमें दो प्रकारका  
 वध होता है, क्योंकि, वहा अनादि और ध्रुव उन्धका अभाव है । शेष प्रकृतियोंका

१ प्रतियु ' इत्थिवेद ' इति पाठ ।  
 २ प्रतियु ' अपज्जत्त ' इति पाठ ।

च सुगम । मिच्छत्तस्म मादिओ अणादिओ धुवो अद्दवो त्ति चउत्विहो वधो । सेमाण सादि-  
अद्दवो, अद्दवर्नित्तादो ।

अपच्चमखाणकोध-माण-माया लोभाणं को वंधो को अवंधो ?

॥ ६९ ॥

सुगम ।

मिच्छाडट्टिप्पहुडि जाव असजदसम्मादिट्टी वंधा । एदे वंधा,  
अवसेसा अवंधा ॥ ७० ॥

एदेण सगहिदत्थाण पयामो कीरंद—एदामि उधोदया मम वोच्छिण्णा, दोण्हम-  
सजदसम्मादिट्टिम्हि निणासुअलभादो । सोदअ-परोदएण वधो, अद्दवोदयत्ता । णिरतरो, धुव-  
वधित्तादो । पच्चया तिरिक्खाण पच्चट्टाणियपयडिपच्चएहि तुल्ला । मिच्छाडट्टी चउगड-  
मजुत्त, मामणसम्मादिट्टी तिगडमजुत्त, सम्मामिच्छादिट्टी अमजदसम्मादिट्टी देवगइसजुत्त

म्यामी ह । उन्वाघ्यान आर उन्धउिनएस्थान सुगम ह । मिथ्यात्वका सादिक, अनादिक,  
धुअ और अधुअ चारों प्रकारका उन्ध होता है । शेष प्रकृतियोंका मादि उ अधुअ उन्ध होता  
है, क्योंकि, वे अधुअउन्धी ह ।

अप्रत्याख्यानारण क्रोध, मान, माया और लोभका कौन उन्धक और कौन अउन्धक  
है ? ॥ ६९ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

मिथ्यादृष्टिसे लेकर अमयतमम्यगृष्टि तक उन्धक हैं । ये उन्धक हैं, शेष अउन्धक  
है ॥ ७० ॥

इस सूत्रके द्वारा सगृहीत अर्थोंका प्रकाश करते हैं— इन चारों प्रकृतियोंका उन्ध  
आर उदय दोनों माय व्युच्छिन्न होते ह, क्योंकि, असयतमम्यगृष्टि गुणस्थानमें दोनोंका  
विनाश पाया जाना है । इनका स्वोदय परोदयसे उन्ध होता है, क्योंकि, वे अधुवोदयी  
है । निरन्तर उन्ध होता है, क्योंकि, अधुअउन्धी है । इनके प्रत्यय तिरिक्खोंके पंचस्थानिक  
प्रकृतियोंके समान, ह । मिथ्यादृष्टि तिरिक्ख इन्हें चारों गणियोंसे संयुक्त, मासादनसम्यगृष्टि  
तीन गणियोंसे संयुक्त, तथा सम्यगिमियादृष्टि व असयतमम्यगृष्टि देवगणित्से संयुक्त

मिच्छत्तम्म सोदएणेन, गिरयाउ गिरयगइ-गिरयगइपाओग्गाणुपुञ्चीण परोदएणेन, सेमाण सोदय परोदएहि वधो । नपरि पचिंदियतिरिक्खत्तियम्मि एइदिय नीइदिय-तीइदिय चउ रिंदियजादि आदान धार सुहुम-साहारणाण परोदएण वधो । पचिंदियतिरिक्ख [ पञ्चत्त ]-जोणिणीसु अपञ्चत्तस्स परोदएण वधो । जोणिणीसु णवुमयवेदस्स परोदएण वधो । मिच्छत्त गिरयाऊण गिरतरो वधो, एगमएण वधस्सुनरमाभाजाने । सेमपयडीण वधो सातरो, एगसमएण वधनरमदसणादो । मिच्छत्त-णवुमयवेद हुटसठाण असपत्तमेउट्टमघडण गिरयगइ-गिरयगइ-पाओग्गाणुपुञ्ची एइदिय नीइदिय-तीइदिय-चउरिंदिय-आदान धार-सुहुम-अपञ्चत्त साहारणाण तेवण्ण पच्चया । जोणिणीसु एककानण्ण पचया । गिरयाउ-अस्म तिरिक्ख-पचिंदियतिरिक्ख पचिंदियतिरिक्खपञ्चत्तएसु एककानण्ण पच्चया । पचिंदियतिरिक्खजोणिणीसु एगणवचास पच्चया । मिच्छत्त चउगइसजुत्त, णवुसयवेद-हुडसठाणाणि तिगइसजुत्त, गिरयाउ-गिरयगइ गिरयगइपाओग्गाणुपुञ्चीओ गिरयगइसजुत्त, एइदिय-नीइदिय-तीइदिय-चउरिंदिय-आदान धार-सुहुम-साहारणे तिरिक्खगइसजुत्त, असपत्तमेवट्टसघडणमपञ्चत्त च तिरिक्ख-मणुसगइ सजुत्त मिच्छाडट्टी वधति । एदासिं पयडीण वनस्म तिरिक्खा सामी विवधद्धाण वधविणड्डाण

मिध्याह्नका स्वोदयसे ही, नारकायु, नरकगति और नरकगतिप्रायोग्यानुपूर्वीका परोदयसे ही, तथा शेष प्रकृतियोंका स्वोदय परोदयसे ही व ध होता है । विशेषतया यह है कि पचेन्द्रियादिक तीन प्रकारके तिर्यचोंमें पचेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय चतुरिन्द्रिय जानि, आताप, स्थावर, सूक्ष्म और साधारण प्रकृतियोंका परोदयसे बन्ध होता है । पचेन्द्रिय तिर्यच पर्याप्त और योनिमतियोंमें अपर्याप्तका परोदयसे बन्ध होता है । योनिमतियोंमें नपुंसकवेदका परोदयसे बन्ध होता है । मिध्याह्न और नारकायुका निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, एक समयमें इनके बन्धना विश्राम नहीं जाता । शेष प्रकृतियोंका व ध मान्तर होता है, क्योंकि, एक समयमें इनके बन्धका विश्राम देखा जाता है ।

मिध्याह्न, नपुंसकवेद, एण्डमस्थान, असप्राप्तखुपाटिकासहनन, नरकगति, नरक गतिप्रायोग्यानुपूर्वी, पचेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, आताप, स्थावर, सूक्ष्म, अपर्याप्त और साधारण, इनके तिर्यच प्रत्यय होते हैं । योनिमतियोंमें इक्यावन प्रत्यय होते हैं । नारकायुके तिर्यच, पचान्द्रिय तिर्यच और पचेन्द्रिय तिर्यच पर्याप्तोंमें इक्यावन प्रत्यय होते हैं । पचेन्द्रिय तिर्यच योनिमतियोंमें उनचाम प्रत्यय होते हैं ।

मिध्याह्नके तिर्यच मिध्याह्नको चारों गतियोंमें सयुक्त, नपुंसकवेद व हुण्ड स्थानको तीन गतियोंमें सयुक्त; नारकायु, नरकगति और नरकगतिप्रायोग्यानुपूर्वीको नरकगतिसे सयुक्त, पचेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, आताप, स्थावर, सूक्ष्म और साधारण, इनका नियमगतिसे सयुक्त तथा असप्राप्तखुपाटिकासहनन और अपर्याप्तका नियमगतिसे व मनुष्यगतिसे सयुक्त राघन हैं । इन प्रकृतियोंके

पंचिन्द्रियतिरिक्खअपज्जत्ता पंचणाणावरणीय णवदंसणावरणीय-  
सादासाद-मिच्छत्त-सोलसकसाय-णवणोकसाय-तिरिक्खाउ-मणुस्साउ-  
तिरिक्खगइ-मणुस्सगइ-एइंदिय-वीइदिय-तीइंदिय-चउरिंदिय-पंचिं-  
दियजादि ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीर-छसंउण-ओरालियसरीर-  
अंगोवंग छसंघडण-वणण-गंध-रस-फास-तिरिक्खगइ-मणुसगइपाओ-  
ग्गाणुपुब्बी-अगुरुगलहुग-उवघाद-परघाद-उस्सास-आदाउज्जोवि-दो-  
विहायगइ-तस-थावर-वादर-सुहुम पज्जत्त-पत्तेय-साहारणसरीर-थिरा-  
थिर-सुहासुह-सुगभ-[ दुभग- ] सुस्सर-दुस्सर-आदेज्ज-अणादेज्ज-जस-  
कित्ति-अजसकित्ति-णिमिण-णीचुच्चागोद पंचंतराइयाणं को वंधो को  
अबंधो ? ॥ ७३ ॥

सुगम ।

सव्वे एदे वंधा, अवंधा णत्थि ॥ ७४ ॥

शीणगिद्धितिय-मणुस्साउ-मणुस्सगइ-एइंदिय-वीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदियजादि-हुड-

पचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्तोमे पाच ज्ञानावरणीय, नौ दर्शनावरणीय, साता व असाता  
वेदनीय, मिध्यात्व, सोलह कपाय, नौ नोकपाय, तिर्यग्गायु, मनुष्यायु, तिर्यग्गति, मनुष्यगति,  
एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, पचेन्द्रिय जाति, औदारिक तैजस व कामर्ण शरीर,  
छह सस्थान, औदारिकशरीरारोगोपाग, छह सहनन, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, तिर्यग्गति व  
मनुष्यगति प्रायेतयानुपूर्वा, अगुरुलघु, उपघात, परघात, उच्छ्वास, आताप, उद्योत, दो  
विहायोगतिया, नम, स्थावर, वादर, सूक्ष्म, पर्याप्त, प्रत्येक, साधारणशरीर, स्थिर, अस्थिर,  
शुभ, अशुभ, सुभग, [ दुर्भग ], सुस्वर, दुस्वर, आदेय, अनादेय, यशकीर्ति, अयशकीर्ति,  
निर्माण, नीचगोत्र, ऊचगोत्र और पांच अन्तराय, इनका कौन बन्धक और कौन अबन्धक  
है ? ॥ ७३ ॥

। यह सूत्र सुगम है ।

ये सब पचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्त बन्धक हैं, अबन्धक नहीं हैं ॥ ७४ ॥

स्थानगृद्धिप्रय, मनुष्यायु, मनुष्यगति, एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय



बधति । तिरिक्खा सामी । बधद्वाण बधविणद्वाण च मुगम । मिच्छाइट्टिम्हि चउत्तिहो ।  
सेसगुणेषु तिबिहो, धुवामावादो ।

देवाउअस्स को बधो को अवधो ? ॥ ७१ ॥

मुगम ।

मिच्छाइट्टी सासणसम्माइट्टी असंजदसम्माइट्टी संजदासंजदा  
बंधा । एदे बधा, अवसेसा अवधा ॥ ७२ ॥

एदस्मरथो बुच्चदे— बधोदयाणमेन्ध पुन पच्छा वोच्छेदविचारो णत्थि, तिरिक्ख  
गइए देवाउअस्स उदयामानादो । परोदएण बधो, बधोदयाणमक्कमेण उत्तिविगेहादो ।  
णिरतरो, एगममाण बधुपरमाभावादो । तिरिक्ख-पच्चिदियतिरिक्ख-पच्चिदियतिरिक्खपज्जत्तएणु  
मिच्छाइट्टि-सामणसम्माइट्टि-अमजदसम्माइट्टि मजदामजदाण जहाकमेण एक्कावण्ण-छादल  
चादल-सत्तवीमपच्चया हेंति । जोणिणीमु एगूणचाम-चउवेदालीस-चालीस पचतीम  
पच्चया । सेस मुगम । सन्ने देवगइमजुत्त बधति । तिरिक्खा सामी । बधद्वाण बधविणद्वाण  
च मुगम । देवाउअस्स बधो सन्नेत्थ मादि-अद्दुवो, अद्दुववधिनादो ।

बाधते हैं । तिरिक्ख जीव इनके स्वामी हैं । बन्धा ज्ञान और बन्धविनष्टस्थान मुगम  
हैं । मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें चारों प्रकारका बन्ध होता है । शेष गुणस्थानोंमें तीन  
प्रकारका बन्ध है, क्योंकि, उनमें ध्रुव बन्धका अभाव है ।

देवायुका कौन बन्धक और कौन अवधक है ? ॥ ७१ ॥

यह सूत्र मुगम है ।

मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, असयतसम्यग्दृष्टि और मयतामयत बन्धक हैं । ये  
बन्धक हैं, शेष तिरिक्ख अवन्धक हैं ॥ ७२ ॥

इसका अर्थ कहते हैं— यहा बन्ध और उदयका पूर्ण या अध्यात् व्युत्प्रेद होनेका  
विचार नहीं है, क्योंकि, तिरिक्खगतिमें देवायुके उदयका अभाव है । देवायुना परोदयसे  
बन्ध होता है, क्योंकि, उसके बन्ध और उदय दोनोंके एक साथ अस्तित्वका विरोध है ।  
बन्ध निरन्तर होता है, क्योंकि, एक समयसे बन्धविधामका अभाव है । तिरिक्ख, पचेन्द्रिय  
तिरिक्ख और पचेन्द्रिय तिरिक्ख पर्याप्तकोंमें मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, असयत  
सम्यग्दृष्टि और सयतासयतोंके यथाक्रमसे इफवाचन, छयालीस, ध्यालीस और सैतीस  
प्रणय होते हैं । योनिमनियोंमें उनचाम, चयालीस, चालीस और पैंतीस प्रत्यय होते हैं ।  
शेष प्रत्ययरूपणा मुगम है । मय तिरिक्ख देवायुको देवगतिसे मयुन बाधते हैं । तिरिक्ख  
स्वामी हैं । बध्वाध्यान और बधविनष्टस्थान मुगम हैं । देवायुका बन्ध सर्वत्र सादि ब  
अधुष होता है, क्योंकि, यह अधुषबन्धी प्रकृति है ।

विचारेसु वि ओषादो णत्थि भेदो । जत्थत्थि त परूणेमो— मिच्छाइद्धिस्म तेवण्ण पच्चया, सासणे अट्टेत्तालीस, मम्मामिच्छादिद्धिम्हि वाएत्तालीस, अमजदसम्मादिद्धिम्हि चोदालीस, वेउत्त्रियदुग्गभागादो । मणुसिणीसु एण चेव । णत्तरि सच्चवगुणट्ठणेषु पुरिसि-णवुमयेवेदा, असजदसम्माइद्धिम्हि ओरालियमिस्स कम्मइया, जप्पमत्ते आहारदुग्ग णत्थि । मिच्छाइद्धी चउ-गत्सजुत्त, सासणे तिगइसजुत्त, उवरिमा देवगइसजुत्त मणुसगइसजुत्त च वधति ।

णिद्धानिदा-पयलापयला-वीणगिद्धि अणत्ताणुनधिचउक्क-इत्थिवेद तिरिक्ख्वाउ मणुसाउ-तिरिक्खगइ-मणुसगइ-ओरालियसरीर-चउसठाण-ओरालियसरीरअगोवग-पचसघडण-तिरिक्खगइ-मणुसगइपाओग्गाणुपुत्ति-उज्जोव-अप्पमत्थिनिहायगइ-दुभग-दुस्सर अणादेज्ज णीचागोदाणि ति एदाओ एत्थ वेट्ठणपयडीओ । ओपनेट्ठणपयडीहितो जेण मणुस्माउ मणुसदुग्ग ओरालियदुग्ग-वज्जरिसहस्रघडणेहि अधियाओ तेण पच्चिदियतिरिक्खनेट्ठणभगो ति वुत्त ।

एत्थ वीणगिद्धितिय इत्थिवेद-मणुस्साउ-मणुसगइ-ओरालियसरीर-चउसठाण-ओरालियसरीरअगोवग-पचसघडण मणुसगइपाओग्गाणुपुत्ती अप्पमत्थिनिहायगइ दुभग-दुस्सर-अणा-देज्जाण पुच्च वधो वोच्छिण्णो पच्छा उदओ । अणत्ताणुनधिचउक्कस्स वधोदया सम वोच्छि-

तया सादि आदि ऋषके विचारोंमें भी श्रेष्ठसे कोई भेद नहीं है। जहा भेद है उसे कहते हैं— मिथ्यादृष्टिके तिरपन प्रत्यय, सासादनमें अहतालीस, सम्यग्मिथ्यादृष्टिमें ध्यालीस और असयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें चत्रालीस प्रत्यय होते हैं, क्योंकि, यहा वैकिकियिक व वैभियिकमिथ्र प्रत्यय नहीं होते । मनुष्यनियोंमें इसी प्रकार प्रत्यय होते हैं । विशेष इतना है कि सत्र गुणस्थानोंमें पुरुष व नपुंसक वेद, असयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें औदारिकमिथ्र व कामर्ण, तथा अप्रमत्त गुणस्थानमें आहारदिक प्रत्यय नहीं होते । मिथ्यादृष्टि चारों गतियोंसे सयुक्त, सासादनसम्यग्दृष्टि नरकगतिके पिना तीन गतियोंसे सयुक्त और उपरिम जीव देवगतिसे सयुक्त व मनुष्यगतिसे सयुक्त वाधते हैं ।

निद्रानिद्रा, प्रचलाप्रचला, स्थानगृद्धि, अनन्तानुबन्धिचतुक्क, खीवेद, तिर्यगायु, मनुष्यायु, तिर्यग्गति, मनुष्यगति, औदारिकशरीर, चार सस्थान, औदारिकशरीरागोपाग, पाच सहनन, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, उद्योत, अप्रशस्त-विहायोगति, दुर्भंग, दुस्सर, अनादेय और नीचगोत्र, ये यहा द्विस्थानिक प्रकृतिया हैं । ओषद्विस्थान प्रकृतियोंसे चूकि यहा मनुष्यायु, मनुष्यगति, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, औदारिकद्विक और वज्जर्यभसहनन प्रकृतियोंसे अधिक है, अत एव ' पचेन्द्रिय तिर्यचोंकी द्विस्थान प्रकृतियोंके समान प्ररूपणा हे ' ऐसा कहा है ।

यहा स्थानगृद्धित्रय, खीवेद, मनुष्यायु, मनुष्यगति, औदारिकशरीर, चार सस्थान, औदारिकशरीरागोपाग, पाच सहनन, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, अप्रशस्तविहायोगति, दुर्भंग, दुस्सर और अनादेय, इनका पूर्वमें मन्ध व्युत्तिउन्न होना है, पश्चात् उदय । अनन्तानु

तिरिक्त्वा सामी । ऋषिद्वयं ऋषिद्वयं च सुगम । पञ्चानामारणीयं ऋषिद्वयं ऋषिद्वयं  
मिच्छत सोलसकसाय भव दुग्ध-तेजा-कम्मइयमरीर-वण्णचउफरु-अगुन्वल्हुन-उवपाद-  
णिमिण पचतराइयाण चउन्विहो वधो, धुनयधित्तादो ।

मणुसमगदीए मणुस मणुसपज्जत्त-मणुसिणीसु ओध णेयव्व जाव  
तिरथयरेत्ति । णवरि णिसेसो, वेट्टाणे अपच्चम्खाणावरणीय जथा  
पचिदियतिरिक्त्वाभगो ॥ ७५ ॥

एदस्सत्थो बुच्चदे — ओघम्मि जामिं पयडीण जे वयया परुण्णिदा ते चेय तासिं  
पयडीण नथया एव णि होति ति ओघमिदि उत्त । मव्यद्वेणेषु ओघते सपत्ते तण्णिमेह  
वेट्टाणियपयडीण अपच्चम्खाणावरणीयस्स च पचिदियतिरिक्त्वाभगो ति परुण्णिद । एदेण  
देसामामिण्ण सुइदत्थपरुण्ण कस्सामां । त जहा — पञ्चानामारणीय-चउदसणामारणीय  
जसकित्ति-उच्चागोद-पचतराइयाण गुणगयवधमामित्तेण, वधोदयाण पुच्च पच्छा वोच्छेद  
विचारेण, सोदय-परोदय सातर णिरतरनधविचारणाए, वधद्वयं वधविण्णद्वयं च सादि' आदि

वन्धाध्वान और वधविनष्टस्थान सुगम ह । पाच क्षानावरणीय, नौ दर्शनावरणीय, मिध्यात्व,  
सोह कपाय, भय, जुगुप्सा, तेजस व कामं शरीर, घर्णादिक चार, अगुन्ल्लु, उपघात,  
निमोण और पाच अन्तराय, इनका चारा प्रकारका वन्ध होता हे, कथंकि, धुनयन्धी ह ।

मनुष्यगतिमे मनुष्य, मनुष्य पर्याप्त एव मनुष्यनियोमें तीर्थकर प्रकृति तत्र ओघके  
समान जानना चाहिये । विशेषता इतनी है कि द्विस्थानिक प्रकृतियों और अपत्याख्याना  
वरणीयकी प्ररूपणा पचेन्द्रिय नियमोंके समान हे ॥ ७५ ॥

इस सूत्रका अर्थ कहते ह — ओघमें जिन प्रकृतियोंके जो वन्धक फहं गये ह वे  
ही उन प्रकृतियोंके वधक यहा भी ह, ईर्मीलिये सूत्रमें 'ओघके समान' ऐसा कहा हे ।  
सब स्थानोंमें ओघत्वके प्राप्त होनेपर उसके नियमार्थ 'द्विस्थानिक प्रकृतियों और  
अपत्याख्यानावरणीयकी प्ररूपणा पचेन्द्रिय नियमोंके समान ह' ऐसा कहा हे । इस  
देशामदाव सूत्रसे सूचित अर्थकी प्ररूपणा करते ह । यह इस प्रकार हे — पाच क्षाना  
वरणीय, चार दर्शनावरणीय, यक्षनीति, उच्चगोत्र और पाच अन्तराय, इनका गुणस्थानगत  
वधम्नामिन्, वध और उदयका पूर्व या पश्चात् व्युच्छेद होनेका विचार, सोदय  
परोदय वधका विचार, सातर निरन्तर वधका विचार, वधाध्वान और वधविनष्टस्थान

१ अ आपयो 'वधद्वयं वधविण्णद्वयं सादि' कावनी 'वधद्वयं वधविण्णद्वयं च सुगम सादि'  
इति पाठ । मन्वतो स्वीरतपात् ।

देवेहितो मणुस्मेसुप्पण्णाणमतोमुहत्तकाल गिरतरत्तुनलभादो । अउसेसाओ सातर वज्जति, एगसमएण वधुवरमदसणादो ।

एदामिं पन्चया दोसु वि गुणद्वारेणसु तिरिक्खवेद्वानियपयडिपच्चएहि तुल्ला । थीण-गिद्धितिय अणताणुनविचउक्क च मिन्डाडड्डी चउगइसजुत्त, इरिथेवेद दो वि गिरयगईए विणा तिगइमजुत्त, तिरिक्खाउ तिरिक्खगइ तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुञ्जी-उज्जोवाणि तिरिक्ख-गइसजुत्त, मणुस्साउ-मणुस्मगइ मणुस्मगइपाओग्गाणुपुञ्जीओ मणुसगइसजुत्त, ओरालियसरी-चउसटाण ओरालियसरीअगोवग-पचसघडणाणि तिरिक्ख मणुसगइमजुत्त अप्पसत्थविहायगइ-दुभग दुस्मर-अणादेज्ज णीचागोदाणि देवगईए विणा मिच्छाडड्डी तिगइमजुत्त, सामणो तिरिक्ख-मणुसगइमजुत्त नउ त्ति ।

सन्नासिं पयडीण वधस्म मणुमा मामी । वधद्वान वधविणइद्वान सादि-आदिविचारो वि ओघतुल्लो ।

णिहा पयलाण पुव्वपच्छानधोदयवोच्छेद-सोदयपरोदय-सातरगिरतर वधद्वानं वध-विणइद्वान सादि आदिनधपरिक्खा ओघतुल्ला । पन्चया मणुसगईए परूविदपच्चयतुल्ला । मिच्छाडड्डी चउगइसजुत्त, सामणमम्मादिडी तिगइसजुत्त, सेमा देवगइसजुत्त वधति ।

काल तक निरन्तरता पायी जाती है । शेष प्रकृतिया सान्तर वधती हैं, क्योंकि, एक समयमें उनके बन्धका निश्राम देखा जाता है ।

इनके प्रत्यय दोनों ही गुणस्थानोंमें तिर्यच्चोंकी द्विस्थानिक प्रकृतियोंके प्रत्ययोंके समान हैं । स्थानगृह्णित्रय और अनन्तानुबन्धचतुष्कको मिथ्यादृष्टि चारों गतियोंसे सयुक्त, खीरिदको मिथ्यादृष्टि २ सामादनमभ्यगृह्णित्रय दोनों ही नरकगतिके बिना तीन गतियोंसे सयुक्त, तिर्यगायु, तिर्यग्गति, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी और उद्योतको तिर्यग्गतिके सयुक्त, मनुष्यायु, मनुष्यगति और मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वीको मनुष्यगतिके सयुक्त, औदारिकशरीर, चार सस्थान, औदारिकशरीरारोपाण ओर पाच सहनन, इनको तिर्यग्गति व मनुष्यगतिके सयुक्त, तथा अप्रशस्तविहायोगति, दुर्भग, दुस्वर, अनादेय और नीचगोत्रको मिथ्यादृष्टि देवगतिके बिना तीन गतियोंसे सयुक्त व सासादन-सभ्यगृह्णित्रय तिर्यग्गति ण्य मनुष्यगतिके सयुक्त गधते ह । सब प्रकृतियोंके बन्धके मनुष्य स्वामी हैं । उन्धाध्यान बन्धनिप्रस्थान आर सादि आदिकका निचार भी ओघके समान है ।

निद्रा और प्रचलाना पूर्व या पश्चात् होनेवाला उन्धोदयव्युच्छेद, स्वोदय परोदय बन्ध, सातर निरन्तर बन्ध, बन्धाध्यान, बन्धनिप्रस्थान ओर सादि आदि बन्धकी परीक्षा ओघके समान है । प्रत्यय मनुष्यगतिके कहे हुए प्रत्ययोंके समान हैं । मिथ्यादृष्टि चारों गतियोंसे सयुक्त, सामादनमभ्यगृह्णित्रय तीन गतियोंसे सयुक्त, और शेष गुणस्थानवर्ती देव

ज्जनि, मासणे दोष्णमुच्छेददंमणादो । तिरिकखाउ- [ तिरिकखगड- ] तिरिकखगडपाओग्गाणु पुञ्जी उञ्जोवाण मणुस्सेसुदयाभावादो वधोदयाण पुञ्ज पञ्छा वोच्छेदविचारो णत्थि । णीवा मोदस्स पुञ्ज वणो पञ्छा उञ्जो वोच्छेदो, उधे मामणम्मि णट्टे सने पञ्ज मन्दासन्दम्मि उदयवोच्छेदसणादो ।

मणुस्साउ मणुस्सगर्दओ सोदण्णेण उचति । तिरिकखाउ तिरिकखगड-तिरिक्खाउ पाओग्गाणुपुञ्जी उञ्जोवाण परोदण्णेण, मणुस्सेसु एदामिमुदयाभावादो । अवमेमाओ पयहीओ सोदय-परोदण्ण चञ्जति, अद्दुओदयत्तादो काओ विग्गहमादीए उदयाभावादो का वि त्थेउदयादो ।

धीणगिद्धिनिय-अण्णाणुअचउत्तण्ण गिरत्तो वणो, उववधित्तादो । [ मणुस्साउ ] तिरिक्खाउआण पि गिरत्तो, एगममण्ण वधुवरमाभावादो । मणुस्सगडपाओग्गाणुपुञ्जी ओराण्णिये सरिरे ओराण्णियेअगोउगाण सात्तर गिरत्तो, सत्तव सात्तरम्म एदामि वधस्स आणदादि

बन्धवधुत्तका वध और उदय दोना साथ व्युच्छिन्न होते हैं, क्योंकि, सामादन गुणस्थानमें दानोंका व्युच्छेद देखा जाता है । तियगायु, [ तिर्यग्गानि ], तिर्यग्गतिप्रायोग्यानु पूर्वा और उद्योत, इनका वृत्ति मनुष्योंमें उदय होता नहीं है अत इनके वध और उदयक पून या पश्चात् व्युच्छेद होना यहा विचार नहीं है । नीचगोत्रका पूर्वमें वध और पश्चात् उदय व्युच्छिन्न होता है, क्योंकि, सामादनमें बन्धके नष्ट होने जानेपर पश्चात् सयता भयनमें उदयका व्युच्छेद देखा जाता है ।

मनुष्यायु और मनुष्यगति सौंदर्यस ही प्रती है । तियगायु, तिर्यग्गानि तिर्यग्गति प्रायोग्यानुपूर्वा और उद्योत प्रकृतिया परोदयसे ही बधती है, क्योंकि, मनुष्योंमें इनके उदयका अभाव है । शेष प्रकृतिया सौंदर्य परोदयस बधती है, क्योंकि, ये अधुनोदयी हैं तथा कि-होत्र निग्रहगतिमें उदयका अभाव है तो कि-हाका यहा ही उदय रहता है ।

अन्यान्युच्छिन्नय और अनन्तानुबन्धवधुत्तका निरन्तर वध होता है, क्योंकि, व धुन्य-धी प्रकृतिया है । [ मनुष्यायु ] और तिर्यग्गायुका भी निरन्तर वध होता है, क्योंकि, एक समयमें इनके वन्धना निश्चाम नहीं होता । मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वा, औदारिकशरीर और औदारिकशरीरगोपागका सान्तर निरन्तर वध होता है क्योंकि, इनके वन्धके सर्वथ सान्तर होनेपर भी आनतान्त्रि देवोंमेंसे मनुष्योंमें उत्पन्न हुए जीवाके अतर्मुहूर्त

सोलसकसाय णण्णोक्कमाय-तिरिक्खाउ मणुस्साउ तिरिक्खगड-मणुसगड एइदिय-वेइदिय-  
तीइदिय चउरिंदिय पचिंदियजादि ओरालिय तेजा कम्मइयसरीर ठसठाण ओरालियसरीरअगो-  
वग छसघडण णण्ण-गध रम फास तिरिक्खगड मणुमगडपाओग्गाणुपुच्ची अगुरुनलहुव-उवघाद-  
परघाद उस्सास आदाउज्जोअ दोविहायगड-तस-याअर-वाअर सुहुम पज्जत्त अपज्जत्त पत्तेय साधारण-  
सरीर [थिरा-]थिर सुहासुह सुभग दुभग सुस्सर दुस्सर आदेज अणदेज जसकित्ति अजमकित्ति-  
णिमिण-णीचुच्चागोद पचतराडयाणि त्ति एदाओ एत्थ वज्जमाणपयडीओ । एत्थ थीणगिद्धि-  
तिय इत्थि-पुरिसवेद-तिरिक्खाउ तिरिक्खगड-एइदिय-वीइदिय तीइदिय-चउरिंदियजादि-हुइ-  
सठाणनिरिहदपचसठाण-असपत्तमेअट्टवदिरित्तपचसघडण-तिरिक्खगडपाओग्गाणुपुच्ची-परघादु-  
स्सास आदावुज्जोअ-दोविहायगदि याअर सुहुम-पज्जत्त साहारण सुभग सुस्सर-दुस्सर-आदेज्ज-  
जसकित्ति-उच्चागोदाण उदयाभाअदो वधोदयाण सतामताण सण्णिकामाभाअदो पुच्च पच्छा  
वधोदयवोच्चेदपरिक्खा ण कीरेदे । सेसपयडीण पि वधस्सेअ एत्थ उदयस्स वोच्चेदाभावादो  
ण कीरेदे ।

पचणाणाअरणीय-चट्टुदसणाअरणीय मिच्छत्त णवुसयवेद मणुस्साउ मणुसगड-पचिंदिय-  
जादि तेजा-कम्मइय-णण्णचउक्क-अगुरुअलहुअ-तस-वाअर-अपज्जत्त-थिराथिर-सुभासुभ-दुभग-

व असाता वेदनीय, मिथ्यात्व, सोलह कपाय, नो नोक्कपाय, तिर्यगायु, मनुष्यायु,  
तिर्यग्गति, मनुष्यगति, एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय व पचेन्द्रिय  
जाति, औदारिक, तेजस व कामेण शरीर, छह सस्थान, औदारिकशरीरागो  
पाग, छह संहनन, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी, मनुष्य  
गतिप्रायोग्यानुपूर्वी, अगुरुलघु, उपघात, परघात, उच्छ्वास, आताप, उद्योत, दो  
विहायोगतिया व्रस, स्वाधर, वाअर, सूहम, पर्याप्त, अपर्याप्त, प्रत्येकशरीर, साधारणशरीर,  
स्थिर, अस्थिर शुभ, अशुभ, सुभग, दुभग, सुस्सर, दुस्सर, आदेय, अनादेय, यशकीर्ति, अयश  
कीर्ति, निर्माण, नीचगोत्र, ऊच्चगोत्र और पाच अन्तराय, ये यहा गध्यमान प्रकृतिया ह । इनमें  
स्थानशुद्धित्रय, र्शवेद, पुण्यवेद, तिर्यगायु, तिर्यग्गति, एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय,  
चतुरिन्द्रियजाति, हुण्टसस्थानसे रहित पाच सस्थान असंप्राप्तसृपाटिकासहननको  
छोडकर शेष पाच सहनन, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी, परघात, उच्छ्वास, आताप, उद्योत,  
दो विहायोगतिया, स्वाधर, सूहम, पर्याप्त, साधारण, सुभग, सुस्सर, दुस्सर, आदेय,  
यशकीर्ति वर उच्चगोत्र, इनका उदयाभाव होनेस विद्यमान गन्ध और अधिद्यमान उदयमें  
समानता न होनेके कारण पूर्य था पश्चात् होनेजाले गन्धोदय युच्छेदकी परीक्षा नहीं की  
जाती है । शेष प्रकृतियोंके भी गन्धके समान यहा उदयका व्युच्छेद न होनेसे उक्त परीक्षा  
नहीं की जाती ।

पाच ज्ञानाधरणीय, चार दर्शनाधरणीय, मिथ्यात्व, नपुसकवेद, मनुष्यायु,  
मनुष्यगति, पचेन्द्रियजाति, तेजस व कामेण शरीर, वर्णादिक चार, अगुरुलघु, व्रस,

मणुस्ता सामी ।

सादात्रेदणीयपरिक्रया त्रि मूलोघतुल्ला । णत्रि पच्चयभेदो सामिभेदो च णायव्यो ।  
मिच्छाद्विदी नामणमम्माद्विदी मादात्रेदणीय गिरयगड्ढेण त्रिणा तिगइसजुत्त, उवरिमा देवगइमहुत्त  
वधति । एव सब्वपेदेसु पच्चयमजुत्तमामित्तभेदो चेत्त । सो त्रि सुगमो । अण्णध मूलोघ  
पेच्छिदूण ण कोच्छि भेदो अत्थि त्ति ण परूनिज्जदे । णत्रि पच्चिदियत्तस जादराण वधो  
मिच्छाद्विद्विहि सोदओ सातर गिरतगे । मणुमपज्जत्तणनु अपज्जत्तणधो परोदओ । एव  
मणुसिणीसु वि वत्तव्व । णत्रि उन्नदाद परधाद-उस्साम पत्तेयसरीराणममज्जदमम्माद्विद्विहि  
सोदओ वधो । पुरिम णवुमयवेत्तण सव्वत्थ पगेदओ । इत्थिवेदस्म मोदओ । खण्णसेट्ठीए  
त्तिथयस्स णत्थि वधो, इत्थियेदेण सह खण्णसेट्ठीमारोहणे मभवामानादो ।

**मणुमअपज्जत्तण पच्चिदियतिरिस्सअपज्जत्तभगो ॥ ७६ ॥**

एद वज्जमाणपयडिमस्साण समाणत्त पेक्खिय पच्चिदियतिरिस्सअपज्जत्तभगो ति  
वुत्त । पन्नवट्टियणए अवल्लभिज्जमाणे भेत्ते उत्रलब्भदे । त जहा— पच्चणाणानरणीय णत्रसणा

गतिसे समुक्त याधते हैं । मनुष्य स्त्री भी है ।

सातावेदनीयकी परीक्षा भी मूलोघके समान है । विशेष यह है कि प्रत्यपभेद व  
स्वामिभेद जानना चाहिये । मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि सातावेदनीयको नरक  
गतिके चिन्ता तान गतियोंसे समुक्त, तथा उपरिम जीव देवगतिले समुक्त याधते हैं ।  
इस प्रकार नर पदोंमें प्रत्यपसमुक्त स्त्रामित्वभेद ही है । वह भी सुगम है । अन्यत्र  
मूलोघकी अपेक्षा और कुछ भेद नहा है, इसीलिये उसकी यहा प्ररूपणा  
नहीं की जाती । चिन्तेयता यह है कि पचेन्द्रिय, अस और वादरका वन्ध मिथ्यादृष्टि  
गुणस्थानमें स्त्रोदय और सातर निरन्तर होता है । मनुष्य पर्याप्तकोंमें अपर्याप्तका  
बन्ध परोदयमें होता है । इसी प्रकार मनुष्यनियोंमें भी कहना चाहिये । विशेषता  
केवल यह है कि उपघात परघात, उच्छ्वास और प्रत्येकरारीर, इनका असयतसम्यग्दृष्टि  
गुणस्थानमें स्त्रोदय वन्ध होता है । पुरुषवेद और नपुंसकवेदका सर्वत्र परोदय बन्ध  
होता है । स्त्रिवेदका स्त्रोदय वन्ध होता है । क्षपकश्रेणीमें तीर्थकरका वन्ध नहीं होता,  
क्योंकि, स्त्रिवेदके साथ क्षपकश्रेणी चरुनेकी सम्भावना नहीं है ।

मनुष्य अपर्याप्तोंकी प्ररूपणा पचेन्द्रिय तिर्यच अपर्याप्तोंके समान है ॥ ७६ ॥

यह वध्यमान प्रतियोंकी [१०९] सख्यासे समानताकी अपेक्षा करके 'पचेन्द्रिय  
तिर्यच अपर्याप्तोंके समान है' ऐसा कहा गया है । पर्याप्तोंके नयका अत्रलवन करने  
पर भेद पाया जाता है । वह इस प्रकार है— पाच शानावन्णीय, नौ वशीनावरणीय, साता

सोलसकसाय णणोअसाय-तिरिक्खाउ-मणुस्माउ तिरिक्खगइ-मणुमगइ एइदिय-वेइदिय-  
 तीइदिय चउरिंदिय-पचिंदियजादि ओरालिय तेजा कम्मइयसरीर छसठाण ओरालियसरीरअगो--  
 वग-छमघटण वण्ण-गध रम फास तिरिक्खगइ मणुमगइपाओग्गाणुपुञ्जी-अगुरुअलहुअ-उवपाद--  
 परघाद उस्सास आदाउज्जोअ दोविहायगइ-तस-थाअर-नादर सुहुम पञ्चत्त-अपञ्चत्त पत्तेय साधारण-  
 मरीर [धिग-]थिर सुहासुह सुभग दुभग सुस्सर दुस्सर आदेअ अणादेअ जसकित्ति अजसकित्ति-  
 णिमिण-णीचुच्चागोद पचतराडयाणि ति एदाओ एत्थ वज्जमाणपयडीओ । एत्थ थीणगिद्धि-  
 तिय इरिय-पुरिमवेद तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइ-एइदिय-चीइदिय तीइदिय-चउरिंदियजादि-हुड-  
 सठाणविरहिदपचमठाण-असपत्तमेअट्टअदिरित्तपचसघडण-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुञ्जि-परघाद-  
 स्सास आदावुज्जोअ-दोविहायगदि थाअर सुहुम-पञ्चत्त साधारण-सुभग सुस्सर-दुस्सर-आदेअ -  
 जसकित्ति-उच्चागोदाण उदयाभाअदो वओदयाण मतासताण सण्णिकासाभाअदो पुच्च पच्छा  
 वओदयवोच्छेदपरिक्खा ण कीरदे । सेसपयडीण पि वअस्सेअ एत्थ उदयस्स वोच्छेदाभावादो  
 ण कीरदे ।

पचणाणावरणीय-चदुदसणावरणीय मिच्छत्त णउसयवेद मणुस्माउ मणुसगइ पचिंदिय-  
 जादि तेजा-कम्मइय-वण्णचउत्तक-अगुरुअलहुअ-त्तम-नादर-अपञ्चत्त-यिरायिर-सुभासुभ-दुभग-

व असाता वेदनीय, मिथ्यात्व सोलह कपाय, नो नोऋणाय, तिर्यंगायु, मनुष्यायु,  
 तिर्यग्गति, मनुष्यगति, पचेन्द्रिय, हीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय व पचेन्द्रिय  
 जाति, औदारिक, तेजस व कामेण शरीर, छह सस्थान, औदारिकशरीरागो  
 पाग, छह सहनन, वण, गन्ध, रस, स्पर्श, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी, मनुष्य  
 गतिप्रायोग्यानुपूर्वी, अगुरुल्लु, उपघात, परघात, उच्छ्वास, आताप, उद्योत, दो-  
 विहायोगतिया त्रस, स्वाअर, नादर, सूक्ष्म, पर्याप्त, अपर्याप्त, प्रत्येकशरीर, साधारणशरीर,  
 स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुभग, दुर्भग, सुस्वर, दुस्वर, आदेय, अनादेय, यशकीर्ति, अयश  
 कीर्ति, निमाण, नीचगोत्र, ऊचगोत्र और पाच अन्तराय, ये यहा पध्यमान प्रकृतिया ह । इनमें  
 स्त्यानगुद्धिअय, खीवेद, पुणपत्रेअ, तिर्यंगायु, नियग्गति, पचेन्द्रिय, हीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय,  
 चतुरिन्द्रियजाति, हुण्टसस्थानसे रहित पाच सस्थान, असप्राप्तसुपाटिकासहननको  
 छोटकर शेष पाच सहनन, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी, परघात, उच्छ्वास, आताप, उद्योत,  
 दो विहायोगतिया, स्थाअर, सूक्ष्म, पर्याप्त, साधारण, सुभग, सुस्वर, दुस्वर, आदेय,  
 यशकीर्ति और उच्चगोत्र, इनमा उदयाभाव होनेने विद्यमान बन्ध और अपिद्यमान उदयमें  
 समानता न होनेके कारण पूर्ण या पश्चात् हानवाले बन्धोठय-अनु-त्रेदकी परीक्षा नहीं की  
 जाती हे । शेष प्रकृतियोंके भी बन्धके समान यहा उदयका न्युच्छेद न होनेने उक्त परीक्षा  
 नहीं की जाती ।

पाच क्षानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, मिथ्यात्र, नपुसकवेद, मनुष्यायु,  
 मनुष्यगति, पचेन्द्रियजाति, तजस व कामेण शरीर, वर्णादिक चार, अगुरुल्लु, त्रस,



अणादेज्ज अजसकित्ति णिमिण-णीचागोद पचतगइयाण मोदओ नधो । णिहा पयटा-सादासाद  
वीसकसाय-ओरालियसरी-हुडसठाण-ओरालियसरीरअगोवग-अमपत्तमेउट्टमवडण-मणुसाइ-  
पाओग्गाणुपुब्धि-उउघाद पत्तेयमरीराण मोदय परोदएण वधो, अद्वुवोदयत्तादो, कस्सिं च विग्गह  
भदीए उदयाभारादो एन्किस्से विग्गहगदीए चेउ उदयत्तादो । अवसेसाओ परोदएणव  
वञ्जति ।

पचणाणाउग्गीय णवदमणाउरणीय मिच्छत सोलमकसाय-भय-दुगुछा-तिरिस्स-मणु-  
स्माउ ओरालिय-तेजा कम्मइयसरी वण्ण गध रम फाम अगुरुअलहुअ उउघाद-णिमिण पचता-  
इयाण णिरतरो वधो, एत्थ वणेण धउज्वियादो । अवसेमाण सातरो नधो, एगममएण वधम्म  
विरामदसणादो । [ तिर्यग्गइ तिर्यग्गइपाओग्गाणुपुब्धी ] णीचागोदाण वधम्म सातर णिरंतत  
किण्ण उच्चदे ? ण, तेउ वाउक्काइयाण सत्तमपुद्धीणिरइयाण उ मणुमेसुपत्तीए अभावादो ।

वाटर, अपयोत्त, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, दुर्भंग, अनादेय, अयशकीति निर्माण,  
नीचगोत्र और पाच अन्तराय, इनका स्वोदय बन्ध होता है । निद्रा, प्रचला, साता व  
असाता वेदनीय, वीस कपाय, औदारिकशरीर, हुण्डसस्थान, औदारिकशरीरगोपाग,  
असमाप्तखुपाटिकासहनत, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, उपघात और प्रत्येकशरीर, इनका  
स्वोदय परोदयसे उच्च होता है, क्योंकि, ये अधुवोदयी प्रवृत्तिया हैं; तथा किन्हींका  
विग्रहगतिमें उदय नहीं रहता आर एकरा विग्रहगतिमें ही उदय रहता है । शेष प्रवृत्तिया  
परोदयसे ही वधती हैं ।

पाच ज्ञानाउरणीय, नौ दशनाउरणीय, मिध्यतत्र, सोलह कपाय, भय, जुगुप्सा,  
तियगायु, मनुष्यायु, औदारिक, तेजस व कामण शरीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पशे, अगुरुलघु,  
उपघात, निर्माण और पाच अन्तराय, इनका निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, बन्धकी  
अपेक्षा ये प्रवृत्तिया ध्रुव हैं । शेष प्रवृत्तियोंका सान्तर बन्ध होता है, क्योंकि, एक समयमें  
उनके बन्धका विध्राम देखा जाता है ।

शंका—[ तिर्यग्गति, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी और ] नीचगोत्रके बन्धमें सान्तर  
निरन्तरता क्यों नहीं कहने ?

ममाधान—नहा कहने, क्योंकि, तेजकाधिक व प्रायुकायिक जीवोंकी सातवीं  
पृथिवीके नारकियोंके समान मनुष्योंमें उपत्तिका अभाव है ।

१ अ-वापत्यो 'अवसगुदाआ', आशनी 'अवसगुदाआ इति पाठ ।

३ प्रविणु 'दउज्वियादो' इति पाठ ।

तिरिक्त्वापञ्जत्ताणं च पचया परूवेदव्वा । तिरिक्त्वापञ्जत्ताणं च पचया  
 चउरिदियजादि तिरिक्त्वापञ्जत्ताणं च पचयापञ्जत्ताणं च पचया  
 गइसहत्त वज्जति । मणुस्माउ मणुमगइपापोग्गापुत्त  
 अवसेसाओ पयडीओ तिरिक्त्वापञ्जत्ताणं च पचया  
 विणदुद्धाण मादिअत्तिपरूयणा च पचिदियनिग्गिस्त्तव

**देवगदीए देवेसु पचनाणावरणं**  
 वारसकसाय-पुरिसवेद-हसस रदि-अरदि-  
 पंचिंदियजादि-ओरालिय-तेजा-कम्मद-  
 लियसरीरअंगोवंग-वज्जरिसहसंघटण-  
 पुव्वि-अगुरुअलहुव उवघाद परघाद-  
 वादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर थिराथिर-गुहा-  
 कित्ति-अजसकित्ति णिमिण-उच्चागोद-  
 अवंधो ? ॥ ७७ ॥

सुगममेद ।

मिच्छाहृष्टिपहुडि जाव असंजदसम्माहृष्टी वंधा । एदे वंधा,  
अबंधा णत्थि ॥ ७८ ॥

देसामासियसुत्तमेत्, तेणेदेण सूददत्थपरूणण कस्सामो— मणुमगइ ओरालिय  
सरीर-अगोरगं वज्जरिसहमघडण मणुमगइपाओग्माणुपुब्बी अजमकित्तीणमुदयाभागादो वधो  
दयाण पुब्ब पच्छा वोच्छेदपरिक्खा ण कीरदे । ण सेमाण वि, नपस्सेन उदयम्म  
वोच्छेदामावादो ।

पचणाणानरणीय-चउदसणापरणीय-पचिदियजादि-तेजा कम्मइयसरीर वण्ण गध रस  
फास-अगुरुत्तहुअ-तम-नादर-पज्जत्त-यिराधिर सुभासुभ सुभग-आदेज्ज-जमकित्ति णिमिण  
उच्चागोद-पचतराइयाण सोदएणेन पधो । णिहा पयत्ता मादामाद-चारमकमाय पुरिसवेद-हस्स  
रदि-अरदि-सोग भय दुगुछाण सोदय परोदएण नपो, अद्दुवोदयत्तादो । समचउरससउण

यट सूत्र सुगम है ।

मिष्याहृष्टिमे लेकर असपतसम्यग्दृष्टि तक बन्धक है । ये बन्धक है, अबन्धक नहीं  
है ॥ ७८ ॥

यह सूत्र देशामशंभ है, इमलिचे इससे सूचित अर्थकी प्ररूपणा करते हैं— मणुप्य  
गति, औदारिकशरीर, आंगरिक्शरीरामोपाग, वज्रपभसंहनन मणुप्यगतिप्रायोग्यानु  
पूर्वी और अपशर्कानि इनके उदयका अभाज होनेसे उध और उदयके पुत्र या पश्चात्  
व्युच्छेद होनेकी परीक्षा नहीं की जाती है । शेष प्रकृतियोंकी भी यह परीक्षा नहीं की जाती,  
क्योंकि, य धके समान उनके उदयके व्युच्छेदका अभाज है ।

पाच पानापरणीय, चार दशनापरणीय, पचेन्द्रिय जाति, तैजस व कर्मण शरीर,  
घर्ष, गंध, रस स्पश, अगुरुत्तु, घन, यादर, पर्याप्त, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ,  
सुभग, आदेय, यशकोर्ति, निमाण, उच्चगात्र और पाच अन्तराय, इनका स्वोदयसे ही  
बध होता है । निद्रा, प्रचला, साता व अस्ताता वेदनीय गारह कपाय, पुरुषवेद, हान्य,  
रति, वरति, शोक, मय और जुगुप्सा, इनका स्वोदय परोदयसे बन्ध होता है, क्योंकि,  
ये अद्दुवोदयी प्रकृतिया हैं । समचतुरधसस्मान, प्रत्येकशरीर और उपघातका स्वोदय

१ कपटी ' धाराउपनीराम' इति पाठ ।

२ इति ' अद्दुवा अद्दुवादयत्ता' इति पाठ ।

पत्तेयसरीर उवघादाण सोदय परोदएण वधो, विग्गहगदीए उदयाभावादे । परघादुस्सास-पसत्थविहायगदि सुस्सराण सोदय परोदएण वधो, अपज्जत्तकाले उदयाभावे वि वधदसणादे । णवरि सम्मामिच्छाडिट्ठिस्म षट्ठासि मोदएण वधो । मणुम्मगइ ओरालियसरीर ओरालियसरीरअगो-वग-वज्जरिसहसघडण मणुस्माणुपुञ्ची-अजसकित्तीण परोदएणेव वधो, तत्थेदेसिमुदयविरोहादां ।

पचणानावणीय-उदसणावरणीय-चारसकसाय-भय दुगुळ ओरालिय तेजा कम्मइय-सरीर वण्ण गत्र म फास-अगुरुअलहुअ उवघाद उस्साम धादर-पज्जत्त पत्तेयसरीर णिमिण पच-तराइयाण णिरतरो वधो, देवगदीए वधविरोहाभावादे । मादासाद हस्स-रदि-अरदि-सोग-थिरायिर-सुभासुभ-जसकित्तीण सातरो वधो, एगसमएण वधत्रिरामुवलभादे । पुरिमवेद-सम-चउरममठाण-वज्जरिसहसघडण-पसत्थविहायगइ-सुभग-सुस्वर-आदेज्जुच्चागोदाण मिच्छाडिट्ठि-सासणसम्माइट्ठीसु सातरो वधो, एगसमएण वधत्रिरामदमणादे । सम्मामिच्छाडिट्ठि-असजद-सम्माइट्ठीसु णिरतरो, तत्थ पडिअक्खपयडीण वधाभावादे । पंचिंदियजादि-मणुस्सगइ-मणुस्माणुपुञ्ची-ओरालियसरीरअगोवग-तसाण मिच्छाडिट्ठि सातर-णिरतरो । सासणसम्मादिट्ठि-सम्मामिच्छादिट्ठि-असजदसम्मादिट्ठीसु णिरतरो, पडिअक्खपयडीण वधाभावादे । णवरि

परोदयसे बन्ध होता है, क्योंकि, विग्रहगतिमें इनके उदयका अभाव है । परघात, उच्छ्वास, प्रशस्तविहायोगति और सुस्वर, इनका न्योदय परोदयसे बन्ध होता है, क्योंकि, अपर्याप्तकालमें इनके उदयका अभाव होनेपर भी बन्ध देखा जाता है । विशेषता यह है कि सम्यग्मिथ्यादृष्टिके इनका न्योदयसे बन्ध होता है । मनुष्यगति, औदारिकशरीर, औदारिकशरीरानोपाग, वज्रपभसहनन, मनुष्यानुपूर्वी और अयशकीति, इनका परोदयसे ही बन्ध होता है, क्योंकि, देवोंमें इनके उदयका विरोध है ।

पाच क्षानावरणीय, छह दर्शनावरणीय, बारह कषाय, भय, जुगुप्सा, औदारिक, तैजस व कार्मण शरीर, र्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, उपजात, उच्छ्वास, नादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, निर्माण और पाच अन्तराय, इनका निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, देव-गतिमें इनके निरन्तर बन्धका विरोध नहीं है । साता व असाता वेदनीय, हास्य, रति, अरति, शोक, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ और यशकीति, इनका सान्तर बन्ध होता है, क्योंकि, एक समयमें इनके बन्धका विधाम पाया जाता है । पुरुषवेद, समचतुरस्रन्नस्थान, वज्रपभसहनन, प्रशस्तविहायोगति, सुभग, सुस्वर, आदेय और उच्चगोत्र, इनका मिथ्यादृष्टि व सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें सान्तर बन्ध होता है, क्योंकि, एक समयमें इनके बन्धका विधाम देखा जाता है । सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, यहाँ प्रतिपक्ष प्रवृत्तियोंके बन्धका अभाव है । पंचेन्द्रिय जाति, मनुष्यगति, मनुष्यानुपूर्वी, औदारिकशरीरानोपाग और प्रस, इनका मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें सान्तर निरन्तर बन्ध होता है । सामादनसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें इनका निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, यहाँ प्रतिपक्ष प्रवृत्तियोंके बन्धका अभाव है । विदोष इतना है कि मनुष्यादिकका सासादन गुणस्थानमें

तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइ-चउमउण-चउमउण तिरिक्खगइपाओग्गानुपुञ्जी-उज्जेव अप्पसत्थ-  
विहायगइ दुभग दुस्सर-अणादेज्ज णीचागोदाण देवेसुदयाभावादेो यधोदयाण पुत्र पच्छ  
येच्छेदपरिकमा ण कीरदे ।

अणत्ताणुअधिचउत्तिकत्थियेदा सोदय-परोदण, अवसेसाओ पयडीओ परोत्तणेषव  
पञ्जति । धीणगिद्धितिय-अणत्ताणुअधिचउत्तक तिरिक्खाउआण गिरतरो यधो । अवसेसाण  
सातरो, एगसमएण नधुअस्मुवलभादेो । कयावि दो तिणिममयादिकालपडिनद्धअपरमणादेो  
सातर गिरतरयधो किण्ण उच्चदे ? ण, एदासु पयडीसु गिरतरयधणियमामानादेो । एदामि  
पयडीण पच्चया देवगइचउट्टाणपयडिपच्चयतुल्ला । णवरि तिरिक्खाउअम्म पुच्चिलपच्चयसु  
वेडीअयमिस्स कम्मउयपच्चया अणोदच्चा । तिरिक्खाउ तिरिक्खगइ-तिरिक्खगइपाओग्गानु  
पु वी उज्जेवाणि तिरिक्खगइअत्त, अणसेसाओ पयडीओ मिच्छाडट्टी भासणसम्माडट्टी तिरिक्ख  
मणुसगइसलुत्त वधति, अविरोहादेो । देवा मामी । यधद्धान यधमिणइट्टाण च सुगम । धीण

स्थानगृद्धिअय, तिर्यगायु, तिर्यगति, चार सम्यन, चार सहनन, तिर्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी,  
उद्योत, अणशस्तविहायोगति, दुभग, दुस्सर, अणादेय और नीचगोत्र, इनका देवोंमें  
उदयापार होनेमें अन्व और उदयके पूव या पश्चात् व्युत्थेद होनेकी परीक्षा नहीं की  
जाती ।

अनन्तानुअधिचतुअ और अंबेद स्वोदय परोदयसे तथा शेष प्रकृतिया परो  
दयमें ही यधती हैं । स्थानगृद्धिअय, अनन्तानुअधिचतुअ और तिर्यगायुका निरन्तर यध  
होता है । शेष प्रकृतियोंका मान्तर यध होता है, क्योंकि, एक समयमें उनके यधका  
निधाम पाया जाता है ।

शुक्र—कदाचित् दो तीन समयाडि काअमे सयद्ध यधके देखे जानते  
मात्तर निरन्तर यध क्यों नहा कहते ?

ममाधान—तहा कहते, क्योंकि इन प्रकृतियोंमें निरन्तर अन्धके नियमका  
अभाव है ।

इन प्रकृतियोंके प्रत्यय देवगतिकी चतुस्थानिक प्रकृतियोंके प्रत्ययोंके समान हैं ।  
विशेषता केरल यह है कि तिपगायुके पूर्वोक्त प्रत्ययोंमें वैकृतियिकमिथ और कामेण प्रत्ययोंको  
कम करना चाहिये । तिर्यगायु, तिर्यगति, तिर्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी और उद्योत, इनकी तिर्य  
गतिसे संयुक्त, तथा शर प्रकृतियोंके मिच्छाददृष्टि च सासादनसम्यगदृष्टि तिर्यगति और  
अनुप्यगतिमें संयुक्त याधते हैं, क्योंकि, उसमें कोई विरोध नहीं है । देव स्वामी हैं । अन्वाप्यत

१ प्रत्यय ' यतो ' इति पाठ ।  
२ अन्वप्रत्ययी ' तिपसामाया ' इति पाठ ।

गिद्धितिय-अणताणुअधिउक्काण' मिच्छाइडिडिह् चउव्विहो वधो । सासणे दुविहो, अणादि-  
धुवत्ताभावादो । अवसेमाण पयडीण वधो सादि-अद्दुओ, अद्दुवअधित्तो ।

मिच्छत्त णवुंसयवेद-एडदियजादि-हुंडसठाण-असंपत्तसेवट्टसंघ-  
डण-आदाव-थावरणामाणं को वंधो को अवंधो ? ॥ ८१ ॥

सुगम ।

मिच्छाइट्टी वंधा । एदे वंधा, अवसेसा अवधा ॥ ८२ ॥

एदस्म अत्थो वुवेद — मिच्छत्तम्म वपोदया सम वोच्छिज्जति, मिच्छाइडिडिह् चैव  
तट्टुमयमुअलभिय उव्वि तदणुअलभादो । णणुमयवेद एडदियजादि-हुंडसठाण अमपत्तसेवट्टमय-  
डण आदाव थावरणमेत्थुदयाभावादो वपोदयाण पुत्वापुच्चोच्छेदपरिक्खा ण कीरेदि । मिच्छत्त  
मोदएण, अणाओ पयडीओ परोदएणेव नज्झति, तहोवलभादो । मिच्छत्त णिरतर नज्झइ,  
धुअधित्तो । अणराओ मातर नज्जति, एगमएण नधुवसुवलभादो । एदामि पच्चया

और बन्धनप्रस्थान सुगम हैं । स्थानगृह्णित्य और अतन्तानुबन्धित्तुष्का मिथ्यादृष्टि  
गुणस्थानमें चारों प्रकारका बन्ध होता है । सासादन गुणस्थानमें दो प्रकारका बन्ध होता  
है, क्योंकि, यहा अनादि और ध्रुव बन्धका अभाव है । शेष प्रकृतियोंका बन्ध सादि य  
अधुव होता है, क्योंकि, ये अधुवबन्धी प्रकृतिया हैं ।

मिथ्यात्व, नपुमकवेद, एकेन्द्रिय जाति, हुण्डमस्थान, अमप्राप्तसुपाटिकाबहनन,  
आताप और स्थावर नामकमौका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ ८१ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

मिथ्यादृष्टि बन्धक है । ये बन्धक हैं, शेष देव अबन्धक है ॥ ८२ ॥

इसका अर्थ कहते हैं— मिथ्यात्वका बन्ध और उदय दोनों साथमें व्युच्छिन्न  
होते हैं क्योंकि, मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें ही मिथ्यात्वका बन्ध और उदय दोनों पाये जाते  
हैं, ऊपर व नहीं पाये जाते । नपुमकवेद, एकेन्द्रिय जाति, हुण्डमस्थान, अमप्राप्तसुपाटिका  
बहनन, आताप और स्थावर, इनके उदयका यहा अभाव होनेसे बन्ध और उदयके पूर्व  
या पश्चात् व्युच्छेदकी परीक्षा नहीं की जाती । मिथ्यात्व प्रकृति स्वोदयसे और अन्य  
प्रकृतिया परोदयसे ही बधती हैं, क्योंकि, वैसा पाया जाता है । मिथ्यात्व प्रकृति निरन्तर  
बधती है, क्योंकि, ध्रुवबन्धी है । अन्य प्रकृतिया सान्तर बधती है, क्योंकि, एक समयमें

तिरिक्खाउ-तिरिक्खगड-चउमठाण-चउमघडण तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुन्वी-उज्जोव-अप्पमत्थ-  
निहाणगइ दुभग दुस्सर-अणादेज्ज णीचागोदाण देवेसुदयाभारादो षधोदयाण पुच्च पच्छ  
वेच्छेदपरिक्खा ण कीरदे ।

अणताणुअधिचउत्तिकत्थियेदा सोदय-परोदएण, अउमेमाओ पयडीओ परोदएणेव  
वज्जति । धीणगिद्धितिय-अणताणुअधिचउत्तिक निरिक्खाउआण गिरतरो षधो । अवसेसाण  
सातरो, णगमएण षधुअरमुवलमादो । कयावि दो तिण्णिममयादिकालपडिनद्धवधदसणादो  
सातर गिरतरवधो किण्ण उच्चदे ? ण, एदासु पयडीसु गिरतरवधणियमाभावादो । एदासि  
पयडीण पच्चया देअगइचउट्ठाणपयडिपच्चयतुल्ला । णवरि तिरिक्खाउअस्स पुच्चिहपच्चण्णु  
वेउत्तियमिस्स कम्मइयपच्चया अवणेदव्वा । तिरिक्खाउ-तिरिक्खगड-तिरिक्खगइपाओग्गाणु  
पुन्वी-उज्जोवाणि तिरिक्खगइसुत्त, अउसेसाओ पयडीओ मिच्छाइट्ठी मासणसम्माइट्ठी तिरिक्ख  
मणुमगइसज्जुन षधति, अविरोहादो । देवा मामी । अधट्ठाण अधविणट्ठट्ठाण च सुगम । धीण

स्वानुद्धिअय, तिर्यगायु, तिर्यगानि, चार मस्वान, चार सहनन, तिर्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी,  
उद्योत, अमरास्तविहारयोगनि, दुभग, दुस्सर, अनादेय और नीचगोत्र, इनका देवोंमें  
उदयामात्र होनेसे षध और उदयके पूष या पश्चान् व्युच्छेद होनेकी परीक्षा नहीं की  
जाती ।

अनन्तानुबन्धिअनुत्थ और खीवेद एतेभ्य परोदयसे तथा शेष प्रकृतिया परो  
दयमे ही षधनी है । स्वानुद्धिअय, अनन्तानुबन्धिअनुत्थ और तिर्यगायुका निरन्तर बन्ध  
होता है । शेष प्रकृतियोंका सान्तर षध होता है, क्योंकि, एक समयम उनके षधका  
विश्राम पाया जाता है ।

शका—कदाचित् दो तीन समयादि कालमे सयद्ध बन्धके देखे जानेसे  
सातर निरन्तर षध क्यों नहीं कहते ?

ममाधान—नहा कहते, क्योंकि इन प्रकृतियोंमें निरन्तर बन्धके नियमका  
अभाव है ।

इन प्रकृतियोंके प्रत्यय देवगानिनी अनुस्थानिक प्रकृतियोंके प्रत्ययोंके समान हैं ।  
विशेषता केरूप यह है कि तिर्यगायुके पूर्वोक्त प्रत्ययोंमें वैश्वियिकमिथ और कामेण प्रत्ययोंको  
कम करना चाहिये । तिर्यगायु, तिर्यगानि, तिर्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी और उद्योत, इनको तिर्य  
गतिमे सयुक्त, तथा शेष प्रकृतियोंको मिथ्यादाएि च सासादनसस्यगदाएि तिर्यगति और  
मनुष्पगनिस सयुक्त याघते है, क्योंकि, उन्में कोई निरोध नहीं है । देव भवामी हैं । वन्धाध्वान

१ प्रत्यय ' सोवो ' इति पाठ ।

२ अकारयो ' गियमात्तावा ' इति पाठ ।

ओरालियमिस्स-प्रेउवियमिस्स कम्मडय-णउंमयेनेदपचयाणमभावाणे । मणुमगडसजुत्त । देवा  
सामी । वपद्वाण वधाभावाद्वाण च सुगम । मम्मामिच्छत्तगुणेण जीवा किण्ण मरति ? तत्थाउअस्स  
वधाभावाद्दे । मा वरउ आउअ, पुन्मण्णगुणद्वाणम्हि जाउअ' नधिय पच्छ मम्मामिच्छत्त  
पडिबज्जिय तेण गुणेण ण्ण' काल केरदि ? ण, जेण गुणेणाउअधो मभन्दि तेणेण गुणेण  
मग्दि, ण अण्णगुणेणेत्ति परमगुरूवदेसादे । ण उअमामेहि अण्येतो, मम्मत्तगुणेण आउअ-  
वधात्रिरहिणा णिम्मग्णे निगेहाभावादे । सादि अद्धुवो वेगे, अद्धुवनत्तिदादे ।

तित्थयरणाकम्मस्स को वंधो को अवंधो ? ॥ ८५ ॥

सुगम ।

असंजदमम्माइट्ठी वंधा । एदे वंधा, अवसेसा अवंधा ॥ ८६ ॥

प्रयोगका जभाव है । मनुष्यायुको मनुष्यगतिमें संयुक्त बाधते हैं । देव स्वामी हैं ।  
यदि प्रश्नान और बन्धविनाष्टस्थान सुगम है ।

शुद्धा—सम्यग्मिथ्यात्व गुणस्थानके साथ जीव क्या नहीं मरता ?

समाधान—चूंकि इस गुणस्थानमें आयुके बन्धका जभाव है, अतएव जीव यहाँ  
मरण नहीं करते ।

शुद्धा—यहाँ आयुबन्ध भल ही न हा, फिर भी पहिले अन्य गुणस्थानमें आयुको  
पधकर ओर पश्चान सम्यग्मिथ्यात्वको प्राप्तकर उस गुणस्थानके साथ तो निश्चयत मरण  
कर सकता है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि जिस गुणस्थानके साथ आयुबन्ध सम्भव है उसी  
गुणस्थानके साथ जीव मरता है, अन्य गुणस्थानके साथ नहीं, केन्ना परमगुरूका उपदेश है ।

इस नियममें उपशामकोंके साथ अनेकान्तिक दोष भी सम्भव नहीं है, क्योंकि,  
आयुबन्धके अत्रिरोधी सम्यक्त्वगुणके साथ निकलनेमें कोई विरोध नहीं है । (देखो  
जीवस्थान-चूल्का ९, सूत्र १३० की टीका) ।

मनुष्यायुका बन्ध साद्वि, व अधुव होता है, क्योंकि, यह अधुवबन्धी है ।

तीर्थंकर नामकर्मका कौन बन्धक और कौन अवन्धक है ? ॥ ८५ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

असयतसम्यग्दृष्टि देव बन्धक हैं । ये बन्धक हैं शप नेव अवन्धक हैं ॥ ८६ ॥

१ प्रतिपु 'जाउअवधिय' इति पाठ ।

२ पन्ती 'गुणणोण', आ-कात्तो 'गुणणणोण' इति पाठ ।



देवचउद्वाणपपडिपच्चयतुल्ला । मिच्छत्त-णउसयेवेद-हुडमंठाण असपत्तसेउत्तसपडणाणि तिरिकव  
मणुमगइसजुत्त, एइदियत्तादि आदान वाराणि तिरिकखगइमहुत्त वञ्चि, सामानियादो ।  
देवा सामी । बवद्धाण बधणिणइद्वाण च सुगम । मिच्छत्तम्म वधो चउत्तिहो, धुवभित्तादो ।  
मेमाण सादि-अद्धो, अद्धवभित्तादो ।

मणुस्साउअस्स को वंधो को अवधो ? ॥ ८३ ॥

सुगम ।

मिच्छाइट्ठी सासणसम्माइट्ठी असजदमम्माइट्ठी वधा । एदे  
बंधा, अवसेसा अवंधा ॥ ८४ ॥

एदम्म अन्धो चुचवे— देवेसु मणुम्माउअस्स उदयाभारादो वधोदयाण पुत्रावर  
वोन्टणपरिक्रमा णत्थि । परोदण पति, मणुस्साउअस्स देवेसु उदयभावरिगेदो ।  
गिरतरो वधो, एगममएण उधुवग्गाभारादो । मिच्छादिट्ठि सासणसम्मादिट्ठि-असजदमम्मा  
दिट्ठीण जहाकमेण पचाम पचेत्तानीम [ एकेत्तानीम ] पच्चया, सग-सगोधपच्चएसु ओरात्थिय

उनका बन्धविधायक पत्था जाता है । इन प्रकृतियाँ प्रत्यय देवोंकी चतुस्थानिक प्रकृतियोंके  
प्रत्ययोंके समान हैं । मिथ्या, नपुंसकपद, हुण्डमस्थान और असप्राप्तछुपाटिकासहन,  
य तिर्यग्गति य मनुष्यगतिमे समुत्त, न या एकेत्थियजाति, आताप और स्थावर, ये त्रिय  
गतिसे समुक्त बधनी हैं, क्योंकि, ऐसा स्वभाव है । देव स्वामी हैं । बन्धाध्वान और वध  
विनष्टमान सुगम हैं । मिथ्यापका बन्ध चाल प्रकार होता है, क्योंकि, यह धुवबन्धी है ।  
नेव प्रकृतियाँ वच सादि न अवयु होता है क्योंकि, ये अवयुबन्धी हैं ।

मनुष्यायुका कौन बन्धक और कौन अवन्धक है ? ॥ ८३ ॥

यह मनु सुगम है ।

मिथ्यादिष्टि, सामादनमम्यग्दष्टि और अमयामम्यग्दष्टि बन्धक हैं । ये बन्धक हैं, वेप  
नेव अवन्धक है ॥ ८४ ॥

इम सूत्रका अर्थ कहते हैं— देवोंमें मनुष्यायुका उदय न होनेसे पूर्व या पश्चात्  
बन्धादयपुच्छेदकी पराधा नहीं है । मनुष्यायुको परोदयसे राधते हैं, क्योंकि, देवोंमें  
मनुष्यायुके उदयका विरोध है । वन्ध उसका निम्तर होता है, क्योंकि, एक समयमें  
बन्धविधायकका धभाव है । मिथ्यादिष्टि, सामादनमम्यग्दष्टि और अमयामम्यग्दष्टि  
देवोंके बन्धाक्रमसे पचास, पचास [ और इकतालीस ] प्रत्यय होते हैं, क्योंकि, अपने अपने  
ओपप्रत्ययोंमें यहा ओदारिक, अकारिकमिध, वैत्रियिकमिध, कामेण और नपुंसकपदे

भावदो । पचिंदिय तसणामाओ मिच्छादिट्ठिन्दिह सांतर घञ्जइ, एइदिय-थानरपडिवक्खपयडीण  
सभवादो । मणुसगइ-मणुसगइपाओग्गाणुपुच्चीओ मिच्छादिट्ठि मासणसम्मादिट्ठिणो सातर  
वधति । ओरालियसरीरअगोवग मिच्छाइट्ठिणो सातर वधति । एसो भेदो सतो वि ण कहिदो ।  
एवविध भेद सतमकहतस्स कथ सुत्तभाओ ण फिट्ठे ? ण एस दोसो, देसामासियसुत्तेसु  
एवविहभावाविरोहादो ।

## सोहर्मीसाणकप्पवासियदेवाणं देवभंगो ॥ ८८ ॥

एदस्स अत्थो— जथा देवोषमि सच्चपयडीओ परूविदाओ तथा एत्थ नि परूवे-  
दव्याओ । एदमपणासुत्त देसामासिय, तेणेदेण सूइदरथो उच्चदे— पचिंदिय-तसणामाओ  
मिच्छाइट्ठी देवोषमि सातर णिरतर वधति, मणक्कुमाराटिसु एइदिय-थावरवधाभवेण णिर-  
तरयधोवलभादो । एत्थ पुण सातरमेव वधति, पडिवक्खपयडिभाअ' पडुच्च एगसमएण

और प्रस नामकर्म मिध्यादृष्टि गुणस्थानमें सान्तर वधते ह, क्योंकि, उक्त देवोंके इस  
गुणस्थानमें एकेन्द्रिय जाति ओर स्थावर रूप प्रतिपक्ष प्रकृतियोंकी सम्भावना है ।  
मनुष्यगति और मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वकीको मिध्यादृष्टि व सासादनसम्यग्दृष्टि सान्तर  
वाधते ह । ओदारिकशरीरागोपागको मिध्यादृष्टि सान्तर वाधते है । यद्यपि उच्चमान  
प्रकृतिभेदके साथ यह भेद भी है, तथापि देशामर्शक होनेसे यह सूत्रमें नहीं कहा गया ।

शंका—इस प्रकारके भेदके होनेपर भी उम्मे न कहनेवाले वाक्यका सूत्रत्व क्यों  
नहीं नष्ट होता ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं, क्योंकि, देशामर्शक सूत्रोंमें इस प्रकारके  
स्वरूपका कोई विरोध नहीं ह ।

मौवर्म व ईशान कल्पवासी देवोंकी प्ररूपणा सामान्य देवोंके समान है ॥ ८८ ॥

इस सूत्रका अर्थ— जिस प्रकार सामान्य देवोंमें सब प्रकृतियोंकी प्ररूपणा की  
गई है, उन्नी प्रकार यहा भी प्ररूपणा करना चाहिये । यह अर्पणासून देशामर्शक है,  
इसलिये इसके द्वारा सूचित अर्थको कहते हैं— पचेन्द्रिय जाति और प्रस नामकर्मको  
मिध्यादृष्टि देव देवोषमें सान्तर निरन्तर वाधते ह, क्योंकि, सनत्कुमारादि देवोंमें एकेन्द्रिय  
और स्थावर प्रकृतियोंके वधना अभान होनेसे निरन्तर उन्ध पाया जाता है । परन्तु  
यहां उन्हें सान्तर ही वाधते है क्योंकि, प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके सद्भावकी अपेक्षा करके

एत्थ षधोदययोच्छेदत्रिचरो णत्थि, उदयाभावादो । नेणेन काण्णेण' परोदाण वञ्छइ ।  
णिरत्तो नित्थयरनधो, एगसमएण वधुरमाभावादो । दसणनिमुज्झदा-लद्धिमवेगमयण्णादा  
अरहताइरिय-उहुसुद-पवयणभत्तीओ तित्थयरकम्मस्स त्रिसेमपच्चया । सेम सुगम । मणुमाइ  
सज्जतो षधो । देस मामी । चरद्धाण सुगम । एत्थ न त्रिणासां णत्थि । गादि-अट्ठो षधो,  
अणादि धुवमाणेण अत्रद्धिदकारणाभावादो ।

भवणवासिय वाणवेतर जोदिसियदेवाणं देवभंगो । णवरि  
विसेसो तित्थयर णत्थि ॥ ८७ ॥

एदेण सुत्तेण देसामामिएण ' नित्थयर णत्थि ' त्ति नज्जमाणपयडिभेरो चव  
परुविदो पुहुसुचारणाए । ममचउग्गममठाण उरपाद पग्पाद उस्सास-पत्तेयमरर-यसन्थविहाय  
गदि सुस्सणासाओ अमजदमम्मादिट्ठिम्हि सोदण्णेण नज्जति । वेउत्त्रियमिस्स कम्मइयपच्चयण  
अमजदसम्मादिट्ठिम्हि अणोदत्त्वा, भवणवासिय वाणवेतर जोदिसिएसु सम्मादिट्ठीणमुत्तरादा

यहा तीर्थकर नामकक न धोइययुच्छेदका विचार नहा ह, क्योंकि, देवोंमें  
उसके उदयका अभाव है । इसी कारण वह परोदयसे उचती ह । तीर्थकर प्रकृतिका उच  
निरन्तर होता है, क्योंकि, एन समयसे उसके वनप्रविधासका अभाव है । दर्शनप्रशुद्धता,  
लघिसयोगसम्पन्नता, अरहन्तभक्ति आचार्यभक्ति, यहुधुतभक्ति और प्रयत्नभक्ति, ये  
तीर्थकर कर्मके त्रिदोष प्रत्यय हैं ( जो सूत्र ८७ में विस्तारसे कहे जा चुके हैं ) ।  
शेष प्रत्यय सुगम है । मनुष्यगतिसे सयुक्त बन्ध होता है । देव स्वामी है । उच्चाध्यान  
सुगम है । यहा व-वधितान नहा है । गादि व-अधुन बन्ध होता है, क्योंकि, अनादि व  
धुय रूपसे अस्थिर रहनेके कारणोंका अभाव है ।

भवनवासी, वानज्यन्तर और ज्योतिषी देवोंकी प्ररूपणा सामान्य देवोंके समान ह ।  
विशेषता केवल यह है कि इन देवोंके तीर्थकर प्रकृतिका बन्ध नहीं होता ॥ ८७ ॥

इस वशामागक सचके द्वारा ' तीर्थकर प्रकृतिका बन्ध नहीं होता ' इस पृथक्  
उच्छारणासे कचत्र ग्रध्यमान प्रकृतियोंका अर्थ ही कहा गया है । समचतुरस्रसस्थान,  
उपघात, परघात, उच्छ्रान्त, प्रत्येकशरीर, प्रशस्तप्रिहायोगनि और सुस्वर नामकर्म  
अस्यतसम्यग्दष्टि गुणस्थानमें स्वोदयसे ही उचते हैं । वैश्विधिकमिध और कामण  
प्रत्ययोंकी अस्यतसम्यग्दष्टि गुणस्थानमें कम करना चाहिये क्योंकि, भवनवासी,  
धान्यन्तर और ज्योतिषी देवोंमें सम्यग्दष्टियोंकी उत्पत्तिका अभाव है । पचेन्द्रिय जाति

१ अक्षरया ' काउण , आरत्त ' काण्ण ' इति पाठ ।

२ भवणनिष् णत्थि तित्थयर ॥ गो क १२३ जित्ठिणा वाद भवण वणे ॥ कम्मपथ ३, १२

३ अत्रिउ ' वदयुत्तरणाए ' इति पाठ ।

षधामावादा ।

आणद जाव णवगेवेज्जविमाणवासियदेवेसु पंचणाणावरणीय  
छदंसणावरणीय-सादासाद-वारसकसाय-पुरिसवेद-हस्स-रदि-भय-  
दुगुंछा-मणुसगइ-पचिदियजादि-ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीर-सम-  
चउरससंठाण-ओरालियसरीर-अगोवग-वज्जरिसहसंधण-वण्ण गंध-रस-  
फास-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वी-अगुरुवलहुव-उवघाद-परघाद-उस्साम-  
पसत्थविहायगइ-तस-वादर पज्जत्त पत्तेयसरीर-थिराथिर-सुहासुह-सुभग-  
सुस्सर-आदेज्ज जसकित्ति-अजसकित्ति-णिमिण पंचतराडयाण को वंधो  
को अबंधो ? ॥ ९० ॥

सुगममेद ।

मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव असंजदसम्मादिट्ठी वधा । एदे वंधा,  
अबंधा णत्थि ॥ ९१ ॥

एदेण सूइदत्थे भणिम्मामो— मणुमगड-ओरालियसरीर-अगोवग-वज्जरिसहसंधण-

छोड़कर नियमगतिद्विक्रम बंधका अभाव है ।

जानत कल्पमे लेकर नव त्रैवेयक तक निमानवासी देवोंमें पाच ज्ञानावरणीय, छह  
दर्शनावरणीय, माता न अमाता वेदनीय, नारह कयाय, पुरुषवेत्, हास्य, रति, भय, जुगुप्सा,  
मनुष्यगति, पचेन्द्रिय जाति, औदारिक, तेजस न कार्मण शरीर, समचतुरस्रमस्थान, औदारिक-  
शरीरारोगोपाग, वज्रर्षभमहनन, वर्ण, मन्त्र, रम, स्पर्श, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, अगुरुलुब्ध,  
उपघात, परघात, उच्छ्र्वाम, प्रशस्तनिहायोगति, नस, चादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, स्थिर,  
अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुगम, सुस्वर, आदेय, यशकीर्ति, अयशकीर्ति, निर्माण और पाच  
अन्तराय, इनका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ ९० ॥

यह सूत्र सुगम है ।

मिथ्यादृष्टिसे लेकर असयतसम्यग्दृष्टि तक बन्धक हैं । ये बन्धक हैं, अबन्धक नहीं  
हैं ॥ ९१ ॥

इस सूत्रके द्वारा सूचिन अर्थोंको कहते हैं—मनुष्यगति, औदारिकशरीरारोगोपाग,

वधुत्तरमदसणादौ । मिच्छादिद्वि सासणमम्मादिद्विणो मणुसगइदुग देवोघम्मि सातर गिरतर  
 वधति, सुक्कलेस्सिएसु मणुसगइदुगस्म गिरतरवधदसणादौ । एत्थ पुण मातर वधति,  
 मणुसगइदुगगिरतरवधकारणाभावात्ते । जोरालियसरीरअगोवग देवोघम्मि मिच्छाइद्वी सातर  
 गिरतर वधति, सणक्कुमारदिमु गिरतरवधुवल्लाभादौ । एत्थ पुण सातरमेव, धावरवधकाले  
 अगोवगस्म उभाभावादौ ति ।

सणक्कुमारप्पहुडि जाव सदर-सहस्मारकप्पवासियदेवाण पढ  
 माए पुढवीए णेरइयाण भगो ॥ ८९ ॥

परि एव पुरिमवेदस्म सोदण्ण ववो, अणवेदस्सुदयाभावादौ । णउसयवेदस्म  
 पढमाए पुढवीए सोदण्ण उभा, एत्थ पुण परोदण्ण । पच्चएसु णउसयवेदो इथियेदण  
 सह अणवेदो । सामणमम्माइद्विहि पेटवियमिस्स-कम्मइयपच्चया पन्निस्सविद्व्वा, णेरइय  
 सासणेसु तेमिमभावादौ । मदर महस्मारदेवेसु मिच्छाइद्वि-सासणमम्मादिद्विणो मणुसगइदुग  
 सान्तर गिरतर' वधति, तत्थनणसुक्कलेस्सिएसु मणुसगइदुग मोत्तण तिरिक्कसगइदुगस्म

एव समयसे उन्विश्राम ग्खा जाता है । मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्पगृष्टि  
 मनुष्यगतिद्विक्रम वधाघमें सातर निरन्तर बाधते हैं, क्योंकि, सुक्कलेदयावालमें  
 मनुष्यगतिद्विक्रम निरन्तर बन्ध देखा जाता है । परन्तु यहाँ सान्तर बाधने ह, क्योंकि,  
 मनुष्यगतिद्विषये निरन्तर बाधके कारणोंका अभाव है । औदारिकशरीरागोपागको  
 देवोघमें मिथ्यादृष्टि सातर निरन्तर बाधते ह, क्योंकि, सन्तुमारदि देवोंमें निरन्तर  
 बाध पाया जाता है । परन्तु यहाँ सातर ही बाधने है, क्योंकि, धावरउत्खंडकालमें  
 आगोपागका बन्ध नहीं होता ।

सन्तुमारसे लेकर शतार-सहस्रार तक कल्पवासी देवोकी प्ररूपणा प्रथम पृथिवीके  
 नारकियोंके समान है ॥ ८९ ॥

त्रिोप इतना है कि यहाँ पुरूपवेदका स्त्रोदयम बन्ध होता है, क्योंकि, अय  
 वेदक उदयका अभाव है । नपुनकउदका प्रथम पृथिवीमें स्त्रोदयमे बन्ध होता है । परन्तु  
 यहाँ उसका परोन्त्यमे बन्ध होता है । प्रत्ययोंमें नपुनकवेदकी स्त्रीवेदके साथ कम करना  
 चाहिये । सासादनसम्पगृष्टि गुणस्थानम यहाँ वैत्रियिकमिथ और कामेण प्रत्ययोंको  
 जोड़ता चाहिये, क्योंकि नारकी सासादनसम्पगृष्टियोंमें उतका अभाव है । शतार  
 सहस्रारकल्पवासी देवोंमें मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्पगृष्टि मनुष्यगतिद्विक्रमो सान्तर  
 निरन्तर बाधते हैं, क्योंकि, उन कल्पोंके सुक्कलेदयावाले देवोंमें मनुष्यगतिद्विक्रमो

पथाभावादो ।

आणद जाव णवगेवेज्जविमाणवासियदेवेषु पंचणाणावरणीय-  
छदंसणावरणीय-मादासाद-चारसकसाय-पुरिसवेद-हस्स-रदि-भय-  
दुगुंछा-मणुसगइ-पंचिंदियजादि-ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीर-सम-  
चउरमसंउण-ओरालियसरीर-अगोवंग-वज्जरिसहसंघडण-चण्ण गंध-रस-  
फास-मणुसगइपाओरगाणुपुव्वी-अगुरुवलहुव-उवघाद-परघाद-उस्सास-  
पसत्थविहायगइ-तस-चादर पज्जत्त पत्तेयसरीर-थिराथिर-सुहासुह-सुभग-  
सुस्सर-आदेज्ज जसकित्ति-अजसकित्ति-णिमिण पंचंतराइयाणं को वंधो  
को अबंधो ? ॥ ९० ॥

सुगममद ।

मिच्छाडट्टिप्पहुडि जाव असजदसम्मादिट्ठी वंधा । एदे वंधा,  
अबंधा णत्थि ॥ ९१ ॥

एदेण सुइदत्थे भणिस्सामो— मणुसगइ-ओरालियसरीर-अगोवंग-वज्जरिसहसंघडण-

छोड़कर नियमगतिद्विक्रम घन्धका अभाव है ।

जानत रूपमे लेकर नत्र त्रैवेयक तक विमानवामी देत्रमे पाच ज्ञानावरणीय, छद  
दर्शनावरणीय, साता व अमाता वेदनीय, चारह कपाय, पुरुषवेद, हास्य, रति, भय, लुगुप्सा,  
मनुष्यगति, पचेन्द्रिय जाति, औदारिक, तैजम व कार्मण शरीर, समचतुरममम्यान, औदारिक-  
शरीरागोपाग, वज्रपंभमहनन, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, मनुष्यगतिप्रायोगयानुपूर्वी, अगुरुलघु,  
उपघात, पघात, उच्च्वात, प्रशस्तविहायोगति, प्रस, चादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, स्थिर,  
अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुगम, सुस्वर, आदेय, यशकीर्ति, अयशकीर्ति, निर्माण और पाच  
अन्तराय, इनका कौन घन्धक और कौन अचन्धक है ? ॥ ९० ॥

यह सूत्र सुगम है ।

मिथ्यादष्टिम लेकर अमयतसम्यग्दष्टि तक घन्धक हैं । ये घन्धक हैं, अचन्धक नहीं  
हैं ॥ ९१ ॥

इस सूत्रके द्वारा सूचित अर्थोंको कहते हैं—मनुष्यगति, औदारिकशरीरागोपांग,

धनुवसदसणादौ । मिच्छादिद्वि मासणमम्मादिद्विणो मणुसगडदुगं देवोषमि सातर-णिगतर  
 वधति, मुक्कलेस्सिएसु मणुसगडदुगस्स णिरतरवधसणादौ । एत्थ पुण सातर वधति,  
 मणुसगडदुगणिरतरवधकारणभावादौ । जेरालियसरीर-अगोत्रग देवोषमि मिच्छाद्वि सातर  
 णिरतर वधति, मणक्कुमारोदिसु णिरतरवधुचलभादौ । एत्थ पुण सातरमेव, धारवधकाले  
 अगोत्रगस्स नवाभावादौ ति ।

सणक्कुमारप्पहुडि जाव सदर-सहस्सारकप्पवासियदेवाण पट

माए पुढवीए णेरइयाण भगो ॥ ८९ ॥

णवरि एत्थ पुरिसवेदस्स सोदणण वधो, अणणेदस्सुदयाभावादौ । णउमणेदम्म  
 पढमाए पुढवीए सोदणण वधो, एत्थ पुण परोदणण । पन्चएसु णउमणवेदो इत्थिपेदेण  
 मह अणणेद्व्यो । सासणमम्माद्विद्विद्वि नेउविचयमिस्स-अम्मइयपच्चया पन्निखविद्व्या, णेरइ  
 सासणेसु तेसिमभावादौ । सदर सहस्सारदेवेषु मिच्छाद्वि-मासणमम्मादिद्विणो मणुसगडदुग  
 सातर णिरतर' वधति, तत्थतणसुक्कलेस्सिएसु मणुसगडदुग मोत्तण तिरिक्कसगडदुगम्म

एक समयसे नवविधाम लखा जाता है । मिथ्याद्विष्टि ओर सासादनसम्यग्दृष्टि  
 मनुष्यगतिद्विक्रमा देवाधम सातर निरन्तर वा प्रते ह, क्योंकि, शुक्ललेइयावाल्लोमें  
 मनुष्यगतिद्विक्रम निरन्तर व व देखा जाता है । परन्तु यहा सान्तर वाधते है, क्योंकि,  
 मनुष्यगतिद्विक्रमे निरन्तर न प्रेक्ष कारणोंका अभाव है । आंतरिकदृष्टीरागोपागको  
 देवाधम मिथ्याद्विष्टि सातर निरन्तर वाधते ह, क्योंकि, सनत्कुमारादि देवोंमें निरन्तर  
 व व पाया जाता है । परन्तु यहा सान्तर ही वाधते ह, क्योंकि, स्थावरबन्धकालमें  
 आगोपागका व व नहा होता ।

मनत्कुमारसे लेकर शतार-सहस्रार तक करवामी देवोंकी प्रख्याता प्रथम पृथिवीके  
 नारिकियोंके समान है ॥ ८९ ॥

विशेष इतना है कि यहा पुरुषदेवका स्वोदयमे व-ध होता है, क्योंकि, अ व  
 वेश्व अन्यथा रभाव है । नपुंसकत्वका प्रथम पृथिवीमें स्वोदयमे बन्ध होता है । परंतु  
 यहा उमका परोदयसे बन्ध होता है । प्रत्ययोंमें नपुंसकवेदमों खात्रेदेके साथ वम करणा  
 च्छाद्विष्टि । सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्यानम यहा धैनियिकमिध और कामण प्रत्ययोंको  
 जोडना चाहिये, क्योंकि नारकी सासादनसम्यग्दृष्टियोंमें उका अभाव है । शतार  
 सहस्रारक-परासी देवोंमें मिथ्याद्विष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि मनुष्यगतिद्विक्रमों सान्तर  
 निरन्तर वाधते है, क्योंकि, उन कल्पोंके शुक्ललेइयावाले देवोंमें मनुष्यगतिद्विक्रमों

ओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीर-ओरालियसरीर-अगोत्रग-वण्ण-गध-रस-फास-मणुसगइपाओग्गाणु-  
पुच्ची अगुरुअलहुअ-उवघाद-परघाद उस्सास-तस-पादर-पज्जत्त पत्तेयसरीर-णिमिण-पचतराइयाण  
णिरतरो बधो, एत्थ धुववधित्तादो । सादामाद-हस्स-रदि अरदि सोग थिराथिर सुभासुभ-जस-  
कित्ति-अजसकित्तीण मातरो, एगसमएण बधविगमदसणादो । पुरिमवेद ममचउरससठाण-वज्जि-  
सट्ठसपडण पसत्थविहायगड-सुभग-सुस्सर-आदेज्जुच्चागोदाणि मिच्छान्तिद्धि मासणमम्मादिद्धिणो  
सांतर बधति, एगममएण वधनिरामुवलभादो । मम्मामिच्छादिद्धि-अमजदमम्मादिद्धिणो णिरतर  
वधति, पडिचस्सपयडीण वधाभावादो ।

एदासि पच्चया देवोवपच्चयतुल्ला । णरि सत्त्वत्थ इत्थिपेदपच्चओ अपणेदव्वो ।  
सव्वे सव्वाओ पयडीओ मणुसगइमजुत्त वधति, अण्णमईण वधाभावादो । देवा सामी ।  
वधद्वान्ण वधविणइद्धान च सुगम । पचणाणावरणीय छदमणावगणीय-नारसकमाय-भय-  
दुगुछा-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गध-रस फास अगुरुअलहुअ-उवघाद-णिमिण पचतराइयाण  
मिच्छादिद्धिणो चउविहो वधो । अण्णत्थ तिविहो, धुवाभावादो । अपसेसाण पयडीण वधो  
सव्वगुणइद्धानेसु मादि-अद्वो, अद्ववधित्तादो ।

पचेन्द्रियजाति, जाँदारिक, तैजस व कामेण शरीर, आदारिकशरीरगोपाग, चर्ण, गन्ध, रस,  
स्पर्श, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, अगुरुलघु, उपघात, परघात, उच्छ्राम भ्रस, यादर, पर्याप्त,  
प्रत्येकशरीर, निर्माण और पाच अन्तराय, इनका निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, यहा  
ये प्रकृतिया ध्रुववन्धी हैं । साना व असाता वेदनीय, हान्य, रति, अरति, शोक, स्थिर,  
अस्थिर, शुभ, अशुभ, यशस्कीर्ति और अयशस्कीर्ति, इनका सान्तर बन्ध होता है, क्योंकि,  
एक समयसे इनका बन्धविश्राम देखा जाता है । पुरुषवेद, ममचतुरस्रस्थान, वज्रपंभ-  
सहनन, प्रशान्तविहायोगति, सुभग, सुस्वर, आदेय और उच्चगोत्र, इनको मिथ्यादृष्टि  
एव सासादनसम्यग्दृष्टि सान्तर बाधते ह, यथाकि, एक समयसे इनका बन्धविश्राम  
पाया जाता है । मम्यग्मिथ्यादृष्टि और असत्यतस्म्यग्दृष्टि इ हैं निरन्तर बाधते हैं, क्योंकि,  
उनके प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धका अभाव है ।

इन प्रकृतियोंके प्रत्यय देवोघ प्रत्ययोंके समान हैं । विशयता केवल इतनी है कि  
सब जगह स्वीवेद प्रत्ययको कम करना चाहिये । उक्त सब देव सब प्रकृतियोंको  
मनुष्यगतिसे सयुक्त बाधते हैं, क्योंकि, उनके अन्य गतियोंके बन्धका अभाव है । देव  
स्वामी हैं । बन्धाज्ञान और बन्धविनिष्टस्थान सुगम हैं । पाच शानावरणीय, छह दर्शना  
वरणीय, बारह कपाय, भय, जुगुप्सा, तेजस व कामेण शरीर, चर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श,  
अगुरुलघु, उपघात, निर्माण और पाच अन्तराय, इनका मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें चारों  
प्रकारका बन्ध होता है । अथय तीन प्रकारका बन्ध होता है, क्योंकि यहा ध्रुववन्धका  
अभाव है । शेष प्रकृतियोंका बन्ध सब गुणस्थानोंमें सादि व अधुव होता है, क्योंकि,  
ये अधुववन्धी हैं ।



मणुस्माणुपुत्री अनसक्तिीणमुदयाभावादो मेमपयडीण उदयमेच्छेदाभावादो च बधेदयाण पाठपन्थेच्छेदपरिक्र्वा ण नीरेदे ।

पचणाणावरणीय चउदसणावरणीय-पुरिमवेद-पचिंदियजादि-तेजा रुम्माडयसरीर वण्ण-गध रम फास अगुरुरुल्लहुत्तस-नादर-पत्त-धिराधिर-सुभासुभ-सुभग-अदेज-जमकिति णिमिण उचागोद-पचतरायइयाण सोदएणेन वधो, धुयोदयत्तादो । णिहा-पयला सादासाद धारसकमाय हसस रदि-अरदि सोग-भय-दुगुछाण मोदय परोदएण यधो, अद्धुनेत्यत्तादो । ममचउरसमेठा उत्राद परघाद-उस्तास पमत्थनिहायगइ पतेयसरीर सुस्मरणामाओ मिन्ठाइडि-मामासम्मा इडि-असत्तमम्मादिडिणो मोदय परोदएण वरति । नम्माभिन्ठाइडिणो मोदएणेव वधति, तेसिमपत्तकाठाभावादो । मणुमगइ-ओरालियसरीर ओरालियसरीरअगोत्रग वज्जरिमहसघडण मणुस्माणुपुत्री-अनसक्तिीण परोदएणेन वधो, देवेषु एदामि वधोदयाणमन्कमेण उति विरोहादो ।

पचणाणावरणीय-छदसणावरणीय-वारसरुमाय भय-दुगुछा-मणुसगइ पचिंदियजादि-

वज्रपंभसहनन, मनुष्यानुपूर्वा गेर अयशनीतिं, इनका उदयाभाव होनेसे तथा शेष प्रकृतियोंके उदय बुद्धेदका जन्म होनेसे यहा ग्रंथ और उन्त्यके पूव या पश्चात् व्युच्छेद होनेकी परीक्षा नहीं की जाती है ।

पाच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, पुरुषवेद, पचिन्द्रिय जाति, तेजम व वार्मण शरीर, वण, गध, रस, स्पश, अगुरुल्लु वस, चान्द, पयाप्त, सिअर, अस्थिर, शुभ, अणुभ सुभग, अदिय, यशनीतिं, निमाण उचगोत्र, ओर पाच अन्तराय, इनका स्वोदयमे ही ग्रंथ होता है, क्योंकि, ये धुयोदयी प्रकृतिया ह । निद्रा, प्रचला, साता अ अमाता वेदनीय, वारह कयाय, हास्य, रति, जरति, शोक, भय आर जुगुप्ता, इनका स्वोदय परोदयसे ग्रंथ होता है, क्योंकि, ये अधुयोदयी प्रकृतिया ह । समचनुरखसस्थान, उपघात, परघात, उन्त्रास, प्रशस्तनिहायोगति, प्रत्येकशरीर और सुस्तर नामकमौके मिथ्याइष्टि, सासादनमम्यगइष्टि और असयतमम्यगइष्टि स्वोदय परोदयसे बाधते हैं । मन्वयमिथ्याइष्टि देव स्वोदयसे ही बाधते हैं, क्योंकि, उनके अपर्याप्तकालका अभाव है । मनुष्यगति, औदारिकशरीर, औदारिकशरीरगोपाग, वज्रपंभसहनन, मनुष्यानुपूर्वी और अयशनीतिना परोदयसे ही ग्रंथ होता ह, क्योंकि, देवोंमें इन प्रकृतियोंके वध और उदयके एक साथ अस्तित्वना विरोध है ।

पाच ज्ञानावरणीय, छद दर्शनावरणीय, वारह कयाय, भय, जुगुप्ता, मनुष्यगति,

चलन्विहो यधो । अण्णन्ध दुनिहो, अणादि-धुवाभावत्तादो' । मेमाण पयडीण मादि-अद्भुवो, अद्भुवनधितादो ।

मिच्छत्त-णवुंसयवेद-हुडसंठाण-असंपत्तसेवट्टसंघडणणामाणं को वंधो को अवंधो ? ॥ ९४ ॥

सुगम ।

मिच्छाइट्टी वंधा । एदे वंधा, अवसेसा अवंधा ॥ ९५ ॥

एदस्म अत्थो बुच्चेद — मिच्छत्तस्म धवोदया सम वोच्छिज्जति, मिच्छाइट्टिन्धि तंदुभयाभाजदसणादो । अवसेमाणं वधोदयत्रोच्छेदपरिक्खा णन्वि, एत्थेयतेणेदासिमुदयामाजादो । मिच्छत्त सोदण्ण वज्जइ । कुदो ? साभावियादो । अजमेमाओ पयडीओ परोदण्ण । मिच्छत्त णित्तर वज्जइ, धुवन्धितादो । अवमेमाओ मातरमद्भुवन्धितादो । पच्चया सहस्सारपच्चयतुल्ला । मणुमगडसजुत्त वज्जति । देना मामी । वधद्दाण वधन्निणट्टट्टाण च सुगम । मिच्छत्तस्म धवो

यन्धिचतुष्का मिथ्यादृष्टिके चारों प्रकारका ग्रन्थ होता है । अन्यत्र दो प्रकारका ग्रन्थ होता है, क्योंकि, यहा अनादि और ध्रुव ग्रन्थना अभाव है । शेष प्रकृतियोंका सादि च अध्रुव ग्रन्थ होता है, क्योंकि, वे अध्रुवग्रन्धी प्रकृतिया हैं ।

मिथ्यात्व, नपुमकपेद, हुण्डसस्थान और असंप्राप्तशृपाटिकाग्रहनन नामकमोंका कौन ग्रन्थक और कौन अग्रन्थक है ? ॥ ९४ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

मिथ्यादृष्टि ग्रन्थक है । ये ग्रन्थक है, शेष देन अग्रन्थक हैं ॥ ९५ ॥

इस सूत्रका अर्थ कहते हैं — मिथ्यात्वका ग्रन्थ और उदय दोना साथ व्युच्छिन्न होते हैं, क्योंकि, मिथ्यादृष्टि गुणरूपानमें उन दोनोंका अभाव देखा जाता है । शेष प्रकृतियोंके ग्रन्थोदयव्युच्छेदकी परीक्षा नहीं है, क्योंकि, यहा नियममें इनके उदयका अभाव है । मिथ्यात्व प्रकृति स्योदयसे ग्रन्थी है । इसका कारण स्वभाव है । शेष प्रकृतिया परोदयसे ग्रन्थी हैं । मिथ्यात्व प्रकृति निरन्तर ग्रन्थी है, क्योंकि, ध्रुवग्रन्धी है । शेष प्रकृतिया सान्तर ग्रन्थी हैं, क्योंकि, वे अध्रुवग्रन्धी हैं । प्रत्ययप्ररूपणा सहस्राद-देवोंके प्रत्ययोंके समान है । मनुष्यगतिसे संयुक्त बाधते हैं । देव स्वामी हैं । ग्रन्थाध्यान और ग्रन्थनिर्णयस्थान सुगम हैं । मिथ्यात्वका ग्रन्थ चारों प्रकारका होता है, क्योंकि,

१ प्रकृतियोंका अभावत्तादो' इति पाठ ।

णिद्वाणिद्वा पयलापयला-धीणगिद्धि-अणताणुवधिकोध-माण-  
माया लोभ इत्यिवेद-चउसंठाण चउसंघडण अप्पसत्थविहायगह-दुभग-  
दुस्सर-अणादेज्ज णीत्तागोदाण को वधो को अवधो ? ॥ ९२ ॥

सुगम ।

मिच्छाडट्टी सामणसम्माहट्टी वधा । एदे वधा, अवसेसा अवधा  
॥ ९३ ॥

पदस्म अधो वुच्चदे— अणताणुवधिचउक्कस्म वधोदया मम वोच्छिज्जति,  
सामणस्मि नदुभयवोच्छेददसणादो । अवमेमाण वधोदयवोच्छेदपरिकया णत्थि, तामिमेत्थु  
दयामानादो । अणताणुवधिचउक्कस्म मोदय परोदण वधा, अद्धवोदयत्तादो । अवसेसाण  
पयडीण परोदणेर, एत्थ तामि नधेणुदयस्स अवट्ठाणत्रिरोहादो । धीणगिद्धितिय-अणताणु-  
वधिचउक्काण णित्तरो वधो, धुवधित्तादो । सेसाण मात्तरो, एगसमण वधप्रिरामदसणादो ।  
पच्चयाण सहस्सारभगो । मणे सव्वाओ पयलीओ मणुमगइमज्जुत्त वगति । देवा सामी ।  
नधट्ठाण वगणिट्ठाण न सुगम । धीणगिद्धितिय अणताणुवधिचउक्काण मिच्छादिट्ठिस्म

निदानिद्वा, प्रचलाप्रचला, म्यानगुद्धि, अनन्तानुबन्धी श्लेष, मान, माया, लोभ,  
स्निद, चार सस्थान, चार सहनन, अप्रशस्तविहायोगति, दुर्भग, दुस्वर, अनादेश और  
नीरोगोत्त, इनका कौन वधक और कौन अनवधक है ? ॥ ९० ॥

यह सब सुगम है ।

मिथ्यादष्टि और सामादनमभ्यग्दीष्टि वधक हैं । ये वधक हैं, श्लेष देन अनवधक  
है ॥ ९३ ॥

इसका वध कहते हैं— अनन्तानुबन्धिचतुष्फका वन्ध और उदय दोनों साथ  
व्युच्छिन्न होते हैं क्योंकि, सामादन गुणस्थानमें उन दोनोंका व्युच्छेद देखा जाता है ।  
शय प्रवृत्तियोंके वधोदयव्युच्छेदकी परीक्षा नहीं है, क्योंकि, यहा उनके उदयका  
अभाव है । अनन्तानुबन्धिचतुष्फका उदय परोदयन वन्ध होता है क्योंकि,  
ये वधुवोदयी हैं । शय प्रवृत्तियोंका वध परोदयसे ही होता है, क्योंकि, यहा उनके  
वधके साथ उदयके अस्थानका त्रिगोष्ठ है । म्यानगुद्धिप्रय और अनन्तानुबन्धि  
चतुष्फका निरन्तर वध होता है, क्योंकि, धुववधी है । शय प्रवृत्तियोंका मात्र वन्ध  
होता है, क्योंकि, एउ समयसे उनका वधप्रिधाम देखा जाता है । प्रत्ययप्ररूपणा सहस्रार  
देवोंके समान है । उक्त सब देव सब प्रवृत्तियोंके मनुष्यगतिसे संयुक्त वांधते हैं । देव  
सामी हैं । मिथ्याज्ञान और अभयिनष्टम्यान सुगम है । म्यानगुद्धिप्रय और अनन्तानु

चउव्विहो घषो । अण्णत्थ दुविहो, अणादि-बुवाभावत्तादो' । -सेमाण पयडीण सादि-अद्दुवो, अद्दुववधित्तादो ।

मिच्छत्त-णवुंसयवेद-हुंडसंठाण-असंपत्तसेवट्टसंघडणणामाणं को वंधो को अवंधो ? ॥ ९४ ॥

सुगम ।

मिच्छाइट्टी वंधा । एदे वंधा, अवसेसा अवंधा ॥ ९५ ॥

एदस्स अत्थो वुच्चेद— मिच्छत्तस्म ववोदया सम वोच्छिन्नति, मिच्छाइट्टिमिह तदुभयाभाजदसणादो । अजमेसाण घघोदयवोच्छेदपरिक्खा णत्थि, एत्थेयतेणेदासिमुदयाभावादो । मिच्छत्त सोदएण वज्झइ । कुदो ? सामात्रियादो । अजमेसाओ पयडीओ परोदएण । मिच्छत्त णिरतर वज्झइ, धुववधित्तादो । अवमेसाओ सातरमद्दुववधित्तादो । पच्चया सहस्मारपच्चयतुल्ला । मणुसगइससुत्त वज्झति । देवा सामी । बधद्धाण वधविणट्टट्टाण च सुगम । मिच्छत्तस्स घघो

बन्धचतुष्कका मिथ्यादृष्टिके चारों प्रकारका बन्ध होता है । अन्यत्र दो प्रकारका बन्ध होता है, क्योंकि, यहा अनादि और ध्रुव बन्धका अभाव है । शेष प्रकृतियोंका साटि च अध्रुव बन्ध होता है, क्योंकि, वे अध्रुवबन्धी प्रकृतिया हैं ।

मिथ्यात्व, नपुसकवेद, हुण्डसस्थान और असंप्राप्तस्पाटिकासहनन नामकमोंका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ ९४ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

मिथ्यादृष्टि बन्धक हैं । ये बन्धक हैं, शेष देव अबन्धक हैं ॥ ९५ ॥

इस सूत्रका अर्थ कहते हैं— मिथ्यात्वका बन्ध और उदय दोनों साथ व्युत्तिन्न होते हैं, क्योंकि, मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें उन दोनोंका अभाव देखा जाता है । शेष प्रकृतियोंके बन्धोदयव्युच्छेदकी परीक्षा नहीं है, क्योंकि, यहा नियमन इनके उदयका अभाव है । मिथ्यात्व प्रकृति स्वोदयसे बधती है । इसका कारण स्वभाव है । शेष प्रकृतिया परोदयसे बधती हैं । मिथ्यात्व प्रकृति निरन्तर बधती है, क्योंकि, ध्रुवबन्धी है । शेष प्रकृतिया सान्तर पवती हैं, क्योंकि, वे अध्रुवबन्धी हैं । प्रत्ययरूपणा सहस्रार-देवोंके प्रत्ययोंके समान है । मनुष्यगतिसे सयुक्त बाधते हैं । देव स्वामी हैं । बन्धाध्यान और बन्धविनष्टस्थान सुगम है । मिथ्यात्वका बन्ध चारों प्रकारका होता है, क्योंकि,

चउबिहो, धुवनधितादो । सेमाण सादि अद्भुवो, अद्भुवधितादो ।

मणुस्साउअस्स को वधो को अवंधो ? ॥ ९६ ॥

सुगम ।

मिच्छाइट्टी सासणसम्माइट्टी असंजदसम्माइट्टी वंधा । एदे वंधा, अवसेसा अवधा ॥ ९७ ॥

एदस्स अत्थो — वधोदयाण वोच्छेदपरिक्खा एत्थ णत्थि, उदयाभावादो । परोदण्ण वज्झइ, वधेणुदयस्स एत्थ अवट्ठाणारोहादो । णिरत्तरो वधो, एगसमएण वधुवरमाभावादो । मिच्छाइट्टिस्स एगूणवचास, सासणस्स चउएत्तालीस, असजदसम्मादिट्टिस्स चालीस पच्चया । मणुसगइसजुत्त । देवा सामी । वधद्वान्ण वधणिणइट्ठाण च सुगम । सादि-अद्भुवो वधो, अद्भुवधितादो ।

तित्थयरणाकम्मस्स को वंधो को अवधो ? ॥ ९८ ॥

सुगम ।

शुभकी है । शेष प्रवृत्तियोंका सादि व अधुव वन्ध होता है, क्योंकि, वे अधुववन्धी हैं ।

मनुष्यायुका कौन वन्धक और कौन अवन्धक है ? ॥ ९६ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

मिष्याद्ये, सासादनसम्यग्दृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि वन्धक हैं । ये वन्धक हैं, शेष देव अवन्धक हैं ॥ ९७ ॥

इसका अर्थ— वन्ध और उदयके व्युच्छेदकी परीक्षा यहा नहीं है, क्योंकि, मनुष्यायुके उदयका देवोंम अभाव है । वह परोदयसे वधती है, क्योंकि, यहा उसके वधके साथ उदयके अवस्थानका विरोध है । निरंतर वध होता है, क्योंकि, एक समयसे उसके वधविधामका अभाव है । मिष्याद्येके उनचास, सासादनसम्यग्दृष्टिके चवालीस और असंयतसम्यग्दृष्टिके चालीस प्रत्यय होते हैं । मनुष्यगतिसे अयुक्त वन्ध होता है । देव स्वामी हैं । वधाध्यान और वधविनष्टस्थान सुगम है । सादि व अधुव वध होता है, क्योंकि, वह अधुववन्धी प्रवृत्ति है ।

तीर्थकर नामकर्मका कौन वन्धक और कौन अवन्धक है ? ॥ ९८ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

असंजदसम्मादिङ्गी वंधा । एदे वंधा, अवसेसा अवंधा ॥ ९९ ॥

एदस्सत्थो वुच्चदे— बधोदयाण वोच्छेदविचारो णत्थि, सत्तासंताण सण्णियास-  
विरोहाद्दे । परोदण्ण बधो, सन्वत्थ तित्थयरकम्मबधोदयाणमक्कमेण उत्तिविरोहादो । णित्तरो  
बधो, सखेज्जावलियादिकालेण विणा एगसमएण बधुवरमाभावादो । एदस्स पच्चया देवोध-  
पच्चयतुहा । उत्तरोत्तरपच्चया पुण अरहताडरिय-नहुसुद-पवयणमत्ति-लद्धिसवेगसपत्ति-दसण-  
विसुद्धि-पवयणप्पहानणादओ । मणुसगइसजुत्तो बधो । देवा सामी । बधद्धान बधविणइड्डाण  
च सुगम । सादि-अधुवो बधो, अधुवबधितादो ।

अणुदिस जाव सव्वट्टसिद्धिविमाणवासियदेवैसु पंचणाणावरणीय-  
छंदसणावरणीय-सादासाद-वारसकसाय-पुरिसवेद-हस्स-रदि-अरदि-  
सोग-भय दुगुंछा-मणुस्साउ-मणुसगइ-पंचिदियजादि-ओरालिय-तेजा-  
कम्मइयसरीर-समचउरससंठाण-ओरालियसरीरअंगोवंग-वज्जरिसह-  
संधण-वण्ण-गंध-रस-फास-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वी-अगुरुअलहुअ-

असयतसम्यग्दष्टि बन्धक हैं । ये बन्धक हैं, शेष देव अबन्धक हैं ॥ ९९ ॥

इसका अर्थ कहते हैं—बन्ध और उदयके व्युच्छेदका निचार यहा नहीं है,  
क्योंकि, सत् और असत् बन्धोदयकी समानताका विरोध है । परोदयसे बन्ध होता है,  
क्योंकि, सर्वत्र तीर्थंकर कर्मके बन्ध और उदयके एक साथ रहनेका विरोध है ।  
निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, संख्यात आवली आदि फालके बिना एक समयसे  
उसके बन्धविधामका अभाव है । इसके प्रत्यय देवोद्य प्रत्ययोंके समान हैं । परन्तु  
इसके उत्तरोत्तर प्रत्यय अरहन्तभक्ति, आचार्यभक्ति, बहुश्रुतभक्ति, प्रवचनभक्ति,  
लब्धिसवेगसम्पत्ति, दर्शनविशुद्धि और प्रवचनप्रभाचनादिक हैं । मनुष्यगतितसे सयुक्त  
इसका बन्ध होता है । देव स्वामी है । बन्धाभ्यान और बन्धविनष्टस्थान सुगम हैं ।  
सादि-अधुव बन्ध होता है, क्योंकि, वह अधुवबन्धी प्रकृति है ।

अणुदिशैसे लेकर सर्वार्थसिद्धि तरुके विमानवासी देवोंमें पांच ज्ञानावरणीय, छह  
दर्शनावरणीय, साता व असाता वेदनीय, बारह कषाय, पुरुषवेद, हास्य, रति, अरति,  
शोक, भय, लुगुंसा, मनुष्यासु, मनुष्यगति, पचेन्द्रिय जाति, औदारिक, तैजस व कर्मण  
शरीर, समचतुरस्रस्थान, औदारिकशरीरगोपाग, वज्रर्षभसहनन, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श,

उवघाद परघाद-उस्सास पसत्थविहायगह-तस वादर-पज्जत्त पत्तेयसरीर-  
थिराथिर-सुहासुह सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-जसकित्ति-अजसकित्ति  
णिमिण-तित्थयर उच्चागोद-पंचतराइयाणं को वंधो को अवंधो ?  
॥ १०० ॥

सुगम ।

असजदसम्मादिट्ठी वधा, अवधा गत्थि ॥ १०१ ॥

एदस्त अत्थो परुमिञ्जदे— मणुसाउ मणुमगइ ओरालियसरीर-ओरालियसरीरअगोवग-  
वज्जसिहसघडण-मणुसगइपाओग्माणुपुव्वी-अजसकित्ति तित्थयराण उदयाभावादो अवसेसाण  
च पयडीणमुदयवोच्चेदाभावादो 'वधादो उदयस्म किं पुव्व किं वा पच्छा वोच्चेदो होदि' ति  
एत्थ परिखा गत्थि ।

पचणाणारणीय-चउदसणावरणीय-पुरिसवेद-पचिदियजादि-तेजा-कम्मइयसरीर वण्ण-  
गध रस-फास-अगुरुअलहुअ-तस-वादर-पज्जत्त-थिराथिर-सुहासुह-सुभगादेज्ज-जसकित्ति-  
णिमिणुच्चागोद-पचतराइयाण सोदओ वधो, एत्थ धुयोदयत्तादो । णिदा-पयला सादासाद-

मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वा, अगुरुलघु, उपघात, परघात, उच्छ्वास, प्रशस्तविहायोगति, त्रस,  
घादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुभग, सुस्वर, आदेय, यशकीर्ति,  
अयशकीर्ति, निर्माण, तीर्थकर, उच्चगोत्र और पाच अतराय, इनका कौन बन्धक और  
कौन अवन्धक है ? ॥ १०० ॥

यह सूत्र सुगम है ।

असयतसम्यग्दष्टि बन्धक है, अवन्धक नहीं है ॥ १०१ ॥

इसके अर्थही प्ररूपणा करते हैं— मनुष्यायु, मनुष्यगति, औदारिकशरीर,  
औदारिकशरीरागोपाग, घञ्जपभसहनन, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वा, अयशकीर्ति और  
तीर्थकर, इनके उदयका अभाव होनेसे, तथा शेष प्रवृत्तियोंके उदयव्युच्छेदका अभाव  
होनेसे 'य-वसे उदयका कया पूर्वमे या कया पश्चात् व्यु-उद होता है' इस प्रकारकी  
यहा परीक्षा नहा है ।

पाच ज्ञानायरणीय, चार दर्शनावरणीय, पुरुषपद, पचेद्विजजाति, तेजस च  
वामण शरीर, धर्ण, गध, रस, स्पश, अगुरुलघु, त्रस, वादर, पर्याप्त, स्थिर, अस्थिर,  
शुभ, अशुभ, सुभग, आदेय, यशकीर्ति, निर्माण, उच्चगोत्र और पाच अतराय, इनका  
व्योपय बन्ध होता है, पर्याप्त, ये यहा धुयोदयी हैं । निदा, प्रचला, साता च असाता

धास्तकसाय-हस्त रदि-सोग-भय-दुगुलाण सोदय परोदएण बंधो, अद्धेवोदयतादो । परघादुस्सास-पसरथविहायगड-सुस्सराण मोदय-परोदएण बंधो, अपज्जत्तकाले उदयामावे वि बधुवलमादो । समचउरसमठाणुपघाद-पत्तेयसरीराण पि सोदय परोदएण बंधो, निग्गहगदीए उदयामावे वि बधदसणादो । मणुसाउ-मणुमगड-ओरालियसरीर ओरालियसरीरअगोवग-वज्जरिसहसघडण-मणुम्मगइपाओग्गाणुपुव्वी-अजसकित्ति तित्थयराण परोदएण बंधो, एत्थेदासिमुदयामावादो ।

१०. पचणाणावरणीय-छदसणावरणीय-नारसकमाय पुरिमवेद-भय दुगुत्र मणुसाउ मणुसगइ-पचिंदियजादि ओरालिय तेजा-कम्मइयसरीर समचउरसमठाण-ओरालियसरीरअगोवग-वज्जरिसह-सघडण-वण्ण गध-रस-फास-मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वि-अगुस्वलहुव-उपघाद-परघाद-उस्सास-पमत्थनिहायगइ तम नादर-पज्जत्त पत्तेयसरीर सुभग-सुस्सर-आदेज्ज णिमिण-तित्थयरुच्चागोद-पचतराइयाण गिरत्तो बंधो, एदासिमेगसमएण बधुवरमामावादो । सादासाद हस्त-रदि-अरदि-सोग-थिराथिर-सुहासुह-जसकित्ति-अजसकित्तीण मातरो बंधो, एगसमएण बधुवरमादो ।

वेदनीय, धारह, कषाय, हास्य, रति, शोक, भय और जुगुप्साका स्वोदय परोदयसे बन्ध होता है, क्योंकि, ये अधुवोदयी प्रकृतिया हैं । परघात, उच्छ्वास, प्रशस्नाविहायोगति और सुन्धरका स्वोदय-परोदयसे बन्ध होता है, क्योंकि, अपर्याप्तकालमें उदयका अभाव होनेपर भी इनका बन्ध पाया जाता है । समचतुरस्रसस्थान, उपघात और प्रत्येकशरीरका भी स्वोदय परोदयसे बन्ध होता है, क्योंकि, विग्रहगतिमें उदयके अभावे होनेपर भी बन्ध देखा जाता है । मनुष्यायु, मनुष्यगति, औदारिकशरीर, औदारिकशरीरागोपाग, वज्रपंभसहनन, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, अयशकीर्ति और तीर्थकरका परोदयसे बन्ध होता है, क्योंकि, यहा इनके उदयका अभाव है ।

पाच क्षानावरणीय, छह दर्शनावरणीय, धारह कषाय, पुरुषवेद, भय, जुगुप्सा, मनुष्यायु, मनुष्यगति, पंचेन्द्रिय जाति, औदारिक, तैजस व कामेण शरीर, समचतुरस्र-संस्थान, औदारिकशरीरागोपाग, वज्रपंभसहनन, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, मनुष्यगति प्रायोग्यानुपूर्वी, अगुरुलुपु, उपघात, परघात, उच्छ्वास, प्रशस्नाविहायोगति, वस, धादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, सुभग, सुस्वर, आदेय, निर्माण, तीर्थकर, उच्चगोत्र और पाच अन्नराय, इनका निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, इनके एक समयसे बन्धविधामका अभाव है । साता घ असाता वेदनीय, हास्य, रति, अरति, शोक, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, यशकीर्ति और अयशकीर्ति, इनका सान्तर बन्ध होता है, क्योंकि, एक समयसे इनका बन्धविधाम है ।



एत्थ असत्तदसम्मादिद्विदिहि नाएत्तालीम पच्चया, ओघपच्चएसु ओसालियदुगिण्ठि  
णत्तुसयवेदपच्चयाणमभाजादो । सेस सुगम । एदासि पयडीण वधो मणुसगइमज्जतो । देवा  
सामी । वधद्वान्ण सुगम । वधविणामो एत्थ णत्थि । पचणाणावरणीय छदमणावरणीय त्तास  
कमाय मय-दुगुछा-त्तेजा-कम्मइयमरीग वण्ण गध रस फाम-अगुसुलहुग-उपघाद-णिमिण-पच-  
तरायाण तिविहो वधो, धुवाभाजादो । सेसाण पयडीण सादि अद्दुवो, अधुववधित्तादो ।-

इंदियाणुवादेण एइदिया वादरा सुहुमा पज्जत्ता अपज्जत्ता  
वीइंदिय-त्तीइदिय-चउरिंदिय पज्जत्ता अपज्जत्ता पचिदियअपज्जत्ताणं  
पचिदियतिरिक्खअपज्जत्तभगो ॥ १०२ ॥

एत्थमप्यणामुत्तं देसामामिय, वज्जमाणपयडीण सत्तमवेक्खिय अवद्विट्तादो ।  
तेणेदेण सुइदत्थपरुवण कस्सामो । त जहा— एत्थ ताण वज्जमाणपयडिणिदेस कस्सामो ।  
पचणाणावरणीय-अवदमणावरणीय सादामाद मिच्छत्त-सोलसकमाय णत्तणोकसाय तिरिक्खाउ-

यहां अस्ययतमम्यगृहदि गुणस्थानमें प्यालीस प्रत्यय होते हैं, क्योंकि, ओघप्रत्ययोंमेंसे  
ओघारिकद्विक, स्त्रीचिद और नपुंसकवेद प्रत्ययोंका अभाव है । शेष प्रत्ययरूपण सुगम  
है । इन प्रवृत्तियोंका वध मनुष्यगतिले सयुक्त होता है । देव स्वामी हैं । बन्धाध्वान सुगम  
है । वधविनाश यहा है नहीं । पाच भानावरणीय, छह दर्शनावरणीय, बारह कषाय,  
भय, अगुप्ता, तेजस व कामेण शरीर, घर्ण, गंध, रस, स्पृश, अगुसुलघु, उपघात, निर्माण  
और पाच भन्नराय, इनका तीन प्रकारका वध होता है, क्योंकि, धुव वधका अभाव  
है । शेष प्रवृत्तियोंका सादि व अधुव वध होता है, क्योंकि, वे अधुववन्धी हैं ।

इन्द्रियमार्गणानुसार एकेन्द्रिय, वादर, सूक्ष्म, इनके पर्याप्त व अपर्याप्त, द्वीन्द्रिय,  
त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय पर्याप्त व अपर्याप्त तथा पचेन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंकी प्ररूपणा पचेन्द्रिय  
नियंच अपर्याप्तोंके समान है ॥ १०२ ॥

यह अपर्याप्तव देशामर्शक है, क्योंकि, वध्यमान प्रवृत्तियोंकी [१०१] सरुवाकी अपेक्षा  
करके अयस्थित है । इसी कारण इसने सूचित अर्थकी प्ररूपणा करते हैं । यह इस प्रकार  
है— यहाँ पहिले वध्यमान प्रवृत्तियोंका निर्देश करते हैं । पाच भानावरणीय, नौ दर्शना  
वरणीय, भाना व अमाना वेदनीय, मिथ्याय, सोलह कषाय, नौ लोकषाय, त्रियगाय,

१ अर्थ ' वज्जिदियपज्जत्ता अपज्जत्ता पचिदियपज्जत्ता अपज्जत्ताणं', आश्रयी ' वज्जिदियपज्जत्ता  
पज्जत्ताणं' ; अर्थ ' वज्जिदियपज्जत्ता अपज्जत्ताणं' इति पाठ ।

२ अर्थ ' सुपचणाणं' ; आश्रयी ' सुपचणाणं' इति पाठ ।

मनुस्माउ-तिरिक्खगइ-मणुसगइ एइदिय-तीइदिय-तीइदिय-चउरिंदिय पचिंदियजादि-ओरालिय-  
तेजा-कम्मइयसरीर-छसठाण-ओरालियसरीर-अगोवग-छमघडण-वण-गध-रम फास तिरिक्खगइ-  
मणुस्मगइपाओग्गाणुपुच्ची अगुरुगलहुग-उउपाद-परपाद-उस्साम-आदावुजोव-दोविहायगइ-तस-  
थावर-थादर-सुहुम पज्जतापज्जत पतेयसरीर-साहारण थिराथिर-सुहासुह-सुभग-दुभग-सुस्सर-  
दुस्सर-आदेज्ज-अणादेज्ज-जमकित्ति-अजसकित्ति णिमिण णीउच्चागोद-पचतराडयपयडीओ एन्य  
पज्जमाणियाओ । एइदियमस्मिदूण एदामिं परूउण कस्सामो— इत्थि-पुरिसवेद-मणुस्माउ-  
मणुसगइ-तीइदिय-तीइदिय-चउरिंदिय-पचिंदियजादि-अणतिमपचमंठाण-ओरालियमरीर-अंगोवग-  
छमघडण मणुमगइपाओग्गाणुपुच्ची-दोविहायगदि-तस सुभग-सुस्सर-दुस्सर-आदेज्ज-उच्चागोदाणं  
उदयाभावादो मेसाणमुदयवोच्छेदामादाओ ' उदयादो वधो किं पुत्र वोच्छिज्जदि किं पच्छा  
वोच्छिज्जदि ' ति विचारो णत्थि, सनामताण सण्णियासन्निरोहादो ।

पचणाणारणीय चउदसणावरणीय मिच्छत णवुसयवेद-तिरिक्खगउं-तिरिक्खगइ- एइ-  
दियजादि-तेजा-कम्मइयसरीर-वण-गध-रस-फास-अगुरुगलहुग-थावर-थिराथिर-सुहासुह-दुभग-

मनुष्यायु, तिर्यग्गति, मनुष्यगति, एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, पंचेन्द्रिय  
जाति, औदारिक, तैजस घ कार्मण शरीर, छह सस्थान, औदारिकशरीरगोपाग, छह सहनन,  
घर्ष, गन्ध, रस, स्पर्श, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, अगुरुलघु,  
उपघात, मरघात, उच्छ्वास, आताप, उद्योत, दोनों विहायोगतिया, त्रस, स्यावर, चादर,  
सुस्म, पर्याप्त, अपर्याप्त, प्रत्येकशरीर, साधारण, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुभग,  
दुभग, सुस्वर, दुस्वर, आदेय, अनादेय, यशस्वीर्ति, अयशस्वीर्ति, निर्माण, नीच पउथ गोत्र  
और पाच मन्तराय प्रहनिया यहा वष्यमान प्रकृतिया हैं । एकेन्द्रिय जीवका आधय  
करके इनकी प्रकृषणा करते हैं— खीवेद, पुरुषवेद, मनुष्यायु, मनुष्यगति, द्वीन्द्रिय,  
त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, पंचेन्द्रिय जाति, अन्तिम सस्थानको छोड़कर पाच सस्थान,  
औदारिकशरीरगोपाग, छह सहनन, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, दो विहायोगतिया, त्रस,  
शुभग, सुस्वर, दुस्वर, आदेय और उच्छगोत्र, इनके उदयका अभाव होनेसे, तथा दोष  
प्रकृतिको उदयवोच्छेदका अभाव होनेसे यहा ' उदयमे वन्ध कया पूर्वमे व्युच्छिन्न  
होता है या कया पश्चात् व्युच्छिन्न होता है ' यह विचार नहीं है, क्योंकि, सत् और  
असत्की समानताका विरोध है ।

पांच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, मिथ्यान्य, नपुंसकवेद, तिर्यगायु,  
तिर्यग्गति, एकेन्द्रिय जाति, तैजस घ कार्मण शरीर, घर्ष, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु,

अणादेज्ज णिमिण णीचागोद-पचतराइयाण सोदओ वधो, एत्थ एदासिं उणेदयदमणादो । सादासादं-मोलमकमाय छण्णोकमाय आदाबुज्जोव चादर सुहुम पज्जत्त-अपज्जत्त पत्तेय माहा-रणसरीर-जसकित्ति-अजसकित्तीण सोदय-परोदओ नघो, अद्धवोदयत्तादो । ओरालियसरीर-हुडसठाण उवघादाण पि सोदय-परोदओ वधो, विग्गहगदीए उदयाभावे वि नधुवलभादो । तिग्गिरसगइपाओग्गाणुपुव्वीण वि सोदय-परोदओ, गहिदमरीरेसु उदयाभावे वि नधदसणादो । परघादुस्सामाण पि सोदय-परोदओ वधो, अपज्जत्तद्धाए उदयाभावे वि वधदसणादो । अरसेमाण परोदओ नघो, एत्थ तामिं मच्चदो उदयाभावादो ।

पचणाणासणीय णरदसणावरणीय मिच्छत्त मोलसकमाय-भय-टुगुछा-तिरिक्ख-मथुस्साउ-ओरालिय-त्तेजा-कम्मइयमरीर वण्ण-गध रम फाम अगुरुगलहुग-उवघाद-णिमिण पचतरा-इयाण गिरतरो वधो, एगममाण वधुसग्गाभावादो । सादासाद-मत्तणोकमाय मणुमगइ एडदिय धीइदिय-त्तीइदिय-चउरिदिय पचिंदियजादि-उमअण-ओरालियसरीर-अगोवग-उमघडण-मणुमगइ

स्थावर, स्थिर अस्थिर, शुभ, अशुभ, दुःख, अनन्द, निर्माण, नीचगोत्र और पाच अतराय, इनका सोदय बन्ध होता है, क्योंकि, इनका धुय उदय देखा जाता है । साता व असाता वेदनीय, सोलह क्पाय, छह नोकपाय, आताप, उचोत्त, वादर, सुद्धम, पर्याप्त, अपर्याप्त प्रत्येक, साधारण शरीर, यशकीर्ति और अयशकीर्ति, इनका सोदय परोदय बन्ध होता है, क्योंकि ये अधुवोदयी प्रकृतिया हैं । ओदारिकशरीर, हुण्डसस्थान और उपघातका भी सोदय परोदय बन्ध होता है क्योंकि, विग्रहगतिमें इनके उदयका अभाव होनेपर भी बन्ध पाया जाता है । तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वीका भी सोदय परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, जिन जीवोंने शरीर ग्रहण करलिया है उनके तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वीके उदयका अभाव होनेपर भी बन्ध देखा जाता है । परघात और उच्छ्वासका भी सोदय परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, अपर्याप्तकालमें उदयाभावेके होनेपर भी उनका बन्ध देखा जाता है । शेष प्रकृतियोंका परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, वहा उनके उदयका सर्वदा अभाव है ।

पाच सानारणीय, नौ दर्शनावरणीय, मिध्यात्व, सोलह क्पाय, भय, लुगुप्सा, तिर्यगायु, मनुष्यायु, औदारिक, तैत्तस व कामण शरीर, धर्म, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुम्बधु, उपघात, निर्माण और पाच अतराय, इनका निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, एक समयसे इनके पर्याप्तधामका अभाव है । साता व असाता वेदनीय सात नोकपाय, मनुष्यगति, पकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, पचेन्द्रिय जाति, छह सस्थान, औदारिक

१ प्रसिद्ध 'पचणाणासणीय-सादासाद' इति पाठ ।

२ प्रसिद्ध 'आरा' इति पाठ ।

पाओग्गणुपुव्वी आदावुज्जोप देविहायगड तस धार-सुहुम अपज्जत्त साहाग्णसरीर-यिरायिर-  
सुभासुम-सुभग दुभग-सुस्मर-दुस्मर ओदेज्ज-अणादेज्ज-जमकित्ति-अजसकित्ति-उच्चागोदाण  
सातरो वधो, एगममएण वधुपरमत्तसणादो । तिरिक्खगड-तिरिक्खगडपाओग्गणुपुव्वी-  
णीचागोदाण मातर-णिरतरो वधो, सव्वेइदिएसु मातरवधानमेदामिं तेउ-चाउकाइएसु णिरतर-  
वधुवलभादो । परघादुस्साम जादग्-पज्जत्त-पत्तेयसरीराण वधो मातरं णिरतरो । कथ णिरतर ?  
एइदिएसुप्पण्णत्तेवाणमतोमुहत्तकाल णिरतरवधदसणादो ।

एइदिएसु मिच्छत्तामजम-कमाय जोगभेदेण चत्तारि मूलपच्चया । पचमिच्छत्तपच्चया ।  
कुदो ? पचमिच्छत्तेहि सह णाणामणुस्साणमेइदिएसुप्पण्णण पचमिच्छत्तुवलभादो । एगो  
एइदियासजमो, उपाणासजमा, कमाया सोलम, इत्थि-पुरिससेदेहि विणा णोकमाया सत्त,  
ओरालियदुग-कम्मइयमिदि तिण्णि-जोगा, एदे मव्वे वि अट्ठत्तीस उत्तरपच्चया । णव्वरि  
तिग्गिर मणुस्साउआण कम्मइयपच्चएण विणा सत्तत्तीम पच्चया । एक्कारस अट्ठारस

शरीरागोपाग, छह सहनन, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, आताप, उद्योत, टो विहायोगतिया,  
त्रम, स्थावर, सूक्ष्म, अपर्याप्त, साधारणशरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुभग,  
दुर्भग, सुस्वर, दुस्वर, जादेय, अनादेय, यशकीर्ति, अयशकीर्ति और उन्नगोत्र, इनका  
सांतर बन्ध होता है, क्योंकि, एक समयमें इनका बन्धविधाम देखा जाता है ।  
तिर्यग्गति, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी और नीचगोत्र, इनका सान्तर निरन्तर बन्ध होता  
है, क्योंकि, सर्व षकेन्द्रियोंमें सान्तर उन्धजाली इन प्रकृतियोंका तेजकायिक व प्रायु  
कायिक जीवोंमें निरन्तर बन्ध पाया जाता है । परघात, उच्छ्वास, रादर, पर्याप्त और  
प्रत्येकशरीर प्रकृतियोंका बन्ध सान्तर निरन्तर होता है ।

शका—इनका निरन्तर बन्ध कैसे होता है ?

ममाधान—क्योंकि एकेंद्रियोंमें उत्पन्न हुए देवोंके अन्तमुहूर्त काल तक इनका  
निरन्तर बन्ध देखा जाता है ।

एकेंद्रियोंमें मिथ्यात्व, असंयम, कपाय और योगने भेदसे चार मूल प्रत्यय  
होते हैं । उत्तर प्रत्ययोंमें पाच मिथ्याच प्रत्यय, क्योंकि, पाच मिथ्यात्वोंके साथ  
एकेंद्रियोंमें उत्पन्न हुए नाना मनुष्योंके पाच मिथ्याच प्रत्यय पाये जाते हैं । एक  
एकेंद्रियासंयम, छह प्राणि असंयम, सोऽह कपाय, स्त्री और पुरुष वेदके बिना सात  
नाकपाय, तथा दो ओद्यारिक व कर्मण ये तीन योग, ये सब ही अट्ठत्तीस उत्तर प्रत्यय  
एकेंद्रियोंमें होते हैं । विशेषता केवल यह है कि तियगायु व मनुष्यायुके कर्मण प्रत्ययके  
बिना सतीस प्रत्यय होते हैं । ग्यारह व अट्ठगह एक समय सम्बन्धी जघन्य और उन्कृष्ट

वज्रमाणपयडीओ वधमाणेसु ' वधादो उदओ किं पुत्र किं ना पच्छा वोच्छिण्णो ' ति विचारो णत्थि ।

पचणाणारणीय-चउदमणावणीय-मिच्छत्त-णुस्ययेद-तिरिक्खाउ-तिरिक्खगड-  
पीडदियजादि-नेजा-कम्मडयमरीग ण्ण-गए रस फाम अगुस्वत्तहुअ तम नादर धिगाथिर-सुभा-  
सुभ दुभग-अणोदेल णिमिण णीचागेद पचतरायइयाण सोदओ वधो, एत्थ एदामिं भुवेदयत्त-  
दमणादो । णिहाणित्ता पयटापयत्ता मादासाद-मोल्मकमाय ण्णोकमाय-पज्जत्तापज्जत्त जम-  
अजमकितीण सोत्थ-परोदओ वधो, उभयथा वि वधम्म विरोहाभावादो । ओरालियमरीग-  
हुडमठाण ओरालियमरीगअगोवग-अमपत्तमेवट्टमघडण उरघाद-पत्तेयमरीगण पि सोदय-परोदओ,  
विग्गहगदीए उदयाभावे वि ननुपलभादो । तिरिक्खगडिपाओग्गाणुपुत्रीए वि सोदय परोदओ  
वधो, विग्गहगदीदे ण्ण व उदयाभावे [वि] वधत्तमणादो । परवाहुम्मासुओव-अप्यमत्तविहाय-  
गट्टुस्मरण पि सोदय परोदओ वधो, अपज्जत्तकाले उदयाभावे वि वधदसणादो, उचोवत्त  
उज्जोनेत्थनिरहिताविरहिदसु ननुपलभात्ते । इत्थि पुग्गि मणुम्माउ-मणुमगइ एडदिय तीडदिय-

निवच अपर्याप्तके द्वारा उध्यमात् प्रकृतियात्रो वा उनेत्राल ईन्द्रिय जीवामे ' व अस उन्व  
क्या पुत्रो या क्या पश्चान् व्युच्छिन्न होता है यह विचार नहीं है ।

पान नातावणीय, चार लक्षणावणीय, मिव्यात्र, नपुंसकत्र, तिर्यगासु, निय  
ग्गति, णिन्द्रिय जानि, तैजस व धारण शरीर, उर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुस्वत्तु, व्रस,  
घादर, स्त्रिग, अस्थिर, शुभ, अशुभ दुर्भग, जनात्थेय निर्माण, नीचगात्र और पाच  
अतराय, इनका स्वोदय व व होता है, क्योंकि, यहा इनका ध्रुव उदय देखा जाता है ।  
निद्रानिद्रा, प्रचत्तप्रचत्ता, सत्ता व असत्ता वेत्तत्थ, मोल्ह कपाय, उह नेक्काय,  
पर्याप्त, अपर्याप्त, यशस्सति, अत ययशस्सति, इनका स्वोदय परोदयसे वध होता है,  
क्योंकि दोनों प्रकारमें भी इनके व धका विरोध नहा है । औदारिकशरण, एण्टसस्थान,  
औत्तरिकशरीरागोपाग, जसमात्तवृत्तिकायहनन उपवात और प्रत्येकशरीर इनका  
भी स्वोदय परोदय वध होता है, क्योंकि विग्रहगतिमें उदयका अभाव होनेपर भी इनका  
वध पाया जाता है । तिर्यग्गतिप्रयोग्यानुपूर्विका भी स्वोदय परोदय वन्ध होता है, क्योंकि,  
विग्रहगतिको छोडकर जायत्र उसका उदयाभाघ होनेपर मा व व देखा जाता है ।  
पग्गात्त, उच्चवृषास, उद्योत्त, अग्रशस्त्रविहायेगति और दुस्वरका भी स्वोदय परोदय वन्ध  
होता है क्योंकि, अपर्याप्तकात्तमें इनका उदयाभाघ होनेपर भी वध देखा जाता है, तथा  
उद्योत्तका उद्योत्तके उदयसे रहित और उससे सहित जायत्रमें उसका वध पाया जाता है ।  
खावेद, पुग्गयेद, मनुयासु, मनुयागति, एकेन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चउरिन्द्रिय, वचेन्द्रिय जाति,

पज्जत्ताणमस्स सोदओ, अपज्जत्ताणमस्स परोदओ ववो । एवमपज्जत्ताण पि वत्तन्व ।  
णवरि श्रीणगिद्धितिय-परघादुस्सास-उज्जोव-अण्णमत्थविहायगइ-पज्जत्त-दुस्सग-जसकित्तीण पगे-  
दओ ववो । अपज्जत्त-अजमकित्तीण सोदओ । अपज्जत्ताणमट्ठत्तीम पन्चया, ओरालिय-  
कायामन्चमोमन्चिजोगाणमभावादो ।

तीहृदियाण तीहृदियपञ्चतापञ्चत्ताण च वीहृदिय वीहृदियपञ्जत्त-वीहृदियअपज्जत्त-  
भगो । णवरि घाणिदिण्ण मह तेहृदियपज्जत्ताणमेक्केतालीस पन्चया । अपज्जत्ताणमेगूण-  
चालीम, ओरालियकायासच्चमोमन्चिजोगाणमभावादो । तीहृदियणामम्म सोदओ ववो ।  
असमिदियणामाण परोदओ ।

चउरिदियाणमेव चेव वत्तन्व । णवरि चउरिदियजादिग्घो सोदओ । सेमिदियजादि-  
ग्घो परोदओ । यादालीसुत्तरपन्चया, चन्निदियप्पेमादो । अपज्जत्ताण चालीम पन्चया,

उनके पर्याप्त नामकर्मका स्वोदय और अपर्याप्त नामकर्मका परोदय बन्ध होता है । इसी  
प्रकार ह्रीन्द्रिय अपर्याप्तोंका भी कथन करना चाहिये । विशेष यह है कि स्त्यानगृह्णिय,  
परघात, उच्छ्वास, उद्योत, अप्रशस्तविहायोगति, पर्याप्त, दुस्वग और यजकीतिका  
परोदय बन्ध होता है । अपर्याप्त और अयशकीतिका स्वोदय बन्ध होता है । अपर्याप्तोंके  
अहृत्तीस प्रत्यय होते हैं, क्योंकि, औदारिक काययोग और असत्य मृषा वचनयोगका  
उनके अभाव है ।

व्रीन्द्रिय, व्रीन्द्रिय पर्याप्त और व्रीन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंकी प्ररूपणा ह्रीन्द्रिय,  
ह्रीन्द्रिय पर्याप्त और ह्रीन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंके सम्मान है । विशेषता इतनी है कि घाण  
इन्द्रियके साथ व्रीन्द्रिय पर्याप्त जीवोंके इकनालीस प्रत्यय होते हैं । अपर्याप्तोंके  
उनतालीस प्रत्यय होते हैं, क्योंकि, उनके औदारिक काययोग और असत्य मृषा वचनयोगका  
अभाव है । व्रीन्द्रिय नामकर्मका स्वोदय बन्ध होता है । शेष इन्द्रिय नामकर्मोंका परोदय  
बन्ध होता है ।

चतुरिन्द्रिय जीवोंका भी इसी प्रकार ही कथन करना चाहिये । विशेष इतना है  
कि उनके चतुरिन्द्रिय जातिका स्वोदय बन्ध होता है । शेष इन्द्रिय जातियोंका बन्ध परोदय  
होता है । यहा चक्षु इन्द्रियका प्रवेश होनेसे ध्यालीस उत्तर प्रत्यय होते हैं । अपर्याप्तोंके

१ चापती ' ओरालियकायसच्चमोम ' इति पाठ ।

२ प्रतिपु ' तीहृदियाण तीहृदियपञ्जत्ताण तीहृदियपञ्जत्ताण चउरिदिय-वाहृदियपञ्जत्त ' ; ममता  
' तीहृदियाण तीहृदियपञ्चत्ताण च वीहृदियपञ्चत्त ' इति पाठ ।

३ प्रतिपु ' ओरालियकायसच्चमोम ' इति पाठ ।

तिरिस्खगइ तिरिस्खगइपाओग्गाणुपुञ्चीणीचागोदाण सातर गिरतरो वधो । कथ गिरतरो ?  
ण, तेउ वाउकाड्गहिंतो धीडिदिएसुप्पण्णाणमतोमुहुत्तकालमेदामि गिरतरवधुवलभादो ।

एदासिं मूत्पच्चया चत्तारि । पच मिच्छत्त, दोडदियासजमा, छप्पाणासजमा, सोलस  
कमाया, सत्त णोकमाया, चत्तारि जोगा, मच्चेदे धीडदियस्म चालीमुत्तपच्चया । णवरि  
तिरिस्ख मणुस्माउआण कम्मइयपच्चएण विणा एग्गूणचालीस पच्चया । एक्कारस अट्टारस  
एगसमइयजहण्णुककम्मपच्चया ।

तिरिक्खाउ तिरिस्खगइ एइदिय गीइदिय-तीइदिय चउरिंदियआदि-तिरिक्खगइपाओ-  
ग्गाणुपुञ्ची आदावुजोव थावर सुहुम-साहारणण तिरिक्खगइसजुत्तो वधो । मणुस्माउ-मणुस्सगइ-  
मणुस्सगइपाओग्गाणुपुञ्ची उच्चामोदाण मणुस्सगइमजुत्तो वधो । मेमाण पयडीण तिरिक्ख मणु-  
स्सगइमजुत्तो वधो । कुदो ? दोहि गदीहि मह विरोहाभावादो । वधद्वान सुगम । वधवोच्छेदो  
णरि । धुमियाण चउन्विरो वधो । अणमेसाण मादि-अद्वो । एण पज्जताणं । णवरि

तियग्गति, तियग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी गौर नीचगोत्रका सातर निरन्तर बन्ध  
होता है ।

शका— निरन्तर बन्ध कैसे होता है ?

ममाधान—यह शका ठीक नहीं, क्योंकि, तेजकाधिक भार वायुकाधिक जीवोंमेंसे  
इन्द्रियोंमें उत्पन्न हुए जीवोंके अतर्मुहत्त का तब इनका निरन्तर बन्ध पाया जाता है ।

इनके मूत्र प्रत्यय चार होते हैं । पाच मिथ्यात्त्व, दो इन्द्रियात्म्यम, छह प्राणि  
अस्यम, सोलह कपाय, सान नोकपाय और चार योग, ये सब इन्द्रिय जीवके चालीस  
उत्तर प्रत्यय होते हैं । विशेषता केवल इतनी है कि निर्यगायु व मनुष्यायुके कर्मण प्रत्ययके  
विना उनतामिन प्रत्यय होते हैं । ग्याह व अठारह क्रमसे एक समय समन्धी अघन्य  
ओर उत्कृष्ट प्रत्यय होते हैं ।

तियगायु, निर्यग्गति, पकेन्द्रिय, इन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय जाति, तिर्यग्गति  
प्रायोग्यानुपूर्वी, जाताप, उद्योत, स्थावर, सूक्ष्म और साधारण इनका तिर्यग्गतिले  
मयुक्त बन्ध होता है । मनुष्यायु, मनुष्यगति, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी ओर उच्चगोत्रका  
मनुष्यगतिसे सयुक्त बन्ध होता है । शेष प्रकृतियाका तिर्यग्गति और मनुष्यगतिसे सयुक्त  
बन्ध होता है क्योंकि, दोनों गतियोंके साथ उनके बन्धका विरोध नहीं है । बन्धाध्वान  
सुगम है । बन्धसुच्छेद नहीं है । छय प्रकृतियोंका चारों प्रकारका बन्ध होता है । शेष  
प्रकृतियोंका मादि व अघुच बन्ध होता है ।

इसी प्रकार इन्द्रिय पर्याप्त जीवोंकी प्ररूपणा है । विशेषता केवल इतनी है कि

१ प्रतिशु ' सच्चेदे वा धीदियस्म ' इति पाठ ।

२ प्रतिशु ' इवियाण ' इति पाठ ।

गोदाण परोदाण ऋषो, एवामिमेत्थ उदयविगंहादो ।

पचणाणावरणीय-गण्डमणावरणीय मिच्छत्त मोरुमकमाय-भय-दुगुछा-निगिक्ख-मणु-  
म्माउ-ओगलिय-त्तेत्ता-कम्मइयमरीर-वण्ण-भा-रम फाम अगुरुवल्लुह-उत्तघाद-णिमिण-पचतरा-  
इयाण णिरतरो ऋषो, एत्थ एदामि धुवपधित्तादो । सादामाद-मत्तणोकमाय मणुसगइ-एइन्द्रिय-  
चीडदिय-त्तीडदिय-त्तउगिदिय पंचिन्द्रियजाट्टि-उत्तसाण-ओरान्णियमरीर-अगोरा-उत्तघटण-मणुसगइ  
पाओग्माणुपुत्ती परघादुस्सास-आत्ताउत्तान-दोविहायगत्त तम थाय-वाटर-सुहुम पञ्जत्तापञ्जत्त-  
पत्ते-साहारणमरीर-धिगधिर-सुहासुह-सुभग-टुभग सुम्मर दुम्मर-ओद्वेज्ज-अणाद्वेज्ज-जमकिति-  
अजमकिति-उच्चागोदाण मातेग ऋषो, एवममण्णेदामि ऋषुवरमदमणादो । तिगिक्खगइ-  
निगिक्खगइपाओग्माणुपुत्ती णीचागोदाण सात्त णिरतरो ऋषो । कध णिरतरो ? ण, तेउ-वाउ-  
काइण्हित्तो पंचिन्द्रियअपञ्जत्तपसुपण्णाणमतोसुहुत्तकालमेवामि णिरत्तधुवल्लमादो ।

पंचिन्द्रियअपञ्जत्ताणमेदाओ पयडीओ वधमाणाण पच मिच्छत्ताणि, ऋग्म अमज्जम,

होता है, क्योंकि, यहा इनके उत्पत्तिका विरोध है ।

पाच शानावरणीय, नौ दर्शनावरणीय, मिथ्यात्त, सोलह फणाय, भय, जुगुप्सा,  
नियगायु, मनुष्यायु, औदारिक, नैज्जम ऋषामेण शरीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श,  
अगुरुल्लु, उपपान, निर्माण और पाच अन्तराय, इनका निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि,  
यहा ये धुवपन्धी है । स्नाता ऋ अस्नाता वेदनीय, स्नात नोकपाय मनुष्यगति, पक्केन्द्रिय,  
ठीन्द्रिय, प्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, पचेन्द्रिय जाति, छह सम्यान, औदारिकशरीरागोपाय,  
छह सहजन, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, परघान, उच्छवास, आनाप, उद्योत, दो  
विहायगनिया, प्रस, स्वात्त, वाटर, सूक्ष्म, पर्याप्त, अपर्याप्त, प्रत्येक, साधारण शरीर,  
स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुभग, दुभग, सुस्वर, दुस्वर, आदेय, अनादेय, यथाक्रीति,  
अथशक्रीति और उच्छवोत्त, इनका स्नान्त बन्ध होता है, क्योंकि, एक समयमे इनका  
रन्धविध्राम देखा-जाता है । तिर्यग्गति, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी और नीचगोत्रका  
सात्त निरन्तर बन्ध होता है ।

शर्का—निरन्तर बन्ध कस होता है ?

समाधान—यह ठीक नहीं, क्योंकि, तेजकायिक और वायुकायिक जीवामेमे  
पचेन्द्रिय अपर्याप्तोमे उत्पन्न हुए जीवोंके अन्तमुहने काल तक इनका निरन्तर बन्ध  
पाया जाता है ।

इन प्ररतिर्योंके बाधनेवाये पचेन्द्रिय अपर्याप्तोंके पाच मिथ्यात्त, ऋरह

१ श्रित्तु ' बधणाण ' इति पाठ ।



ओरालियकायासचरमोपचिनागाणमभावादेशे ।

पंचिन्द्रियअपञ्चत्ताण भणिम्मामो — एत्थं वज्जमाणपवडीओ पंचिन्द्रियनिरिक्ख  
अपञ्चत्तेहि वज्जमाणओ चेष, ण जण्णाओ । एत्थं एत्थं उद्दयाणे वपे पुंन पच्चत्रा  
पेत्थिण्णो ति विचारो णदिथ, मतामताण वपेदयाणमेत्थं पोट्टेगभावादेशे ।

पञ्चानावर्णीय च उदमणावर्णीय मित्त-उत्त-णुमयवेद पंचिन्द्रियजादि तेजा कम्मइय  
संगर जण गप-रम फाम अगुरुअत्तहुअ तम दादर अपञ्चत्त धिगाधिर मुहासुह टुमग अणाद्वज्ज  
अनमकित्ति णिमिण णी रागोद पत्तरायाण मोदओ वधो, धुपेदयत्तादेशे । णिहा पयला मादा  
साद मालमरमाय उणोरुमाय निरिक्खाउ-मणुम्माउ- तिरिरक्खगड-मणुमगटपाओग्णाणुक्खु णिण  
मोदय पगेदओ वधा, उदणण विणा वि, मने वि उदण वपुवलभादेशे । ओगत्तियमरीर हुट्ट  
मठाण ओरालियमरीरअवापग अमपत्तेमेट्टमघडण उपपाद पत्तेयमरीगण मोदय पगेदओ नधो,  
विग्गहगदीण उद्दयाभावे वि अण्णं उदण मते वि उदमणाण । धीणगिद्विनिय-उत्थि  
पुरिमोद एदिय-वीइदिय तीइदिय चउरिंदिय पञ्चमठाण-वचमघडण पञ्चाट्टुम्माम आदाउज्जा  
देविहापगड वापर-सुहुम-पञ्चत्त माहारणमरीर सुभग सुस्मर टुम्पर आदेज्ज-नमकित्ति-उत्ता-

चालीम प्रत्यय हात है, क्योंकि, उनक औद्योगिक कार्यवाग और अमत्य सुवा घचनयोगका  
अभाव है ।

पंच द्वय अपयात्तोंकी प्ररूपणा करत है— यहा यध्यमान प्रवृत्तिया पंचद्वय  
तियच अपयात्तों द्वारा बर्धा जानेवाली हा है, अन्य नहीं है । यहा 'इनका उदयसे बंध  
पूरमे या पश्चात् व्युत्तिउन्न हाता है' यह विचार नहीं है, क्योंकि, सत् और असत्  
उद्येदयने व्युत्तेदका यहा अभाव है ।

पाच पानावरणीय, चार दशानावरणाय, मिथ्याय, नपुसकवेद, पंचेन्द्रियजाति,  
तैजस व कामण शरीर, वण, गंध, रस, स्पर्श, अगुण्णु, अन्न, यात्तर, अपर्याप्त, स्थिर  
अस्थिर, पुंन अशुभ, दुभग, अनादेय अयत्तकीति, निमाण, नीचगोत्र और पाच  
अतराय, इनका स्वोदय बंध हाता है, क्योंकि, वे धुपेदयी प्रवृत्तिया है । निद्रा, प्रचला,  
साता व अमाता वेदनीय, सोलह कषाय, छह नोक्षाय, तिर्यगायु, मनुष्यायु और  
नियगति व मनुष्यगतिप्रायोग्यापुपूर्ति, इनका स्वोदय पराज्य व व होता है, क्योंकि,  
उदयके घिना भी, तथा उदयके होनेपर भी इनका बंध पाया जाता है । औद्योगिकशरीर,  
हुण्डसस्थान, औद्योगिकशरीरारोगोपग, अन्नप्राप्तपट्टिकासहनन, उपधात और प्रत्यय  
शरीरका स्वोदय परोदय बंध होता है, क्योंकि, विग्रहगतिमें उदयाभाषके होनेपर भी,  
तथा अयत्त उदयके होत हुए भी इनका बंध देरता जाता है । स्थानगृह्णय, स्त्रीवेद,  
पुंनवेद, एकैन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय जाति, पाच सस्थान, पाच सहनन,  
पर्याप्त, उच्छ्वास, आताप, उद्योत, दो त्रिहस्योगतिया, स्थावर, सूक्ष्म, पर्याप्त, साधारण  
शरीर, सुभग, सुम्पर, दुम्पर, आदेय, यशकीर्ति और उच्छ्वगोत्र, इनका परोदयसे बंध

मिच्छाइष्टी बधओ किं सासणो बधओ किं सम्मामिच्छाइष्टी बधओ किमसजदसम्माइष्टी बधओ किं सजदासजदो किं पमत्तो किमपमत्तो किमपुव्वो किमणियट्ठी किं सुहुमसापराइयओ किमुव-  
सत्तकसाओ किं स्त्रीणकसाओ किं सजोगिजिणो किमजोगिमडारओ बधओ ति एवमेसो  
एगसजोगो । सपधि एत्थ दुसजोगादीहि अक्खसचार करिय सोलहसहस्स-तिण्णिसय-तेया-  
सीदि-पण्णभगा उप्पाएयन्वा । किं पुग्गेदासिं बधो वोच्छिज्जदि किमुदओ किं दो वि समं  
वोच्छिज्जति एवमेत्थ तिण्णि भगा । किं सोदएण बधो किं परोदएण किं सोदय-परोदएण  
एत्थ वि तिण्णि भगा । किं सातरो बधो किं णिरतरो [ किं ] सातर-णिरंतरो ति एत्थ वि  
तिण्णेव भगा । एदामिं किं मिच्छत्तपच्चओ बधो किमसजमपच्चओ किं कसायपच्चओ किं  
जोगपच्चओ बधो ति पण्णारस मूलपच्चयपण्हभगा<sup>१</sup> हवति । एतत्त त्रिरीय-मूढ-सदेह-  
अण्णाणमिन्ठत्त चक्खु सोद-घाण जिन्भा पास मण-पुढ रीकाइय-आउकाइय-तेउकाइय-वाउ-  
काइय वणप्फदिकाइय तसकाइयामजम-सोलमरुमाय णत्तणोरुसाय पण्णारसजोगपच्चए द्विविय

करते हैं। वह इस प्रकार है—क्या मिथ्यादृष्टि बन्धक है, क्या न्यासादनसम्यग्दृष्टि  
बन्धक है, क्या सम्यग्मिथ्यादृष्टि बन्धक है, क्या असयतसम्यग्दृष्टि बन्धक है, क्या  
सयतान्ययत्त, क्या प्रमत्त, क्या अप्रमत्त, क्या अपूर्वकरण, क्या अनित्युत्तिकरण, क्या  
मूलमसाम्परायिक, क्या उपशान्तकपाय, क्या क्षीणकपाय, क्या सयोगी जिन, या क्या  
अयोगी भट्टारक बन्धक हैं, इस प्रकार ये एकसयोगी भग हैं। अब यहा छिसयोगादिकोंके  
बारा अक्षसचार करके सोत्त हजार तीन सौ तेरासी प्रदनभग उत्पन्न कराना चाहिये ।  
क्या पूर्वमे इनका बन्ध व्युत्ति-उन्न होता है, क्या उदय, या क्या दोनों एक साथ व्युत्तिछन्न  
होते हैं, इस प्रकार यहा तीन भग होते हैं । क्या स्त्रोदयसे बन्ध होता है, क्या परोदयसे  
या क्या स्त्रोदय परोदयसे, इस प्रकार यहा भी तीन भग होते हैं । क्या सान्तर बन्ध  
होता है, क्या निरन्तर बन्ध होता है, या क्या सान्तर निरन्तर, इस प्रकार यहा भी तीन  
ही भग होते हैं ।

इनका बन्ध क्या मिथ्यात्वप्रत्यय है, क्या असयमप्रत्यय है, क्या कपायप्रत्यय है,  
या क्या योगप्रत्यय बन्ध है, इस प्रकार पन्द्रह मूल प्रत्यय निमित्तक प्रदनभग होते हैं ।  
एकान्त, विपरीत, मूढ [ विनय ], सन्देह और अज्ञान रूप पाच मिथ्यात्व, चक्षु, श्रोत्र,  
घ्राण, जिह्वा, स्पर्श, मन, पृथिवीकायिक, अष्कायिक, तेजकायिक, वायुकायिक, धनस्पति-  
कायिक और ब्रह्मकायिक, इनके निमित्तमे होनेवाले बारह असयम, सोलह कपाय, नौ

सोलस कमाय, सत्त णोकसाय दोण्णि जोग ति वादालीस पच्चया होति । तिरिस्स-मणुस्साउ-  
आण एकैतालीस पच्चया, रुम्मइयपच्चयाभावादे । सेम सुगम ।

तिरिक्खाउ तिरिक्खगइ-एइदिय-धीइदिय-तीइदिय-चउरिदियजादि-तिरिक्खगइ-  
पाओग्गाणुपुन्वी-आइउज्जोव-थानर-सुहुम माहारणसरीराण तिरिक्खगइसजुत्तो वधो । मणुस्साउ  
मणुसगइ मणुसगइपाओग्गाणुपुन्वी उच्चगोदाणं मणुसगइसजुत्तो । सेसाण पयडीण वधो  
तिरिक्ख-मणुसगइसजुत्तो । पचिदियअपज्जत्ता सामी । बधद्धान सुगम । वधवोच्छेदो णत्थि ।  
पचणाणावरणीय णउदसणावरणीय सिच्छत्त-मोलमरुमाय-भय दुगुल्ल-तेजा-रुम्मइयमरीर वण्ण-  
गव-रस-फास अगुरुलहुव-उपघाद-णिमिण पचतगइयाण चउत्विहो वधो, धुनवधित्ताने ।  
सेसाण सादि-अद्दुवो ।

पचिदिय पचिदियपज्जत्तएसु पचणाणावरणीय चउदसणावर-  
णीय-जसकित्ति-उच्चगोद-पचतराइयाणं को वधो को अवंधो ?  
॥ १०३ ॥

एद पृच्छासुत्त देसामासिय, तेण्णेण सूइदत्थाण परूवणा कीग्दे । त जहा — किं

असयम, सोलह कपाय, सात नांकपाय और दो योग, इस प्रकार व्यालीस प्रत्यय होते  
हैं । तियगायु और मनुप्यायुके इफतालीस प्रत्यय होते हैं, क्योंकि, उनके कर्मण प्रत्ययका  
अभाव है । शेष प्रत्ययप्ररूपणा सुगम है ।

तियगायु, तिर्यग्गति, पकेन्द्रिय, ठीन्द्रिय, प्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय जाति, तियग्गति  
प्रायोग्यानुपूर्वी, आताप, उद्योत, स्थार, सूक्ष्म और स्माधारण शरीर, इनका तियग्गतिसे  
सयुक्त बध होता है । मनुप्यायु, मनुप्यगति, मनुप्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी और उच्चगोत्रका  
मनुप्यगतिसे सयुक्त, तथा शेष प्रवृत्तियोंका बध तियग्गति व मनुप्यगतिसे सयुक्त  
होता है । पंचेन्द्रिय अपयोप्त जीव स्वामी हैं । बधध्यान सुगम है । बध-युच्छेद यहा  
है नहीं । पाच ज्ञानावरणीय, नौ दशनावरणीय, मिथ्यात्त, सोलह कपाय, भय, जुगुप्सा,  
तेजस व कर्मण शरीर, घण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, उपघात, निर्माण और पाच  
अन्तराय, इनका चार प्रकारका बध होता है, क्योंकि, ये ध्रुववधी ह । शेष प्रवृत्तियोंका  
सादि व अधुन बध होता है ।

पंचेन्द्रिय और पंचेन्द्रिय पयोप्तक जीवोंमें पाच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय,  
यशस्वीति, उच्चगोत्र और पाच अन्तराय, इनका कौन बधक और कौन अवन्धक है ?  
॥ १०३ ॥



यह पृच्छासुत्त देसामर्शक है, इसलिये इसके द्वारा सूचित अर्थोंकी प्ररूपणा

मिच्छाइट्ठी वधओ किं सासणो वधओ किं सम्मामिच्छाइट्ठी वधओ किमसजदसम्माइट्ठी वधओ किं सजदासजदो किं पमत्तो किमपमत्तो किमपुत्र्यो किमणियट्ठी किं सुहुमसापराइयओ किमुवसतकमाओ किं खीणकसाओ किं सजोगिजिणो किमजोगिमडारओ वधओ त्ति एवमेसो एगसजोगो । सपथि एत्थ दुसजोगादीहि अक्खसचार करिय सोलहमहस्स-तिणिसय तेयासीदि-पण्णमगा उप्पाएयन्वा । किं पुत्रमेदासिं वधो वोच्छिज्जति किमुदवो किं दो वि समं वोच्छिज्जति एवमेत्थ तिण्णि भंगा । किं सोदएण वधो किं परोदएण किं सोदय-परोदएण एत्थ वि तिण्णि भगा । किं सातरो वधो किं णिरतरो [ किं ] सातर-णिरतरो त्ति एत्थ वि तिण्णेन भगा । एदामि किं मिच्छत्तपच्चओ वधो किमसजमपच्चओ किं कसायपच्चओ किं जोगपच्चओ वधो त्ति पण्णारस मूलपच्चयपण्हमगा<sup>१</sup> हवति । एयत निपरीय-मूढ-सदेह-अण्णाणमिच्छत्त चक्खु-सोद घाण जिन्ना-पास-मण-पुट्ठीकाइय-आउकाइय-तेउकाइय-वाउ-काइय वणफ्फादिकाइय तमकाइयासजम-सोलमरुमाय णणोकरसाय पण्णारसजोगपच्चए इविय

करते ह । वह इस प्रकार है— क्या मिथ्यादृष्टि बन्धक है, क्या सासादनसम्पगदृष्टि बन्धक है, क्या सम्यग्मिथ्यादृष्टि बन्धक है, क्या असम्यतसम्पगदृष्टि बन्धक है, क्या सयतान्मयत, क्या प्रमत्त, क्या अप्रमत्त, क्या अपूर्वकरण, क्या अनिर्मुक्तिकरण, क्या सूक्ष्मसाम्परायिन्, क्या उपशान्तनपाय, क्या शीणनपाय, क्या संयोगी जिन, या क्या अयोगी भट्टारक बन्धक ह, इस प्रकार ये एकसंयोगी भग हैं । अत्र यहा द्विसंयोगादिकोंके द्वारा अक्षसचार नरके सोलह हजार तीन सौ तेरासी प्रश्नभग उत्पन्न कराना चाहिये । क्या पूर्वमे इनका बन्ध व्युत्थित होता है, क्या उदय, या क्या दोनों एक साथ व्युत्थित होते हैं, इस प्रकार यहा तीन भग हों हैं । क्या स्वोदयमे बन्ध होता है, क्या परोदयसे या क्या स्वोदय परोदयमे, इस प्रकार यहा भी तीन भग होंते ह । क्या सान्तर बन्ध होता है, क्या निरन्तर बन्ध होता है, या क्या सान्तर निरन्तर, इस प्रकार यहा भी तीन ही भग होंते हैं ।

इनका उन्त्र क्या मिथ्यात्वप्रत्यय है, क्या असयमप्रत्यय है, क्या क्वायप्रत्यय है, या क्या योगप्रत्यय उन्त्र है, इस प्रकार पन्त्रह मूल प्रत्यय निमित्तक प्रश्नभग होते हैं । एकान्त, निपरीत, मूढ [ विनय ], सन्देह और अज्ञान रूप पाच मिथ्यात्व, चक्षु, श्रोत्र, घ्राण, जिह्वा, स्पर्श, मन, पूर्ण प्रतीकायिक, अष्कायिक, तेजकायिक, वायुकायिक, घनस्पति-कायिक और व्रसफायिक, इनके निमित्तमे होनेवाले नारह असयम, सोलह क्वाय, नौ

१ अन्धप्रज्ञो 'पंचण्हमगा', आपतो 'पंचण्ह मगा' इति पाठ ।

सोलस कमाय, सत्त णोकमाय दोण्णि जोग ति नादालीस पच्चया होति । तिग्गिक्ख मणुस्माउ  
आण एक्केतालीम पच्चया, कम्मइयपच्चयाभाजादो । मेम सुगम ।

तिरिक्खाउ तिरिक्खगइ-एइदिय-धीइदिय-तीइदिय-चउरिंदियजादि-तिरिक्खगइ-  
पाओग्गाणुपुञ्जी-आदाउज्जोअ थावर-सुहुम साहारणसरीराण तिरिक्खगइसजुतो वधो । मणुस्ताउ  
मणुसगइ मणुमगइपाओग्गाणुपु-वी उच्चागोदाण मणुसगइसजुतो । सेमाण पयडीण नधो  
तिरिक्ख-मणुसगइसजुतो । पच्चिदियअपज्जत्ता सामी । बधद्धान सुगम । नधवेच्छेदो णत्थि ।  
पचणाणावरणीय-णउदसणावरणीय मिच्छत्त-सोलसकमाय-भय-दुगुछा तेजा-कम्मइयसरीर वण्ण-  
गध-रम-फास-अगुरुत्तहुन-उवघाद-णिमिण पचतगइयाण चउरिंहो नधो, धुवनेधित्तादो ।  
सेमाण सादि अद्दुवो ।

पचिदिय-पचिदियपज्जत्तएसु पचणाणावरणीय-चउदसणावर-  
णीय-जसकित्ति-उच्चागोद पचतराइयाणं को वधो को अवधो ?  
॥ १०३ ॥

एद पुच्छासुत्त देसामासिय, तेणेदेण सुइदत्थाण परूवणा कीरदे । त जहा — किं

असयम, सोलह कपाय, सात नाकपाय और दो योग, इस प्रकार व्यालीस प्रत्यय होते हैं । तिर्यगायु और मनुष्यायुके इकतालीस प्रत्यय होते हैं, क्योंकि, उनके कर्मण प्रत्ययका अभाव है । शेष प्रत्ययप्ररूपणा सुगम है ।

तिर्यगायु, तिर्यग्गति, ऐकांद्रिय, द्वींद्रिय, त्रींद्रिय, चतुष्टिंद्रिय जाति, तिर्यग्गति प्रायोग्यानुपूर्वी, आताप, उद्योत, स्थावर, सूक्ष्म और साधारण शरीर, इनका तिर्यग्गतिसे सयुक्त बंध होता है । मनुष्यायु, मनुष्यगति, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी और उच्चगोत्रका मनुष्यगतिसे सयुक्त, तथा शेष प्रकृतियोंका बंध तिर्यग्गति व मनुष्यगतिसे सयुक्त होता है । पंचेन्द्रिय अपर्याप्त जीव स्वामी है । बन्धा-जान सुगम है । बन्ध-युच्छेद यहा है नहीं । पाच ज्ञानावरणीय, नौ दर्शनावरणीय, मिथ्यात्व, सोलह कपाय, भय, जुगुप्सा, तैजस व कर्मण शरीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पश, अगुरुत्तु, उपघात, निर्माण और पाच अन्तराय, इनका चार प्रकारका बंध होता है, क्योंकि, ये ध्रुवबन्धी हैं । शेष प्रकृतियोंका सादि व अधुव बंध होता है ।

पंचेन्द्रिय और पंचेन्द्रिय पर्याप्तक जीवोंमें पाच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, यशक्रीति, उच्चगोत्र और पाच अन्तराय, इनका कौन बन्धक और कौन अनन्धक है ?  
॥ १०३ ॥

यह पृच्छासूत्र देशामर्शक है, इसलिये इसके द्वारा सूचित अर्थोंकी प्ररूपणा

मिच्छाद्वि वधओ किं सासणो वधओ किं सम्मामिच्छाद्वि वधओ किमसजदसम्माद्वि वधओ किं सजदासजदो किं पमत्तो किमपमत्तो किमपुच्चो किमणियद्वि किं सुहुमसापराइयओ किमुव-  
सत्तकमाओ किं खीणकसाओ किं सजोगिजिणो किमजोगिमिडारओ वधओ त्ति एवमेसो  
एगसजोगो । सपवि एत्थ दुसजोगादीहि अक्खसचार करिय सोलहसहस्स-तिणिसय-तेया-  
सीदि-पण्णभगा उप्पाएयव्वा । किं पुच्चमेदामिं वओ वोच्छिज्जदि किमुदओ किं दो वि सम  
वोच्छिज्जति एवमेत्थ तिण्णि भगा । किं सोदएण वधो किं परोदएण किं सोदय-परोदएण  
एत्थ नि तिण्णि भगा । किं सातरो वधो किं गिरतरो [ किं ] सातर-गिरतरो त्ति एत्थ वि  
तिण्णेव भगा । एदामिं किं मिण्डत्तपच्चओ वधो किमसजमपच्चओ किं कसायपच्चओ किं  
जोगपच्चओ वधो त्ति पण्णारस मूलपच्चयपण्हभगा<sup>१</sup> हत्ति । एत विपरीय-मूढ-सदेह-  
अण्णाणमिच्छत्त-चक्खु-सोद घाण जिन्ना पास-मण-पुढ रीकाइय-आउकाइय-तेउकाइय-वाउ-  
काइय वणप्फदिकाइय तसकाइयासजम-सोलसरुसाय णवणोकमाय पण्णारसजोगपच्चए द्वविय

करते हैं । वह इन प्रकार है— क्या मिथ्यादृष्टि बन्धक है, क्या सासादनसम्यग्दृष्टि  
बन्धक है, क्या सम्यग्मिथ्यादृष्टि बन्धक है, क्या असपत्तसम्यग्दृष्टि बन्धक है, क्या  
सयतासयत, क्या प्रमत्त, क्या अप्रमत्त, क्या अपूर्णकरण, क्या अनिशुक्तिकरण, क्या  
सूक्ष्ममाप्परायिक, क्या उपशान्तरूपाय, क्या क्षीणरूपाय, क्या सयोगी जिन, या क्या  
अयोगी भट्टारक बन्धक है, इस प्रकार ये एकसयोगी भग हैं । अब यहा द्विसयोगादिकोंके  
द्वारा अक्षसचार करके सोलह हजार तीन सौ तेरासी प्रश्नभग उत्पन्न कराना चाहिये ।  
क्या पूर्वमें इनका बन्ध व्युत्तिन्न होता है, क्या उदय, या क्या दोनों एक साथ व्युत्तिन्न  
होते हैं, इस प्रकार यहा तीन भग होते हैं । क्या स्वोदयमे बन्ध होता है, क्या परोदयसे  
या क्या स्रोदय परोदयमे, इस प्रकार यहा भी तीन भग होते हैं । क्या सान्तर बन्ध  
होता है, क्या निरन्तर बन्ध होता है, या क्या सान्तर निरन्तर, इस प्रकार यहा भी तीन  
ही भग होते हैं ।

इनका बन्ध क्या मिथ्यात्वप्रत्यय है, क्या असयमप्रत्यय है, क्या कपायप्रत्यय है,  
या क्या योगप्रत्यय बन्ध है, इस प्रकार पन्द्रह मूल प्रत्यय निमित्तक प्रश्नभग होते हैं ।  
एकान्त, विपरीत, मूढ़ [ चिन्तय ], सन्देह और अज्ञान रूप पाच मिथ्यात्व, चक्षु, श्रोत्र,  
घ्राण, जिह्वा, स्पर्श, मन, धृत्वीकायिक, अप्कायिक, तेजकायिक, चायुकायिक, वनस्पति-  
कायिक और प्रसकायिक, इनके निमित्तमे होनेवाले बारह असयम, सोलह कपाय, नौ

चौदससदएकेतालीसकोडाकोडी-पण्णारसलकख अट्टारससहम्म-अट्टसय सत्तफोडी'-अट्टपचास-  
 लकख उचवचामसहस्स-अट्टसय एककत्तरिउत्तरपच्चयपण्णभगा' उप्पाएदव्वा १४४११५  
 १८८०७५८५५८७१ । किं णिरयगइमजुत्त वज्जति किं तिरिक्खगइसजुत्त किं मणुस्सगइसजुत्त  
 [ किं देवगइसजुत्त ] इदि एत्थ पण्णारम पण्हभगा उप्पाएदव्वा । अट्टाणभगपमाण सुगम ।  
 किमपिदगुणैट्ठाणस्तादिए मज्जे अते वधो वोच्छिज्जदि ति एककेमकम्हि गुणट्ठाणे तिण्णि  
 निण्णि भगा उप्पाएयव्वा । सच्चवधोच्छेदपण्हममामो वाएतालीस । किं मात्थिओ वधो  
 किमणादिओ किं खुवो किमद्वुओ ति मय पण्णारम पण्हभगा उप्पाएयव्वा ।

मिच्छाडट्टिपहुडि जाव सुहुमसापराडयसुद्धिसंजदेसु उवसमा  
 खवा वधा । सुहुमसापराडयसुद्धिसजदद्वाए चरिमसमय गंतूण वधो  
 वोच्छिज्जदि । एदे वधा, अवसेसा अवधा ॥ १०४ ॥

एदस्स अत्थो उच्चदे— पचणाणारणीय चउदमणारणीय पचतराडयाण पुञ्च उधो

नाकपाय आर पट्टह याग, इन प्र ययोंको स्थापित कर चौदह सो इकतालीस कोडाकोडी,  
 पन्द्रह लाख, अट्टारह हजार, आठ सौ मात करोड, अट्टावन गार, पचवन हजार, आठ सौ  
 इक्तर उत्तर प्रत्यय निमित्तक प्रश्नभग उत्पन्न कराना चाहिये । १४४११५१८८०७५८५८७१ ।

ये क्या नरकगतिसे सयुक्त वधन ह, क्या तिर्यग्गतिसे सयुक्त वधते हैं, क्या  
 मनुष्यगतिसे सयुक्त वधते ह, [ या क्या देवगतिसे सयुक्त वधते ह, ] इस प्रकार यहा  
 पन्द्रह प्रश्नभग उत्पन्न कराना चाहिये । यन्वाधानका भगप्रमाण सुगम है । क्या विचक्षित  
 गुणस्थानके भाषिमें, मध्यम या अन्तमें उध व्युच्छिन्न होता है, इस प्रकार एक एक  
 गुणस्थानमें तीन तीन भग उत्पन्न कराना चाहिये । उध व्युच्छेदके प्रश्नप्रत्ययक सर्व  
 भगोंका योग प्यालीस होता ह । क्या म्यादि, क्या अनादि, क्या ध्रुव और क्या अध्रुव वध  
 होता है, इस प्रकार यहा पन्द्रह प्रश्नभग उ पन्न कराना चाहिये ।

मिथ्याश्रिमे लेकर सूक्ष्मसाम्परायिकशुद्धिमयतौमे उपशमक व क्षपक तक बन्धक हैं ।  
 सूक्ष्मसाम्परायिकशुद्धिमयतकालके अन्तिम ममयको जाकर उध व्युच्छिन्न होता है । ये  
 बन्धक हैं, शेष उधक है ॥ १०४ ॥

इस सूत्रका अर्थ कहते ह— पाच पानारणीय, चार दशनावरणीय और पाच

१ प्रीणु 'सत्त सत्तजाने' इति पाठ ।

२ प्रीणु 'पच्चया पण्णभगा' इति पाठ ।

३ अ भाषया 'निमपिदगुण', वाप्रता 'निमपिदगुण' इति पाठ ।

पञ्चा उदओ वोच्छिज्जदि, सुहुमसापराइयचरिमसमयमिद्दि णट्टयधाणमेदासिं खीणकसायचरिम-  
समयमि उदयवोच्छेदुवलभादो । जसकितीए उच्चागोदस्स य पुच्च बधो पञ्चा उदओ  
वोच्छिज्जदि, सुहुमसापराइयचरिमसमयमि णट्टनणाण अजोगिचरिमसमयमि उदय-  
वोच्छेदुवलभादो ।

पचणाणावरणीय-चउदसणावरणीय-पचतराइयाण सोदओ बंधो । जसकितीए  
मिञ्छाइट्टिप्पहुडि जाव असजदमम्माइट्टि ति सोदय-परोदणण बधो, एदेसु अजसकितीए वि  
उदयदमणादो । उवरि मोदएणेव, पडिवक्खुदयाभावादो । मिञ्छाइट्टिप्पहुडि जाव मजदा-  
सजदो [ ति ] उच्चागोदस्स सोदय परोदणण बधो, एदेसु णीचागोदस्सं ति उदयदमणादो ।  
उवरि मोदओ, पडिवक्खुदयाभावादो ।

पचणाणावरणीय चउदसणावरणीय पचतराइयाण गिरतरो बधो, सव्वगुणट्ठाणेषु  
त्रि एगमएण बधवोच्छेदाभावादो । जसकितीए सातर गिरतरो-बधो, मिञ्छाइट्टिप्पहुडि जाव  
पमत्तमजदो ति मातरो बधो, एतेसु पविक्खपयडिवधदमणादो, उवरि गिरतरो, पडिवक्ख-

अन्तरायका पूर्वमं बन्ध और पश्चात् उदय व्युच्छिन्न होता है, क्योंकि, सूक्ष्मसाम्परायिक  
गुणस्थानके अन्तिम समयमें बन्धके नष्ट हो जानेपर क्षीणकषाय गुणस्थानके अन्तिम  
समयमें उनका उदय युच्छेद पाया जाता है । यदाकीर्ति और उच्चगोत्रका पूर्वमें बन्ध और  
पश्चात् उदय व्युच्छिन्न होता है, क्योंकि, सूक्ष्मसाम्परायिक गुणस्थानके अन्तिम समयमें  
बन्धके नष्ट हो जानेपर अयोगिके उलीके अन्तिम समयमें इनका उदय युच्छेद पाया जाता है ।

पाच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय और पाच अन्तरायका स्वोदय बन्ध  
होता है । यदाकीर्तिका मिथ्यादृष्टिसे लेकर असयतसभ्यदृष्टि तक स्वोदय परोदयसे बन्ध  
होता है, क्योंकि, इन गुणस्थानोंमें अयदाकीर्तिका भी उदय देखा जाता है । ऊपर इसका  
स्वोदयने ही बन्ध होता है, क्योंकि, यहा अयदाकीर्तिके उदयका अभाव है । मिथ्यादृष्टिसे  
लेकर सयतासयत तक उच्चगोत्रका स्वोदय परोदयने बन्ध होता है, क्योंकि, इन  
गुणस्थानोंमें नीचगोत्रका भी उदय देखा जाता है । उपरिम गुणस्थानोंमें उसका स्वोदयसे  
बन्ध होता है, क्योंकि, यहा नीचगोत्रके उदयका अभाव है ।

पाच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय और पाच अन्तरायका निरन्तर बन्ध  
होता है, क्योंकि, सब गुणस्थानोंमें ही एक समयसे इनके बन्ध युच्छेदका अभाव है ।  
यदाकीर्तिका सान्तर निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, मिथ्यादृष्टिसे लेकर प्रमत्तसयत तक  
इनमें प्रतिपक्ष प्रकृतिका बन्ध देखे जानेसे सान्तर बन्ध होता है और इससे ऊपर



पयडीए बधाभावादो । उच्चागोदस्स मिच्छाइट्ठि सासणेसु सातर गिरतरो । अससंज्जैसासाउअ-  
तिरिक्ख-मणुस्सेसु, सखेज्जवामाउअसुहत्तिलेस्सिएसु गिरतरवधदसणादो । उनरिमगुणेसु  
गिरतरो, पडिउक्खपयडीए वधाभावादो । पच्चयाण मूलेधमगो । गइमजुत्तादि उवरि  
जाणिय वत्तय ।

णिहाणिहा पयलापयला धीणगिद्धि-अणंताणुबंधिकोध-माण-  
माया लोभ इत्थिवेद-तिरिक्खाउ तिरिक्खगइ-चउसठाण-चउसंघडण-  
तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वी उज्जोव-अप्पसत्थविहायगइ-दुभग-दुस्सर-  
अणादेज्ज णीचागोदाण को बधो को अवंधो ? ॥ १०५ ॥

सुगम ।

मिच्छाइट्ठी सासणमम्माइट्ठी वधा । एदे वधा, अवमेसा अवधा

॥ १०६ ॥

प्रतिपक्ष प्रकृतिके बधका अभाउ होनेसे उनका निरन्तर बध होता है । उच्चगोत्रका  
मिथ्यादृष्टि और सामादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें सातर निरन्तर बध होता है, क्योंकि,  
यहा असंख्यानवपायुष्क तिर्यच व मनुष्योंमें, तथा सग्यानत्रपायुष्क नीति शुभ लेख्या  
घालोंमें उसका निरन्तर बध देखा जाता है । उपरिम गुणस्थानोंमें निरन्तर बन्ध  
होता है, क्योंकि, वहा प्रतिपक्ष प्रकृति व धका अभाउ है । प्रत्ययोंकी प्ररूपणा मूलेषके  
अमान है । गतिमजुत्तादि उपरिम पूंठा तेंने त्रिपयमें जानकर कहना चाहिये ।

निद्रानिद्रा, प्रचलाप्रचला, स्त्यानगृद्धि, अनन्तानुन्धी क्रोध, मान, माया, लोभ,  
सीवेद, तिर्यगायु, तिर्यग्गति, चार सस्थान, चार महानन, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी, उद्योत,  
अप्रशस्तविहायोगति, दुर्भग, दुस्वर, अनादेय और नीचगोत्र, इनका कौन बधक और कौन  
अवधक है ? ॥ १०५ ॥

यह सब सुगम है ।

मिथ्यादृष्टि और सामादनसम्यग्दृष्टि बन्धक हैं । ये बधक हैं, शेष अवन्धक हैं  
॥ १०६ ॥

एदस्स अन्थो वुच्चदं—धीणगिद्धितियस्स पुत्र वधो पच्छ उदओ वोच्छिज्जदि,  
 सामणमम्माड्ढि पमत्तसज्जेसु जहासखाए वधोदयवोच्छेददसणादो । अणताणुपविचउत्तकस्स  
 दो पि सम वोच्छिज्जति, सामणे तदुभयाभावेदमणादो । इत्थिवेदस्स पुव्व वधो पच्छा  
 उदओ वोच्छिज्जदि, सासणाणियट्ठीसु जहासखाए वधोदयवोच्छेदुवलभादो । तिरिक्खाउ-  
 त्तिरिक्खगइ-उज्जेण णीचागोदाण पुव्व वधो पच्छा उदओ वोच्छिज्जदि, सामणसम्मादिट्ठि-  
 मन्नामज्जेसु तेसिं दोण्ण वोच्छेदुवलभादो । चउसठाणाण पुत्र वधो पच्छा उदओ वोच्छि-  
 ज्जदि, सासण सजोगीसु तेमिं दोण्ण वोच्छेदुवलभादो । एउ चदुसपडणाण पि वत्तव्व,  
 सामणे फिट्ठपधानमप्यमत्तुवसत्तकसाएसु पढम निदियमघडणदुगोदयवोच्छेददसणादो । एव  
 त्तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वीदुभग अणदिज्जाण वत्तव्व सासण-असजदसम्मादिट्ठीसु वधोदय-  
 वोच्छेददसणादो । एवमपमत्थविहायगइ-दुस्मराण वत्तव्व, सासण-मजोगीसु वधोदयवोच्छेद-  
 दसणादो ।

इस सूत्रका अर्थ कहते हैं— स्नानगृह्णित्यका पूर्वमें बन्ध और पश्चात् उदय  
 व्युच्छिन्न होता है, क्योंकि, सासादनसम्यग्दृष्टि और प्रमत्तसयत गुणस्थानमें यथाक्रमसे इनके  
 बन्ध व उदयका व्युच्छेद देखा जाता है । अनन्तानुबन्धिचतुष्का बन्ध और उदय दोनों  
 एक साथ व्युच्छिन्न होते हैं, क्योंकि, सासादन गुणस्थानमें उन दोनोंका अभाव देखा जाता  
 है । श्लोकेदका पूर्वमें बन्ध और पश्चात् उदय व्युच्छिन्न होता है, क्योंकि, सासादन और  
 अनिष्टित्तिकरण गुणस्थानोंमें यथाक्रमसे उसके बन्ध व उदयका व्युच्छेद पाया जाता है ।  
 तिर्यग्गयु, तिर्यग्गति, उद्योत और नीचगोत्र, इनका पूर्वमें बन्ध और पश्चात् उदय  
 व्युच्छिन्न होता है, क्योंकि, सासादनसम्यग्दृष्टि और सयतामयत गुणस्थानोंमें क्रमशः उन  
 दोनोंका व्युच्छेद पाया जाता है । चार सस्थानोंका पूर्वमें बन्ध और पश्चात् उदय  
 व्युच्छिन्न होता है, क्योंकि, सासादन और भयोगकेवली गुणस्थानोंमें उन दोनोंका  
 व्युच्छेद पाया जाता है । इसी प्रकार चार सहननोंके भी पूर्व पश्चात् बन्धोदयव्युच्छेदको  
 कहना चाहिये, क्योंकि, सामादन गुणस्थानमें बन्धके नष्ट हो जानेपर अप्रमत्त व  
 उपशान्तकषाय गुणस्थानोंमें क्रमसे उक्त चार सहननोंके प्रथम व, द्वितीय युगलके  
 उदयका व्युच्छेद देखा जाता है । इसी प्रकार तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी, दुर्भग और  
 अनादयके भी कहना चाहिये, क्योंकि, सासादन व असघतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें  
 क्रमशः इनके बन्ध व उदयका व्युच्छेद देखा जाता है । इसी प्रकार अप्रशस्तविहायोगति  
 और सुस्वप्ने भी कहना चाहिये, क्योंकि, सामादन और भयोगकेवली गुणस्थानोंमें  
 इनके बन्ध व उदयका व्युच्छेद देखा जाता है ।

धीणगिद्धितियादीण सन्वासिं पयडीण वधो सोदय-परोदओ, उभयथा नि विरोहा भारादे। धीणगिद्धितिय अणताणुनिचउत्क तिरिक्खाउआण गिग्तेगे वधो, एगममण्ण वधुवरमाभारादे। तिरिक्खगइ-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुञ्जी णीचागोदाण सानर गिरतरो वधो। कथ गिरतरो ? ण, तेउ-वाउक्काइयचरपिचिदियमिच्छाइइसु सत्तमपुढनीमिच्छाइइ-मामण-मम्माइइणेरइएसु गिरतरनधुवलमादे।<sup>१</sup> सेमाण सातरो वधो, एगममण्ण वधुवरमदमणादे। पच्चया ओघपच्चयतुल्ला। तिरिक्खाउ तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुञ्जी-उज्जोवाणि दो नि तिरिक्खगइसजुत्त, इत्थिमेद गिरयगइए विणा तिगइसजुत्त, चउसठाण चउसचडणाणि दो नि तिरिक्ख-मणुमगइसजुत्त, अप्पमत्थनिहायगइ दुभग दुस्स-अणादेज्ज णीचागोदाणि मिच्छाइइ तिगइसजुत्त वधड देवगइए षिणा, सासणो तिरिक्ख मणुसगइसजुत्त। मेमाओ पयडीओ मिच्छाइइ चउगइसजुत्त सामणो तिगइसजुत्त। सेम चिनिय वत्तव्व।

स्नानगृहप्रिय आदिक सब प्रतियौका बन्ध सोदय परादय होता है, क्योंकि, दोनों प्रकारसे भी उनके बन्धका निराध नहा है। स्नानगृहप्रिय, अन-तानुबधिचतुष्क और नियगायुका निरन्तर बध होता है, क्योंकि, एक समयसे इनके बन्धविधामका अभाव है। नियगति, नियगतिप्रायोग्यानुपूर्वीं आर नीचगोत्रका सातर निरन्तर बध होता है।

शका—निरन्तर बध कने जाता है ?

समाधान—यह शका ठीक नहीं, क्योंकि, तेजकायिक व प्रायुकायिक-जीवोंमेंसे आकर पचाइय मिथ्यादृष्टियोंमें उत्पन्न हुए जीवों तथा स्वप्नम पृथिवीके मिथ्यादृष्टि व सासादनसम्पगदृष्टि नारकियोंमें उक्त प्रतियौका निरन्तर बन्ध पाया जाता है।

शेष प्रतियौका सातर बध होता है, क्योंकि, एक समयसे उनके बन्धका विश्राम देखा जाता है। प्रययोंकी प्ररूपणा ओघप्रत्ययोंके समान है। तियगायु, तिर्यग्गति प्रायोग्यानुपूर्वीं और उद्योतको दोनों ही गुणस्थानवर्ती जीव नियगतिसे सयुक्त बाधते हैं। रात्रिको नरकगतिके विना तीन गतियोंमें सयुक्त बाधते हैं। चार सस्थान और चार सहननको दोनों ही तियगति व मनुष्यगतिके सयुक्त बाधते हैं। अप्रशस्तविहायोगति, दुभग, दुस्सर, अनादेय और नीचगोत्रको मिथ्यादृष्टि देवगतिके विना तीन गतियोंमें सयुक्त बाधते हैं, तथा सासादनसम्पगदृष्टि तियग्गति-व मनुष्यगतिके सयुक्त बाधते हैं। शेष प्रतियौको मिथ्यादृष्टि चारों गतियोंमें सयुक्त और सासादनसम्पगदृष्टि तीन गतियोंमें सयुक्त बाधते हैं। शेष विचार कर कहना चाहिये।

१ प्रतियु ' गिरतरो वधुवल्मादा ' इति पाठ ।

णिद्दा-पयलाणं को वंधो को अवंधो ? ॥ १०७ ॥

सुगम ।

मिच्छाद्दृष्टिपहुडि जाव अपुव्वकरणपविट्टमुद्धिसंजदेसु उव-  
समा खवा वंधा । अपुव्वकरणसंजदद्वाए संखेज्जदिमं भागं गंतूण  
वधो वोच्छिज्जदि । एदे वंधा, अवसेसा अवंधा ॥ १०८ ॥

एदस्स अत्थो उच्चदे—उपो एदासिं पुव्व वोच्छिज्जदि पच्छा उदओ, अपुव्व-  
पीणकसाएसु कमेण वधोदयवोच्छेददसणादो । सोदय-परोदएण सव्वगुणट्ठाणेसु वधो,  
अद्दुवोदयत्तादो । गिरतरो, धुव्वधित्तादो । पच्चया सव्वगुणट्ठाणेसु ओघपच्चयतुल्ला ।  
मिच्छाद्दृष्टी चउगइमजुत्त, सासणो तिगइसजुत्त, सम्मामिच्छाद्दृष्टी असजदसम्माद्दृष्टी दुगइसजुत्त,  
सेसा देवगइसजुत्त । गइसामित्तद्वाण-उधवोच्छेदद्वाणाणि सुगमाणि । मिच्छाद्दृष्टिस्स चउ-  
न्निहो वधो । सेसेसु तिनिहो, धुव्वत्ताभावादो ।

सादावेदणीयस्स को वंधो को अवंधो ? ॥ १०९ ॥

निद्रा और प्रचलाका कौन बन्धक और कौन अनन्धक है ? ॥ १०७ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

मिथ्यादृष्टिसे लेकर अपूर्वकरणप्रविष्टशुद्धिमयतोंमें उपशमक व क्षपक तक बन्धक  
हैं । अपूर्वकरणमयतकालके सख्यातों भाग जाकर बन्धव्युच्छेद होता है । ये बन्धक हैं,  
शेष अनन्धक हैं ॥ १०८ ॥

इस सूत्रका अर्थ कहते हैं— इनका बन्ध पूर्वमें व्युच्छिन्न होता है और उदय  
पश्चान्, क्योंकि, अपूर्वकरण व क्षीणकपाय गुणस्थानोंमें प्रथमसे इनके बन्ध और उदयका  
व्युच्छेद देखा जाता है । मय गुणस्थानोंमें इनका बन्ध म्योदय परोदयसे होता है, क्योंकि,  
ये अधुवादीय हैं । गिरतर बन्ध होता है, क्योंकि, धुव्वधी है । प्रत्यय सत्र गुणस्थानोंमें  
ओघप्रत्ययोंके समान है । मिथ्यादृष्टि चारों गतियोंमें सयुक्त, सासादनसम्यग्दृष्टि तीन  
गतियोंमें सयुक्त, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असयतसम्यग्दृष्टि दो गतियोंसे सयुक्त, तथा शेष  
गुणस्थानवर्ती देवगतिसे सयुक्त याधते हैं । गतिस्त्रामित्त, अध्यान और बन्धव्युच्छेदस्थान  
सुगम है । मिथ्यादृष्टिके चारों प्रकारका बन्ध होता है । शेष गुणस्थानोंमें तीन प्रकारका  
बन्ध होता है, क्योंकि, यहा धुव्व बन्धका अभाव है ।

मातावेदनीयका कौन बन्धक और कौन अनन्धक है ? ॥ १०९ ॥

सुगम ।

मिच्छाद्दृष्टिपहुडि जाव सजोगिकेवली वधा' । सजोगिकेवलि-  
अद्वाए चरिमसमय गतूण वधो' वोच्छिज्जदि । एदे वधा, अवसेसा  
अवधा ॥ ११० ॥

एदस्म अत्थो उन्चेद— वधो पुत्र पच्छा उदओ वोच्छिण्णो, सजोगिकेवलि-  
अजोगिकेवलीसु जहाकमेण वधोदयोन्चेददमणादो । सोदय-परोदएण वधो, मच्चगुणद्वाणेसु  
अद्दुवोदयत्तादो । मिच्छाद्दृष्टिपहुडि जाव पमत्तमजदो ति सातसे वधो, एगसमएण वधुवरम-  
दसणादो । उतरि गिरत्तो, पडिवनरसपयडीए वधाभावादो । प-चया सच्चगुणद्वाणेसु ओघपच्चय-  
तुल्ला । मिच्छाद्दृष्टि सामणसम्मादिद्विणो तिगइमजुत्त, गिरयगईए सह सादवधाभावादो । सेम  
सच्चमोघतुल्ला ।

असादावेदणीय-अरदि सोग-अथिर-असुह-अजसकित्तिणामाण  
को वधो को अवधो ? ॥ १११ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

मिथ्यादृष्टिमे लेकर सयोगकेवली तक बन्धक हैं । सयोगकेवलिकालके अन्तिम  
समयको जाकर बंधव्युच्छेद होता है । ये बन्धक हैं, शेष अबन्धक हैं ॥ ११० ॥

इस मूलका अर्थ कहते हैं— सातावेदनीयका ऋषि पूर्वमें और उदय पश्चात्  
व्युच्छिन्न होता है क्योंकि, सयोगकेवली और अयोगकेवली गुणस्थानोंमें क्रमसे उसके  
बंध और उदयका व्युच्छेद देखा जाता है । स्वोदय परोदयसे बन्ध होता है, क्योंकि,  
वह सब गुणस्थानोंमें अधुवोदयी है । मिथ्यादृष्टिसे लेकर प्रमत्तसयत तक सान्तर  
बन्ध होता है, क्योंकि, यहा एक समयसे उसका बन्धविधाम देखा जाता है ।  
प्रमत्तसयतसे ऊपर निरंतर बंध होता है, क्योंकि, वहा प्रतिपक्ष प्रवृत्तिके बंधन  
अभाव है । प्रत्यय सब गुणस्थानोंमें ओघप्रत्ययोंके समान हैं । मिथ्यादृष्टि और सासादन  
सम्पन्नदृष्टि तीन गतियोंसे समुक्त बाधते हैं, क्योंकि, नरकगतिके साथ सातावेदनीयका  
बंध नहीं होता । शेष सब प्ररूपणा ओघने समान है ।

असादावेदणीय, अरति, शोक, अस्थिर, अशुभ और अयशक्रीति नामकर्मका कौन  
बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ १११ ॥

१ प्रतिशु 'वधा' इति पाठ ।

२ अ-काप्रयो 'वधा' इति पाठ ।

[ सुगम । ]

मिच्छाद्दृष्टिपहुडि जाव पमत्तसंजदो त्ति बंधा । एदे बंधा,  
अवसेसा अबंधा ॥ ११२ ॥

असादावेदणीयस्स पुच्च वधो पच्छा उदओ वोच्छिण्णो, पमत्त-अजोगिकेवलीसु जहा-  
कमेण वधोदयवोच्छेदुवलभादो । एवमरदि-सोगाण वत्तन्व, पमत्तापुच्चरणेसु वधोदयवोच्छेद-  
दसणादो । एव चेव अधिर-असुहाण वत्तन्व, पमत्त-सजोगिकेवलीसु वधोदयवोच्छेदुवलभादो ।  
अजसकित्तीए पुन्नुमुदओ पच्छा वधो वोच्छिण्णो, पमत्तसजद अमजदसम्मादिट्ठीसु बंधोदय-  
वोच्छेदुवलभादो ।

असादावेदणीय अरदि-मोगाण सोदय-परोदएण सन्वगुणहाणेसु वधो, परावत्तणोदय-  
त्तादो । अधिरामुभाण मत्तत्थं सोदएण वधो, धुवोदयत्तादो । अजसकित्तीए मिच्छाद्दृष्टिपहुडि  
जाव अमजदसम्मादिट्ठी त्ति सोदय परोदएण वधो, एदेसु पडिपन्खोदएण वि वधुवलभादो ।

[ यह सूत्र सुगम है । ]

मिथ्यादृष्टिमे लेकर प्रमत्तसयत तक बन्धक हैं । ये बन्धक हैं, शेष जीव अबन्धक  
हैं ॥ ११२ ॥

असादावेदनीयका पूर्वमें बन्ध और पश्चात् उदय व्युच्छिन्न होता है, क्योंकि,  
प्रमत्तसयत और अयोगिकेवली गुणस्थानोंमें यथाक्रमसे उसके बन्ध और उदयका व्युच्छेद  
पाया जाता है । इसी प्रकार अरति और शोकके कहना चाहिये, क्योंकि, प्रमत्त और  
अपूर्णकरण गुणस्थानोंमें प्रमत्त इनके बन्ध और उदयका व्युच्छेद देखा जाता है । इसी  
प्रकार ही अस्थिर और अशुभके भी कहना चाहिये, क्योंकि, प्रमत्त और सयोगिकेवली  
गुणस्थानोंमें उनके बन्ध और उदयका व्युच्छेद पाया जाता है । अयशकीर्तिका पूर्वमें  
उदय और पश्चात् बन्ध व्युच्छिन्न होता है, क्योंकि, प्रमत्तसयत और असयतसम्यग्दृष्टि  
गुणस्थानोंमें क्रमसे बन्ध और उदयका व्युच्छेद पाया जाता है ।

असादावेदनीय, अरति और शोकका सब गुणस्थानोंमें स्वोदय परोदयसे  
बन्ध होता है, क्योंकि, इनका उदय परिवर्तनशील है । अस्थिर और अशुभका सर्वत्र  
स्वोदयसे बन्ध होता है, क्योंकि, ये धुवोदयी हैं । अयशकीर्तिका मिथ्यादृष्टिसे लेकर  
असंयतसम्यग्दृष्टि तक स्वोदय-परोदयसे बन्ध होता है, क्योंकि, इन गुणस्थानोंमें प्रतिपक्ष  
प्रवृत्तिसे उदयके साथ भी उमका बन्ध पाया जाता है । इसके ऊपर परोदयसे

उवरि परोदएण, जसकितीए चेव तत्थोदियेदसणादो । एदासिं छण्ह पयडीण सातरो नधो,  
दो-निण्णिममयादिकालपडिबद्धवधणियमाभापादो । पच्चया सुगमा । एदाओ छप्पयडीओ  
मिच्छाइट्ठी चउगइसजुत्त, सामणो तिगइसजुत्त, सम्मामिच्छाइट्ठी अस नदसम्माइट्ठी दुगइसजुत्त,  
उवरिमा देवगइसजुत्त वधति । उवरि ओघभगो ।

मिच्छत्त णवुसयवेद णिरयाउ णिरयगइ-एइदिय-वीइदिय-तीह-  
दिय-वउरिदियजादि हुडसटाण -असपत्तसेवट्टसघडण-णिरयाणुपुब्बी-  
आदाव थावर सुहुम-अपज्जत्त साहारणसरीरणामाण को वधो को  
अवधो ? ॥ ११३ ॥

सुगम ।

मिच्छाइट्ठी वधा । एदे वधा, अवसेसा अवधा ॥ ११४ ॥

‘ एदे वधा ’ ति णिदेसो अणत्थओ, अणददडपरूचणादो । ण एम दोसो,

वध होता हे, क्योंकि, जहा वशनीतिना ही उदय देखा जाता हे । इन छह प्रवृत्तियोंका  
सातर वध होता हे, क्योंकि, दो-तीन समयादि रूप कालसे सम्बद्ध इनके वधके  
नियमना अभाव है । प्रत्यय सुगम ह । इन छह प्रवृत्तियोंको मिथ्यादृष्टि चार गतियोंसे  
संयुक्त, सासादनसम्यग्दृष्टि तीन गतियोंसे संयुक्त, सम्यग्मिथ्यादृष्टि व असयतसम्यग्दृष्टि  
दो गतियोंसे संयुक्त, तथा उपरिम जीव द्ववगतिसे संयुक्त बाधते ह । उपरिम प्ररूपणा  
ओघके समान ह ।

मिथ्यात्त, नपुमकवेद, नारकायु, नरकगति, एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय,  
चतुरिन्द्रिय जाति, हुण्डसस्थान, अमप्राप्तमृपाटिकासहनन, नरकानुपूर्वी, आताप, म्थावर,  
सूक्ष्म, अपयीप्त और साधारणशरीर नामकमका कौन वन्धक और कौन अनन्धक है ?  
॥ ११३ ॥

यह सूत्र सुगम हे ।

मिथ्यादृष्टि वन्धक हैं । ये वन्धक हैं, शेष अनन्धक हैं ॥ ११४ ॥

शुक्ल—‘ ये वन्धक हैं ’ यह निर्दश अनन्धक है, क्योंकि, यह ज्ञात अथवा  
प्ररूपण करता हे ।

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, मेधायनित अर्थात् मूल जनोके

१ प्रतिपु ‘ त्तादय ही पाठ ।

मेहावज्जियजणाणुग्गहट्ठ तण्णिहेसादो । मिच्छत्त-अपज्जत्ताण वधोदया सम वोच्छिज्जति,  
मिच्छाडडिम्हि चेन तदुभयवोच्छेददसणादो । एइदिय-नीडदिय तीडदिय चउरिदियजादि-  
आदाव-थानर-सुहुम-साहारणाणमेम विचारो णत्थि, पंचिदिएसु तेसिमुदयाभावादो । णवरि  
पंचिदियपज्जत्तएसु अपज्जत्तस्स वि एसो विचारो णत्थि ति वत्तव्व । णवुसयवेदस्स पुव्व वधो  
पच्छा उदओ वोच्छिज्जदि, मिच्छाडडि-अणियडिगुणेषु' वधोदयवोच्छेददसणादो । एव  
णिरयाउ-णिरयगड-णिरयाणुपुव्वीण वत्तव्व, मिच्छाडडि-असजदसमादिड्डीसु वधोदयवोच्छेददस-  
णादो । एव हुडसठाणस्स वत्तव्व, मिच्छाडडि-सजोगिकेजलीसु वधोदयवोच्छेददसणादो ।  
एवममपत्तसेवट्टसघडणस्स वि वत्तव्व, मिच्छाडडि अपमत्तेसु वधोदयवोच्छेदुवलभादो ।

मिच्छत्तस्स सोदएण वधो, धुवोदयत्तादो' । णवुमयवेद-अपज्जत्ताण सोदय परोदओ,  
अधुवोदयत्तादो । णवरि पंचिदियपज्जत्तएसु अपज्जत्तस्स परोदओ वधो, तत्थ तदुदयाभावादो ।

अनुग्रहके लिये यह निदेश किया गया है ।

मिथ्यात्व और अपर्याप्तका बन्ध व उदय दोनों एक साथ व्युच्छिन्न होते हैं, क्योंकि, मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें ही उन दोनोंका व्युच्छेद देखा जाता है । पचेन्द्रिय, कर्णन्द्रिय, घ्राणन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय जाति आत्ताप, स्वाचर, सूक्ष्म और साधारण, इन प्रकृतियोंके यह विचार नहीं है, क्योंकि, पचेन्द्रिय जीवोंमें उनके उदयका अभाव है । विशेष इतना है कि पचेन्द्रिय पर्याप्तकोंमें अपर्याप्त प्रकृतिके भी यह विचार नहीं है, ऐसा कहना चाहिये । नपुंसकचेदका पूर्वमें बन्ध और पश्चात् उदय व्युच्छिन्न होता है, क्योंकि मिथ्यादृष्टि और अनिवृत्तिकरण गुणस्थानोंमें क्रमशः उसके बन्ध और उदयका व्युच्छेद देखा जाता है । इसी प्रकार नारकायु, नरकगति और नरकानुपूर्वीके कहना चाहिये, क्योंकि, मिथ्यादृष्टि और असयत्सम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें क्रमसे इनके बन्ध और उदयका व्युच्छेद देखा जाता है । इसी प्रकार हण्डसंस्थानके भी कहना चाहिये, क्योंकि, मिथ्यादृष्टि और सयोगकेजली गुणस्थानोंमें इसके बन्ध व उदयका व्युच्छेद देखा जाता है । इसी प्रकार असप्राप्तस्पाटिका सहननके भी कहना चाहिये क्योंकि, मिथ्यादृष्टि और अप्रमत्त गुणस्थानोंमें इसके बन्ध व उदयका व्युच्छेद पाया जाता है ।

मिथ्यात्वका स्वोदयसे बन्ध होता है, क्योंकि यह धुवोदयी है । नपुंसकचेद और अपर्याप्तका स्वोदय परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, वे अधुवोदयी हैं । विशेष इतना है कि पचेन्द्रिय पर्याप्तकोंमें अपर्याप्तका परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, उनमें अपर्याप्तके

१ आरती 'अणियडिगुणेषु' इति पाठ ।

२ अ-आरतो 'धुवोदयादो' इति पाठ ।



मासणमु सातरो वधो । उरि रित्तरो, पडिउरुपयडोण वमाभावादे । पच्चया सुगमा ।  
उरि मूलेषभगे ।

पच्चस्वाणावरणकोध-माण-माया-लोभाणं को वधो को  
अवंधो ? ॥ ११७ ॥

सुगम ।

मिच्छादिद्विष्पहुडि जाव सजदासंजदा वधा । एदे वंधा,  
अवसेसा अवंधा ॥ ११८ ॥

एद पि सुगम ।

पुरिसवेद कोधमजलणाणं को वंधो को अवंधो ? ॥ ११९ ॥

सुगम ।

मिच्छादिद्विष्पहुडि जाव अणियद्विवादरसांपराइयपविट्टुअवसमा  
खा वधा । अणियद्विवादरद्वाए सेसे सखेज्जाभागे गतूण वधो  
वोच्छिज्जदि । एदे वधा, अवसेसा अवंधा ॥ १२० ॥

होता है । ऊपर उसका निरंतर बंध होता है, क्योंकि, वहा प्रतिपक्ष प्रवृत्तियोंके बंधका  
अभाव है । प्रथम सुगम है । उपरिम प्ररूपणा मूलेषभके समान है ।

प्रन्यायानावरण कोध, मान, माया और लोभका कौन बन्धक व कौन अवंधक  
है ? ॥ ११७ ॥

यह मूल सुगम है ।

मिथ्यादृष्टि लेकर सपतामयत तक बंधक हैं । ये बन्धक हैं, शेष अवंधक  
हैं ॥ ११८ ॥

यह मूल भी सुगम है ।

पुरुषवेत् और सज्वलनकोधका कौन बन्धक और कौन अवंधक है ? ॥ ११९ ॥

यह मूल सुगम है ।

मिथ्यादृष्टि लेकर अनिष्टिकरणवादादरमाप्परायिकप्रतिष्ठ उपशमक व क्षपक तक  
बंधक हैं । अनिष्टिकरणवादादरकालके शेषमें सख्यात बहुभागोके वीत जानेपर बंध  
व्युच्छिन्न होता है । ये बंधक हैं, शेष अवंधक हैं ॥ १२० ॥

एद पि सुगम ।

माण-माया संजलणाणं को बंधो को अबंधो ? ॥ १२१ ॥

सुगम ।

मिच्छादिद्विष्पहुडि जाव अणियट्टी उवसमा खवा बंधा ।  
अणियट्टिवादरद्दाए सेसे सेसे संखेज्जे भागे गतूण बंधो वोच्छिज्जदि ।  
एदे बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ १२२ ॥

सुगम ।

लोभसंजलणस्स को वधो को अबंधो ? ॥ १२३ ॥

सुगम ।

मिच्छादिद्विष्पहुडि जाव अणियट्टी उवसमा खवा बंधा ।  
अणियट्टिवादरद्दाए चरिमसमयं गतूण बंधो वोच्छिज्जदि । एदे बंधा,  
अवसेसा अबंधा ॥ १२४ ॥

यह सूत्र भी सुगम है ।

मज्जलन मान और मायाका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ १२१ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

मिथ्यादृष्टिसे लेकर अनिवृत्तिकरण उपशमक व क्षपक तक बन्धक हैं । अनिवृत्ति-  
वादरकालके शेष शेषमें मख्यात बहुभाग जाकर बन्ध व्युच्छिन्न होता है । ये बन्धक हैं,  
शेष अबन्धक है ॥ १२२ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

मज्जलन लोभका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ १२३ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

मिथ्यादृष्टिसे लेकर अनिवृत्तिकरण उपशमक व क्षपक तक बन्धक हैं । अनिवृत्ति-  
करणवादादरकालके अन्तिम समयमें जाकर बन्ध व्युच्छिन्न होता है । ये बन्धक हैं, शेष  
अबन्धक है ॥ १२४ ॥

मिच्छाद्विष्टिपहुडि जाव अपुव्वकरणपइइउवसमा खवा वधा ।  
अपुव्वकरणद्वाए सखेज्जे भागे गत्तण वधो वोच्छिज्जदि । एदे वधा,  
अवसेसा अवधा ॥ १३२ ॥

एदस्मरवो बुच्चदे— देवगइ वेउत्तियसरीर-अगोत्तग देवगइपाओग्गाणुपुच्चीण पुव्व  
मुदओ पच्छा नधो वोच्छिण्णां, अपुव्वरुणामजदमम्मान्दिीमु वधोदयवेच्छेदुवलभादो ।  
पच्चिंदियजादि-त्तस पादर पज्जत्त-सुभग आदेज्जाण पुव्व नधो पच्छा उदओ वोच्छिज्जदि,  
अपुव्वकरणाजोगीसु नधोदयवेच्छेदुवत्तभादो । तेजा कम्मइय-समचउरसमठाण वण्ण गध-रस-  
फास-अगुरुवलहुव उरघाद-परघाद-उस्साम-पमत्तविहायगइ-पतेयसरीर-धिर-सुभ-सुस्सर-  
णिमिणाणामाणव चैन उत्तव, अपुव्वकरण मजोगीसु वधोदयवेच्छेदुवत्तभादो ।

देवगइ वेउत्तियसरीर वेउत्तियसरीर-अगोत्तग-देवगइपाओग्गाणुपुच्चीण परोदओ वधो,  
उदए सते एदासिं वधोत्तरोहादो । पच्चिंदिय-तेजा कम्मइयसरीर-वण्ण गध रस फास अगुरुव  
त्तहुव तम वादर-पज्जत्त-धिर सुह-णिमिणाण मोदएणेत्र नधो, धुवोदयत्तादो । परघादुस्साम

मिथ्यादृष्टिमे लेख अपूर्वकरणप्रविष्ट उपगमक व क्षयक तक्र घन्धक हैं ।  
अपूर्वकरणकालके सरयात बहुभाग जाकर नध व्युच्छिन्न होता है । ये घन्धक हैं, शेष  
अवधक हैं ॥ १३२ ॥

इम सूत्रका अर्थ कहते हैं—देवगति, वैत्रियिकशरीर, वैत्रियिकशरीरागोपाग  
और देवगतिप्रायोग्यानुपूर्विका पूर्वमे उदय और पश्चात् वध व्युच्छिन्न होता है, क्योंकि,  
अपूर्वकरण और असयतसभ्यगृष्टि गुणस्थानोमे क्रमश उनके वन्ध व उदयका व्युच्छेद  
पाया जाता है । पचेन्द्रियजाति प्रस, वादर, पर्याप्त, सुभग और आदेय, इनका पूर्वमे  
वध और पश्चात् उदय व्युच्छिन्न होता है, क्योंकि, अपूर्वकरण और अयोगकेवली  
गुणस्थानोमे क्रमसे इनके वध आर उदयका व्युच्छेद पाया जाता है । तेजस व कामेण  
शरीर, समचतुरस्रस्थान वण, गध, रस, स्पर्श, अगुरुत्तु, उपघात, परघात,  
उच्छ्राम, प्रशस्त्रिहायोगति, प्रत्यन्शरीर, धिर, सुभ, सुस्वर और निर्माण नामकर्म,  
इनके भी वध व उदयका व्युच्छेद इसी प्रकार कहना चाहिय, क्योंकि अपूर्वकरण  
और सयोगक-गी गुणस्थानोमे इनक वन्ध व उदयका व्युच्छेद पाया जाता है ।

देवगति, वैत्रियिकशरीर, वैत्रियिकशरीरागोपाग और देवगतिप्रायोग्यानुपूर्विका  
परोदय वध होता है, क्योंकि, उदयके होनेपर इनके वधका विरोध है । पचेन्द्रियजाति,  
तेजस व कामेण शरीर, वण, गध, रस, स्पर्श, अगुरुत्तु, प्रस, वादर, पर्याप्त, धिर,  
सुभ और निर्माण नामकर्मका न्योदयसे ही वध होता है, क्योंकि, वे धुवोदयी हैं । परघात,

पसत्थविहायगइ सुस्मर-आदेज्जाण सोदय परोदओ वओ, अपञ्जत्तकाले उदयाभावे पि धधुवलभादो, पसत्थविहायगइ-सुस्सराणमद्वुवोदयत्तदसणादो, आदेज्जस्म मिच्छाडडिण्हपहुटि-जाव असज्जदसम्मादिट्ठि ति उदयस्म भयणिज्जत्तुपलभादो, उवरि सन्वत्थ धुवोदयत्त-दमणादो च । समचउरसमठाणुवघाद-पत्तेयसरीराणमेव चेव पत्तव्व, विग्गहगदीए उदया-भावे वि धधुवलभादो, समचउरसमठाणोदयस्म भयणिज्जत्तदसणादो च । एव सुभग-पञ्जत्ताण पि वत्तव्व, पचिदिण्णु पडिवन्खपयडीए उदयदसणादो । णवग्गि पचिदियपञ्जत्तण्णु पञ्जत्तस्स मोदण्णेव वओ, तत्थ पडिवन्खपयडीए उदयाभावादो । एवंमद मिच्छाडडिणीण परूविद् । सामणमम्मादिट्ठि-असज्जदसम्मादिट्ठीणमेव चेव परूवेदव्व । णवरि पञ्जत्तस्स मोदण-णव' वधो । एव म्मामिन्नादिट्ठिआदिउपरिमगुणट्ठाणाण पि वत्तव्व । णवरि उवघाद-परघाद-उम्मास पञ्जत्त पत्तेयमरीराण पि मोदण्णेव वधो, तत्थ अपञ्जत्तकालाभावादो ।

तेज्जा कम्मडय-वण्ण गव-रस फाम अगुरुअलहुअ-उवघाद णिमिणाण मग्गुणट्ठाणेषु

उच्छ्वास, प्रशस्त्रविहायोंगति, सुस्मर और आदिय, इनका स्वोदय परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, अपर्याप्तकारणों में उदयके न होनेपर भी इनका बन्ध पाया जाता है, प्रशस्त्र विहायोंगति और सुस्वर प्रकृतियोंका अधुवोदय देखा जाता है, तथा मिथ्यादृष्टिसे लेकर असंयतसम्यग्दृष्टि तक आदियका उदय भजनीय अर्थात् प्रकल्पसे पाया जाता है, और इनसे ऊपर सर्वत्र धुवोदय देखा जाता है । समचतुरस्रसम्यान, उपघात और प्रत्येकशरीरके भी इसी प्रकार कहना चाहिये, क्योंकि, विग्रहगतिम उदयके न होनेपर भी बन्ध पाया जाता है, तथा समचतुरस्रसम्यानका उदय भजनीय देखा जाता है । इसी प्रकार सुभग और पर्याप्तके भी कहना चाहिये, क्योंकि, पचेन्द्रियोंमें प्रतिपक्ष प्रकृतिका उदय देखा जाता है । विशेष इतना है कि पचेन्द्रिय पर्याप्तकोंमें पर्याप्त प्रकृतिका स्वोदयसे ही बन्ध होता है, क्योंकि, उनमें प्रतिपक्ष प्रकृतिके उदयका अभाव है । इस प्रकार यह मिथ्यादृष्टियोंकी प्ररूपणा हुई । मासादनसम्यग्दृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टियोंकी भी प्ररूपणा इसी प्रकार करना चाहिये । विशेषता यह है कि पर्याप्तका स्वोदयसे ही बन्ध होता है । इसी प्रकार सम्यग्मिथ्यादृष्टि आदि उपरिम गुणस्थानोंके भी कहना चाहिये । विशेष इतना है कि उपघात, परघात, उच्छ्वास, पर्याप्त और प्रत्येकशरीरका भी स्वोदयसे ही बन्ध होता है, क्योंकि, उन गुणस्थानोंमें अपर्याप्तकालका अभाव है ।

तेजस घ कर्मण शरीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, उपघात, धौर

गिरतरो षधो, ध्रुवधधितादो । पचिदियजादीए मिच्छाइडीसु मातर-गिरतरो । कध गिरतरो ? ण, मणस्कुमारादिदेवेसु णेरइएसु असग्गेज्जसासाउअ सुहत्तिलेस्मियतिरिक्ख-मणुस्मेसु च गिरतरधुवलभादो । मायणादीसु गिरतरो नधो, तत्थ एइदियजादिआदीण वधाभावादो । एव परघादुस्साम तस-वादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीराण पि वत्तव, भेदामावादो । समचउरसमठाण-पसन्धविहायगइ सुभग-सुस्सर आदेज्जाण मिच्छाइडि मासणेसु मातर गिरतरो षधो । कध गिरतरो ? ण, अमखेज्जवामाउण्णु एदामिं गिरतरधुवलभादो । उवरि गिरतरो, पडिवक्खपयडीण वधाभावादो । धिर सुभाण मिच्छाइडिप्पहुडि जाउ पमत्तसज्जेदो त्ति सातरो, पडिवक्खपयडीए नधसभभादो । उअरि गिरतरो । देवगइ-वेउध्वियसरीर वेउन्धियसरीरअगोवग-देवगइपाओग्गाणुपुवीण मिच्छाइडि-सामणेसु मातर गिरतरो, सुहत्तिलेस्मियतिरिक्ख मणुस्मेसु गिरतरधुवलभादो । उवरि गिरतरो । पन्धया सुगमा । मेम ओपमगो ।

निर्माण, इनका सब गुणस्थानोंमें निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, ध्रुवध धी है । पचेन्द्रिय जातिका मिथ्यादृष्टियोंमें सान्तर निरन्तर बन्ध होता है ।

शका—निरन्तर बन्ध कैसे होता है ?

समाधान—यह ठीक नहीं, क्योंकि, मान-कुमारादि देव, नारकी, अम्व्यातर्ग्यार्थ युष्क और शुभ तीन लक्ष्यावाले तिर्यंच व मनुष्योंमें निरन्तर बन्ध पाया जाता है ।

सासादनसम्यग्दृष्टि आदि उपरिम गुणस्थानोंमें निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, इन गुणस्थानोंमें एकन्द्रियजाति आदिकोंका बन्ध नहा होता । इन्ही प्रकार परघात, इच्छ्याम, प्रस, वादर, पर्याप्त और प्रत्येकशरीरके भी कहना चाहिये, क्योंकि, इनके कोई विशेषता नहीं है । समचतुरलसंस्थान, प्रशस्तविहायोगति, सुभग, सुस्वर और वादयका मिथ्यादृष्टि व सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें सातर निरन्तर बन्ध होता है ।

शका—निरन्तर बन्ध कैसे होता है ?

समाधान—यह ठीक नहीं, क्योंकि, अम्व्यातर्ग्यार्थयुष्काम इनका निरन्तर बन्ध पाया जाता है ।

उपरिम गुणस्थानोंमें इनका निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, प्रतिपक्ष प्रवृत्तियोंके बन्धका यहा अभाव है । स्थिर और शुभका मिथ्यादृष्टिसे लेकर प्रमत्तमयत तथ सातर बन्ध होता है, क्योंकि, यहा प्रतिपक्ष प्रवृत्तिका बन्ध सम्भव है । इससे ऊपर निरन्तर बन्ध होता है । देवगति, वैमिथिकशरीर, वैमिथिकशरीरागोपाग और देवगतिप्रायोग्यानु पूर्वाका मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें सान्तर निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, शुभ तीन लक्ष्यावाले तिर्यंच व मनुष्योंमें निरन्तर बन्ध पाया जाता है । इससे ऊपर निरन्तर बन्ध होता है । प्रत्यय सुगम है । शेष प्ररूपणा ओघके समान है ।

आहारसरीर-आहारअंगोवंगणामाणं को वंधो को अवंधो ?

॥ १३३ ॥

सुगम ।

अपमत्तसंजटा अपुव्वकरणपइडुवसमा खवा वंधा । अपुव्व-  
करणद्वाए संखेज्जे भागे गंतूण वंधो वोच्छिज्जदि । एदे वंधा,  
अवसेसा अवंधा ॥ १३४ ॥

सुगम ।

तित्थयरणामाए को वंधो को अवंधो ? ॥ १३५ ॥

सुगम ।

असंजदसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव अपुव्वकरणपइडुवसमा खवा  
बंधा । अपुव्वकरणद्वाए संखेज्जे भागे गंतूण वंधो वोच्छिज्जदि ।  
एदे वंधा, अवसेसा अवंधा ॥ १३६ ॥

आहारकजरि और आहारकजरीगगोपाग नामरुमाका कौन वन्धक और कौन  
अवन्धक है ? ॥ १३३ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

अप्रमत्तमयत और अपूर्वकरणप्रविष्ट उपशमक व क्षपक वन्धक हैं । अपूर्वकरण-  
कालके मरयात बहुभाग जाकर वन्ध व्युच्छिन्न होता है । ये वन्धक हैं, शेष अवन्धक है  
॥ १३४ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

तीर्थकर नामकर्मका कौन वन्धक और कौन अवन्धक है ? ॥ १३५ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

अमयतमम्यग्दष्टिमे लेकर अपूर्वकरणप्रविष्ट उपशमक और क्षपक तरु वन्धक हैं ।  
अपूर्वकरणकालके सख्यात बहुभाग जाकर वन्ध व्युच्छिन्न होता है । ये वन्धक हैं, शेष  
अवन्धक है ॥ १३६ ॥

एद पि सुगम ।

कायाणुवादेण पुढरिकाडय-आउकाडय वणफ्फदिकाडय णिगोद जीव वादर सुहुम पज्जत्तापज्जत्ताण वादरवणफ्फदिकाडयपत्तेयसरीर-पज्जत्तापज्जत्ताणं च पंचिदियतिरिक्खअपज्जत्तभगो ॥ १३७ ॥

एदमपणासुत्त नेमामामिय, तेणेदेण सृइदरथाण परूजणा कीरदे— तत्थ ताव पुढरिकाडयाण भण्णमाण पचणाणारणीय णउदसणारणीय-मादामाद-मिन्ठत्त-सोलसकमाय णवणोक्कमाय तिरिक्खाउ मणुस्माउ तिरिक्खगइ मणुस्मगइ एइदिय श्रीइदिय-तीइदिय-चउरि दिय पचिदियजादि ओगालिय तेजा कम्मइयमरीर-छमठण-ओरालियमरीरअगोण-छमघडण यण्ण गध रम फास तिरिक्खगइ मणुमगइपाओग्गाणुपुत्वी-अगुरुउलहुउ उउघाद परघाद उस्साम आणुवुजोउ दोविहायगइ-त्तम वावर वादर सुहुम पज्जत्त अपज्जत्त-पत्तेय-माहारणसरीर धिराधिर-सुहासुह सुभग [ टुभग ] सुस्सर दुस्सर आदेज्ज अणादेज्ज-जमकित्ति-अजसकित्ति णिमिण णीत्तु चागोद-पचतराइयपयडीओ पुढरिकाइएहि उज्झमाणाओ उवेदत्ता । एत्थ पधोदयवोच्छेद-विचारो णत्थि, तट्टभयसो ठेदाभारादो ।

यह सूत्र भी सुगम है ।

क़यमार्गणानुमार पृथिवीकायिक, अप्कायिक, वनस्पतिकायिक और निगोद जीव वादर सूक्ष्म पर्याप्त अपयाप्त तथा वादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्त अपर्याप्त जीवोक्की परूपणा पचेन्द्रिय तिर्यच अपर्याप्तोंके समान है ॥ १३७ ॥

यह अणुणासूत्र देवामशक है, अत एव इन्में सूचित अर्थोंकी प्ररूपणा करते हैं—उनमें पहले पृथिवीकायिक जीवोंकी प्ररूपणा करत समय पाच ज्ञानारणीय, नौ दर्शनापरणीय, साता घ असाता वेदनीय मिथ्याउ, सोलह कपाय, नौ नोकपाय, तिर्यगायु मनुष्यायु, तिर्यगगति, मनुष्यगति, पर्काइय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, पचेन्द्रिय जाति, जीवारिक, तेजस व कामण शरीर, छह सस्थान, औदारिकशरीरानोपाग, छह सहनन, उण, ग ध, रस, स्पश, तिर्यगगति व मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, अगुरुलघु, उपघात, परघात, उच्छ्वांस, आनाप, उद्योत, दो विहायोगनिया, प्रस, स्थावर, वादर, सूक्ष्म, पपात्त, अपयात्त, प्रत्येकशरीर, साधारणशरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अनुभ, सुभग, [टुभग] सुस्सर दुस्सर, आदेय, अनदेय, यशकीर्ति, अयशकीर्ति, निमाण, नीचगोत्र, ऊचगोत्र और पाच अतराय प्ररुतिया पृथिवीकायिक जीवों द्वारा बध्यमान स्थापित करना चाहिये । यहा बच और उद्वेके न्युच्छेदका विचार नहीं है, कयाकि, दोनोंके व्युच्छेदका यहा अभाव है ।

पचणाणारणीय चउदंसणावणीय-मिच्छत-णउमयवेद-तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइ-एइदियजादि-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण गध रम-फाम-अगुरुअलहुअ-वावर-यिगयिर-सुहासुह-दुभग-अणादेज्ज णिमिण णीचागोद-पचतराइयाण सोदओ वधो, एत्थ एदासिं बुजोदयत्तादो । इत्थि-पुरिसवेद मणुस्साउ-मणुस्सगइ-चीइदिय-तीइदिय-चउरिंदिय-पंचिंदियजादि-पचमठाण-ओरालियसरीरअगोत्रग ठसचडण-मणुसगइपाओग्गाणुपु-त्री-साहारण-दोविहायगइ-तस-सुभग-सुस्मर-दुस्मर-आदेज्जु-चागोदाण पेदओ वधो, एदामिमेत्थ उदयविरोहादो । पचदसणा-वणीय-सादामाद-मोलमकमाय ठणोऊसाय-नादर मुहुम-पज्जत्तापज्जत-जमकित्ति-अजस-कित्तीण सोदय परोदओ वधो, अद्दुवोदयत्तादो । ओरालियसरीर-हुइमठाण-उववाद-पत्तेय-मरीर-आदानुज्जोणाण पि सोदय-परोदओ, विग्गहगदीए उदयाभावादो अद्दुवोदयत्तादो च । परघादुस्सामाण पि सोदय-परोदओ वधो, एदासिमुदयाणुदयसहिदपज्जत्तापज्जतद्वासु वधदमणादो । तिरिक्खगइपाओग्गाणुपु-त्रीए सोदय परोदओ वधो, सोदयाणुदयविग्गहाविग्गह-गदीसु वधुवलभादो ।

पचणाणारणीय णउदसणावणीय-मिच्छत सोलसकमाय-भय-दुगुळा-तिरिक्ख-मणु-

.. ..

पाच ज्ञानावरण, चार दर्शनावरण, मिथ्यात्व, नपुंसकवेद, तिर्यंगाणु, तिर्यग्गति, एकेंद्रिय जाति, तजस व कामण शरीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुल्लघु, स्थावर, स्थिर, अस्थिर, शुभ अशुभ, दुर्भग, जनादेय, निर्माण, नीचगोत्र और पाच अन्तराय, इनका स्त्रोदय ग्रन्थ होता है, क्योंकि, यहा ये प्रकृतिया ध्रुवोदयी है । लींवेद, पुण्यवेद, मनुष्याणु, मनुष्यगति, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, पंचिन्द्रिय जाति, पाच संस्थान, औदारिकशरीरारोगोपाग, उह सहनन, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, साधारणशरीर, दो विहायोगतिया, तस, सुभग, सुस्वर, दुस्वर, आदेय और उच्चगोत्र, इनका परोदयसे वध होता है, क्योंकि, यहा इनके उदयका विरोध है । पाच दर्शनावरणीय, साता व असाता वेदनीय, सोलह कपाय, उह नोक्कपाय, वादर, सुधम, पर्याप्त, अपर्याप्त, यशक्रीति और अयशक्रीतिका स्त्रोदय परोदय ग्रन्थ होता है, क्योंकि, ये अधुजोदयी है । औदारिकशरीर, हुण्टसस्वान उपघात, प्रत्येकशरीर, आताप, ओर उद्योतका भी स्त्रोदय परोदय वध होता है, क्योंकि, विग्रहगतितमें इनके उदयका अभाव है, तथा ये अधुवोदयी भी है । परघात ओर उच्छ्वासका भी स्त्रोदय परोदय ग्रन्थ होता है, क्योंकि, क्रमश इनके उदय और अनुदय सहित पर्याप्त व अपर्याप्त कालोंमें उनका ग्रन्थ देखा जाता है । तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वीका स्त्रोदय परोदय वध होता है, क्योंकि, क्रमश अपने उदय व अनुदय सहित विग्रह व अविग्रह गतियोंमें उनका ग्रन्थ पाया जाता है ।

पाच ज्ञानावरणीय, नौ दर्शनावरणीय, मिथ्यात्व, सोलह कपाय, भय, जुगुप्सा,



स्साउ ओरालिय तेजा कम्मइयसरीर णण गव-रस फास अगुस्सलहुअ उअवाण्णिमिण पचतरा-  
इयाण णिरतरो ववो, एगममण्ण वधुअरमाभाशदो धुअअधित्तादो च । सात्तामाद सत्तणोअसाय  
मणुमगइ एइदिय वीडदिए तीइदिय चउरिदिय पचिदियजादि उअउण ओरालियमरीरअगोवग-  
छसवहण मणुमगइपाओग्गाणुपुत्री आदाउअजोअ दोअिहायगइ तस आअर सुअम अपअनत्त साहा-  
रणमरीर यिराथिर सुभासुभ सुभग दुभग सुस्सर दुस्सर आदेअज जअकित्ति अअसकित्ति -उअचा-  
गोअण सातरा ववो, एगममण्ण वधुअरमअमणादो । तिरिअअगइ-तिरिअअगइपाओग्गाणुपुत्री  
णीचागोअण सातर णिरतरो । कअ णिरतरो ? ण, तेउ-अउअइएहितो पुअअिअइएअसुअण्णण  
णिरतरअअअलभादो । पअादअमास आदर पअनत्त अत्तेयसरीराण पि मातर णिअतरो अघो । कअ  
णिरतरो ? ण, देअण पुअअिअइएअसुअण्णण मुअत्तअमते णिरतरअअअलभादो ।

एअमिं पअया एअदियअअअहि अमा । तिरिअअउ तिरिअअगइ एइदिय-वीअदिय

नियगायु, मनुष्यायु, ओअरिअ, तेअस व कामण अरीर, वण, ग व, रस, अअर, अअअअधु,  
अअअत, निअण आर पाअ अतराय अअअ निरतर अअ होता है, कयोंकि, एक  
समयसे इनके अअअिअमअ अभाअ है, तअये धुअअधी भी है । साता व असाता  
वेअनीय, सात नोकपाय, मनुष्यगति, एअेअिअ, डीअिअ, अीअिअ, अतुरिअिअ,  
अचेअिअ अति, अइ सअ्याअ, अीअरिअअरीरागापाग, अइ सअनअ, मनुष्यगति  
अत्येअयानुअीं, अताअ, अघोअ, अे अिहायगनिया, अम, अ्यावर, सूअम, अपर्याअ,  
साअरणअरीर अिअ, अरिअ, अुभ, अअुभ, सुभग, दुभग, सुअर, दुअर, आदेय,  
अअनीति, अयअनीति अोर अअगोअअ अा तर अ अ होता है, कयोंकि, एअ समयसे  
इनका अअअिअम देखा जाता है । नियगति, तियगतिअयोंग्याअुअीं अोर अीअगोअका  
सातर निरतर अ अ होता है ।

अअ—निरतर अ अ कैसे होता है ?

अमाअान—अइ अीअ नहीं, अ्याअि तेअ अ आयु अथिकोंअेले अुअिअिअथिकोंअे  
अत्यअ अुअ अीअों निरतर अ अ पाया जाता है ।

अरअत, अअअ्यास, अाअर, अर्याअ अोर अत्येअअरीरअ भी सातर निरतर  
अ अ होता है ।

अअ—निरतर अ अ कैसे होता है ?

अमाअान—अइ अीअ नहीं, कयोंकि, अुअिअिअथिकोंअे अत्यअ अुअ अेअोंके  
अतमुअत तक निरतर अ अ पाया जाता है ।

अन अइअिअोंके अत्य अेअेअिअअत्येअोंके अमान है । तिर्यगायु, तियगति,

तीन्द्रिय-चउरिन्द्रियजादि-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुन्नी आदावुज्जोत्र-धात्र-सुहुम-साहारप्रसरीराणि तिरिक्खगइसजुत्त वज्जति । मणुसाउ-मणुसगइ-मणुमगइपाओग्गाणुपु वी-उच्चागोदाणि मणुस-गइसजुत्त वज्जति । सेसाओ पयडीओ तिरिक्ख मणुमगइमजुत्त । तिरिक्खा सामी । वधद्वाण सुगम । एत्थ ववोच्छेदो णत्थि । धुवन्धीण चउच्चिहो वधो । सेसाण सादि-अद्दुवो ।

वादरपुढविकाइयाणमेत्र चेत्त वत्तत्त । णत्थि वादरस्स सोदएण वधो, सुहुमस्स परोदएण । वादरपुढविकाइयपज्जत्ताण पि एत्त चेत्त वत्तत्त । णत्थि पज्जत्तस्स सोदओ, अपज्जत्तस्स परोदओ वधो । वादरपुढविकाइयअपज्जत्ताण पि वादरपुढविकाइयभगो । णत्थि पज्जत्त धीणगिद्धित्थि परघाटुस्साम-आदावुज्जोत्र-जमकित्तीण परोदओ, अपज्जत्त-अजसकित्तीण सोदओ वधो । परघाटुस्साम तस-वादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीराण सातरो वधो, अपज्जत्तएसु देवाणमुत्तवादाभावादो । पन्थया सत्तत्तीस, ओरालियकायजोगपन्थयम्माभावादो ।

सुहुमपुढविकाइयाण पुढविकाइयभगो । णत्थि वादर आदाउज्जोत्र-जसकित्तीण परोदओ, सुहुम-अजमकित्तीण सोदओ वधो । परघाटुस्साम वादर-पज्जत्त-पत्तेयमरीराण सातरो

एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय जाति, तिर्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, आताप, उद्योत, स्थान, सूक्ष्म और सधारणशरीर, इनको तिर्यग्गतिसे सयुक्त गावने ह । मनुष्यायु, मनुष्यगति, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी आर उच्चगोत्रको मनुष्यगतिसे मयुक्त वाचते ह । शेष प्रकृतियोंको मनुष्य व तिर्यग्गतिसे सयुक्त गावते ह । नित्यच स्वामी ह । उन्वाध्वान सुगम है । यहा बन्ध-युत्तेद हे नहीं । ध्रुवन्धी प्रकृतियोंका चारों प्रकारका बन्ध होता है । शेष प्रकृतियोंका सादि व अद्रुच बन्ध होता है ।

वादर पृथिवीकायिकोंकी भी इसी प्रकार प्ररूपणा करना चाहिये । विशेष इतना ह कि वादरका स्वोदय और सूदमना परोदयमे व ध होता हे । वादर पृथिवीकायिक पर्याप्तोंकी भी इसी प्रकार प्ररूपणा करना चाहिये । विशेषता इतनी हे कि पर्याप्तका स्वोदय और अपर्याप्तका परोदय व ध होता हे । वादर पृथिवीकायिक अपर्याप्तोंकी भी प्ररूपणा वादर पृथिवीकायिकोंके समान हे । विशेषता यह हे कि पर्याप्त, स्थान-गृद्धिप्रय, परघात, उच्छ्वास, आताप, उद्योत और यशकीतिना परोदय, तथा अपर्याप्त और अयशकीर्तिका स्वोदय बन्ध होता है । परघात, उच्छ्वास, व्रम, वादर, पर्याप्त और प्रत्येकशरीरका सात्तर बन्ध होता है, क्योंकि, अपर्याप्तोंमें देवोंकी उत्पत्ति नहीं होनी । प्रत्यय संतीम हाते हैं, क्योंकि, उनके औदारिककाययोग प्रत्ययका अभाव है ।

सूक्ष्म पृथिवीकायिकोंकी प्ररूपणा पृथिवीकायिकोंके समान हे । विशेष यह हे कि वादर, आताप, उद्योत और यशकीतिना परोदय, तथा सूदम और अयशकीर्तिका स्वोदय बन्ध होता है । परघात, उच्छ्वास, वादर, पर्याप्त और प्रत्येकशरीरका सात्तर

धर्मो, सुहृमेइदिएसु देवाणमुत्तरादाभासादो णित्तराधाभासा । सुहृमपुढनिकाइयपज्जत्ताणमेव  
 चेव वत्तत्थ । णवरि पज्जत्तस्म सोदओ, अपज्जत्तस्स परोदओ वधो । सुहृमपुढनिकाइयअप-  
 ज्जत्ताणमेव चेव वत्तत्थ । णवरि अपज्जत्तस्म सोदओ, पज्जत्त वीणगिद्वितिय परघादुस्सामाण  
 परोदओ वधो । मन्त्रआउत्ताइयाण जहापन्चासण्णपुढनिकाइयभगो । णवरि आदावस्स  
 परोदओ वधो, पुढनिकाइए मोत्तूण अण्णत्थ आदावस्सुदयाभासादो ।

पचणाणारणीय-णत्तराधाभासा-सादासाद-मिच्छत्त-मोलमकसाय णवणोक्कमाय  
 तिरिक्खाउ मणुस्साउ तिरिक्कगइ-मणुमगइ पचजादि-ओराणिय तेजा-कम्मइयमरीर-छसठाण-  
 ओराणियसरीरअगोत्र छसत्तण-वण्णचउत्तक-तिरिक्कगइ-मणुसगइपाओग्माणुपुत्ती-अगुरुव-  
 लहुत्तचउत्तक-आदाउत्तज्जोव-दोविहायगइ तस धारर वादर सुहृम पज्जत्तापज्जत्त पतेय साहारण-  
 सरीर धिराधिर सुहासुह सुभग दुभग सुस्सर दुस्सर-आदेज्ज-अणादेज्ज-जसकित्ति-अजसकित्ति-  
 णिमिण णीत्तुच्चागोद पचत्तराइयपयडीओ ठत्तिय वण्णफदिक्काइयाण परवणा कीरदे-  
 धधोदयाण पुत्तापुत्तकालगयवोच्छेदपरिक्खा णत्थि, धधोदयाणमेत्थ वोच्छेदाभासादो ।

धध होता है, क्योंकि, सूक्ष्म एकीकृतियों में देवों की उत्पत्ति न होनेसे उहा निरन्तर र धका  
 अभाव है । सूक्ष्म पृथिवीकायिक पर्याप्तों की इसी प्रकार ही प्ररूपणा करना चाहिये ।  
 विशेषता इतनी है कि पर्याप्तता स्त्रोदय और अपर्याप्तता परोदय रध होता है । सूक्ष्म  
 पृथिवीकायिक अपर्याप्तों की भी इसी प्रकार ही प्ररूपणा करना चाहिये । विशेष इतना  
 है कि अपर्याप्तता स्त्रोदय और पर्याप्त, स्थानगृह्णित्य, परघात ध उच्छ्वासाका परोदय  
 धध होता है । सत्र अकार्यिक जीवों की प्ररूपणा अपनी अपनी प्रत्यासत्तिके अनुसार  
 पृथिवीकायिकोंके समान है । विशेषता यह है कि आनापका परोदय धध होता है,  
 क्योंकि, पृथिवीकायिकोंको छोड़कर अन्यत्र आताप कर्मका उदय नहीं होता ।

पाच ज्ञानावरणीय, नो दशनावरणीय, साता व असाता वेदनीय मिथ्यात्व,  
 सोलह कपाय, नौ भौकपाय, तियगायु, मनुष्यायु, तियग्गति, मनुष्यगति, पाच जातिया  
 औदारिक, तेजस व कामण शरीर, उह सत्तान, औदारिकशरीरारोगोपाग, छह सहनन,  
 घणादिक चार, तियग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, अगुरुलघु आदिक  
 चार, आताप, उद्योत, दो विहायैरातिया, प्रस, स्थारर, रादर, सूक्ष्म, पर्याप्त, अपर्याप्त,  
 प्रत्येक व साधारण शरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुभग, दुर्भग, सुस्सर, दुस्सर,  
 आदेय, अनोदय, यशकीर्ति, अयशकीर्ति, निर्माण, नीचगोत्र, उच्चगोत्र और पाच व तराय  
 प्रवृत्तियोंको मर्यापत धर चनस्पतिकायिकोंकी प्ररूपणा करते हैं— रध और उदयके पूर्व  
 ध अपव कालगत युच्छेदकी परीक्षा नहा है, क्योंकि, यहा ध ध और उदयके युच्छेदका  
 अभाव है ।

पचणाणावरणीय चउदसणावरणीय-मिच्छत्त-णनुसयनेद-तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइ-  
 एइदियजादि-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्णचउक्क-अगुरुवलहुव-यावर-थिराथिर-सुहासुह-दुभग-  
 अणादेज्ज-णिमिण-गीचागोद पचतराइयाण सोदओ वधो, अत्यगईए धुवोदयत्तादो । इत्थि  
 पुरिसवेद मणुसाउ मणुसगइ-वीइदिय-तीइदिय-चउरिंदिय-पचिंदियजादि पचसठाण-ओरालिय-  
 सरीरअगोवग-छसघडण मणुसगइपाओग्माणुपुच्ची आदान-दोविहायगइ-तस सुभग-सुस्सर दुस्सर-  
 आदेज्जुच्चागोदान परोदओ वधो । पचदसणावरणीय-सादासाद-सोलमकसाय-छण्णोकसाय-  
 हुडसठाण-ओरालियसरीर-तिरिक्खाणुपुच्ची-उवघाद-परघादुस्सासुज्जोव-नादर-सुहम-पज्जत्ता-  
 पज्जत्त-पत्तेय-साहारणसरीर-जसकित्ति-अजमकित्तीण सोदय-परोदओ वधो ।

पचणाणावरणीय मिच्छत्त-सोलसफसाय-भय-दुगुछा-तिरिक्ख मणुसाउ-ओरालिय-तेजा-  
 कम्मइयसरीर वण्णचउक्क अगुरुवलहुव-उवघाद-णिमिण-पचतराइयाण गिरतरो वधो । सादासाद-  
 सत्तणोकसाय-मणुस्सगइ- एइदिय वीइदिय-तीइदिय-चउरिंदिय-पचिंदियजादि-छसठाण-ओरा-  
 लियसरीरअगोवग-छसघडण मणुसगइपाओग्माणुपुच्ची-आदावुज्जोव-दोविहायगदि-तम-यावर-  
 सुहम-अपज्जत्त-साहारणसरीर-थिराथिर-सुहासुह-सुभग-दुभग सुस्सर-दुस्सर-आदेज्ज-अणादेज्ज-

पांच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, मिथ्यात्व, नपुंसकवेद, तिर्यगायु, तिर्य-  
 गति, एकेन्द्रिय जाति, तेजस व कार्मण शरीर, वर्णादिक चार, अगुरुलघु, स्थावर, स्थिर,  
 अस्थिर, शुभ, अशुभ, दुर्भग, अनादेय, निर्माण, नीचगोत्र ओर पांच अन्तरायका स्वोदय  
 बन्ध होता है, पर्याप्त, अर्थापत्तिसे ये प्रकृतिया ध्रुवोदयी ह । स्त्रीवेद, पुरुषवेद, मनुष्यायु,  
 मनुष्यगति, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, पचेन्द्रिय जाति, पांच सस्थान, औदारिक-  
 शरीरागोपाग, उह सहनन, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, आताप, दो विहायोगतिया, प्रस  
 सुभग, सुस्सर दुस्सर, आदेय ओर उच्चगोत्र, इनका परोदय बन्ध होता है । पांच  
 दर्शनावरणीय साता व असाता वेदनीय, सोलह कपाय, छह नोकपाय, हुडसस्थान,  
 औदारिकशरीर, तिर्यगानुपूर्वी, उपघात, परघात, उच्छ्वास, उद्योत, वादर, सूक्ष्म,  
 पर्याप्त, अपर्याप्त, प्रत्येकशरीर, साधारणशरीर, यशकीर्ति ओर अयशकीर्तिका स्वोदय  
 परोदय बन्ध होता है ।

पांच ज्ञानावरणीय, मिथ्यात्व, सोलह कपाय, भय, जुगुप्सा, तिर्यगायु, मनुष्यायु,  
 औदारिक, तेजस व कार्मण शरीर, वर्णादिक चार, अगुरुलघु, उपघात, निर्माण और  
 पांच अन्तरायका निरंतर बन्ध होता है । साता व असाता वेदनीय, सात नोकपाय,  
 मनुष्यगति, एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, पचेन्द्रिय जाति, छह सस्थान,  
 औदारिकशरीरागोपाग, उह सहनन, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, आताप, उद्योत, दो  
 विहायोगतिया, प्रस, स्थावर, सूक्ष्म, अपर्याप्त, साधारणशरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ,  
 सुभग, दुर्भग, सुस्सर, दुस्सर, आदेय, अनादेय, यशकीर्ति, अयशकीर्ति और उच्चगोत्रका

जसकिति अजसकिति उच्चागोदाण मानरो वधो, एगसमएण बधुवरमुवलभादो । तिरिक्खगइ-  
निरिक्खगइपाओग्गाणुप्ची णीचागोदाण सातर-णिरतरो । कुदो ? तेउ णाउकाइएहिंतो वणफ्फदि  
काइएमुप्पणाण मुहुत्तस्सतो' गिरतरनधुवलभादो । परचादुस्सास-वादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीराण  
सातर गिरतरो वधो । कप गिरतरो ? ण, देवेहिंतो णणफ्फदिकाइएमुप्पणाण मुहुत्तस्सतो  
गिरतर नधुवलभादो । पच्चया सुगमा । गइसजुत्तादिउवरिमेइदियपरूवणातुल्ला ।

एव चात्परवणफ्फदि-काइयाण च वत्त-न' । णपरि वादरस्स सोदओ वधो, सुहुमस्स परो  
दओ । वादर [णणफ्फदि-] पज्जत्ताण वादरणणफ्फदिभगो । णपरि पज्जत्तस्स सोदओ, अपज्जत्तस्स  
परोदओ वधो । वादरणणफ्फदिअपज्जत्ताण वादरेइदियअपज्जत्तभगो । सुहुमणणफ्फदिपज्जत्तापज्जत्ताण  
सुहुमेइदियपज्जत्तापज्जत्तभगो' । तसअपज्जत्ताण परिदियअपज्जत्तभगो । णपरि रीइदिय-  
तीइदिय चउरिदिय परिदियाण सोदय परोदओ वधो । णिगोदजीयाण तेसिं' वादर सुहुम

—

सा तर व ध होता है, क्योंकि इनका एक समयमें अधिश्राम पाया जाता है । तिर्यग्गति,  
नियग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी और नाचगोत्रमा सातर निरन्तर व ध होता है, क्योंकि, तेन  
ध प्रायु कारिकाओंमेंसे अनस्पतिकारिकाओंमें उत्पन्न हुए जीवोंके अन्तर्मुहूर्त तक निरन्तर व ध  
पाया जाता है । परघात, उच्छ्वास, वादर, पयाप्त और प्रत्येकशरीरका सातर निरन्तर  
व ध होता है ।

शरीर—निरन्तर व ध कैसे होता है ?

समाधान—यह टीका नहीं, क्योंकि, देवोंमेंसे अनस्पतिकारिकाओंमें उत्पन्न हुए  
जीवोंके अन्तर्मुहूर्त तक निरन्तर व ध पाया जाता है ।

प्रत्यय सुगम है । गतिसयुक्तता गान्धि उपरिम प्ररूपणा एवेन्द्रिय प्ररूपणाके  
समान है ।

इसी प्रकार वादर अनस्पतिकारिकाओंके भी कहना चाहिये । विशेषता केवल  
इतनी है कि वादरका स्त्रोदय व ध होता है और सूक्ष्मता परोदय । वादर अनस्पति  
कारिका पयाप्तोंकी प्ररूपणा वादर अनस्पतिकारिकाओंके समान है । विशेषता यह है कि  
पयाप्तका स्त्रोदय और अपयाप्तका परोदय व ध होता है । वादर अनस्पतिकारिका  
अपयाप्तोंकी प्ररूपणा वादर एवेन्द्रिय अपयाप्तोंके समान है । सूक्ष्म अनस्पतिकारिका  
पयाप्त व अपयाप्तोंकी प्ररूपणा सूक्ष्म एवेन्द्रिय पयाप्त व अपयाप्तोंके समान है । प्रस  
अपयाप्तोंकी प्ररूपणा पचेन्द्रिय अपयाप्तोंके समान है । विशेषता यह है कि द्वीन्द्रिय,  
त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय और पचीन्द्रियका स्त्रोदय परोदय व ध होता है । निगोद जीव व

१ प्रतिपु 'सुदृष्टा' इति पाठ ।

२ अत्रो 'व वचन', जायतो 'वच-व' इति पाठ ।

३ अत्रो 'सुदृष्टादिपञ्चमगा' इति पाठ ।

४ प्रतिपु 'तम' इति पाठ ।

चउरिंदिय पंचिंदियाण सोदय-परोदओ वधो । तस-वादराण सोदओ चव । एइदिय-यावर-सुहुम-साहारणादावाण परोदओ चव वधो । अवसेसाण पंचिंदिय-पंचिंदियपज्जत्ताण उत्ति-निहाणेण वत्तव्व ।

जोगाणुवादेण पंचमणजोगि-पंचवचिजोगि कायजोगीसु ओघं  
णयव्वं जाव तित्थयरेत्ति ॥ १४० ॥

ओघम्मि उत्तसत्तारसण्ह सुत्ताणमत्थो ससुत्तो एत्थ गिरवयवो वत्तव्वो, भेदाभावादो । णवरि पच्चयगदो भेदो अत्थि त परूवेमो— मणजोगे गिरुद्धे छाएत्तालीस एकेत्तालीम सत्ततीस [ सत्ततीस ] वत्तीस उणवीस<sup>१</sup> सत्तारस सत्तारस एक्कारस दस णव अट्ट सत्त छ पच [ पच चत्तारि चत्तारि ] दोण्णि मिच्छाइड्डिप्पहुडिमन्वगुणट्टाणाणं जहाकमेण एदे पच्चया होंति । अण्णो वि विसेसो मणजोगे गिरुद्धे सत्ते अत्थि— चट्टुजादि चत्तारिआणुपुव्वी-आदाव थावर-सुहुम-अपज्जत्त साहारणाण परोदएण<sup>२</sup>, उवघाद-परघादुस्मास-तस-वादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-पंचिंदियजादीण सोदएण वधो ति वत्तव्व । एव चव चट्टुण्ह मणजोगाण परूवणा

हैं— हीन्द्रिय, प्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय और पचेन्द्रियका स्वोदय परोदय बन्ध होता है । ब्रस और यादरका स्वोदय ही बन्ध होता है । एकेन्द्रिय, स्थावर, सूक्ष्म, साधारण और आतापका परोदय ही बन्ध होता है । शेष प्रकृतियोंके पचेन्द्रिय और पचेन्द्रिय पर्याप्तोंकी प्ररूपणाके अनुसार कहना चाहिये ।

योगमार्गणानुसार पाच मनोयोगी, पाच वचनयोगी और काययोगियोंमें तीर्थंकर प्रकृति तक ओषके समान जानना चाहिये ॥ १४० ॥

ओघमें कहे हुए सत्तरह ( ५ घें सूत्रसे ३८ में सूत्र तरु १७+१७=३४ ) सूत्रोंका अर्थ ससूत्र यहा सपूर्ण कहना चाहिये, फ्योंकि, ओघसे यहा विशेषताका अभाव है । विशेष यह है कि प्रत्ययगत जो कुछ भेद है उसे यहा कहते हैं— मनोयोगके निरुद्ध होने अर्थात् उसके आश्रित व्याख्यान करनेपर छयालीस, इकतालीस, संतीस, [ संतीस ] वत्तीस, उणीस, सत्तरह, सत्तरह, ग्यारह, दश, नौ, आठ, सात, छह, पाच, [ पाच, चार, चार ] और दो, इस प्रकार ये क्रमसे मिथ्यादृष्टि आदि सय गुणस्थानोंके प्रत्यय होते हैं । मनोयोगके निरुद्ध होनेपर और भी विशेषता है— चार जातिया, चार आनुपूर्वी, आताप, स्थावर, सूक्ष्म, अपर्याप्त और साधारण, इनका परोदयसे तथा उपघात, परघात, उच्छ्वास, ब्रस, यादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर और पचेन्द्रिय जातिका स्वोदयसे बन्ध होता है, ऐसा कहना चाहिये । इसी प्रकार ही चार मनोयोगोंकी प्ररूपणा करना चाहिये ।

१ अठिपु ' सत्तारस ' इति पाठ ।

२ मण-वयणमग्गे ण दि ताविगिदिगल च यावराउचओ ॥ गो क ३१०.

मुदयामात्रो, तत्र तदणुमलभादो । न तेउकाइण्मु तदभायो, पचस्तेणुमलभमाणतादो ? एत्थ परिहारो बुचदे - न ताव तेउकाइण्मु जादाओ अत्थि, उण्हणहाण तधाभावादो । तेउमिहि वि उण्हत्तमुमलभइ च्चे उमलभउ णाम, [ ण ] तस्म आदानवण्णो, किन्तु तेजामण्णा, " मूलोण्णवती प्रभा तेज, सर्वाणयाप्युण्णवती प्रभा आताप, उण्णरहिता प्रभोद्योत, " इति तिण्ह भेदोमलभादो । तम्हा ण उज्जेणो वि तत्थत्थि, मूलुण्हुज्जेणस्स तेजवण्णसादा । एत्तिओ च्च भेदो, ण अण्णत्थ रुथ वि । णरि मच्चामि पयडीण तिरिस्सवगइससुत्तो वयो ।

तसकाइय तसकाइयपज्जत्ताणमोघ णेदव्व जाव तित्थयरे ति  
॥ १३९ ॥

एद देसामामियण्णसुत्त, तेणेदेण सूइदत्थपरुण्णा करिदे - त्रीइदिय तीइदिय

उनमें यह पाया नहीं जाता । किन्तु तेजकायिक जीवोंमें उन जेनोंका उदयाभाव सम्भव नहीं है, क्योंकि, यहाँ उनका उदय प्रत्यक्षमें देखा जाता है ।

समाधान - यहाँ उक्त शकाका परिहार कहते हैं - तेजकायिक जीवोंमें आतापका उदय नहीं है, क्योंकि, यहाँ उष्ण प्रभाका अभाव है ।

शका - तेजकायमें भी ता उष्णता पायी जाती है, फिर यहाँ आतापका उदय क्यों न माना जाय ?

समाधान - तेजकायमें भले ही उष्णता पायी जाती है, परन्तु उसका नाम आताप [ नहीं ] हो सकता, किन्तु 'तेज' सदा होगी, क्योंकि, मूलमें उष्णवती प्रभाका नाम तेज, सर्वाणयापी उष्णवती प्रभाका नाम आताप, और उष्णता रहित प्रभाका नाम उद्योत है, इस प्रकार तीनोंके भेद पाया जाता है ।

इसी कारण यहाँ उद्योत भी नहीं है, क्योंकि, मूलोष्ण उद्योतका नाम तेज है [ न कि उद्योत ] । केवल इतना ही भू है, और यहाँ भी कुछ भेद नहीं है । विशेष इतना है कि सब प्रदितियोंका तिपग्गतिसे संयुक्त बन्ध होता है ।

नसकायिक और तसकायिक पर्याप्तोंके तीर्थकर प्रकृति तक ओषके ममान ले जाना चाहिये ॥ १३९ ॥

यह देशामशाक अण्णसूत्र है, इसलिये इससे सूचित अर्थकी प्ररूपणा करते

१ प्रसिद्ध ' मुदयामात्रादा ' इति पाठ ।

२ मूलुण्हवती अर्थात् आदानो हादि उण्हणणियण्ण । जाइव तत्थि उण्हणपहा हु उजाओ ॥

ओषमि 'अवसेसा अवधा' त्ति उक्त । एत्थ पुण 'अवधा णत्थि' त्ति वत्तव्व,<sup>१</sup> जेतम्पणादो । ण च सजेगिसु अजेगा होंति, विप्पडिसेहादो । जदि एत्तियमेत्तो चेव भेदो तो एत्तियस्सेन णिदेसो किण्ण कदो ? ण एस दोसो, थूलबुद्धीण' पि सुहग्गहण्ड तथोवेदसादो ।

## ओरालियकायजोगीणं मणुसगइभंगो ॥ १४२ ॥

पचणाणावरणीय चउदसणावरणीय पचतराडयाण वधोदयवोच्छेदे मणुसगदीदो णत्थि विसेसो, विसेमकारणाभावादो । जमकित्ति-उच्चागोदेसु विसेसो अत्थि, तेसिमेत्थुदयवोच्छेदाभावादो । मणुसगदीए पुण उदयवोच्छेदो अत्थि, अजोगिचरिसमए मणुसगदीए सह एदासिमुदयवोच्छेदसणादो । सोदय-परोदय-सातर णितरपरिक्खासु णत्थि भेदो, भेदकारणाणुवल्लभादो । पच्चएसु अत्थि भेदो, ओरालियमिस्स कम्मइय वेउच्चियदुग-चदुमणवधिपच्चएहि णिणा मिच्छाइडिडिह सासणे च जहाक्केण तेतालीस अट्ठीसपच्चयदसणादो,

ओषमं 'अवशेष अग्रन्धक है' ऐसा कहा गया है । परन्तु यहा 'अग्रन्धक कोई नहीं है' ऐसा कहना चाहिये, क्योंकि, यहा योगकी प्रधानता है । और सयोगियोंमें अयोगी होते नहीं हैं, क्योंकि, ऐसा होनेमें विरोध है ।

शका— यदि केवल इतनी मात्र ही विशेषता थी तो इतनेका ही निर्देश क्यों नहीं किया ?

समाधान— यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, स्थूलबुद्धि शिष्योंके भी सुखपूर्वक ग्रहण हो, एतदर्थ उक्त प्रकार उपदेश किया गया है ।

औदारिककाययोगियोंकी प्ररूपणा मनुष्यगतिके समान है १४२ ॥

पाच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय और पाच अन्तराय, इन प्रकृतियोंके पन्धोदयव्युच्छेदमें मनुष्यगतिसे कोई विशेषता नहीं है, क्योंकि, विशेष कारणोंका यहा अभाव है । यशस्कीर्ति और उच्चगोत्रमें विशेषता है, क्योंकि, यहा उनके उदयव्युच्छेदका अभाव है । परन्तु मनुष्यगतिमें इनका उदयव्युच्छेद है, क्योंकि, अयोगकेवली गुणस्थानके अन्तिम समयमें मनुष्यगतिके साथ इनका उदयव्युच्छेद देखा जाता है । स्वोदय परोदय और सान्तर निरन्तर बन्ध की परीक्षामें कोई विशेषता नहीं है, क्योंकि, यहा विशेषताके उत्पादक कारणोंका अभाव है । प्रत्ययोंमें विशेषता है, क्योंकि औदारिकमिथ, कामेण, धैर्यधिकद्विक, चार मनोयोग और चार वचनयोग प्रत्ययोंके णिणा मिथ्या एहि और सासादन गुणन्यायनमें यथाक्रमसे तेतालीस और अट्ठीस प्रत्यय देखे जाते हैं,



कायव्या । णरि एनकम्हि मणनेगे णिरुद्धे अवमेमसन्नजोगा मूलाघुत्तरपञ्चएमु अण्णेदव्या ।  
अवसेसा णिरुद्धमणनेगीण पञ्चया होति । णत्थि अण्णत्थ कथ वि विमेमो ।

वचिजोगीणमेव चैव वतन्व, सात्तर-णिरत्तर सोदय परोदय सामितपञ्चवर्दाहि  
मणनेगीहिंती वचिजोगीण भेदाभावादो । णरि चीडदिय तीडदिय चउरिदिय-पचिदियाण  
सोदय-परोदओ उवो ति वत्त व । अमच्च मोमवचिनेगीण वचिजोगिभगो । णरि सन्नयुणाण  
उत्तरपञ्चएमु अमच्च मोसवचिनेगा मोत्तण सेसम वजोगा अण्णेदव्या । सच्च-मोस सच्चमोम  
वचिनेगीण मच्च मोम मच्चमोमणनेगीभगो, विमेमाभावादो ।

कायजोगीण वि ओणभगो चैव । णरि सन्नयुणहाणाणमोवपण्णमु मण-वचिजोगद्व  
पञ्चया अण्णेदव्या । मचोगिपञ्चएमु दोहोमण वचिजोगपञ्चया अण्णेदव्या । णत्थि अण्णत्थ  
विसेमो । ओघम्मि पुच्चुत्तमत्तारससुत्तेसु चउत्थसुत्तम्मि भेदपदुप्पायणद्वमुत्तरसुत्त भणदि—

सादावेदणीयस्स को वंधो को अवधो ? मिच्छाद्विष्टिपहुडि जाव  
सजोगिकेवली वधा । एदे वंधा, अवधा णत्थि ॥ १४१ ॥

विशेषता यह है कि एक मनोयोगके निरुद्ध होनेपर शेष सब योगोंको मूलोघ उत्तर  
प्रत्ययोंमें कम करना चाहिये । इस प्रकार शेष रहे निरुद्धमनोयोगियोंके प्रत्यय होते हैं ।  
अन्यत्र ओर कहीं विशेषता नहीं है ।

वचनयोगियोंके भी इसी प्रकार ही कहना चाहिये, क्योंकि सात्तर निरत्तर,  
सोदय परोदय, स्थापि य और प्रत्ययादिकोंकी अपेक्षा मनोयोगियोंसे वचनयोगियोंके  
कोई भेद नहीं है । विशेष इतना है कि द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय और-पञ्चैन्द्रिय  
जातिका सोदय परोदय नञ होता है ऐसा कहना चाहिये । असत्यमृदावचनयोगियोंकी  
प्ररूपणा वचनयोगियोंके समान है । विशेषता यह है कि सब गुणस्थानोंके उत्तर  
प्रत्ययोंमेंसे असत्यमृदावचनयोगकों छोड़कर शेष सब योगोंको कम करना चाहिये ।  
सत्य, मृदा और सत्यमृदा वचनयोगियोंकी प्ररूपणा सत्य, मृदा और सत्यमृदा वचन  
योगियोंके समान है, क्योंकि, कोई विशेषता नहीं है ।

काययोगियोंकी भी प्ररूपणा ओघके समान ही है । विशेष इतना है कि सब  
गुणस्थानोंके ओघ प्रत्ययोंमेंसे चार मनायोग और चार वचनयोग, इस प्रकार आठ  
प्रत्ययोंको कम करना चाहिये । अन्यत्र विशेषता नहीं है । ओघमें-पूर्वोक्त सत्तरह  
सूत्रोंमें चतुर्थ सूत्रमें भेद प्ररूपणाय उत्तर सूत्र कहने हैं—

साता वेदनीयका कौन वधक और कौन अवधक है ? मिथ्यादृष्टिसे लेकर  
सयोगकेवली तरु वधक है । ये वन्धक हैं, अवधक नहीं है ॥ १४१ ॥

१ प्रथि 'प्रविशु' इति पाठ ।

ओषमि 'अवसेसा अत्रथा' ति उक्त । एत्थ पुण 'अत्रथा अत्थि' ति वत्तन्व, जोगपणादो । ण च सजेमि सु अजोगा हँति, विप्पडिमेहादो । जदि एत्थियमेत्तो चव भेदो तो एत्थियस्सेव णिहेसो किण्ण कदो ? ण एस दोसो, धूलुउद्धीण' पि सुहग्गहणइ तथेवदेसादो ।

## ओरालियकायजोगीणं मणुसगइभंगो ॥ १४२ ॥

पंचणाणावरणीय-चउदसणावरणीय पचतराइयाण धधोदयवोच्छेदे मणुसगदीदो णत्थि विसेमो, विसेसकारणामादो । जसकित्ति-उच्चगोदेसु विसेसो अत्थि, तेसिमेत्थुदयवोच्छेदा-भावादो । मणुसगदीए पुण उदयवोच्छेदो अत्थि, अजोगिचरिमसमए मणुसगदीए सह-एदासिमुदयवोच्छेददसणादो । सोदय-परोदय-मातर णिरतरपरिक्खासु णत्थि भेदो, भेदकार-णाणुवलभादो । पच्चएसु अत्थि भेदो, ओरालियमिस्स कम्मइय-चेउज्वियदुग-चदुमण-वचिपच्चएहि विणा मिच्छाइट्ठिमिह मासणे च जहाकमेण तेदालीम अइत्तीसपच्चयदसणादो,

ओषमं 'अत्रोप अत्रन्धक ह' ऐसा कहा गया है । परन्तु यहा 'अत्रन्धक कोई नहीं है' ऐसा कहना चाहिये, क्योंकि, यहा योगकी प्रधानता है । और सयोगियोंमें अयोगी हांत नहीं हैं, क्योंकि, ऐसा होनेमें विरोध है ।

शका— यदि केवल इतनी मान ही विशेषता थी तो इतनेका ही निर्देश क्यों नहीं किया ?

समाधान— यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, स्थूलबुद्धि शिष्योंके भी सुखपूर्वक ग्रहण हो, एतदर्थ उक्त प्रकार उपदेश किया गया है ।

औदारिक-काययोगियोंकी प्ररूपणा मनुष्यगतिके समान है १४२ ॥

पाच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय और पाच अन्तराय, इन प्रकृतियोंके प-धोदयव्युच्छेदमें मनुष्यगतिके कोई विशेषता नहीं है, क्योंकि, विशेष कारणोंका यहा अभाव है । यशकीर्ति और उच्चगोत्रमें विशेषता है, क्योंकि, यहा उनके उदय व्युच्छेदका अभाव है । परन्तु मनुष्यगतिके इनका उदयव्युच्छेद है, क्योंकि, अयोगकेजली गुणस्थानके अन्तिम समयमें मनुष्यगतिके साथ इनका उदयव्युच्छेद देखा जाता है । स्योदय परोदय और सान्तर निरन्तर मन्व की परीक्षामें कोई विशेषता नहीं है, क्योंकि, यहा विशेषताके उत्पादक कारणोंका अभाव है । प्रत्ययोंमें विशेषता है, क्योंकि औदारिक-मिथ, कामेण, त्रिभुवद्विक, चार मनोयोग और चार वचनयोग प्रत्ययोंके बिना मिथ्या एहि और सामादन गुणस्थानमें यथाक्रमेण तेदालीम और अइत्तीम प्रत्यय देखे जाते हैं,

दुग्धा-यंचिंदियजादि-तेजा कम्मडयसरीर-समचउरससंठाण-वण्ण गंध  
 रस-फास अगुरुअलहुअ-उवघाद-परघाद उस्सास-पसत्थविहायगइ-त्स-  
 चादर पज्जत्त-पत्तेयसरीर थिराथिर सुहासुह-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-  
 जसकित्ति-णिमिण-उच्चागोद पचतराइयाण को बंधो को अवधो ?  
 ॥ १४४-॥

सुगम ।

मिच्छाहृद्दी सासणसम्माइद्दी असजदसम्माइद्दी बंधा । एदे वधा,  
 अवसेमा अवधा ॥ १४५ ॥

परघादुस्सास पसत्थविहायगइ-सुस्सराणमेत्थुदयाभारादो बधोदयाण पुत्रावरकाल  
 सधधिवोच्छेदविचारो णत्थिय । अवसेसाण पयडीण बधोत्थया मम वोच्छिज्जति, अमजदसम्मा  
 दिट्ठिन्दि तदुमयामारदसणादो ।

पचणाणावरणीय-चउदसणावरणीय-तेजा-कम्मडयसरीर-वण्ण गंध रस-फास-अगुरुव-  
 लहुअ-उवघाद थिराथिर-सुहासुह णिमिण-पचतराइयाण सोदओ बधो, णत्थ धुवोदयतादो ।

व कामेण शरीर, समचतुस्रसस्वान, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, उपघात, परघात,  
 उन्हास, पशस्तविहायोगति, त्स, चादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ,  
 सुभग, सुस्वर, आदेय, यशक्रीति, निर्माण, उच्चागोत्र ओर पाच अन्तराय, इनका कौन बधक  
 और कौन अवन्धक है ? ॥ १४४ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

मिथ्यादृष्टि, सामादनसम्पदृष्टि और असयतसम्पदृष्टि बन्धक हैं । ये बन्धक हैं,  
 शेष अवन्धक हैं ॥ १४५ ॥

परघात, उच्छेदास, प्रशस्तविहायोगति और सुस्सरका यहा उदयाभाव होनेसे  
 बध व उदयके पूर्व और अपर काठ समधी व्युच्छेदका विचार नहीं है । शेष  
 प्रकृतियोंका बध और उदय दोनों साथ व्युच्छेद होते हैं, क्योंकि, असयतसम्पदृष्टि  
 शुणस्थानमें उन दोनोंका अभाव देखा जाता है ।

पाच ज्ञानावरणीय, चार दशनावरणीय, तेजस व कामेण शरीर, वर्ण, गंध,  
 रस, स्पर्श, अगुरुलघु, उपघात, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, निर्माण और पाच अन्तराय,  
 इनका सोदय बध होता है, क्योंकि, यहा ये धुवोदयी हैं । निद्रा, प्रचला, धारह कषाय,

गिहा-पयला-चारसकमाय-हस्स-रदि-अरदि-सोग भय दुगच्छा असादावेदणीय-उच्चागोदाण सोदय परोदओ बधो । कधमुच्चागोदबधो सम्मादिट्टीसु परोदओ ? ण, -तिरिक्खेसु पुच्चाउपवधसेणुप्पण्णरइयसम्मादिट्टीसु परोदएणुच्चागोदस्म बधुपलभादे । पुरिसवेद-समचउ-रससठाण-सुभगादेज्ज-जमकित्तीण मिच्छादि-सासणेसु सोदय-परोदओ । असजदसम्मादिट्टिमिह सोदओ । पचिदिज्जादि-त्तस नादर पज्जत्त पत्तेयसरीराण मिच्छादिट्टिमिह सोदय परोदएण बधो । सासणसम्मादिट्टि-असजदसम्मादिट्टीसु सोदएण । परघादुस्सास-पसत्थविहायगइ-अप्पसत्थ-विहायगइ-सुस्मराण तिसु नि गुणट्टाणेसु परोदएण बधो । अजसकित्तीए मिच्छादिट्टि-सासणसम्मादिट्टीसु सोदय-परोदएण बधो, अमजदसम्मादिट्टीसु परोदएण ।

पचणाणावरणीय -छदसणावरणीय-चारसकमाय-भय दुगुच्छा-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गध रस फास अगुरुत्तलहुव-उपघाद-णिमिण-पचतराइयाण णिरतरो बधो । असाद-हस्स-रदि-अरदि-सोग-जसकित्ति-अजमकित्ति-थिरायिर-सुभामुमाण सातरो बधो, तिसु नि गुणट्टाणेसु एगसमएण बधुवरमदमणादो । पुरिसवेद समचउरसमठाण-सुभगादेज्ज-उच्चागोद-पसत्थविहाय-

हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्पा, असाता वेदनीय और उच्चगोत्रका स्वोदय परोदय बन्ध होता है ।

शका—सम्यग्दृष्टियोंमें उच्चगोत्रका परोदय बन्ध कैसे होता है ?

समाधान—यह शका ठीक नहीं, क्योंकि, पूर्व आयुबन्धके वगसे तिर्यंचोंमें उत्पन्न हुए क्षाधिकसम्यग्दृष्टियोंमें परोदयसे उच्चगोत्रका बन्ध पाया जाता है ।

पुरुषवेद, समचतुरस्रसंस्थान, सुभग, आदेय और यशकीर्तिका मिथ्यादृष्टि व सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें स्वोदय परोदय बन्ध होता है । अमयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें इनका स्वोदय बन्ध होता है । पन्नेन्द्रिय जानि, व्रस, यादर, पर्याप्त और प्रत्येकशरीरका मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें स्वोदय परोदयसे बन्ध होता है । सासादनसम्यग्दृष्टि और असयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें स्वोदयसे बन्ध होता है । परघात, उच्छ्वास, प्रशस्तविहायोगति, अमशस्तविहायोगति और सुस्वरका तीनों ही गुणस्थानोंमें परोदयसे बन्ध होता है । अयशकीर्तिका मिथ्यादृष्टि व सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें स्वोदय परोदयसे और असयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें परोदयसे बन्ध होता है ।

पाच ज्ञानारणीय, छह दर्शनारणीय, बारह क्वाय, भय, जुगुप्पा, तेजस व कामण शरीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, उपघात, निर्माण और पाच अन्तराय, इनका निरन्तर बन्ध होता है । असाता वेदनीय, हास्य, रति, अरति, शोक, यशकीर्ति, अयशकीर्ति, स्थिर, अस्थिर, शुभ और अशुभका सान्तर बन्ध होता है, क्योंकि, तीनों ही गुणस्थानोंमें इनका एक समयसे बन्धप्रियाम देखा जाता है । पुरुषवेद, समचतुरस्र संस्थान, सुभग, आदेय, उच्चगोत्र, प्रशस्तविहायोगति और सुस्वरका मिथ्यादृष्टि व

गद सुस्तराण मिच्छादिद्वि सामणसम्मादिद्वीसु मातरो वधो, असजदमम्मादिद्विद्वि गिरतरो ।  
 परिदियत्तस गदर पज्जत्त पत्तेयमरीर-पग्गदुम्मायाण मिच्छाद्वीसु सातर-गिरतरो वधो ।  
 कथ गिरतरो ? तिरिक्ख मग्गुमुपण्णमणत्तुमारान्दिदेवाण णेरइयाण च गिरंतरत्तधुवलमादो ।  
 सामणसम्मादिद्वि असजदमम्मान्दिद्वीसु गिरतरो ।

मिच्छाद्विस्म तेदलीम पञ्चया, ओषपञ्चामु ओरालियमिस्सकायचोगवदिग्गित्त  
 वारसचोगाणमभावादो । सामणसम्माद्वीसु, असजदमम्माद्विस्म वत्तीम पञ्चया, तेषि  
 चेष जोगाणमभावादो असजदसम्मादिद्वीसु त्थी णमुमयेदेहि सह वारसचोगाभावादो ।  
 एदाओ सञ्चपयडीओ असजदसम्मान्दिद्विणो देवगडमज्जत्त वधति । मिच्छाद्वि-सासणमम्मा  
 दिद्विणो उच्चगोत्त मणुमगइसज्जत्त, सेमाओ सञ्चपयडीओ तिरिक्ख-मणुमगइसज्जत्त वधति ।  
 देव गिरयगईओ मिच्छादिद्वि सासणसम्मादिद्विणो किण्ण वधति ? ण, अपज्जत्तद्वाए तासि  
 वधाभावादो ।

सासादनसम्यग्दष्टि गुणस जानोंमे सातर व २ होता है, असयतसम्यग्दष्टि गुणस्थानमें  
 निरन्तर बन्ध होता है। पचेत्त्रिय, प्रस, गदर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, परघात और  
 उच्चगोत्त मिथ्यादष्टियोंमें सातर निरन्तर बन्ध होता है।

शका—निरन्तर बन्ध कैसे हाता है ?

समाधान—क्योंकि, त्रियेच व मनुष्योंमें उपक्ष हुए सानत्तुमारादि देवों और  
 नारकियोंमें निरन्तर बन्ध पाया जाता है।

सासादनसम्यग्दष्टि वार असयतसम्यग्दष्टि गुणस जानोंमें निरन्तर बन्ध होता है।

मिथ्यादष्टि तेदलीस प्रत्यय होते हैं, क्योंकि, ओष प्रत्ययोंमेंसे उसके औदा  
 रिक्मिध काययोगने छोडकर अन्य गारह योगोंका अभाव है। सासादनसम्यग्दष्टिक  
 अहतास और असयतसम्यग्दष्टिसे वत्तीस प्रत्यय होते हैं, क्योंकि, उहीं योगोंका यहा भी  
 अभाव है, चूकि असयतसम्यग्दष्टियोंमें स्त्री और नपुंसक वेदोंके साथ गारह योगोंका अभाव  
 है। इन सब प्रकृतियोंका असयतसम्यग्दष्टि देवगतिसे सयुक्त बाधते हैं। मिथ्यादष्टि व  
 सासादनसम्यग्दष्टि उच्चगोत्त मनुष्यगतिसे सयुक्त, तथा शेष सब प्रकृतियोंको  
 त्रियगति और मनुष्यगतिसे सयुक्त बाधते ह।

शका—देवगति व त्रियगतिको मिथ्यादष्टि और सासादनसम्यग्दष्टि क्यों नहीं  
 बाधते ?

समाधान—नहीं बाधते, क्योंकि, अपर्याप्त कालमें उनका बन्ध नहीं होता।

तिरिक्ख-मणुस्मा सामी । बन्धान वधनिणद्धाण च सुगम । पचणाणावरणीय-  
छदसणावरणीय-चारमकमाय-भय-दुगुला-तेजा-कम्मडय-वण्णचउत्तक-अगुरुलहुव-उववाद्-  
णिमिण-पंचतराइयाण मिच्छाइडिग्धि' चउत्तिहो वपो । मेमेसु तिविहो, उवन'भावादा ।  
अवसेमाण मच्चपयडीण तिसु त्रि गुणट्ठाणसु नपो मादि-अदुवो ।

णिट्ठाणिट्ठा-पयलापयला-थीणगिद्धि-अणंताणुवधिकोध-माण-  
माया-लोभ-इत्थिवेद-तिरिक्खगइ-मणुसगइ-ओरालियसरीर-चउसंठाण-  
ओरालियसरीरअंगोवग-पंचसंघटण-तिरिक्खगइ-मणुसगइपाओग्गाणु-  
पुव्वी-उज्जोव-अप्पसत्थविहायगइ-दुभग-दुस्वर-अणादेज्ज'णीचागोदाणं  
को वंधो को अबंधो ? ॥ १४६ ॥

सुगम ।

मिच्छाइड्डी सासणसम्माइड्डी वंधा । एदे वंधा अवसेसा अबंधा  
॥ १४७ ॥

तिर्येच य मनुष्य स्वामी है । जन्मजन्मान और बन्धनिणद्धस्थान सुगम हैं । पाच  
प्रानावरणीय, छह दर्शनावरणीय, गार्ह कपाय, भय, जुगुत्ता, तजस व कामेण शरीर,  
घर्णादिक चार, अगुरुल्लु, उपघात, निर्माण और पाच अन्तराय, इनका मिध्यादष्टि  
गुणस्थानमें चारों प्रकारका बन्ध होता है । जेप देा गुणस्थानोंमें तीन प्रकारका बन्ध  
होता है, क्योंकि, उहा धुन बन्धका अभाप है । जेप सय प्रकृतियोंका बन्ध तीनों ही  
गुणस्थानोंमें मादि व जधुव होता है ।

निट्ठानिट्ठा, प्रचलाप्रचला, स्त्यानगृद्धि, अनन्तालुनन्ती क्रोध, मान, माया, लोभ,  
श्रीनेद, तिर्यग्गति, मनुष्यगति, औदारिकशरीर, चार सम्थान, औदारिकशरीरामोपाग, पाच  
महनन, तिर्यग्गति, मनुष्यगतिप्रायोग्यालुपत्ती, उद्योत, अग्रस्तविहायोगति, दुर्भग, दुस्वर,  
अनादेय और नीचगोत्रका कोन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ १४६ ॥

यह सत्य सुगम है ।

मिध्यादष्टि और सासादनमम्यग्दष्टि बन्धक है । ये बन्धक हैं, जेप अबन्धक  
है ॥ १४७ ॥

१ मद्रियु ' मिच्छाइड्डी ' इति पाठ ।

२ मद्रियु ' आत्त ' इति पाठ ।

पुष्पीण मणुमगइसजुतो, सेसाण तिरिकस-मणुमगइमजुतो वधो । तिरिकस मणुसमिच्छाडि-  
सासणसम्मादिडिणो सामी । वधज्जाण वधणिणट्टाण न सुगम । धीणगिडित्थि अणताणुनधि-  
चउक्काण मिच्छाडिडिहि वधो चउत्तिहो । सामणे दुत्तिहो, अणादि-धुवत्ताभावादो । सेसाण  
पयडीण मन्वत्थ सादि-अडुवो ।

सादावेदणीयस्स को वधो को अवधो ? ॥ १४८ ॥

सुगम ।

मिच्छाडिटी सामणमम्माडिटी असजदसम्माडिटी सजोगिकेवली  
वंधा । एदे वधा, अवधा णत्थि ॥ १४९ ॥

सादावेदणीयस्स उपादो उदओ पुव्व पच्च [वा] वोच्छिण्णो त्ति विचारो णत्थि, चदसु  
गुणद्वेषेसु तदुभयवोच्छेदाणुत्तभादो । मिच्छाडिटी सामणमम्माडिटी-असजदसम्माडिटी-सजोगीसु  
वधो सोदय परोदओ, पराजत्तणुदयत्ताणे । मिच्छाडिटी-सासणसम्माडिटी-असजदसम्मादिटीसु  
वधो मातरो, णममण्ण वजुत्तमत्तसणादो । सजोगीसु णित्तरो, पडिजत्तपयडीए

नथा शर प्रवृत्तियाना नियगति व मनुष्यगतिसे मयुक्त वर होता है । नियंत्र और  
मनुष्य मिथ्यादृष्टि एव सासादनसम्यग्दृष्टि स्वामी है । उन्धाधान और वधविनष्टस्थान  
सुगम है । मन्थानमृत्तिवय ओर जनतानुर्वाधचतुष्कका बन्ध मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें  
चारों प्रकारका हाता है । सासादन गुणस्थानमें दो प्रकारका होता है, क्योंकि, यहा  
अनादि और धुव उत्पत्तका अभाव है । नेप प्रकृतियोंका वध सर्वत्र सादि और अधुव  
होता है ।

साता वेदनीयका कोन वधक ओर कौन अवधक हे ? ॥ १४८ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, असयतमम्यग्दृष्टि और मयोगकेवली वधक है । ये  
वधक है, अवधक नहीं है ॥ १४९ ॥

साता वेदनीयका उद्य वधने पूरम या पश्चात् शुचिउत्त हाता है, यह विचार  
नहा है, क्योंकि, चारा गुणम जानीम उन दोतौना व्युत्प्रेद पाया नहीं जाता । मिथ्यादृष्टि,  
सासादनसम्यग्दृष्टि, असयतमम्यग्दृष्टि आर सयोगकेवली गुणस्थानोंमें सोदय परोदय  
वध होता है क्योंकि, यहा परिजनिन होकर अ यका भी उद्य होता है । मिथ्यादृष्टि सासा  
दनसम्यग्दृष्टि और असयतमम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें साता वेदनीयका सात्तर व व होता है,  
। , एक समयसे यहा उसका वधविश्राम देना जाता है । सयोगकेवलियोंमें निरन्तर

वधाभावादो । मिच्छाइट्टि-सासणमम्माइट्टि-असजदसम्मादिट्टीसु जहाकमेण तेदालीस-अट्टत्तीस-  
वत्तीसपच्चया । सजोगिम्हे एकको चव ओरालियमिरसकायजोगपच्चओ । सेस सुगम ।  
मिच्छाइट्टि-सासणसम्मादिट्टिणो दुगइसजुत्त, असजदसम्मादिट्टिणो देवगइसजुत्त, सजोगिजिणा  
अगइसजुत्त वधति । तिरिक्ख-मणुसगइमिच्छाइट्टि-सासणसम्माइट्टि असजदसम्मादिट्टिणो  
मणुसगइसजोगिजिणा सामी । वधद्धान वधणिणइट्टाण च सुगम । सादानेदणीयस्स वधो  
सव्वत्थ सादि-अद्धुतो, अद्धुववपित्तादो ।

मिच्छत्त-णउंसयवेद-तिरिक्खाउ-मणुसाउ-चदुजादि हुंडसंठाण-  
असंपत्तसेवट्टंसंघडण आदाव थावर-सुहुम-अपज्जत्त-साहारणसरीर-  
णामाणं को वधो को अवंधो ? ॥ १५० ॥

सुगम ।

मिच्छाइट्टी वंधा । एदे वधा, अवसेसा अवंधा ॥ १५१ ॥

एदस्स अत्थो वुच्चदे— वधोदयाणमेत्थ वोच्छेदो णत्थि, उवलभादो । अधवा,

न-य होता है, क्योंकि, यहा प्रतिपक्ष प्रकृतिके वन्धका अभाव है । मिथ्यादृष्टि, सासादन  
सम्यग्दृष्टि और असयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें यथाक्रमसे तेतालीस, अठतीस और वत्तीस  
प्रत्यय होते ह । सयोगकेउली गुणस्थानमें एक ही औदारिकमिश्रक्राययोग प्रत्यय होता है ।  
शेष प्रत्ययप्ररूपणा सुगम है । मिथ्यादृष्टि जोर सासादनसम्यग्दृष्टि दो गतियोंमें सयुक्त,  
असयतसम्यग्दृष्टि देवगतिसे सयुक्त, और सयोगी जिन अगतिंसयुक्त वाधते हैं ।  
तिर्यगति व मनुष्यगतिके मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि और असयतसम्यग्दृष्टि, तथा  
मनुष्यगतिके सयोगी जिन न्यामी हैं । वन्धाध्यान और वन्धनिनष्टस्थान सुगम हैं ।  
साता वेदनीयका वन्ध सर्वत्र सादि न अधुव होता है, क्योंकि, वह अधुववन्धी है ।

मिथ्यात्व, नपुमकृपेद, तिर्यगायु, मनुष्यायु, चार जातिया, हुडसस्थान, असप्राप्त-  
सृपाटिकासहनन, आताप, स्थावर, सूक्ष्म, अपर्याप्त और साधारणशरीर नामकर्मका कौन  
वन्धक और कौन अवन्धक है ? ॥ १५० ॥

यह सूत्र सुगम है ।

मिथ्यादृष्टि वन्धक हैं । ये वन्धक है, शेष अवन्धक हैं ॥ १५१ ॥

इस सूत्रका अर्थ कहते ह— वन्ध आर उदयका यहा व्युच्छेद नहीं हैं, क्योंकि,



एदमप्यणासुत्त देसामामिय, तेणेदेण सूइदत्थपरूवणा कीरदे— पचणाणारणीय-  
छदमणारणीय सादामाद-नारसरुसाय पुरिसनेद हस्स रदि-अरदि-सोग भय-दुगुच्छा मणुसगइ-  
पचिंदियजादि-ओरालिय तेना कम्मइयमरीर-ममचउरससठाण ओरालियसरीरअगोयग वज्जरिसइ-  
मघडण-वण्णचउत्तक मणुसाणुपुच्ची अगुरुअलहुअचउत्तक-पमत्थविहायगइ-तसचउत्त थिराथिर-  
मुहामुह-सुभग सुस्सर-आदज्ज जमकित्ति अजसकित्ति णिमिणुच्चागोद-पचतराइयपयडीओ एत्थ  
चदुसु गुणइणेषु वधपाओग्गाओ । एत्थ पुच्च वयो उदओ वा वेच्छिण्णो त्ति विचारो णत्थि,  
मणुसगइ ओरालियमरीर ओरालियमरीरअगोयग-वज्जरिमहमघडण मणुसगइ-मणुसगइपाओग्गाणु  
पुच्ची अनमगितीणमुदयाभावादे मेमाण पयडीणमुदययोच्छेदाभावादे च ।

पचणाणारणीय चउदसणावरणीय-पचिंदियजादि तेना-कम्मइयसरीर वण्ण-गध-रस-  
फाम अगुरुअलहुअ-उत्तघाद परघादुस्साम तस-वादर-पज्जत्त-पत्तेयमरीर-थिराथिर-मुहामुह-  
णिमिण पचतराइयाण सोदओ वधो, वेउत्तियकायजोगग्गिह एदासिं धुत्तोदयत्तदसणादो । णवरी  
सम्मामिच्छादद्विं मोत्तूण अण्णत्थ उस्सासस्स' सोदय परोदओ वधो, सरीरपज्जत्तीए

यह अपणामून देशामशरु ह, इसलिये इसस सूचित अर्थकी प्ररूपणा करते  
ह— पाच ज्ञानावरणीय, उह दशनावरणीय साता व असाता वेदनीय, नारह कपाय,  
पुरयवेद, हास्य, रति, अरति, शोर, भय, जुगुप्सा, मनुप्यगति, पचेन्द्रिय जाति,  
औदारिक, तैत्तस व कामेण शरीर, समचतुरस्रसस्थान, अन्तरिखशरीरागोपाग, वज्जर्यभ  
महन्नन, वण्णत्तिक चार, मणुप्याणुपूर्णा, अगुरुअलहु जादिक चार, प्रशस्तविहायोगति,  
प्रस आदिक चार, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुभग, सुस्सर, आदेय, यशकीति,  
अयशकीति निमाण, उच्चगोत्र और पाच अतराय प्रकृतिया यहा चार गुणस्थानोंमें  
यन्धके योग्य है। यहा पूर्वमें उध या उदय अगुच्छिउत्त होता है, यह विचार नहा है,  
क्योंकि, मनुप्यगति, औदारिकशरीर, औदारिकशरीरागोपाग वज्जर्यभसहन्नन, मनुप्यगति,  
मनुप्यगतिप्रायोग्याणुपूर्णा और अयशकीति, इनका उदयाभाव तथा शेष प्रकृतियोंके  
उदयअगुच्छेदका अभाव है।

पाच ज्ञानावरणीय, चार दशनावरणीय, पचेन्द्रिय जाति, तैत्तस व कामेण शरीर,  
वण, गध, रस स्पर्श, अगुरुअलहु, उपघात, परघात, उच्छ्रयाम, प्रस, वादर, पयात्त  
प्रत्यक्षशरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, निर्माण ओर पाच अतराय, इनका स्वोदय  
वध होता है, क्योंकि, चैत्रियिकनाययोगमें इनका धुत्तोदय देरता जाता है। विशेष  
इतना है कि सम्यग्मिथ्यादृष्टिको छोडकर अन्यम उच्छ्रयासका स्वोदय परोदय वध

पञ्जत्तस्म अतोमुहत्त गतूण आणापाणपञ्जत्तीए पञ्जत्तयदस्स उस्सासस्सोदयदंसणादो ।  
 णिहा-पयत्ता सादामाद धारमकमाय-सत्तणोक्रमाय-ममचउरससठाण-पसत्थविहायगइ-सुभग-  
 सुस्सर आदेज्ज-असकित्ति-अजसकित्ति उच्चागोदाण सोदय-परोदओ वधो, असुहाण णेरइएसु  
 उदयदसणादो । मणुसगइ ओरालियसरीरअगोमग वज्जरिमहसघडण-मणुसगइपाओग्गाणुपुच्चीण  
 परोदओ वधो, वेउणियकायजोगम्मि एदामिमुदयनिरोहादो ।

पचनाणापरणीय-छद्रसणापरणीय-रारसकसाय-भय-दुगुछा-ओरालिय-तेजा कम्मइय-  
 सरीर-वण्ण-गध-रस-फास-अगुखलहुण-उवघाद-परघादुस्सास-घादर-पञ्जत्त पत्तेयसरीर-  
 णिमिण-पचतराडयाण णिरतरो वधो, एत्थ बुववधितादो । सादासाद हस्म-रदि-अरदि-सोग-  
 धिराथिर सुहासुह-जमकित्ति-अजसकित्तीण सातरो वधो, एगसमएण वधुवरमदभणादो ।  
 पुरिसवेद-समचउरससठाण-वज्जरिसहसघडण-पमत्थनिहायगइ सुभग सुस्सर आदेज्जुच्चागोदाण  
 मिच्छाडडि सासणसम्मादिट्ठीसु सातरो वधो, पडिउक्खपयडिउधसभवादो । सम्मामिच्छादिट्ठि-  
 असजदमम्मादिट्ठीसु णिरतरो, पडिउक्खपयडिउवाभावादो । पचीदियजादि-ओरालियसरीर-

होता है, क्योंकि, शरीरपर्याप्तिये पर्याप्त हुए जीवके अतर्मुहर्त जाकर आनप्राणपर्याप्तिये  
 पर्याप्त होनेपर उच्छ्वासका उदय देया जाता है । निद्रा, प्रचला, साता व असाता  
 वेदनीय, धारह कपाय, सात नोकपाय, समचतुरस्रसस्थान, प्रशस्तविहायोगति, सुभग,  
 सुस्वर, आदेय, यशकीर्ति, अयशकीर्ति और उच्चगोत्र, इनका स्वोदय परोदय बन्ध  
 होता है, क्योंकि, नारकियोंमें अशुभ प्रकृतियोंका उदय देया जाता है । मनुष्यगति,  
 औदारिकशरीरगोपाग, यज्ञयभमहनन और मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्विका परोदय बन्ध  
 होता है, क्योंकि, त्रैकियिककाययोगमें इनके उदयका निरोध है ।

पाच प्राणापरणीय, छह दर्शनापरणीय, रारह कपाय, भय, जुगुप्सा, औदारिक,  
 तेजस व कामेण शरीर, घर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुल्लघु उपघात, परघात,  
 उच्छ्वास, घादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, निर्माण और पाच अन्तरायका निरन्तर बन्ध  
 होता है, क्योंकि, यहा ये धुत्रन्धी हैं । साता व असाता वेदनीय, हास्य, रति, अरति,  
 शोक, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, यशकीर्ति और अयशकीर्तिका मन्तर बन्ध होता है,  
 क्योंकि, एक समयसे इनका बन्धविध्राम देया जाता है । पुरपवेद, समचतुरस्रसस्थान,  
 यज्ञयभसहनन, प्रशस्तविहायोगति, सुभग, सुस्वर, आदेय और उच्चगोत्रका मिथ्यादृष्टि  
 व सासादनमभ्यगृष्टि गुणस्थानोंमें मन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, यहा इनकी प्रतिपक्ष  
 प्रकृतियोंका बन्ध सम्भव है । सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असयतनमभ्यगृष्टि गुणस्थानोंमें  
 निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, यहा प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धका अभाव है । पचेन्द्रिय

अगोत्रग तसणामाण मिच्छाद्विद्भि सातर-गिरतरो । कथ गिरतरो ? ण, णेरइएसु सणम्हु  
 मारादिदेवेसु च गिरतरवधुवलभादो । सासणसम्मादिद्वि सम्मामिच्छादिद्वि असत्तदम्मादिद्वीसु  
 गिरतरो, पडिवन्त्तपयडिनधामानादो । मणुमगइ मणुसगइपाओग्गाणुपुच्चीण मिच्छाद्वि  
 सासणसम्मादिद्वीसु सातर गिरतरो । कथ गिरतरो ? ण, आणदादिदेवेसु गिरतरनधुनलभादो ।  
 सम्मामिच्छाद्वि-असजदसम्मादिद्वीसु गिरतरो, पडिवन्त्तपयडिनधामानादो ।

मिच्छाद्वी एदाओ पयडीओ तेदालीसपच्चएहि, सासणो अद्वितीमपच्चएहि,  
 सम्मामिच्छाद्वि-असजदसम्मादिद्विणो चोत्तीसपच्चएहि ववति, मूलेघपच्चएसु नरसजोण  
 पच्चयाभावादो । सेस सुगम ।

मणुमगइ-मणुसगइपाओग्गाणुपुच्ची-उच्चागोदाणि मिच्छाद्वि-सामणमम्माद्वि-  
 सम्मामिच्छाद्वि असत्तदसम्मादिद्विणो मणुमगइसजुत्त । अवसेससत्तपयडीओ मिच्छाद्वि

जाति, औदारिकशरीरागोपाग ओर प्रस नामकमका मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें सातर  
 निरन्तर बध होता है ।

शका—निरन्तर बध कैसे होता है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि नारकियों और सनत्तुमारादि देवोंमें उनका निरन्तर  
 बन्ध पाया जाता है ।

सासादनसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें  
 निरन्तर बध पाया जाता है, क्योंकि, यहा प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके उन्वका अभाव है।  
 मनुष्यगति और मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्विका मिथ्यादृष्टि व सासादनसम्यग्दृष्टि  
 गुणस्थानोंमें सातर निरन्तर बध होता है ।

शका—निरन्तर बध कैसे होता है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि ज्ञानतादि देवोंमें उनका निरन्तर बध देखा  
 जाता है ।

सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें निरन्तर बध होता है,  
 क्योंकि, यहा प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके उन्वका अभाव है ।

मिथ्यादृष्टि इन प्रकृतियोंको तेतालीस प्रत्ययोंसे सासादनसम्यग्दृष्टि शब्दीस  
 प्रत्ययोंसे, तथा सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असयतसम्यग्दृष्टि चार्तीस प्रत्ययोंसे बाधते हैं,  
 क्योंकि, मूलेघ प्रत्ययोंमें बारह योग प्रत्ययोंका यहा अभाव है । शेष प्रत्ययरूपणा  
 सुगम है ।

मनुष्यगति, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्विका उच्चगात्रको मिथ्यादृष्टि, सासादन  
 सम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असयतसम्यग्दृष्टि मनुष्यगतिसे सयुक्त बाधते हैं । शेष

सामणमम्मादिट्टिणो तिरिस्स मणुमगइमज्जत्त, सम्मामिच्छादिट्टि-असजदसम्मादिट्टिणो मणुसगइसज्जत्त वधत्ति ।

देव-णेरट्टया सामी । वधद्धाण सुगम । वरणिणासो णत्थि । पचणाणावरणीय-छदमणावरणीय-वारमकसाय भय-दुगुळा-तेजा-कम्मइय-वण्णचउत्तक-अगुरुअलहुअ-उवघाद-णिमिण-पचतराडयाण मिच्छाइट्टिम्हि चउत्तिहो नपो । अण्णत्थ तिरिहो, धुनपधित्ताभागादो । सेममत्रपयडीओ सत्रत्थ सादि-अट्टयाओ ।

वीणगिद्धित्तिप-अणताणुनधिचउत्तक-इत्थिवेद-तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइ-चउसठाण-चउसघडण-तिरिक्खगइपाआगगाणुपुच्ची-उज्जेण अण्णमत्थविहायगइ-दुमग दुस्सर-अणादेज्ज-णीचागोदाणि वेट्टाणियपयडीओ । एदासु अणताणुनधिचउत्तकस्स नधोदया सम वोच्छिण्णा, सामणम्मि तदुभयाभावेदसणादो । इत्थिवेद अण्णमत्थविहायगइ-दुमग-दुस्सर-अणादेज्ज-णीचागोदाण पुच्च वधो पच्चा उदओ वोच्छिज्जदि, सामणमम्मादिट्टि असजदसम्मादिट्टीसु वधोदयत्रोच्छेददसणादो । अत्रसेमाण ऐसा परिक्खा णत्थि, उदयाभागादो ।

...

सय प्रकृतियोंको मिथ्यादृष्टि व सासादनसम्यग्दृष्टि तिर्यग्गति एत्र मनुष्यगतिसे सयुक्त, तथा सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असयतसम्यग्दृष्टि मनुष्यगतिसे सयुक्त वाधते है ।

देव और नारकी स्वामी हैं । बन्धाध्वान सुगम है । बन्धनिनाश है नहीं । पाच धानावरणीय, उह दर्शनावरणीय, वारह रूपाय, भय, जुगुप्सा, तजस व कामर्ण शरीर, वर्णादिक चार, अगुरुलघु, उपघात, निर्माण जोर पाच अन्तरायका मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें चारों प्रकारका बन्ध होता है । अन्य गुणस्थानोंमें उनका तीन प्रकारका बन्ध होता है, क्योंकि, यहा इनके ध्रुव बन्धका अभाव है । शेष सब प्रकृतिया सर्वत्र सादि व अध्रुव बन्धवाली ह ।

स्थानगृहप्रय अनन्तानुबन्धिचतुष्क, र्सीत्रेद, तिर्यगायु, तिर्यग्गति, चार सस्थान, चार सहनन, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी, उद्योत, अप्रशस्तविहायोगति, दुर्भंग, दुस्सर, अनादेय और नीचगोत्र, ये द्विम्यानित्र प्रकृतिया हैं । इनमें अनन्तानुबन्धिचतुष्कका बन्ध और उदय दोनों साथमें व्युच्छिन्न होते ह, क्योंकि, सासादन गुणस्थानमें उन दोनोंका अभाव देखा जाता है । र्सीत्रेद, अप्रशस्तविहायोगति दुर्भंग, दुस्सर, अनादेय और नीचगोत्रका पूर्वमें बन्ध और पश्चात् उदय व्युच्छिन्न होता है, क्योंकि, सासादनसम्यग्दृष्टि और असयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें प्रमश इनके बन्ध और उदयका व्युच्छेद देखा जाता है । शेष प्रकृतियोंके यह परीक्षा नहीं है, क्योंकि, उनका उदयाभाव है ।

अणताणुअधिचउक्क-इयिउद-अणसत्यत्रिहायगइ-दुभग दुस्मग-अणादेउ-णीचा-  
 गोदाण सोदय परोदओ वधो, त्रेउन्वियकायनेगम्मि पडिउक्कुदयदसणादो । अवसेसाण  
 पयडीण परोदओ वधो, तामिभेत्युदयत्रिरोहादो । वीणगिद्धितिय-अणताणुअधिचउक्क  
 तिरिक्खाउआण गिरतरो वधो, एगसमएण वधुवरमाभावादो' । तिरिक्खगइ-तिरिक्खगइ  
 प्राओग्गाणुपुन्वी णीचागोदाण सातर-गिरतरो वधो । कथ गिरतरो ? ण, सत्तमपुढविणेइएसु  
 गिरतरवधुउलभादो । अणसेसाण पयडीण वधो सातरो, एगममएण वधुवरमदमणादो ।  
 पच्चया सुगमा । तिरिक्खाउ तिरिक्खगइ-तिरिक्खगइप्राओग्गाणुपुन्वी उज्जोवाणि तिरिक्खगइ-  
 सजुत्त, सेमसव्वपयटीओ तिरिक्ख-मणुसग, सजुत्त नयति । देण णेरइया मामी । ववद्धाण  
 वधत्रिणद्धाण च सुगम । सत्तण्ट धुपयडीण मिच्छाइडिभिह चउत्विहो वधो । सासणे  
 दुविहो नयो ।

मिच्छत-णुसयउद-एइदियजादि-हुडमठाण-अमपत्तमेउडमघडण-आदाउ-धावर-  
 पयटीओ मिच्छाइडिणा वज्जमाणियाओ । एत्थ मिउत्तस्स वधोदया सम वोच्छिज्जाति,

अणताणुअधिचउक्क, खीउद, अपशस्तत्रिहायोगति, दुर्भग, दुस्वर, अनादेय और  
 नीचगोत्रका उदय परोदय वध होता है, क्योंकि, वैदिकयिक्काययोगमें इनकी प्रतिपक्ष  
 प्रवृत्तियोंका उदय देखा जाता है । शेष प्रवृत्तियोंका परोदय उन्ध होता है, क्योंकि, यहा  
 उनके उदयका निरोध है । स्यानगृह्णिय, अनन्तानुगन्धनतुष्क और तियगायुका  
 निरन्तर वध होता है, क्योंकि, एक समयसे इनके उधविधामका अभाव है । तिर्यग्गति,  
 तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी और नीचगोत्रका सातर निरन्तर वध होता है ।

शरू—निरन्तर वध कैसे होता है ?

समाधान —यह शरू ठीक नहीं, क्योंकि सप्तम पृथिवीके नारकियेमें उनका निरन्तर  
 वध पाया जाता है ।

शेष प्रवृत्तियोंका वध सातर होता है, क्योंकि, एक समयसे उनका वध  
 विधाम देखा जाता है । प्रत्यय सुगम है । तिर्यगायु निर्यग्गति, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी  
 और उद्योतको निर्यग्गतिसे सयुक्त, तथा शेष सप्त प्रवृत्तियोंको तिर्यग्गति व मनुष्यगतिसे  
 सयुक्त बाधते हैं । देव व नारकी स्वामी हैं । वधाघ्नान और व धधिघ्नस्थान सुगम है ।  
 सात धुवप्रवृत्तियोंका मिथ्याहाष्टि गुणस्वानमें सारा प्रकारका वध होता है । म्हासादनमें  
 दो प्रकारका वध होता है ।

मिथ्यात्व, नपुसकवेद, एनेन्द्रियजाति, टण्डसन्धान, असप्राप्तस्पाटिकासहनन,  
 आताप और स्वानर, ये मिथ्याहाष्टिके द्वारा उच्यमान प्रवृत्तिया हैं । यहा मिथ्यात्वका  
 वध और उदय दोनों मिथ्याहाष्टि गुणस्वानमें साथ ही व्युच्छिज्ज होते हैं, क्योंकि, उपरिस

१ अश्रुता वधुवरमानाभावादो' इति पाठ ।

उवरिमगुणेषु तदुभयाणुवलभादो । णवुसयवेद-हुडसठाणाण पुच्च वधो पच्छा उदओ  
 वोच्छिज्जदि, मिच्छाइड्ढि-असजदसम्मादिड्ढीसु तदुभयाभाउदसणादो । सेसासु एसो विचारो  
 णत्थि, उदयाभावादो । मिच्छत्तस्स सोदएण, णवुसयवेद-हुडसठाणाण सोदय-परोदओ,  
 अउसेसाण परोदओ वधो । मिच्छत्तस्स वधो णिरतरो, अउमेसाण सातरो । पच्चया सुगमा ।  
 णरि एइदियजादि-आदाउ धावराण णवुसयवेदपच्चओ अवणेदच्चो, णेरइएसु एदामि  
 वधाभावादो । मिच्छत्त णवुसयवेद-हुडसठाण-असपत्तसेवट्टसघडणाणि तिरिक्ख-मणुसगइसजुत्त,  
 अउसेसाओ पयडीओ तिरिक्खगइसजुत्त वज्जति । एइदियजादि-आदाउ-धावराण वधस्स  
 देवा मामी, अउमेसाण वरस्स देव-णेउइया सामी । वधद्वान्ण वधविणट्टाण च सुगम ।  
 मिच्छत्तस्म चउत्विहो वधो, अउसेसाण सादि-अद्वुवो ।

मणुसाउअस्स वधो उदयादो' पुच्च पच्छा वा वोच्छिज्जदि ति णत्थि [विचारो], संता-  
 सताण सणियासन्निरोहादो । परोदओ वधो, वेउत्तियकायजोगम्मि मणुसाउअस्स उदयविरोहादो ।  
 णिरतरो वधो, एगसमएण वधुवरमाभावादो । मिच्छाइड्ढि सासणसम्माइड्ढि-असजदसम्मादिड्ढीण

गुणस्थानोंमें वे दोनों पाये नहीं जाते । नपुसकवेद और हुण्डसस्थानका पूर्वमें बन्ध और  
 पश्चात् उदय व्युच्छिन्न होता है, क्योंकि, मिथ्यादृष्टि और असयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें  
 क्रमसे उन दोनोंका अभाव देखा जाता है । शेष प्रकृतियोंमें यह विचार नहीं है, क्योंकि,  
 उनका उदयाभाव है । मिथ्यात्वका स्वोदयसे, नपुसकवेद और हुण्डसस्थानका स्वोदय-  
 परोदयसे, तथा शेष प्रकृतियोंका परोदयसे बन्ध होता है । मिथ्यात्वका बन्ध निरन्तर  
 और शेष प्रकृतियोंका सान्तर होता है । प्रत्यय सुगम है । विशेष इतना है कि एकैन्द्रिय-  
 जाति, आताप और स्वावरके प्रत्ययोंमें नपुसकवेद प्रत्ययको कम करना चाहिये, क्योंकि,  
 नागक्रियोंमें इनके बन्धका अभाव है । मिथ्यात्व, नपुसकवेद, हुण्डसस्थान और  
 अमप्राप्तसृपाटिकासहनन, तिर्यग्गति व मनुष्यगतिसे संयुक्त, तथा शेष प्रकृतिया  
 तिर्यग्गतिसे संयुक्त षधती है । एकैन्द्रियजाति, आताप और स्वावरके बन्धके द्वेष स्वामी  
 है । शेष प्रकृतियोंके बन्धके द्वेष व नारकी स्वामी है । बन्धघ्नान और बन्धविनष्टस्थान  
 सुगम है । मिथ्या वका बन्ध चारों प्रकारका, तथा शेष प्रकृतियोंका सादि व अधुव  
 होता है ।

मनुष्यायुका व ध उदयसे पूर्व या पश्चात् व्युच्छिन्न होता है, यह विचार यहाँ नहीं  
 है, क्योंकि, सत् (बन्ध) और अमत् (उदय) की तुलनाका विरोध है । परोदय बन्ध होता है,  
 क्योंकि, धैर्यविक्रमययोगमें मनुष्यायुके उदयका विरोध है । निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि,  
 एक समयसे इसके बधविधामका अभाव है । मिथ्यादृष्टि, सासणसम्यग्दृष्टि और असयत-

परोदधो । मामणे परोदधो, देवगदीए तिस्रे उदधामात्रादो ।

पचणाणावरणीय छदसणावरणीय वारसकृमाय भय दुमुळा ओरालिय तेजा कृम्मइयमरीर-  
वण्ण गध रस-फाम अगुरुअलहुअ- उपघाद परघाट्मसाम नादर-पज्जत पत्तेममरीर-णिमिण  
पचतराडयाण गिरतरो वधो, एत्थ धुपनधितादो । सादासाद-हरस-रदि-[अरदि-] सोम-धिराधिर-  
सुहासुह-जमकित्ति अजमकित्तीण सातरो वधो, एगसमएण वधुपरमदसणादो । पुरिमवेद-समचउ-  
रससठाण वज्जरिमहमवटण पम-यविहायगइ सुभग-सुस्वर ओदेज्जुन्चागोदाण मिच्छाइडि-  
सासणसम्मादिद्वीसु वधो सातरो । अमज्जदसम्मादिद्वीसु गिरतरो, पडिवज्जपयडीण वधा  
भावादो । पचिदियजादि-आरालियसरीरअगोवग तसणामाण मिच्छाइडिअदि सातर गिरतरो ।  
कध गिरतरो ? ण, सणस्कृमारदिदेवेषु णेरइएमु च गिरतरवधुवलभादो । सासणसम्मादिद्वि-  
अमज्जदसम्मादिद्वीसु गिरतरो, पडिवज्जपयटीण वधाभावादो । मणुमगइ-मणुसाणुपु णीण

है । सासादन गुणस्थानमें परोदध वन्ध होता है, क्योंकि, देवगतिमें उसके उदधका  
अभाव है ।

पाच ज्ञानावरणीय, छह दशनावरणीय, राह वपाय, भय, जुगुप्सा, औदारिक,  
तैजस व कार्मण शरीर, वण, गन्ध रस, स्पदा, अगुरुलघु, उपघात, परघात उच्छ्वास,  
वाहर, पयाप्त, प्रत्येकशरीर, निर्माण और पाच अन्तराय, इनका निरन्तर वन्ध होता है,  
क्योंकि, यहा य भ्रुचरन्धी हैं । साता व असाता वेदनीय, हास्य, रति, [अरति], शोक, स्थिर,  
अस्थिर, शुभ, अशुभ, यशकीर्ति और अयशकीर्तिका सातर वन्ध होता है, क्योंकि, एक  
समयसे इनका वन्धविगम देखा जाता है । पुरुषवद समचतुरस्रसन्धान, वज्रर्यम  
सहनन, प्रशस्तविहायोगति, सुभग, सुस्वर, आदेय और उच्छगोत्र, इनका मिध्याहाष्टि  
और सासादनसम्यग्दष्टि गुणस्थानोंमें सातर वन्ध होता है । असपतसम्यग्दष्टियोंमें  
निरन्तर वन्ध होता है, क्योंकि, यहा प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके वन्धका अभाव है । पचेन्द्रिय  
ज्ञानि, औदारिकशरीरागोपाग और अस नामकर्मका मिध्याहाष्टि गुणस्थानमें सातर  
निरन्तर वन्ध होता है ।

शुका—निरन्तर वन्ध कैसे होता है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि सनत्कृमारदि देवों और नारतियोंमें उनका निरन्तर  
वन्ध पाया जाता है ।

सासादनसम्यग्दष्टि और असपतसम्यग्दष्टि गुणस्थानोंमें निरन्तर वन्ध होता है  
क्योंकि, यहा प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके वन्धका अभाव है । मनुष्यगति और मनुष्यगति

'मिच्छाङ्घ्रि-सासणमम्मादिट्ठीसु' मातर-णिरतरो । क्ख णिरतरो ? ण, आणदादिदेवेषु णिरतरेव बुज्जभादो । असजदसम्मादिट्ठीसु णिरतरो, पडिक्खपयडीण धधाभावादो ।

मिच्छाङ्घ्रिस्म तेदालीम पच्चया, ओघपच्चएसु चट्टमण-चच्चि-कायजोगपच्चयाणम-मावादो । सामणस्म मत्तत्तीसुत्तरपच्चया, मिच्छाङ्घ्रिपच्चएसु पचमिच्छत्त णवुसयवेदाणमभावादो । अमजदसम्मादिट्ठीसु तेत्तीस पच्चया, मिच्छाङ्घ्रिपच्चएसु पचमिच्छत्ताणताणुपविचउत्तिकत्थि-वेदाणमभावादो । सेस सुगम ।

मणुसगइ-मणुसाणुपुत्वी-उच्चागोदाण मणुसगइसजुत्तो, अवसेसाण पयडीणं धधो मिच्छाङ्घ्रि-सासणसम्मादिट्ठीसु तिरिक्ख मणुसगइसजुत्तो, असजदसम्मादिट्ठीसु मणुसगइसजुत्तो । मिच्छाङ्घ्रि अमजदसम्मादिट्ठीणो देव णेरइया सामी । सामणमम्मादिट्ठीणो देवा चेव सामी ।

प्रायोग्यानुपूर्विका मिथ्यादृष्टि ओग सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें सान्तर निरन्तर बन्ध होता है ।

शुद्धा—निरन्तर त्रय केसे होता है ।

समाधान—तहाँ, क्योंकि, आनतादिक देवोंमें उनका निरन्तर बन्ध पाया जाता है ।

असयतसम्यग्दृष्टियोंमें निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, यहा प्रतिपक्ष प्रवृत्तियोंके बन्धका अभाव है ।

मिथ्यादृष्टिके तेतालीस प्रत्यय होते ह, क्योंकि, ओघप्रत्ययोंमें यहा चार मनोयोग, चार त्रचनयोग और चार नाथयोग प्रत्ययोंका अभाव है । सासादनसम्यग्दृष्टिके सतीस उत्तर प्रत्यय होते हैं, क्योंकि, मिथ्यादृष्टिके प्रत्ययोंमेंसे यहा पाच मिथ्यात्व और नपुसकपेदका अभाव है । अन्यतसम्यग्दृष्टियोंमें तेतीस प्रत्यय होते ह, क्योंकि, मिथ्यादृष्टिके प्रत्ययोंमेंसे यहा पाच मिथ्यात्व, अनतानुबन्धिचतुष्क आर खीवेद प्रत्ययोंका अभाव है । शेष प्रत्ययप्ररूपण सुगम है ।

मनुष्यगति, मनुष्यानुपूर्वों और उच्चगोत्रका बन्ध मनुष्यगतिके संयुक्त, तथा शेष प्रकृतियोंका त्रन्ध मिथ्यादृष्टि एव सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानामें तिर्यग्गति व मनुष्यगतिके संयुक्त, और असयतसम्यग्दृष्टियोंमें मनुष्यगतिके संयुक्त होता है । मिथ्यादृष्टि और असयतसम्यग्दृष्टि देव व नारकी स्वामी ह । सासादनसम्यग्दृष्टि देव ही स्वामी है । बन्धा



वेद हुडमठाणाणः पुत्र वधो पत्र उदओ वोच्छिञ्जदि, मिच्छाइद्वि-अमज्जदमम्मादिद्वीसु क्रमेण वधोदयवोच्छेददसणादो । अत्रमेसासु एसो विचरो णत्थि, वधस्मेकस्सेन दसणादो ।

मिच्छत्तस्स सोदण्ण, णनुमयेद-हुडमठाणाण सोदय परोदण्ण, अत्रसेसाण परोदण्ण वधो । मिच्छत्तस्स गिरत्तरो । अत्रमेसाण पयडीण सात्तरो, वधमद्दाणयसग्गाणियमाणुवठभादो । पच्चया सुगमा । णपरि एड्दिय आदाय धारणाण णनुमयेदपच्चओ णत्थि ति दुग्गममेय समरोदव्व । एड्दियजादि-आदाय धारणाणि निरिस्सग्गइमज्जुत्त, मेमाओ निरिक्ख मणुमगइसज्जुत्त वज्जति । एड्दिय आदाय धारणाण देवा सामी । सेसाण देव गेग्इया । वधद्वान्ण वधविण्डुट्टाण च सुगम । मिच्छत्तस्म वधो चउत्तिहो । सेसाण सादि-अद्दुवो ।

तित्थयरस्स वधोदयवोच्छेदविचारो णत्थि, वधअइत्तिकयादो । परोदओ वधो, सनोभिभडारय भोत्तूण तित्थयरस्सण्णत्थुदयाभाजादो । गिरत्तरो वधो, एग्गमएण वधुवरमा-

धे दोनों पाये नहीं जाने । नपुंसकपेद और हुण्डसस्थानका पूर्वमें वध आर पश्चात् उदय घुच्छिञ्ज होता है, क्योंकि, मिथ्यादृष्टि और असत्यतत्सम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें क्रमसे उनके वध और उदयका व्युच्छेद देखा जाता है । शेष प्रकृतियोंमें यह विचार नहीं है, क्योंकि, उनका केवल एक वध ही देखा जाता है ।

मिथ्यात्वका स्त्रोदयसे नपुंसकपेद व हुण्डसस्थानका स्त्रोदय परोदयसे, तथा शेष प्रकृतियोंका परोदयसे उदय होता है । मिथ्यात्वका निरन्तर उदय होता है । शेष प्रकृतियोंका सात्तर वध होता है, क्योंकि उदयकालमें उनकी संख्याका नियम पाया नहीं जाना । प्रत्यय सुगम हैं । विशेष इतना है कि एकद्वियजाति, अताप और स्थावरका नपुंसकपेद प्रत्यय नहीं है, इस दुगम वातना स्मरण रखना चाहिये । एकद्वियजाति, अताप और स्थावर प्रकृतिया तिर्यग्गतिसे संयुक्त आर शेष प्रकृतिया तिर्यग्गति व मनुष्यगतिसे संयुक्त वधती हैं । एकद्वियजाति, अताप और स्थावर प्रकृतियोंके देव स्वामी हैं । शेष प्रकृतियोंके देव व नारकी स्वामी हैं । अध्यायान और वन्धविनष्टस्थान सुगम हैं । मिथ्यात्वका वध चारों प्रकारका होता है । शेष प्रकृतियोंका सादि व अधुव वध होता है ।

तीर्थंकर प्रकृतिके वध व उदयके व्युच्छेदका विचार नहीं है, क्योंकि, उसका एक वध ही होता है । परोदय वध होता है, क्योंकि, संयोगी भट्टारकको छोड़कर अन्यत्र तीर्थंकर प्रकृतिके उदयका अभाव है । निरन्तर वध होता है, क्योंकि, एक समयसे

मानादो । पञ्चया सुगमा । मणुसगडमजुतो वधो । देव-णेरइयअसजदसम्मादिंठी सामी ।  
वधद्धाण वधनिणद्धाण च सुगम । मादि-अद्धुओ नधो । पयडिअधगयविसेसपरूणणइमुत्तर-  
मुत्त भणदि—

णवरि विसेसो वेट्टाणियासु तिरिक्खाउअं णत्थि मणुस्साउअं  
णत्थि ॥ १५६ ॥

कुदो ? देव णेइयाणमपज्जत्तद्धाए आउववधविरोहादो ।

आहारकायजोगि-आहारमिस्सकायजोगीसु पंचणाणावरणीय-  
छदंसणावरणीय-सादासाद-चदुसजलण-पुरिसवेद-हस्स-रदि-अरदि-  
सोग-भय दुगंछा देवाउ-देवगइ-पंचिदियजादि-वेउव्विय-तेजा-कम्मइय-  
सरीर-समचउरससठाण वेउव्वियसरीरअगोवंग-वण्ण-गंध रस फास-देव-  
गइपाओग्गाणुपुव्वी-अगुरुवल्लहुव-उवघाद-परघाटुस्सास-पसत्थविहाय-  
गइ तस-चादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-थिराथिर-सुहासुह-सुभग सुस्सर-  
आदेज-जसकित्ति-अजसकित्ति-णिमिण-तित्थयर-उच्चागोद-पंचंत-  
राइयाण को वंधो को अवधो ? ॥ १५७ ॥

वन्धविश्रामका अभाव हे । प्रत्यय सुगम ह । मनुष्यगतिसे सयुक्त वन्ध होता हे । देव व  
नारकी असयतसम्यग्दृष्टि स्वामी ह । ग्रन्थाध्यान ओर वन्धविनष्टस्थान सुगम ह । सादि व  
अधुव वन्ध होता हे । प्रकृतिवन्धगत विशेषके प्ररूपणार्थ उत्तर सूत्र कहते हैं—

निशेपता केवल इतनी है कि द्विस्थानिक प्रकृतियोंमें तिर्यगायु नहीं है और मनुष्यायु  
नहीं है ॥ १५६ ॥

इसका कारण यह है कि देव व नारकियोंके अपर्याप्तकालमें आयुग्रन्थका विरोध हे ।

आहारकाययोगी और आहारमिश्रकाययोगियोंमें पाच ज्ञानावरणीय, छह दर्शनावरणीय,  
साता व असाता वेदनीय, चार सज्जलन, पुरुषोद, हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा,  
देवासु, देवगति, पचेन्द्रियजाति, वैक्रियिक, तैजस व कार्मण शरीर, समचतुरस्रसस्थान,  
वैक्रियिकशरीरागोपाग, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, देवगतिप्रायोग्यानुपूर्ति, अगुरुलघु, उपघात,  
परघात, उच्छ्वास, प्रशस्तविहायोगति, तस, वादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, स्थिर, अस्थिर,  
शुभ, अशुभ, सुभग, सुस्वर, आदेय, यशकीर्ति, अयशकीर्ति, निर्माण, तीर्थकर, उच्चगोत्र  
और पाच अन्तराय, इनका कौन वन्धक और कौन अवन्धक है ? ॥ १५७ ॥

सुगम ।

पमत्तसजदा वधा । एदे वधा, अवंधा णत्थि ॥ १५८ ॥

एदस्सत्थो उच्चदे — एत्थ वधो उदओ वा पुत्थ वोच्चिण्णो ति रिचात्त णत्थि,  
एक्कगुणद्वान्नि पुच्चावरभावाभावादो । पचणाणावरणीय चउदसणानरणीय पुत्थिरेद-  
पचिदियजादि-तेजा-कम्मइयसरीर-समचउरससठाण-उण्णचउत्तक-अगुरुवलहुवचउत्त-पत्त-  
विहयपइ-त्तसचउत्त-थिराधिर-सुहासुह-सुभग-सुस्सर ओदेज्ज-जसकित्ति-णिमिष-उच्चगोप-  
पचतरादयाण सोदओ वधो । णिहा-पयला सादाभाद-चदुसजलण-छण्णोरुमायाण सोदप-पोदज  
वधो, उभयथावि वधविरोहाभावादो । देवाउ-देवगइ-वेउच्चियसरीर वेउच्चियसरीरगोण  
देवगइपाओग्गाणुपुत्ति अजसकित्ति तित्थयगण परोदओ वधो, आहारकायजोगीसु एदामिसुदह  
विरोहादो ।

पचणाणावरणीय-छदसणावरणीय-चदुसजलण-पुग्गिमेद भय इगुत्ता देवाउ-देवगइ-  
पचिदियजादि वेउच्चिय तेजा कम्मइयसरीर समचउरससठाण-वेउच्चियसरीर-अगोण-उण्णचउत्त  
देवगइपाओग्गाणुपुत्ति-अगुरुवलहुवचउत्त-पत्त-विहायगइ तमचउत्त-सुभग सुस्सर ओदेज्ज

यह सूत्र सुगम है ।

प्रमत्तमयत वधक है । ये वधक हैं, अनधक नहीं हैं ॥ १५८ ॥

इस सूत्रका अर्थ कहते हैं— वधा वध पूर्वमें उच्चिष्ठ होता है या उदय, वद  
विचार नहीं है, कथञ्चि, एक गुणस्थानम पूर्वापरभावात् अभावा होता है । पाच  
भानावरणीय, चार दशनावरणीय, पुण्यवेद, पचन्द्रियजाति, तैजस व कामण शरीर,  
समचतुरस्रस्थान, घणदिक चार, अगुरुल्लु आदि चार प्रशस्तविहायोगनि, प्रसादिक  
चार, स्थिर, अस्थिर, शुभ अशुभ सुभग सुस्वर, आदेय, यदाकर्तित्ति, निर्माण, उच्चगोप  
और पाच उत्तराय, इनका स्त्रोदय वध होता है । निद्रा, प्रचला, साता व असाता वेदनीय,  
चार सज्जलन और छह सौ कपायोंका स्त्रोदय परोदय उच्च होता है, कथोंकि, दोसौ ही  
प्रकारसे वध होलेमें कोई विरोध नहा है । देवापु, देवगति, वैत्रियिकशरीर, घेनियिक  
शरीरारोगोपाय, देवगतिप्रयोगानुपूर्वी, अयशकीति और तीर्थररका परोदय वन्ध होता  
है, कथोंकि, आहारकावयोगिधोंमें इतक उचयका विरोध है ।

पाच भानावरणीय, छह दशनावरणीय, चार सज्जलन, पुण्यवेद, भय, इगुत्ता,  
देवापु, देवगति, पूर्वा-द्रयजाति वैत्रियिक, तैजस व कामण शरीर, समचतुरस्रस्थान,  
वैत्रियिकशरीरारोगोपाय, घणदिक चार, देवगतिप्रयोगानुपूर्वी, अगुरुल्लु आदिक चार,  
। प्रशस्तविहायोगनि, प्रसादिक चार, सुभग, सुस्वर, आदेय, निर्माण, ताधरर, उच्चगोप

णिमिण तित्थयर-उच्चगोद-पचतराइयाण-णिरतरो धधो, एगसमएण वधुवरमाभावादो । सादासाद-हस्म-रदि-अरदि-सोग-धिराथिर सुहासुह-जमकित्ति अजसकितीण सातरो धधो, एगममएण वधुवरमदमणादो ।

चदुसजलण पुरिसनेद हस्म रदि-अरदि-सोग-भय-दुगुळा-आहारकायजोगेहि वारस-पच्चएहि एदाओ पयडीओ वज्जति । सेम सुगम । एदासिं धधो देवगदिसच्छतो । मणुसा सामी । वणद्धाण सुगम । वधनेच्छेदो णत्थि । धुपणपयडीण तिविहो धधो, धुवाभावादो । अणमेमाण सादि-अद्धो ।

एगमाहारमिस्सकायजोगीण पि वत्त न । णरि परघादुस्सास-पसत्थीविहायगड-दुस्सराण परोदधो वधो । पुव्वमोरालियसरीरस्स उदए सत्ते एदासिं सतोदयाण कधमेत्थ अकारणेण उदयनेच्छेदो होज्ज ? ण, ओरालियसरीरोदएणोदइल्लाण तदुदयाभावेणोदासिमुदया-भाणस्स णाइयत्तादो । पच्चएसु आहारकायजोगमण्णेदूण आहारमिस्सकायजोगो पक्खिण्णिदच्चो । एत्तिओ चैव भेदो, णत्थि अण्णत्थ क व पि ।

और पांच अन्तराय, इनका निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, एक समयसे इनके बन्ध विध्रामका अभाव है । साता न असाता वेदनीय, हास्य, रति, अरति, शोक, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, यशकीर्ति और अयशकीर्तिका सान्तर बन्ध होता है, क्योंकि, एक समयसे इनका बन्धविध्राम देखा जाता है ।

ये प्रकृतियां चार सज्वलन, पुरुषोत्तम, हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा और आहारकाययोग, इन गारह प्रत्ययान्ते पधती ह । शेष प्रत्ययप्ररूपण सुगम है । इनका बन्ध देवगतिसे सयुक्त होता है । मनुष्य स्वामी ह । बन्धाध्यान सुगम है । बन्धव्युत्प्रेद नहीं है । ध्रुवप्रकृतियोंका तीन प्रकारका बन्ध होता है, क्योंकि, ध्रुवबन्धका अभाव है । शेष प्रकृतियोंका सादि न अधुव बन्ध होता है ।

इसी प्रकार आहारमिश्रकाययोगियोंके भी रहना चाहिये । विशेषता केवल इतनी है कि इनके परात, उच्छ्रान्त, प्रशस्तविहायोगति और दुम्बरका परोदय बन्ध होता है ।

शका—चूकि पूर्वमें औदारिकशरीरके उदयके होनेपर इनका उदय या, अतएव अथ यहा उनका निष्कारण उदय युत्प्रेद क्यों हो जाता है ?

समाधान—ऐसा नहीं है, क्योंकि, औदारिकशरीरके उदयके साथ उदयको प्राप्त होनेवाली इन प्रकृतियोंका उसक उदयका अभाव होनेसे उदयाभाव न्याययुक्त है ।

प्रत्ययोंमें आहारकाययोगको कम करके आहारमिश्रकाययोगको जोड़ना चाहिये । केवल इतना ही भेद है, और कहीं कुछ भेद नहीं है ।

कम्मइयकायजोगीसु पचनाणावरणीय छदंसणावरणीय-असादा-  
वेदणीय-वारसकसाय-पुरिसवेद हस्स-रदि-अरदि-सोग-भय दुगुठा  
मणुसगइ पंचिंदियजादि-ओरालिय तेजा-कम्मइयसरीर-समचउरस-  
संठाण ओरालियसरीरअंगोवग-वज्जरिसहसंघडण-वण्ण गध रस फास  
मणुसगइपाओग्गाणुपुब्बी अगुरुवलहुव-उवघाद परघादुस्सास-पसत्थ-  
विहायगइ-तस वादर-पज्जत्त पत्तेयसरीर-थिराथिर-सुहासुह-सुभग-  
सुस्सर-आदेज्ज-जसकित्ति-अजसकित्ति-णिमिणुच्चागोद-पचतराइयाण  
को वधो को अवधो ? ॥ १५९ ॥

सुगम ।

मिच्छाइट्ठी सामणसम्माइट्ठी असजदसम्माइट्ठी वधा । एदे वंधा,  
अवसेसा अवंधा ॥ १६० ॥

एदस्सत्थो वुच्चंद— एत्थ वयो उदओ वा पुच्च वोच्छिण्णो ति णत्थि विचारो,  
एत्थ ओरालियदुग समचउरससंठाण वज्जरिसहसंघडण उवघाद परघादुस्साम पसत्थविहायगइ

कार्मणकाययोगियोम पाच ज्ञानावरणीय, छह दर्शनावरणीय, असातवेदनीय,  
नारह क्पाय, पुरुषवेद, हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, मनुष्यगति, पचेन्द्रियजाति,  
औदारिक, तेजस न कार्मण शरीर, समचतुरस्रसंस्थान, औदारिकशरीरागोपाग, वज्रपभसहनन,  
वण, गन्ध, रस, स्पर्श, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्णा, अगुरुलसु, उपघात, परघात, उच्छ्वास,  
प्रशस्तनिद्रायोगति, तस, वादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुभग,  
सुस्वर, आदेय, यशकीर्ति, अयशकीर्ति, निर्माण, उच्चगोन और पाच अन्तराय, इनका कौन  
बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ १५९ ॥

यह सन सुगम है ।

मिथ्यादृष्टि, सामादनसम्यग्दृष्टि और अमयतसम्यग्दृष्टि बन्धक है । ये बन्धक हैं,  
ये अवबन्धक हैं ॥ १६० ॥

इसका बन्ध कहने हैं— यहा बन्ध या उदय पूर्वमे व्युच्छिन्न होता है, यह विचार  
है, क्योंकि, यहा औदारिकद्विक, समचतुरस्रसंस्थान, वज्रपभसहनन, उपघात,

पत्तियसरीर-सुस्तराणमयतेण उदयाभावादो, सेसाणमुदयमभवाद्दो च । पचणाणावरणीय-  
चउदमणावरणीय-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्णचउत्त-अगुरुवलहुअ-थिराथिर-सुहासुह-णिमिण-  
पचतराइयाण सोदओ वधो, एत्थतणम-गुणट्ठाणेषु णियमेणुदयदसणादो । णिद्वा-पयला-  
अमाणावेदणीय नारसकसाय-हस्स रदि-अरदि-सोग-भय दुगुअ-पुरिमोद-सुभगादेज्ज-जसकित्ति-  
उच्चागोदाण सोदय-परोदओ वधो । मणुमगइ-मणुमगइपाओगणाणुपुव्वीण मिच्चाइडि-  
सासणसम्मादिट्ठीसु सोदय-परोदओ वधो, उभयथा वि वधविरोहाभावादो । असजदसम्मादिट्ठीसु  
परोदओ, मणुस्सअसजदमम्मादिट्ठीण मणुउदुगस्स वधविरोहादो । पच्चिदिय-तम-नादर-पजत्ताण  
मिच्चाइडिभिह सोदय-परोदओ वधो, पडिवरुदुदयसभवादो । सासणसम्मादिट्ठी-असजद-  
सम्मादिट्ठीसु सोदओ, विगलिदिएसु एदेसि दोण्ण गुणट्ठाणण अभावादो । ओरालियसरीर-  
समचउरससठाण-ओरालियसरीर-अगोवग-वज्जरिमहमघडण-उत्तघाद-परघाद-उत्सास-पसत्थ-  
विहायगइ-पत्तियसरीर-सुस्तराण परोदओ वधो, विग्गहगदीए एदासिमुदयाभावादो ।

पचणाणावरणीय-उदसणावरणीय नारसकसाय भय-दुगुअ-ओरालिय-तेजा-कम्मइय-  
सरीर-वण्ण गध रस-फास-अगुरुवलहुअ उत्तघाद-णिमिण पचतराइयाण णिरतरो वधो, एत्थ

परघात, उच्छ्वास, प्रशस्तत्रिहायोगति, प्रत्येकशरीर ओर सुस्तरका नियमसे उदयाभावा  
है, तथा शेष प्रकृतियोंके उदयकी सम्भावना है । पाच क्षानावरणीय, चार दर्शनावरणीय,  
तैजस व कामेण शरीर, वर्णादिक चार, अगुरुलघु, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, निर्माण  
और पाच अन्तरायका स्त्रोदय वन्ध होता है, क्योंकि, यहा सध गुणस्थानोंमें इनका  
नियमसे उदय देखा जाता है । निद्रा, प्रचला, असातवेदनीय नारह कपाय, हास्य, रति,  
अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, पुण्यप्रेद, सुभग, आदेय, यशकीर्ति और उच्चगोत्रका,  
स्त्रोदय परोदय वन्ध होता है । मनुष्यगति व मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वीका मिथ्यादृष्टि  
और सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें स्त्रोदय परोदय वन्ध होता है, क्योंकि, दोनों प्रकारसे  
ही वन्ध होनेमें कोई विरोध नहीं है । असयतसम्यग्दृष्टियोंमें परोदय वन्ध होता है, क्योंकि,  
मनुष्य असयतसम्यग्दृष्टियोंके मनुष्यद्विके वन्धका विरोध है । पचेन्द्रियजाति, व्रस,  
यादर और पयाप्तका मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें स्त्रोदय परोदय वन्ध होता है, क्योंकि,  
यहा प्रतिपक्ष प्रकृतियोंका उदय सम्भव है । सासादनसम्यग्दृष्टि और असयतसम्यग्दृष्टियोंमें  
स्त्रोदय वन्ध होता है, क्योंकि, त्रिकलदृष्टियोंमें इन दोनों गुणस्थानोंका अभाव है ।  
औदारिकशरीर, समचतुर्भ्रसस्थान, औदारिकशरीरामोपाग, वज्रपंभसहनन, उपघात,  
परघात, उच्छ्वास, प्रशस्तत्रिहायोगति, प्रत्येकशरीर ओर सुस्तरका परोदय वन्ध होता  
है, क्योंकि, विग्रहगतिमें इनके उदयका अभाव है ।

पाच क्षानावरणीय, छह दर्शनावरणीय, चारह कपाय, भय, जुगुप्सा, औदारिक,  
तैजस व कामेण शरीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, उपघात, निर्माण और पाच

धुनवधितादो । असादावेदणीय हस्व-भदि-अदि-सोम विराथिर-सुहासुह जमकिति अजमकित्तीण सातरो वधो, एगममण्य ननुनरमदसणादो । पुरिमवेद ममचउरससठाण-वञ्जरिसहमपहण-पसत्यविहायगद मुम्पर सुभगादेञ्ज उच्चमोदाण मिञ्छाद्वि-मामणेसु सातरो वधो । असपद-सम्मादिद्वीसु गिरस्तरो, पडिनरुप्रत्यडीण वराभावाणे । [ मणुसगड- ] मणुमगडपाओग्गाणु पुत्रीण मिञ्छाद्वि मासणेसु नवो मात्र गिरतरो । क्व गिरतरा ? ण, आणदादिदेवेहितो निग्गहगदीए मणुमेसुप्पण्णाण' मणुमगददुगम्म गिग्गरवधुवलमादो । असजदमम्मादिद्वीसु गिरतरो वधो, निग्गहगदीए मणुपदुगन-पाओग्गमम्मादिद्वीणमण्णगददुगम्म वधाभावादो । पचिदिय-ओराठियमरीर-ओग-तम नादर प-नत्त परघादुस्मास पत्तेपमरीराण वधो मिञ्छाद्वीसु सातर गिरतरो । क्व गिरतरो ? ण, मणरुकुमागदिदेव णेरइण्हितो तिरिस्स मणुस्मेसुप्पण्णाण

अतराय, इनका निरन्तर व व होता है, क्योंकि, यहाँ ये धुनव-जी प्रकृतियाँ हैं। असाता वेदनीय, हास्य, रति, जरति, शोरु, स्थिर, अस्थिर शुभ, अशुभ, यशक्रीति और अयशक्रीति का साम्तर वध होता है, क्योंकि, एक समयसे इनका धन्वविधाम देखा जाता है। पुनपेद, समचतुरस्रसम्भान, चक्रपभमहनन, प्रशस्तविहायोगति, सुस्वर, सुभग, आदेय और उच्चगोत्रना मिथ्यादृष्टि व सासादनसम्यग्दृष्टियोंमें सातर धन्व होता है। अमयतसम्यग्दृष्टियोंमें निरन्तर वध होता है, क्योंकि, यहाँ उनका प्रतिपन्न प्रकृतियाँके वधका अभाव है। [ मनुष्यगति ] और मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वाभा मिथ्यादृष्टि व सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थायोंमें सातर निरन्तर वध होता है।

शुक्रा—निरन्तर वध केस होता है ?

समाधान— नहीं, क्योंकि जानतादिक दशमने मनुष्यामें उत्पन्न हुए जीवोंके निग्रहगतिमें मनुष्यगतिद्विस्वा निरन्तर वध पाया जाता है।

असयतसम्यग्दृष्टियाम निरन्तर वध होता है, क्योंकि निग्रहगतिम मनुष्यद्विस्वके वधके योग्य सम्यग्दृष्टियों व य दो सतियोंके धन्वका अभाव है। पचेन्द्रियजानि और शरिक्शरीरगोपाय, पल, सादर, पयात्र, परघात, उच्छृंगार और प्रत्येकशरारका वध मिथ्यादृष्टियोंमें सातर निरन्तर होता है।

शुक्रा—निरन्तर वध कैसे होता है ?

समाधान— नहीं, क्योंकि, तन-तुमत्तादि वध व नारणियोंमेंसे त्रियेचों व

१ अत्रि मनुष्यगत्या इति पाठ ।

गिरतरवदुपलमादो । सामणसम्मादिट्ठि-असजदसम्मादिट्ठीमु गिरतरो, तत्थ पडिवत्थपयडीणं वधाभापादो ।

मिच्छाइट्ठीसु तेदालीसुत्तरपच्चया, ओवपच्चयामु कम्मइयत्तायजोग मोत्तूण सेस-धारमजोगपच्चयाणमभापादो । तत्थ पचमिच्छतेसु अणिदेसु अट्ठत्तीम सासणसम्मादिट्ठि-पच्चया । तत्थ अणताणुअधिचउत्तिकत्थिअदेसु अणिदेसु तेत्तीम असजदसम्मादिट्ठिपच्चया हेंति । सेम सुगम ।

पचणाणापरणीय-छदसणापरणीय-अमादावेदणीय-पारसकमाय-पुरिसवेद-हम्मस रदि-अरादि-सोग-मय दुगुछा-परिचिदियजादि तेजा कम्मइयसरीर-समचउरसमठाण-वण्ण-गण-रस-फास अगुसुलहुअ-उवघाद-परघाद-उस्मास-पमत्थविहायगउ-त्तस-तादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर थिरायिर-सुहासुट-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-जसकित्ति-अजसकित्ति-णिमिण पचतराडयाण मिच्छाइट्ठी सामणो च तिरिस्स-मणुमगइमजुत्त, एदेसिमपज्जत्तकाले गिरय देवगईण वधाभापादो । असजद-सम्मादिट्ठिणो देव मणुमगइमजुत्त ववति, तेमिं गिरय-तिरिस्सगईण वधाभापादो । मणुसगइ-

मनुष्योंमें उत्पन्न हुए जीवोंके निरंतर बन्ध पाया जाता है ।

सासादनसम्यग्दृष्टि और असयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें निरंतर बन्ध होता है, क्योंकि, वहां प्रतिपक्ष प्रवृत्तियोंके उत्पन्न अभाव है ।

मिथ्यादृष्टियोंमें तेजालीस उत्तर प्रत्यय होते हैं क्योंकि, ओवप्रत्ययोंमें कामण काययोगको छोड़कर शेष पारह योगप्रत्ययोंका अभाव है । उनमेंसे पाच मिथ्यात्वोंको कम करनेपर अट्ठीस सासादनसम्यग्दृष्टियोंके प्रत्यय होते हैं । उनमेंसे अनन्तानुबन्धि चतुष्प और स्त्रीवेदको कम करनेपर तेजालीस असयतसम्यग्दृष्टियोंके प्रत्यय होते हैं । शेष प्ररूपण सुगम है ।

पाच ज्ञानापरणीय, छह दर्शनापरणीय, असातावेदनीय, पारह कपाय, पुरपवेद, हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, पचेन्द्रियजाति, तजस व कामण शरीर, समचतुरस्रसस्थान, वण, गण, रस, सरी, अगुल्लघु, उपघान, परघात, उच्छ्वास, प्रदास्तविहायोगति, जम, तादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुभग, सुस्सर, आदेय, यदाकीति, यवदाकीति, निर्माण और पाच धन्तरायजो मिथ्यादृष्टि व सासादनसम्यग्दृष्टि तिर्यग्गति एव मनुष्यगतिसे मयुक्त बाधते हैं, क्योंकि, इनके अपयत्नकालमें नरक व देव गतियोंके बन्धका अभाव है । असयतसम्यग्दृष्टि देवगति व मनुष्यगतिस मयुक्त बाधते हैं, क्योंकि, उनके नरकगति और तिर्यग्गतिके उत्पन्न अभाव



मणुसगइपाओग्गाणुपुञ्चीओ सपे मणुसगइसजुत्त वधति, सामानियादो । ओरालियसरीर ओरालियसरीरअगोत्रग उज्जरिसहमउडणाणि मिन्डादिद्वि-सामणसम्मादिद्विणो तिरिक्क मणुस गइमजुत्त, अमजदसम्मादिद्विणो मणुसगइसजुत्त वधति, एदामिमण्णगईहि मह विरोहादो । उच्चामोद मिच्छादिद्वि मासणसम्मादिद्विणो मणुसगइमजुत्तमेदेसिमपज्जतकाले उच्चामोदा विणामानिदेउगईए वधाभावादो । असजदसम्मादिद्विणो देउ मणुसगइसजुत्त वधति, तम्मु भयत्थ वधमभवदसणानो ।

मणुसगइ मणुसगइपाओग्गाणुपुञ्ची ओरालियसरीर ओरालियसरीरअगोत्रग-उज्जरिसह-सघडणाण चउगइमिच्छादिद्वि निगइसासणसम्मादिद्वि-देवणेरइयअमजदसम्माइद्विणो सामी । अवसेसाण पयडीण चउगइमिच्छादिद्वि-अमजदसम्माइद्विणो तिगइसामणसम्माइद्विणो च सामी । वधद्वान सुगम । एदेमिमेथ वधविणामो णत्थि । पचणाणाउरणीय-उदसणाउरणीय वारम-कमाय-भय दुगुछात्तेजा-कम्मइयसरीर उण्णचउत्तक-अगुरुअलहुअ-उवघाद णिमिण-पंचतराइ-याण मिच्छादिद्विहि चउत्तिहो वधो । अण्णत्थ तिनिहो, धुवउधाभावादो । अवसेसाण पयडीण वधो सत्तथ सादि-अद्धुओ, अद्धुववधिचादो ।

है। मनुष्यगति और मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वोंके सत्र मनुष्यगतिसे सयुक्त बाधते हैं, क्योंकि, ऐसा स्वाभाविक है । आदारिकशरीर, औदारिकशरीरागोपाग और चर्जर्यभसहननके मिथ्यादष्टि और सासादनसम्यग्दष्टि नियमगति व मनुष्यगतिसे सयुक्त तथा असयत सम्यग्दष्टि मनुष्यगतिसे सयुक्त बाधते हैं, क्योंकि, इनका अर्थ गतियोंके साथ विरोध है । उच्चगोत्रके मिथ्यादष्टि और सासादनसम्यग्दष्टि मनुष्यगतिसे सयुक्त बाधते हैं, क्योंकि, इनका अर्थात्तकालमें उच्चगोत्रकी अग्निभाविनी देवगतिसे बन्धका अभाव है । असयतसम्यग्दष्टि देव व मनुष्य गतिसे सयुक्त बाधते हैं, क्योंकि, उच्चगोत्रके बन्धकी सम्भावना उक्त दोनों गतियोंके साथ देखी जाती है ।

मनुष्यगति, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वों, आदारिकशरीर, औदारिकशरीरागोपाग और चर्जर्यभसहननके चारों गतियोंके मिथ्यादष्टि, तीन गतियोंके सासादनसम्यग्दष्टि, तथा देव व नारकी असयतसम्यग्दष्टि स्वामी है । शेष प्रकृतियोंके चारों गतियोंके मिथ्यादष्टि व असयतसम्यग्दष्टि, तथा तीन गतियोंके सासादनसम्यग्दष्टि स्वामी हैं । अर्थात्त सुगम है । इनका यहा उध्विनाश नहीं है ।

पाच ज्ञानाउरणीय, छह दर्शनाउरणीय, गारह कपाय, भय, जुगुप्सा, तेजस व कामल शरीर, वणादिक् चार, अगुरुलघु, उपघात, निर्माण और पाच अन्तरायका मिथ्यादष्टि गुणस्थानमें चारों प्रकारका बन्ध होता है । अथवा तीन प्रकारका व ध होता है, क्योंकि, वहा धुवउधका अभाव है । शेष प्रकृतियोंका बन्ध सर्वत्र आदि व अधुव है, क्योंकि, व अधुवकी है ।

णिद्वाणिद्वा पयलापयला-थीणगिद्धि-अणंताणुबंधिकोध-माण-  
माया लोभ-इत्थिवेद-तिरिक्खगइ चउसंठाण चउसंघडण-तिरिक्खगइ-  
पाओग्गाणुपुब्बि-उज्जोव अप्पसत्थविहायगइ-दुभग-दुस्सर-अणादेज्ज-  
णीचागोदाणं को बंधो को अवधो ? ॥ १६१ ॥

सुगमं ।

भिच्छाइट्ठी सासणसम्माइट्ठी बंधा । एदे बंधा, अवसेसा  
अबंधा ॥ १६२ ॥

एदस्सथो वुच्चदे— अणताणुअधिचउत्तिकत्थिवेदाण बधोदया सम वोच्छिण्णा,  
सासणसम्मादिट्ठिहि तदुमयाभारदसणादो । एवमणणपयडीण जाणिय वत्तव्व ।

थीणगिद्धितिय-चउसंठाण-चउसंघडण-उज्जोव-अप्पसत्थविहायगइ-दुस्सराण परोदओ  
बधो, विग्गहगदीए एदासिमुदयामावादो । अणताणुअधिचउत्तिकत्थिवेद-तिरिक्खगइ-  
तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुब्बि-दुभग-अणादेज्ज-णीचागोदाण सोदय-परोदओ बधो, एदासिमेत्थ

निद्रानिद्रा, प्रचलाप्रचला, स्त्यानगृद्धि, अनन्तानुबन्धी क्रोध, मान, माया, लोभ,  
धीवेद, तिर्यग्गति, चार सस्थान, चार सहनन, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी, उद्योत,  
अप्रशस्तविहायोगति, दुर्भग, दुस्वर, अनादेय और नीचगोत्रका कौन बन्धक और कौन  
अबन्धक है ? ॥ १६१ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

मिथ्यादष्टि और सासादनसम्यग्दष्टि बन्धक हैं । ये बन्धक हैं, शेष अबन्धक  
हैं ॥ १६२ ॥

इस सूत्रका अर्थ कहते हैं—अनन्तानुबन्धिचतुष्क और खीवेदका बन्ध व उदय  
दोनों माथमें व्युत्थित होते हैं, क्योंकि, सासादनसम्यग्दष्टि गुणस्थानमें उन दोनोंका  
अभाव देखा जाता है । इसी प्रकार अन्य प्रकृतियोंका पूर्ण या पश्चात् होनेवाला बन्ध व  
उदयका व्युत्थेद जानकर कहना चाहिये ।

स्थानगृद्धिप्रय, चार सस्थान, चार सहनन, उद्योत, अप्रशस्तविहायोगति और  
दुस्वरका परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, विग्रहगतिमें इनके उदयका अभाव है ।  
अनन्तानुबन्धिचतुष्क, खीवेद, तिर्यग्गति, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी, दुर्भग, अनादेय  
और नीचगोत्र, इनका स्वोदय परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, यहा इनके उदयके

उदयणियमाभादादौ । धीणगिद्वितिय अणताणुवधिचउक्काण गिरतरो वधो, धुववधित्तादौ । तिरिक्खगइ तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वी णीचागोदाण मिच्छाइड्ढि सातर गिरतरो वधो । कध गिरतरो ? सत्तमपुव्विणेरइएहिंतो तेउ ताउक्काइएहिंतो च कयणिग्गहाण गिरतरवदसणादौ । सासणमम्माइड्ढि सातरो, तत्तो त्रिणिग्गयसामणसम्माइड्ढीण सभनाभाजादौ । अनसेसाण पयडीण सन्वत्थ सातरो वधो, अणियमेण उधुवरमदसणादौ । पच्चया सुगमा । तिरिक्खगइ-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वी-उज्जोनाणि तिरिक्खगइमजुत्तमपसेसाओ पयडीओ तिरिक्ख-मणुसगइमजुत्त उधति । चउगइमिच्छाइड्ढी तिगइसासणसम्मादिड्ढिणो च सामी । वधद्वान वधत्रिणद्वद्वान च सुगम । धीणगिद्वितिय अणताणुवधिचउक्काण मिच्छाइड्ढि चउव्विहो वधो । सासणे दुविहो, अणाइ धुनाभाजादौ । अनसेसाण पयडीण सन्वत्थ वधो सादि-अद्धवो ।

सादावेदणीयस्स को वधो को अवधो ? ॥ १६३ ॥

सुगम ।

नियमना अभाव ह । स्त्यानगृद्धिय जेर अन तानुवधिचतुप्पना निर तर व ध होता है, क्योंकि, ये भुव वी है । तिर्यग्गति, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी और नीचगोत्रना मिध्यादृष्टि गुणस्थानमें सातर निरतर उध होता है ।

शका—निरतर वध कसे होता है ?

समाधान—क्योंकि, सत्तम पृथिवीके नागनियों आर तेजकायिक व वायुनायिकों मेंसे विप्रका करनवाले जीवोंके निरतर उध देखा जाता है

सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें इनका सातर वध होता है, क्योंकि, वहासे निकले हुए सासादनसम्यग्दृष्टियोंकी सम्भावना नहीं है । शय प्रवृत्तियोंका सत्र म्भान्तर वध होता है, क्योंकि, अनियमसे उनका वन्धविधाम देखा जाता है । प्रत्यय सुगम है ।

तिर्यग्गति, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी और उद्योतरो तिर्यग्गतिसे मयुक्त, तथा शय प्रवृत्तियोंको तिर्यग्गति व मनुष्यगतिसे मयुक्त वायते ह । चारों गतियोंके मिध्यादृष्टि और तीन गतियोंके सासादनसम्यग्दृष्टि स्वामी ह । वन्धाधान और वन्धजिनस्थान सुगम है । स्त्यानगृद्धिय आर अन तानुवधिचतुप्पका मिध्यादृष्टि गुणस्थानमें चारों प्रकारका उध होता है । सासादन गुणस्थान दो प्रकारका वध होना है क्योंकि, वहा अनादि व धुव वधका अभाव है । शय प्रवृत्तियोंका मयव सादि व अधुव वध होता है ।

सातावेदनीयका कोन वन्धक और कोन अवधक है ? ॥ १६३ ॥

यद सत्र सुगम है ।

मिच्छाइष्टी सासणसम्माइष्टी असंजदसम्माइष्टी सजोगिकेवली  
बंधा । एदे बंधा, अवंधा णत्थि ॥ १६४ ॥

सादापदणीयस्म नभो उदजो वा पुत्र्ये नोच्छिण्णो किं पन्था वोच्छिण्णो त्ति एत्थ  
परिस्सा णत्थि, तदुभयनोच्छेदाभावादे । मोदय-परोदजो धनो, अद्भवोदयत्तादे । सजोगि  
केरलिम्हि णिरतरो धनो, पडिन्नरूपपयडीए वराभावादे । अण्णत्थ सातरो । पच्चया सुगमा ।  
णपरि सजोगिकेरलिम्हि कम्मइयकायजोगपच्चजो एकको चेव । मिच्छाइष्टि सासणसम्मा-  
इष्टिणो तिरिरूप मणुसगइमजुत्त असंजदसम्मादिष्टिणो देव मणुसगइसजुत्त वर्धति । सजोगि  
केरली अगइसजुत्त । चउगइमिच्छाइष्टि असंजदसम्मादिष्टिणो तिगइमासणमम्मादिष्टिणो  
मणुसगइमजोगिकेरलिणो च सामी । चवद्धाण सुगम । एत्थ वधनोच्छेदो णत्थि । सादि-  
अद्भवो धनो, पण्यत्तमाणनभादे ।

मिच्छत णवुंसयवेद-चउजादि हुंडसंठाण-असंपत्तसेवट्टसंघडण-  
आदाव थावर-सुहुम-अपज्जत्त-साहारणसरीरणामाणं को बंधो को  
अबंधो ? ॥ १६५ ॥

मिथ्यादृष्टि, मामादनमम्यग्दृष्टि, असयतमम्यग्दृष्टि और सयोगकेवली बन्धक हैं । ये  
बन्धक ह, अनन्धक नहीं है ॥ १६४ ॥

माताप्रेरणीयका बन्ध अवगा उदय पूर्वमें व्युच्छिन्न होता है या क्या पश्चात्  
युच्छिन्न होता है, इसकी यहा परीक्षा नहीं है, क्योंकि, उस दोनोंके व्युच्छेदका यहा  
अभाव है । स्योत्रय परोदय बंध होता है, क्योंकि, वह अघुचोदयी प्रकृति है । सयोग  
केरली गुणस्थानमें निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, यहा प्रतिपक्ष प्रकृतिके बन्धका अभाव  
है । अन्यत्र सातर बन्ध होता है । प्रत्यय सुगम है । विशेष इतना है कि सयोगकेवली  
गुणस्थानमें एक ही कामणकाययाग प्रत्यय है । मिथ्यादृष्टि व सासादनसम्यग्दृष्टि  
तिर्यग्गति व मनुष्यगतिसं सयुक्त, तथा असयतमम्यग्दृष्टि देव व मनुष्य गतिसं सयुक्त  
राधेते हैं । सयोगकेरली गतिसयोगसे रहित राधेते हैं । चारों गतियोंके मिथ्यादृष्टि व  
असयतमम्यग्दृष्टि, तीन गतियोंके सासादनसम्यग्दृष्टि, तथा मनुष्यगतिके सयोगकेरली  
सामी हैं । उन्धाघ्नान सुगम है । यहा बन्ध-युच्छेद नहीं है । सादि व अघुच बन्ध होता  
है, क्योंकि, उसका बन्ध परिवर्तनशील है ।

मिथ्यात्व, नपुसकप्रेद, चार जातिया, हुण्डमस्थान, अमप्राप्तसृपाटिकासहनन,  
जाताप, स्थावर, सूक्ष्म, अपर्याप्त और साधारणशरीर नामकर्मका कौन बन्धक व कौन  
अबन्धक है ? ॥ १६५ ॥

सुगम ।

मिच्छाइष्टी बंधा । एदे बंधा, अवसेसा अवंधा ॥ १६६ ॥

एत्थ पुत्र्य पच्छा वा नवो वोच्छिण्णो<sup>१</sup> ति विचारो णत्थि, एत्थकगुणद्राणम्मि तद-  
ममत्ताणे । मिच्छत्तस्म सोदओ वधो, अण्णहा वधाणुत्तमादो । णत्तुमयवेद-चउज्जादि-थार-  
सुत्तुम अपज्जत्तणामाण वधो सोदय परोदओ, विग्गहगदीए उदयणियमामात्तादो । हुडसउण-  
अमपत्तमेवद्वसघडण आदात्त-साहारणमरीरणामाण परोदओ नवो, विग्गहगदीए णियमेणेदामि  
उदयाभात्तादो । मिच्छत्तस्स वधो णिरत्तेरो । अपसेसाण पयडीण सात्तेरो, अणियमेण एगसमय-  
वधदमणादो । पच्चया सुगमा । मिच्छत्त-णत्तुमयवेद-हुडसउण असंपत्तसेत्तद्वमयडण-अपज्जत्ताय  
तिरिस्सिख मणुमगइमत्तुनो, चउज्जादि-आदाव-धावर-सुत्तुम-साहारणाण तिरिस्सिखगइसजुत्तो वधो,  
अण्णगद्विह सिह एदासिं वधविरोहादो । मिच्छत्त-णत्तुमयवेद-हुडसउण अमपत्तमेवद्वमयडणाण  
चउगइमिच्छाइष्टी सामी, चउगइउदएण सह एदासिं वधस्स विरोहाभात्तादो । एइदिय-

यह सूत्र सुगम है ।

मिध्याइष्टि बन्धक हैं । ये बन्धक हैं, ओप अवन्धक हैं ॥ १६६ ॥

यहा उदयस पूर्वमें अथवा पीछे वध व्युच्छिन्न होता है, यह विचार नहीं है, क्योंकि,  
एक सुगम ज्ञानमें यह सम्भव ही नहीं है । मिध्यात्वका स्वोदय बन्ध होता है, क्योंकि,  
अपने उदयके बिना उसका वध पाया नहीं जाता । नपुंसकवेद, चार जातियां, स्थावर,  
सूक्ष्म और अपर्याप्त नामकर्मका वध स्वोदय परोदय होता है, क्योंकि, विग्रहगतिमें  
इनके उदयका निग्रम नहीं है । हुण्डसस्थान, असंप्राप्तसृपाटिकासहनन, आत्ताप और  
साधारणशरीर नामकर्मका परोदय वध होता है, क्योंकि, विग्रहगतिमें नियमसे इनके  
उदयका अभाव है ।

मिध्यात्वका वध निरन्तर होता है । गय प्रकृतियोंका सात्तर बन्ध होता है,  
क्योंकि, उनका अनियमसे एक समय बन्ध देखा जाता है । प्रत्यय सुगम है । मिध्यात्व,  
नपुंसकवेद, हुण्डसस्थान, असंप्राप्तसृपाटिकासहनन और अपर्याप्तका तिर्यग्गति व  
मनुष्यगतिसे संयुक्त तथा चार जातियां आत्ताप, स्थावर, सूक्ष्म और साधारणका  
तिर्यग्गतिसे संयुक्त वध होता है, क्योंकि, अथ गतियोंके साथ इनके वधका विरोध  
है । मिध्यात्व, नपुंसकवेद हुण्डसस्थान और असंप्राप्तसृपाटिकासहननके चारों  
गतियोंके मिध्याइष्टि स्वामी हैं, क्योंकि, चारों गतियोंके उदयके साथ इनके वधका

१ वापत्तो ' एग वा वोच्छिण्णो ' इति पाठ ।

आदान-वापराण तिगइमिच्छाइटी सामी, गिरयगइमिच्छाइटिम्हि तासिं वधाभावादे । धीइदिय-  
तीइदिय-चउरिंरिदिय-सुहम अपज्जत-साहारणाण तिरिज्ज मणुसगइमिच्छाइटी सामी, देव-णेइ-  
एसु एदासिं वधाभावादे । नधद्वाण वधविणइड्डाण च सुगम । मिच्छतस्स नधो चउविहो ।  
सेसाण सादि अद्दुवो ।

देवगइ वेउव्वियसरीर-वेउव्वियसरीरंगोवंग-देवगइपाओग्गाणु-  
पुव्वित्थियरणामाणं को वंधो को अवंधो ? ॥ १६७ ॥

सुगम ।

असंजदसम्मादिटी वंधा । एदे वधा, अवेससा अवंधा ॥ १६८ ॥

किं नधो पुव्व पन्था वा जेच्छिण्णे ति एत्थ विचारो णत्थि, एक्कम्हि तदसमवादे ।  
एदासिं पचण्ह पि परोदओ वधो, सोदएण सह मगनधस्स विरोहादे । गिरतरो वधो,  
णियमेणाणेगममयनधदसणादे । विगहगदीए दोण्ह समयाण कधमणेगववएमो ? ण, एग  
मोत्तुणुरिमसन्वमखाए अणेगसइपवुत्तीदे । पन्चया सुगमा । णवरि णवुमयवेदपच्चओ

विरोध नहीं है । एकेन्द्रिय, आत्माप और स्याधर प्रकृतियोंके तीन गतियोंके मिथ्यादृष्टि  
स्वामी है, क्योंकि, नरकगतिमें मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें उनके बन्धका अभाव है । द्वीन्द्रिय,  
तीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, सुहम, अपर्याप्त और साधारण प्रकृतियोंके तिर्यग्गति व मनुष्य  
गतिक मिथ्यादृष्टि स्वामी है, क्योंकि, देव व नारकियोंमें इनके बन्धका अभाव है ।  
वधापान और बन्धविनष्टस्थान सुगम है । मिथ्यात्वका बन्ध चारों प्रकारका होता है ।  
शेष प्रकृतियोंका सादि व अधुव बन्ध होता है ।

देवगति, वैकियिकशरीर, वैकियिकशरीरागोपाग, देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी और तीर्थकर  
नामकर्मका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ १६७ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

असयतमम्यदृष्टि बन्धक है । ये बन्धक हैं, शेष अबन्धक हैं ॥ १६८ ॥

पया बन्ध उदयसे पूर्वमें या पश्चात् व्युच्छिन्न होता है, यह विचार यहां नहीं है,  
क्योंकि, एक गुणस्थानमें उक्त विचार सम्भव नहीं है । इन पांचों प्रकृतियोंका परोदय बन्ध  
होना है, क्योंकि, इनमें अपने उदयके साथ बन्ध होनेका विरोध है । निरन्तर बन्ध होता है,  
क्योंकि, नियममें इनका अनेक समय तब बन्ध देखा जाता है ।

शंका—विप्रदगतिमें दो समयोंका नाम अनेक समय कैसे हो सकता है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, एकको छोड़कर ऊपरकी सब सत्त्वामें 'अनेक'  
शब्दकी प्रवृत्ति है ।

प्रत्यय सुगम हैं । विशेष इतना है कि यहा नपुसकधेर प्रत्यय नहीं है, क्योंकि,

णत्थि, निग्गह्मदीए वट्टमाणणेइयअसजदसम्मादिट्ठीसु वेउत्थियचउक्कस्म पधामाणाओ । तित्थयरस्स पुण ते चेव तेतीम पचया, तत्थ णवुमयवेदपचयदमणाओ । वेउत्थियचउक्कस्म देवगइसजुतो, तित्थयरस्म देव मणुमगइसजुतो पयो । वेउत्थियचउक्कशधस्स तिरिक्ख मणुसअमजदसम्मादिट्ठी सामी । तित्थयरस्म तिगइअसजदसम्मादिट्ठी सामी, तिरिक्खगइअस जदसम्मादिट्ठीसु तित्थयरवभाभानाणे । वरद्धान पधयोच्छेदद्धान च सुगम । । एदासिं पधो सादि-अद्धो, धुवअभित्ताभाणाओ ।

वेदाणुवादेण इत्थिवेद-पुरिसवेद-णवुसयवेदएसु पचणाणावरणीय चउदंसणावरणीय सादापेदणीय चटुसजलण पुरिमवेद-जसकित्ति उच्चा-गोद पचतराइयाणं को वधो को अवंधो ? ॥ १६९ ॥

सुगम ।

भिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव अणियट्ठिउवसमा खवा वधा ! एदे वधा, अवंधा णत्थि ॥ १७० ॥

विग्रहगतीमें घर्तमान नारकी असयतसम्यग्दृष्टियोंमें वैत्रियिकचतुष्कके बन्धका अभाव है । किन्तु तीर्थंकर प्रवृत्तिके वे ही तेतीस प्रत्यय हैं, क्योंकि, उनमें नपुंसकवेद प्रत्यय देखा जाता है । वैत्रियिकचतुष्कका देवगतिसे सयुक्त और तीर्थंकर प्रवृत्तिका देव एव मनुष्य गतिसे सयुक्त बंध होता है । वैत्रियिकचतुष्कके बन्धके तिर्यंच न मनुष्य असयतसम्यग्दृष्टि स्वामी है । तीर्थंकर प्रवृत्तिके तीन गतियोंके असयतसम्यग्दृष्टि स्वामी हैं, क्योंकि, तिर्यंगतिके असयतसम्यग्दृष्टियोंमें तीर्थंकरके बन्धका अभाव है । बन्धाभ्यान और बंध घ्युच्छित्तिस्थान सुगम है । इनका बंध सादि और अधुव होता है, क्योंकि, वे धुवबन्धी नहीं हैं ।

वेदमार्गणानुसार स्त्रीवेदी, पुरुषवेदी और नपुंसकवेदियोंमें पाच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, सातापेदनीय, चार सज्जलन, पुरुषवेद, यशकीर्ति, उच्चगोत्र और पाच अन्तराय, इनका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ १६९ ॥

यह सब सुगम है ।

भिप्याद्येमे लेकर अनिवृत्तिकरण उपशमक और क्षपक तक बन्धक हैं । ये बन्धक . १, अबन्धक नहीं हैं ॥ १७० ॥

इत्थिवेदस्स ताव वुच्चदे— एत्थ उदयादो बधो पुब्ब पच्छा वा वोच्छिण्णो ति विचारो णत्थि, पुरिसवेदस्स एयतेणुदयाभावादो सेसाण च पयडीण बधोदयवोच्छेदाभावादो ।

पचणाणावरणीय-चउदसणावरणीय-पचतराइयाण च सोदओ बधो, धुवोदयत्तादो । पुरिसवेदस्स परोदओ बधो, इत्थिवेदे उदिण्णे पुरिसवेदस्सुदयाभावादो । सादावेदणीय-चदुसजलणाण सोदय-परोदओ बधो, उदएण परावत्तणपयडित्तादो । जसकितीए मिच्छाइट्ठि-प्पहुडि जाव असजदसम्मादिट्ठि ति सोदय परोदओ, एदेसु पडिवक्खुदयसभवादो । उवरि सोदओ चेव, पडिवक्खपयडीए उदयाभावादो । उच्चागोदस्स मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव सजदासजदा ति बधो सोदय-परोदओ, एदेसु णीचागोदुदयसभवादो । उवरि सोदओ चेव, णीचागोदस्सुदयाभावादो ।

पचणाणावरणीय चउदसणावरणीय-चउसजलण-पचतराइयाण णिरतरो बधो, धुवबधि-त्तादो । सादावेदणीय-जसकितीण मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव पमत्तसजदो ति सातरो बधो, पडिवक्खपयडीए बधुवलभादो । उवरि णिरतरो, णिप्पडिवक्खत्तादो । पुरिसवेदुच्चागोदाण

पहले खंविदोके विषयमें कहते हैं— यहा उदयसे बन्ध पूर्वमें या पश्चात् व्युच्छिन्न होता है, यह विचार नहीं है, क्योंकि, नियमसे वहा पुरुषवेदके उदयका अभाव है, तथा शेष प्रकृतियोंके बन्ध ओर उदयके व्युच्छेदका अभाव है ।

पाच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय और पाच अन्तरायका स्वोदय बन्ध होता है, क्योंकि, वे ध्रुवबन्धी हैं । पुरुषवेदका परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, खीवेदका उदय होनेपर पुरुषवेदके उदयका अभाव है । सातावेदनीय और चार सज्वलनका स्वोदय परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, उदयकी अपेक्षा ये प्रकृतिया परिवर्तनशील हैं । यशकीर्तिका मिथ्यादृष्टिसे लेकर असयतसम्यग्दृष्टि तक स्वोदय परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, इन गुणस्थानोंमें उसकी प्रतिपक्ष प्रकृतिका उदय सम्भव है । उपरिम गुणस्थानोंमें उसका स्वोदय ही बन्ध होता है, क्योंकि, वहा प्रतिपक्ष प्रकृतिके उदयका अभाव है । उच्चगोत्रका मिथ्यादृष्टिसे लेकर सयतासयत गुणस्थान तक स्वोदय परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, इन गुणस्थानोंमें नीचगोत्रका उदय सम्भव है । सयतासयतसे ऊपर स्वोदय ही बन्ध होता है, क्योंकि, वहा नीचगोत्रके उदयका अभाव है ।

पांच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, चार सज्वलन और पाच अन्तरायका निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, वे ध्रुवबन्धी हैं । सातावेदनीय और यशकीर्तिका मिथ्या दृष्टिसे लेकर प्रमत्तसयत तक सातर बन्ध होता है, क्योंकि, यहा उनकी प्रतिपक्ष प्रकृतियोंका बन्ध पाया जाता है । ऊपर उनका निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, वहां इनका बन्ध प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धसे रहित है । पुरुषवेद और उच्चगोत्रका मिथ्यादृष्टि पक्ष



मिच्छादिद्वि सासणसम्मादिद्विसु सांतर-णितरो ऋषो। कः णितरो ? ण, पम्म-सुक्कलेस्सिएसु तिरिक्ख मणुस्सेसु पुरिमवेदुच्चागोदाण णितरःअधुअलमादो। उअरि णितरो, पडिअक्ख पयडीण वधामादो।

सन्त्रगुणह्याणामोषपचएसु पुरिम णतुमयेदेसु अवाणिसु अअसेसा एत्थ एदाप्पि पचया होति। णअरि पमत्तसण्णेषु आहार आहारमिस्मकायजोगपचया अअणेद्व्या, इत्थिवेदोदइल्लाण तदसममादो। असजदसम्मादिद्विसु ओरास्सिय-त्रेउच्चियमिस्स-कम्मइयकाय-जोगपचया अअणेद्व्या, तत्थ असजदसम्मादिद्वीणमपज्जत्तकालामादो। सेस सुगम।

पचणाणारणीय चउदसणाअरणीय-चटुमज्जण पचतराइयाण मिच्छादिद्वी चउगइ-सजुत्त। सासणसम्मादिद्वी तिगइसजुत्त, णितरगइए अभादो। सम्मामिच्छादिद्वि-असजदसम्मा दिद्विणो देव मणुमगइसजुत्त। उअरिमा देवगइमजुत्त अगइसजुत्त च वधति। सादवेदणीय पुरिसवेद-असकित्तीओ मिच्छादिद्वि सासणसम्मादिद्विणो तिगइसजुत्त, सम्मामिच्छादिद्वि-असजद

सासादनसम्यग्दष्टि गुणस्थानोंमें सांतर निरन्तर ग्रन्थ होता है।

शंका—निरन्तर ग्रन्थ कैसे होता है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि पद्म और शुक्र लक्ष्यावाले नियंत्रक व मनुष्योंमें पुरपवेद और उच्छगोत्रका निरन्तर ग्रन्थ पाया जाता है।

ऊपर उनका निरन्तर ग्रन्थ होता है, क्योंकि, यहा प्रतिपक्ष प्रवृत्तियोंके वधना अभाव है।

सः गुणस्थानोंके ओषप्रत्ययोंमें पुरपवेद और नपुंसकवेदको कम कर देनेपर शेष यहा इन प्रवृत्तियोंके प्रत्यय होते हैं। विशेषता इतनी है कि प्रमत्तस्यतामें आहारक और आहारकमित्र काययोगप्रत्ययको कम करना चाहिये, क्योंकि, त्रिवेदके उच्च सुक्त जीवोंके ये दोनों प्रत्यय सम्भव नहीं हैं। अस्यतसम्यग्दष्टियोंमें आहारिकमित्र, वेत्रियमित्र और कामेण काययोग प्रत्ययको कम करना चाहिये, क्योंकि, त्रिवेदियोंमें अस्यत सम्यग्दष्टियोंके अपयात्तकालका अभाव है। शेष प्ररूपणा सुगम है।

पाच शान्ताअरणीय, चार दशनावरणीय, चार सज्जलन और पाच अतरायकों मिथ्यादष्टि चारों गतियोंसे सयुक्त, तथा सासादनसम्यग्दष्टि तीन गतियोंसे सयुक्त बाधते हैं, क्योंकि, सासादनसम्यग्दष्टियोंमें नरकगतिके ग्रन्थका अभाव है। सम्यग्मिथ्यादष्टि और अस्यतसम्यग्दष्टि देवगति व मनुष्यगतिसे सयुक्त बाधते हैं। उपरिम त्रिवेदी जीव देवगतिसे सयुक्त और गतिसयोगसे रहित बाधते हैं। सातानेदनीय, पुरपवेद और यदाकीतिके मिथ्यादष्टि व सामादनसम्यग्दष्टि तीन गतियोंसे सयुक्त, सम्यग्मिथ्यादष्टि

सम्मादिद्विणो देव-मणुसगडसजुत्त, उचग्मा देवगडमजुत्तमगइसजुत्त च वधति । उच्चागोद  
सधे देव मणुसगडसजुत्तमगडसजुत्त च नधति ।

तिगइमिच्छादिद्वि-सासणमम्मादिद्वि-सम्मामिच्छादिद्वि असजदसम्मादिद्विणो सामी,  
णिरयगदीए इत्थिनेदस्सुदयाभावादे । दुगइसजदासजदा सामी, देव णेरइएसु अणुज्वईण-  
मभावादे । उपरि मणुस्मा चेत्त, अण्णत्थुरिमगुणाभावादे । वधद्धान सुगम । वध्वोच्छेदो  
णत्थि । पचणाणा रणीय चउदमणा रणीय-चउमजलण-पचतराडयाण मिच्छाद्विणो चउत्थिहो  
वधो । अण्णत्थ तिनिहो, युताभावादे । सेमपयडीण सादि-जद्वुणो, अद्दुवधवित्तादे ।

## वेद्वणी ओघ ॥ १७१ ॥

वेद्वणी<sup>१</sup> मिच्छाद्वि-सामणमम्माद्विणो उचपाओग्गभावेण अवद्विदाणि ति वुत्त होदि ।  
तेमि परूवणा ओघ होदि ओघतुल्लेत्ति ज वुत्त होदि । एदमपणामुत्त देसामासिय, ओघादे  
एदमिहो धोवभेदुत्तलभादे । त मण्णमाणसुत्तत्थेण सह मिस्साणुग्गहट्ट परूवेमो—धीणगिद्वितिय-

और अत्यन्तसम्यग्दृष्टि देवगति व मनुष्यगतिसे संयुक्त, तथा उपरिम जीव देवगतिसे  
संयुक्त और गतिसयोगसे रहित प्राधते ह । उच्चगोत्रको मय त्रिपिदी जीव देव व मनुष्य  
गतिसे संयुक्त तथा गतिसयोगसे रहित प्राधते ह ।

तीन गतियोंके मिथ्यादृष्टि, सासात्नसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और अत्यन्त  
सम्यग्दृष्टि स्वामी ह, क्योंकि, नररुगतिसमें त्रीवेदके उदयका अभाव है । दो गतियोंके  
सयतासयत स्वामी ह, क्योंकि, देव नागतियोंमें अणुनतियोंका अभाव है । उपरिम  
गुणस्थानजती मनुष्य ही स्वामी ह, क्योंकि, अन्य गतियोंमें उपरिम गुणस्थानोंका अभाव  
है । जन्धाध्यान सुगम है । जन्व युच्छेद है नहीं । पाच ज्ञानारणीय, चार दर्शनावरणीय,  
चार सज्जन और पाच अन्तरगियोंका मिथ्यादृष्टियोंमें चारों प्रकारका जन्म होता ह । अन्य  
गुणस्वान्तोंमें तीन प्रकारका जन्म होता है, क्योंकि, जहा ध्रुव बन्धका अभाव है । शेष  
प्रकृतियोंका सादि व अध्रुव जन्म होता है, क्योंकि, ये अध्रुवजन्मी हैं ।

द्विस्थानिक प्रकृतियोंकी प्ररूपणा जोधके समान है ॥ १७१ ॥

द्विस्थानिकका अर्थ मिथ्यादृष्टि और सासात्नसम्यग्दृष्टि गुणस्वान्तोंमें जन्मकी  
योग्यतासे अवस्थित प्रकृतिया हैं । उनकी प्ररूपणा ओघ ह अर्थात् जोधके समान है, यह  
अभिप्राय है । यह अर्पणासूत्र देशामर्शक है, क्योंकि, ओघमे इन्में जोड़ा भेद पाया जाता  
है । प्रस्तुत सूत्रके अर्थके साथ शिष्योंके अनुप्रहार्य उक्त भेदकी प्ररूपणा करते ह—

अणताणुअधिचउत्तिक्रिखेद तिरिक्खाउ तिरिक्खगइ-चउसठाण चउसघडण तिरिक्खगइआओ-  
ग्गाणुपुत्रि-उज्जेव-अप्पमन्थविहायगइ-दुभग दुस्सर-अणादेज्ज-णीचागोदाणि वेद्धानियाणि ।  
एदेसु अणताणुअधिचउत्तिक्रस्स चघोदया सम वेच्छिण्णा । अण्णपयडीण<sup>१</sup> सच्चांसि पि पुव्व  
धधो पच्चा उदओ वेच्छेदुमुग्गओ । कुदो ? तधोवलभादो ।

धीणगिद्धित्थिय अणताणुअधिचउत्तिक्र-तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइ चदुसठाण-चदुसघडण-  
तिरिक्खाणुपुत्रि उज्जेव अप्पमन्थविहायगइ दुभग-दुस्सर अणादेज्ज णीचागोदाण धधो सोदय  
परोदओ, उभयथा वि चधानिरोहादो । इत्थिवेदस्स सोदएणेव धधो, तदुदयमहिक्किच्च<sup>२</sup>  
परूणणापारभादो । ओघादो एत्थ विसेसो एसो, तन्थ सोदय परोदएहि धधोवेदसादो ।

धीणगिद्धित्थिय-अणताणुअधिचउत्तिक्र तिरिक्खाउआण धधो णिरतरो । तिरिक्खगइ  
तिरिक्खगइआओग्गाणुपु त्री णीचागोदाण मिच्छाइद्धिमिह सातर-णिरतरो, सत्तमपुढवीणेरइएहितो  
तेउ-वाउकाइएहितो च णिप्फिडिदूणिरिथिवेदेसुप्पण्णाण मुहुत्तस्सतो णिरतरवधुचलभादो ।

स्थानगृद्धिप्रय, अनन्तानुअधिचतुष्क, ख्रिविद, तिर्यगायु, तिर्यग्गति, चार सस्थान,  
चार सहनन, तियग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी, उद्योत, अप्रशस्तविहायोगति, दुर्भग, दुस्वर,  
अनादेय और नीचगोत्र, ये द्विस्थानिक प्रकृतिया हैं । इनमें अनन्तानुअधिचतुष्कका बन्ध  
और उदय दोनों साथ व्युत्पन्न होते हैं । अन्य सब ही प्रकृतियोंका पूर्वमें बन्ध और  
पश्चात् उदय व्युत्पन्न होने प्रात होता है, क्योंकि, वेसा पाया जाता है ।

स्थानगृद्धिप्रय, अनन्तानुअधिचतुष्क, तिर्यगायु, तिर्यग्गति, चार सस्थान, चार  
सहनन, तियग्यानुपूर्वी, उद्योत, अप्रशस्तविहायोगति, दुर्भग, दुस्सर, अनादेय और  
नीचगोत्रका बन्ध स्वोदय परोदय होता है, क्योंकि, दोनों प्रकारसे ही उनके बंधके  
विरोधका अभाव है । ख्रिविदका स्वोदयसे ही बंध होता है, क्योंकि, उसके उदयका  
अधिकार करके इस प्ररूपणाना प्रारम्भ हुआ है । ओघसे यहा यह विशेष है, क्योंकि, वहा  
स्वोदय परोदयमे बंधका उपदेश है ।

स्थानगृद्धिप्रय, अनन्तानुअधिचतुष्क और तिर्यगायुका बन्ध निरन्तर होता है ।  
तिर्यग्गति, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी और नीचगोत्रका बन्ध मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें सातर  
निरन्तर होता है, क्योंकि, सत्तम पृथिवीके नारकियोंमेंसे तथा तेजकायिक व वायुकायिक  
जीवोंमेंसे निकलकर ख्रिविदियोंमें उत्पन्न हुए जीवोंके अन्तमुहूर्त काल तक निरन्तर बन्ध

१ प्रतियु 'अण्णपयडीण' इति पाठ ।

२ प्रतियु 'तदुदयमहिक्किच्च' इति पाठ ।

सासणम्मि सातरो, तत्तो तेसिमुववादाभावादो । अउसेसाण पयडीण चधो सांतरो, अणियमेणेग-समयअधुवलभादो । एमा परूवणा ओघादो थोवेण त्रि ण विरुञ्जदि, समाणत्तुवलभादो ।

पच्चया ओघपच्चयतुल्ला । णरि मिच्छादिद्धि-सासणसम्मादिद्धीण जहाकमेण तेअण्णट्टेत्तालीसुत्तरपच्चया, पुरिस णवुसयनेदपच्चयाणमभावादो । तिरिक्खाउअस्स मिच्छादिद्धि-सामणसम्मादिद्धीसु कमेण पचास पचेतालीस पच्चया, ओरालिय-वेउध्वियमिस्स-कम्मइयकाय-जेग-पुरिस-णवुसयनेदपच्चयाणमभावादो । तदभावो वि इत्थिवेदोदइल्लाणमपज्जत्तकाले आउअकम्मस्स चधाभावादो ।

तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइ तिरिक्खगइपाओग्माणुपुच्चि उज्जेवाणि मिच्छादिद्धि सासण-सम्मादिद्धिणो तिरिक्खगइसजुत्त वधति । अपसत्थविहायगदि-दुभग-दुस्सर-अणादेज्ज-णीचा-गोदाणि मिच्छादिद्धिणो तिगइमजुत्त वधति, देवगईए वधाभावादो । सासणसम्माइद्धिणो तिरिक्ख-मणुसगइसजुत्त वधति, देव णिरयगईए सह वधाभावादो । चउसअण-चउसअण्णणि तिरिक्ख-मणुसगइसजुत्त वधति, एदासिं णिरय-देवगईहि सह वधाभावादो । थीणगिद्वित्थिय-अणताणु-

पाया जाता है । सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें सान्तर बन्ध होता है, क्योंकि, उस गुणस्थानसे उक्त जीवोंके उत्पादका अभाव है । शेष प्रकृतियोंका बन्ध सान्तर होता है, क्योंकि, बिना नियमके उनका एक समय बन्ध पाया जाता है । यह प्ररूपणा ओघसे थोड़ी भी विरुद्ध नहीं है, क्योंकि, समानता पायी जाती है ।

प्रत्यय ओघप्रत्ययोंके समान हैं । विशेषता इतनी है कि मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टियोंके यथानुक्रमसे तिरपेण और अष्टतालीस उत्तर प्रत्यय हैं, क्योंकि, उनके पुरुषवेद और नपुंसकवेद प्रत्ययोंका अभाव है । तिर्यगायुके मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें क्रमसे पचास और पैंतालीस प्रत्यय हैं, क्योंकि, उनके औद्गरिकमिथ्र, वैक्रियिकमिथ्र, कार्मणकाययोग, पुरुषवेद और नपुंसकवेद प्रत्ययोंका अभाव है । उनका अभाव भी खविदेदय युक्त जीवोंके अपर्याप्तकालमें आयु कर्मके बन्धका अभाव होनेसे है ।

तिर्यगायु, तिर्यग्गति, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी और उद्योतको मिथ्यादृष्टि व सासादनसम्यग्दृष्टि जीव तिर्यग्गतिले संयुक्त बाधते हैं । अपरास्तविहायोगति, दुर्भग, दुस्वर, अनादेय और नीचगोत्रको मिथ्यादृष्टि जीव तीन गतियोंसे संयुक्त बाधते हैं, क्योंकि, उनके देवगतिके बन्धका अभाव है । सासादनसम्यग्दृष्टि तिर्यग्गति व मनुष्य गतिले संयुक्त बाधते हैं, क्योंकि, उनके देव व नरक गतिके साथ उनका बन्ध नहीं होता । चार सस्थान और चार सहननको तिर्यग्गति व मनुष्यगतिले संयुक्त बाधते हैं, क्योंकि, इनका नरकगति व देवगतिके साथ बन्ध नहीं होता । स्थानगृद्धिअय और अनन्तानु

यधिकउक्ताणि मिन्डादिद्विणो चउगडमजुत्त, सामणमम्मादिद्विणा तिगइसजुत्त यथति,  
णिरयगईए जमायादो ।

मन्त्रासि पयडीण तिगइमिन्डादिद्वि सामणमम्मादिद्विणो मामी, णिरयगईए इत्थियेदु  
दयाभायादो । यपद्धाण नभविणइद्धाण च सुगम, सुत्तुद्विजुत्तादो । सत्तण्ह धुनपयडीण मिन्डा  
इत्थिम्हि चउत्थिहो यथो । सामणे तुविहो यथो, जणाइ-धुनाभावादो । अयसेसाण सुवत्थ  
सादि अद्धुत्तो, अद्धवर्षवत्तादो ।

### णिहा पयला य आंघ ॥ १७२ ॥

एदामि दोण्ह पयडीण जहा ओधम्मि परूणणा कदा तहा कायन्ना । णवरी पच्चएसु  
पुरिस णनुमयवेदपचया अणणेदन्ना । णवरी अमज्जसम्माम्मिद्विम्हि ओरात्थिय-वेउत्थियमिस्स  
कम्मडयत्तायजोगा' च, इत्थियेद्वारादो । पमत्तमनदम्हि पुरिस णनुमयवेदेदि सह जाहारदुण  
च अणणेदन्, अप्पमत्तयेदोदइल्लाणमाहारमरीस्सुदयाभायादो । तिगइमिच्छादिद्वि-सासणमम्मा  
दिद्वि सम्मामिच्छादिद्वि अमज्जसम्माम्मिद्विणो सामी, णिरयगईए इत्थियेदोदइल्लाणमभावात्तो ।

यन्धिचतुप्पणे मिधराद्वि चार गतियोंसे सयुक्त बाधते हैं । सासादनसम्यग्द्वि तत्र  
गतियोंसे सयुक्त बाधते हैं, क्योंकि, उनके नरकगतिना पन्ध नहीं होता ।

सत्र प्रकृतियोंके तीन गतियोंसे मिथ्याद्वि ओर सासादनसम्यग्द्वि स्वामी है,  
क्योंकि नरकगतिमें स्त्रीवेदके उदयना जभाय है । स्वामी और धन्वविनष्टस्थान  
सुगम हैं, क्योंकि, वे स्वयं ही निर्दिष्ट हैं । सात्र प्रकृतियोंका मिथ्याद्वि गुणस्थानमें चारों  
प्रकारका बाध होता है । सासादन गुणस्थानमें दो प्रकारका बाध होता, क्योंकि, वह  
अनादि च धुन बाधका जभाय है । दोष प्रकृतियोंका नवन सादि च अधुन बाध होता है,  
क्योंकि, वे अधुन बाध हैं ।

निद्रा और प्रचला प्रकृतियोंकी प्ररूपणा ओघके समान है ॥ १७२ ॥

इन दो प्रकृतियोंकी जेमे ओघमें प्ररूपणा की गई है उसे करना चाहिये । विशेष  
यह है कि प्रत्ययोंमें पुरुषवेद और नपुंसकवेद प्रत्ययोंका क्रम करना चाहिये । इतनी और  
भी विशेषता है कि असयतसम्यग्द्वि गुणस्थानमें औदारिकमिश्र, वैश्रियिकमिश्र और कर्मण  
काययोग प्रत्ययोंको भी क्रम करना चाहिये, क्योंकि स्त्रीवेदका अधिकार है । प्रमत्तसयत  
गुणस्थानमें पुरुष और नपुंसक वेदोंके साथ आहारकक्षिको भी क्रम करना चाहिये,  
क्योंकि, अमदास्त वेदोदय युक्त जीवोंके आहारकक्षिको उदयना जभाय है । तीन  
गतियोंके मिथ्याद्वि सासादनसम्यग्द्वि, सम्यग्मिथ्याद्वि और असयतसम्यग्द्वि स्वामी  
हैं, क्योंकि, नरकगतिमें स्त्रीवेदोदय युक्त जीवोंका जभाय है । केवल इतनी ही ओघसे

१ प्रकृति 'कण्यजाता इति पाठ ।

२ कायगी सासणमम्मादिद्विअसज्जसम्माम्मिद्विणो इति पाठ ।

एत्तिओ चेत्त तिसेमो, णत्थि अण्णत्थ कन्थ मि । तेण दच्चट्टियणय पडुच्च ओघमिदि वुत्त ।  
**असादावेदणीयमोघं ॥ १७३ ॥**

असादेदणीयमिच्छेदेण पयडिणिदिमो ण कदो, किंतु असादेदणीय-अरदि-सोग-  
 अथिर असुह-अजमकितिं त्ति उप्पयट्ठिडिओ जमाददडो असादेदणीयमिदि णिदिट्ठो । जहा  
 सन्चहामा भामा, भीममेणो मेणो, वलदेत्तेो देत्तेो त्ति । एदामिं छण्ण परूजणा ओघ-  
 तुल्ला । णत्तरि एत्थ मि पन्चयत्तिमेसो मामित्तत्तिमेसो च णायत्तेो ।

### एकद्व्याणी ओघ ॥ १७४ ॥

एकमि मिच्छाद्द्विगुणद्वारेण जाओ पयडीओ चवपाओग्गा होदूण चिट्ठति तासिमेगद्वारिणि  
 त्ति सण्णा । तिस्से एकद्व्याणीए परूजणा ओघतुल्ला । त जहा — मिच्छत्तम्म वधोदया सम  
 वोच्छिण्णा । णवुम्भयेद-णिरयाउ णिरयगड-णिरयगइपाओग्गाणुपुञ्जी एइदिय वीडदिय-तीइदिय-  
 चउरिंदियजादि-आदान धावर सुहम-अपज्जत्त-साहारणाण वधोदयोच्छेदविचारो णत्थि,

विशेषता हे, अन्यत्र ओर कहीं भी विशेषता नहीं हे । इसीलिये द्रव्याधिक नयकी अपेक्षा  
 कर 'आपके समान हे,' ऐसा कहा गया हे ।

असातावेदनीयकी प्ररूपणा ओघके समान हे ॥ १७३ ॥

असातावेदनीय इस पदसे प्रतीका निर्देश नहीं किया हे, किन्तु असातावेदनीय,  
 असनि, शोक, अन्धिय, अशुभ और जयशक्तीति, इन छह प्रकृतियोंसे सम्बद्ध असातादण्डक  
 'असातावेदनीय' पदसे निर्दिष्ट किया गया हे । जैसे सत्वभामाको 'भामा', भीमसेनको  
 'सेन' और उल्लेखको 'देव' पदसे निर्दिष्ट किया जाता हे । इन छह प्रकृतियोंकी प्ररूपणा  
 ओघके समान हे । विशेष इतना हे कि यहा भी प्रत्ययभेद और स्वामित्यभेद जानना चाहिये ।

एकस्थानिक प्रकृतियोंकी प्ररूपणा ओघके समान हे ॥ १७४ ॥

एक मिव्याहाष्टि गुणस्थानम जो प्रकृतिया वन्धयोग्य होकर स्थित ह उनकी  
 'एकस्थानिक' सज्ञा हे । उन एकस्थानिकानकी प्ररूपणा ओघके समान हे । वह इस प्रकार  
 हे— मिथ्यात्वका वन्ध जोर उदय दोनों साथ व्युत्थित होते ह । नपुंसकवेद, नारकायु,  
 नररगति, नररगतिप्रायोयानुपूषा, पकेन्द्रिय, हीन्द्रिय, नीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय जाति,  
 आनाप, न्यानर, सूदम, अपर्याप्त जोर स्वाधारण, इनके वन्ध जोर उदयके युच्छेदका विचार

१ शश्वती 'अण्ण-अज अजमकिति' इति पाठ ।

एदासिमेत्थ नियमेण उदयाभावादे । अत्रसेसाण पुत्र त्तो पच्छा उदओ वोच्छिण्णो, बधे फिट्ठे वि उपरिमगुणहाणेषु एदासिमुत्त्यत्तमणादे ।

मिच्छत्तस्म सोदओ वत्तो । णउमयवेद गिरयाउ गिरयगइ एइदिय तीइदिय तीइदिय-चउरिदियनादि गिरयाणुपुत्रि-आत्ता-यात्ता-सुहम अपज्जत्त साहारणमरिणामाण परोदओ वधो, इत्थिउदोदण मह एदामिमुदयत्रोहाओ । एमो एत्थ ओघादो त्रिसेमो, तत्थ सोदय परोदण्णेदामि वधोवदेमाओ । हुडमठाण जमपत्तमेउहमघडणाण सोदय परोदओ वधो, इत्थिउदोदण मह एदामिमुत्त्यत्तम त्रिपडिमेहाभावादे । मिच्छत्त गिग्याउआण गिरत्तो उधो । अत्रसेमाण सान्तो, अणियदेगममयत्तवदसणादे ।

मिच्छत्त-णवुमयवेद हुडमठाण-जमपत्तमेउहमघडण एइदिय आदाउ थात्ताण तेणण पच्चया, पुरिस णउमयवेदाणमभावादे । गिरयाउ गिरयगइ गिग्यगइपाओग्गाणुपु-रीणमेगूण वचाम पच्चया, ओघपण्णमु ओसालिगामिम्म उम्मइय वेउत्तियदुग पुरिम-णउसयवेदाण मभावादे । तीइदिय तीइदिय-उरिदियनादि सुहम अपज्जत्त साहारणाण एककवचाम पच्चया, ओपपच्चएसु वेउत्तियदुग पुरिस णउमयवेदपच्चयाणमभावादा । मेस सुगम ।

नहीं है, क्योंकि यहाँ नियमसे इनके उदयका अभाव है । शेष प्रकृतियोंका पूर्वमें व अ और पश्चात् उदय वृत्तित्त होता है, क्योंकि, यत्रके नष्ट होनेपर भी उपरिम गुणस ज्ञानोंमें इनका उदय देखा जाता है ।

मिथ्यात्त, नपुसकवेद, नारजायु नरगति, एनेन्द्रिय, हीन्द्रिय, वीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय जाति नारजाणुपूजा, ताताप स्थावर, सूहम, जपयात्त और साधारणशरीर नामकम इनका परोदय बध हाता है क्योंकि, एत्थिउदके उदयके साथ इनके उदयका विरोध है । यह यहाँ ज्ञेयसे विशेषता है, क्योंकि, यहाँ सोदय परादयसे इनके व प्रका उपरोध है । हुडमस्थान और जमपत्तमेउहमघडणमहननना सोदय परोदय बध होता है क्योंकि, एत्थिउदके उदयका साथ इनका विरोध नहीं है । मिथ्यात्त और नारजायुका निरन्तर व अ होता है । शेष प्रकृतियोंका अन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, उनका नियम रहित एक समय बध देखा जाता है ।

मिथ्यात्त, नपुसकवेद, इण्डमस्थान, असपत्तमेउहमघडण, एकद्विय, आताप और स्थावर प्रकृतियोंके निम्न प्रत्यय है, क्योंकि, यहाँ पुत्रवेद और नपुसकवेद प्रत्ययोंका अभाव है । नारजायु नरगति आर नरगतिप्रयोग्याणुपूजाके उनचास प्रत्यय हैं, क्योंकि, ओपपच्चयोंमें ओदारिम्मि, कामण त्रिक्वियरिडि, पुत्तवेद और नपुसकवेद प्रत्ययोंका अभाव है । हीन्द्रिय, वीन्द्रिय चतुरिन्द्रिय जाति, सूहम, जपयात्त और साधारण प्रकृतियोंके इक्यात्त प्रत्यय है, क्योंकि, ओघप्रत्ययोंमें वीक्वियरिडि, पुत्रवेद और नपुसकवेद प्रत्ययोंका अभाव है । शेष प्रत्ययरूपणा सुगम है ।

मिच्छत चउगइमञ्जुत वऱड । णउमयवेद-हुडसठाणाणि तिगइसञ्जुत, देवगईए सह  
 वधाभावादे । णिरयाउ [णिरयगइ-] णिरयगइपाओग्गाणुपुञ्चीओ णिरयगइसञ्जुत वधइ । कुदे ?  
 सामाणियादे । अपजजत्तामपत्तमेवइसघडणाणि तिरिन्स मणुसगइसञ्जुत, णिरय देवगईहि सह  
 वधाभावादे । अपमेमाओ पयडीओ तिरिक्खगइसञ्जुत, तत्थ ताण णियमदसणादे । मिच्छत्त-  
 णवुमयवेद एइदियादान-वापर-हुडसठाण-अमपत्तमेवइसघडणाण तिगइमिच्छाइटी सामी,  
 णिरयगईए इत्थिपेदुदयाभावादे । णिरयाउ-णिरयगइ त्रीइदिय-तीइदिय-चउरिंदियजादि-  
 णिरयाणुपुच्चि-सुहम-अपज्जत्त साहारणाण तिरिन्स-मणुस्सा सामी । वधद्वान वधविणइइणाण  
 च सुगम । मिच्छत्तस्स चउत्थिहो वधो । सेसाण सादि अद्भुओ ।

### अपच्चक्खाणावरणीयमोघं ॥ १७५ ॥

एत्थ णि पुत्थ व परूवेदव्व । अह्ता अपच्चक्खाणावरणीयपहाणो दइओ अपच्चक्खाणा-  
 वरणीयमिदि भण्णइ । जहा णिन्स-कयन-ज्जु जवीरवणमिदि । अपच्चक्खाणचउक्क मणुसगइ-  
 ओरालियसरीर-ओरालियसरीरअगोवग-वज्जरिसहउइरणासयणसरीरसघडण-मणुसगइपाओग्गाणु-

मिथ्यात्वसे चारों गतियोंसे सयुक्त राधता है । नपुंसकप्रेद और हुण्टसस्थानको  
 तीन गतियोंसे सयुक्त राधता है, क्योंकि, देवगतिके साथ उनके बन्धका अभाव है । नारकायु,  
 [नरकगति] और नरकगतिप्रायोग्यानुपूर्वीको नरकगतिस सयुक्त राधता है, क्योंकि, ऐसा  
 स्वभाव है । जपर्याप्त जार असंप्राप्तसृपाटिकासहननको तिर्यग्गति और मनुष्यगतिसे  
 सयुक्त राधता है, क्योंकि, नरकगति और देवगतिके साथ इनके बन्धका अभाव है । शेष  
 प्रकृतियोंको तिर्यग्गतिसे सयुक्त राधता है, क्योंकि, तिर्यग्गतिके साथ उनके बन्धका  
 नियम देखा जाता है । मिथ्यात्व, नपुंसकप्रेद, ऐन्द्रिय, आताप न्यापर, हुण्टसस्थान  
 और असंप्राप्तसृपाटिकासहननके तीन गतियोंके मिथ्यावृष्टि स्वामी है, क्योंकि, नरकगतिम  
 खीपेदके उदयका अभाव है । नारकायु, नरकगति, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय जाति,  
 नारकानुपूर्वी, सूक्ष्म, अपर्याप्त और साधारण, इन प्रकृतियोंके बन्धके तिर्यच व मनुष्य  
 स्वामी है । मिथ्यात्वान आर बन्धविनप्रस्थान सुगम है । मिथ्यात्वका चारों प्रकारका बन्ध  
 होता है । शेष प्रकृतियाका सादि व अधुव बन्ध होता है ।

अप्रत्याख्यानारणीयकी प्ररूपणा ओचक समान है ॥ १७५ ॥

यहा भी पूर्वाक समान प्ररूपणा करना चाहिये । अथवा अप्रत्याख्यानारणीय  
 प्रधान वण्डनको अप्रत्याख्यानारणीय शब्दसे कहा जाता है । जैसे कि नीम, आम, कदम्व,  
 जामुन और जम्बीर, इन वृक्षाकी प्रधानतासे इतर वृक्षोंसे भी युक्त घनोंको नीमघन,  
 आमघन, कदम्वघन, जामुनघन और जम्बीरघन शब्दोंसे कहा जाता है । अप्रत्याख्यान  
 चतुष्क, मनुष्यगति, आदारिकशरीर, आदारिकशरीरान्गोपाण, वज्रर्षभउज्जनाराचशरीर-  
 सहनन और मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, इन अप्रत्याख्यानारणीयसहित प्रकृतियोंकी



एदासिमेत्थ गियमेण उदयाभावादो । अउसेसाण पुत्र वरो पच्छा उदओ नेच्छिणो, वधे फिट्ठे वि उअरिमगुणहाणेषु एदासिमुदयदसणादो ।

मिच्छत्तम्म सोदओ वओ । णउमयनेद गिरयाउ-गिरयगट एइदिय वीइदिय तीडदिय-चउरिंदियजादि गिरयाणुपुत्रि-आदान-याउ-सुहुम अपज्जत्त साहारणमरीरणामाण परोदओ वधो, इत्थिवेदोदएण सह एदासिमुदयत्रिरोहाणे । एमो एत्थ जोघादो त्रिसेसो, तत्थ सोदय परोदएणेदासिं वधोउदेसादो । हुडमठाण असपत्तसेउट्टमघडणाण सोदय परोदओ वओ, इत्थिवेदोदएण सह एदामिमुदयम्म निष्पडिभेहाभावादो । मिच्छत्त गिरयाउआण गिरतरो वओ । अउसेसाण सातरो, अणियदेगसमयउदमणादो ।

मिच्छत्त णवुमयनेद-हुटमठाण अमपत्तमेउट्टमघडण एइदिय आदान याउराण तेउण पच्छया, पुरिस णवुमयनेदाणमभावादो । गिरयाउ गिरयगइ गिरयगडपाओरगाणुपुत्रीणमगु वचास पच्छया, ओघपच्चणसु ओरात्थियमिम्म ऊम्मइय नेउअियदुग पुरिम-णउमयवेद मभावादो । वीइदिय तीडदिय चउरिंदियजादि सुहुम अपज्जत्त साहारणाण एककवचास पओघपच्चणसु वेउअियदुग पुरिस णवुमयनेदपच्छयाणमभावादो । सेम सुगम ।

नहीं है, क्योंकि, यहां नियमले दाके उदयका जमान है । शेष प्रकृतियोंका पूर्वमें और पश्चात् उदय व्युत्पत्तिज हाता है, क्योंकि, मन्धके मष्ट होनेपर भी उपरिम गुणस्व इनका उदय देखा जाता है ।

मिथ्यात्वका सोदय उ व होता है । ननुमउवेद, नारकायु नरकगति, एउे द्वीट्रिय, वीट्रिय, चतुरिं द्रिय जाति, नारकायुपूर्वा, आताप स्वावर, सूदम, ओर साधारणशरीर नामकम, इनका परादय उच होता है क्योंकि, म्त्रियेके उदय इनके उदयका त्रियेव है । यह यहां जाघते विशेषता है, क्योंकि, वहा सोदय इनक उ वका उपदेश है । हुण्डसस्वान रोर जसप्राप्तसृपाटिनासहननक परोदय उच होता है, क्योंकि, म्त्रियेके उदयक स्वाय इनका त्रिाध नहीं है । और नारकायुका निरंतर उ व होता है । शेष प्रकृतियोंका सान्तर मन्ध होता है उनका नियम गहित एक समय उच देखा जाता है ।

मिथ्याच ननुमउवेद हुण्डसस्वान जसप्राप्तसृपाटिनासहनन, आताप और म्त्रियर प्रकृतियोंके निरूपन प्रत्यय है, क्योंकि, यहां पुरुषवेद और प्रत्ययोंका जमान है । नारकायु नरकगति और नरकगतिप्रायोग्यानुपूर्वके उन उ वके, ओघप्रत्ययोंमें त्रैदारिकमिश्र, कामज वैत्रियिन्दिर, पुरुषवेद और प्रत्ययोंका जमान है । द्वीट्रिय, वीट्रिय, चतुरिन्दिय जाति, सूदम, अपयात्त उ प्रकृतियोंक इक्याघन प्रत्यय है, क्योंकि ओघप्रत्ययोंमें वैत्रियिन्दिर, उ पुरुषवेद प्रत्ययोंका जमान है । शेष प्रत्ययरूपणा सुगम है ।

दोणह' वेच्छेदुपलभादो । मन्त्रगुणद्वारेषु त्रयो सोदय परोदयो, परोदए वि सते वधनिरोहो-  
 भावादो । भय-दुगुजण मन्त्रगुणद्वारेषु गिरतरो त्रयो, धुत्रववितादो । हस्म-रदीण मिच्छाइडि-  
 प्पहुडि जान पमत्तमजदो ति त्रयो सातरो, एत्थ पडिउत्तमयडिउत्तुपलभादो । उपरि गिरतरो,  
 पडिउत्तमयडिउत्तुपलभादो । पच्चया सुगमा, उहुमो परुपिदत्तादो । मिच्छाइडि चउगइसजुत्त  
 धरति । उपरि हम्म-रदीओ तिगइसजुत्त, गिरयगईए सह वधनिरोहदो । सच्चपयडीओ  
 सासणो तिगइसजुत्त त्रयो, तत्थ गिरयगईए वधाभावादो । सम्मामिच्छाइडि-अमजदसम्मा-  
 दिडिणो दुगइसजुत्त, तत्थ गिरय-तिगिउत्तमयडिउत्त वधाभावादो । उपरिमा देवगइसजुत्त, तत्थ  
 सेसगईण वधाभावादो । उपरि अपुत्तमयडिउत्त चरिमत्तमभागे अगइसजुत्त वधति । तिगइ-  
 मिच्छाइडि-सामणमम्मादिडि मम्मामिच्छाइडि अमजदसम्मादिडिणो सामी, गिरयगईए  
 गिरुद्विडिउत्तवधाभावादो । दुगइसजदामजदा सामी, देवगईए देवगईणैमभावादो । उपरिमा  
 मणुस्मा चैव, अण्णत्थ महच्चणमभावादो । त्रयोद्वारेषु त्रयोपिण्डुद्वारेषु च सुगम । भय-दुगुजण

समयमें उनके मन्त्र उदय दोनोका मयुक्ते पाया जाता है । मन्त्र गुणस्थानोंमें उनका  
 मन्त्र सोदय परोदय होता है क्योंकि, मन्त्र प्रकृतियोंमें उदयके भी होनेपर इनके मन्त्रका  
 कोई विरोध नहीं है । भय और जुगुप्साका मन्त्र गुणस्थानोंमें निरन्तर मन्त्र होता है,  
 क्योंकि, वे धुत्रवर्धी हैं । हास्य और रतिका मिथ्यादृष्टिसे लेकर प्रमत्तसयत तक  
 मान्तर मन्त्र होता है, क्योंकि, यहा इनकी प्रतिपक्ष प्रकृतियोंका मन्त्र पाया जाता  
 है । ऊपर निरन्तर मन्त्र होता है, क्योंकि, वहा प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके मन्त्रका अभाव  
 है । प्रत्यय सुगम है, क्योंकि, उनका बहुत बार प्ररूपण किया जा चुका है ।  
 मिथ्यादृष्टि जीव उन्हे चार गतियोंसे मयुक्त पावते हैं । विशेष इतना है कि  
 हास्य और रतिको तीन गतियोंसे मयुक्त पावते हैं, क्योंकि, नररुगतिके साथ  
 उनके मन्त्रका विरोध है । सव प्रकृतियोंको सासादनसम्पद्यदृष्टि तीन गतियोंसे मयुक्त  
 पावता है, क्योंकि, इस गुणस्थानमें नररुगतिका मन्त्र नहीं होता । सम्पदिमिथ्यादृष्टि  
 और असयतसम्पद्यदृष्टि दो गतियोंसे मयुक्त पावते हैं, क्योंकि, उन गुणस्थानोंमें नररुगति  
 और तिर्यगगतिके मन्त्रका अभाव है । उपरिम जीव देवगतिके मयुक्त पावते हैं, क्योंकि,  
 उपरिम गुणस्थानोंमें शेष गतियोंके मन्त्रका अभाव है । विशेषता यह है कि अपुत्तमयडिउत्त  
 अतिम मत्तम भागमें गतिसंयोगसे रहित पावते हैं । तीन गतियोंके मिथ्यादृष्टि, सासादन  
 सम्पद्यदृष्टि, सम्पदिमिथ्यादृष्टि और असयतसम्पद्यदृष्टि स्वामी है, क्योंकि नररुगतिके  
 त्रयोदके उदय सहित जीवोंका अभाव है । दो गतियोंके मयुक्तासयत स्वामी है, क्योंकि,  
 देवगतिके देशप्रतियोंका अभाव है । उपरिम गुणस्थानत्रयो मनुष्य ही स्वामी है, क्योंकि,  
 अन्य गतियोंमें महाप्रतियोंका अभाव है । मन्त्राध्ययन और मन्त्रनिष्ठस्थान सुगम है ।

१ प्रतियु ' चहुणह ' इति पाठ ।

२ अपरतो ' गिरयगइण ' इति पाठ ।

३ प्रतियु ' देसवगईण ' इति पाठ ।

असेसतिष्णिपयडीओ मिच्छादिद्वि सामणसम्मादिद्विणो निरिक्क मणुमगइसजुत्त, सम्मामिच्छा-  
दिद्वि-असज्जदम्ममादिद्विणो मणुमगइसजुत्त वधति ।

अपचक्राणानरणचउत्कस्स तिगइचदुगुणद्व्याणिणो सामी । असेसाण पयडीण  
तिगइमिच्छादिद्वि सासणमम्मादिद्विणो देवगइसम्मामिच्छादिद्वि अमवदसम्मामिद्विणो च सामी ।  
वधद्व्याण वधणिणइद्व्याण च सुगम । अपचक्राणचउत्कस्स मिच्छाद्विद्वि चउच्चिहो उओ ।  
अण्णत्थ त्तिविहो । असेसाण पयडीण मादि-अद्दुओ ।

**पचक्राणावरणीयमोघ ॥ १७६ ॥**

एत्थ ओषकरूपण किंचित्तिसमाणुविद्ध समगिय वत्तञ्च ।

**हस्स-रदि जाव तित्थयरेत्ति ओघ ॥ १७७ ॥**

ओषादो एदेसु सुत्तेसु अट्टिदथेअमेयमत्तरिसणइ मद्दुद्धिसिस्माणुमगइ च  
पुणरवि परूत्तेमो — हस्स रइ-भय दुगुछाण वधेदया मम नेच्छिउज्जति, अपुत्तकरणचरिममए

वाधते ह । शेष तीन प्रतियोने मित्थाद्वि व मासादनसम्यग्द्वि तिर्यग्गति एव  
मनुष्यगतिसे सयुत्त, तथा सम्मामिध्याद्वि च असयत्तसम्यग्द्वि मनुष्यगतिसे  
सयुत्त वाधते ह ।

अप्रत्याप्यानावरणचतुष्के तीन गतियोने चार गुणस्थानवर्ता र्त्तिवेदी जाव  
स्वामी है । शेष प्रतियोने तीन गतियोने मित्थाद्वि व सामादनसम्यग्द्वि तथा दव  
गतिसे सम्यग्मित्थाद्वि च असयत्तसम्यग्द्वि स्वामी ह । प्र धाध्यान और प्र धाधिनष्ट  
स्थान सुगम है । अप्रत्याप्यानावरणचतुष्का मित्थाद्वि गुणस्थानमें चारों प्रकारका और  
अन्य गुणस्थानमें तान प्रकारका वध होता है । शेष प्रतियोना सादि व अष्टव प्रथ  
होता है ।

प्रत्याप्यानावरणायकी प्ररूपणा ओषके समान हे ॥ १७६ ॥

यहा कुछ विशेषतासे सम्बद्ध ओषप्ररूपणासे स्मरणकर कहना चाहिये ।

हास्य व रतिसे लेकर तीर्थकर प्रकृति तत्र ओषके समान प्ररूपणा है ॥ १७७ ॥

ओषके अपेक्षा इन सूत्रोंमें अवस्थित कुछ प्रेदीसी विशेषताको दिखलाने तथा  
मन्दबुद्धि शिष्यके अनुग्रहके लिये फिर भा प्ररूपणा करते हैं— हास्य, रति मय और  
शुश्रूष्माका वध व उदय दाना साधमें व्युच्छिन्न होते ह, क्योंकि, अपुत्तकरणके अतिम

दोषहं वेच्छेदुवलमादो । मन्वगुणद्वारेषु नरो सोदय परोदओ, परोदए वि सते वधविरोहा-  
 भावादो । भय-दुगुळण मन्वगुणद्वारेषु गित्तरो नरो, धुवनपितादो । हस्म-रदीण मिच्छाडडि-  
 प्पट्टि जाव पमत्तमनरो ति नरो मानरा, एत्थ पडिपन्खनयडिपुवलमादो । उव्वरि गिरतरो,  
 पडिवक्खपयडिपुवामावादो । पन्चया सुगमा, चहुमो परूदिदत्तादो । मिन्नाडडि चउगडसजुत्त  
 वपति । णग्गि हम्म-नदीओ तिगडमजुत्त, गिरयगईए मह नपरिरोहादो । मन्वपयटीओ  
 सामणे तिगडमजुत्त नड, तत्थ गिरयगईए वपामावादो । सम्मामिच्छादिट्ठि-अमजदमम्मा-  
 दिट्ठिणो दुगडसजुत्त, तत्थ गिरय गिरिपण्डण वधामावादो । उव्वरिमा देवगइमजुत्त, तत्थ  
 सेमगणं नवामावादो । णग्गि अयुक्कण्णे चरिममत्तमभागे णगइमजुत्त वधति । तिगइ-  
 मिन्नाडिडि-सामणमम्मादिट्ठि मम्मादिट्ठि अमजदमम्मादिट्ठिणो सामी, गिरयगईए  
 गिरुद्वित्थियेदाभावादो । दुगडमजदामजदा सामी, देवगईए देसवर्णमभावादो । उव्वरिमा  
 मणुस्मा चैव, अण्णत्थ मह-नईणमभावादो । वधद्वारेण वधविणट्टद्वारेण च सुगम । भय-दुगुळण

समयमें उनके वन्ध व उदय दोनोंका युच्छेद पाया जाता है । सत्र गुणस्थानोंमें उनका  
 वन्ध सोदय परोदय होता है क्योंकि, अन्य प्रकृतियोंके उदये में होनेपर इनके वन्धका  
 कोश विरोध नहीं है । भय और जुगुप्साका सत्र गुणस्थानोंमें निरन्तर वन्ध होता है,  
 क्योंकि, वे धुवनधी हैं । हान्य और रतिका मिथ्यादृष्टिसे लेकर प्रमत्तसयत तक  
 सान्तर मन्व होता है, क्योंकि, यहा इनकी प्रतिपक्ष प्रकृतियोंका वन्ध पाया जाता  
 है । ऊपर निरन्तर वन्ध होता है, क्योंकि, यहा प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके वन्धका अभाव  
 है । प्रत्यय सुगम है, क्योंकि, उनका मूत नार प्ररूपण किया जा चुका है ।  
 मिथ्यादृष्टि जीव उन्हें चार गतियोंसे संयुक्त राधते हैं । विशेष इतना है कि  
 हान्य और रतिकी तीन गतियोंसे संयुक्त राधते हैं, क्योंकि, नरकगतिके साथ  
 उनके वन्धका विरोध है । सत्र प्रकृतियोंको सासादनसम्पद्दृष्टि तीन गतियोंसे संयुक्त  
 राधता है क्योंकि, इस गुणस्थानमें नरकगतिका वन्ध नहीं होता । सम्मिमिथ्यादृष्टि  
 और असयतसम्पद्दृष्टि दो गतियोंसे संयुक्त राधते हैं, क्योंकि, उन गुणस्थानोंमें नरकगति  
 और तियगगतिके वन्धका अभाव है । उपरिम जीव देवगतिके संयुक्त राधते हैं, क्योंकि,  
 उपरिम गुणस्थानोंमें दोष गतियोंके वन्धका अभाव है । विशेषता यह है कि अपूर्वकरणके  
 अन्तिम सप्तम भागमें गतिसंयोगसे रहित राधते हैं । तीन गतियोंके मिथ्यादृष्टि, सासादन  
 सम्पद्दृष्टि, सम्मिमिथ्यादृष्टि और असयतसम्पद्दृष्टि स्वामी है, क्योंकि नरकगतिमें  
 रतिवदने उदय सहित जीवोंका अभाव है । दो गतियोंके सयतासयत स्वामी है, क्योंकि,  
 देवगतिमें देवप्रतियोंका अभाव है । उपरिम गुणस्थानप्रती मनुष्य ही स्वामी है, क्योंकि,  
 अन्य गतियोंमें महाव्रतियोंका अभाव है । जन्वाधान और नवविनष्टस्थान सुगम हैं ।

१ प्रतियु ' वदुण्ड ' इति पाठ ।

२ अपतो ' गिरयगईण ' इति पाठ ।

३ प्रतियु ' देसवर्णण ' इति पाठ ।

मिच्छादिद्विष्टि वधो चउत्तिहो । उपरि तिनिहो, धुननधाभावादे । हम्म-नदीण मन्वत्य सादि-  
अद्भवो, अद्भववधितादो ।

मणुस्साउअस्स पुत्र वधो पन्डा उदओ वेच्छिण्णो, अमत्तदसम्मादिद्वि अणियद्दीमु  
जहाकमेण वधोत्तयोच्छेददसणादो । मिच्छादिद्वि-सामणसम्मादिद्वीमु सोदय पगेदण्ण वधो ।  
असजदसम्मादिद्वीमु परोदण्णेण । कुदो ? साभाणियात्ते । सन्त्य वधो गिरतरो, जहण्णव  
कालस्स नि अतोमुहत्तपमाणुपलभादो । मिच्छादिद्विम्म पचाम, मामणस्स पचेतालीम पचया,  
ओरालिय वेउत्तियमिम्म क्रम्मइयकायनोम पुरिम णनुमयपचवाणमभावादो । अमत्तदसम्मा-  
दिद्वीमु चालीस पचया, ओपानचएमु ओरालिय नेगलियमिम्म वेउत्तियमिस्स क्रम्मइय-  
कायनोम पुरिम णनुमयवेदानमभावादो । सेम सुगम । मत्ते नि मणुसगडमज्जत्त चेत्त वपत्ति,  
अण्णगर्हाहि मह विरोहादो । तिग्गमिच्छादिद्वि सासणसम्मादिद्विणो सामी । असत्तसम्मा  
दिद्विणो देवा चेत्त सामी, अण्णत्थिथिथिनेदेइल्लण मम्मादिद्वीण मणुस्साउअस्स वधाभावादा ।  
वधद्वान वधनिण्डद्वान च सुगम । सन्त्य सादि अद्भवो वधो ।

भय और जुगुप्साका मिथ्यादृष्टि गुणस्थानम चारा प्रकारका वन्ध होता है । उपरिम  
गुणस्थानोंमें तीन प्रकारका वध होता है, क्योंकि, उहा भुव वन्धना अभाव है । हास्य  
और रतिका सत्र सादि व अधुन वन्ध हाता है, क्योंकि, ये अधुन वन्धी ह ।

मनुष्यायुका पूर्वमें वध और पश्चात् उदय पुच्छिज्ज होता है, क्योंकि, अत्यन्त  
सम्यग्दृष्टि और धनिवृत्तिकरण गुणस्थानोंमें जमसे उमने वध व उदयका व्युत्प्रेद देखा  
जाता है । मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें सोदय परोदयसे वन्ध होता है ।  
अत्यन्तसम्यग्दृष्टियोंमें परोदयसे ही वध होता है, क्योंकि, पेसा स्वभाव ही है । सत्र  
निरन्तर वध होता है, क्योंकि, उसका जत्र व वन्धनात्त भो अ तमुत्त प्रमाण पाया  
जाता है । मिथ्यादृष्टिसे पचास और सासादनसम्यग्दृष्टिसे पचालीस प्रत्यय हैं, क्योंकि,  
चहा औदारिकमिथ्र, वैक्रियिकमिथ्र, कामण काययोग, पुष्टपवेत्त और नपुंसरूपेद, प्रत्ययोंका  
जमाव है । अत्यन्तसम्यग्दृष्टियोंमें चालीस प्रत्यय हैं, क्योंकि ओषप्रत्ययोंमेंसे औदारिक,  
औत्तरिकमिथ्र, वैक्रियिकमिथ्र, कामण काययोग, पुष्टपवेत्त और नपुंसरूपेत्त प्रत्ययोंका  
अभाव है । शेष प्रत्ययरूपणा सुगम है । सत्र ही मनुष्यगणिते सत्रुक्त ही राधते हैं,  
क्योंकि, अय गतिपाके साथ उमने वचका त्रिरोध है । तीन गतिपाके मिथ्यादृष्टि और  
सासादनसम्यग्दृष्टि स्वामी ह । अत्यन्तसम्यग्दृष्टि ही स्वामी है, क्योंकि, अय  
गतिशोमें ग्यारदात्य युक्त सम्यग्दृष्टियोंसे मनुष्यायुके वन्धना अभाव है । वधाभावा  
और वधनिण्डस्थान सुगम है । सत्रेय सादि व अधुन वन्ध होता है ।

देवाउवस्स पुच्चमुदओ पच्छ वधो वोच्छिज्जदि, जप्पमत्तासजदसम्मादिट्ठीसु कमेण वधोदयवोच्छेददसणादो । सच्चगुणट्ठाणेषु परोदणेषु वधो, सोदयमिह वधस्स अचताभावस्स अवट्ठाणादो । गिरतरो वधो, अतोमुहुत्तेण विणा वधुवरमाभावादो । मिच्छाइट्ठिस्स एगूणवचास, सासणस्स चउवेतालीस, असजदसम्मादिट्ठिस्स चालीसुत्तरपच्चया, वेउन्निय-वेउव्वियमिस्स-ओरालियमिस्स कम्मइय-कायजोग-पुरिस णवुसयवेदाणमभावादो । उवरि पुरिस णवुसयवेदाहारद्वेहि विणा ओघपच्चया चेत्तत्तन्ना । सेस सुगम । सच्चरथ देवगइमज्जुतो वधो, अण्णगईहि सह वध-विरोहादो । तिरिक्ख-मणुस-मिच्छाइट्ठि सामणसम्माइट्ठि-असजदसम्माइट्ठि-सजदासजदा सामी, अण्णत्थ ट्ठियाण तन्नधनिरोहादो । उवरिमा मणुसा चेत्त, अण्णत्थ महव्वईणमभावादो । वधद्वान सुगम । अप्पमत्तद्वाप सखेज्जदिभाग गतूण वधो वोच्छिज्जदि । कुदो ? सुत्ताणुसारि-गुरूवेदसादो । सादि-अद्दुवो वधो ।

देवगइ पंचिदियजादि-वेउव्विय-तेजा-कम्मइयसरीर-समचउरससठाण-वेउव्वियसरीर-अगोंग-वण्ण वध-रस-फास-देवगइपाओग्माणुपुच्चि-अगुरुवलहुव उववाद्-परघादुस्सास-पसत्थ-विहायगइ-तस-नादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर थिर-सुह सुभग-सुस्सर आदेज्ज-णिमिणेषु देवगइ-देव-

देवायुक्ता पूर्वमें उदय और पश्चात् बन्ध व्युच्छिन्न होता है, क्योंकि, अप्रमत्त और असयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें क्रमसे बन्ध व उदयका व्युच्छेद देखा जाता है । स्वयं गुणस्थानोंमें परोदयसे ही बन्ध होता है, क्योंकि, अपने उदयके होनेपर उसके बन्धका अत्यन्ताभाव है । उसका निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, अन्तर्मुहूर्तके बिना उसके बन्धविश्रामका अभाव है । मिथ्यादृष्टिके उनचास, सासादनसम्यग्दृष्टिके चवालीस और असयतसम्यग्दृष्टिके चालीस उत्तर प्रत्यय हैं, क्योंकि, यहा वैक्रियिक, वैक्रियिकमिश्र, औदारिकमिश्र, कार्मण काययोग, पुरुषवेद और नपुंसकवेद प्रत्ययोंका अभाव है । असयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानके ऊपर पुरुषवेद, नपुंसकवेद और आहारकहिकके बिना ओघप्रत्यय ही कहना चाहिये । शेष प्रत्ययरूपण सुगम है । सर्वत्र देवगतिसे सयुक्त बन्ध होता है, क्योंकि, अन्य गतियोंके साथ उसके बन्धका विरोध है । तिर्येच और मनुष्य मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, असयतसम्यग्दृष्टि एवं सयतासयत स्वामी हैं, क्योंकि, अन्यत्र स्थित जीवोंके उसके बन्धका विरोध है । उपरिम गुणस्थानवर्ती मनुष्य ही स्वामी हैं, क्योंकि, अन्य गतियोंमें महाव्रतियोंका अभाव है । बन्धाघ्यान सुगम है । अप्रमत्तकालके सख्यातवें भाग जाकर बन्ध व्युच्छिन्न होता है, क्योंकि, ऐसा सूत्रानुसारी गुरुका उपदेश है । सादि व अद्भुत बन्ध होता है ।

देवगति, पचेन्द्रियजाति, वैक्रियिक, तैजस व कार्मण शरीर, समचतुरस्रस्थान, वैक्रियिकशरीरारगोपाग, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, अगुरुलघु, उपघात, परघात, उच्छ्वास, प्रशस्तविहायोगति, ध्रस, नादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, स्थिर, शुभ, सुभग, सुस्वर, आदेय व निर्माण, इनमेंसे देवगति, देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, वैक्रियिकशरीर

गइपाओग्गाणुपुञ्जीवेउत्रियसरीरवेउत्रियसरीरअगोवगाण पुञ्चमुदओ पञ्छा वधो वोच्छि-  
ज्जदि, अपुत्रासनदमम्माइट्टीसु देवगइपाओग्गाणुपुञ्जीए अपुत्र सासणेसु कमेण-वधो  
दयवोच्छेदुवलमादो । तेज कम्मइयसरीर गमचउरममठाण उण्ण गध रस फाम-अगुरुलहुअ-  
उवघाद परघाद-उस्सास पसत्थनिहायगइ पत्तेयसरीर-थिर सुह सुस्सर णिमिणाण पुञ्च वधो पञ्छा  
उदओ वोच्छिज्जदि, अपुत्र अणियट्टीसु कमेण वधोदयवोच्छेदुवलमादो । पच्चिदियजादि-त्तम  
चादर-पञ्जत्त-सुभगादेज्जाण पि एउ चेउ त्तत्त्व ।

देवगइ देवगइपाओग्गाणुपुञ्जीवेउत्रियसरीर वेउत्रियसरीरअगोवगाण परोदएणेउ  
सच्चत्थ वधो, सोदएणेदासिं वधीररोहादो । पच्चिदियजादि-त्ते ना-कम्मइयसरीर वण्ण गध-रस-फाम  
अगुरुलहुअ तस चादर-पञ्जत्त थिर सुभ णिमिणाण सोदओ सच्चगुणहाणेसु वधो, एत्थेदासिं  
धुवेदयत्तदसणादो । समचउरससठाण पसत्थनिहायगइ सुस्सराण सच्चत्थ सोदय-परोदओ  
वधो, उभयहा वि वधीररोहादो । उवघाद-परघाद उस्सास-पत्तेयसरीराण मिच्छादिट्ठि  
सासणसम्मादिट्ठीसु वधो सोदय परोदओ, निग्गहगदीए केसिंचि अपञ्जत्तकाले च उदएण

धोर वैज्ञानिकशरीरागोपांगका पूरमें उदय ओर पश्चात् वध व्युच्छिन्न होता है, क्योंकि,  
अपूर्वकरण और अन्वयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें तथा देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वके अपूर्वकरण  
और सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें प्रमत्ते वध व उदयका व्युच्छेद पाया जाता है । तैजस  
व कामण शरीर, ममचतुरन्ससन्धान, वण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलहु, उपघात, परघात,  
उच्छ्रान्त, प्रशस्तविहायोगति, प्रत्येकशरीर, स्थिर, शुभ, सुस्सर और निमाण, इनका  
पूरमें वध और पश्चात् उदय व्युच्छिन्न होता है, क्योंकि, अपूर्वकरण और अनिर्गुत्तिकरण  
गुणस्थानोंमें प्रमत्ते इनके वध व उदयका व्युच्छेद पाया जाता है । पचेन्द्रियजाति,  
वस, चादर, पर्याप्त, सुभग और आदयके भी इसी प्रकार कहना चाहिये ।

देवगति, देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वके, चक्रियशरीर और वैज्ञानिकशरीरागोपांगका  
परोदयसे ही सत्रप्र वध होता है, क्योंकि स्वोदयमे इनके वधका विरोध है । पचेन्द्रियजाति,  
तैजस व कामण शरीर वण, गन्ध रस, स्पर्श, अगुरुलहु वस, चादर, पर्याप्त, स्थिर, शुभ  
और निर्माणका सब गुणस्थानोंमें स्वोदय वध होता है, क्योंकि, यहा ये प्रकृतिया ध्रुवोदयी  
देवी जाती हैं । समचतुरन्ससन्धान प्रशस्तविहायोगति और सुस्सरका सर्वत्र स्वोदय  
परोदय वध होता है, क्योंकि, दोनों प्रकारसे भी इनके वधका विरोध नहीं है । उपघात,  
परघात, उच्छ्रान्त और प्रत्येकशरीरका वन्ध मिच्छादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि  
गुणस्थानोंमें स्वोदय परोदय होता है, क्योंकि, विग्गहातिमें और सिन्हींके अपर्याप्तका वध

त्रिणा बधुत्रलभादो । उवरिमेसु गुणद्वानेसु सोदरणेव, अपज्जत्तद्वाए तेसिं गुणाणमभावादो । मिच्छादिद्वि-सासनसम्मादिद्वि-सम्मामिच्छाद्वि-असजदसम्मादिद्वीसु सुभगादेज्जाण सोदय-परोदओ बधो । उवरि सोदओ चैव, साभावियादो ।

तेजा-कम्मूयसरीर-वण्ण गध-रस-फाम-अगुरुअलहुअ-उवघाद-णिमिणांण बधो गिरं-तरो, धुवअधित्तादो । पचिंदियजादि-परघादुस्सास पमत्थत्रिहायगइ-तसं-वादर पज्जत्त-पत्तेयसरीर-सुभग सुस्सर आदेज्ज-देजगइ-देजगइपाओग्माणुपुव्वी वेउव्वियसरीर अगोवगाण मिच्छाद्विद्वि-सातर-गिरतरो बधो । कध गिरतरो ? ण, अमखेज्जवाउअतिरिक्ख-मणुस्सेसु गिरतंरबंधु-व्लमादो । एउ सामणस्स वि वत्तव्व । णअरि पचिंदियजादि-परघादुस्सास-तस घादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीराण बधो गिरतरो चैव । सम्मामिच्छाद्विद्वि-पहुडि उअरिमाण सासनभगो । णवरि देवगइ-वेउव्वियसरीर-समचउरससठाण-वेउव्वियसरीरअगोउग-देवगइपाओग्माणुपुव्वी सुभग-सुस्सरदेज्जाण गिरतरो बधो, पडिअक्खपयडिअभावादो । थिर-सुभाण मिच्छाद्विद्वि-पहुडि जाअं पमत्तमजदो त्ति सातरो बधो, पडिअक्खपयडिवुत्रलभादो । उवरि गिरतरो, पडिवक्ख-

भी इनका उदयके त्रिणा बन्ध पाया जाता है । उपरिम गुणस्थानोंमें स्वोदयसे ही बन्ध होता है, क्योंकि, अपर्याप्तकालमें उन गुणस्थानोंका अभाव है । मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें सुभग व अदेयका स्वादय परोदय बन्ध होता है । उपरिम गुणस्थानोंमें स्वोदय ही बन्ध होता है, क्योंकि, ऐसा स्वभाव है ।

तैजस व कामण शरीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श अगुहलधु, उपघात और निर्माणका बन्ध निरन्तर होता है, क्योंकि, ये धुचबन्धी हैं । पचेन्द्रियजाति, परघात, उच्छ्वास, प्रशस्तत्रिहायगत, त्रस, वादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, सुभग, सुस्वर, आदेय, देवगति, देवगतिप्रायोग्यानुपूर्णा, वैक्रियिकशरीर और वैक्रियिकशरीरानोपागका मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें सान्तर निरन्तर बन्ध होता है ।

शका— निरन्तर बन्ध कैसे होता है ?

समाधान— नहीं, क्योंकि, असत्यातवर्षायुष्क तिर्येच ओर मनुष्योंमें निरन्तर बन्ध पाया जाता है ।

इसी प्रकार सासादन गुणस्थानके भी कहना चाहिये । विशेषता केवल यह है कि पचेन्द्रियजाति, परघात, उच्छ्वास, त्रस, वादर, पर्याप्त और प्रत्येक शरीरका बन्ध निरन्तर ही होता है । सम्यग्मिथ्यादृष्टिसे लेकर उपरिम गुणस्थानोंकी प्ररूपणा सासादनसम्यग्दृष्टिके समान है । विशेष यह है कि देवगति, वैक्रियिकशरीर, समचतुरस्रमस्थान, वैक्रियिकशरीरानोपाग, देवगतिप्रायोग्यानुपूर्णा, सुभग, सुस्वर और आदेयका निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, इनकी प्रतिपक्ष प्रवृत्तियोंके बन्धका अभाव है । स्थिर और शुभका मिथ्यादृष्टिसे लेकर प्रमत्तसयत तक सान्तर बन्ध होता है, क्योंकि, यहा प्रतिपक्ष प्रवृत्तियोंका बन्ध पाया जाता है । ऊपर इनका निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि,



गेरइएसु आउअवधवसैण सम्मादिद्वीणमुप्यत्तिदमणादो । गिरयाउं गिरयदुग इत्थिवेदाण सत्तं  
पुरिसवेदस्सेव परोदण्ण वधो । णुमयवेदम्म सोदण्ण । एइदिय श्रीइदिय तीइदिय चउग्गिदिय  
जादि-आदाव-थार-सुहुम-अपज्जत्त-साहारणाण सोदय परोदओ वधो, एदेसु वुत्तङ्गाणेसु एदेसि  
पडिवकरइाणेषु च णवुसयवेदुदयदसणादो ।

तिरिक्खगइ तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुच्चि णीचागोदाण सातर गिरतरो वधो । कुदो ?  
तेउ-वाउकाइएसु सत्तमपुडण्णिणेरइएसु च दोसु वि गुणङ्गाणेसु गिरतरवधुवलमादो । मणुसगइ  
मणुसगइपाओग्गाणुपुच्चीण सातर-गिरतरो मिच्छादिद्वि-मासणसम्मादिद्वीसु वधो । कुदो ?  
आणदादिदेवेहिंते णवुसयवेदोदइल्लमणुस्सेमुपण्णाण तित्थयरमतकम्मणेण गेरइएमुपण्णमिच्छ  
इद्वीण च गिरतरवधुवलमादो । ओरालियमरीर-ओरालियमरीरगोवगाण मिच्छाइद्वि-सामण  
सम्मादिद्वीसु सणनकुमारदिदेव गेरइए अस्सिदूण गिरतरो वधो । अण्णन्ध सातेरो वत्तन्वो,  
असखेज्जवासाउएसु णुमयवेदुदयामावादो । तेउ-पम्म-सुक्कलेस्सियणुसयवेदोदइल्लतिरिक्ख  
मणुस्समिच्छाइद्वि-सासणे अस्सिदूण देवगइ-वेउजियसरीरदुगाण गिरतरो वधो वत्तन्वो ।

चाहिये, क्योंकि, आयुव-घके वदासे सम्यग्दृष्टियोंकी नारकियोंमें उत्पत्ति देखी जाती है ।  
नारकायु, नरकगतिद्विक और रतिवेदका सधत्र पुण्यवेदके समान परोदयसे वध होता  
है । नपुंसकवेदका स्वोदयसे वध होता है । एरेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय  
आति, आताप, स्वावर, सूक्ष्म, अपर्याप्त और साधारणका स्वोदय परोदय वध होता है,  
क्योंकि, इन उक्त स्थानोंमें तथा इनके प्रतिपक्ष स्थानोंमें नपुंसकवेदका उदय देखा जाता है ।

तियग्गाति, तियग्गातिप्रायाग्यानुपूर्वों और नीचगोत्रका सातर निरन्तर वध होता  
है, क्योंकि, तेज व चायु कायिक तथा सत्तम पृथिवीके नारकियोंमें मिथ्यादृष्टि व सासादन  
सम्यग्दृष्टि इन दोनों ही गुणस्थानोंमें निरन्तर बन्ध पाया जाता है । मनुष्यगति और  
मनुष्यगतिप्रायाग्यानुपूर्वोंका मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें सातर  
निरन्तर वध होता है, क्योंकि, आनतादिक देवोंमेंसे नपुंसकवेदोदय युक्त मनुष्योंमें उत्पन्न  
हुए तथा तीर्थंकर ऋषिकी सत्ताके साथ नारकियोंमें उत्पन्न हुए मिथ्यादृष्टियोंके निरन्तर  
वध पाया जाता है । भौदारिकशरीर और भौदारिकशरीरानुपागका मिथ्यादृष्टि और  
सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें मनरतुमारादि देव व नारकियोंका आश्रयकर निरन्तर  
वध होता है । अन्यत्र सातर बन्ध कहना चाहिये, क्योंकि, अमव्यातवर्षाणुकोंमें  
नपुंसकवेदके उदयका अभाव है । तेज, पद्म और शुफल लेश्यावाले नपुंसकवेदोदय युक्त  
तियन्त्रे व मनुष्य मिथ्यादृष्टि पर सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंका आश्रयकर देवगतिद्विक और  
वैश्विकशरीरद्विकका निरन्तर वध कहना चाहिये ।

उवघाद-परघादुस्सास-पत्तेयसरीराण असजदसम्मादिड्डीसु सोदय परोदओ वधो, गिरयगईए अपज्जत्तासजदसम्मादिड्डीसु वि एदामिं वधुवलभादो । तम वादर-पज्जत्त पत्तेयसरीर-परिचिदियजादीण मिच्छाइड्ढिग्घि वधो सोदय परोदओ, थावर सुहुमापज्जत्त-साहारण-त्रिगलिंदिएसु एदामिं वधुवलभादो । सत्र्यपयडीण वधस्स णत्थि देवाण सामित्त तत्थ णवुसयनेदुदयाभावादो । एइदिय आदान थानराण तिरिक्खगड मणुसगइ-मिच्छाइड्डी चैव सामी, देवा ण होंति, तेसु णवुसयनेदुदयाभानादो । अण्णो' वि जदि भेदो अत्थि सो सभालिय' वत्तव्वो ।

जधा इत्थियेदस्स परूवणा कदा तथा पुरिसयेदस्स वि कायव्वा । णवरि ओघपच्चएसु इत्थि णवुसयवेदपच्चया चैत्र सव्वगुणट्ठाणेषु अवणेदव्वा, सेसासेसपच्चयाण तत्थ सभनादो । इत्थि-णवुसयवेदाण वधो परोदओ, पुरिसयेदस्स सोदओ । उवघाद-परघादुस्सास-पत्तेय-सरीराणमसजदसम्मादिड्ढिग्घि सोदय परोदओ वधो । तित्थयरस्स परूवणा ओघतुल्ला । एव-मण्णो वि जदि भेदो अत्थि सो सभालिय वत्तव्वो ।

उपघात, परघात, उच्छ्वास और प्रत्येकशरीरका असयतसम्यग्दृष्टियोंमें स्वोदय परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, नरकगतिमें अपर्याप्त असयतसम्यग्दृष्टियोंमें भी इनका बन्ध पाया जाता है । व्रत, वादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर और पचेन्द्रियजातिका मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें स्वोदय परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, स्थावर, सूक्ष्म, अपर्याप्त, साधारण और विकलेन्द्रियोंमें इनका बन्ध पाया जाता है । सब प्रकृतियोंके बन्धके स्वामी देव नहीं हैं, क्योंकि, उनमें नपुंसकवेदके उदयका अभाव है । एकेन्द्रिय, आत्माप और स्थावरके तिर्यग्गति व मनुष्यगतिके मिथ्यादृष्टि ही स्वामी हैं, देव नहीं हैं, क्योंकि, उनमें नपुंसकवेदके उदयका अभाव है । अथ भी यदि भेद है तो उसको स्मरणकर कहना चाहिये ।

जिस प्रकार खीवेदकी प्ररूपणा की गई है उसी प्रकार पुरुषवेदकी भी करना चाहिये । विशेष इतना हे कि ओघप्रत्ययोंमेंले खीवेद और नपुंसकवेद प्रत्ययोंको ही सब गुणस्थानोंमें कम करना चाहिये, क्योंकि, शेष सब प्रत्ययोंकी वहा सम्भावना हे । खीवेद और नपुंसकवेदका बन्ध परोदय होता हे । पुरुषवेदका स्वोदय बन्ध होता हे । उपघात, परघात, उच्छ्वास और प्रत्येकशरीरका असयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें स्वोदय परोदय बन्ध होता है । तीर्थेनर प्रकृतिकी प्ररूपणा ओघके समान है । इसी प्रकार अन्य भी यदि भेद है तो उसको स्मरण कर कहना चाहिये ।

१ अत्रतो ' एइदिय अण्णो ' इति पाठ ।

२ त्रित्थि ' सा समारिय ', अत्रतो ' सा समालिय ' इति पाठ ।

अवगदवेदएसु पंचणाणावरणीय-चउदसणावरणीय-जसकिति  
उचागोद पचतराइयाणं को वधो को अवंधो ? ॥ १७८ ॥

सुगम ।

अणियट्टिप्पहुडि जाव सुहुमसांपराइयउवसमा खवा वधा ।  
सुहुमसांपराइयसुद्धिसजदद्वाए चरिमसमय गतूण वंधो वोच्छिज्जदि ।  
एदे वधा, अवेससा अवंधा ॥ १७९ ॥

देसामामियसुत्तमेद, वरद्धाण ववविणद्वहाण दोण्ण चेव परूवणादो । तेणेदेण  
सुइदत्थपरूवणा कीरदे । त जमा— एदासिं सौलमण्ह पयडीण पुव वधो पच्छ उदओ  
मेच्छिज्जदि, तहोनलभादो । एत्थुवउज्जती गाहा—

अगमचम्पू साहू इद्रियचम्पू असेसजीम जे ।

दना व ओहिचकरू केनलचम्पू निणा सत्रे ॥ २४ ॥

पचणाणारणीय चउदसणावरणीय पचतराइय-जसकिति-उच्चागोदाण सादओ चेव

अपगतवेदियोंमें पाच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, यशकीर्ति, उच्चगोत्र और  
पाच अन्नरायका कौन वधक और कौन अवधक है ? ॥ १७८ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

अनिवृत्तिकरणसे लेकर सूक्ष्मसाम्परायिक उपशमरू व क्षपक तक बन्धक हैं । सूक्ष्म  
साम्परायिकशुद्धिसयतकालके अन्तिम समयको जाकर बन्ध व्युच्छिन्न होता है । ये बन्धक हैं,  
शेष अवधक हैं ॥ १७९ ॥

यह सूत्र देशामर्शक है, क्योंकि, यह वधाध्वान और बन्धविनष्टस्थान इन दोनोंका  
ही प्ररूपण करता है । इसीलिए इसने सूचित अर्थकी प्ररूपणा करते हैं । यह इस प्रकार  
है— इन श्लोक प्रवृत्तियोंका पूर्वमें वध और पश्चात् उदय व्युच्छिन्न होता है, क्योंकि,  
वैसा पाया जाता है । महा उपयुक्त गाथा—

साधु आगम रूप चतुसे सयुक्त, तथा जितने सय जीम हं ये इन्द्रिय-चभुके  
धारक होते हं । अवधिज्ञान रूप चतुसे सहित देन, तथा केनलज्ञानरूप चभुसे युक्त सय  
होते हैं ॥ २५ ॥

पाच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, पाच अन्नराय, यशकीर्ति और उच्च

बधो, एत्थ एदासिं ध्रुवोदयत्तदसणादो । गिरतरो बधो, एत्थ बधुवरमाभावादो । पन्चया सुगमा, ओघम्मि परूविदत्तादो । अगडसजुत्तो बधो, अवगदवेदेसु चटुण्ण' गर्ईण बधामावादो । मणुसा चैव सामी, अण्णत्थ सत्रगुवसामगाणमभावादो । बधद्दाण बधविणट्टडाण च सुगम । पचणाणावरणीय च उदसणावरणीय पचतराइयाण तिनिहो बधो, धुपत्ताभावादो । जसकित्ति-उच्चागोदाण सादि-अद्धुणे, अद्धुन'पित्तादो ।

सादावेदणीयस्स को वंधो को अवंधो ? ॥ १८० ॥

सुगम ।

अणियट्टिप्पहुडि जाव सजोगिकेवली वंधा । सजोगिकेवलि-अद्धाए चरिमसमयं गंतूण वंधो वोच्छिज्जदि । एदे वंधा, अवसेसा अवंधा ॥ १८१ ॥

एदस्स अत्थो वुच्चेदे । त जहा— पुब्ब वधो पच्छा उदओ वोच्छिज्जदि, सजोगि-

गोत्रका स्वोदय ही बन्ध होता है, क्योंकि, यहा इन प्रकृतियोंके ध्रुवोदयित्व देखा जाता है । बन्ध इनका निरन्तर होता है, क्योंकि, यहा अन्यत्रिंशामका अभाव है । प्रत्यय सुगम है, क्योंकि, ओघमें उनकी प्ररूपणा की जा चुकी है । अगतिसयुक्त बन्ध होता है, क्योंकि, अपगतपेदियोंमें चारों गतियोंके बन्धका अभाव है । मनुष्य ही स्वामी हैं, क्योंकि, अन्य गतियोंमें क्षपक और उपशामकोंका अभाव है । उन्वाध्यात और बन्धविनष्टस्थान सुगम है । पाच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय और पाच अन्तरायका तीन प्रकारका बन्ध होता है, क्योंकि, ध्रुव बन्धका अभाव है । यशक्रीर्ति और उच्चगोत्रका सादि व अधुव बन्ध होता है, क्योंकि, ये अधुवबन्धी हैं ।

सातावेदनीयका कौन बन्धक और कौन अनन्धक है ? ॥ १८० ॥

यह सूत्र सुगम है ।

अनिष्टुत्तिकरणसे लेकर सयोगकेवली तक बन्धक हैं । सयोगकेवलिकालके अन्तिम समयको जाकर बन्ध व्युच्छिन्न होता है । ये बन्धक हैं, शेष अनन्धक हैं ॥ १८१ ॥

इस सूत्रका अर्थ कहते हैं । वह इस प्रकार है— पूर्वमें बन्ध और पश्चात् उदय व्युच्छिन्न होता है, क्योंकि, सयोगकेवली और अयोगकेवलीके अन्तिम समयमें क्रमसे

अनौगिचर्मिसमयमि वयोदययोच्छेदमणादो । सोदय-परोदओ वधो, पत्तवत्तण्णुदयत्तानो ।  
 गिरतरो ययो, पडिनम्बपयडीण नधाभावादो । पचया सुगम, ओवमि परुविदत्तादो ।  
 अगइसजुतो वयो, अगदयेदेसु गइचउन्नकस्म नधाभावादो । मणुमा मामी, अण्णत्थ  
 अगययेदानमभावादो । वयद्धाण नधमिणदृष्टाण च सुगम । सादि अद्धुओ वधो, अद्धु  
 वधित्तादो ।

कोधसजलणस्स को वधो को अवधो ? ॥ १८२ ॥

सुगम ।

अणियट्ठी उवममा सवा वधा । अणियट्ठिवादरट्ठाए सखेज्जे  
 भागे गतूण वधो वोच्छिज्जदि । एदे वंधा, अवसेसा अवधा ॥ १८३ ॥

एदस्मत्थो वुच्चदे— वधोदया सम वोच्छिज्जति, वधे वोच्छिण्णे सते उदया-  
 णुवलादो । सोदय परोदओ वधो, उभयहा पि नयिरोहाभावादो । गिरतरो, धुनवधित्तादो ।

उसके वध और उदयका व्युच्छेद देखा जाता है । स्योदय परोदय बन्ध होता है, क्योंकि,  
 परिवर्तित होकर उसने प्रतिपक्षभूत जसाता वेत्तनीयका उदय पाया जाता है ।  
 निरन्तर वध होता है क्योंकि, प्रतिपक्ष प्रतिके वधका जभाव है । प्रत्यय  
 सुगम है, क्योंकि, अघमें उनकी प्ररूपणा की जाचुनी है । अगतिसयुक्त वध  
 होता है, क्योंकि अपगतवधियोंमें चारों गतियोंमें वन्धका जभाव है । मनुष्य स्वामी है,  
 क्योंकि, अन्य गतियोंमें अपगतवधियोंका जभाव है । व वाचरान ओर वन्धमिनप्रस्थान  
 सुगम है । सादि व अद्धुव न्य होता है, क्योंकि वह अमुवन्धी प्रकृति है ।

स जलनकोधका कौन बन्धक और कौन अनन्धक है ? ॥ १८२ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

अनिवृत्तिकरणगुणस्थानवर्ती उपजमक व क्षपक बन्धक है । वादर अनिवृत्तिकरण  
 कालके सख्यात बहु भाग जाकर बन्ध व्युच्छिन्न होता है । ये बन्धक हैं, शेष अनन्धक  
 है ॥ १८३ ॥

इस सूत्रका अर्थ रहने है— मज्जलनजायका व ध ओर उदय दोनों एक सा  
 व्युच्छिन्न होने हैं, क्योंकि, व वने व्युच्छिन्न होनेपर फिर उदय पाया नहीं जाता ।  
 स्योदय परोदय वध होना है, क्योंकि, दोनों प्रकारसे भी बन्ध होनेका विरोध नहीं है ।  
 निरन्तर वध होता है, क्योंकि, वह धुनवन्धी है । अगतिसयुक्त बन्ध होता है, क्योंकि,

अगडसजुतो, एत्थ चउगइनधाभावादे । पच्चया सुगमा, ओघपच्चएहिंतो विसेसाभावादे । मणुसा चेव मामी, अण्णत्थेदेमिमभावादे । नपद्धान णत्थि, एककम्मि अद्धान्णिरोहादे । अधना अत्थि, पच्चवट्ठियणए अत्तलत्तिज्जमाणे अत्तगदवेदानमणियट्ठीण सत्तेज्जाणमुत्तलभादे अणियट्ठिकाल सत्तेज्जाणि खडाणि<sup>१</sup> करिय तत्थ बहुत्तडेसु अइक्कनेसु एगखडानसेसे कोव-मत्तलणम्म उधो वोच्छिण्णो । तिप्पिहो उधो, धुत्तनत्तितादे ।

माण-मायांसंजलणाणं को वंधो को अवंधो ? ॥ १८४ ॥

सुगम ।

अणियट्ठी उवसमा खवा वंधा । अणियट्ठिवादरद्दाए सेसे सेसे सत्तेज्जे भागे गंतूण वंधो वोच्छिज्जदि । एदे वंधा, अवसेसा अवधा ॥ १८५ ॥

एदासिं वधोदया सम वोच्छिज्जति, विणट्ठनमाणमुदयाणुत्तलभादे । सोदय-परोदओ, उभयहा ति वुत्तलभादे । णित्तेरो, धुत्तनत्तितादे । अत्तगयपच्चओ, ओघपच्चएहिंतो अत्तिसिद्ध-

यहा चारों गतियोंके वन्धका अभाव है । प्रत्यय सुगम है, क्योंकि, ओघप्रत्ययोंसे यहाँ फोड़ भेद नहा है । मनुष्य ही स्वामी है, क्योंकि, अन्य गतियोंमें अपगतप्रेदियोंका अभाव है । न-आधान नहीं है, क्योंकि, एक गुणस्थानमें अध्यानका विरोध है । अथवा वन्धाधान है, क्योंकि, पर्यायार्थिक नयना अवलम्बन करनेपर अपगतवेदी अनिवृत्तिकरणोंके सख्यात पाये जानेसे अनिवृत्तिकरणकालके सख्यात स्पष्ट करके उनमें बहुत स्पष्टोंके वीत जाने और एक स्पष्टके शेष रहनेपर सत्तलननोधका वन्ध व्युच्छिन्न होता है । तीन प्रकारका वन्ध होता है, क्योंकि, वह धुत्तनधी है ।

सज्जलनमान और मायाका कौन वन्धक और कौन अवन्धक है ? ॥ १८४ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

अनिवृत्तिकरण उपशमक व क्षपक वन्धक हैं । अनिवृत्तिकरणवादरकालके शेष शेष कालमें सख्यात बहुभाग जाकर वन्ध व्युच्छिन्न होता है । ये वन्धक हैं, शेष अवन्धक हैं ॥ १८५ ॥

इन दोनों प्रवृत्तियोंका वन्ध और उदय दोनों साथ व्युच्छिन्न होते हैं, क्योंकि, वन्धके नष्ट हो जानेपर इनका उदय नहीं पाया जाता । म्पोदय परोदय वन्ध होता है, क्योंकि, दोनों प्रकारसे भी वन्ध पाया जाता है । निरन्तर वन्ध होता है, क्योंकि, वे

पचयत्तादो । अगइसजुतो, एत्थ चउगइन्धाभात्तादो । मणुमसामिओ<sup>१</sup>, अण्णत्थवगदवेदाभात्तादो ।  
 वधद्धान्निओ, दव्वद्वियणयत्तिसयम्मि मच्चमगहे अद्धानाणुत्तवत्तीदो<sup>२</sup> । अघना अद्धानम  
 णिओ, अवलनियपज्जवद्वियणयत्तादो । कोधवधोच्छिण्णद्धानादो उवरिममद्धान सत्तेज्जसद्धानि  
 काऊण बहुखडेसु अइक्कत्तेसु एयसडात्तसेसे माणत्तयो चोच्छिज्जदि । पुणो मेममेय खड  
 सखेज्जाणि खडाणि करिय तत्थ बहुखडेसु अइक्कत्तेसु एयसडात्तसेसे मायत्तयो चोच्छिज्जदि ।  
 एद कुदो वगम्भे ? सेमे सेमे सत्तेज्जाभाग गत्तूणे ति जिणत्तयणादो वगम्भे । निविहो,  
 धुवत्ताभावादो ।

## लोभसजलणस्स को वधो को अवधो ? ॥ १८६ ॥

सुगम ।

धुवधो प्रवृत्तिया ह । प्रत्यय अवगत ह, क्योंकि, ओघप्रत्ययोंसे यहा कोइ विशेषता नहीं  
 है । अगतिसयुत्त बन्ध होता है, क्योंकि, यहा चारों गतियोंके बन्धका अभाव है । मनुष्य  
 स्वामी है, क्योंकि, अय गतियोंमें अपगतवेदियोंका अभाव है । वन्धाधान नहीं है,  
 क्योंकि, द्रव्यार्थिक नयके निययभूत सब समग्रके होनेपर अध्यान बनता नहीं है । अथवा  
 पर्यायार्थिक नयका अग्रलम्बन करनेसे अध्यानसे सहित रूध होता है । क्रोधक  
 बन्धव्युच्छित्तिस्थानमें ऊपरके कालके सरयान खण्ड करके बहुत खण्डोंको बिताकर एक  
 खण्डके शेष रहनेपर मानका बन्ध व्युच्छिन्न होता है । तत्पश्चात् शेष एक खण्डके  
 सत्यात् खण्ड करके उनमें बहुत खण्डोंको बिताकर एक खण्डके शेष रहनेपर मायाका  
 बन्ध व्युच्छिन्न होता है ।

शका—यह कहासे जाना जाता है ?

समाधान—‘शेष शेषमें सत्यात् बहुभाग जानर’ इस जिनवचनसे उक्त  
 बन्ध व्युच्छिन्नता जाना जाता है ।

तीन प्रकारका बन्ध होता है, क्योंकि, धुव बन्धका अभाव है ।

मन्दल्लोभका कौन बन्धक और कौन अवन्धक है ? ॥ १८६ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

<sup>१</sup> प्रतिपु 'मणुमावामिओ' इति पाठ ।

<sup>२</sup> प्रतिपु 'अण्णत्थववत्तीदा' इति पाठ ।

अणियट्टी उवसमा खवा वंधा । अणियट्टिवादरद्धाए चरिमसमयं  
गंतूण वधो वोच्छिज्जदि । एदे वधा, अवसेसा अवंधा ॥ १८७ ॥

एदस्स अत्थो वुन्चदे— वधो पुव्वमुदओ पच्छ वोच्छिज्जदि, अणियट्टि-सुहुम-  
सापराइयचरिमसमयम्मि चवोदयवोच्छेदुवलभादो । सोदय-परोदओ, उभयहा वि ववुवलभादो ।  
णिरत्तो वधो, वुववधित्तादो । अणयपन्चओ, ओवंपन्चएहिंतो अणिसिद्धपन्चयत्तादो । अगइ-  
सज्जतो, चउगइवधाभावादो । मणुससामिओ, अण्णत्थ सणगुवसामगाणमभावादो । वधद्वान  
णदिय, सुत्ते अणुवदिट्ठत्तादो । किमइमणुवदिट्ठ ? दव्वड्डियानलणणादो । तिनिहो वधो, धुव-  
वधित्तादो ।

कसायाणुवादेण कोधकसाईसु पंचणाणावरणीय [ चउदंसणा-  
वरणीय सादावेदणीय-] चटुसजलण-जसकित्ति-उच्चागोद-पंचंतराइयाणं  
को वंधो को अवंधो ? ॥ १८८ ॥

अनिवृत्तिकरण उपशमक व क्षपक बन्धक हैं । अनिवृत्तिकरणनादरकालके अन्तिम  
समयको जाकर बन्ध व्युच्छिन्न होता है । ये बन्धक हैं, शेष अनन्धक हैं ॥ १८७ ॥

इस सूत्रका अर्थ कहते हैं— बन्ध पूर्वमें व्युच्छिन्न होता है, पश्चात् उदय  
व्युच्छिन्न होता है, क्योंकि, अनिवृत्तिकरण और सूक्ष्मसाम्परायिक गुणस्थानके अन्तिम  
समयमें भ्रमसे बन्ध और उदयका व्युच्छेद पाया जाता है । सोदय परोदय बन्ध  
होता है, क्योंकि, दोनों ही प्रकारसे बन्ध पाया जाता है । निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि,  
उक्त प्रकृति ध्रुवबन्धी है । ओघप्रत्ययाने यहा कोई विशेषता न होनेसे उक्त प्रकृतिके बन्धके  
प्रत्यय अचगत हैं । अगतिसयुक्त बन्ध होता है, क्योंकि, यहा चारों गतियोंके बन्धका अभाव  
है । मनुष्य स्वामी है क्योंकि, अन्य गतियोंमें क्षपक व उपशामकाका अभाव है । व धाध्यान  
है नहीं, क्योंकि, सूत्रमें उसका उपदेश नहीं है ।

शंका—सूत्रमें बन्धाध्यानका उपदेश क्यों नहीं किया गया है ?

समाधान—द्रव्यार्थिकरणयका अवलम्बन करनेसे सूत्रमें उगका उपदेश नहीं  
किया गया है ।

तीन प्रकारका बन्ध होता है, क्योंकि, वह ध्रुवबन्धी प्रकृति है ।

कपायमार्गणानुमार कोधकसायी जीवोंमें पाच जानावरणीय, [ चार दर्शनावरणीय,  
सातावेदनीय ], चार सज्वलन, यशक्रीति, उच्चगोत्र और पाच अन्तराय, इनका कौन  
बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ १८८ ॥



गाद मि-अइद्वि सामणमम्माइद्वि-सम्मामिच्छाइद्वि-असन्दसम्मादिद्विणो देव मणुमगडमजुत्त  
वधति, अण्णगइहि वधन्निगेहादो । उररिमा देवगडसजुत्तमणियद्विणो अगइसजुत्त वधति ।

चउगडमिच्छाइद्वि सासणमम्मादिद्वि सम्मामिच्छाइद्वि-अमन्दसम्मादिद्विणो सामी ।  
दुगइसजदासजदा । अरसेमा मणुमा, अण्णत्थ तेमिमणुमभादो । वधद्वान सुगम । वधन्निणासा  
णत्थि, वधुमलभादो । धुमन्नीण मि-अइद्विमिह चउन्निहो वधो । उररिमगुणेषु तिक्खिहो,  
धुवत्ताभावादो । अरसेसाण पयडीण सादि अद्दुओ, अद्दुवधित्तादो ।

## वेद्व्याणी ओघं ॥ १९० ॥

शीणगिद्वितिय अणताणुवविचउक्क इत्थिनेद-तिरिक्खाउ-तिरिक्खाइ-चउसठाण-  
चउसयडण-तिरिक्खाइपाओग्गाणुपुत्ति-उज्जेण अण्णमत्थनिहायगड दुमग दुस्सर-अणादेज्ज-  
णीचागोदाण वेद्व्याणियसण्णा, देसु गुणहाणेषु चिद्विति ति उप्पत्तीदो । एदासिं परूवणा

उच्चगोत्रो मिथ्याद्वि, सासादनसम्यग्द्वि, सम्यग्मिथ्याद्वि और असयतसम्यग्द्वि  
देव व मनुष्य गानिते सयुक्त वाधते हैं, क्योंकि, अथ गानियोंके साथ उसके वधका  
विरोध है । उपरिम जीव देवगतिसं सयुक्त, तथा अनिष्टकारणगुणस्थानवर्ती अर्थात्  
सयुक्त वाधते हैं ।

चारों गतियोंके मिथ्याद्वि, सासादनसम्यग्द्वि, सम्यग्मिथ्याद्वि और असयत  
सम्यग्द्वि स्वामी हैं । दो गतियोंके सयतासयत स्वामी ह । शेष गुणस्थानवता मनुष्य ही  
स्वामी हैं, क्योंकि, अथ गतियोंमें वे गुणज्ञान पाये नह जाते । उधाध्वान सुगम ह ।  
उधन्निनादा है नहीं, क्योंकि, उनका वध पाया जाता है । धुवन्धी प्रकृतियोंका मिथ्याद्वि  
गुणस्थानमें चारों प्रकारका वध होता है । उपरिम गुणस्थानोंमें तीन प्रकारका वध होता  
है, क्योंकि, वहा धुव वन्धन अभावा है । शेष प्रकृतियोंका सादि व अधुव वध होता है,  
क्योंकि, वे अधुवन्धी हैं ।

द्विस्थानिक प्रकृतियोंकी प्ररूपणा ओघके समान है ॥ १९० ॥

स्थानगृह्णित्य, अनतानुवाचिचतुप्प, खवेद, तियगायु, तियग्गानि, चार सस्थान,  
चार महान, तियग्गतिप्रयत्तानुपूर्वा, उच्चोत्त अप्रशस्तत्रिहायोगति, दुमग, दुस्सर,  
अनादिय और नीचगात्र, इन प्रकृतियोंकी द्विस्थानिक मजा है, क्योंकि, 'जो दो गुणस्थानोंमें  
रहें वे द्विस्थानिक ह' ऐसी व्युत्पत्ति है । इसकी प्ररूपणा ओघके समान है, क्योंकि,

शोधतुल्ला, त्रिसैसाभावादो । त जहा — अणताणुअधिचउक्कस्स वधोदया सम वोच्छिण्णा, सासणम्मि तदुभयाभावदसणादो । धीणगिद्वितियस्स पुच्च वधो पच्छा उदओ वोच्छिज्जदि, सासणसम्माइड्डि पमत्तमजदेसु कमेण वधोदययोच्छेदुवलभादो । तिरिक्खाउ तिरिक्खगइ-उज्जेण पीचागोदानमेण चैन । णवरि सजदासजदम्मि उदययोच्छेदो । एवमित्थिवेदस्स वि । णवरि अणियद्विम्हि तदुच्छेदो । चउसठाण अप्पसत्थविहायगइ दुस्सराणमेव चैन । णवरि एत्थ उदययोच्छेदो णत्थि । चउसघडणाणमेव चैन । णवरि अप्पमत्तसजदेसु निदिय-तदिय-सघडणाणमुदययोच्छेदो । चउत्थ-पचमाण णत्थि उदययोच्छेदो, उवसतकसाएसु तदुच्छेद-दसणादो । तिरिक्खगइपाओगाणुपुच्ची दुभग-अणादेजाण पुच्च वधो पच्छा उदओ वोच्छिण्णो, सासणमम्मादिड्डि-असजदसम्मादिड्डीसु कमेण वधोदययोच्छेददसणादो ।

अणताणुअधिकोधस्स सोदओ उधो । तिण्ह कमायाण परोदओ, तेसिमेत्थुदयाभावादो । अउसेसपयडीण सोदय-परोदओ, उभयहा त्रि वधनिरोहाभावादो । इत्थिवेद-चउसठाण-चउ-

शोधसे इनमें कोई भेद नहीं है । वह इस प्रकार है — अनन्तानुयन्धिचतुष्कका बन्ध और उदय दोनों सायमं व्युच्छिन्न होते हैं, क्योंकि, सासादन गुणस्थानमें उन दोनोंका अभाव देखा जाता है । स्थानगृह्णिक्यका पूरमें वध और पश्चात् उदय व्युच्छिन्न होता है, क्योंकि, सासादनसम्पगृह्णिक्य और प्रमत्तसयत गुणस्थानोंमें क्रमसे बन्ध व उदयका व्युच्छेद पाया जाता है । तिर्यगायु, तिर्यग्गति, उद्योत और नीचगोत्रकी भी प्ररूपणा इसी प्रकार ही है । विशेषता केवल इतनी है कि सयतासयत गुणस्थानमें उनका उदयव्युच्छेद होता है । इसी प्रकार श्रौवेदकी भी प्ररूपणा है । विशेष इतना है कि अनिवृत्तिकरण गुण स्थानमें उसके उदयका व्युच्छेद होता है । चार सस्थान, अप्रशस्तविहायोगति और दुस्वरकी प्ररूपणा भी इसी प्रकार ही है । विशेष इतना है कि यहा उनका उदय व्युच्छेद नहीं है । चार सहननोंकी प्ररूपणा भी इसी प्रकार ही है । विशेष इतना है कि अप्रमत्तसयतोंमें द्वितीय और तृतीय सहननका उदयव्युच्छेद होता है । चतुर्थ और पचम सहननका उदयव्युच्छेद नहीं है, क्योंकि, उपशान्तन्यायोंमें उनसे उदयका व्युच्छेद देखा जाता है । तिर्यग्गति प्रायोग्यानुपूर्वी, दुर्भग और अनदियका पूरमें बन्ध और पश्चात् उदय व्युच्छिन्न होता है, क्योंकि, सासादनसम्पगृह्णिक्य और असयतसम्पगृह्णिक्य गुणस्थानोंमें क्रमसे उनके बन्ध व उदयका व्युच्छेद देखा जाता है ।

अन-तानुयन्धिकोधका सोदय बन्ध होता है । तीन क्यार्योंका परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, यहा उनके उदयका अभाव है । शेष प्रकृतियोंका सोदय परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, दोनों प्रकारसे भी उनके बन्धका कोई निरोध नहीं है ।

श्रौवेद, चार सस्थान, चार सहनन, उद्योत, अप्रशस्तविहायोगति, दुर्भग, दुस्वर,

मघटण उज्जोप अप्पसत्यत्रिहायगइ दुभग दुस्सर अणादेज्जाण वयो सातरो, एगसमएण वि  
 बहुउरमदमणादो । तिरिस्सगइ तिरिस्सगइपाओग्गाणुपुट्टिणीचागोदाण दोसु वि गुणद्वेषेसु  
 सातर गिरतरा वयो, तेउ वाउक्काइएसु सत्तमपुढविणेरुइएसु च गिरतरउधुउरुभादो । अयमेमाण  
 पयटीण वयो गिरतरो, एगसमएण उधुउरमाभाजादो । पच्चया सुगमा ।

तिरिस्साउ तिरिस्सगइपाओग्गाणुपुट्टि-उज्जोपाणि तिरिक्खगइसजुत्त वधति । इति-  
 वेद तिगइमजुत्त, गिग्गइए वधाभाजादो । चउसठाण चउयघडणाणि तिरिस्स मणुसगइसजुत्त  
 वधति, अणगइहि वधाभाजादो । अप्पसत्यत्रिहायगइ-दुभग दुस्सर अणादेज्ज-णीचागोदाणि  
 तिगइसजुत्त वधति, देउगइए वधाभाजादो । सामणो तिरिस्स मणुसगइसजुत्त वधइ, तस्सण-  
 गइहि त्रिरोहादो । चउगमिञ्जिदिट्ठि-मासणमम्मादिट्ठिणो सामी । उवरि सुगम, बहुमो  
 परुविदत्तादो ।

### जाव पच्चक्खाणावरणीयमोघ ॥ १९१ ॥

वेडाणदडय परुविय पञ्जा जणेद सुत्त परुविद तेण णिहादडयमादिं कादूणे ति  
 अत्थानत्तीसे अणगम्मोद । णिदा असादेगइणाण अपच्चक्खाणाण पच्चक्खाणाण दडयाण परुक्खाणाए

और अनादेयना धन्व सातर होता है क्योंकि एउ समयमे भी उनका उन्धविश्राम देखा  
 जाता है। नियगति, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वा वार नीचतोत्रका दोनों ही गुणस्थानोंमें सातर  
 निरतर वय होता है, क्योंकि, तेजसाधिक व चायुसाधिक तथा मसम पृथिवीके नारकियोंमें  
 निरतर वय पाया जाता है। शर मृत्तियोंके वय निरतर होता है क्योंकि, एक  
 समयसे उनके वयप्रविश्रामका जमाव है। प्रत्यय सुगम है।

नियगायु, नियगतिप्रायोग्यानुपूर्वा शर उद्योतको तिर्यग्गतिसे सयुक्त वाधते हैं।  
 खोवेदने तीन गतियोंसे सयुक्त वाधते हैं, क्योंकि, नररगतिक साथ उसके वयका  
 जमाव है। चार स्थान शर चार सहनार्कों तिर्यग्गति वार मनुष्यगतिसे सयुक्त वाधते  
 हैं, क्योंकि, अय गतियोंके साथ उनके उन्धका जमाव है। अप्रशस्तविहायोगति, दुर्भग,  
 दुस्सर, जनादेय वार नीचगात्रको तीन गतियोंसे सयुक्त वाधते हैं, क्योंकि देवगतिके साथ  
 इनके वयका जमाव है। सामानसम्यग्दृष्टि हैं नियग्गति व मनुष्यगतिसे सयुक्त वाधता  
 है, क्योंकि उसके अय गतियोंके साथ उनके वय निरोध है। चारों गतियोंके मिथ्यादृष्टि  
 वार सामानसम्यग्दृष्टि स्वामी हैं। उपरिम प्ररूपणा सुगम है, क्योंकि, वह वदुत्त वार  
 की जा चुका है।

प्रत्याख्यानारणीय तरु मन प्रकृतियोंकी प्ररूपणा ओघके समान है ॥ १९१ ॥

छिस्वान्तण्डककी प्ररूपणा तरुके पीउ चूकि इस सूत्रकी प्ररूपणा की गई है अत

एव 'निद्रानण्डकको आदि करके', यह ज्ञापयित्तम जाना जाता है। निद्रा, असातावेदनीय,  
 अस्थानिक, अमत्याख्यान वार प्रत्याख्यान दण्डकोंकी प्ररूपणा आघके समान है। उसकी

ओघभगो । सो वि चितिय एत्थ वत्तञ्जे ।

### पुरिसवेदे ओघ ॥ १९२ ॥

एमो पुरिमवेदणिहेमो जेण देसामासियो तेण पुरिमवेददडय माणदडय-लोहदडयाण गहण । जहा एदेसिं दडयाणमोघम्मि परूणणा रुदा तहा एत्थ वि कायच्चा । णरि पच्चयविसेमो जाणिय वत्तञ्जे ।

### हस्त रदि जाव तित्थयरे त्ति ओघं ॥ १९३ ॥

हस्त रदिसुतमादिं कादूण जाव तित्थयरसुत्त ति ताव एदेसिं सुत्ताणमोवपरूणण-मनहारिय परूवेदच्च ।

माणकसाईसु पंचगाणावरणीय चउदंसणावरणीय-सातावेदणीय-तिणिगसंजलण-जसकित्ति-उच्चगोद-पंचंतराइयाणं को वंधो को अवंधो ? ॥ १९४ ॥

सुगम ।

भी विचार कर रहा कहना चाहिये ।

पुरुषवेदकी प्ररूपणा ओघके समान है ॥ १९२ ॥

यह पुरुषवेद पदका निदश चूकि देशामर्जक हे, जत इसमे पुरुषवेददण्डक, मानदण्डक और लोभदण्डकका ग्रहण करना चाहिये । जिन प्रकार इन दण्डकोंकी ओपमें प्ररूपणा की गई है उसी प्रकार यहा भी करना चाहिये । विदंग्य इतना हे कि प्रत्ययभेद जानकर कहना चाहिये ।

हास्य व रतिमे लेकर तीर्थकर प्रकृति तरु ओघके समान प्ररूपणा है ॥ १९३ ॥

हास्य रति सूत्रको आदि करके तीर्थकर सूत्र तरु इन सूत्रोंकी ओपप्ररूपणाका निश्चय कर प्ररूपणा करना चाहिये ।

मानकपायी जीर्णोंमें पाच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, सातावेदनीय, तीन सज्वलन, यशस्कीर्ति, उच्चगोत्र और पाच अन्तरायका कौन वचनक और कौन अग्रन्धक है ? ॥ १९४ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

मिच्छादृष्टिपहुडि जाव अणियट्टि उवसमा खवा वंधा । एदे  
बंधा, अवधा णत्थि ॥ १९५ ॥

कोधसजलणमेत्थ एदाहि सह किण्ण परूविद ? ण, तस्स माणसजलगवधादो  
पुब्बमेव वोच्छिण्णवधस्स माणादीहि उवद्धाण पडि पच्चासच्चैए अभावादो । एदस्स सुत्तस्स  
परूवणाण कोधमगो । णवरि माणस्स सोदओ, अण्णेसिं कमायाण परोदओ वधो । पच्चएसु  
माणकमाय मोत्तूण सेमकमाया अवणेदवा । सेम जाणिय उत्तव ।

वेद्वणि जाव पुरिसवेद-कोधसजलगाणमोघ ॥ १९६ ॥

वेद्वणि ति उते वेद्वणिय णिदा असादे मिच्छत अरुचक्खाण-पच्चक्खाणइडया  
धेतत्त्वा, देसामासियतादो । पुरिसवेद-कोधसजलणे ति उते तस्म एकम्ममेव सुत्तस्स महण  
कायव्व । एदेसिं सुत्ताणमोघपरूवणमवहारिय उत्तव ।

मिथ्यादृष्टिमे लेकर अनिवृत्तिकारणगुणस्थानमतीं उपशमक व क्षयक तत्र बन्धक है ।  
ये बन्धक हैं, अनन्धक कोई नहीं हैं ॥ १९५ ॥

शका—यहा इन प्रवृत्तियोंके साथ सज्वलन शोधकी प्ररूपणा क्यों नहीं की गई है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि सज्वलनमानके बन्धसे उसका बन्ध पूर्वमें ही छुट्टि  
हो जाता है, अत एव मानादिकोंके साथ उधत्थानके प्रति उसकी प्रत्यासत्तिका अभाव  
है । इसी कारण उसकी प्ररूपणा यहा नहीं की गई है ।

इस सूत्रकी प्ररूपणा शोधके समान है । विशेष इतना है कि मानका स्वोदय और  
अय कपायोंका परोदय वध होता है । प्रत्यर्थमें मानकपायका छोड़कर शोध कपायोंको  
कम करना चाहिये । शोध प्ररूपणा जानकर कहना चाहिये ।

द्विस्थानिक प्रवृत्तियोंको लेकर पुरुषवेद और सज्वलनकोध तक शोधके समान प्ररूपणा  
है ॥ १९६ ॥

‘द्विस्थानिक’ ऐसा कहनेपर द्विस्थानिक, निद्रा, भसतावेदनीय, मिथ्यात्व,  
अप्रत्याख्यानारण और प्रत्याख्यानारण दण्डनोंका ग्रहण करना चाहिये, क्योंकि, यह  
देसामशक पद है । पुरुषवेद व सज्वलनकोध, ऐसा कहनेपर उस एक ही मूलका ग्रहण  
करना चाहिये । इन सूत्रोंकी शोधप्ररूपणाका निश्चय कर व्याख्यान करना चाहिये ।

हस्त-रदि जाव तित्थयरे त्ति ओघं ॥ १९७ ॥

सुगममेद, बहुसो परुविदत्थत्तादो ।

मायकसाईसु पंचणाणावरणीय चउदसणावरणीय-सादावेदणीय-  
दोष्णिणसंजलण जसकित्ति उच्चागोद-पचंतराइयाणं को वंधो को  
अवंधो ? ॥ १९८ ॥

सुगममेद ।

मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव अणियट्ठी उवसमा खवा वंधा । एदे  
वंधा, अवंधा णत्थि ॥ १९९ ॥

एद पि सुत्त सुगम ।

वेट्ठाणि जाव माणसंजलणे त्ति ओघ ॥ २०० ॥

वेट्ठाणि-णिदासादेगैट्ठाण-अपच्चकखाण-पच्चकखाण-पुरिस-कोध-माणसुत्ताणमोघपरु-  
वणमनहारिय परुवेदव्व ।

हास्य व रतिसे लेकर तीर्थकर तक ओघके समान प्ररूपणा है ॥ १९७ ॥

यह सूत्र सुगम है, क्योंकि, इसके अर्थकी बहुत वार प्ररूपणा की जा चुकी है ।

मायारुपायी जीवोंमें पाच जानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, सादावेदनीय, दो  
सज्वलन, यशकीर्ति, उच्चगोत्र और पाच अन्तराय, इनका कौन बन्धक और कौन अवन्धक  
है ? ॥ १९८ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

मिथ्यादृष्टिसे लेकर अनिवृत्तिकरण उपशमक व क्षपक तक वन्धक हैं । ये बन्धक  
हैं, अवन्धक कोई नहीं हैं ॥ १९९ ॥

यह भी सूत्र सुगम है ।

द्विस्थानिक प्रकृतियोंको लेकर सज्वलनमान तक ओघके समान प्ररूपणा है ॥ २०० ॥

द्विस्थानिक, निद्रा, असातावेदनीय, एकस्थानिक, अप्रत्याख्यान, प्रत्याख्यान,  
पुरुरवेद, मोघ और मान मृत्रोंकी ओघप्ररूपणाका निश्चय कर प्ररूपणा करना चाहिये ।

हस्त रदि जाव तित्थयरे त्ति ओघं ॥ २०१ ॥

सुगममेद ।

लोभकसाईसु पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-सादावेदणीय  
जसकित्ति उच्चगोद-पचतराइयाणं को वधो को अवधो ? ॥२०२॥

सुगम ।

मिच्छाडट्टिप्पहुडि जाव सुहुमसांपराइयउवसमा ख्वा वंधा ।  
एदे वंधा, अवधा णत्थि ॥ २०३ ॥

एद सुगम ।

सेस जाव तित्थयरे त्ति ओघ ॥ २०४ ॥

सुगम ।

अकसाईसु सादावेदणीयस्स को वधो को अवंधो ? ॥१०५॥

सुगम ।

हास्य व रतिसे लेकर तीर्थकर प्रकृति तरु ओषके समान प्ररूपणा है ॥ २०१ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

रोमकपायी जीवोंमें पाच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, सातावेदनीय, यशकीर्ति,  
उच्चगोत्र और पाच अन्तरायका कौन बन्धक और कौन अनन्धक है ? ॥ २०२ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

मिध्यादष्टिमे लेकर सूक्ष्मसाम्प्रायिक उपशमक व क्षपक तरु बन्धक हैं । ये बन्धक  
हैं, अनन्धक कोई नहीं हैं ॥ २०३ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

तीर्थकर प्रकृति तरु शेष प्रकृतियाकी प्ररूपणा ओषके समान है ॥ २०४ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

अकपायी जीवोंमें सातावेदनीयका कौन बन्धक और कौन अवन्धक है ? ॥२०५॥

यह सूत्र सुगम है ।

उवसंतकसायवीदरागछट्टुमत्था खीणकसायवीदरागछट्टुमत्था  
सजोगिकेवली वंधा । सजोगिकेवलिअद्वाए चरिमसमयं गंतूण वंधो  
वोच्छिज्जदि । एदे वंधा, अवसेसा अवंधा ॥ २०६ ॥

एदस्स अत्थो । त जहा — सादावेदणीयस्स' पुच्च वधो पच्छा उदओ वोच्छिण्णो,  
सजोगि-अजोगिकेवलीसु कमेण उधोदयवोच्छेददसणादो । सोदय-परोदओ, उभयहा वि वधा-  
विरोहादो' । णिरत्तो, पडिवस्सपयडीए वधामानादो । उवसत-खीणकसाएसु णव जोगपच्चया ।  
सजोगीसु मत्त । अगइसजुत्तो नयो । मणुसा सामी । सादि-अद्दुवो, वधो, अद्दुवनवितादो ।

गाणाणुवादेण मदिअण्णाणि सुदअण्णाणि-विभंगणाणीसु पंच-  
णाणावरणीय णवदसणावरणीय-सादासाद-सोलसकसाय अट्टुणोकसाय-  
तिरिक्खाउ मणुसाउ-देवाउ-तिरिक्खगइ-मणुसगइ-देवगइ-पंचिंदिय-  
जादि-ओरालिय-वेउव्विय तेजा कम्मइयसरीर-पंचसंठाण-ओरालिय-

उपशान्तकपाय वीतरागछट्टुमस्थ, क्षीणकपाय वीतरागछट्टुमस्थ और सयोगिकेवली  
बन्धक हैं । सयोगिकेवलिकालके अन्तिम समयको जाकर बन्ध व्युच्छिन्न होता है । ये  
बन्धक हैं, शेष अनन्धक हैं ॥ २०६ ॥

इस मूत्रका अर्थ कहते हैं । वह इस प्रकार है— सादावेदनीयका पूर्वमें बन्ध  
और पश्चात् उदय व्युच्छिन्न होता है, क्योंकि, सयोगिकेवली और अयोगिकेवली गुणस्थानोंमें  
क्रमसे उसके बन्ध और उदयका व्युच्छेद देखा जाता है । उसका स्वोदय परोदय बन्ध होता  
है, क्योंकि, दोनों प्रकारसे भी उसने बन्धका विरोध नहीं है । निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि,  
उसकी प्रतिपक्ष प्रवृत्तिका यहा अभाव है । उपशान्तकपाय और क्षीणकपाय जीवोंमें नौ  
योग प्रत्यय तथा सयोगी जिनोंमें सात हैं । अगतिसयुक्त बन्ध होता है । मनुष्य स्वामी है ।  
सादि व अध्वर बन्ध होता है, क्योंकि, वह अध्वरबन्धी है ।

ज्ञानमार्गणके अनुमाग मत्तजानी, श्रुताजानी और विभगजानी जीवोंमें पाच  
ज्ञानावरणीय, नौ दर्शनावरणीय, साता व अमाता वेदनीय, सोलह कपाय, आठ नोकपाय,  
तिर्यगायु, मनुष्यायु, देवायु, तिर्यग्गति, मनुष्यगति, देवगति, पचेन्द्रियजाति, औदारिक,  
वैक्रियिक, तैजस व कामिण शरीर, पाच सस्थान, औदारिक व वैक्रियिक शरीरागोपाग, पाच

१ अत्रतो 'सादासादवेदणापस्स', अत्रतो 'सादासादयस्स' इति पाठ ।

२ प्रतिपु 'वधविरोहादो' इति पाठ ।



वेउव्वियसरीरअंगोवग पचसधडण वण्ण गंध रस- फास-तिरिक्कगइ-  
मणुसगइ- देवगइपाओग्गाणुपुव्वी-अगुरुअलहुअ-उवघाद-परघाद-  
उस्सास-उज्जाव दोविहायगइ तस वादर-पज्जत्त पत्तेयसरीर थिराथिर-  
सुहासुह-सुभग दुभग सुस्सर-दुस्सर- आदेज्ज-अणादेज्ज-जसकित्ति-  
अजसकित्ति णिमिण णीचुच्चागोद पचतराइयाण को वधो को अवधो ?  
॥ २०७ ॥

सुगम ।

मिच्छाइट्ठी सासणसम्माइट्ठी वधा । एदे वधा, अवधा णत्थि

॥ २०८ ॥

एत्थ उदयादो वधो पुत्र पच्छा ना वोच्छिज्जदि त्ति विचारो णत्थि, एदासि पयड्डीण  
वधोदयवोच्छेदाभासादो । पचणाणाअरणीय चउदसणावरणीय तेजा कम्मइयसरीर वण्ण-गंध-रस  
फाम अगुरुअलहुअ थिराथिर सुहासुह णिमिण पचतराइयाण सोदओ वधो, धुवोदयत्तादो ।  
देसाउ देगइ वेउव्वियसरीर-वेउव्वियसरीरअंगोवग देवगइपाओग्गाणुपुव्वीण परोदओ वधो,

महनन, रण, गन्ध, रस, स्पर्श, तिर्यग्गति, मनुष्यगति न देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, अगुरुलहु,  
उपघात, परघात, उच्छ्वास, उद्योत, दो विहायोगतिया, तम, वादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर,  
स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुभग, दुर्भग, सुस्वर, दुस्वर, आदेय, अनादेय, यशकीर्ति,  
अयशकीर्ति, निर्माण, नीच न उच्च गोत्र और पाच अन्तराय, इनका कौन बन्धक और कौन  
अबन्धक है ? ॥ २०७ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि बन्धक हैं । ये बन्धक हैं, अबन्धक कोई नहीं  
हैं ॥ २०८ ॥

यहां उदयसे वध पूरमें या पश्चात् व्युत्थित होता है, यह विचार नहीं है,  
क्योंकि, इन प्रकृतियोंके वध न उदयके व्युत्थेदना यहां अभाव है ।

पाच भानाअरणीय चार दानाअरणीय, तैजस व कामण शरीर, वण, गंध,  
रस, स्पर्श, अगुरुअणु स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, निर्माण और पांच अन्तरायका  
इय वध होता है, क्योंकि, ये ध्रुवोदयी प्रकृतिया ह । देवाणु देवगति, धैर्यिकशरीर,  
अशरीरगोपाग और देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वीका परोदय वध होता है, क्योंकि, इन

एदासिं बधोदयाणमक्कमेण वुत्तिविरोहादो । पचदसणावरणीय-सादासाद-सोलसकसाय-  
अट्टणोकसाय-तिरिक्ख मणुसाउ तिरिक्ख मणुमगइ-ओरालिक्खसरीर-पचसठाण-ओरालिक्खसरीर-  
अगोत्र-पचसघडण-तिरिक्ख-मणुसगडपाओग्गाणुपुवी-उवघाद-परघाद-उस्सास-उज्जोत्र-  
देविहायगइ-पत्तेयसरीर-सुभग दुभग-सुम्भर-दुस्वर-अदेज्ज अणदेज्ज जसकिति अजसकिति-  
णीचायोदाण सोदय-परोदओ बधो, दोहिं पियरोहि बधविरोहाभावादो । पचिंदिय-तस-  
घादर-पञ्जताण मदि-सुदअण्णाणिमिन्नाड्डीसु सोदय परोदओ बधो । सासणसम्माइड्डीसु सोदओ  
चेन, एदासिं पडिउत्तपयडीण तत्थुदयाभावादो ।

पचणाणारणीय-णउदसणावरणीय सोलसकसाय-भय-दुगुळा-तिरिक्ख मणुस-देवाउ-  
तेजा कम्मइयसरीर-वण्ण-गध-रस-फाम-अगुरुलहुअ-उपघाद णिमिण-पंचतराइयाण णिरतरो  
बधो, एगसमइयउपाणुपलभादो । मादामाद पचणोकसाय पचसठाण पचसघडण-उज्जोत्र-  
अप्पमन्थनिहायगइ यिराधिर-सुभासुभ-दुभग दुस्वर-अणदेज्ज-अजसकितिण सातरो बधो, एग-

प्रकृतियोंके बन्ध व उदयके एक साथ रहनेका विरोध है । पाच दर्शनावरणीय, साता व  
असाता वेदनीय, सोलह कपाय, आठ नोकपाय, तिर्यगायु, मनुप्यायु, तिर्यगगति, मनुप्यगति,  
औदारिकशरीर, पाच सस्थान, औदारिकशरीरारोगोपाग, पाच सहनन, तिर्यगगति व  
मनुप्यगति प्रायोग्यानुपूर्वी, उपघात, परघात, उच्छ्वास, उद्योत, द्वो विहायोगतिया,  
प्रत्येकशरीर, सुभग, दुर्भग, सुस्वर, दुस्वर, जादेय, अनादेय, यशकीर्ति, अयशकीर्ति और  
नीचगोत्रका स्त्रोदय परोदय बन्ध हाता है, क्योंकि, दोनों ही प्रकारसे उनके बन्ध होनेमें  
कोई विरोध नहीं है । पचेन्नियजालि, भ्रम, वादर और पर्याप्तका मति व धृत अदानी  
मिथ्यादृष्टियोंमें स्त्रोदय परोदय बन्ध होता है । सासादनसम्यग्दृष्टियोंमें स्त्रोदय ही बन्ध  
होता है, क्योंकि, इनकी प्रतिपक्ष प्रकृतियोंका वहा उदयाभाव है ।

पाच ज्ञानावरणीय, ना दर्शनावरणीय, सोलह कपाय, भय, जुगुप्ता, तिर्यगायु,  
मनुप्यायु, देवायु, तेजस व कर्मण शरीर, वण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, उपघात,  
निर्माण और पाच अतरायका निरंतर बन्ध होता है, क्योंकि, इनका एक समधिक बन्ध  
नहीं पाया जाता । साता व असाता वेदनीय, पाच नोकपाय, पाच सस्थान, पाच सहनन,  
उद्योत, अप्रशस्तनिहायोगति, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, दुर्भग, दुस्वर, अनादेय और  
यशकीर्तिका सांतर बन्ध होता है, क्योंकि, एक समयसे भी इनका बन्धविश्राम देखा

समएण नि एदासिं वपुरमदसणादो । पुरिमवेदम्म मातर गिरतरो । कुदो गिरतरो ? पम्म-सुव्व  
 लेस्सियतिरिन्त्त मणुममिन्त्ताइदि-सामणसम्मादिट्ठीसु पुरिसोवेदम्म गिरतरवधुत्तलमादो । मणुम  
 गइ मणुमगडपाओग्गाणुपुत्तीण सानर गिरतरो जयो । होदु सातरो, कुणे गिरतरो ? ण,  
 सुक्कलेस्सियमिन्त्ताइदि सामणसम्मादिट्ठीदेवाण गिरतरवधुत्तलमादो । ओरालियसगीरअगो  
 वगाण सानर गिरतरो । कय गिरतरो ? ण, णेइएमु सणक्कुमारादिदेवेषु च गिरतर-  
 वधुत्तलमादो । देवगइ पच्चिदियत्तादि वेउत्तियमरीर-वेउत्तियमरीरअगोवग देवगडपाओग्गाणु  
 पुत्ति पसत्थविहायगइ सुभग सुस्सम आदेज्ज उच्चागोदाण मातर गिरतरो जयो । कथ गिरतरो ?  
 ण, अससेज्जवासाउअतिरिक्कपे मणुममिन्त्ताइदि-सामणसम्मादिट्ठीसु तेउ-पम्म सुक्कलेस्सिय  
 ससेज्जवामाउअतिरिक्कपे मणुममिन्त्ताइदि सामणसम्मादिट्ठीसु च गिरतरवधुत्तलमादो । परघा

जाता है । पुरुषवेदका सातर निरन्तर बन्ध होता है ।

शका—निरन्तर बन्ध कैसे सम्भव है ?

समाधान—क्योंकि, पद्म और शुक्ल लेख्यावाले नियन्त्रण मनुष्य मिथ्यादृष्टि एवं  
 सासादनसम्यग्दृष्टियोंमें पुरुषवेदका निरन्तर बन्ध पाया जाता है ।

मनुष्यगति और मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्विका सातर निरन्तर बन्ध होता है ।

शका—इनका सातर बन्ध भन्ने ही हो, पर निरन्तर बन्ध कैसे सम्भव है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, शुक्ललेख्यावाले मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि  
 देवोंके निरन्तर बन्ध पाया जाता है ।

धोदारिकशरीर और औदारिकशरीरागोपागका सातर निरन्तर बन्ध होता है ।

शका—निरन्तर बन्ध कैसे होता है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, नारत्रियों तथा सनत्कुमारादि देवोंमें निरन्तर बन्ध  
 पाया जाता है ।

देवगति, पक्षी द्रव्यजाति, वेद्विषिन्शरीर, वेद्विषिन्शरीरागोपाग, देवगतिप्रायो  
 ग्यानुपूर्विका, प्रशस्तविहायगानि, सुभग सुस्सर, आदेय और उच्चगोत्रका सातर निरन्तर  
 बन्ध होता है । निरन्तर बन्ध कैसे होता है ? नहीं, क्योंकि, असरयात वयायुष्क तिर्यच  
 य मनुष्य मिथ्यादृष्टि एवं सासादनसम्यग्दृष्टियों तथा तेज, पद्म व शुक्ल लेख्यावाले  
 सरयातवयायुष्क तिर्यच य मनुष्य मिथ्यादृष्टि एवं सासादनसम्यग्दृष्टियोंमें निरन्तर बन्ध

दुस्सास-तस वादर-पञ्जत पतेयसरीराण मिच्छाडड्विह्मिह वधो सातर-णिरतरो । कथ णिरतरो ? देव-णेरइएमु अमखेज्जवामाउअतिरिक्ख-मणुस्सेसु च णिरतर-पुव्वलभादो । सासणसम्मादिट्ठीसु णिरतरो, तस्य पडिक्खपयडिबधाभाजादो परघादुस्सासनधरिरोहिअपञ्जतसस वधाभावादो च । तिरिक्खगइ तिरिक्खगइपाओग्माणुपुत्वि णीचागोदाण पि वधो सातर-णिरतरो । कथ णिरतरो ? ण, तेउ वाउकाट्यमिच्छाडड्विह्मिह सत्तमपुट्ठनिमिच्छाडड्विह्मिह सामणसम्मादिट्ठीसु च णिरतर-पुव्वलभादो ।

पञ्चया सुगमा, ओषपञ्चएहिंतो भेदाभाजादो । तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइ-तिरिक्ख-गइपाओग्माणुपुत्वि उज्जेवाण तिरिक्खगइसजुत्तो वधो । मणुमाउ मणुसगइ मणुसगइ-पाओग्माणुपुत्वीण मणुगइसजुत्तो वधो । देवाउ- [ देवगइ ] देवगइपाओग्माणु-पुत्वीण देवगइसजुत्तो । ओरालियसरीर ओरालियसरीरअगोउग-पचसठाण-पचमघडणाण तिरिक्ख-मणुसगइसजुत्तो, अण्णगईहि वधरिरोहादो । णररि समचउरससठाणसस तिगइ-सजुत्तो, णिरयगईए अभाजादो । वेउत्तियसरीर-वेउत्तियसरीरअगोवगाण मिच्छाडड्विह्मिह देव-गइ णिरयगइसजुत्तो । मासोण देवगइसजुत्तो । सादानेदणीय-इत्थि-पुरिस हसस रदि-पमत्थनिहाय-

.. . . .

पाया जाता है । परघात, उच्छ्वास, क्रस, वादर, पर्याप्त और प्रत्येकशरीरका मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें सान्तर निरन्तर बन्ध होता है । निरन्तर बन्ध कैसे होता है ? क्योंकि, देव नारकियों और अमरयानवर्षायुक्त तिर्यंच व मनुष्योंमें उनका निरन्तर बन्ध पाया जाता है । सासादनसम्यग्दृष्टियोंमें निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, वहा प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धका अभाव है, तथा परघात और उच्छ्वासके बन्धके विरोधी अपर्याप्तके भी बन्धका अभाव है । तिर्यंगाति, तिर्यंगतिप्रायोग्यानुपूर्वीं और नीचगोत्रका भी बन्ध सान्तर निरन्तर होता है । निरन्तर बन्ध कैसे होता है ? नहीं, क्योंकि, तेज व वायु कायिक मिथ्यादृष्टियों तथा सप्तम पृथिवीके मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टियोंमें निरन्तर बन्ध पाया जाता है ।

प्रत्यय सुगम है, क्योंकि, ओषप्रत्ययोंने यहा कोई भेद नहीं है । तिर्यंगातु, तिर्यंगाति, तिर्यंगतिप्रायोग्यानुपूर्वीं और उद्योतका तिर्यंगतिसे सयुक्त बन्ध होता है । मनुष्यातु, मनुष्यगति और मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वींका मनुष्यगतिसे सयुक्त बन्ध होता है । देवातु, [ देवगति ] और देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वींका देवगतिसे सयुक्त बन्ध होता है । औदारिकशरीर, औदारिकशरीरागोपाग, पाच सस्थान और पाच सहननका तिर्यंच व मनुष्यगतिसे सयुक्त बन्ध होता है, क्योंकि, अन्य गतियोंके साथ उनके बन्धका विरोध है । विशेष इतना है कि समचतुरस्रस्थानना तीन गतियासे सयुक्त बन्ध होता है, क्योंकि, नरगतिके साथ उसके बन्धका अभाव है । त्रिक्रियकशरीर और वैकियिक-शरीरागोपागका मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें देवगति व नरकगतिसे सयुक्त, तथा सासादन गुणस्थानमें देवगतिसे सयुक्त बन्ध होता है । सादानेदनीय, खानेद, पुरुषेद, हास्य,

त्तिओ चैव विमयो, णत्थि अण्णत्थ कत्थ वि ।

सादावेदणीयस्स को वंधो को अवंधो ? ॥ २१३ ॥

सुगम ।

असंजदसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव खीणकसायवीदरागळुदुमत्था  
बंधा । एदे वधा, अवंधा णत्थि ॥ २१४ ॥

सादावेदणीयस्स बरो उदयादो पुत्र पन्था वा बोच्छिणो ति विचारो णत्थि, एत्थ  
बंधोदयाण वेच्छेदाभावादो । सोदय परोदओ नथो, अद्दुवोदयत्तादो, असंजदसम्मादिट्ठि  
प्पहुडि चार पमत्तमचदो ति नथो सातरो । उपरि णित्तरो, पडिउत्तपयडीण वधाभावादो ।  
पच्चया सुगमा । अमजत्तसम्मादिट्ठो देव-मणुसगइसज्जुत्त, उपरिमा देवगइसज्जुत्तमगइसज्जुत्त  
च वधति, साहाभियादो । चउगइअसंजदसम्मादिट्ठिणो, दुगइमजदासजदा सामी । उपरि मणुमा  
चैव । वधद्वान्ण सुगम । वधरोच्छेदो णत्थि, 'अवंधा णत्थि' ति सुत्तुदिट्ठितादो । सादि-  
अद्दुवो वधो, अद्दुवधधित्तादो ।

विशेष है, अथय वहाँ भी और कुछ विशेषता नहा है ।

सादावेदनीयका कौन वधक और कौन अवन्धक है ? ॥ २१३ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

असंजदसम्मादिट्ठिमे लेकर क्षीणकसायरीतगगळुदुमत्थ तक वन्धक है । ये वन्धक  
हैं, अवंधक नहीं हैं ॥ २१४ ॥

सादावेदनीयका वध उदयमे पूरमें या पश्चात् 'बुद्धिउन्न होता है, यह विचार  
नहीं है, क्योंकि, यहा उसके वन्ध और उदयके व्युच्छेदका अभाव है । सोदय परोदय वध  
होता है, क्योंकि, यह अद्दुवोदयी है । असंजदसम्मादिट्ठिमे लेकर प्रमत्तसपत्त तक उमका  
वध मात्र होता है । ऊपर निरंतर वन्ध होता है, क्योंकि, यहा उसकी प्रतिपक्ष  
प्रवृत्तिके वधका अभाव है । प्रत्यय सुगम है । असंजदसम्मादिट्ठि जीव देव व मनुष्य  
गतिसे संयुक्त पाधते हैं; उपरिम जीव देवगतिसे संयुक्त और अगतिसंयुक्त  
पाधते हैं, क्योंकि, ऐसा स्वभाव है । चारों गतियोंके असंजदसम्मादिट्ठि और दो  
गतियोंके संयुक्तसपत्त स्वामी है । उपरिम गुणस्थानवर्ती मनुष्य ही स्वामी है ।  
असंजदसम्मादिट्ठि सुगम है । वध'बुद्धिउन्न नहीं है, क्योंकि, यह 'अवंधक नहीं हैं' इस प्रकार  
ही निर्दिष्ट है । सादि व अद्दुव वध होता है, क्योंकि, यह वधवधधी है ।

सेसमोघ जाव तित्थयरे त्ति । णवरि असंजदसम्मादिट्ठिप्पहुडि  
त्ति भाणिदब्बं ॥ २१५ ॥

एदस्स अत्थो जदि पि सुगमो तो पि सण्णाणपन्खवाएणाक्खित्तचित्तो दुम्मेहजणाणु-  
ग्गहइ च पुणरि पक्खेमि — अमादावेदणीयस्स पुत्र वधो वोच्छिण्णो । उदययोच्छेदो णत्थि,  
केवलणाणीसु पि तदुदयदमणादो । एमयिरामुहाण पि वत्तव । अरदि-सोगाण पुत्र वधो  
पच्छा उदधो वोच्छिण्णो, पमत्तापुत्तिसु वधोदययोच्छेदुत्तलभादो । अजसकित्तीए पुच्चसुदओ  
पच्छा वधो योच्छिण्णो, पमत्तामजदमम्भादिट्ठीसु चोदययोच्छेदुत्तलभादो । अमादावेदणीय-  
अरदि मोगाण वधो मोदय परोदधो, अद्धोदयत्तादो । अयिरामुहाण सोदधो, धुनोदयत्तादो ।  
अजसकित्तीए असजदसम्मादिट्ठिम्हि पओ सोदय परोदधो । उत्रि परोदधो चव । एदासिं  
पयडीण सत्वासिं पि वधो सात्तो, एगममएण वि वपुत्रमदमणादो । पच्चया सुगमा ।  
असजदसम्मादिट्ठिम्हि सत्त्वपयडीण दुगइमजुत्तो, उत्रिमाण देग्गइसजुत्तो वओ । चउगइ-  
असजदसम्मादिट्ठी दुगइसजदामजग मणुमगइसजदा च मामी । अमजदमम्मादिट्ठिप्पहुडि

शेष प्ररूपणा तीर्थकर प्रकृति तक ओषके समान है । विशेषता फेरल इतनी है कि  
'असयतसम्यग्दष्टिमे लेकर' ऐसा कहना चाहिये ॥ २१५ ॥

इस सूत्रमा अर्थ यद्यपि सुगम ह तो भी सम्यग्ज्ञानके पक्षपातसे श्राणिसचित्त  
अर्थात् आरुष्ट होकर जोर दुर्बुद्धि जनाने अनुग्रहार्थ फिरसे भी प्ररूपणा करते हैं—  
असातावेदनीयका पूर्वमें बन्ध व्युच्छिन्न होता है । उदयव्युच्छेद उमका नहीं है, क्योंकि,  
केवलानियोंमें भी उमका उदय देखा जाता है । इसी प्रकार अस्थिर और अशुभके भी  
कहना चाहिये । अरति व शोकका पूर्वमें बन्ध ओर पश्चात् उदय व्युच्छिन्न होता है,  
क्योंकि, प्रमत्त और अपूर्णकरण गुणस्थानोंमें क्रमसे उनके बन्ध और उदयका व्युच्छेद पाया  
जाता है । अयशकीर्तिका पूर्वमें उदय और पश्चात् बन्ध व्युच्छिन्न होता है, क्योंकि, प्रमत्त  
और असयतसम्यग्दष्टि गुणस्थानोंमें क्रमसे उमके बन्ध और उदयका व्युच्छेद पाया जाता  
है । असातावेदनीय, अरति और शोकका बन्ध स्वोदय परोदय होता है, क्योंकि, वे  
अधुनोदयी हैं । अस्थिर और अशुभका स्वोदय बन्ध होता है, क्योंकि, वे ध्रुवोदयी हैं ।  
अयशकीर्तिका बन्ध असयतसम्यग्दष्टि गुणस्थानमें स्वोदय परोदय होता है । ऊपर उसका  
परोदय ही बन्ध होता है । इन सब ही प्रकृतियोंका बन्ध सान्तर होता है, क्योंकि, एक  
समयसे भी उनका बन्धविधाम देखा जाता है । प्रत्यय सुगम हैं । असयतसम्यग्दष्टि  
गुणस्थानमें सब प्रकृतियोंका दो गतियोंसे मयुक्त तथा उपरिम जीवोंके देवगतिमे सयुक्त  
बध होता है । चारों गतियोंके असयतसम्यग्दष्टि, दो गतियोंके मयतासयत, और  
मनुष्यगतिके सयत स्वामी ह । असयतसम्यग्दष्टिसे लेकर प्रमत्तसयत तक बन्धाधान

जाव पमत्तसजदो ति वधद्वाण । पमत्तसजदम्मि वधोच्छेदो । एदासिं यधो सादि-अद्दुवो ।

अपच्चक्खाणावरणचउत्तक मणुसगइ-ओरालियसरीर अगोवग-वज्जरिसहवइरणारायण सरीरसघडण मणुसगइपाओग्गाणुपुत्तीओ एत्तकम्मि अमजदसम्मादिट्ठिगुणद्वाणे वज्जति ति एदासिमेत्थ एगद्वाणमण्णा । ए ५ अपच्चक्खाणावरणचउत्तक-मणुसगइपाओग्गाणुपुत्तीण वधोदया सम वोच्छिण्णा, अमजदसम्मादिट्ठिं मोत्तुणुरि वधुदयाणुत्तभादो । अवसेसाण पयडीण मेत्थ वओत्तसमियणाणमग्गाणए वधोरोच्छेदो चेत्त, उदयवोच्छेदो णत्थि, केत्तलणाणीसु वि उदयदसणादो । अपच्चक्खाणावरणचउत्तकस्स वधो सोदय-परोदओ, अद्दुवोदयत्तादो । मणुसगइदुगोरालियदुग वज्जरिसहसघडणाण वधो परोदओ, सम्मादिट्ठीसु एदामिं मोदएण वधस्स विरोहादो । णित्तरो वधो, असजदसम्मादिट्ठिम्मि एगममएण उधुवरभाभावादो । पच्चया सुग्गा । णवरि मणुसगइदुगोरालियदुग वज्जरिसहसघडणाणसरीरसघडणाणमसजदसम्मादिट्ठिम्मि ओत्ता लियकायनोग-ओरालियमिस्सकायजोगपच्चया णत्थि, तिग्गिक्ख मणुमअमजदसम्मादिट्ठीसु एदासिं वधाभावादो । अपच्चक्खाणावरणचउत्तकस्स देव मणुसगइसजुत्तो यधो । अण्णासिं पयडीण मणुम

है । प्रमत्तसयत्त गुणस्थानमें बन्ध युच्छेद होता है । इन प्रकृतियोंका बन्ध सादि और अधुव होता है ।

अप्रत्याख्यानवरणचतुष्क, मनुष्यगति, औदारिकशरीर, औदारिकशरीरागोपण, वज्जरिभसज्जनाराचशरीरसहनन और मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, ये प्रकृतिया एक असयत्त सम्पगदृष्टि गुणस्थानमें बधतीं हैं, अत एव इनकी यहा एकस्थान सज्ञा है । यहा अप्रत्याख्यान चतुष्क और मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वीका बध आर उदय दोनों साथमें व्युच्छिन्न होते हैं, क्योंकि, असयत्तसम्पगदृष्टि गुणस्थानको छोडकर उपरिम गुणस्थानोंमें इनका बन्ध और उदय नहीं पाया जाता । दोष प्रकृतियोंका यहा क्षयोपशमिक ज्ञानमार्गणामें बन्ध-युच्छेद ही है, उदयव्युच्छेद नहीं है क्योंकि, केत्तलशानियोंमें भी उनका उदय देखा जाता है । अप्रत्याख्यानवरणचतुष्कका बध स्वोदय परोत्थ होता है, क्योंकि, वह अधुवादी है । मनुष्यगतिद्विक, औदारिकद्विक और वज्जरिभसहननका परादय बध होता है, क्योंकि, सम्पगदृष्टियोंमें इनके स्वोदयसे बन्धका विरोध है । निरतर उन्ध होता है, क्योंकि, असयत्तसम्पगदृष्टि गुणस्थानमें एक समयसे बन्धविध्वामका अभाव है । प्रत्यय सुग्ग है । विशेषता इतनी है कि मनुष्यगतिद्विक, औदारिकद्विक और वज्जरिभसहननाराचशरीरसह उनके असयत्तसम्पगदृष्टि गुणस्थानमें औदारिक और औदारिकमिश्र फाययोग प्रत्यय नहीं हैं, क्योंकि, तिर्यक और मनुष्य अमयत्तसम्पगदृष्टियोंमें इनके बधका अभाव है । अप्रत्याख्यान चतुष्कका देव व मनुष्य गतिते सयुत्त, तथा अथ प्रकृतियोंका मनुष्यगतिते मयुक्त बध

गइसंजुतो, अण्णगईहि सह विरोहादो । अपच्चक्खाणचउक्कस्स चउगइअसजदसम्माइट्ठी सामी । अवसेसाण पयडीण देव-णेरइया सामी । बधद्धान णत्थि, एक्कमिह्दि गुणद्वाणे भूओगुण-द्वाणजणियद्धानविरोहादो । असजदसम्मादिट्ठिमिह्दि वधो वोच्छिज्जदि । अपच्चक्खाणचउक्कस्स तिविहो वधो, धुजाभावादो । अवसेसाण सादि-अद्धुवो ।

पच्चक्खाणावरणचउक्कमेत्थ वेद्धानियमसजदसम्मादिट्ठि-सजदासजददोगुणद्वाणेषु सम चेव ननुवलमादो । वधोदया सम वोच्छिण्णा, मजदासजदमि तदुभयाभावदसणादो । सोदय-परोदओ वधो, धुजादयत्तादो<sup>१</sup> । गिरतरो नधो, धुवनचित्तादो । पच्चया सुगमा । असजदसम्मादिट्ठीसु देव मणुमगइसजुतो । सजदासजदेषु देवगइसजुतो । चउगइअसजद-सम्मादिट्ठी दुगइमजदासजदा सामी । अमजदसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव सजदासजदो त्ति वधद्धान । सजदासजदमि नधो वोच्छिज्जदि । दोसु नि गुणद्वाणेषु तिविहो वधो, धुजाभावादो ।

पुरिसयेद-चउसजलण हस्म-रदि-भय दुगुछाण सोदय परोदओ वधो । सातर-गिरतर-

— — — — —

होता है, क्योंकि, अन्य गतियोंके साथ इनके बन्धका विरोध है । अप्रत्याख्यानचतुष्कके चारों गतियोंके असयतसम्यग्दृष्टि स्वामी हैं । शेष प्रकृतियोंके देव व नारकी स्वामी हैं । बन्धाध्यान नहीं है, क्योंकि, एक गुणस्थानमें बहुत गुणस्थान जनित अध्यानका विरोध है । असयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें बन्ध व्युच्छिन्न होता है । अप्रत्याख्यानचतुष्कका तीन प्रकारका ग्रन्थ होता है, क्योंकि, उसके ध्रुव ग्रन्थका अभाव है । शेष प्रकृतियोंका सादि व अधुष बन्ध होता है ।

प्रत्याख्यानचरणचतुष्क यहा द्विस्थानिक है, क्योंकि, असयतसम्यग्दृष्टि और सयतासयत इन दो गुणस्थानोंमें समान ही बन्ध पाया जाता है । बन्ध और उदय दोनों साथमें व्युच्छिन्न होते हैं, क्योंकि, सयतासयत गुणस्थानमें उन दोनोंका अभाव देखा जाता है । स्वोदय परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, वह ध्रुवोदयी है । निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, वह ध्रुवग्रन्थी है । प्रत्यय सुगम हैं । असयतसम्यग्दृष्टियोंमें देव व मनुष्य गतिसे सयुक्त तथा सयतासयतोंमें देवगतिसे सयुक्त बन्ध होता है । चारों गतियोंके असयत-सम्यग्दृष्टि और दो गतियोंके सयतासयत स्वामी हैं । असयतसम्यग्दृष्टिसे लेकर सयता-सयत तक बन्धाध्यान है । सयतासयत गुणस्थानमें बन्ध व्युच्छिन्न होता है । दोनों ही गुणस्थानोंमें तीन प्रकारका बन्ध होता है, क्योंकि, ध्रुव बन्धका अभाव है ।

पुरुषयेद, चार सज्वलन, हास्य, रति, भय और जुगुप्साका स्वोदय परोदय बन्ध



पञ्चय गइसयोग सामित्तद्वाण नधनियणा जाणिय त्तञ्जा' ।

मणुसाउअस्म पुञ्जावरफात्सवधिनधोदयपरिक्खा सुगमा । परोदओ चधो, मणुम्माउ चधोदयाणमसजदसम्मादिट्टिम्हि अक्खमेण उतिपरोहादो । गिरतरो, एगसमण्ण नधुवरगामादादो । वाएत्तालीस पञ्चया, ओरालिय ओरालियमिस्स वेउधियमिस्स-रुम्मडयपञ्चयाणममादादो । मणुसगइसजुत्तो चधो । देव णेरइया मामी । नधद्वाण णत्थि, एत्तक्खिह गुणट्ठाणे अद्वाणविरोहादो । असजदसम्मादिट्टिम्हि चधो त्तोच्छिञ्जदि । सादि-अद्धुओ, अद्धुनपरित्तादो ।

देवाउअस्म पुञ्जमुदओ पञ्छा नओ त्तोच्छिञ्जदि, अप्पमत्तामजदसम्मादिट्टिम्हि चधोदयवोच्छेदुत्तलभादो । परोदओ, सोदएण वनपरोहादो । गिरतरो, अतोमुहुत्तेण विणा वधुवरगामादादो । पञ्चया ओघत्तुल्ल । देवगउसजुत्तो चधो । त्तिरिक्ख मणुमअसजदसम्मा दिट्टि सजदासजदा मणुमसजदा च मामी, अण्णत्थ वधाणुत्तलभादो । अमजदसम्मादिट्टिप्पहुडि जाण अप्पमत्तसजदा त्ति वधद्वाण । अप्पमत्तसजदद्वाए सरोज्जदिम भाग गतूण चधो

होता है । सा तर निरंतरता, प्रत्यय, गतिमयोग, स्यामित्य, अध्यान और वधपरिकल्प, इनको जानकर कहना चाहिये ।

मनुष्यायुके पूषापर काल समग्रधी नञ् और उदयके व्युच्छेदकी परीक्षा सुगम है । परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, मनुष्यायुके नञ् और उदयके असयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें एक साथ अस्तित्वका विरोध है । निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, एक समयमें उसके व धविश्रामका अभाव है । ज्योतीस प्रत्यय है, क्योंकि, औदारिक, औदारिकामिध, धेन्निपिकामिध और कामेण प्रत्ययोंका अभाव है । मनुष्यगतिसे स्वयुक्त बन्ध होता है । देव व नारकी स्वामी है । धन्याध्यान नहीं है क्योंकि, एक गुणस्थानमें अध्यानका विरोध है । असयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें नञ् व्युच्छिन्न होता है । सादि न अधुव बन्ध होता है, क्योंकि, वह अधुवन धी है ।

देवायुका पूर्वमें उदय और पश्चात् धन्य व्युच्छिन्न होता है, क्योंकि, अप्रमत्त और असयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें क्रमसे उसने बन्ध और उदयका व्युच्छेद पाया जाता है । परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, स्वोदयसे उसने बन्धका विरोध है । निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, अन्तर्मुहूर्तके विना उसका नञ् विश्रामका अभाव है । प्रत्यय ओघके समान है । देव गतिसे सयुक्त बन्ध होता है । तियव व मनुष्य असयतसम्यग्दृष्टि और मयतासयत तथा मनुष्य सयत स्वामी है, क्योंकि, अन्य गतियोंमें उसका नञ् पाया नहीं जाता । असयतसम्यग्दृष्टिसे लेकर अप्रमत्तसयत तक वधाध्यान है । अप्रमत्तसयतकालके सरयात्तर्ज भाग जाकर बन्ध

वोच्छिञ्जति । सादि अद्भुतो, अद्भुतवधित्तादो ।

देवगड-पर्चिन्द्रियजादि-त्रेउत्रियतेजा-कम्मइयमरीर-ममचउरमसठाण-वेउत्रियसरीर-अगोपग वण्ण गव-रस फाम देउमइपाओग्गाणुपुव्वी-अगुरुअलहुअ-उवघाद-परघाद-उस्मास-पसत्थनिहायगइ तस नादर-पज्जत्त पत्तेयमरीर थिर-सुभ-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-णिमिणणामाण उच्चदे- देवगइपाओग्गाणुपुव्वी त्रेउत्रियमरीर-त्रेउत्रियमरीरगोवगाण पुत्रमुदओ पच्छा वधो वोच्छिञ्जति, अपुत्रामजदसम्मादिट्ठीसु उधोदयवोच्छेदुवलभादो । जमेमेतेतीम्पयडीण एत्थु-दयवोच्छेदो णत्थि, वधवोच्छेदो चेत्त, केउलणाणीसु उदयवोच्छेदुवलभादो ।

देवगड-त्रेउत्रियदुगाण सत्रगुणदुगाणेषु परोदओ नवो, एदागिसुदयवनाणमन्कमेण वुत्तिविरोहादो । पर्चिन्द्रियजादि तेजा कम्मइयसरीर-वण्ण-गव-रस फाम-अगुरुअलहुअ तम-नादर-पज्जत्त थिर-सुभ णिमिणण मोदओ नवो । समचउरमसठाण-उवघाद-परघाद उस्मास-पत्तेय-मरीराणमसजदसम्मादिट्ठीसु सोदय-परोदओ वधो । उपरिमेसु गुणदुगाणेषु सोदओ चेत्त, तेसिमपज्जत्तद्वाए अभावादो । पारि समचउरमसठाणसस सत्रगुणदुगाणेषु सोदय-परोदओ नवो । पसत्थनिहायगइ-सुस्सराण सत्रगुणदुगाणेषु मोदय परोदओ नवो । सुभग-आदेज्जाणं

व्युच्छिन्न होता है । सादि त अद्भुत बन्ध होता है, क्योंकि, यह अद्भुतबन्धी है ।

देवगति, पचेन्द्रियजाति, वैक्रियिन्, तैजस व कामेण शरीर, समचतुरस्रसस्थान, वैक्रियिकशरीरगोपाग, उर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वा, अगुरुलघु उपघात, परघात, उच्छ्वास, प्रशस्तविहायोगति, अस, नादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, स्थिर, शुभ, सुभग, सुस्सर, आदेय जार निर्माण नामकर्मोर्ण प्ररूपणा करते हैं— देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वा, वैक्रियिकशरीर और वैक्रियिकशरीरगोपागना पूर्वमें उदय और पश्चात् बन्ध व्युच्छिन्न होता है, क्योंकि, अपूर्वकरण और असयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें क्रमशः उनके बन्ध त उदयका व्युच्छेद पाया जाता है । शेष तेईस प्रकृतियोंका यहा उदय व्युच्छेद नहा है, केवल बन्ध व्युच्छेद ही है, क्योंकि, केवलज्ञानियोंमें उनका उदयव्युच्छेद पाया जाता है ।

देवगतिद्विक और वैक्रियिकद्विकका सत्र गुणस्थानोंमें परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, इनके उदय और बन्धके एक साथ रहनेका विरोध है । पचेन्द्रियजाति, तैजस त कामेण शरीर, उर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, अस, नादर, पर्याप्त, स्थिर, शुभ और निर्माणका स्वोदय बन्ध होता है । समचतुरस्रसस्थान, उपघात, परघात, उच्छ्वास वार प्रत्येकशरीरका असयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें स्वोदय परोदय बन्ध होता है । उपरिम गुणस्थानोंमें उनका स्वोदय ही बन्ध होता है, क्योंकि, उनके अपर्याप्तकालका अभाव है । विशेष इतना है कि समचतुरस्रसस्थानका सत्र गुणस्थानोंमें स्वोदय परोदय बन्ध होता है । प्रशस्तविहायोगति और सुस्सरका सत्र गुणस्थानोंमें स्वोदय परोदय बन्ध होता है । सुभग और आदेयका

असजदसम्मादिद्विम्भि मोदय-परोदओ । उवरि मोदओ चव, पडिवक्खुदयाभावादो ।

थिर सुभाणमसजदसम्मादिद्विप्पहुडि जाण पमत्तसजदा ति सातरो वधो । उवरि गिरतरो ।  
अवसेमाण पयडीण सव्वगुणङ्गणेसु वधो गिरतरो, पडिवक्खपयडीण वधाभावादो ।

देवगइ वेउच्चियदुगाण वेउच्चिय-वेउच्चियमिस्मपच्चया असजदसम्मादिद्विम्भि अवणे  
दच्चा । सेसपयडीण पचया ओघतुल्ला । देवगइ-वेउच्चियदुगाण वधो सव्वगुणङ्गणेसु देवगइ-  
सजुत्तो । अवसेमाण पयटीण' वधो असजदसम्मादिद्विम्भि देव मणुसगइसजुत्तो । उवीरिसेसु गुण-  
ङ्गणेसु देवगइमजुत्तो । देवगइ-वेउच्चियदुगाण दुगइअमजदसम्मादिद्वि-मजदामजदा मणुसगइ-  
सजदा सामी । मेसाण पयडीण चउगइअसजदसम्मादिद्विणो दुगइसजदासजदा मणुसगइसजदा  
च सामी । असजदसम्मादिद्विप्पहुडि जाण अपुच्चकरणे ति वधद्धान । अपुच्चकरणद्धान सखेज्जे  
मागे गतूण वधो वोच्छिज्जदि । णिमिणस्म तिपिहो वधो', धुवाभावादो । अवसेमाण वधो  
सादि-अद्दुवो ।

आहारदुग तित्थयगणमोघपरूषणमवहारिय भाणिदच्च ।

असयतसम्यग्दष्टि गुणस्थानोंमें स्वोदय परोदय बन्ध होता है । ऊपर स्वोदय ही बन्ध  
होता है, क्योंकि, वहा उनकी प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके उदयका अभाव है ।

स्थिर और शुभका असयतसम्यग्दष्टिसे लेकर प्रमत्तसयत तक मात्र बन्ध  
होता है । ऊपर निरन्तर बन्ध होता है । शेष प्रकृतियोंका सत्र गुणस्थानोंमें निरन्तर बन्ध  
होता है, क्योंकि, उनकी प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धका अभाव है ।

देवगति और वैश्रियिन्द्रिकके वैश्रियिक और वैश्रियिकमिध काययोगप्रत्ययोंके  
असयतसम्यग्दष्टि गुणस्थानोंमें कम कला चाहिये । शेष प्रकृतियोंके प्रत्यय ओघके समान हैं ।  
देवगतिद्विक और वैश्रियिन्द्रिकका बन्ध सत्र गुणस्थानोंमें देवगतिसे सयुक्त होता है । शेष  
प्रकृतियोंका बन्ध असयतसम्यग्दष्टि गुणस्थानोंमें देव व मनुष्य गतिसे सयुक्त होता  
है । उपरिण गुणस्थानोंमें देवगतिसे सयुक्त बन्ध होता है । देवगतिद्विक और वैश्रियिकद्विकके  
दो गतियोंके असयतसम्यग्दष्टि व सयतासयत, तथा मनुष्यगतिके सयत स्वामी है ।  
मनुष्यगतिके सयत स्वामी हैं । असयतसम्यग्दष्टिसे लेकर अपूर्वकरण तक बन्धाध्यान है ।  
अपूर्वकरणकालके सत्यात बहुभाग जाणर बन्ध व्युच्छिन्न होता है । निमाण नामकमका  
तीन प्रकारका बन्ध होता है, क्योंकि, उसका ध्रुव बन्ध नहीं होता । शेष प्रकृतियोंका बन्ध  
सादि व अधुय होता है ।

आहारकद्विक और तीर्थकर प्रकृतिकी प्ररूपणा ओघप्ररूपणाका निर्णय करके  
करना चाहिये ।

१ व कायलो: ' पयराप ' इति पाठ ।

२ प्रतिशु ' छदो ' इति पाठ ।

मणपञ्जवणाणीसु पंचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-जसकित्ति-  
उच्चागोद पंचंतराहयाण को वधो को अवंधो ? ॥ २१६ ॥

सुगम ।

पमत्तसंजदप्पहुडि जाव सुहुमसांपराइयउवसमा खवा वधा ।  
सुहुमसांपराइयसजदद्वाए चरिमसममं गंतूण वंधो वोच्छिज्जदि ।  
एदे वंधा, अवसेसा अवंधा ॥ २१७ ॥

एत्थ एदासिं पयडीण मदिणाणमग्गणाए पमत्तसजदप्पहुडिगुणङ्गाणेषु जघा परूवणा  
कदा तथा परूवेदव्वा । णरि एत्थ सत्थित्थि णउसयवेदपच्चया अण्णेदव्वा, अप्पसत्थ-  
वेदोदइल्लाण मणपञ्जवणाणाणुप्पत्तीदो । पमत्तपच्चएसु आहारदुग्गमण्णेदव्व, मणपञ्जवणाणस्स  
आहारसरीरदुग्गोदएण सह विरोहदो । पुरिसवेदस्स सोदओ वधो । एवमण्णो वि विसेसो  
जदि अत्थि से समरिय वत्तव्वो ।

णिहा-पयलाणं को वंधो को अवंधो ? ॥ २१८ ॥

मन पर्ययज्ञानी जीवोंमें पाच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, यशकीर्ति, उच्चगोन  
और पाच अन्तरायका कौन वन्धक और कौन अयन्धक है ? ॥ २१६ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

प्रमत्तसयतसे लेकर सूक्ष्मसाम्प्रायिक उपशमक व क्षपक तक वन्धक हैं । सूक्ष्म-  
साम्प्रायिकशुद्धिसयतकालके अन्तिम समयको जाकर वन्ध व्युच्छिन्न होता है । ये वन्धक हैं,  
शेष अयन्धक हैं ॥ २१७ ॥

यहा इन प्रकृतियोंकी मतिज्ञानमार्गणामें प्रमत्तसयतादिक गुणस्थानोंमें जैसे  
प्ररूपणा की गई है वैसे प्ररूपणा करना चाहिये । विशेष इतना है कि यहा सर्वत्र खविद  
और नपुंसकवेद प्रत्ययोंको कम करना चाहिये, क्योंकि, अप्रशस्त वेदोदय युक्त जीवोंके  
मन पर्ययज्ञानकी उत्पात्ति नहीं होती । प्रमत्तसयत गुणस्थान सम्यन्धी प्रत्ययोंमें आहारक  
द्विकको कम करना चाहिये, क्योंकि, मन पर्ययज्ञानका आहारशरीरद्विकके उदयके साथ  
विरोध है । पुरुषवेदका स्वोदय वन्ध होता है । इन्ही प्रकार अन्य भी यदि भेद है तो उसके  
स्मरण कर कहना चाहिये ।

निद्रा और प्रचलाका कौन वन्धक और कौन अयन्धक है ? ॥ २१८ ॥

सुगम ।

पमत्तसजदप्पहुडि जाव अपुव्वकरणपइट्टुवसमा खवा वधा ।  
अपुव्वकरणद्वाए सरैज्जदिम भाग गतूण वंधो वोच्छिज्जदि । एदे  
वधा, अवमेमा अवधा ॥ २१९ ॥

एद पि सुगम, ओघम्मि वुत्तत्थत्तादे ।

सादावेदणीयस्स को वधो को अवधो ? ॥ २२० ॥

सुगम ।

पमत्तसजदप्पहुडि जाव खीणकसायवीयरायछट्टुमत्था वंधा ।  
एदे वधा, अवधा णत्थि ॥ २२१ ॥

सुगममेद ।

सेसमोघ जाव तित्थयेरं ति । णवरि पमत्तसंजदप्पहुडि ति  
भाणिदव्व ॥ २२२ ॥

एद पि सुगम ।

यह सूत्र सुगम है ।

प्रमत्तसयतसे लेकर अपूर्वकरणप्रविष्ट उपशमक व क्षपक तरु बन्धक हैं । अपूर्वकरण-  
कालके सख्यातवें भाग जाकर वान व्युच्छिन्न होता है । ये बन्धक हैं, शेष अबन्धक हैं ॥ २१९ ॥

यह सूत्र भी सुगम है, क्योंकि, ओघमें इसका अर्थ कहा जा चुका है ।

सादावेदनीयका कौन वानक ओर कौन अबन्धक है ? ॥ २२० ॥

यह सूत्र सुगम है ।

प्रमत्तमयतमे लेकर क्षीणकपायवीतराग छट्मस्य तरु बन्धक हैं । । ये बन्धक हैं,  
अबन्धक नहीं हैं ॥ २२१ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

शेष प्ररूपणा तीर्थंकर प्रकृति तक ओघके समान है । विशेष इतना है कि 'प्रमत्त  
सयतसे लेकर' ऐसा कहना चाहिये ॥ २२२ ॥

यह सूत्र भी सुगम है ।

केवलणाणीसु सादावेदणीयस्स को वंधो को अवंधो ? ॥२२३॥

सुगम ।

सजोगिकेवली वंधा । सजोगिकेवलिअद्वाए चरिमसमयं गंतूण वंधो वोच्छिज्जदि । एदे वंधा, अवसेसा अवंधा ॥ २२४ ॥

एदस्स वधो पुत्र वोच्छिज्जदि, उदओ पच्छा वोच्छिज्जदि, सजोगि-अजोगिचरिम-समएसु वधोदयवोच्छेदबलमादो । वधो सोदय परोदओ, अद्दुवोदयत्तादो । णिरतरो, पडि-वक्खपयडीए; वधामानादो । सच्चमणजोगो असच्चमोसमणजोगो सच्चवचिजोगो असच्च-मोसवचिजोगो ओरालियकायजोगो ओरालियमिस्सकायजोगो कम्मइयकायजोगो चि सच्च-एदस्स वधपच्चया । वधो अगइसजुत्तो, एत्थ गइयधेण विरुद्धवधादो । मणुसा सामी, अण्णत्थ केवलीणमभावादो । वधद्वाण णत्थि, एत्थकहि गुणद्वाणे अद्धानविरोहादो । अजोगिचरिमसमए वधो वोच्छिज्जदि । सादि-अद्दुवो वधो, अद्दुववधित्तादो ।

केवलज्ञानियोंमें सादावेदनीयका कौन बन्धक और कौन अवन्धक है ? ॥ २२३ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

सयोगकेवली बन्धक है । सयोगकेवलिकालके अन्तिम समयको जाकर बन्ध व्युच्छिन्न होता है । ये बन्धक हैं, शेष अवन्धक हैं ॥ २२४ ॥

इसका बन्ध पूर्वमें व्युच्छिन्न होता है, उदय पश्चात् व्युच्छिन्न होता है; क्योंकि, सयोगकेवली और अयोगकेवली गुणस्थानोंके अन्तिम समयमें क्रमसे उसके बन्ध और उदयका व्युच्छेद पाया जाता है । बन्ध उसका स्वोदय-परोदय होता है, क्योंकि, वह अधुवो वधी प्रकृति है । निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, वहा प्रतिपक्ष प्रकृतिके बन्धका अभाव है । सत्यमनोयोग, असत्य मृषामनोयोग, सत्यवचनयोग, अमत्य मृषावचनयोग, औदारिक-काययोग, औदारिकमिथ्रकाययोग और कामेणकाययोग, ये सात इसके बन्धप्रत्यय हैं । बन्ध गतिबन्ध रहित होता है, क्योंकि, यहा गतिबन्धसे विरुद्ध बन्ध है । मनुष्य स्वामी है, क्योंकि, अन्य गतियोंमें केवलियोंका अभाव है । बन्धाध्यान नहीं है, क्योंकि, एक-गुणस्थानमें अध्यानका विरोध है । अयोगकेवलीके अन्तिम समयमें बन्ध व्युच्छिन्न होता है । सादि व अधुव बन्ध होता है, क्योंकि, वह अधुवबन्धी है ।

१ प्रतिशु 'सजोगिकेवली बधाए' इति पाठ ।

२ प्रतिशु 'अत्याण' इति पाठ ।

संजर्माणुवादेण संजदेसु मणपञ्जवणाणिभंगो ॥ २२५ ॥

जथा मणपञ्जवणाणमग्गणाए परूवणा कदा तथा एत्थ कायव्वा । णवरि पञ्चयादि  
विसेसो जाणिय वत्तवो । एत्थ विसेसपदुप्पायणइमुत्तरसुत्त मणादि—

णवरि विसेसो सादावेदणीयस्स को वधो को अवंधो ?

॥ २२६ ॥

सुगम ।

पमत्तसंजदप्पहुडि जाव सजोगिकेवली वधा । सजोगिकेवलि-  
अद्धाए चरिमसमय गंतूण वंधो वोच्छिज्जदि । एदे वंधा, अवसेमा  
अवंधा ॥ २२७ ॥

सुगमेद ।

सामाह्यच्छेदोवट्ठावणसुद्धिसजदेसु पंचणाणावरणीय-सादावेद-  
णीय लोभसंजलण जसकित्ति उच्चागोद पंचतराइयाण को वंधो को  
अवधो ? ॥ २२८ ॥

सयममागणानुसार सयत जीवोंमें मन पर्ययज्ञानियोंके समान प्ररूपणा है ॥ २२५ ॥

जिस प्रकार मन पर्ययज्ञानमागणामें प्ररूपणा की गई है, उसी प्रकार यहा करना  
चाहिये । विशेष इतना है कि प्रत्ययादिके भेदको जानकर कहना चाहिये । यहा विशेषता  
बतलानेके लिये उत्तर सूत्र कहते हैं—

विशेषता इतनी है कि सातावेदनीयका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ २२६ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

प्रमत्तसयतसे लेकर सयोगकेवली तक बन्धक हैं । सयोगकेवलिकालके अन्तिम  
समयको जाकर बन्ध व्युच्छिन्न होता है । ये बन्धक हैं, शेष अबन्धक हैं ॥ २२७ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

सामायिकच्छेदोपस्थापनशुद्धिसयतोंमें पाच ज्ञानावरणीय, सातावेदनीय, सज्वलनलोभ,  
पशुकीर्ति, उच्चगोत्र और पाच अतराय, इनका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ?  
॥ २२८ ॥

सुगम ।

पमत्तसंजदप्पहुडि जाव अणियट्टिउवसमा खवा वंधा । एदे  
बंधा, अवंधा णत्थि ॥ २२९ ॥

एदासिं पयडीणमेत्थ वधोदयवोच्छेदाभावादो ' उदयादो किं पुब्ब पच्छा वा वधो  
वोच्छिण्णो ' ति विचारो णत्थि । पचणाणावरणीय चउदसणावरणीय-जसकित्ति-उच्चागोद-  
पचतराइयाण सोदओ वधो, एत्थ धुवोदयत्तादो । सादावेदणीय-लोभसजलणाणं सोदय परोदओ,  
अद्दुवोदयत्तादो । सादावेदणीय जसकितीण पमत्तमजदम्मि सातरो वधो, पडिवक्खपयडि-  
वधुवलमादो । उवरि णिरतरो, तदभावादो । सेसाण पयडीण वधो सव्वत्थ णिरतरो, अप्पिद-  
सजदेसु वधुवरमाभावादो । पच्चया सुगमा, ओघपच्चएहिंतो विसेसाभावादो । एदासिं सव्व-  
पयडीण पमत्तमजदप्पहुडि जाव अपुव्वरुणद्दाए छमत्तभागो ति वधो देवगइसजुत्तो । उवरि  
अगइसजुत्तो, तत्थ गइण वधाभावादो । मणुसां सामी, अण्णत्थ सजदाभावादो । वधद्धान

यह सूत्र सुगम है ।

प्रमत्तसयतसे लेकर अनिवृत्तिकरण उपशमक व क्षपक तक बन्धक हैं, ये बन्धक हैं,  
अबन्धक नहीं हैं ॥ २२९ ॥

यहा इन प्रकृतियोंके बन्ध और उदयका व्युच्छेद न होनेसे ' उदयसे क्या पूर्वमें  
या पश्चात् बन्ध व्युच्छिन्न होता है ' यह विचार नहीं है । पाच ज्ञानावरणीय, चार  
दर्शनावरणीय, यशकीर्ति, उच्चगोत्र और पाच अन्तरायका स्वोदय बन्ध होता है,  
क्योंकि, यहा इनका ध्रुव उदय है । सातावेदनीय और सज्वलनलोभका स्वोदय परोदय  
बन्ध होता है, क्योंकि, ये अभ्युद्योदयी प्रकृतिया हैं । सातावेदनीय और यशकीर्तिका  
प्रमत्तसयत गुणस्थानमें सान्तर बन्ध होता है, क्योंकि, यहा इनकी प्रतिपक्ष प्रकृतियोंका  
बन्ध पाया जाता है । ऊपर निरन्तर बन्ध है, क्योंकि, वहा प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धका  
अभाव है । शेष प्रकृतियोंका बन्ध सर्वत्र निरन्तर है, क्योंकि, विवक्षित सयतोंमें इनके  
बन्धविश्रामका अभाव है । प्रत्यय सुगम हैं, क्योंकि, ओघप्रत्ययोंसे यहा कोई भेद नहीं  
है । इन सब प्रकृतियोंका बन्ध प्रमत्तसयतसे लेकर अपूर्वकरणकालके छह सप्तम भाग  
तक देवगतिसे सयुक्त होता है । ऊपर अगतिसयुक्त बन्ध होता है, क्योंकि, यहाँ  
गतियोंके बन्धका अभाव है । मनुष्य स्वामी है, क्योंकि, अन्य गतियोंमें सयतोंका अभाव है ।



सुप्त, सुप्तदिदृशदो । नवोच्छेदो गन्धि, उवागि वि श्रुवउंमादो 'अत्रा भक्ति' ति  
 हृदयो वा । श्रोत्राणां श्रुवदनीं नरो निविहो, उवामावादो । अवसेमां सादि-अदुतो,  
 अदुदुधवन्तो ।

### मेमं मणपञ्जवणाणिभंगो ॥ २३० ॥

इदं मानवनामसु सप्तसर्वाण परवृत्तानां कदा तथा एत्य वि कथयन्ता । केति  
 विदुषोः कथि, अदुमपवंगहृदुगारचचना । नयासतामिन्यन्धित्तदमगणो ।

विदुषोः कथि नवो वोच्छिणो । उदयवोच्छेदो गन्धि, सुदुमसासपदप-अं  
 अदुदुमसु वि तदुदयदंमादो । यत्रो सोदय-परोदयो, अदुवोदयत्तादो । गितयो, श्रुव  
 हृदयो । पञ्चदा सुगमा, श्रोत्रपञ्चपहितो विषेसामावादो । देवगडसुतो, गतताम्  
 अदुदुमादो । मनुसा मानी, अन्त्या सनमामावादो । पमत्तसजदप्यहुडि जाव अपुव्वकरीणि

अन्त्यासु सुगम है, क्योंकि, यह सूत्रमें निर्दिष्ट है । बन्धन्युच्छेद नहीं है, क्योंकि, ऊपर  
 की कथन गया जाता है अथवा 'अपूषक नहीं है' इस सूत्रसे भी बन्धन्युच्छेदका अभाव  
 सिद्ध है । अतएव अथर्वव्याकरणप्रतियोगिका बन्ध तीन प्रकार होता है, क्योंकि, अथर्व बंधका  
 अभाव है । अथर्व प्रतियोगिका सादि य अथर्व बन्ध होता है, क्योंकि, वे अथर्ववर्धी हैं ।

### अथ अदुदुमसु प्ररूपणा मनपर्ययज्ञानियोंके समान है ॥ २३० ॥

इति प्रकृत मनपर्ययज्ञानियोंमें दोष प्रतियोगिकी प्ररूपणा की है उसी प्रकार  
 अथर्व अथर्व प्रतियोगिकी । यदा कुछ विशेषता भी है क्योंकि, नपुंसकवेद और आहारकिके  
 अभाव, जो मनपर्ययज्ञानियोंमें नहीं थे, यहा देखे जाते हैं ।

इति अथर्व प्रतियोगिका पूर्वमें यथ व्युच्छिन्न होता है । उनका उदयव्युच्छेद नहीं है,  
 क्योंकि, अदुदुमसुप्रतियोगिकी वीर यथाव्याप्तसयतोंमें भी उनका उदय देखा जाता है । यथ  
 अथर्व प्रतियोगिकी होता है, क्योंकि, ये अथर्वप्रतियोगिकी हैं । निरन्तर यथ होता है, क्योंकि, श्रुव  
 प्रतियोगिकी । अथर्व प्रतियोगिकी है, क्योंकि, अथर्वप्रतियोगिकीसे कोई भेद नहीं है । देवगतिसे सयुक्त बंध  
 प्रतियोगिकी है, क्योंकि, अथर्वप्रतियोगिकीसे अन्य गतियोंके यथका अभाव है । मनुष्य स्वामी हैं, क्योंकि, अन्य  
 प्रतियोगिकी अथर्वप्रतियोगिकी अभाव है । प्रमत्तसयतने लेकर अपूषकरण तक यथाव्याप्त है । अपूष

१ अथर्वप्रतियोगिकी 'आ विवेका अथर्व प्रतियोगिकी', धारती 'के वि विवेको अथर्व प्रतियोगिकी' इति पाठ ।  
 २ अथर्वप्रतियोगिकी 'अथर्वप्रतियोगिकी' इति पाठ ।  
 ३ अथर्वप्रतियोगिकी 'अथर्वप्रतियोगिकी' इति पाठ ।

ति बंधद्वान् । अपुञ्चकरणद्वाए सतमभागचरिमसमए बंधो वोच्छिज्जदि । कथमेद णव्वदे ? सुताविरुद्धाइरियवयणादो । तिविहो' बंधो, धुवाभावादो ।

एव चैव पुरिसवेदस्स वत्तव्व । णवरि अद्धानमणियट्टिअद्वाए सखेज्जा भागा ति वत्तव्व । देवगइ-अंगइसजुत्ती । दुविहो बंधो, अद्दुव्वचधित्तादो ।

क्रोधसंजलणस्स लोभसजलणभगो । णवरि अद्धानमणियट्टिअद्वाए सखेज्जा भागा ति । एव माण-मार्यासजलणाण पि वत्तव्व । णवरि क्रोधबंधवोच्छिण्णुवरिमद्वाए सखेज्जाभागे गतूण माणवधद्वाण समप्पदि' । ससद्वाए सखेज्जे भागे गतूण मायवधद्वाण समप्पदि' ति वत्तव्व ।

हस्स रदि-भय दुग्गुळाण-बंधोदया सम वोच्छिण्णा, अपुञ्चकरणद्वाए चरिमसमए तदभावदसणादो । बंधो सोदय परोदओ, अद्दुवोदयत्तादो । हस्स रदीण बंधो पमत्तम्भि सातरो ।

करणकालके सतम भागके अन्तिम समयमें बन्ध व्युच्छिन्न होता है ।

शुका— यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान— सूत्रसे अविरुद्ध आचार्योंके वचनसे यह जाना-जाता है ।

उनका तीन प्रकारका बन्ध होता है, क्योंकि, ध्रुव बन्धका अभाव है ।

इसी प्रकार ही-पुरुषपदेके भी कहना चाहिये । विशेषता यह है कि बन्धाध्यान अनिवृत्तिकरणकालका सख्यात बहुभाग है, ऐसा कहना चाहिये । देवगतिसयुक्त और अगतिसयुक्त बन्ध होता है । दो प्रकारका बन्ध होता है, क्योंकि, वह अधुवबन्धी है ।

सज्वलनक्रोधकी प्ररूपणा सज्वलनलोभके समान है । विशेष इतना है कि बन्धाध्यान अनिवृत्तिकरणकालका सख्यात बहुभाग है । इसी प्रकार सज्वलन मान और मायाके भी कहना चाहिये । विशेषता यह है कि सज्वलनक्रोधके बन्धके व्युच्छिन्न होनेके उपरिम कालका सख्यात बहुभाग धिताकर मानबन्धाध्यान समाप्त होता है । शेष कालके सख्यात बहुभाग जाकर मायाबन्धाध्यान समाप्त होता है, ऐसा कहना चाहिये ।

हास्य, रति, भय और जुगुप्साका बन्ध व उदय दोनों माथमें व्युच्छिन्न होते हैं, क्योंकि, अपूर्वकरणकालके अन्तिम समयमें उनका अभाव देखा जाता है । बन्ध उनका स्वोदय परोदय होता है, क्योंकि, ये अधुवोदयी प्रकृतिया हैं । हास्य और रतिका बन्ध प्रमत्त

१-प्रतिपु ' तिविहो ' इति पाठ ।

२-प्रतिपु 'समप्पदि' इति पाठ ।

३-अ-आप्रयो 'समप्पदि' इति पाठ ।

उवरि गिरंतरो, पडिवक्खपयडिउपामावादो । भय-दुगुळाण सव्वत्थ गिरंतरो, धुववधित्तादो । पच्चया सुगमा, ओवपच्चएहिंतो निसेसामावादो । देवगइसजुत्तो अगइसजुत्तो पि, अपुञ्च-करणद्वाए चरिमसत्तमभागे गईए वगामावादो । मणुमा मामी । पमतसजदप्पहुडि जाव अपुञ्च-करणो ति वधद्वाण । अपुञ्चकरणचरिमसमए वधो त्तिच्छिज्जदि । भय-दुगुळाण तिविदो वधो, धुववधित्तादो । सेसाण सादि अद्दुवो, त्तिउररीयवधादो ।

देवाउअस पुच्चावरकालेसु वधोदयवोच्छेदपरिकरता णत्थि, उदयामावादो । परोदओ वधो, सामावियादो । गिरंतरो, अनेसुहुत्तेण विणा वधुवरमामावादो । पच्चया सुगमा । देवगइसजुत्तो । मणुसा चेव सामी । पमत अप्पमतमज्जा वधद्वाण । अप्पमतद्वाए सत्तेज्जदिम भाग गतूण वधो वात्तिज्जदि । सादि अद्दुवो वधो, अद्दुववधित्तादो ।

सपहि देवगइसहगयण सत्तागोमपयडीण भण्णमाणे पुच्चावरकालेसु वधोअयवोच्छेद-परिखा जाणिय कायना । देवगइ वेउव्वियदुगाण वधो परोदएण, सामावियादो । समचउ-रममडाण-पसयविहायगइ-सुम्मराण मोदय परोदओ, मज्जेसु पडिवक्खपयडीण पि उदय-

सयत गुणस्थानमें स्नान्न होता है । ऊपर निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, यहा प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बाधका अभाव है । भय और जुगुप्साका सर्वत्र निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, वे ध्रुववधी हैं । प्रत्यय सुगम है, क्योंकि, ओघमन्ययोंसे कोई विशेषता नहीं है । देवगतिमयुक्त और अगतिमयुक्त भी बन्ध होता है, क्योंकि, अपूर्वकरणकालके अन्तिम सतम भागमें गतिके बन्धका अभाव हो जाता है । मनुष्य स्वामी है । प्रमत्तसयतसे लेकर अपूर्वकरण तक व धाध्वान है । अपूर्वकरणके अन्तिम समयमें बाध व्युच्छिन्न होता है । भय और जुगुप्साका तीन प्रकारका बाध होता है, क्योंकि, वे ध्रुव व धा ह । शेष प्रकृतियोंका सादि व अध्रुव बन्ध होता है क्योंकि, वे उनसे विपरित ( अध्रुव ) बाधवाली हैं ।

देवामुके पूर्वापर कालभाधी बाध व उदयके व्युच्छेदकी परीक्षा नहीं है, क्योंकि, यहा उसका उदयामाव है । परादय बन्ध होता है, क्योंकि, ऐसा स्वभाव है । निरन्तर बन्ध होता है क्योंकि, अतमुहूर्त्तके विना उसके बाधविधामका अभाव है । प्रत्यय सुगम है । देवगतिसयुक्त बाध होता है । मनुष्य ही स्वामी है । प्रमत्त और अप्रमत्त सयत बन्धाध्वान हैं । अप्रमत्तकालके सख्यातवें भाग जाकर बन्ध व्युच्छिन्न होता है । सादि व अध्रुव बाध होता है, क्योंकि, यह अध्रुववधी है ।

अत्र देवगतिके साथ रहनेवाली [ परभाविक नामकर्मकी ] सत्ताईस प्रकृतियोंकी प्ररूपणा करते समय पूर्वापर कालोंमें बाध व उदयके व्युच्छेदकी परीक्षा जानकर करना चाहिये । देवगतिके और वैकल्पिकदिकका बाध परोदयसे होता है, क्योंकि, ऐसा स्वभाव है । समचतुरस्रस्थान, प्रदास्तविहायो भाति और सुसरका स्वोदय परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, सयतोंमें इनकी



सुगम ।

पमत्तसंजदा वधा । एदे वधा, अवसेसा अवंधा ॥ २३४ ॥

असातोपेदणीय अरदि-मोगाणमेत्थ वधोच्छेदो चेत्त, उदयरोच्छेदो णत्थि, उव्वरि तदुदयवोच्छेदुत्तमादो । अथिअ अमुभाण पि एत्त चेत्त वत्तन्त्र, पमत्त सजोगीसु वधोदय वोच्छेददसणादो । अत्तसक्कितीए पुत्तमुदओ पच्छा वधो वोच्छिज्जदि, पमत्तासजदसम्मादिडीसु वधोदयरोच्छेददसणादो । अथिअ अमुहाण सोदओ, अजमक्कितीए परोदओ, सेसाण वधो सोदय-परोदओ । सात्तंग वधो, एदामिमेगसमएण वि वधुत्तमदसणादो । इत्थि-णवुत्तसवोदाहार दुगविरहिदोषपच्चया एत्थ वत्तन्त्रा । देवगइ [-सजुत्तो] वधो । मणुसा सामी । वधद्वान्ण णत्थि, एगगुणद्वान्हि' तदमभवादो । पमत्तमवदत्तारिमसमए व रो वोच्छिज्जदि । सादि-अद्दुत्तो वधो, अद्दुववधित्तादो ।

देवाउअस्स को वधो को अवधो ? ॥ २३५ ॥

यह सज सुगम है ।

प्रमत्तसयत्त वधक है । ये बन्धक हैं, शेष अवन्धक है ॥ २३४ ॥

असातोपेदणीय, अरति और शोकका यहा बन्धव्युच्छेद ही है उदयव्युच्छेद नहीं है; क्योंकि ऊपर उनका उदयव्युच्छेद पाया जाता है। अस्तिअ और अशुभका भी इसी प्रकार कहना चाहिये, क्योंकि, प्रमत्त आर मन्योगकेउली गुणस्थानोंमें क्रमसे उनके बन्ध और उदयका व्युच्छेद देखा जाता है। अपशनीतिंका पूर्वमें उदय आर पश्चान् बन्ध व्युच्छिन्न होता है क्योंकि, प्रमत्त और असयत्तसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें क्रमश उसके बन्ध और उदयका व्युच्छेद देखा जाता है। अस्तिअ और अशुभका म्योदय, अपशनीतिंका परोदय, तथा शेष प्रवृत्तियोंका उध म्योदय परोत्थ होता है। सात्तंग वन्ध होता है, क्योंकि, इन प्रवृत्तियोंका एक समयसे भी उधप्रशाम देखा जाता है। स्त्रीत्त, नपुंसकपेद और आहारकट्टिकसे रहित यहा ओघप्रत्यय कहना चाहिये। देवगनिसयुक्त वन्ध होता है। मनुष्य स्वामा है। वधाप्यान नहा है, क्योंकि एत्त गुणस्थानमें उसकी सम्भावना नहीं है। प्रमत्तसयत्त गुणस्थानके अन्तिम समयमें वन्ध व्युच्छिन्न होता है। सादि उ अधुय वन्ध होता है, क्योंकि, ये अधुयवधी प्रवृत्तिया है।

देवासुका कौन वधक और कौन अवन्धक है ? ॥ २३५ ॥

सुगम ।

पमत्तसंजदा अप्पमत्तसंजदा वंधा । अप्पमत्तसजदद्दाए संखेज्जे भागे गंतूण वंधो वोच्छिज्जदि । एदे वंधा, अवसेसा अवंधा ॥२३६॥

उदयादो बधो पुत्र पच्छ वा वोच्छिण्णो त्ति त्रिचारो णत्थि, सजदेसु देवाउअस्स उदयाभावादो । परोदओ बधो, बधोदयाणमन्कमवुत्तिविरोहादो । णिरतरो, अतोमुहुत्तेण विणा वधुनरमाभावादो । पच्चया सुगमा, ओघपच्चएहितो विसेसाभावादो । णवरि आहारदुगित्थि-णवुसयवेदपच्चया णत्थि । देवगइसजुत्तो, मणुमा सामीओ, अणगयनधद्दाणो, अप्पमत्तद्दाए संखेज्जे भागे गंतूण वोच्छिण्णबधो । सादि अद्दुवो ।

आहारसरीर-आहारसरीरंगोवगणामाणं को वंधो को अवंधो ?

॥ २३७ ॥

सुगम ।

अप्पमत्तसंजदा वंधा । एदे वंधा, अवसेसा अवंधा ॥२३८॥

यह सूत्र सुगम है ।

प्रमत्तसयत और अप्रमत्तसयत बन्धक हैं । अप्रमत्तसयतकालका सख्यात बहुभाग जाकर बन्ध व्युच्छिन्न होता है । ये बन्धक हैं, शेष अबन्धक हैं ॥ २३६ ॥

उदयसे बन्ध पूर्वमे या पश्चात् व्युच्छिन्न होता है, यह विचार यहां नहीं है, क्योंकि, मयत जीवमे देवायुके उदयका अभाव है । परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, उसके पक्ष और उदयके एक साथ रहनेका विरोध है । निरन्तर बन्ध होता है क्योंकि, अतर्मुहूर्तके विना उसके बन्धत्रिशामका अभाव है । प्रत्यय सुगम है, क्योंकि, ओघप्रत्ययसे कोई विशेषता नहीं है । विशेष इतना है कि आहारकद्विक, खीवेद और नपुंसकवेद प्रत्यय नहीं हैं । देवगति सयुक्त बन्ध होता है । मनुष्य स्वामी हैं । बन्धाध्यान सूत्रसे जाना जाता है । अप्रमत्तकालके सख्यात बहुभाग जाकर बन्ध व्युच्छिन्न होता है । सादि घ अघ्रय बन्ध होता है ।

आहारकशरीर और आहारकशरीरागोपाग नामकर्मका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ २३७ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

अप्रमत्तसयत बन्धक है । ये बन्धक हैं, शेष अबन्धक हैं ॥ २३८ ॥

एदासि देवाउभमगो । णपरि ववद्धान णत्थि, एवकम्हि गुणद्वारे अद्धानासमरादो ।  
 वधोच्छेदो णत्थि, उवर्णि पि उधुवलभादो ।

सुहुमसांपराइयसुद्धिसजदेसु पंचणाणावरणीय च उदंसणावरणीय  
 सादावेदणीय-जसकित्ति उच्चागोद पंचतराइयाण को वधो को अवधो ?  
 ॥ २३९ ॥

सुगम ।

सुहुमसांपराइयउवसमा खवा वधा । एदे वधा, अवधा  
 णत्थि ॥ २४० ॥

एदासि वधोदयवोच्छेदाभावादो उदयादो वधो पुत्र पञ्जा वा वीच्छिणो  
 ति ण परिक्रता कीरदे । सात्तावेदणीयसु वधो सोदय परोदओ अणुदए ति वधपरोदा-  
 भावादो । णिरतरा सञ्जयटीण वधो, एत्थ गुणद्वारेसु वधुवसमाभावादो । ण एगसमयमच्छिय  
 सुदसुहुमसांपराइएहि वियहिचारो, सुहुमसांपराइयगुणद्वारेणमि ति तिसेमणादो । ओरालिय

इन दोनों प्रकृतियोंकी प्ररूपणा द्वागुन समान ह । विशेष इतना ह कि वन्धाघ्वान  
 नहा है, क्योंकि, एन गुणस्थानमें अध्यायकी सम्भायना नहीं है । वध-पुच्छेद नहीं है,  
 क्योंकि, ऊपर भी वध पाया जाता है ।

सुक्ष्मसाम्परायिकसुद्धिसयतोंमि पाच जानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, सातावेदनीय,  
 यशकीर्ति, उच्चगोत्र और पाच अतराय, इनका कौन वन्धक और कौन अवन्धक है ?  
 ॥ २३९ ॥

यद मूत्र सुगम है ।

सुक्ष्मसाम्परायिक उपजमक और क्षपक वधक ह । ये वधक हैं, अवन्धक नहीं हैं  
 ॥ २४० ॥

इन प्रकृतियोंके वध व उदयके व्युत्पत्तिका जभाप होनेसे उदयसे वन्ध पूर्वमें  
 व्युत्पत्त होता है या पश्चात्, यह परीक्षा यहा नहा की जाती है । सातावेदनीयका वध  
 सोदय-परोदय होता है, क्योंकि, उदयके न होनेपर भी उसके वधमें कोई विरोध नहीं  
 है । इन सब प्रकृतियोंका निरन्तर उदय होता ह, क्योंकि, इस गुणस्थानमें वन्धविधामका  
 अभाव है । ऐसा माननेपर एक समय रहकर सुत्थुको प्राप्त हुए सुक्ष्मसाम्परायिक सयतोंसे  
 व्यभिचार होगा, यह भा नहीं कहा जा सकता ह, क्योंकि, 'सुक्ष्मसाम्परायिक गुणस्थानमें'  
 ऐसा विरोध दिया गया है । आशारिक पापयाग, लाम कपाय, चार मनोयोग और चार

कायजोग-लोभकसाय चदुमण-त्रचिजोगा ति दम पञ्चया । अगइसलुतो वंधो, एत्थ चउगड-  
व भावादो । मणुमा सामी, अण्णत्थ सुहुममापराडयाणमभावादो । वधद्वान्ण णत्थि, सुहुम-  
मापरायण्णहुडि ति सुत्ते अणुत्तदिट्ठतादो । वधयोच्छेदो णत्थि, 'अवंधा णत्थि' ति वयणादो ।  
पचणाणांवरणीय-चउदसणावरणीय-पचतराडयाण तिनिहो वधो, धुवाभावादो । सेसाण  
सादि अद्भवो ।

जहाक्खादविहारसुद्धिसंजदेसु सादावेदणीयस्स को वंधो को  
अवधो ? ॥ २४१ ॥

सुगम ।

उवसंतकसायवीदरागछदुमत्था खीणकसायवीयरायछदुमत्था  
सजोगिकेवली वंधा । सजोगिकेवल्लिअट्ठाए चरिमसममं गत्तूण  
[ वंधो ] वोच्छिज्जदि । एदे वंधा, अवसेसा अवंधा ॥ २४२ ॥

सुगममेद, केवलणाणमग्गणापरूणणए समाणत्तादो ।

वचनयोग, ये दश प्रत्यय हैं । गतिसयोगसे रहित बन्ध होता है, क्योंकि, यहा चारों गतियोंके  
बन्धका अभाव है । मनुष्य स्वामी है, क्योंकि, अन्य गतियोंमें सूक्ष्मसांप्रदायिक स्वयत्तोंका  
अभाव है । बन्धाधान नहीं है, क्योंकि, 'सूक्ष्मसांप्रदायिक आदि' ऐसा सूत्रमें निर्देश  
नहीं किया गया है । बन्धयुच्छेद नहीं है, क्योंकि, 'अवधक नहीं है' ऐसा सूत्रका  
वचन है । पांच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय और पांच अन्तराय, इनका  
तीन प्रकारका बन्ध होता है, क्योंकि, उनके ध्रुव बन्धका अभाव है । शेष प्रवृत्तियोंका सादि  
व अध्रुव बन्ध होता है ।

यथाख्यातविहारशुद्धिसयत्तोंमें सातावेदनीयका कौन बन्धक और कौन अवबन्धक है ?  
॥ २४१ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

उपशान्तरूपाय वीतराग छद्मस्थ, क्षीणरूपाय वीतराग छद्मस्थ और सयोगकेवली  
बन्धक हैं । सयोगकेवलिकालके अन्तिम समयको जाकर [ नन् ] व्युच्छिन्न होता है । ये  
बन्धक हैं, शेष अवबन्धक हैं ॥ २४२ ॥

यह सूत्र सुगम है, क्योंकि, केवलज्ञानमार्गणाकी प्ररूपणासे इसकी समानता है ।



संजदासजदेसु पंचणाणावरणीय-छदंसणावरणीय-सादासाद-  
अट्टकसाय पुरिसवेद-हस्स रदि सोग-भय टुगुछ-देवाउ देवगह-पंचिंदिय-  
जादि-वेउन्विय तेजा कम्मइयसरीर-समचउरससठाण-वेउन्वियसरीर-  
अगोवग वण्ण गध रस-फास देवगइपाओग्गाणुपुब्बी-अगुरुवलहुव-उव-  
घाद परघाद-उस्सास-पसत्थनिहायगइ-त्तस वादर-पज्जत्त पत्तेयसरीर-  
थिराथिर-सुहासुह सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-जसकित्ति-अजसकित्ति-  
णिमिण तित्थयरुच्चागोद पचंतराइयाण को वधो को अवधो ?  
॥ २४३ ॥

सुगम ।

सजदासजदा वंधा । एदे वंधा, अवधा णत्थि ॥ २४४ ॥

उदयादो पुच्च पच्छा वा वओ वोच्चिठणो ति णत्थि विचारो णत्थि, बधवोच्छेदा-  
भावादो । पचणाणावरणीय चउदसणावरणीय पंचिंदियत्ति तेजा-कम्मइयसरीर-वण्णचउक्क  
अगुरुअट्टहुअचउक्क-थिराथिर सुहासुह सुभगादेज्ज जसकित्ति णिमिण-पचतराइयाण सोदओ

सयतासयतोंमें पाच ज्ञानावरणीय, छह दर्शनावरणीय, साता व असाता वेदनीय, आठ  
कषाय, पुरुषवेद, हास्य, रति, शोक, भय, जुगुप्सा, देवायु, देवगति, पंचेन्द्रियजाति,  
वैकियिक, तैजस व कार्मण शरीर, समचतुरस्रसस्थान, वैकियिकशरीरागोपाग, वर्ण, गन्ध,  
रस, स्पर्श, देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वा, अगुरुलघु, उपघात, परघात, उच्छ्वास, प्रशस्तविहायोगति,  
उस, चादर, पर्याप्त, प्रयेकशरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुभग, सुस्वर, आदेय,  
यशकृति, अयशकृति, निर्माण, तीर्थकर, उच्चगोन और पाच अन्तराय, इनका कौन बन्धक  
और कौन अवन्धक है ? ॥ २४३ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

सयतासयत बन्धक हैं । ये नन्धक हैं, अवन्धक नहीं हैं ॥ २४४ ॥

इन प्रश्नियोंका बन्ध उदयमे पूरमें या पश्चात् व्युत्पिच्छन होना है, यह विचार यहाँ  
नहीं है, क्योंकि, उज्ज्वे बन्धव्युच्छेदका अभाव है । पाच ज्ञानावरण, चार दर्शनावरण,  
चिंदिय जाति, तैजस व कामण शरीर, वर्णादिक चार, अगुरुलघु आदिक चार, स्थिर,  
स्थिर, शुभ, अशुभ, सुभग, आशुभ, यदार्कान्त, निर्माण और पाच अन्तरायका स्वोदय

वधो, एत्थ ध्रुवोदयचतुवलादो । देवाउ देवगइ-वेउच्चियसरीर-अगोवग देवगइपाओग्गाणुपुञ्ची-अजसकित्ति-तित्थयराण परोदओ चओ, वधोदयाणमण्णोण्णविरोहादो । णिद्दा-पयला-सादासाद-अट्टकसाय-पुरिसवेद हस्स-रदि-अरदि-सोग-भय-दुगुठा-समचउरससठाण-पसत्थविहायगइ-सुस्मरुच्चागोदाण वधा सोदय परोदओ, उहयहा नि वधविरोहाभावादो ।

पचणाणानरणीय छदमणानरणीय-अट्टकमाय पुरिसवेद भय दुगुठा-देवाउ-देवगइ-पच्चि-दियजादि-वेउच्चिय तेजा-कम्मइयसरीर-समचउरससठाण वेउच्चियमरीरअगोवग वण्णवउक्क-देवगइपाओग्गाणुपुञ्ची-अगुरुत्तलहुवचउक्क-पसत्थविहायगइ-तमचउक्क सुभग-सुस्सरादेच्च-णिमिण तित्थयरुच्चागोद-पचतराइयाण नओ णिरतरो, एगममएण वधुत्तरमाभावादो । सादासाद-हस्स रदि-अरदि सोग थिराविर-सुहासुह असकित्ति-अजसकित्तीण वधो सातरो, एगसमएण वधु-वरमदमणादो । पच्चया सुगमा, ओवाणुव्वइपच्चएहिंतो भेदाभावादो । सन्वासि पयडीण देवगइ-सल्लुत्तो वधो, अण्णगईण वनाभावादो । दुगइदेसच्चडणो सामी, अण्णत्थ तेमिमभावादो । वधडाण णत्थि, एक्कगुणट्ठाणे तदसभनादो । अधवा अत्थि, पच्चवट्ठियणयावलण्णादो ।

वन्ध होता है, क्योंकि, यहा इनका पुत्र उदय पाया जाता है । देवायु, देवगति, वैक्रियिक शरीर व वैक्रियिकशरीरागोपाग, देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वा, अयशकीर्ति और तीर्थकरका परोदय वन्ध होता है, क्योंकि, इनके वन्ध और उदयका परम्परमें विरोध है । निद्रा, प्रचला, साता व असाता वेदनीय आठ कपाय, पुरुपवेद, हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, समचतुरस्रसस्थान, प्रशस्तविहायोगति, सुस्सर और उच्चगोत्रका वन्ध स्रोदय परोदय होता है, क्योंकि, दोनों प्रकारसे भी इनके वन्धका विरोध नहीं है ।

पाच ज्ञानावरणीय, छह दर्शनावरणीय, आठ कपाय, पुरुपवेद, भय, जुगुप्सा, देवायु, देवगति पचेन्द्रिय जाति, वैक्रियिक, तेजस व कार्मण शरीर, समचतुरस्रसस्थान, वैक्रियिकशरीरागोपाग, वर्णादिक चार, देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, अगुरुत्तलघु आठिक चार, प्रशस्तविहायोगति, प्रसादिक चार सुभग, सुस्सर, आदेय, निर्माण, तीर्थकर, उच्चगोत्र और पाच अन्तराय, इनका वन्ध निरन्तर होता है, क्योंकि, एक समयसे उनके वधविश्रामका अभाव है । साता व असाता वेदनीय, हास्य, रति, अरति, शोक, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, यशकीर्ति आर अयशकीर्तिका वन्ध सान्तर होता है, क्योंकि, एक समयसे उनका वन्धविश्राम देखा जाता है । प्रत्यय सुगम है, क्योंकि, सामान्य अणुव्रतीके प्रत्ययोंसे कोइ भेद नहीं है । सब प्रवृत्तियाना देवगतिसयुक्त वन्ध होता है, क्योंकि, अन्य गतियोंके वन्धका चहा अभाव है । दो गतियोंके देशव्रती स्वामी ह, क्योंकि, अन्य गतियोंमें उनका अभाव है । वन्धाघ्नान नहीं ह, क्योंकि, एक गुणस्थानमें उसकी सम्भावना नहीं है । अथवा पर्यायाधिक नयका अलम्बन करके वन्धाघ्नान है ।

धधयोच्छेने णत्थि, 'अवधा णत्थि' ति वयणादो । धुवन्धीण तिविहो वधो, धुवाभावाद्दो ।  
 मेसाण सादि अद्भवो, अद्भवधीत्तादो ।

असजदेसु पचणाणावरणीय छदंसणावरणीय सादासादन्वारस  
 कसाय पुग्मिपेद-हस्स रदि-अरदि सोग मय दुगुंछा मणुसगइ-देवगइ-  
 पचिदियजादि ओरालिय-वैउब्बिय-तेजा कम्मइयमरीर-समचउरस-  
 सठाण ओरालिय वैउदियअगोवग-वज्जरिसहसवडण वण्ण-गंध रस-  
 फास मणुसगइ देवगइपाओगाणुपुव्वी अगुरुअलहुअ-उपघाद परघाद-  
 उस्तास-पसत्थविहायगइ-तस वादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-थिराथिर-सुहा-  
 सुह-सुभग सुस्सर-आदेज्ज-जसकित्ति-अजसकित्ति-णिमिणुच्चागोद-  
 पचतराइयाण को वधो को अवधो ? ॥ २४५ ॥

सुगम ।

मिच्छाद्विष्टिपहुडि जाव असजदसम्मादिट्ठी वधा । एदे वधा,  
 अवधा णत्थि ॥ २४६ ॥

बन्ध पुच्छेद नहीं है, क्योंकि, 'अवधक नहीं है' एसा सूत्रमें कहा गया है । धुवन्धी  
 मरुतियाका तीन प्रकारका बध होता है, क्योंकि, उनके धुव बन्धका अभाव है । शेष  
 मरुतियोंका सादि व अक्षय बन्ध होता है, क्योंकि, वे अधुवन्धी हैं ।

असमतोमे पाच ज्ञानावरणीय, उह दर्शनावरणीय, साता व असाता चेदनीय, वातह  
 कपाय, पुरुषवेद, हास्य, रति, अरति, शोक, मय, जुगुप्सा, मनुष्यगति, देवगति, पचेन्द्रिय  
 जाति, औदारिक, वैक्रियिक, तैजस व कामण शरीर, समचतुरस्रसस्थान, औदारिक व  
 वैक्रियिक अगोपाग, रज्रपेभमहनन, वर्ण, गंध, रस, स्पर्श, मनुष्यगति व देवगति प्रायोग्यानुपूर्वी,  
 अगुरुत्तु, उपघात, परघात, उच्छ्वास, प्रशस्तविहायोगति, तस, वादर, पर्याप्त, पत्येकशरि  
 थिर, अथिर, शुभ, अशुभ, सुभग, सुस्सर, आदिय, यशकीर्ति, अयशकीर्ति, निर्माण, उच्चगो  
 और पाच अतराय, इनका कौन बधक और कौन अवन्धक है ? ॥ २४५ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

मिथ्यादृष्टिसे लेकर असमतसम्यग्दृष्टि तक बन्धक है । ये बन्धक हैं, अबन्धक न  
 हैं ॥ २४६ ॥

एत्योदइल्लाण वधोदययोच्छेदाभातादो उदयादो वधो किं पुत्र पच्छा वा वोच्छिण्णो  
 ति विचारो णत्थि । पचनाणानरणीय चउदसणानरणीय-तेजा-कम्मडयसरीर-वण्णचउत्त-  
 अगुरुअलहुअ-धिरायिर-सुहासुह-णिमिण पचतराडयाण सोदओ वधो, पुत्रोदयत्तादो । देवगइ-  
 वेउच्चियसरीर-वेउच्चियसरीरअगोवग-देवगइपाओग्माणुपुव्वीण पगेदओ वधो, वधोदयाण परो-  
 प्परविरोहादो । णिहा-पयला-सादामाद-चारसरुमाय पुरिसवेद-हस्म रदि-अरदि-सोग-भय-दुगुछा-  
 समचउरससठाण पसरथनिहायगइ-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-जसकित्ति-अजसकित्ति-उच्चागोदाण  
 वधो सोदय-परोदओ उहयहा वि वधुवलभादो । मणुसगइ-मणुमगइपाओग्माणुपुव्वी-ओरालिय-  
 सरीर-ओरालियसरीरअगोवग-वज्जरिसहसघडणाण मिच्छादिट्ठि मामणमम्मादिट्ठीसु सोदय-परो-  
 दओ, उहयहा वि वधुवलभादो । सम्मामिच्छादिट्ठि-असजदसम्मादिट्ठीसु परोदओ, सोदएण सग-  
 वधस्स तत्थ विरोहदमणादो । पंचिदियजादि-तस-वादर पज्जत्ताण मिच्छादिट्ठीसु सोदय-परोदओ ।  
 उपरि सोदओ चेव, विगल्लिदिय-थानर-सुहुमापज्जत्तएसु सासणादीणमभातादो । उवघाद-  
 परघाद उस्सुस-पत्तेयसरीराण मिच्छादिट्ठि-सामणसम्मादिट्ठि असजदसम्मादिट्ठीसु सोदय-

यहा उदय युक्त प्रकृतियोंके बन्ध और उदयके व्युच्छेदका अभाव होनेसे उदयकी  
 अपेक्षा बन्ध क्या पूर्वमें और या पश्चात् युच्छिन्न होता है, यह विचार नहीं है । पाच  
 ज्ञानावरणीय, चार दर्शनानरणीय, तैजस व कर्मण शरीर, वर्णादिक चार, अगुरुलघु,  
 स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, निर्माण और पाच अन्तराय, इनका स्वोदय बन्ध होता है,  
 क्योंकि, ये ध्रुवोदयी प्रकृतिया हैं । देवगति, वेनियिकशरीर, वैक्रियिकशरीरागोपाग और  
 देवगतिप्रायोग्यानुपूर्विका परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, इनके बन्ध और उदयके परस्पर  
 विरोध है । निद्रा, प्रचला, साता व असाता वेदनीय, वारह कपाय, पुरुषवेद, हास्य, रति,  
 अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, समचतुरस्रसस्थान, प्रज्ञानविहायोगति, सुभग, सुस्वर,  
 आदेय, यशकीर्ति, अयशकीर्ति और उच्चगोत्रता बन्ध न्रोदय परोदय होता है, क्योंकि,  
 दोनों प्रकारसे भी इनका बन्ध पाया जाता है । मनुष्यगति, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी,  
 औदारिकशरीर, औदारिकशरीरागोपाग और उन्नयनसहननका मिथ्याहाटि और  
 सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें स्वोदय परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, उहा दोनों प्रकारसे  
 भी इनका बन्ध पाया जाता है । सम्यग्मिथ्याहाटि और असयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें  
 परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, अपने उदयके साथ अपने बन्धका वहा विरोध देखा जाता है ।  
 पचेन्द्रिय जाति, व्रस, नादर और पर्याप्तका बन्ध मिथ्याहाटियोंमें स्वोदय परोदय होता है ।  
 ऊपर इनका स्वोदय ही बन्ध होता है, क्योंकि, विकलेन्द्रिय, स्थावर, सूक्ष्म और अपर्याप्तकामें  
 सासादनादिक गुणस्थानोंका अभाव है । उपघात, परघात, उच्छ्वाण और प्रत्येकशरीरका  
 मिथ्याहाटि, सासादनसम्यग्दृष्टि और असयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें स्वोदय परोदय

देव-गेरइएसु गिरतरवधुनलभादो । उरि गिरतरों, गिप्यडिवन्सुनधादो ।

पञ्चया सुगमा, औषपञ्चर्षितो त्रिसेसामात्रादो । पञ्चपाणानरणीय छदमणानरणीय-  
असादावेन्नीय-चारमरुसाय अरदि सोग-भय दुगुछा-पर्चिदियजादि-तेजा कम्मडयसरीर-वण्ण-  
गध-रस-फाम-अगुरुनलहुअ-उत्रघाद परघाद-उस्सास-तस नादर पञ्चत्त पत्तेयसरीर-अधिर-असुह-  
अजसक्ति गिमिण-पचतरादयाण मिच्छादिद्विद्वि चउगइमजुत्तो । सामणे गिरयगईए विणा  
निगइसजुत्तो । सम्मामिच्छादिद्वि असनदसम्मादिद्वीसु देव मणुमगइसजुत्तो । सादावेदणीय  
पुरिसेद-हस्म-रदि-समचउरससठाण पमत्थविहायगइ धिर सुम-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-जस-  
कित्तीण मिच्छादिद्वि सामणसम्मादिद्वीसु वधो तिगइसजुत्तो, गिरयगईए अभावादो । सम्मा  
मिच्छादिद्वि-असजदमम्मादिद्वीसु दुगइसजुत्तो, गिरय निरिखगईणमभावादो । ओरालियसरीर-  
ओरालियसरीरगोत्रग वज्जरिमहमघडणाण मिच्छादिद्वि सामणसम्मादिद्वीसु वधो निरिख  
मणुसगइसजुत्तो । सम्मामिच्छादिद्वि-असनदसम्मादिद्वीसु मणुसगइसजुत्तो । मणुसगइ मणुस  
गइपाओग्गाणुपुन्वीण मणुसगइसजुत्तो । देवगइ देवगइपाओग्गाणुपुन्वीण देवगइसजुत्तो ।

निरतर वध पाया जाता है । ऊपर उनका निरतर बन्ध होता है, क्योंकि, वहा वध प्रतिपक्ष महतियोंक बन्धसे रहित है ।

प्रत्यय सुगम है, क्योंकि, ओषप्रत्ययोंसे यहा कोई विशेषता नहीं है । पाच ज्ञानावरणीय, छद दर्शनावरणीय, असादा वेदनीय, राह कषाय, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, पचेन्द्रिय ज्ञानि, तैजस व कामेण शरीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अशुक्लधु, उपघात, परघात, उच्छ्वास, भ्रम, घादर, पर्याप्त, प्रयेनशरीर, अस्थिर, अशुभ, अयदाकीर्ति, निमाण और पाच अतरप्लन पच मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें चारों गतियोंसे सयुक्त, सासादन गुणस्थानमें नरकगतिते त्रिणा तीन गतियोंसे सयुक्त, तथा सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असयत सम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें देव व मनुष्य गतिसे सयुक्त होता है । सादावेदनीय, पुरुषवेद, हास्य, रति, समचतुरस्रसस्थान प्रशान्तविहायोपति, स्थिर, शुभ, सुभग, सुस्सर, आदेय और यदाकीर्तिका वध मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें तीन गतियोंसे सयुक्त होता है, क्योंकि, इन्हे साथ नरकगतिते बन्धना अभाव है । सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें दो गतियासे सयुक्त बन्ध होता है, क्योंकि, वहा नरकगति और नियमगतिना अभाव है । औदारिकशरीर, औदारिकशरीरागोपाग और यज्ञपभसहननका वध मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें तिर्यग्गति और मनुष्यगतिसे सयुक्त होता है । सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें उनका वध मनुष्यगतिसे सयुक्त होता है । मनुष्यगति

सयुक्त वध क्षाना है । देवगति और

वेउन्वियसरीर वेउन्वियसरीरअगोवगाण मिच्छाद्विहीसु दुगइसजुत्तो, तिरिक्ख मणुसगईण-  
मभावादे । सासणसम्मादिट्ठि-सम्मामिच्छादिट्ठि-असजदसम्मादिट्ठिसु देवगइसजुत्तो । उच्चा-  
गोदस्स देव-मणुसगइसजुत्तो, अण्णत्थ तस्सुदयामात्तादे ।

चउगइमिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठि-सम्मामिच्छादिट्ठि असजदसम्मादिट्ठि सामी ।  
बधद्धान सुगम । बधवोच्छेदो णत्थि, 'अबधा णत्थि' ति वयणादे । धुवन्नधीण मिच्छा-  
द्विहीसु चउव्विहो बधो । सासणादीसु तिविहो, धुवन्नधाभात्तादे । अससेण सादि-अद्दुवो,  
अद्दुन्नधित्तादे ।

**वेद्वणी ओघं ॥ २४७ ॥**

वेद्वणपयडीण जघा मूलोघम्मि परूवणा कदा तथा कायच्चा, विसेसामाषादे ।

**एककट्टणी ओघं ॥ २४८ ॥**

सुगमेद ।

**मणुस्साउ-देवाउआणं को बंधो को अबंधो ? ॥ २४९ ॥**

देवगतिले सयुक्त होता है । वैक्रियिकशरीर और वैक्रियिकशरीरागोपागका बन्ध मिथ्या-  
दृष्टियोंमें दो गतियोंसे सयुक्त होता है, क्योंकि, उनके साथ तिर्यग्गति और मनुष्यगतिके  
बन्धका अभाव है । सासादनसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असयतसम्यग्दृष्टि गुण-  
स्थानोंमें देवगतिले सयुक्त उनका बन्ध होता है । उच्चगोत्रका बन्ध देवगति और मनुष्य  
गतिले सयुक्त होता है, क्योंकि, अन्य गतियोंमें उसके उदयका अभाव है ।

चारों गतियोंके मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असयत-  
सम्यग्दृष्टि स्वामी हैं । उन्धाध्वान सुगम है । बन्ध-युच्छेद नहीं है, क्योंकि, 'अबन्धक नहीं  
है' ऐसा सूत्रमें कहा गया है । धुवन्नधी प्रकृतियोंका बन्ध मिथ्यादृष्टियोंमें चारों प्रकारका  
होता है । सासादनादिकोंमें तीन प्रकारका बन्ध होता है, क्योंकि, उहा धुवन्नधि का अभाव  
है । शेष प्रकृतियोंका बन्ध सादि व अधुव होता है, क्योंकि, वे अधुवन्नधी हैं ।

द्विस्थानिक प्रकृतियोंकी प्ररूपणा ओघके समान है ॥ २४७ ॥

द्विस्थानिक प्रकृतियोंकी प्ररूपणा जैसे मूलोघमें की गई है उसी प्रकार करना  
चाहिये, क्योंकि, मूलोघसे यहा कोई विशेषता नहीं है ।

एकस्थानिक प्रकृतियोंकी प्ररूपणा ओघके समान है ॥ २४८ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

मनुष्यायु और देवायुका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ २४९ ॥

## लेस्साणुवादेण किण्हलेस्सिय णील्लेस्सिय काउलेस्सियाण- मसजदभंगो ॥ २५८ ॥

किण्हलेस्साए ताए उच्चदे— पचनाणावरणीय छदमणावरणीय-मादासाद-घारस  
कमाय पुरिसवेद-हस्स रदि-अरदि-सोग भय द्दुगुछा मणुसगइ देवगइ-पचिदियजादि—ओरालिय-  
त्रेउव्विय तेजा-कम्मइयसरीर-समचउरससठाण ओरालिय-वेउव्वियसरीरगोवग-वन्नरिसहमपडण-  
वण्णचउक्क मणुसगइ देवगइपाओग्गाणुपुव्वी अगुरुअहुअचउक्क पसत्थविहायगइ तमचउक्क—  
थिराथिग-सुहासुह सुभग सुस्सर आदेज्ज जसकिति-अजसकिति-णिमिणुच्चागोद—पचतराइयाणि  
किण्हलेस्सियचउगुणद्धान्णजीवेहि उज्झमाणाणि । तत्थुदयादो वधो पुत्र पच्छा वा वोच्छिण्णो  
ति परिन्त्थाए असजदभंगो ।

पचनाणावरणीय चउदसणावरणीय-तेजा-कम्मइयसरीर वण्णचउक्क-अगुरुअहुअ थिरा-  
थिर-सुहासुह णिमिण पचतराइयाण वधो सोदओ, धुपोदयत्तादो । देवगइदुग-वेउव्वियदुगाण  
परोदओ, वधोदयाण समाणकालउत्तिविरोहादो । णिदा पयला साशसाद घारसकमाय-पुरिसवेद-

लेइयामार्गणानुसार कृष्णलेइयागाले, नीलेइयागाले और कापोतलेइयागाले जीवोंके  
प्ररूपणा असयतोंके समान है ॥ २५८ ॥

पहले कृष्णलेइयाके आश्रित प्ररूपणा करते हैं— पाच ज्ञानावरणीय, छह  
दर्शनावरणीय, साता असाता वेदनीय, बारह कपाय, पुरुषवेद, हास्य, रति,  
अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, मनुष्यगति, देवगति, पचेन्द्रिय जाति, औदारिक,  
वैकियिक, तेजस व कामण शरीर, समचतुरस्रसस्थान, औदारिक और वैकियिक  
शरीरगोपाग, वज्रपद्मसहनन, वर्णादिक चार, मनुष्यगति और देवगति प्रायोग्यानुपूर्वी,  
अगुरुअहु आदि चार, प्रशस्त्रनिहायोगति, प्रसादिक चार, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ,  
सुभग, सुस्सर, आदेज, यशकीति, अयशकीति, निर्माण, उच्चगोत्र और पाच अतराय, ये  
प्रकृतिया कृष्णलेइयागाले चार गुणस्थानवर्ती जीवों द्वारा यध्यमान हैं। उनमें 'उदयसे बन्ध  
पूर्वमें व्युच्छिन्न होता है या पश्चात्' इन् प्रकारकी परीक्षा यहा असयत जीवोंके समान है।

पाच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, तेजस व कामण शरीर, वर्णादिक चार,  
अगुरुअहु स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, निर्माण और पाच अतरायका बन्ध स्वोदय  
होता है, क्योंकि, वे धुपोदयी हैं। देवगतिद्विक और वैकियिकद्विकका परोदय बन्ध होता  
है, क्योंकि, इनके बन्ध और उदयके समान कालमें रहनेका विरोध है। निद्रा, प्रचला,  
साता व असाता वेदनीय, बारह कपाय, पुरुषवेद, हास्य, रति, अरति, शोक, भय,

हृत्स-रदि-अरदि-सोग भय-दुगुछा-समचउरससठाण-पसत्यविहायगइ-सुभग-सुस्सर-आदेज-जस-  
 किति-अजसकिति-उच्चागोदाण सोदय-परोदओ, उभयहा वि वधुवलभादो । मणुसगइदुगोरा-  
 लियदुग वज्जरिसहसंघडणाण मिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीसु सोदय परोदओ, उभयहा वि  
 वधुवलभादो । सम्मामिच्छादिट्ठि-असजदसम्मादिट्ठीसु परोदओ, सोदयवधाणमेदेसु गुणङ्गाणेसु  
 अक्कमउत्तिविरोहादो । पचिंदियजादि तस-वादर-पज्जत्ताण मिच्छाइट्ठीसु सोदय-परोदओ,  
 एत्थ पडिवक्खपयडीण पि उदयसभवादो । उवरि सोदओ चेष, विगळिंदिय-थावर-सुहुम-  
 अपज्जत्तएसु सासणादीणमभावादो । उवघाद-परघादुस्सास-पत्तेयसरीराण मिच्छादिट्ठि-सासण-  
 सम्मादिट्ठीसु सोदय-परोदओ । असजदसम्मादिट्ठीसु सोदय-परोदओ, छट्टपुढवीपच्छायदाण-  
 मपज्जत्तकाळे असजदसम्मादिट्ठीण परोदएण वधसभवादो । सम्मामिच्छाइट्ठीसु सोदओ,  
 एदेसिमपज्जत्तदाभावादो ।

पचणाणारणीय-छदंसणावरणीय-वारसकसाय भय-दुगुछा-त्तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-  
 चउक्क-अगुरुवलहुव-उवघाद-णिमिण-पचतराइयाण वधो णिरतरो, धुववधित्तादो । सादासाद-

जुगुप्सा, समचतुरस्रसस्थान, प्रशस्तविहायोगति, सुभग, सुस्वर, आदेय, यशकीर्ति, अयशकीर्ति और उच्चगोत्रका स्वोदय परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, दोनों प्रकारसे भी इनका बन्ध पाया जाता है । मनुष्यगतिक्रिक, औदारिकक्रिक और वज्रर्षभसहननका मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें स्वोदय परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, यहा दोनों प्रकारसे भी बन्ध पाया जाता है । सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें उनका परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, इन गुणस्थानोंमें उन प्रकृतियोंके अपने बन्ध और उदयके एक साथ रहनेका विरोध है । पचेन्द्रिय जाति, व्रस, यादर और पर्याप्तका मिथ्यादृष्टियोंमें स्वोदय परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, यहा प्रतिपक्ष प्रकृतियोंका भी उदय सम्भव है । ऊपर स्वोदय ही बन्ध होता है, क्योंकि, विकलेन्द्रिय, स्थावर, सूक्ष्म और अपर्याप्तकोंमें सासादनादिक गुणस्थानोंका अभाव है । उपघात, परघात, उच्छ्वास और प्रत्येकशरीरका मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें स्वोदय परोदय बन्ध होता है । असयतसम्यग्दृष्टियोंमें स्वोदय-परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, छठी पृथिवीसे पीछे आये हुए असयतसम्यग्दृष्टियोंके परोदयसे बन्ध सम्भव है । सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंमें स्वोदय बन्ध होता है, क्योंकि, उनमें अपर्याप्तताका अभाव है ।

पाच ज्ञानावरणीय, छह दर्शनावरणीय, चारह कपाय, भय, जुगुप्सा, तेजस व कामेण शरीर, घर्णादिक चार, अगुरुलघु, उपघात, निर्माण और पाच अन्तरायका बन्ध निरन्तर होता है, क्योंकि, वे ध्रुवबन्धी हैं । साता व असाता वेदनीय, हास्य, रति, अरति,



हस्त रदि अरदि सौग यिरथिर-मुहासुह जसंकिचि-अजसकिचीण सांतरो, अद्भवथित्तोदो ।  
 पुरिमवेद देवगइदुग-वेउत्रियमरीर तेउत्रियसरीरअगोवग समचउरमसठाण वञ्जिरिमहसपडण-  
 पसत्वनिहायगइ सुभग सुम्सग् आदेञ्जुच्चागोदाण मिच्छाडडि सामणसम्मादिट्टीसु सातो ।  
 उवरि गिरतरो, णिण्डिक्कमवादा । मणुमगइ-मणुमगइपाओग्गाणुपुत्रीण मिच्छाडडि-सासेण-  
 सम्मादिट्टीसु णिरंतरो । क्व गिरतगे ? ण, आरणञ्चुददेनाण मणुस्मेसुवण्णाण सुक्कलेस्सा-  
 निणासेण णिण्डेस्साण पणिण्णाणमतोमुहुत्तकाल' गिरतरवधुत्तमादो । सुक्कलेस्साण' द्विदा पम्म-  
 तेउ-काउ पील्लेस्साओ वील्लिय कधमामेण णिण्डेस्सापरिणदो होच ? ण, सुक्कलेस्साणो' कमेण  
 काउ पील्लेस्सासु परिणामिय पञ्चा णिण्णलेस्सापञ्जाएण परिणमण' भुवगमादो । ण च मणुसगइ-  
 वधगइ काउ पील्लेस्साकालादो योवा, तत्तो तम्म वहुत्तुत्तमादो । अधवा' मज्जिमसुक्ककल्लेस्सिओ  
 देवो जहा छिण्णाउओ होदण जहण्णसुक्ककइणा अपारणमिय असुहत्तिलेस्साए' णिरददि

शोक, स्थिर, अस्थिर शुभ, अशुभ यशस्विति और अयशस्वितिका सांतर वन्ध होता है, क्योंकि, वे अष्टांगधो ह । पुरुषवेद, देवगतिद्विक, वैत्रियिकशरीर, वैत्रियिकशरीरगोपाग, समचतुरध्रसस्थान वज्रपमसहनन, प्रशस्तविद्यायोगति, सुभग, सुम्सर, आदेय और उन्वगानना मिव्याहट्टि और सासावनसम्यग्दृष्टियोंमें सांतर वन्ध होता है । ऊपर निरन्तर वन्ध होता है क्योंकि, उहा वह प्रातपक्ष प्रतियौने वन्धसे रहित है । मनुष्यगति और मनुष्यगतिप्रत्येत्यानुपूराकर मिव्याहट्टि और सासावनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें निरन्तर वन्ध होता है ।

शुक्रा—निरन्तर वन्ध कैसे होता है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि मनुष्योंमें उत्पन्न हुए आरण अच्युत देवोंके शुक्रलेदयाके विनाशसे दृणलेदयामें परिणत होनेपर अतमुहूर्त काल तक निरन्तर वन्ध पाया जाता है ।

शुक्रा—शुक्रलेदयामें स्थित जीव पद्म, तेज कापोत और नील लेदयाओंको लागकर कैसे एक साथ दृणलेदयामें परिणत हो सक्ता है ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि शुक्रलेदयासे प्रमदा कापोत और नील लेदयाओंमें परिणमन करके पीछे दृणलेदया पयायसे परिणमन स्वीकार किया गया है । अगर मनुष्यगतिप्रधकाल कापोत और नील लेदयाके फालसे थोडा नहीं है, क्योंकि, यह उममें धरून पाया जाता है । अथवा, मध्यम शुक्ललेदयाचात्रो देव जिस प्रकार आयुके क्षीण होनेपर वधय शुक्ललेदयादिकसे परिणमन न करके अशुभ तीन लेदयाओंमें गिरता

\* अथवा ' मने मुहुत्त काल ' इति पाठ । २ अथवा ' सुक्कलेस्साण ' इति पाठ ।

३ अथवा ' अनात्मानं अद्वयतेस्यगण ' इति पाठ ।

तदा सन्धे देवा मुदयन्त्पणेण<sup>१</sup> चैव अणियमेण असुहत्तिलेस्मासु णिन्दति त्ति गद्धिदे जुज्जेदे ।  
अण्णे पुण आइरिया किण्णलेस्माए मज्जुमगइदुगस्म णिरतर वध णेच्छति, मणुसगदि-  
वधगद्धाए काउलेस्मानधगद्धानहुत्तन्भुग्गमादो । त पि कुदो ? मुददेणण सत्तेमि पि काउ-  
लेस्माए चेत्त परिणामन्भुग्गमादो । उवरि णिरतरो । ओरालियमरीर-अगोण्णण मिच्छाइडि-  
मासणसम्मादिट्ठीसु सातर णिरतरो । कुदो ? णेरइएसु णिरतरन्धुवलभादो । उवरि णिरतरो,  
पडिवन्त्तपयडिण्णभावादो । पच्चिदियजादि परवाटुस्मास तम-वाद्दर पञ्जत्त-पत्तेयसरीराण  
मिच्छाइट्ठीसु सातर-णिरतरो, णेरइएसु णिरतरन्धुवलभादो । उवरि णिरतरो, पडिन्त्तपयडीण  
वधामावादो ।

पच्चयाणमोघमगो । णत्तरी असत्तदसम्माइडिपच्चएसु पेउच्चियमिस्मपच्चओ अवणेदच्चो ।  
ओरालियदुग-मणुसगइ-मणुमगइपाओग्गणुपुच्चवीण सम्मामिन्त्तइडिम्हि<sup>२</sup> ओरालियकायजोगित्थि-

है, उसी प्रकार सन्धे देव मरणक्षणमें ही नियम रहित अशुभ तीन लक्ष्या-नोंमें गिरते हैं,  
पेसा ग्रहण करनेपर उपर्युक्त कथन सगत होता है ।

अन्य जाचार्य कृष्णलेक्ष्यामं मनुष्यगतिद्विकका निरन्तर बन्ध नहीं मानते हैं,  
क्योंकि, मनुष्यगति बन्धककालसे कापोतलेक्ष्याका बन्धककाल बहुत स्वीकार किया  
गया है ।

शका—वह भी कैसे ?

समाधान—क्योंकि, सब ही मृत देवोंका कापोतलेक्ष्यामं ही परिणमन स्वीकार  
किया गया है ।

ऊपर इनका निरन्तर बन्ध होना है । औदारिकशरीर और औदारिकशरीरगोपागका  
मिथ्याहाद्य व सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें सान्तर निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि,  
नारकियोंमें उनका निरन्तर बन्ध पाया जाता है । ऊपर निरन्तर न ब होता है क्योंकि, वहा  
प्रतिपक्ष प्रवृत्तियोंके बन्धका अभाव है । पचेन्द्रिय जाति, परघात, उच्छ्वास, ब्रह्म, वाद्दर,  
पर्याप्त और प्रत्येकशरीरका मिथ्यादृष्टियोंमें सान्तर निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि,  
नारकियोंमें उनका निरन्तर बन्ध पाया जाता है । ऊपर निरन्तर न ब होता है, क्योंकि,  
वहा प्रतिपक्ष प्रवृत्तियोंके बन्धका अभाव है ।

प्रत्ययोंकी प्ररूपणा ओघके समान है । विशेष इतना है कि असत्य-  
सम्यग्दृष्टिके प्रत्ययोंमं धर्मिधिकमिध्र प्रत्ययको कम करना चाहिये । औदारिककठिक,  
मनुष्यगति और मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्विक सम्यग्मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें औदारिक-

<sup>१</sup> अर्थात् ' देवा मुदयन्त्पणेण ', आ नाम यो ' देवाणमुदयन्त्पणेण ' इति पाठ ।

<sup>२</sup> अर्थात् ' सम्मामिच्छाद्विम्हि ' इति पाठ ।

पुरिसवेदपञ्चएहि विणा चालीसपञ्चया । देवगइ-देवगइपाओग्गाणुपुञ्जी-वेउत्रियसरीर-वेउ-  
 व्वियसरीरगोत्राण वेउव्विय वेउव्वियमिस्सपञ्चया सच्चगुणहाणपचएसु सच्चत्य अवणेदव्वा ।  
 ओरालियदुग-मणुसगइ-मणुसगइपाओग्गाणुपुञ्जीण अमजदसम्मादिट्ठिहि चालीस पञ्चया,  
 वेउत्रियमिस्स-ओरालिय-ओरालियमिस्स-कम्मइय इत्थि-पुरिसवेदपञ्चयाणममावादे । वज्जरी  
 सहसपडणस्स सम्मामिच्छाइट्ठिहि चालीस पञ्चया, ओरालियकायजोगिन्थि-पुरिसवेदपञ्चयाण-  
 ममावादे । असजदसम्माइट्ठिहि चालीस पञ्चया, ओरालिय-ओरालियमिस्स-वेउव्वियमिस्स-  
 कम्मइयकायजोगिन्थि-पुरिसवेदपञ्चयाणममावादे ।

पचणाणावरणीय छदसणारणीय-असादावेदणीय धारसकसाय-अरदि सोग भय दुगुछ-  
 पचिंदियजादि-तेजा-कम्मइयसरीर वण्ण-गध-रम-फास-अगुरुत्तहुअ-उवघाद-परघाद-उस्मास-  
 तस यादर-पन्नत्त पत्तेयसरीर-अधिर-असुह अजसकिति णिमिण-पचतराइयाण मिच्छाइट्ठिहि चउ  
 गइसजुत्तो घघो । सासणे तिगइसजुत्तो, णिरयगइए अमावादे । अमजदसम्माइट्ठि-सम्मा-  
 मिच्छाइट्ठीसु दुगइसजुत्तो, णिरय तिरिक्खगइणममावादे । सादावेदणीय-पुरिसवेद-हस्म-रदि-  
 समचउरससठाण-पसत्थविहायगइ धिर-मुम-सुभय-सुस्मर-आदेज-जसकित्तीण मिच्छाइट्ठि-सासण

काययोग, खीवेद और पुरुषवेद प्रत्ययोंके बिना चालीस प्रत्यय हैं । देवगति, देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, वैकियिकशरीर और वैकियिकशरीरागोपागके वैकियिक और वैकियिकमिथ प्रत्ययोंको सब गुणस्थानोंके प्रत्ययोंमें सर्वत्र कम करना चाहिये । औदारिकमिथ, मनुष्यगति और मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वीके असयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें चालीस प्रत्यय हैं, क्योंकि, वहा वैकियिकमिथ, औदारिक, औदारिकमिथ, कामेण काययोग, खीवेद और पुरुषवेद प्रत्ययोंका वहा अभाव है । वज्रभसहननके सम्यग्मिध्यादृष्टि गुणस्थानमें चालीस प्रत्यय हैं, क्योंकि, औदारिककाययोग, खीवेद और पुरुषवेद प्रत्ययोंका वहा अभाव है । असयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें उसके चालीस प्रत्यय हैं, क्योंकि, औदारिक, औदारिकमिथ, वैकियिकमिथ, कामेण काययोग, खीवेद और पुरुषवेद प्रत्ययोंका वहा अभाव है ।

पाच ज्ञानावरणीय, छह दशानावरणीय, आसाता वेदनीय, यारह कपाय, भरति, शोक, भय, जुगुत्सा, पचेन्द्रिय जाति, तैजस व कामेण शरीर, घर्ण, मन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुत्तु, उपघात, परघात, उच्छ्वास प्रस, यादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, अस्थिर, अशुभ, अयशकौर्ति, निर्माण और पाच अन्तरायका मिध्यादृष्टि गुणस्थानमें चारों गतियोंसे सयुक्त बन्ध होता है । सासादन गुणस्थानमें तीन गतियोंसे सयुक्त बन्ध होता है, क्योंकि, वहा नरकगतिका अभाव है । असयतसम्यग्दृष्टि और सम्यग्मिध्यादृष्टि गुणस्थानोंमें दो गतियोंसे सयुक्त बन्ध होता है, क्योंकि, वहा नरकगति और तिर्यग्गतिका अभाव है । साता वेदनीय, हास्य, रति, समचतुरस्रमस्थान, प्रशस्तविहायोगानि, स्थिर, शुभ, सुभय,

सम्मादिट्ठीसु तिगइसजुत्तो, गिरयगईए अभावादे । सम्मामिच्छाडिट्ठि-असजदसम्मादिट्ठीसु दुगइ-सजुत्तो, गिरय तिरिक्खएगईणमभावादे । मणुसगइ-मणुसगइपाजोग्गाणुपुच्चीण सव्वगुणइणेषु षघो मणुसगइसजुत्तो । ओरालियसरीर-ओरालियमरीगोवणे-वज्जरिसहसघडणाण मिच्छाडिट्ठि-सासण-सम्मादिट्ठीसु तिरिक्ख-मणुसगइसजुत्तो । सम्मामिच्छादिट्ठि-असजदसम्माइट्ठीसु मणुसगइमजुत्तो, अण्णगइबघाभावादे । देवगइदुगस्स देवगइसजुत्तो । वेउच्चियदुगस्स मिच्छाडिट्ठीसु दुगइ-सजुत्तो, तिरिक्ख-मणुसगइणमभावादे । सासणसम्मादिट्ठि-सम्मामिच्छादिट्ठि-असजदसम्मा-दिट्ठीसु देवगइसजुत्तो, अण्णगइबघेण सजोगविरोहादे । उच्चागोदस्स सव्वगुणइणेषु देवगइ-मणुसगइसजुत्तो षघो ।

पचणाणावरणीय-छदसणावरणीय-सादासाद-चारसकमाय-पुरिसवेद-हस्स-रदि-अरदि-सोग-भय दुगुछा-पच्चिदियजादि तेजा-कम्मइयसरीर-समचउरससठाण-वण्ण-गध-रस-फास-अगुणलहुवचउरक-पसत्थविहायगइ-त्तस चादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-धिराधिर-सुहासुह-सुभग-सुस्सर-आदेअ-जसकित्ति-अजमकित्ति-णिमिण-पचतराडय-उच्चागोदाण चउगइमिच्छाडिट्ठि-सासण-

सुस्वर, आदेय और यशकीर्तिका मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें तीन गतियोंसे सयुक्त बन्ध होता है, क्योंकि, यहा नरकगतिका अभाव है । सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें दो गतियोंसे सयुक्त बन्ध होता है, क्योंकि, यहा नरकगति और तिर्यग्गति अभाव है । मनुष्यगति और मनुष्यगतिश्रायत्यानुपूर्वीका मय गुणस्थानोंमें मनुष्यगतिसे सयुक्त बन्ध होता है । औदारिकशरीर, औदारिकशरीरागोपाग और यज्जर्पमसहननका मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें तिर्यग्गति और मनुष्यगतिसे सयुक्त बन्ध होता है । सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें मनुष्यगतिसे सयुक्त बन्ध होता है, क्योंकि, यहा अन्य गतियोंके बन्धका अभाव है । देवगतिद्विकका देवगतिसे सयुक्त बन्ध होता है । वैक्रियिकद्विकका मिथ्यादृष्टियोंमें दो गतियोंसे सयुक्त बन्ध होता है, क्योंकि, तिर्यग्गति और मनुष्यगतिके बन्धका अभाव है । सासादनसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें देवगतिसे सयुक्त बन्ध होता है, क्योंकि, अन्य गतियोंके बन्धके साथ उसके सयोगका निरोध है । उच्चगोत्रका सत्र गुणस्थानोंमें देवगति और मनुष्यगतिसे सयुक्त बन्ध होता है ।

पाच ज्ञानावरणीय, छह दर्शनावरणीय, साता च असाता वेदनीय, चारह कपाय, पुरुषवेद, हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, पचेन्द्रिय जाति, तैजस उकार्मण शरीर, समचतुरस्रमस्थान, घर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुणलहु आदिक चार, प्रशस्तविहायोगति, प्रस, चादर, पर्फत्त, प्रत्येकशरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुभग, सुस्वर, आदेय, यशकीर्ति, अयशकीर्ति, निर्माण, पाच अन्तराय और उच्चगोत्रके चारों गतियोंके

अभावादो । सासणे दुग्दसजुनो, गिरय-देवगर्दणमभावादो । तिरिक्खाउ तिरिक्खगइ तिरिक्ख-  
गइपाओग्गाणुपुव्वी-उज्जेमाण तिरिक्खगइसजुतो, सामानियादो । धीणगिद्धितियादीण पयडीण  
बधस्म चउग्गइमिच्छइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठिणो सामी, अविरोहादो । बधद्धान बधविणइद्धान  
च सुगम । धुववर्धाण मिच्छइट्ठिम्हि चउत्तिहो बधो । मामणे दुविहो, अणाइ-धुववधाभावादो ।  
अवसेसाण बधो सादि-अद्भवो, अद्भववधिचादो ।

एगद्धानपयडीण परूणा कीरदे— मिच्छत्तेइदिय वीइदिय तीइदिय-चउत्तिदियजादि-  
गिरयाणुपुव्वी-आदान थावर सुहुम अपज्जन साहारणमरीरण बधोदया नम वोच्छिज्जति,  
मिच्छइट्ठिम्हि चेव त्तुभयवोच्छेदुवलभादो । अवसेसाण पयडीण उदयवोच्छेदो णत्थि,  
बधवोच्छेदो चेव । मिच्छत्तस्म बधो सोदओ । गिरयाउ गिरयगइ-गिरयगइपाओग्गाणुपुव्वीण  
परोदओ, सोदएण बधविरोहादो । अवसेसाण पयडीण बधो सोदय परोदओ, उभयहा वि  
अविरुद्धबधादो । मिच्छत्त गिरयाउआण बधो गिरत्तो । अवसेसाण सात्तो, एगससएण वि  
धुवरमदसणादो । पच्चया सुगमा । णवरि गिन्धाउ-गिरयगइ-गिरयाणुपुव्वीण वेउत्तिय-

सासादनमें दो गतियोंसे सयुक्त बध होता है, क्योंकि, वहा नरकगति और देवगति का  
अभाव है । तिर्यगायु, तिर्यंगति, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी और उद्योतका तिर्यग्गतिले  
सयुक्त बध होता है, क्योंकि, ऐसा स्वभाव है । स्थानगुद्धिद्रय आदि प्रकृतियोंके बन्धके  
चारों गतियोंके मिथ्यादृष्टि और सासादनन्वयगदृष्टि स्वामी हैं, क्योंकि, इसमें कोई विरोध  
नहीं है । बधाध्वान और बधविनष्टस्थान सुगम है । धुववन्धी प्रकृतियोंका मिथ्यादृष्टि  
गुणस्थानमें चारों प्रकारका बध होता है । सासादन गुणस्थानमें दो प्रकारका बन्ध होता  
है, क्योंकि, वहा अनादि और ध्रुव बन्धका अभाव है । शेष प्रकृतियोंका बध सादि और  
अध्रुव होता है, क्योंकि, वे अध्रुववन्धी हैं ।

एकस्थान प्रकृतियोंकी प्ररूपणा करने हैं— मिथ्यात्व, एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय,  
त्रीन्द्रिय, चतुर्गिन्द्रिय जाति, नारकानुपूर्वी आताप, स्थावर, सुहम, अपयाप्त और  
साधारणशरीरका बन्ध व उदय दोनों साथमें व्युच्छिन्न होते हैं, क्योंकि, मिथ्यादृष्टि  
गुणस्थानमें ही उन दोनोंका व्युच्छेद पाया जाता है । शेष प्रकृतियोंका उदयव्युच्छेद  
नहीं है, केवल बधव्युच्छेद ही है । मिथ्यात्वका बन्ध स्रोदय होता है । नारकायु  
नरकगति और नरकगतिप्रायोग्यानुपूर्वीका परोदय बध होता है, क्योंकि, अपने उदयके  
साथ इनके बधका विरोध है । शेष प्रकृतियोंका बध स्रोदय परोदय होता है, क्योंकि,  
दोनों प्रकारसे भी उनके बन्धमें कोई विरोध नहीं है । मिथ्यात्व और नारकायुका बन्ध  
निरन्तर होता है । शेष प्रकृतियोंका बध सात्तर होता है, क्योंकि, एक समयसे भी  
बधविधामका देखा जाता है । प्रत्यय सुगम है । विशेष इतना है कि नारकायु,

वेउञ्चियमिस्स ओरालियमिस्स-कम्मइयपञ्चया णत्थि, अपञ्जत्तकाले एदासिं वधाभावाद्दो । एइदिय आदाप थावराण वेउञ्चियकायजोगपञ्चओ अवणेयञ्चो । वीइदिय-तीइदिय-चउरिंदिय-सुहुम-अपञ्जत्त साहारणाण वेउञ्चिय वेउञ्चियमिस्सपञ्चया अवणेदव्वा, देव णेरइएसु एदासिं वधाभावाद्दो । मिच्छत्तस्स चउगइसजुत्तो । णवुमयवेद-हुडसठाणाण तिगइसजुत्तो, देवगदीए अभावाद्दो । असपत्तमेवट्टमघडण-अपञ्जत्ताण दुगइसजुत्तो, णिरय-देवगईणमभावाद्दो । णिरयाउ-णिरयदुगाण णिरयगइसजुत्तो । अउसेसाण पयड्डीण तिरिक्खगइसजुत्तो वधो । णिरयाउ-णिरयदुग-वीइदिय तीइदिय-चउरिंदियजादि-सुहुम अपञ्जत्त साहारणाण तिरिक्ख मणुसा सामी । मिच्छत्त-णवुसयवेद-हुडसठाण-असपत्तसेउट्टमघडणाण चउगइमिच्छाइड्डी सामी । एइदिय-आदाव-थावराण तिगइमिच्छाइड्डी सामी । वधद्धान णत्थि, एकम्मिह अद्धानविरोहाद्दो । वधवेच्छेदो सुगमो । मिच्छत्तस्स वधो चउञ्चिहो । अउसेसाण साट्ठि-अहुवो, अहुववधित्ताद्दो ।

मणुसाउअस्स मिच्छाट्ठि सासणसम्मादिड्डीसु वधो सोदय-परोदओ । असजदसम्मा-दिड्डीसु परोदओ । सञ्चत्थ णिरतरो, एगसमण्ण ववुवरमाभावाद्दो । पञ्चया ओघसिद्धा ।

नरकगति और नारकानुपूर्विके वैक्रियिक, वैक्रियिकमिथ्र, औदारिकमिथ्र और कामेण प्रत्यय नहीं ह, क्योंकि, अपर्याप्तकालमें इनके बन्धका अभाव है । एकेन्द्रिय, आताप और स्थावरके वैक्रियिककाययोग प्रत्यय कम करना चाहिये । द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय सूक्ष्म, अपर्याप्त और साधारण शरीरके वैक्रियिक और वैक्रियिकमिथ्र प्रत्ययोंको कम करना चाहिये, क्योंकि, देव और नारकियोंमें इनके बन्धका अभाव है ।

मिथ्यात्वका बन्ध चारों गतियोंमें सयुक्त होता है । नपुसकवेद ओर हुण्डसस्थानका बन्ध तीन गतियोंसे सयुक्त होता है, क्योंकि, इनके साथ देवगतिके बन्धका अभाव है । असंप्राप्तखपाटिकासहनन आर अपर्याप्तका बन्ध दो गतियोंसे सयुक्त होता है, क्योंकि, इनके साथ नरक और देव गतिके बन्धका अभाव है । नारकायु और नरकद्रिकका बन्ध नरकगतिसे सयुक्त होता है । शेष प्रकृतियोंका बन्ध तिर्यग्गतिसे सयुक्त होता है । नारकायु, नरकद्रिक, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय जाति, सूक्ष्म, अपर्याप्त और साधारण प्रकृतियोंके तिर्यंच ओर मनुष्य स्वामी ह । मिथ्यात्व, नपुसकवेद, हुण्डसस्थान और असंप्राप्तखपाटिकासहननके स्वामी चारों गतियोंके मिथ्यादृष्टि जीव ह । एकेन्द्रिय, आताप और स्थावर प्रकृतियोंके तीन गतियोंके मिथ्यादृष्टि स्वामी ह । बन्धाध्वान नहीं है, क्योंकि, एक गुणस्थानमें अध्वानका विरोध है । बन्ध-युच्छेद सुगम है । मिथ्यात्वका बन्ध चारों प्रकारका होता है । शेष प्रकृतियोंका सादि व अध्व बन्ध होता है, क्योंकि, वे अध्वबन्धी ह ।

मनुष्यायुका बन्ध मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें स्वोदय परोदय होता है । असयतसम्यग्दृष्टियोंमें उसका परोदय बन्ध होता है । सर्वत्र निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, एक समयसे उसके बन्धविध्रामका अभाव है । प्रत्यय ओघसे सिद्ध ह ।

तेउ-चाउकादएसु णील्लेस्सिएसु तिरिक्खगइदुग णीचागोदाण णिरतरवधुवलमादो । तदियपुढवीए  
 णील्लेस्साए वि सभनादो तित्थयरवधस्स मणुस्सा इव णेरइया त्रि सामिणो होंति त्ति किण्ण परू-  
 विज्जदे ? तत्थ हेड्ढिमइए णील्लेस्सासहिणं<sup>१</sup> तित्थयरसतकम्मियमिच्छाइड्ढीणमुववादाभावाणे ।  
 कुदो ? तत्थ तिस्से पुढवीण उक्कम्माउदमणादो । ण च उक्कत्साउणुसु तित्थयरसतकम्मिय  
 मिच्छाइड्ढीणमुववादो अत्थि, तहोवेणसाभावादो । तित्थयरसतकम्मियमिच्छाइड्ढीण णेरइएसुववन्न  
 माणाण सम्माइड्ढीण व काउलेस्स भोत्तुण अण्णत्तेस्सामावादो वा ण णील-किण्णहेस्साए  
 तित्थयरसतकम्मिया अत्थि ।

एव काउलेस्साण वि वत्तव । णरि तित्थयरस्स मणुसा इव णेरइया त्रि सामिणो ।  
 मणुस-देवगइसजुतो वधो । ओवपच्चएसु णक्को वि पच्चओ णावणेयच्चो, वेउव्वियदुगोराडिय-  
 मिम्म-कम्मटयपच्चयाण भावादो । ओरालियदुग मणुसगइदुग-वज्जरिसइसघडणाण असउद  
 सम्मादिट्ठिमिह वेउव्वियमिस्स-कम्मटयपच्चया णावणेयच्चा । तिरिक्खगदपाओग्गाणुपुवीए

समाधान—नहीं, क्योंकि तेज व वायु कायिक नीललेदयानाले जीवोंमें तीर्थगति  
 द्विक और नीचगोत्रका निरन्तर बन्ध पाया जाता है ।

शुक्रा—तृतीय पृथिवीमें नीललेदयानी भी सम्भावना होनेसे तीर्थकर प्रकृतिके  
 बन्धके मनुष्योंके समान नारकी भी स्वामी होते हैं, ऐसा क्यों नहीं कहते ?

समाधान—ऐसा नहीं है, क्योंकि, वहा नीललेदया युक्त अवस्तन इन्द्रकमें  
 तीर्थकर प्रकृतिके सत्त्ववाले मिथ्यादृष्टियोंकी उपस्थिति अभाव है । इसका कारण यह है  
 कि वहा उस पृथिवीकी उत्कृष्ट वायु देखी जाती है । और उत्कृष्ट वायुवाले जीवोंमें  
 तीर्थकरसतकमिक मिथ्यादृष्टियोंका उत्पाद है नहीं, क्योंकि, ऐसा उपदेश नहीं है । अथवा  
 नारकीयोंमें उत्पन्न होनेवाले तीर्थकरसतकमिक मिथ्यादृष्टि जीवोंके सम्यग्दृष्टियोंके समान  
 कापोत लेदयाके छोड़कर अन्य लेदयाओंका अभाव होनेसे नील और कृष्ण लेदयामें  
 तीर्थकरकी सत्तावाले जीव नहीं होत ।

इसी प्रकार कापोतलेदयामें भी कहना चाहिये । विशेषता इतनी है कि तीर्थकर  
 प्रकृतिके मनुष्योंके समान नारकी भी स्वामी हैं । मनुष्य और वध गतिसे संयुक्त बन्ध  
 होता है । ओघप्रत्ययोंमेंसे एक ही प्रत्यय कम नहीं करना चाहिये, क्योंकि, त्रैविधिकद्विक,  
 औदारिकमिध और कामण प्रत्ययोंका यहां सद्भाव है । औदारिकद्विक, मनुष्यगतिद्विक  
 और यज्ञपममहननके अस्तयनसम्पन्नदृष्टि गुणस्थानमें वैविधिकमिध और कामण प्रत्ययोंकी  
 कम नहीं करना चाहिये । निर्वर्गगतिप्रयोग्यानुपुजाका प्रथम बन्ध और पश्चात् उदय

वधो पुत्रमुदओ पच्छा वोच्छिज्जदि, सामणसम्मादिद्धि-असजदमम्मादिद्धीसु वधोदयवोच्छेदुव-  
ल्लादो । अण्णो पि जइ भेदो अत्थि सो पि चिंतिय वत्तयो ।

तेउलेस्सिय-पम्मलेस्सिएसु पंचणाणावरणीय-छटंसणावरणीय-  
सादावेदणीय-चउसजलण पुरिसवेद-हस्स रदि-भय दुगुञ्जा-देवगइ-पंचिं-  
दियजादि-वेउव्विय-तेजा-कम्मइयसरीर-समचउरससंठाण-वेउव्विय-  
सरीरअगोवंग-चण्ण-गंध रस-फास-देवगइपाओग्गाणुपुव्वी-अगुरुव-  
लहुव उवघाद-परघाटुस्सास-पसत्थविहायगइ-तस वादर-पज्जत्त-पत्तेय-  
सरीर-थिर-सुह-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-जसकित्ति णिमिणुच्चागोद-पचं-  
तराइयाणं को वधो को अवधो ? ॥ २५९ ॥

सुगम ।

मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव अप्पमत्तसंजदा वंधा । एदे वंधा,  
अबंधा णत्थि ॥ २६० ॥

देवगइ-वेउव्वियदुग्गाण पुत्रमुदओ पच्छा वधो वोच्छिज्जदि । अवसेसाण पयडीण-

प्युत्तिउत्त होता है, क्योंकि, न्नासावन्नमम्यग्गद्वि जोर अमयतसम्यग्गद्वि गुणस्थानोंमें क्रमसे  
उमके नन्ध और उदयका व्युत्पेद पाया जाता है । अन्य भी यदि भेद है तो उसे भी  
विचारकर नहना चाहिये ।

तेज और पद्म लक्ष्यात्राले जीवोंमें पाच ज्ञानावरणीय, उह दर्शनावरणीय, साता-  
वेदनीय, चार सज्जलन, पुरुषवेद, हाम्य, रति, भय, जुगुप्सा, देवगति, पचेन्द्रियजाति,  
वैकियिक, तैजम व कर्मण शरीर, समचतुरम्यसम्थान, वैकियिकशरीरागोपाग, वर्ण, गन्ध,  
रस, स्पर्श, देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, अगुरुत्थु, उपघात, परघात, उच्छ्राम, प्रगस्तविहायोगति,  
व्रम, नादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, स्थिर, शुभ, सुभग, सुस्वर, आदेय, यशकीर्ति, निर्माण,  
उच्चगोत्र और पाच अन्तराय, इनका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ २५९ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

मिथ्यादृष्टिमे लेकर अप्रमत्तमयत तक नन्धक ह । ये नन्धक हैं, अबन्धक नहीं हैं ।

॥ २६० ॥



मुत्यादो वधो पुव्व पन्था वा चोच्छिण्णो त्ति परिकिस्ता णत्थि, एत्थ वधोदयवोच्छेदाभावादो ।  
 पचणाणावरणीय-चउत्तमणावरणीय-परिचिदियजादि-तेजा-कम्मदयसरीर-वण्ण-गध-रस फास-  
 अगुरुअलहुअ तस-चादर पज्जत्त थिर सुह णिमिण पचतरादयाण सोदओ वधो, धुवोदयतादो ।  
 णिहा पयला सादावेदणीय चटुसत्तण पुरिसरेद हम्म-रदि भय दुगुछा समचउरमसठाण-पसत्थ-  
 विहायगट-सुत्तराण सत्तगुणद्वारेणु सोदय परोदओ वधो, अद्दुनोदयतादो । देवगइ-देवगइ  
 पाओग्गाणुपुव्वी तेउच्चियसरीर तेउच्चियमगीरअगोउगाण वधो परोदओ, सोदग्गण वधनिराहादो ।  
 उवपाद परचाद-उम्मास पत्तेयमगीराण मि-छाद्वि सामणसम्माद्वि-अमजदमम्मादिद्वीण सोदय  
 परोदओ, अपज्जत्तकाले उदयाभावादो । मेसेसु वयो सोदओ, तेसिमपज्जत्तद्वाए अभावादो ।  
 सुभग-आदेज्ज-जसकितीण मिच्छाद्विप्पहुडि जाण अमजदमम्माद्वि त्ति वधो सोदय-परोदओ ।  
 उपरि सोदओ चेत्त, पडिउत्तुदयाभावादो । उच्चागोदस्स मि-छाद्विप्पहुडि जाण सजदामत्त  
 त्ति वधो सोदय-परोदओ । उपरि सोदओ, पडिउत्तुदयाभावादो ।

पचणाणावरणीय-छदसणावरणीय-चटुमजलण भय-दुगुछ देवगइ तेउच्चियदुग-तेजा-

है । शेष प्रवृत्तियोंके उदयसे ऋष पूर्यमें या पश्चात् व्युच्छिन्न होता है, यह परीक्षा नहीं है, क्योंकि, यहा उनसे वध और उदयके व्युच्छेदना अभाव है ।

पाच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, पचेन्द्रिय जाति, तैजस उ कर्मण शरीर, वण, गध, रस, स्पश, अगुरुलघु, अस, चादर, पर्याप्त, स्थिर, शुभ, निर्माण और पाच अतंगयका स्रोदय य ध होता है, क्योंकि, ये धुवोदयी हैं । निद्रा, प्रचला, साता घेदनीय, चार सञ्चलन, पुरुषवेद, हास्य, रति, भय जुगुप्सा, समचतुरस्रसस्थान, प्रशस्तविहायोगति और सुस्वरका सत्त गुणस्थानोंमें स्रोदय परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, ये अद्दुनोदयी हैं । देउगति देवगतिप्रत्योग्यानुपूर्वों वैभियिकशरीर और वैभियिक शरीरानोपागका यध परोदय हाता है, क्योंकि, अपने उदयके साथ इनके बन्धना निरोध है । उपघान, परघात, उच्छवास और प्रत्येकशरीरका बन्ध मिध्याद्वि, सासादत्तसम्पग्द्वि और अमयतसम्पग्द्वियोंके स्रोदय परोदय होता है, क्योंकि, अपघातकालमें इनके उदयना अभाव है । शेष गुणस्थानोंमें स्रोदय वध होता है, क्योंकि, उनके अपर्याप्त फाण्ड अभाव है । सुभग, आदेय और यशनीर्तिका मिध्याद्विसे लेकर अमयत सम्पग्द्वि गुणस्थान तक स्रोदय परोदय ऋष होता है । ऊपर स्रोदय ही ऋष होता है, क्योंकि, यहा प्रतिपक्ष प्रवृत्तियोंके उदयना अभाव है । उच्चगोत्रका मिध्याद्विसे लेकर अमयतामयत तक स्रोदय परोदय वध होता है । ऊपर स्रोदय ही बन्ध होता है, क्योंकि, यहा प्रतिपक्ष प्रवृत्तियोंके उदयका अभाव है ।

पाच ज्ञानावरणीय, छद दशनावरणाय, चार सञ्चलन, भय, जुगुप्सा, देवगति,

कम्मइयसरीर उण्ण गध-रस-फास-अगुरुवलहुअ-उत्तवाद्-परघादुस्सास-वाद्दर-पञ्चत्त-पत्तेयसरीर-  
णिमिण-पचतराटयाण उधो णिरतरो, एत्थ उरुत्त-पत्त-वाद्दो । मादवेदणीय-हस्म-रदि धिर-मुह-  
जसकित्तीण मिच्छाद्विप्पहुटि जाव पमत्तमजदा त्ति वपो सातरो । उररि णिरतरो, पडिबन्ध-  
पयडीण उधाभावाद्दो । पच्चिदियजादि तमणामाण मिच्छाद्विप्पिह उधो सात्त णिरतरो, तिरिस्खेसु  
सणन्कुमारादिदेवेसु च णिरतर-उधुत्त-भावाद्दो । उररि णिरतरो, पडिबन्ध-पयडीण उधाभावाद्दो ।  
पुरिमवेदस्म मिच्छाद्विप्पि सासणसम्मादिद्वीसु सातरो, एगसमण णि उधुत्त-मुत्त-भावाद्दो । उररि  
णिरतरो, पडिबन्ध-पयडीण-उधुत्त-भावाद्दो ।

पच्चया सुगमा, ओघपच्चण्हितो विमेमाभावाद्दो । णररि देवगइ-वेत्त-वियदुगाण  
मिच्छाद्विप्पि-सामणसम्मादिद्वीसु ओरालियमिस्म-वेत्त-वियदुग-कम्मइयकायजोगपच्चया अव-  
णेय वा, देव-गेरइणसु अपज्जत्त-तिरिक्ख मणुमेसु च एदामि उधाभावाद्दो । सम्मा-मिच्छाद्विप्पि-  
वेत्त-वियदुग-कायजोगपच्चया, असज्जदसम्मादिद्विप्पि वेत्त-वियदुग-पच्चया अण्णेद्वो । मिच्छा-  
द्विप्पि-सामणसम्माद्वीसु सत्त-पयडीण पि ओरालियमिस्म-पच्चया अण्णेय-वो, तिरिक्ख मणुम-

वैक्रियिकडिक्क, तैजस उ धारमण शरीर, उर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुत्त, उपघात,  
परघात, उच्छ्वास, वाद्द, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, निर्माण ओर पाच अन्तरायका वन्ध  
निरन्तर होता है, क्योंकि, यहा ये धुत्त-उधो ह । सात्त-पत्त-वाद्दो, हास्य, रति, दिक्ख, शुभ  
ओर यशस्वीर्तिका मिथ्यादृष्टिमे लेन्ना प्रमत्तसयत्तो तक सान्तर उ व होता है । ऊपर  
निरन्तर उधो होता है, क्योंकि, यहा प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके उधो अभाव है । पचेन्द्रिय-  
जाति ओर प्रस नामकर्मका मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें सान्तर निरन्तर उधो होता है, क्योंकि,  
तियेचो ओर सन्तुत्त-वाद्दो देवोमें उनका निरन्तर उधो पाया जाता है । ऊपर निरन्तर उधो  
होता है, क्योंकि, यहा प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके उधो अभाव है । पुरुषोद्दका मिथ्यादृष्टि  
ओर सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें सान्तर उधो होता है, क्योंकि, एक समयसे भी  
उसका उधो-प्रथम पाया जाता है । ऊपर निरन्तर उधो होता है, क्योंकि, यहा प्रतिपक्ष  
प्रकृतियोंके उधो अभाव है ।

प्रत्यय सुगम है, क्योंकि, ओघप्रत्ययोंसे कोई विशेषता नहीं है । भेद इतना है कि  
देवगतिद्विक्क ओर वैक्रियिकडिक्कके मिथ्यादृष्टि ओर सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें ओद्द-  
रिक्कमिथ्र, वैक्रियिकडिक्क ओर धारमण काययोग प्रत्ययोंको कम करना चाहिये, क्योंकि,  
देव नारकियों तथा अपर्याप्त तियेच उ मनुष्योंमें भी इनके उधो अभाव है । सम्य-  
ग्मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें वैक्रियिक काययोग प्रत्यय तथा असज्जदसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें  
वैक्रियिक ओर वैक्रियिकमिथ्र प्रत्ययोंको कम करना चाहिये । मिथ्यादृष्टि ओर सासादन  
सम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें सभी प्रकृतियोंके ओद्द-रिक्कमिथ्र प्रत्यय कम करना चाहिये,

मिच्छाद्वि-सामणसम्मादिद्वीणमपञ्चत्तकाले सुहलेस्माणमभावादौ ।

पचणाणारणीय उदमणारणीय सादानेदणीय-चउमनलण पुरिमवेद हस्स-रदि भय-  
दुगुछा पचिदिय तेना क्रम्मदय ममचउरमयठाण-उण्णचउक्क-अगुरुलहुअचउक्क-पसत्थ-  
प्रिहायगदि-विर सुभग-सुस्सर-आदेव्व जसकित्ति णिमिण-पचतराइयाण मिच्छाद्वि-सामणसम्मा  
दिद्वीसु वधो तिगदसजुतो, णिरयगईए अभावादो । सम्मामिच्छाद्वि-असजदसम्मादिद्वीसु  
दुगदसजुतो, णिरय तिरिक्कगईणमभावादो । उपरिमेसु देवगइमजुतो, तदधण्णगईण वधा  
भावादो । देवगदउअन्वियदुगाण देवगदसजुतो, अण्णगईहि वधविराहादो । उच्चगोदस  
मिच्छाद्वि मासणसम्मादिद्वि-सम्मामिच्छादिद्वि-असजदसम्मादिद्वीसु देव-मणुसगइसजुतो ।  
उवरि देवगइसजुतो वधो ।

मध्यामि पयडीण तिग-मिच्छादिद्वि-सासणसम्मादिद्वि-सम्मामिच्छादिद्वि-असजद-  
सम्मादिद्विणो सामी, णिरएसु तेउलेस्मादिसुहलेस्माभावादो । दुगदमजदासजदा, मणुसगइमजदा

क्योंकि, नियच उ मनुष्य मिथ्यादृष्टि एव सासादनसम्यग्दृष्टियोंके अपर्याप्तकालमें शुभ  
देश्या-ज्ञाका अभाव है ।

पाच गानावरणीय, छह दशनावरणीय, सातावेदनाय, चार सज्जलन, पुण्यवेद,  
हास्य, रति, भय, जुगुप्सा, पचेन्द्रिय जाति, तैजस व कामण शरीर, समचतुरस्रस्थान,  
घणादि चार, अगुरुलघु आदि चार, प्रशस्तप्रिहायोवाति, स्थिर, सुभग, सुस्सर, आदेय,  
यदातीति, निर्माण और पाच अतरायना मिथ्यादृष्टि व सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें  
तान गतियोंसे सयुक्त बन्ध होता है, क्योंकि, यहा नरकगतिना अभाव है । सध्यमिथ्या  
दृष्टि और असयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें दो गतियोंसे सयुक्त बन्ध होता है, क्योंकि, यहा  
नरकगति और तियगगतिका अभाव है । उपरिम गुणस्थानोंमें देवगति सयुक्त बन्ध होता  
है, क्योंकि, यहा अन्य गतियोंके बन्धका अभाव है । देवगतिद्विक और त्रिभयिकद्विकना  
देवगतिसयुक्त बन्ध होता है, क्योंकि, अन्य गतियोंके साथ इनके उ अना विरोध है ।  
उच्चगोत्रका मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असयतसम्यग्दृष्टि  
गुणस्थानोंमें देव उ मनुष्य गतिसे सयुक्त बन्ध होता है । ऊपर देवगतिसे सयुक्त बन्ध  
होना है ।

सब प्रकृतियोंके तीन गतियोंके मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्या  
दृष्टि और असयतसम्यग्दृष्टि स्वामी हैं, क्योंकि, नारकियोंमें तेजो-ज्ञादि शुभ  
अभाव है । दो गतियोंके सयतासयत और मनुष्यगतिसे सयत स्वामी हैं ।

सामी । पत्रि वेउत्रियचउक्कस्स तिरिक्ख मणुमगइमिच्छाइडि-सासणसम्माइडि-सम्मा-  
मिच्छाइडि-असजदमम्माइडि-सजदासजदा मणुसगइसजदा च सामी । वधद्वाण सुगम ।  
वपरोच्छेदो णत्थि, 'अनया णत्थि' त्ति वयणादो । धुवन्धीण मिच्छाइडिभिद्दि वधो  
चउत्रिय्हो । अण्णत्थ ति विहो, धुवाभावादो । अउसेमाण पयडीण सन्वत्थ सादि-अद्दुवो,  
अद्दुववधित्तादो ।

## वेदाणी ओघं ॥ २६१ ॥

त जहा—अणताणुनविचउक्कस्स वधोदया सम वोच्छिण्णा<sup>१</sup>, सासणसम्मा-  
दिद्विभिद्दि दोण्ण वोच्छेदुवलभादो । तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वीए पुणो उदओ चैव णत्थि,  
तेउलेस्साहियारादो । सेसाण पयडीण वधोच्छेदो चैव, उदयोच्छेदाभावादो । थीणणिद्वित्थिय-  
अणताणुनविचउक्कित्थिवेदाण सोदय परोदओ । तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइदुग-चउसठाणं चउस-  
घडण-उज्जोए अप्पसत्थविहायगइ-दूमग-दुस्सर-अणादेज्ज-णीचागोदाण दोसु वि गुणद्वानेसु वधो

निशेषता इतनी है कि वैत्रियिकचतुष्के तिर्येच ओर मनुष्य गतिके मिथ्यादृष्टि, सासादन  
सम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि, असयतसम्यग्दृष्टि ओर सयतासयत, तथा मनुष्यगतिके सयत  
स्वामी है । यन्वाप्यान सुगम है । बन्धन्युच्छेद नहीं है, क्योंकि, 'अबन्धन नहीं है'  
ऐसा सूत्रमें निर्दिष्ट है । अचरन्धी प्रकृतियोंका मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें चारों प्रकारका  
बन्ध होता है । अन्य गुणस्थानोंमें तीन प्रकारका बन्ध होता है, क्योंकि, वहा ध्रुव  
बन्धन अभाव है । शेष प्रकृतियोंका सर्वत्र सादि व अध्रुव बन्ध होता है, क्योंकि, वे  
अध्रुवन्धी हैं ।

द्विस्थानिक प्रकृतियोंकी प्ररूपणा ओघके समान है ॥ २६१ ॥

वह इस प्रकार है—अनन्तानुबन्धित्तुष्का बन्ध और उदय दोनों साथमें  
व्युच्छिन्न होते हैं, क्योंकि, सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें उन दोनोंका व्युच्छेद पाया  
जाता है । परन्तु तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्विका यहा उदय ही नहीं है, क्योंकि, तेजोलेश्याका  
अधिकार है । शेष प्रकृतियोंका केवल बन्ध व्युच्छेद ही है, क्योंकि, उनके उदयन्युच्छेदका  
अभाव है । स्थानशुद्धिप्रय, अनन्तानुबन्धित्तुष्क और स्त्रीवेदका स्वोदय परोदय बन्ध होता  
है । तिर्यगायु, तिर्यग्गतिक, चार सस्थान, चार सहनन, उद्योत, अप्रज्ञस्तत्रिहायोगति,  
दुर्भंग, दुस्सर, धनदेय और नीचगोत्रका दोनों ही गुणस्थानोंमें स्वोदय परोदय

१ प्रतिशु 'वोच्छिण्णो' इति पाठ ।

२ अ आश्रयो 'गइदुगमठाण चउसघडण', कापठो 'गइदुगमठाणचउमठाण-चउसघडण' इति पाठ ।

सोदय परोदओ । शीणगिद्वितिय-अणताणुवधिचउक्क तिरिक्खाउआण वधो णिरतरो । सेसाण सातरो, एगसमएण वि बधुपरमुवलभादो । सन्वपयडीण मिच्छाडिट्ठि सासणमम्मादिडीसु चउवण्णेगूणवचास पच्चया, ओरालियमिस्मपच्चयाभावादो । णवरि तिरिक्खाउअस्म ओरालिय दुग-वेउध्वियमिस्म कम्मइय णनुसयवेदपच्चया अवणेदव्वा, पज्जत्तदवे मोत्तूण अण्णत्थ वधामानादो । तिरिक्खगडदुगुज्जेव चउमठाण चउमघडण अप्पसत्थविहायगइ-दुभग दुस्सर अणादेज्ज णीचागोदाण ओरालियदुग णनुमयवेदपच्चया अवणेयन्ना, तिरिक्ख मणुस्से मोत्तूण देवाणमेदासि पज्जत्तापज्जत्ताएत्थासु नुवलभादो ।

तिरिक्खाउ तिरिक्खगइदुगुज्जेवाण वधो तिरिक्खगइसज्जुतो । चउमठाण चउमघडण अप्पसत्थविहायगइ दुभग दुस्सर अणादेज्ज णीचागोदाण दुगडमज्जुतो, णिरय-देवगईणमगावादो । शीणगिद्वितिय-अणताणुवधिचउक्कित्थिवेदाण वधो तिगइमज्जुतो, णिरयगईए अभावादो । तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइदुगुज्जेव-चउमठाण-चउमघडण अप्पसत्थविहायगइ दुभग दुस्सर-अणादेज्ज णीचागोदाण वधस्स देवा चेव सामी, सुहत्तिलेस्सियतिरिक्ख मणुस्सेसु एदासि

वध होता है । स्थानगृद्धिय, अन-तानुगधिचउक्क और तियगायुका वध निरतर हात् है । शेष प्रकृतियोंका सा तर बन्ध होता है, क्योंकि, एक समयसे भी उनका बन्धविधाम पाया जाता है । एत प्रकृतियाँ मिथ्यादृष्टि ओर साम्नादनमभ्यगदृष्टि गुणस्थानोंम क्रमसे चारन और नन्यास प्रत्यय ह, क्योंकि, औदारिकमिथ्र प्रत्ययका यहा भाव है । विशेष इतना है कि तियगायुन औदारिकदृष्टिक, वैत्रियिकमिथ्र व कामेण फाययोग और नपुसकवेद प्रत्ययोंको कम करना चाहिय क्योंकि, पर्याप्त देवोंको छोडकर अथप्र उसके बन्धना भाव है । तियगातिदृष्टिक, उद्योत, चार सम्मान, चार सहनन, अप्रशस्तविहायोगति, दुभग, दुस्सर, अनादेय ओर नीचगोत्रके औदारिकद्विप्र एव नपुसकवेद प्रत्ययोंको कम करना चाहिये, क्योंकि, तियेच आर मनुष्योंको छोडकर देवोंके पर्याप्त और अपर्याप्त ज्यस्थामें इतका बन्ध पाया जाता है ।

तियगायु, तियगातिदृष्टिक और उद्योतका वध तियगातिसे समुक्त होता है । चार सम्मान, चार सहनन, अप्रशस्तविहायोगति, दुभग, दुस्सर, अनादेय और नीचगोत्रका वध दो गतियोंसे समुक्त होता है, क्योंकि, नरक आर देव गतिने साथ इनके वधका भाव है । स्थानगृद्धिय, अन-तानुगधिचउक्क और रीवेदका वध तीन गतियोंसे समुक्त होता है, क्योंकि, यहा नरकगतिके वधना भाव है । तियगायु, तियगातिदृष्टिक, उद्योत, चार सम्मान, चार सहनन, अप्रशस्तविहायोगति, दुभग, दुस्सर, अनादेय और नीच गोत्रके वधके देव ही स्वामी ह, क्योंकि, शुभ तीन लेश्यायाले तियेच न मनुष्योंमें इनके

वधाभावादे। धीणगिद्धितिय अणताणुअधिचउक्खित्थिनेदाण तिगइमिच्छाडडि ममणमम्मादिट्ठिणो  
सामी, णिरयगईए सुहत्तिलेम्माभावादे। वधद्वान्ण वधवोच्छिण्णद्वान्ण च सुगम। धुवरन्धीण  
मिच्छाडडिहि चउविहो वधो। सासणे' दुविहो, अणाइ वुनाभावादे। सेसाण पयडीण वधो  
सञ्चत्थ मादि-अट्टेणो।

## असादावेदणीयमोधं ॥ २६२ ॥

देसामासियसुत्तेणदेण सुइदत्थपरुवणा कीरदे। त जहा—अजसक्तीए पुत्रमुदओ  
पच्छा वधो गौच्छिञ्जदि, पमत्तामजदसम्मादिट्ठीसु उधोदयवोच्छेदुवलभादे। असादावेदणीय-  
अरदि-सोग-अधिरासुहाण पुत्र वधो पच्छा उदओ वोच्छिञ्जदि, तहोवलभादे। अधिर-  
असुहाण वधो सोदओ, उधोदयत्तादे। अजसक्तीए मिच्छाडडिप्पहुडि जाण अमजदमम्माइडि  
ति मोदय परोदओ। उवरि सोदओ चैव। असादावेदणीय-अरदि-सोगाण सोदय-परोदओ,  
सञ्चत्थ अट्टेणोदयत्तादे। सासणे उधो, मन्नासिमेदामिमेगसमएण वि मन्वगुणद्वान्णेषु  
वधुवरमुवलभादे। पच्चया सुगमा, ओषपच्चवर्हिंते निसेसाभावादे। पवरि मिच्छाडडि-

वन्धना अभाव है। स्थानगृद्धिप्रय, अनन्तानुरन्धियचतुक्र ओर रविदेके गिर गतियोंके  
मिव्यादृष्टि और सासादनमम्यदृष्टि रजागी है, क्योंकि, नरकगतिसमें शुभ तीन लक्ष्याओंका  
अभाव है। रन्धाध्याय और रन्धन्युच्छिन्नस्थान सुगम है। धुवरन्धी प्ररतियोंका  
मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें चार प्रकारका रन्ध होता है। सासादन गुणस्थानमें दो प्रकारका  
वन्ध होता है, क्योंकि, वधा अनादि और पुत्र उत्पत्ता अभाव है। दोष प्ररतियोंका वन्ध  
सर्वत्र सादि व अक्षुत्र होता है।

असादावेदनीयकी प्ररूपाणा ओषके समान है ॥ २६२ ॥

इस देशामशीर सूत्रसे सूचित जयकी प्ररूपणा करते हैं। वह इस प्रकार है—  
अयशनीतिका पूर्वमें उदय ओर पश्चात् व व न्युच्छिन्न होता है, क्योंकि, प्रमत्त ओर  
असयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें प्रमत्ते उसके वध व उदयना व्युत्प्रेद पाया जाता है।  
असादावेदनीय, अरति, शोक, अन्धिर ओर अशुभका पूर्वमें वध व पश्चात् उदय  
व्युच्छिन्न होता है, क्योंकि, प्रसा पाया जाता है। अस्थिर और अशुभका रन्ध स्वोदय  
होना है, क्योंकि, वे धुवादेयी है। अयशनीतिका मिथ्यादृष्टिस लेकर असयतसम्यग्दृष्टि  
तक स्वोदय परोदय रन्ध होता है। ऊपर स्वोदय ही वन्ध होता है। असादावेदनीय,  
अरति ओर शोकका स्वोदय परोदय रन्ध होता है, क्योंकि, ये सर्वत्र अट्टेणोदयी हैं।  
सान्तर रन्ध होता है, क्योंकि, इन सबका एक समयमें भी सब गुणस्थानोंमें वन्धविश्राम  
पाया जाता है। प्रत्यय सुगम है, क्योंकि, ओषप्रत्ययोंसे यहा कोई भेद नहीं है। विद्वेत्ता

सोदय परोदओ । धीणगिद्विनिय अणताणुअधिचउक्क तिरिक्खाउआण वधो गिरतरो । सेमाण सातरो, एगसमएण वि वधुवग्मुवलभादो । मव्वपयडीण मिन्डाइडि सासणमम्मादिडीगु चउअण्णेगृण्णचस पच्चया, ओरालियमिस्सपच्चयाभादाओ । णरि तिरिक्खाउअस्म ओरालिय-दुगवेउव्वियमिस्स कम्मइय णउसयवेदपच्चया अण्णेदत्त्वा, पच्चत्तदेवे मोत्तूण अण्णत्थ वधाभादाओ । तिरिक्खगइदुग्गुज्जेव चउमठाण चउमघडण अप्पसत्थनिहायगइ-दुभग-दुस्सर अणादेज्ज णीचागोदाण ओगलियदुग णउसयवेदपच्चया अण्णेयत्ता, तिरिक्ख मणुस्से मोत्तूण देवाणमेदासि पच्चनापच्चत्तात्तायु नुत्तलभादो ।

तिरिक्खाउ तिरिक्खगइदुग्गुज्जेव चउमठाण वधो तिरिक्खगइसज्जुत्तो । चउमठाण चउमघडण अप्पसत्थनिहायगइ दुभग दुस्सर अणादेज्ज णीचागोदाण दुगइमज्जुत्तो, गिरय-देवगइणमभादाओ । धीणगिद्विनिय-अणताणुअधिचउक्किस्थिपेदाण वधो तिगइसज्जुत्तो, गिरयगइए अभादाओ । तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइदुग्गुज्जेव-चउमठाण-चउमघडण-अप्पसत्थनिहायगइ दुभग दुस्सर-अणादेज्ज णीचागोदाण वधस्स देवा चेष सामी, सुहत्तिलेस्सियतिरिक्ख मणुस्सेसु एदासि

वध होता है । स्त्यानशुद्धिप्रय, अनतानुअधिचउक्क ओर तियगायुका वध निरन्तर होता है । शेष प्रवृत्तियों का सा तरह बन्ध होता है, क्योंकि, एक समयसे भी उनका बधविश्राम पाया जाता है । स्व प्रवृत्तियाँ मिथ्यादृष्टि और सामान्यसम्यग्दृष्टि शुणरथानोंमें क्रमसे चौरन और उत्तराय प्रत्यय हैं, क्योंकि, औदारिकमिथ्य प्रत्ययका यहा भाव है । विशेष इतना है कि तिर्यगायुके औदारिकमिथ्य, वैश्विकमिथ्य व कामण फाययोग और नपुंसकवेद प्रत्ययोंमें क्रम करना चाहिये क्योंकि, पर्याप्त देवोंको छोड़कर अन्यत्र उन्के बधका अभाव है । तिर्यगतिष्ठिक, उद्योत, चार सस्थान, चार सहनन, अप्रशस्तविहायोगति, दुभग, दुस्वर, अनादेय और नीचगोत्रके औदारिकमिथ्य एव नपुंसकवेद प्रत्ययोंमें क्रम करना चाहिये, क्योंकि, तिर्यच और मनुष्योंमें छोड़कर देवोंके पर्याप्त और अपर्याप्त अवस्थामें इतका बध पाया जाता है ।

तिर्यगायु, तिर्यगतिष्ठिक और उद्योतका बध तिर्यगतिसे संयुक्त होता है । चार सस्थान, चार सहनन, अप्रशस्तविहायोगति, दुभग, दुस्वर, अनादेय और नीचगोत्रका बध दो गतियोंसे संयुक्त होता है, क्योंकि नरक और देव गतिके साथ इनके बन्धका अभाव है । स्त्यानशुद्धिप्रय, अनतानुअधिचउक्क और कर्षवेदका वध तीन गतियोंसे संयुक्त होता है, क्योंकि, यहा नरकगतिके बधका अभाव है । तिर्यगायु, तिर्यगतिष्ठिक, उद्योत, चार सस्थान, चार सहनन, अप्रशस्तविहायोगति, दुभग, दुस्सर, अनादेय और नीच गोत्रके बधके देव ही स्वामी हैं, क्योंकि, शुभ तीन लक्षणावाले तिर्यच व मनुष्योंमें इनके

घषो परोदओ, एदासिं देवेसु उदयाभावादो । मिच्छत्तपघो णिरतरो, धुववधित्तादो ।  
 अण्णपयडीण सातरो, एगसमएण वि वधुवरमुवलभादो । पच्चया सुगमा, ओघपच्चण्हितो  
 विसेसामानादो । णररि ओरालियमिम्मपच्चओ अण्णेयव्वो, तत्थ सुहलेस्माण अमानादो ।  
 णउसयवेद-हुडसठाण-असपत्तमेउट्टसघडण एइदिय आदाव-थावराण ओरालियदुग कम्मइय-  
 णउसयवेदपच्चया अण्णेयव्वा । मिच्छत्तपघो तिगइसजुत्तो । णउसयवेद-हुडसठाण अमपत्तमेवट्ट-  
 सघडणाण दुगइसजुत्तो, देउगईए अमानादो । एइदिय आदाव थावराण तिरिक्खगइसजुत्तो ।  
 मिच्छत्तवयस्य तिगइमिच्छाइड्डिणो सामी । अवमेसाण पयडीण देउा चैव सामी । वधद्वान्ण  
 घषवोच्छिण्णद्वान्ण च सुगम । मिच्छत्तस्स वधो चउत्तिहो, धुवनधित्तादो । सेसाण सादि-अदुवो  
 अदुववधित्तादो ।

### अपच्चक्खाणावरणीयमोधं ॥ २६५ ॥

एद देसामासियसुत्त । तेणेदेण सूइदत्थपरूवणा कीरदे — अपच्चक्खाणावरणीयस्स  
 घषोदया सम वो-च्छिज्जति, असजदमम्मादिट्ठिहि तदुभययोच्छेदुवलभादो । अवसेसाण  
 घषयोच्छेशे चैव । अपच्चक्खाणचउत्तस्स उंधो सोदय-परोदओ । मणुसगइदुगोरालियदुग-

होता है, क्योंकि, इनका देवोंके उदयाभाव है । मिथ्यात्वका ग्रन्थ निरन्तर होता है,  
 क्योंकि, वह ध्रुवग्रन्धी है । अन्य प्रकृतियोंका सान्तर ग्रन्थ होता है, क्योंकि, एक समयसे  
 भी उनका ग्रन्थप्रश्राम पाया जाता है । प्रत्यय सुगम है, क्योंकि, जोघप्रत्ययोंसे कोई भेद  
 नहीं है । विशेष इनका है कि यहा आदारिकमिश्र प्रत्ययको कम करना चाहिये, क्योंकि उसमें  
 शुभ लक्ष्याका अभाव है । नपुसकवेद, हुण्डसस्वान, असप्राप्तस्वपाटिकासहनन, एकेन्द्रिय,  
 आताप और स्वावरके आदारिककृत्क, कर्मण और नपुसकवेद प्रत्ययोंको कम करना चाहिये ।  
 मिथ्यात्वका ग्रन्थ तीन गतियोंमें सयुक्त होता है । नपुसकवेद, हुण्डसस्वान और असप्राप्त-  
 स्वपाटिकासहननका दो गतियोंसे सयुक्त ग्रन्थ होता है, क्योंकि, इनके साथ देउगतिके  
 घषका अभाव है । एकेन्द्रिय, आताप और स्वावरका तिर्यग्गतिके सयुक्त ग्रन्थ होता है ।  
 मिथ्यात्वके ग्रन्थके तीन गतियोंके मिथ्यादृष्टि स्वामी है । शेष प्रकृतियोंके देव ही स्वामी  
 हैं । ग्रन्थाध्यान आर वध-व्युच्छिन्नस्थान सुगम हैं । मिथ्यात्वका ग्रन्थ चारों प्रकारका  
 होता है, क्योंकि, वह ध्रुवग्रन्धी है । शेष प्रकृतियोंका सादि घ अधुव ग्रन्थ होता है,  
 क्योंकि, वे, अधुवग्रन्धी हैं ।

अप्रत्याख्यानावरणीयकी प्ररूपणा ओघके समान है ॥ २६५ ॥

यह देशामशक सूत्र है, इसीलिये इनसे सूचित अर्थकी प्ररूपणा करते हैं—  
 अप्रत्याख्यानावरणीयका ग्रन्थ और उदय दोनों सावमें व्युच्छिन्न होते हैं, क्योंकि,  
 असयतनम्यगृष्टि गुणस्वानमें उन दोनोंका व्युच्छेद पाया जाता है । शेष प्रकृतियोंका  
 ग्रन्थव्युच्छेद ही है । अप्रत्याख्यानावरणचतुष्कका ग्रन्थ स्थोदय परोदय होता है ।



सामणसम्मादिद्वीसु ओरालियमिस्मपच्चओ अवणेष्वो । तिगइसजुतो वधो मिच्छाइडि-  
सासणमम्मादिद्वीसु । सम्मामिच्छाइडि-असजदसम्मादिद्वीसु दुगइसजुतो । उवरि देवगइसजुतो ।  
तिगइमिच्छाइडि सासणमम्मादिदि सम्मामिच्छाइडि अमजदसम्मादिद्विणो, दुगइसजदामजदा,  
मणुमगइसजदा च सार्मा । मिच्छाइडिप्पहुडि जान पमतसजदो ति अट्ठाण । वधवोच्छेदट्ठाण  
सुगम । सादि-अट्ठवो वधो, अट्ठुपपधित्तादो ।

मिच्छत्त णवुसयवेद एइदियजादि-हुंडसंठाण असंपत्तसेवट्टसंध  
डण आदाव-थावरणामाण को वधो को अवंधो ? ॥ २६३ ॥

सुगम ।

मिच्छाइडि वधा । एदे वंधा, अवसेमा अवंधा ॥ २६४ ॥

मिच्छत्तस्म वधोदया सम वोच्छिण्णा । णवुसयवेद-हुंडसंठाण असंपत्तसेवट्टसंधण  
एइदिय आदाव थावरणामाण वधवोच्छेदो वेव, उदयाभासदो । मिच्छत्तस्म सोदण वधो,  
उदयाभावे वधाणुपलभादो । णउसयवेद हुंडसंठाण-असंपत्तसेवट्टसंधण एइदिय-आदान थावरण

इतनी हे नि मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें आदारिकमिथ प्रत्यक्ष कम  
करना चाहिये। मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें उनका बन्ध तीन गतियोंसे  
सयुक्त होता है। सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असयत्तसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें दो गतियोंसे सयुक्त  
बन्ध होता है। ऊपर उनका देवगतिसयुक्त बन्ध होना है। तीन गतियोंके मिथ्यादृष्टि, सासा  
दनसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असयत्तसम्यग्दृष्टि दो गतियोंके सयत्तासयत्त, तथा  
मनुष्यगतिसं सयत्त स्वामी ह। मिथ्यादृष्टिसे लेकर प्रमत्तसयत्त तक बन्धाध्वान्त है।  
वन्धवोच्छेदस्थान सुगम है। सादि व अधुव बन्ध होता है, क्योंकि, वे अधुवबन्धी ह।

मिथ्यात्व, नपुसकोद, एकेन्द्रिय जाति, हुण्डसंस्थान, असंप्राप्तसृपाटिकासहनन,  
आताप और म्थार नामकर्मका कौन वधक और कौन अनन्धक है ? ॥ २६३ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

मिथ्यादृष्टि वन्धक है । ये वन्धक है, शेष अनन्धक है ॥ २६४ ॥

मिथ्यात्वका बन्ध और उदय दोनों साथ व्युच्छिन्न होते हैं। नपुसकोद, हुण्ड  
संस्थान, असंप्राप्तसृपाटिकासहनन, एकेन्द्रिय, आताप और स्थावर नामकर्मका केवल  
बन्धवोच्छेद ही है, क्योंकि, यहा इनके उदयका अभाव है। मिथ्यात्वका श्लोदयसे बन्ध  
होता है, क्योंकि, उदयके धर्माधर्म उसका बन्ध पाया नहीं जाता। नपुसकोद, हुण्ड  
संस्थान, असंप्राप्तसृपाटिकासहनन, एकेन्द्रिय, आताप और स्थावरका बन्ध परोदय

सुगममेद । कुन्दो ? अप्पमत्तमजदा चैव वधआं, उवरि तेउलेस्साए अभावादो ।

तित्थयरणामाणं को वंधो को अवंधो ? असंजदसम्माइटी जाव  
अप्पमत्तसंजदा वंधा । एदे वंधा, अवसेसा अवंधा ॥ २७० ॥

सुगम । णवरि देव मणुससामीओ वधो । एउ तेउलेस्साए एसां परूवणा कदा ।  
जहा तेउलेस्साए परूवणा कदा तहा पम्मलेस्साए वि कायच्चा । णवरि पुरिसवेदस्स जम्हि  
सातरो वधो परूविदो तम्हि सातर णिरंतरो ति वत्तव्वो, पम्मलेस्सियतिरिक्ख-मणुस्सेसु  
पुरिसवेद मोत्तण अण्णवेदस्स वधाभावादो । जासिं पयडीण वधस्स देवा चैव सामी  
तासिमित्थिवेदपच्चओ अवणेयव्वो, देवेषु पम्मलेस्साए इत्थिवेदानुवलमादो । पचिंदिय-  
तमेपयडीण वधो णिरंतरो ति वत्तव्वो, तेउलेस्साए एदासिं वधस्स सांतर-णिरंतरत्तुवलमादो ।  
ओरालियसरीरजगोउगस्स वधो परोदओ । णिरंतरो, पम्मलेस्साए अगोवगेण विणा वधाभावादो ।  
पम्मलेस्साए पयडिवधगयभेदपरूवणइमाह—

यह सूत्र सुगम है । कारण कि अप्रमत्तसयत ही वन्धक हैं, क्योंकि, इससे  
ऊपरके गुणस्थानोंमें तेजोलेख्याका अभाव है ।

नीर्यकर नामकर्मका कौन वन्धक और कौन अवन्धक है ? असयतसम्यग्दृष्टियोंसे  
लेकर अप्रमत्तसयत तक वन्धक हैं । ये वन्धक हैं, शेष अवन्धक हैं ॥ २७० ॥

यह सूत्र सुगम है । विशेष इतना है कि इसके वन्धके स्वामी देव व मनुष्य हैं ।  
इस प्रकार तेजोलेख्याका आश्रयकर यह प्ररूपणा की गई है । जिस प्रकार तेजोलेख्यामें  
प्ररूपणा की है उसी प्रकार पद्मलेख्यामें भी करना चाहिये । विशेषता यह है कि पुरुष  
वेदका जहा सान्तर वन्ध कहा गया है वहा 'सान्तर निरन्तर' ऐसा कहना चाहिये,  
क्योंकि, पद्मलेख्या युक्त तिर्यच व मनुष्योंमें पुरुषवेदको छोडकर अन्य वेदके वन्धका  
अभाव है । जिन प्रकृतियोंके वन्धके देव ही स्वामी हैं उनके खंविद प्रत्ययको कम करना  
चाहिये, क्योंकि, देवोंमें पद्मलेख्यामें खंविद नहीं पाया जाता । पचेन्द्रिय जाति और व्रत  
प्रकृतियोंका वन्ध निरन्तर होता है, ऐसा कहना चाहिये, क्योंकि, तेजोलेख्यामें इनके  
वन्धके सान्तर निरन्तरता पाई जाती है । औदारिकशरीरागोपागका वन्ध परोदयसे होता  
है । निरन्तर वन्ध होता है, क्योंकि, पद्मलेख्यामें अगोपागके विना वन्धका अभाव है ।  
पद्मलेख्यामें प्रकृतिवन्धगत भेदके प्ररूपणार्थ आगेका सूत्र कहते हैं—

त जहा— धरो परोदओ, तेउलेम्साए सउगुणद्वाणेसु सोदएण वधविरोहादो ।  
णिरतरो, अतोमुहत्तेण विणा वधुवरमाभायादो । पच्चया सुगमा, ओघाणिसमादो । णवरि  
तिसु वि गुणद्वणिसु ओराणियदुग पेउवियमिस्स-कम्मइय णउमयेउदपच्चया अणयेयन्ना ।  
मणुसगइसजुत्तो । देवा चेउ सामी । मिच्छादिद्वि सायणमग्गादिद्वि अमजदसग्गादिद्वि ति  
वपद्धान । वपवोच्छेदो सुगमो । धरो सादि अजुत्तो ।

**देवाउअस्म ओघभगो ॥ २६८ ॥**

एडेण सुउत्थपरूपणा कीरदे । त जहा— धरो परोदओ, सोदएण वधविरोहाणे ।  
णिरतरो, अतोमुहत्तेण विणा वधुवरमाभायादो । पच्चया ओघतुल्ला । णवरि ओघे वि  
वेउवियदुगोराणियमिस्स कम्मइयपच्चया अणयेयन्ना । उधो देवगइसजुत्तो । निरिक्ख  
मणुसगामीओ । वपद्धान सुगम । अप्पमत्तद्वाए सरेउजे भागे गतूण वधवोच्छेदो ।  
सादि अजुत्तो वयो ।

**आहारसरीर-आहारसरीरअंगोवगणामाणं को वधो को अवधो ?  
अप्पमत्तसजदा वधा । एदे वधा, अवसेसा अवधा ॥ २६९ ॥**

वह इस प्रकार है— वन्ध उसका परोदय होता है, क्योंकि तेजोलेह्यामें सउ  
गुणस्थानोंमें सोदयने उससे उधका विरोध है । निरन्तर वन्ध होता है, क्योंकि, अन्तमुहत्ते  
विना उससे वधविश्रामना अभाव है । प्रत्यय सुगम है, क्योंकि, उनमें ओघने कोई भेद नहीं  
है । विशेष इतना है कि तीनों ही गुणस्थानोंमें औदारिकद्विक, वैश्वियरिमिध, कामण और  
नपुसरेउद प्रत्ययोंको कम करना चाहिये । मनुष्यगतिसयुक्त वन्ध होता है । देव ही  
स्वामी हैं । मिथ्यादाए, सासादनसम्यग्दष्टि और असयतसम्यग्दष्टि, यह वधाध्यान है ।  
वधयुच्छेद सुगम है । सादि व अजुत्त वय होता है ।

**देवायुकी प्ररूपणा ओघके समान है ॥ २६८ ॥**

इस सूत्रमें सूचित अश्वी प्ररूपणा करते हैं । यह इस प्रकार है— वन्ध उसका  
परोदय होता है क्योंकि स्वोदयसे इसके वधका विरोध है । निरन्तर वन्ध होता है,  
क्योंकि, अन्तमुहत्ते विना उसके उधविश्रामना अभाव है । प्रत्यय ओघके समान है ।  
विशेषतः इतनी है कि ओघमें भी वैश्वियरिमिध, औदारिकद्विक और कामण प्रत्ययोंको कम  
करना चाहिये । देवगतिसयुक्त वध होता है । तिर्यक और मनुष्य स्वामी हैं । वधाध्यान  
सुगम है । अप्पमत्तकाले सत्यात बहुभाग जाकर वधयुच्छेद होता है । सादि व अजुत्त  
वध होता है ।

आहारकशरीर और आहारकशरीरागोपना नामकर्मका कौन वन्धक और कौन अवधक  
है ? अप्पमत्तसयत वधक है । ये वन्धक है, शेष अवधक है ॥ २६९ ॥

जाव पमत्तसज्जो ति बधो सातरो, एगसमएण नि धधुवरमदसणादो । उरि गिरतरो, पडिवन्त्तपयाडिवधाभावादो । मिच्छाइड्ढि-सासणसम्मादिट्ठीसु उच्चागोदस्म बधो सातर-गिरंतरो, सुक्कलेस्मियतिरिन्त्त-मणुस्सेसु गिरतरवधुवलादो । उरि गिरतरो । पच्चया सुगमा । णवरि मिच्छाइड्ढि-सासणसम्मादिट्ठीपच्चएसु<sup>१</sup> ओरालियमिस्मपच्चओ अनणेयव्वो, तिरिक्ख-मणुसमिच्छाइड्ढि सामणसम्मादिट्ठीणमपज्जत्तकाले सुहत्तिलेस्साणममावादो । मिच्छादिट्ठी-सासणसम्मादिट्ठी-सम्मामिच्छादिट्ठी-असज्जसम्मादिट्ठीसु बधो देव मणुसगइसज्जुतो । उवरि देवगइसज्जुतो चेव, अण्णगइवधाभावादो । तिगइमिच्छादिट्ठी-मासणसम्मादिट्ठी-सम्मामिच्छा-दिट्ठी-असज्जसम्मादिट्ठीणो दुगइसज्जदासज्जदा मणुसगइमज्जदा च सामी । बधद्धाण बधवोच्छिण्णद्वाण च सुगम । धुवन्धीण मिच्छाइड्ढिमिह बधो चउव्विहो । सासणादीसु तिविहो, धुवन्धाभावादो । सेसाण सादि अहुवो, अहुवन्नित्तादो ।

एगट्ठाण-पेट्ठाणपयडीओ ठनिय उवरिमाओ तान परूवेमो— गिहा-पयलाण पुध्व बधो

सातर बन्ध होता है, क्योंकि, एक समयसे भी वहा उसका बन्धविश्राम देखा जाता है । ऊपर निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, वहा प्रतिपक्ष प्रकृतिके बन्धका अभाव है । मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें उच्चगोत्रका बन्ध सान्तर निरन्तर होता है, क्योंकि, शुभलक्ष्यानाले तिर्यंच और मनुष्योंमें उसका निरन्तर बन्ध पाया जाता है । ऊपर निरन्तर बन्ध होता है । प्रत्यय सुगम है । विशेष इतना है कि मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानके प्रत्ययोंमेंसे औदारिकमिथ्र प्रत्ययको कम करना चाहिये, क्योंकि, तिर्यंच और मनुष्य मिथ्यादृष्टि एव सासादनसम्यग्दृष्टियोंके अपर्याप्तकालमें शुभ तीन लक्ष्योंका अभाव है ।

मिथ्यादृष्टि सासादनसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें देव च मनुष्य गतिसे सयुक्त बन्ध होता है । ऊपर देवगति सयुक्त ही बन्ध होता है, क्योंकि, वहा अन्य गतियोंके बन्धका अभाव है । तीन गतियोंके मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असयतसम्यग्दृष्टि, दो गतियोंके सयतासयत, तथा मनुष्यगतिके सयत स्वामी है । बन्धाध्यान और बन्धन्युच्छिन्नस्थान सुगम है । ध्रुवबन्धी प्रकृतियोंका मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें चार प्रकारका बन्ध होता है । सासादानादिक गुणस्थानोंमें तीन प्रकारका बन्ध होता है, क्योंकि, वहा उनके ध्रुव बन्धका अभाव है । शेष प्रकृतियोंका सादि च अध्रुव बन्ध होता है, क्योंकि, वे अध्रुवबन्धी है ।

एकस्थानिक वार द्विस्थानिक प्रकृतियोंको छोड़कर उपरिम प्रकृतियोंकी प्ररूपणा

पम्मलेस्सिएसु मिच्छत्तदंडओ णेरइयभंगो ॥ २७१ ॥

एहदिय-आदान-यातराण वगभावाद्दो । एत्तिओ चैव भेदो, अण्णो णत्वि । जदि अत्थि सो चित्थिय वत्तव्वो ।

सुक्कलेस्सिएसु जाव तित्थियरे त्ति ओघभंगो ॥ २७२ ॥

एदेण मूहदयपरूपाणा कीरदे— पचणाणावरणीय चउदमणावरणीय-पचतरादयाण पुत्र वधो पच्छा उवओ वोच्छिच्चदि, सुहूममापगइय-खीणरूपाएसु वधोदयवोच्छेदुवलभादो । समकित्ति उच्चागोदाण पि एव चैव वत्तव्व । णवरि उदयवोच्छेदो एत्थ णत्थि, अजोगिग्धि उदयवोच्छेदउत्सणादो । पचणाणावरणीय चउत्सणावरणीय-पचतरादयाण सोदओ वधो, धुवोदयत्तादो । मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव असजदसम्मत्तिट्ठि त्ति जसकित्तीए सोदय परोदओ । ठरि सोदओ चैव वधो, पडिक्कसुदयाभावादो । मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव सजदासजदो त्ति उच्चागोदवधो सोदय परोदओ । उरि सोदओ चैव, णीचागोदुदयाभावादो । पचणाणावरणीय-चउत्सणावरणीय पचतरादयाण वधो णिरतरो, धुववधित्तादो । जसकित्तीए मिच्छाइट्ठिप्पहुडि

पद्मलेख्यानाले जीवोंमें मिथ्यात्वदण्डककी प्ररूपणा नारकियोंके समान है ॥२७१॥

क्योंकि, उनके एकेन्द्रिय, आत्मप और स्वावरके बन्धका अभाव है । केवल इतना ही भेद है, और कुछ भेद नहीं है । यदि कुछ भेद है तो उसे विचारकर बहना चाहिये ।

सुन्दलेख्यानाले जीवोंमें तीर्थकर प्रकृति तक ओघके ममान प्ररूपणा है ॥ २७२ ॥

इस सूत्रसे सूचित अर्थकी प्ररूपणा करत हैं— पाच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय और पाच अन्तरायका पूर्वमें बन्ध और पश्चात् उदय व्युच्छिन्न होता है, क्योंकि, सूक्ष्मसाम्परायिक और क्षीणकपाय गुणस्थानोंमें नमसे उनके बन्ध और उदयका व्युच्छेद पाया जाता है । यदाकीर्ति और उच्चगोत्रके भी इसी प्रकार कहना चाहिये । त्रिशोप इतना है कि उनका उदय युच्छेद यहा नहा है, क्योंकि, अयोगकेजली गुणस्थानमें उनका उदय व्युच्छेद देखा जाता है ।

पाच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय और पाच अन्तरायका स्वोदय वध होता है, क्योंकि, वे ध्रुवोदयी हैं । मिथ्यादृष्टिसे लेकर असपतसम्बन्धत्ति तक यदाकीर्तिका स्वोदय-परोत्थय बन्ध होता है । ऊपर स्वोदय ही वध होता है, क्योंकि, वहा प्रतिपक्ष प्रकृतिके उदयका अभाव है । मिथ्यादृष्टिसे लेकर सयतासयत तक उच्चगोत्रका बन्ध स्वोदय परोदय होता है । ऊपर स्वोदय ही वध होता है, क्योंकि, वहा नीचगोत्रके उदयका अभाव है ।

पाच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय और पाच अन्तरायका निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, वे ध्रुवयन्धी हैं । यदाकीर्तिका मिथ्यादृष्टिसे लेकर प्रमत्तसयत तक

परोदओ । उवरि परोदओ चव, जसकितीए णियमेणुदयदसणादो । छण्ण पि पयडीण वधो सातरो, एगसमएण वि वधुवरमदसणादो । पच्चया ओघतुल्ला । णवरि मिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठीसु ओरालियमिस्सपच्चओ अवणेयव्वो । मिच्छादिट्ठि सासणसम्मादिट्ठि-सम्मादिट्ठि-असजदसम्मादिट्ठीसु उण्ण पयडीण वधो देव मणुसगइसजुतो । उवरि देवगइसजुतो । तिगइअसजदा दुगइसजदासजदा मणुसगइसजदा च सामी । वधद्धान वपवोच्छिण्णद्धान च सुगम । वधो छण्ण पि सादि अट्ठो, जट्ठुवधधित्तादो ।

अपच्चक्खाणावरणीयस्स वधोदया सम वोच्छिण्णा, असजदसम्मादिट्ठिहि दोण्ण वोच्छेदुवलभादो । सेसाण वधवोच्छेदो चव, उदयवोच्छेदाणुवलभादो । अपच्चक्खाणचउक्कस्स सोदय-परोदएण वि वधो, अट्ठुवोदयत्तादो । अवसेसाण वधो परोदओ, सुक्कलेस्साए सव्वगुणद्धानेसु सोदएणेदासिं वधविरोहादं । अपच्चक्खाणचउक्क मणुसगइदुगोरालियदुगाण वधो णिरतरो, एगसमएण वधुवरमाभावादो । वज्जरिसहसघडणस्स मिच्छादिट्ठि सासण सम्मादिट्ठीसु वधो सातरो । उवरि णिरतरो, पडिवक्खपयडिन्धाभावादो । पच्चया सुगमा ।

है । ऊपर परोदय ही बन्ध होता है, क्योंकि, वहा नियमसे यशकीर्तिका उदय देखा जाता है । छहों प्रकृतियोंका बन्ध सान्तर होता है, क्योंकि, एक समयसे भी उनका बन्धविश्राम देखा जाता है । प्रत्यय ओपके समान ह । विशेष इतना है कि मिथ्यादृष्टि ओर सासादन-सम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें ओदारिकमिश्र प्रत्ययको कम करना चाहिये । मिथ्यादृष्टि, सासादन-सम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें छहों प्रकृतियोंका बन्ध देव और मनुष्य गतिसे सयुक्त होता है । ऊपर देवगतिसे सयुक्त बन्ध होता है । तीन गतियोंके असयत, दो गतियोंके सयतासयत, और मनुष्यगतिके सयत स्वामी ह । बन्धाध्यान और बन्धव्युच्छिन्नस्थान सुगम ह । छहों प्रकृतियोंका बन्ध सादि व अधुव होता है, क्योंकि, वे अधुव-बन्धी ह ।

अप्रत्याख्यानानवरणीयका बन्ध और उदय दोनों साथमें व्युच्छिन्न होते ह, क्योंकि, असयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें उन दोनोंका व्युच्छेद पाया जाता है । शेष प्रकृतियोंका बन्ध व्युच्छेद ही है, क्योंकि, उनका उदयव्युच्छेद नहीं पाया जाता । अप्रत्याख्यानचतुष्कका स्वोदय परोदयसे बन्ध होता है, क्योंकि, वह अधुवोदयी है । शेष प्रकृतियोंका बन्ध परोदय होता है, क्योंकि, शुक्ललेइयामें सब गुणस्थानोंमें स्वोदयसे इनके बन्धका विरोध है । अप्रत्याख्यानपरणचतुष्क, मनुष्यगतिक और औदारिकदृष्टिकका बन्ध निरन्तर होता है, क्योंकि, एक समयसे उनके बन्धविश्रामका अभाव है । वज्रपंभसहननका मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें सातर बन्ध होता है । ऊपर उसका निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, वहा प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धका अभाव है । प्रत्यय सुगम ह ।

पच्छा उदओ वोच्छिञ्जदि, अपुञ्च-रणीणरुमाएसु वधोदयवोच्छेदुवलमादो । सोदय-परोदओ वधो, अहुवोदयत्तादो । णित्तरो वधो, धुवधवित्तादो । पच्चया सुगमा । णवरी मिच्छाद्विट्ठि सासणसम्मादिट्ठीसु ओरालियमित्सपच्चओ अणोयव्वो । मिच्छाद्विट्ठि सासणसम्मादिट्ठि सम्मामिच्छादिट्ठि-असजदसम्मादिट्ठीसु देव-मणुसगइसजुत्तो । उरि देवगइमजुत्तो । निगइ-मिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठि-सम्मामिच्छादिट्ठि-अमजदसम्मादिट्ठिणो दुगइमजदासजदा मणुसगइसजदा च सामी । पवड्ढाण सुगम । अपुञ्चरुणद्धाए सरोज्जदिमाग गतूण वधो वोच्छिञ्जदि ।

असादावेदणीयस्स पुञ्च वधो वोच्छिण्णो । उदयरोच्छेदो णत्थि । अरदि-सोगाण पुव्वं वधो पच्छा उदओ वोच्छिञ्जदि, पमत्तापुञ्जेसु वधोदयरोच्छेदुवलमादो । अधिर-असुमाण वधवोच्छेदो चेत्त, सुक्कलेस्मिएसु सञ्चत्युदयदसणादो । अजसकितीए पुञ्चमुदयस्स पच्छा वधस्स वोच्छेदो, पमत्तासजदसम्मादिट्ठीसु वधोदयवोच्छेदुवलमादो । असादावेदणीय-अरदि-सोगाण वधो सोदय परोदओ, अहुवोदयत्तादो । अधिर-असुहाण सोदओ चेत्त, धुवोदयत्तादो । अजसकितीए मिच्छाद्विट्ठिपहुडि जात्त अजसजदसम्मादिट्ठि ति सोदय-

करते ह— निद्रा और प्रचलाना पूर्वमें बन्ध और पश्चात् उदय व्युच्छिन्न होता है, क्योंकि, अपूर्वकरण और क्षीणन्याय गुणस्थानोंमें क्रमसे उनके बन्ध और उदयका व्युच्छेद पाया जाता है। स्त्रोदय-परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, ये अधुवोदयों हैं। निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, वे धुवधवोदय हैं। प्रत्यय सुगम है। विशेष इतना है कि मिथ्यादृष्टि और सासादन सम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें आदारितमिथ्य प्रत्ययको कम करना चाहिये। मिथ्यादृष्टि, सासादन सम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें देव व मनुष्य गतिसे संयुक्त बन्ध होता है। ऊपर देवगतिसे समुक्त बन्ध होता है। तीन गतियोंके मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असयतसम्यग्दृष्टि, दो गतियोंके सत्यतामयत, तथा मनुष्यगतिके सत्यत स्वामी हैं। बन्धाध्वान सुगम है। अपूर्वकरणकालके सत्यातवै भाग जाकर बन्ध व्युच्छिन्न होता है।

असादावेदनीयता पूर्वमें बन्ध व्युच्छिन्न होता है। उदयव्युच्छेद नहीं है। अरति और शोकका पूर्वमें बन्ध और पश्चात् उदय व्युच्छिन्न होता है, क्योंकि, प्रमत्त और अपूर्वकरण गुणस्थानोंमें क्रमसे उनके बन्ध और उदयका व्युच्छेद पाया जाता है। अस्थिर और अनुभवाका बन्ध व्युच्छेद ही है, क्योंकि, सुक्कलेश्यावाले जीवोंमें सचन उनका उदय देखा जाता है। अयशकीतिके पूर्वमें उदयका और पश्चात् बन्धका व्युच्छेद होता है, क्योंकि, प्रमत्त और असयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें उसने बन्ध व उदयका व्युच्छेद पाया जाता है।

असादावेदनीय, अरति और शोकका बन्ध स्त्रोदय परोदय होता है, क्योंकि, ये अधुवोदय हैं। अस्थिर और अनुभवाका स्त्रोदय ही बन्ध होता है, क्योंकि, ये धुवोदय हैं। अयशकीतिका मिथ्यादृष्टिसे लेकर असयतसम्यग्दृष्टि तक स्त्रोदय परोदय बन्ध होता

वेउञ्चियमिस्स कम्मइय-इत्थि णउसयवेदपच्चया अपणेदव्वा । मणुमगइसजुत्तो । देवा सामी । मिच्छाइड्ढि-सासणसम्माइड्ढि-असजदसम्मादिड्ढिणो त्ति बधद्धान्ण । बधवोच्छिण्णद्धान्ण सुगम । सादि-अद्दुचो बधो, अद्दुववचित्तादो ।

देवाउअस्स पुव्वमुदयस्स पच्छा बधस्स वोच्छेदो, अप्पमत्तासजदसम्मादिड्ढीसु बधोदयवोच्छेदुवलभादो । परोदओ बधो, सोदएण बंधविरोहादो । णिरतरो, अतोमुहुत्तेण विणा बधुवरमाभावादो । पन्चया सुगमा । णरि मिच्छादिड्ढि-सासणसम्मादिड्ढि-असजदसम्मा-दिड्ढीसु वेउञ्चियदुगोरालियमिस्स-कम्मइयपन्चया अपणेयव्वा । देवगइसजुत्तो बधो । मिच्छाइड्ढिप्पहुडि जाव सजदासजदा त्ति तिक्ख मणुसा सामी । उवरि मणुमा चेव । बधद्धान्ण सुगम । अप्पमत्तद्धान्ण सखेज्जे भागे गतूण बधो वोच्छिज्जदि । सादि-अद्दुचो, अद्दुववचित्तादो ।

देवगइ-वेउञ्चियदुगाण पुव्वमुदयस्स पच्छा बधस्स वोच्छेदो, अपुव्वासजदसम्मादिड्ढीसु बधोदयवोच्छेदुवलभादो । अवसेसाण पयडीण बधवोच्छेदो चेव, सुक्कलेस्साए उदयवोच्छेदाणुवलभादो । देवगइ-वेउञ्चियदुगाण परोदओ बधो, सोदएण बधविरोहादो । पच्चिदियजादि तेजा-

और असयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें औदारिकद्विष, वैक्रियिकमिश्र, कार्मण काययोग, स्त्रीविद् और नपुंसकरोद् प्रत्ययोंको कम करना चाहिये । मनुष्यगतिसयुक्त बन्ध होता है । देव स्वामी हैं । मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि और असयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान बन्धाध्यान है । बन्ध युच्छेदस्थान सुगम है । सादि व अधुव बन्ध होता है, क्योंकि, वह अधुवबन्धी है ।

देवायुके पूर्वमें उदयका और पश्चात् बन्धका व्युच्छेद होता है, क्योंकि, अप्रमत्त और असयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें क्रमसे उसके बन्ध व उदयका व्युच्छेद पाया जाता है । परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, स्वोदयसे उसके बन्धका विरोध है । निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, अन्तर्मुहूर्तके विना उसके बन्धविश्रामका अभाव है । प्रत्यय सुगम है । विशेष इतना है कि मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि और असयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें वैक्रियिकद्विष, औदारिकमिश्र और कार्मण प्रत्ययोंको कम करना चाहिये । देवगतिसयुक्त बन्ध होता है । मिथ्यादृष्टिसे लेकर सयतासयत तक तिर्यंच व मनुष्य स्वामी हैं । ऊपर मनुष्य ही स्वामी हैं । बन्धाध्यान सुगम है । अप्रमत्तकालके सख्यात बहुभाग जाकर बन्ध व्युच्छिन्न होता है । सादि व अधुव बन्ध होता है, क्योंकि, वह अधुवबन्धी है ।

देवगतिद्विष और वैक्रियिकद्विषके पूर्वमें उदयका और पश्चात् बन्धका व्युच्छेद होता है, क्योंकि, अपूर्वकरण व असयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें क्रमशः उनके बन्ध व उदयका व्युच्छेद पाया जाता है । शेष प्रकृतियोंका केवल बन्धव्युच्छेद ही है, क्योंकि, शुक्कलेस्यामें उनका उदयव्युच्छेद नहीं पाया जाता । देवगतिद्विष और वैक्रियिकद्विषका परोदय बन्ध



ह्रस्व-रति भय-दुगुञ्जण वधोदया सम वोच्छिष्टणा, अपुत्रकृणचरिसमए तदुह्य-  
वोच्छेददसणादो । वधो मोदय परोदओ, अद्गुजोदयत्तादो । मिच्छाइद्विष्पहुडि जान पमतसजदो  
ति ह्रस्व रदीण वधो सातरो । उर्वरि णिरत्तो, पडिवक्कपयडिनधाभावादो । भय दुगुञ्जण  
णिगतगे, धुववधित्तादो । पचया सुगमा । णवरि मिच्छाइद्वि सासणसम्मादिद्वीमु ओरालियमिस्म  
पचओ अनणयव्वो । मिच्छाइद्वि सासणसम्मादिद्वि सम्मामिच्छाइद्वि-अमजदसम्मादिद्वीमु  
मणुम देवगइसजुतो । उर्वरि देवगइसजुतो अगइसजुतो च । निगइमिच्छाइद्वि-सामणसम्मादिद्वि  
सम्मामिच्छाइद्वि असजइसम्मादिद्विणो दुगइसजदामजदा मणुसगइसजदा च मामी । वधद्वाण  
वधवोच्छिष्टणाद्वाण च सुगम । भय दुगुञ्जण मिच्छाइद्विष्पिह चउत्विहो वधो, धुववधित्तादो ।  
उर्वरि तिपिटो, उवाभावादो । ह्रस्व रदीण सवत्थ सादि अद्गुजो, अद्गुववधित्तादो ।

मणुमाउअस्म वधोच्छेदो चेव, सुक्कलेस्साए उदयवोच्छेदाणुवलमादो । परोदओ वधो,  
सुक्कलेस्साए सवत्थ सोदएण वधविरोहादो । णिरत्तो, अतोसुहुत्तेण विणा वधुवरमाभावादो ।  
पचया सुगमा । णवरि मिच्छाइद्वि-सामणसम्मादिद्वि असजदसम्मादिद्वीमु ओरालियदुग

हास्य, रति, भय और जगुप्ताया वध और उदय दोनों साथमें व्युच्छिष्ट होते हैं, क्योंकि, अपूर्वकरणके अंतिम समयमें उन दोनोंका व्युच्छेद देखा जाता है । वध उनका स्वोदय परोदय होता है, क्योंकि, वे अधुवोदयी हैं । मिथ्यादृष्टिसे लेकर प्रमत्तसयत तक हास्य व रतिका सातर वध होता है । ऊपर निरन्तर वध होता है, क्योंकि, वहा प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके वधका अभाव है । भय और जगुप्ताया निरन्तर वध होता है, क्योंकि, वे धुववन्धी हैं । प्रत्यय सुगम हैं । विशेष इतना है कि मिथ्यादृष्टि और सामान्य सम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें औदारिकमिश्र प्रत्ययको कम करना चाहिये । मिथ्यादृष्टि, सामान्यसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें मनुष्य और देव गतिमें सयुक्त वध होता है । ऊपर देवगतिसयुक्त और अगनिसयुक्त वध होता है । तीन गतियोंके मिथ्यादृष्टि, सामान्यसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असयतसम्यग्दृष्टि, दो गतियोंके सयतान्यत, तथा मनुष्यगतिके सयत स्वामी हैं । वन्धाध्वान और वन्धयुच्छिष्टस्वान सुगम हैं । भय और जगुप्ताया मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें चारों प्रकारका वध होता है, क्योंकि, वे अधुवन्धी हैं । ऊपर तान प्रकारका वध होता है, क्योंकि, वहा धुववन्धना अभाव है । हास्य और रतिका सत्र सादि व अधुव वन्ध होता है, क्योंकि, वे अधुव वन्धी हैं ।

मनुष्यायुका केवल वधयुच्छेद ही होता है, क्योंकि, शुक्ललेख्यामें उसका उदय युच्छेद नहीं पाया जाता । परोदय वध होता है, क्योंकि, शुक्ललेख्यामें सर्वत्र स्वोदयसे उसके वन्धका विरोध है । निरन्तर वध होता है, क्योंकि, अतर्मुह्यके विना उसके वध विधामका अभाव है । प्रत्यय सुगम हैं । विशेष इतना है कि मिथ्यादृष्टि, सामान्यसम्यग्दृष्टि

सातरपञ्चुलमादो । उपरि गिरतरो, पडिपन्तपयडिनघाभावादो । थिर-सुभाण मिच्छाइट्टिप्पहुडि जाव पमत्तमजदो ति सातरो । उपरि गिरतरो, पडिपन्तपयडिनघाभावादो ।

पञ्चया सुगमा । देवगइ-वेउञ्चियदुगाण वधो देवगइमजुतो । सेसाण पयडीण मिच्छादिट्टि-सासणसम्मादिट्टि असजदसम्मादिट्टीमु देव-मणुमगइसजुतो । उपरि देवगइसंजुतो । देवगइ-वेउञ्चियदुगाण दुगइमिच्छादिट्टि-सामणसम्मादिट्टि-सम्मामिच्छादिट्टि असजदसम्मादिट्टि-सजद्रासजदा मणुमगइसजदा च सामी । जसेसाण पयडीण ववस्स तिगइमिच्छादिट्टि-सामणसम्मादिट्टि सम्मामिच्छादिट्टि-असजदसम्मादिट्टिणो दुगइमजदासजदा मणुसगइसजदा च सामी । वधद्धाण सुगम । अपुच्चरुरणद्धाण खेजे भागे मणुण वधो वोच्छिज्जदि । तेजा-कम्मइयसरीर-वण्णचउक्क-अगुरुलहुण-उवघाद-णिमिणाण' मिच्छाइट्टिमिध वधो चउञ्चिहो । उपरि तिविहो, पुणवधित्तादो । सेसाण पयडीण सादि-अहुवो वधो ।

आहारदुगस्स ओपभगो । तित्थयरस्स नि ओपभगो । दुगइ-सजदसम्मादिट्टिणो मणुस-

पाया जाता है ।

ऊपर निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, वहा प्रतिपन्न प्रकृतियोंके बन्धका अभाव है । स्थिर और शुभका मिथ्यादृष्टिसे लेकर प्रमत्तसयन तक सान्तर बन्ध होता है । ऊपर निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, वहा प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धका अभाव है ।

प्रत्यय सुगम हैं । देवगति और त्रिभियरुडिकका बन्ध देवगतिसयुक्त होता है । शेष प्रकृतियोंका बन्ध मिथ्यादृष्टि, नासादनसम्यग्दृष्टि और असयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें देव व मनुष्य गतिसे सयुक्त होता है । ऊपर देवगतिसे सयुक्त होता है ।

देवगति और त्रिभियरुडिकके दो गतियोंके मिथ्यादृष्टि, नासादनसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि असयतसम्यग्दृष्टि व सयतासयन, तथा मनुष्यगतिके सयत स्वामी हैं । शेष प्रकृतियोंके बन्धके तीन गतियोंके मिथ्यादृष्टि, नासादनसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असयतसम्यग्दृष्टि, दो गतियोंके सयतासयन, तथा मनुष्यगतिके सयत स्वामी हैं । अर्थात् सुगम है । अपूर्वकरणकालके सत्यात यह भाग जाकर बन्ध व्युत्पन्न होता है ।

तैजस व कार्मण शरीर, चर्णादिक चार, अगुरुलघु, उपप्रात और निर्माणका मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें चारों प्रकारका बन्ध होता है । ऊपर तीन प्रकारका बन्ध होता है, क्योंकि, वे ध्रुवग्रन्थी हैं । शेष प्रकृतियोंका सादि व अध्रुव बन्ध होता है ।

आहारकठिकयी प्ररूपणा ओषके समान है । तीर्थन्तर प्रकृतिनी भी प्ररूपणा ओषके समान है । विशेषता इतनी है कि उसके दो गतियोंके असयतसम्यग्दृष्टि और

कम्मइयसरीर-वण्ण-गध रम फाम अगुरुवल्लुअ-तम-नादर पज्जत्त-धिर सुह णिमिणाण सोदओ  
 वधो, एत्थ धुपेदयत्तादो । समचउरममटाण पमत्तविहायगइ-सुस्सराण सोदय-परोदओ,  
 उभयहा पि व शिरोहादो । उपघाद-परघादुस्साम-पत्तेयसरीराण-मिच्छादिट्ठि-मासणमम्मादिट्ठि  
 असनदमम्मादिट्ठिसु वधो मोदय परोदओ । अण्णत्थ सोदओ चेत्थ, अपज्जत्तद्धामादो ।  
 णवरि पमत्तमज्जेदु सु परघादुस्सासाण सोदय परोदओ । सुभगादेज्जाण मिच्छादिट्ठिण्हुडि जाव  
 जसत्तदमम्मादिट्ठि चि त्थो सोदय परोदओ । ऊपरि सोदओ चेत्थ, पडिक्कमुदयामादो ।  
 देवगइ परिदिद्यजादि वेत्थिअ-तेजा न म्मइयसरीर-वेत्थिअसरीरअगोवग-वण्ण रम-गध-फाम-  
 देवगआओग्गाणुपु-नी-अगुरुवल्लुअ उवघाद-परघाद उस्साम-तम नादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-  
 णिमिणाणामाण णित्तरो वधो, एत्थ धुपत्तधित्तुजलभादो । समचउरमसटाण पसत्तविहायगइ-  
 सुभग सुस्सर-आदेज्जाण मिच्छादिट्ठि सासणमम्माइहीसु सात्त णित्तरो । होट्टु णाम सुक्कत्तेस्सिय-  
 त्तिरिक्कत्त-मणुस्सेसु देवगइसज्जत्त वधमाणसु णित्तरो वधो, ण सात्तरो ? ण, देवसु सुक्कत्तेस्सियसु

होता है, क्योंकि, स्वोदयसे इनके बंधन विरोध है। पंचेन्द्रियजाति, तैजस व कामण शरीर,  
 वण, गध रस, स्पर्श, अगुरुल्लु अरस, यादर पर्याप्त, स्थिर, शुभ और निर्माणका  
 स्वोदय उत्पन्न होता है, क्योंकि, यहा ये ध्रुवोदयी हैं। समचतुरस्रसस्थान, प्रशस्तविहायो  
 गति और सुस्वरका स्वोदय परोदय उत्पन्न होता है, क्योंकि, दोनों प्रकारोंसे ही इनके  
 बंधमें कोई विरोध नहा है। उपघात, परघात, उच्छ्वास और प्रत्येक शरीरका मिथ्यादृष्टि,  
 सासादनसम्यग्दृष्टि और जसयत्तसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें स्वोदय परोदय उत्पन्न होता है।  
 अन्य गुणस्थानोंमें स्वोदय ही उत्पन्न होता है, क्योंकि, यहा अपर्याप्तकालका अभाव है।  
 विशेषता इतनी है कि प्रसक्तमयताओं परघात और उच्छ्वासका स्वोदय परोदय उत्पन्न  
 होता है। सुभग और आदेयका मिथ्यादृष्टिसे लेकर जसयात्तसम्यग्दृष्टि तक स्वोदय परोदय  
 उत्पन्न होता है। ऊपर स्वोदय ही उत्पन्न होता है, क्योंकि, यहा प्रतिपक्ष प्रवृत्तियोंके  
 उदयका अभाव है।

देवगति, पंचेन्द्रियजाति, वेत्थिविक्क, तैजस व कामण शरीर, वत्थिविक्कदागीरामोपाग,  
 वण, रस, गध, स्पर्श, देवगतिप्रायाग्यानुपूर्वी, अगुरुल्लु उपघात, परघात, उच्छ्वास  
 अरस, यादर, पर्याप्त प्रत्येक शरीर और निर्माण ज्ञानमूर्ति निरंतर उत्पन्न होता है  
 क्योंकि, यहा इनमें ध्रुवगतिपना पाया जाता है। समचतुरस्रसस्थान, प्रशस्त  
 विहायोगति, सुभग, सुस्सर और आदेयका मिथ्यादृष्टि व सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंमें  
 सात्त निरंतर उत्पन्न होता है।

शुका—इन प्रवृत्तियोंके देवगतिसे मयुक्त बाधोवाले शुक्ललेइयावाले तिर्यक  
 मनुष्योंमें निरंतर उत्पन्न ही हो, परंतु सात्त बंध होना सम्भव नहीं है ?

समाधान—ऐसा नहा है, क्योंकि, शुक्ललेइयावाले देवोंमें उनका सात्त उत्पन्न

अभवसिद्धिएसु पंचाणावरणीय णवदंसणावरणीय-सादासाद-  
मिच्छत्त-सोलसकसाय-णवणोकसाय-चदुआउ-चदुगइ-पंचजादि-ओरा-  
लिय वेउविय-तेजा-कम्मइयसरीर-छसंठाण-ओरालिय-वेउवियअंगो-  
वंग छसंघडण वण्ण-गंध रस-फास-चत्तारिआणुपुव्वी अगुरुवलहुव-उव-  
घाद परघाद-उस्सास-आदावुज्जोव-दोविहायगइ-तस-चादर थावर-सुहुम-  
पज्जत्त-अपज्जत्त-पत्तेय साहारणसरीर-थिराथिर-सुहासुह-सुभग दुभग-  
सुस्सर दुस्सर-आदेज्ज-अणादेज्ज-जसकित्ति-अजसकित्ति-णिमिण-  
णीचुच्चागोद-पंचंतराइयाणं को वंधो को अवंधो ? ॥ २७६ ॥

सुगम ।

सव्वे एदे वंधा, अवंधा णत्थि ॥ २७७ ॥

एदस्स देसामासियसुत्तस्स अत्थपरूवणा कीरदे— एदासु पयडीसु एत्थ ण कांसि पि  
बधोदयवोच्छेदो अत्थि, उवलममाणाण वेच्छेदविरोहादो । पचणाणावरणीय-चउदसणावरणीय-

अमन्यसिद्धिक जीवोंमें पाच ज्ञानावरणीय, नौ दर्शनावरणीय, साता व असाता  
वेदनीय, मिथ्यात्व, सोलह कपाय, नौ नोक्रपाय, चार आयु, चार गतिया, पाच जातियां,  
औदारिक, वैकियिक, तैजस व कार्मण शरीर, छह सस्यान, औदारिक व वैकियिक अगोपाग,  
छह संहनन, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, चार आनुपूर्वी, अगुरुलघु, उपघात, परघात, उच्छ्वास,  
आताप, उद्योत, दो विहायोगतिया, तम, दादर, स्थावर, सूक्ष्म, पर्याप्त, अपर्याप्त, प्रत्येक,  
साधारणशरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुभग, दुर्भग, सुस्वर, दुस्वर, आदेय, अनादेय  
यशकीर्ति, अयशकीर्ति, निर्माण, नीच व ऊच गोत्र और पाच अन्तराय, इनका कौन बन्धक  
और कौन अनन्धक है ? ॥ २७६ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

ये सभी बन्धक हैं, अबन्धक नहीं हैं ॥ २७७ ॥

इस देशामर्शक सूत्रके-अर्थकी प्ररूपणा करते हैं— इन प्रकृतियामें यहा किन्हीं  
के भी पच ओर उदयका व्युच्छेद नहीं है, क्योंकि, विद्यमान होनेसे उन दोनोंके व्युच्छेदका  
विरोध है । पाच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, मिथ्यात्व, तैजस व कार्मण शरीर,

सादि अद्भुतो, बद्भुवधप्रितादो ।

मिच्छत णवुसयवेद-हुडमठाण-असपत्तसेरटसगडणाणि एगट्टाणपयडीओ । एत्थ मिच्छतस्स णधोदया सम वोच्छिण्णा, मिच्छाद्दिग्धि चेत्त तदुहयंदसणादो । णउमयवेद-असपत्तमेरटमघडणाण पुत्त बधो पच्छा उदओ वेच्छिज्जदि, तहोत्तलभादो । हुडसठाणस्स बधवोच्छेदो चेत्त, सुत्तलेम्माए उदयवोच्छेदाभावादो । मिच्छतस्स बधो सोदओ । सेसाण तिण्ण पि परोदओ । मिच्छतस्स णित्तरो । मेसाण मात्तरो । मिच्छतस्स दुग्इसज्जतो । सेसाण मणुसग्इसज्जतो । मिच्छतस्स तिग्इया मामी । मेसाण देवा । बधद्दाण बधवोच्छिण्णट्टाण च सुग्गम । मिच्छतस्स चउत्तिहो बधो । मेसाण सात्ति अद्भुतो ।

**भवियाणुवादेण भवसिद्धियागमोधं ॥ २७५ ॥**

णत्थि एत्थ ओषपरूवणादो को वि विसेसो, तेण ओषमिदि जुज्जदे ।

क्योंकि, ये अद्भुतबन्धी हैं ।

मिथ्यात्व, नपुंसकवेद, हुण्डसस्थान और असंप्राप्तस्वपाटिकासहनन, ये एकस्थान प्रकृतियां हैं । इनमें मिथ्यात्वका बन्ध और उदय दोनों साधर्म्य व्युच्छिन्न होते हैं, क्योंकि, मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें ही ये दोनों देखे जाते हैं । नपुंसकवेद और असंप्राप्त स्वपाटिकासहननका पूर्यं बन्ध और पश्चात् उदय व्युच्छिन्न होता है, क्योंकि, वैसा पाया जाता है । हुण्डसस्थानका बन्ध व्युच्छेद ही है, क्योंकि, शुक्लवेदयामें उसके उदयव्युच्छेदका अभाव है । मिथ्यात्वका बन्ध स्रोदय होता है । शेष तीनों प्रकृतियोंका परोदय बन्ध होता है । मिथ्यात्वका निरंतर और शेष प्रकृतियोंका सान्तर बन्ध होता है । मिथ्यात्वका दो गतियोंसे संयुक्त बन्ध होता है । शेष प्रकृतियोंका मनुष्यगतितसे संयुक्त बन्ध होता है । मिथ्यात्वके बन्धके तीन गतियोंके जीव स्वामी हैं । शेष प्रकृतियोंके देव स्वामी हैं । बन्धाभ्यां और बन्धव्युच्छिन्नस्थान सुग्गम हैं । मिथ्यात्वका चारों प्रकारका बन्ध होता है । शेष प्रकृतियोंका सादि व अद्भुत बन्ध होता है ।

मध्यमार्गानुसार भव्यसिद्धिक जीवोंकी प्ररूपणा ओषके समान है ॥ २७५ ॥

चूंकि यहां ओषप्ररूपणासे कोई भेद नहीं है अत एव 'ओषके समान है' ऐसा कहना योग्य है ।

पुरिसवेदस्स षष्ठो सातर-णिरतरो । कुदो ? पम्म-सुक्कलेस्सिएसु णिरतरबधुवलभादो । देवगइ-पचिंदियजादि-वेउच्चियसरीर-समचउरससठाण वेउच्चियसरीरअगोवग-देवगइपाओग्गाणु-पुच्ची-परघादुस्सास-पसत्थविहायगइ-तस-यादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-उच्चागोदाण सातर-णिरतरो बधो । कुदो ? असखेज्जवासाउअ-सुहतिलेस्सियतिरिक्ख-मणुस्सेसु च णिरतरनधुवलभादो । मणुसगइ मणुसगइपाओग्गाणुपुच्चीण बधो सातर-णिरतरो । कुदो ? आणदादिदेनेसु णिरतरनधुरलभादो । तिरिक्खगइ-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुच्ची-णीचागोदाण षष्ठो सातर-णिरतरो । कुदो ? तेउ-वाउकाइएसु सत्तमपुढवीणेरइएसु च णिरतरबधुवलभादो । ओरालियसरीर ओरालियसरीरगोवगाण सातर-णिरतरो, सणक्कुमारादि-देव-णेरइएसु णिरतरनधुवलभादो ।

सध्वकम्माण पचवचास पच्चया । णवरि तिरिक्ख-मणुस्साउआण तेवचास पच्चया, वेउच्चियमिस्स कम्मइयपच्चयाणमभावादो । देव-णिरयाउआण एककवचास पच्चया, वेउच्चियदुगोरालियमिस्स कम्मइयपच्चयाणमभावादो । देवगइ देवगइपाओग्गाणुपुच्ची-णिरयगइ-णिरयगइपाओग्गाणुपुच्ची-वेउच्चियसरीर-वेउच्चियसरीरगोवगाणमेक्कनचास पच्चया, वेउच्चिय-

जाता है। पुरुषवेदका सान्तर-निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, पद्म और शुक्ल लक्ष्यावाले जीवोंमें उसका निरन्तर बन्ध पाया जाता है। देवगति, पचेन्द्रियजाति, वैक्रियिकशरीर, समचतुरस्रसंस्थान, वैक्रियिकशरीरागोपाग, देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, परघात, उच्छ्वास, प्रशस्तविहायोगति, ब्रह्म, यादर, पर्यान्त, प्रत्येकशरीर, सुभग, सुस्वर, आदेय और उच्चगोत्रका सान्तर निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, असख्यातवर्षायुष्क और शुभ तीन लक्ष्यावाले तिर्यंच व मनुष्योंमें उनका निरन्तर बन्ध पाया जाता है। मनुष्यगति और मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वीका सान्तर निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, आनतादिक देवोंमें उनका निरन्तर बन्ध पाया जाता है। तिर्यंगति, तिर्यंगतिप्रायोग्यानुपूर्वी और नीचगोत्रका सान्तर निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, तेज व घायु कायिक जीवोंमें तथा सप्तम पृथिवीके नारकियोंमें उनका निरन्तर बन्ध पाया जाता है। औदारिकशरीर और औदारिकशरीरागोपागका सान्तर निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, सनत्कुमारादि देव व नारकियोंमें उनका निरन्तर बन्ध पाया जाता है।

सद्य कर्मोंके पचघन प्रत्यय हैं। विशेष इतना है कि तिर्यंगायु और मनुष्यायुके तिरपन प्रत्यय हैं, क्योंकि, वैक्रियिकमिश्र और कर्मण प्रत्ययोंका अभाव है। देवायु और नारकायुके इफ्यावन प्रत्यय हैं, क्योंकि, वैक्रियिकादिक, औदारिकमिश्र और कर्मण प्रत्ययोंका अभाव है। देवगति, देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, नरकगति, नरकगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, वैक्रियिकशरीर और वैक्रियिकशरीरागोपागके इफ्यावन प्रत्यय हैं, क्योंकि, वैक्रियिकादिक,

मिच्छत-तेना कम्मइयसरीर-वण्णचउक्क-अगुरुअलहुअ-धिराधिर-सुहासुह-णिमिण-पचतराइयाण  
 सोदओ बधो । पचदसणाउरणीय-सादासाद-सोलसकसाय-णवणोकसाय तिरिक्ख-मणुस्साउ-  
 तिरिक्ख-मणुमगइ-पच्चिंदियजादि-ओरात्थियसरीर-छसठाण-ओरात्थियसरीरगोवग-छसघडण-  
 तिरिरत्त मणुमगइपाओग्गाणुपुव्वी-उउघाद-परघाद उस्सास-आदावुज्जोव-दोविहायगइ-तम-  
 भावर घादर-सुहुम-पज्जत्त अपज्जत्त पत्तेय साहारणसरीर-सुभग दूभग-सुस्सर-दुस्सर-आदेज्ज-  
 अणादेज्ज-जमकित्ति-अजसकित्ति-णीचुच्चागोटाण सोदय परोदओ बधो । देवाउ-णिरयाउ-  
 देवगइ-देवगइपाओग्गाणुपुव्वि णिरयगइ-णिरयगइपाओग्गाणुपुव्वी वेउत्थियसरीरगोवगाण परो  
 दओ बधो, सोदएण बधविरोहादो ।

पचणाणाउरणीय णवदसणाउरणीय मिच्छत-सोलमकसाय-भय-दुगुछा-चत्तारिआउ-  
 तेजा कम्मइयसरीर-वण्ण-गध रम फाम-अगुरुअलहुअ उउघाद णिमिण पचतराइयाण णिरतरा  
 बधो, एगसमएण वधुवरमाभावादो । सादासाद इत्थि णउसयवेद-हस्स रदि अरदि-सोग-णिरयगइ-  
 एइदिय-वीइदिय-तीइदिय-चउरिंदियजादि पचसठाण-छसघडण णिरयगइपाओग्गाणुपुव्वी-आदा-  
 उज्जोव-अणसत्थविहायगइ-धावर-सुहुम अपज्जत्त-साहारणसरीर धिराधिर सुहासुह-दूभग दुस्सर-  
 अणादेज्ज-जमकित्ति अजसकित्तीर्ण सातरो बधो, एगसमएण वधुवरमदमणादो ।

यणांदिक् चार, अगुरुत्थु, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, निर्माण और पाच अन्तरायका  
 स्वोदय बन्ध होता है । पाच दशनावरणीय, साता व असाता चेदनीय, सोलह कपाय, नौ  
 नोषपाय, तियगायु, मनुप्यायु, तिर्यग्गति, मनुप्यगति, पचेन्द्रिय जाति, औदारिकशरीर,  
 छह सस्थान, औदारिकशरीरगोपाण, छह सहनन, तिर्यग्गति व मनुप्यगति प्रायोग्यानुपूर्वी,  
 उपघात, परघात, उच्छ्रयास, आताप, उद्योत, दो विहायोगतिया, ब्रम, स्थायर, धादर,  
 सुहम, पपात्त, अपर्यात्त, प्रत्येक व स्वाधारण शरीर, सुभग, दुभंग, सुस्वर, दुस्वर,  
 आदेय, अनादेय, यशकीर्ति, अयशकीर्ति और नीच व ऊच गोत्रका स्वोदय परोदय बन्ध होता  
 है । देवायु, नारकायु, देवगति, देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, नरकगति नरकगतिप्रायोग्यानुपूर्वी  
 और धैत्रियिक्कारोरागोपाणका परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, स्वोदयसे इनके बन्धका  
 विराध है ।

पाच दशनावरणीय, नौ दशनावरणीय, मिध्याय, मोलह कपाय, भय, जुगुप्पा,  
 चाग आयु तनस व कामण शरीर, घर्ण, गन्ध, रस, स्पश, अगुरुत्थु, उपघात, निर्माण  
 और पाच अन्तरायका निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, एक समयसे इनके बन्धविधामका  
 अभाव है । साता व असाता चेदनीय, स्वविद्, नपुमकवेद्, हास्य रति, अरति, शोक,  
 नरकगति, एकीत्रय, द्वौन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुर्गिन्द्रिय जाति, पाच सस्थान, छह सहनन,  
 नरकगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, आताप, उद्योत, अणसत्थविहायोगति, स्थायर, सुहम, अपपात्त,  
 स्वाधारणशरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, दुभंग, दुस्वर, अनादेय, यशकीर्ति और  
 अयशकीर्ति सातरो बन्ध होता है, क्योंकि, एक समयसे भी इनका बन्धविधाम देखा

चेव । उदयवोच्छेदो णत्थि, खीणरूपायाडिसु वि एदासिं पयडीण उदयदसणादो । तेण उदय-  
वोच्छेदादो बधवोच्छेदो पुव्व पच्छा वा होदि ति विचारो णत्थि, सतासताण संणिण्यास-  
विरोहादो । पचणाणावरणीय-चउदसणावरणीय-पचतराइयाण सोदओ बधो । जसकित्तीए  
असजदसम्मादिट्ठीसु सोदय परोदओ । उवरि सोदओ चेव, पडिवक्खुदयामाणादो । उच्चा-  
गोदस्म असजदसम्मादिट्ठी-मजदासजदेसु सोदय-परोदओ । उवरि सोदओ चेव, पडिवक्खु-  
दयाभावादो । पचणाणावरणीय-चउदसणावरणीय-उच्चागोद-पचतराइयाण बधो णिरतरो, धुव-  
धधित्तादो । जसकित्तीए अमजदसम्मादिट्ठीप्पहुडि जाव पमत्तसजदो ति बधो सातरो । उवरि  
णिरतरो, पडिवक्खुपयडिअभावादो । पच्चया सुगमा । णवरि असजदसम्मादिट्ठीसु ओरा-  
लियमिस्सपच्चओ, पमत्तसजदेसु आहारदुगपच्चओ णत्थि । असजदसम्मादिट्ठीसु एदासिं  
पयडीण बधो देव मणुसगइमजुत्तो । उवरिमेसु गुणट्ठाणेसु देवगइसजुत्तो अगदसजुत्तो वा ।  
चउगइअसजदसम्मादिट्ठी दुगइमजदासजदा मणुमगइसजदा साभीओ । बधट्ठाण बधवोच्छिण्ण-  
ट्ठाण च सुगम । धुवधधीण तिनिहो बधो, धुनाभावादो । अवसेसाण सादि-अहुवो, अहुव-  
धधित्तादो ।

रायका व-धन्वुच्छेद ही है । उदय-युच्छेद नहीं है, क्योंकि, शीणरूपायादिक गुणस्थानोंमें  
भी इन प्रकृतियोंका उदय देखा जाता है । इसी कारण उदय-युच्छेदसे रन्ध-युच्छेद पूर्वमें  
या पश्चात् होता है, यह विचार नहीं है क्योंकि, सत् और असत्की तुलनाका विरोध है ।

पाच क्षानावरणीय, चार दर्शनावरणीय और पाच अन्तरायका स्वोदय बन्ध  
होता है । यशकीर्तिका असयतसम्यग्दृष्टियोंमें स्वोदय परोदय बन्ध होता है । ऊपर स्वोदय  
ही बन्ध होता है, क्योंकि, वहा प्रतिपक्ष प्रकृतिके उदयका अभाव है । उच्चगोत्रका  
असयतसम्यग्दृष्टि और सयतासयत गुणस्थानोंमें स्वोदय परोदय बन्ध होता है । ऊपर  
स्वोदय ही बन्ध होता है, क्योंकि, चहा प्रतिपक्ष प्रकृतिका उदयाभाव है ।

पाच क्षानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, उच्चगोत्र और पाच अन्तरायका बन्ध  
निरन्तर होता है, क्योंकि, ये धुवबन्धी हैं । यशकीर्तिका असयतसम्यग्दृष्टिसे लेकर  
प्रमत्तसयत तक सान्तर बन्ध होता है । ऊपर निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, ऊपर  
प्रतिपक्ष प्रकृतिके बन्धका अभाव है ।

प्रत्यय सुगम है । विशेष इतना है कि असयतसम्यग्दृष्टियोंमें औदारिकमिथ प्रत्यय  
और प्रमत्तसयतोंमें आहारकण्डिक प्रत्यय नहीं है । असयतसम्यग्दृष्टियोंमें इन प्रकृतियोंका  
बन्ध देव व मनुष्य गतिसयुक्त होता है । उपरि गुणस्थानोंमें देवगतिसयुक्त या अगति  
सयुक्त बन्ध होता है । चारों गतियोंके असयतसम्यग्दृष्टि, दो गतियोंके सयतासयत, और  
मनुष्यगतिके सयत स्वामी हैं । बन्धाध्वान और रन्ध-युच्छिन्नस्थान सुगम है । धुवबन्धी  
प्रकृतियोंका तीन प्रकारका रन्ध होता है, क्योंकि, उनके धुव बन्धका अभाव है । शेष  
प्रकृतियोंका सादि व अधुव बन्ध होता है, क्योंकि, ये अधुवबन्धी हैं ।



मिच्छतत्तेजा कम्मइयसरीर-चण्णचउत्तक-अगुरुअलहुअ थिराधिर-सुहासुह-णिमिण-पचतराइयाण सोदओ बधो । पचदसणावरणीय-सादासाद-सोलसकसाय-णवणोकसाय तिरिक्ख-मणुस्साउ-तिरिक्ख-मणुसगइ-पंचिदियजादि-ओरालियसरीर-छसठाण-ओरालियसरीरगोवग-छसघडण-तिरिक्ख मणुसगइपाओग्गाणुपुच्ची-उवघाद-परघाद उस्सास-आदावुज्जोव-दोविहायगइ-तस-धावर घादर सुहुम-पज्जत्त अपज्जत्त पत्तेय साहारणसरीर-सुभग दूमग-सुस्सर-दुस्सर-आदेज्ज-अणादेज्ज-असकिति-अजसकिति-णीचुन्चगोदाण सोदय परोदओ बधो । देवाउ-णिरयाउ देवगइ-देवगइपाओग्गाणुपुच्ची-णिरयगइ-णिरयगइपाओग्गाणुपुच्ची-वेउव्वियसरीरगोवगाण परो दओ बधो, मोदएण बधविरोहादो ।

पचणाणारणीय णवटसणावरणीय मिच्छत-सोलसकसाय-भय-दुगुछा-चत्तारिआउ-तेजा कम्मइयसरीर-चण्ण गध रस फास-अगुरुअलहुअ उवघाद णिमिण पचतराइयाण णिरतरो बधो, एगसमण्ण घधुवरमाभावादो । सादासाद इत्थि णउसयवेद-हस्स रदि अरदि-सोग-णिरयगइ-एइदिय-वीइदिय-तीइदिय चउरिदियजादि पचसठाण छसघडण णिरयगइपाओग्गाणुपुच्ची-आदा-उज्जोव-अप्पसत्तविहायगइ-धावर-सुहुम अपज्जत्त साहारणसरीर थिराधिर सुहासुह-दूमग दुस्सर अणादेज्ज-असकिति अजसकिति सातरो बधो, एगसमण्ण घधुवरमदसणादो ।

पणादिक् चार, अगुरुलघु, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, निर्माण और पाच अन्तरायका स्वोदय बध होता है । पाच दशनावरणीय, साता व असाता चेदनीय, सोलह कपाय, नौ नाकपाय, तिर्यंगायु, मनुष्यायु, तिर्यग्गति, मनुष्यगति, पचेन्द्रिय जाति, औदारिकशरीर, छह सस्थान, औदारिकशरीरागोपाग, छह सहनन, तिर्यग्गति व मनुष्यगति प्रायोग्यानुपूर्वी, उपघात, परघात, उच्छ्वास, आताप, उद्योत, दो विहायोगनित्या, ब्रह्म, म्याधर, घादर, भूइम, पर्याप्त, अपयान्त, प्रत्येक व साधारण शरीर, सुभग, दुर्मग, सुस्वर, दुस्वर, आदेय, अनादेय, यशकीर्ति, अयशकीर्ति और नीच व ऊच गोत्रका स्वोदय परोदय बध होता है । देवायु, नारकायु, देवगति, देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, नरकगति नरकगतिप्रायोग्यानुपूर्वी और वैश्वियिकशरीरागोपागका परोदय बध होता है, क्योंकि, स्वोदयसे इनके बन्धका विरोध है ।

पाच ज्ञानावरणीय, नौ दर्शनावरणीय, मिथ्यात्व, सोलह कपाय, भय, लुगुप्सा, चार आयु तेजस व कामण शरीर, घण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, उपघात, निर्माण और पाच अन्तरायका निरंतर बध होता है, क्योंकि, एक समयसे इनके बन्धविधामका अभाव है । साता व असाता चेदनीय, स्वोदय, नपुंसकवेद, हास्य रति, अरति, शोक, नरकगति, पचेन्द्रिय, क्रीन्द्रिय, श्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय जाति, पाच सस्थान, छह सहनन, नरकगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, आताप, उद्योत, अशस्तविहायोगति, म्याधर, सुइम, अपर्याप्त, साधारणशरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, दुर्मग, दुस्वर, अनादेय, यशकीर्ति और अयशकीर्तिका सातर बध होता है, क्योंकि, एक समयसे भी इनका बन्धविधाम देखा ।

अनोवग-गिरयगङ्-देवगङ्गाओग्माणुष्वी-सुहुम-अपञ्जत-साहारणमरीराण बधसस तिरिक्ख-  
मणुसा सामी । एडदियजादि-आदाव-धावराण तिगइभिच्छाड्डी सामी, णेरइयाणमभावादो ।  
अवसेसाण पयडीण चउगइभिच्छाड्डी सामी, तेसिं तन्नधनिरोहाभावादो ।

बधद्धान णत्थि, एक्कमिह गुणद्धाने अद्धानविरोहादो । बधनोच्छेदो वि णत्थि, एत्थ  
उत्तामेसपयडीणं बधवलभादो । वञ्जमाणपयडीसु धुवन्धीणमणादिओ धुवो बधो । अवसेसाणं  
सादि-अहुवो ।

सम्मतानुवादेण सम्माइट्टीसु खइयसम्माइट्टीसु आभिणिवोहिय-  
णाणिभंगो ॥ २७८ ॥

जहा आभिणिवोहियणाणपरूवणा कदा तथा गिरवसेसा कायव्वा, विससाभावादो ।  
णवरि खइयसम्माइट्टिसजदामजदेसु उच्चगोदसस सोदओ गिरतरो बधो, तिरिक्खेसु खइय-  
सम्माइट्टीसु सजदासजदाणमणुवलभादो । मणुसाउअ बधमाणाणमित्थिवेदपच्चओ णत्थि, देव-  
णेरइएसु इत्थिवेदखइयसम्माइट्टीणमभावादो । एत्तिओ चैव निसेसो । अण्णो जदि अत्थि सो

वैकल्पिकशरीर, धैक्यिकशरीरानोपाग, नरकगति व देवगति प्रायोग्यानुपूर्वी, स्वप्न,  
अपर्योक्त ओर साधारणशरीर, इनके बन्धके तिर्यच व मनुष्य स्वामी हैं । एकेन्द्रिय जाति,  
आताप आंर स्थावरके तीन गतियोंके मिथ्यादृष्टि स्वामी ह, क्योंकि, नारकियोंके इनका बन्ध  
नहीं होता । शेष प्रकृतियोंके बन्धके चारों गणियोंके मिथ्यादृष्टि स्वामी ह, क्योंकि, उनके  
इन प्रकृतियोंके बन्धका कोई विरोध नहीं है ।

बन्धाध्यान नहीं है, क्योंकि, एक गुणस्थानमें अध्यानका विरोध है । बन्धव्युच्छेद  
भी नहीं है, क्योंकि, यहा सूत्रोक्त सर प्रकृतियोंका बन्ध पाया जाता है । बध्यमान  
प्रकृतियोंमें धुवन्धी प्रकृतियोंका अनादि व धुव बन्ध होता है । शेष प्रकृतियोंका सादि  
व अधुन बन्ध होता है ।

सम्यक्त्वमार्गणानुमार सम्यग्दृष्टि और क्षायिकसम्यग्दृष्टि जीवोंमें आभिनिवोधिक-  
ज्ञानियोंके समान प्ररूपणा है ॥ २७८ ॥

जिस प्रकार आभिनिवोयिकज्ञानी जीवोंकी प्ररूपणा की गई है उसी प्रकार  
पूर्णरूपसे यहा भी करना चाहिये, क्योंकि, उनसे यहा कोई भेद नहीं  
है । विशेष इतना है कि क्षायिकसम्यग्दृष्टि सयतासयतोंमें उच्चगोत्रका स्वोदय एव  
निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, तिर्यच क्षायिकसम्यग्दृष्टियोंमें सयतासयत जीव पाये नहीं  
जते । मनुष्याद्युक्तो वा अन्येषाले जीवाके स्त्रीवेद प्रत्यय नहीं है, क्योंकि, देव व नारकियोंमें  
स्त्रीवेदी क्षायिकसम्यग्दृष्टियोंका अभाव है । इतनी ही यहा विशेषता है । अन्य कोई यदि

दुगोत्तलियमिस्स रुम्मइयपच्चयाणमभावादो । वीटदिय-तीट्टदिय-चउरिंदियजादि-सुहुम-अपन्नत्-साहारणाण तत्रचास पच्चया, वेउच्चियदुगाभावादो ।

सातावेदणीय इयि पुरिसनेद हस्स रदि पमन्थविहायगट्ट-समचउरससठाण-थिर-सुम-सुभग-सुस्वर-ओदेज्ज-जसकित्तीण तिगइमजुत्तो वधो, गिरयगईए अभावादो । गिरमाउ गिरयगइ गिरयगइपाओग्गाणुपुच्चीण गिरयगइसजुत्तो । देमाउ देवगइ देवगइपाओग्गाणुपुच्चीण देवगइसजुत्तो । मणुमाउ-मणुमगइ मणुमगइपाओग्गाणुपुच्चीण मणुसगइमजुत्तो । तिरिक्खवाउ-तिरिक्खगइ तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुच्चीण चदुजादि आदाबुज्जोव थानर सुहुम साहारणाण तिरिक्खगइसजुत्तो । वेउच्चियसरीर-वेउच्चियसरीरअगोत्तणाण देम गिरयगइमजुत्तो । ओत्तलिय-सरीर-ओत्तलियसरीरगोवग चउसठाण-छसधडण अपज्जत्तणामरुम्माण तिरिक्ख मणुसगइमजुत्तो वधो । हुण्डसठाण-अप्पम-थविहायगइ-अथिर-असुह-दुमग दुम्मर-अणादेज्ज-णीचागोदाण तिगइसजुत्तो, देवगइए अभावादो । उच्चगोदस्स दुगदसजुत्तो, गिरय तिरिक्खगइणमभावादो । अवसेसाण पयडीण वधो चउगइमजुत्तो ।

देवाउ गिरयाउ-देवगइ-गिरयगइ-वीट्टदिय तीट्टदिय चउरिंदियजादि-वेउच्चियसरीर-

औदारिकमिथ और कामेण प्रत्ययोंका अभाव है । द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय जाति, सूक्ष्म, अपर्याप्त और साधारणके निरूपण प्रत्यय ह, क्योंकि, उनके धैत्रियिकद्विकका अभाव है ।

सातावेदनीय, स्त्रीधइ, पुरुषवेद, हास्य, रति, प्रशस्तविहायोगति, समचतुरस्र सस्थान, स्थिर, शुभ, सुभग, सुस्वर, अदिय और यशकालिका तीन गतियोंसे संयुक्त वध होता है, क्योंकि, इनके साथ नरकगतिके वधका अभाव है । नारकायु, नरकगति और नरकगति प्रायोग्यानुपूर्वका नरकगतिमयुक्त वध होता है । देवायु, देवगति और देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वका देवगतिमयुक्त वध होता है । मनुष्यायु, मनुष्यगति और मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वका मनुष्यगतिमयुक्त वध होता है । तिर्यगायु, तिर्यगति व तिर्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वका चार जातिया, आताप, उद्योत, स्थावर, सूक्ष्म और साधारणका तिर्यगतिमयुक्त वध होता है । धैत्रियिकशरीर और धैत्रियिकशरीरगोपागका देव एव नरक गतिसे संयुक्त वध होता है । औदारिकशरीर, औदारिकशरीरगोपाग, चार सस्थान, छह सहनन और अपपात्त नामकमौल तिर्यगति व मनुष्यगतिसे संयुक्त वध होता है । हुण्डसस्थान, अप्रशस्तविहायोगति, अस्थिर, अशुभ, दुर्मग, दुस्वर, अनादेय और नीचगोत्रका तीन गतियोंसे संयुक्त वध होता है, क्योंकि, इनके साथ देवगतिके वधका अभाव है । उच्चगोत्रका दो गतियोंसे संयुक्त वध होता है, क्योंकि, उसके साथ नरकगति और तिर्यगतिका वध नहीं होता । शेष प्रकृतियोंका वध चारों गतियोंसे संयुक्त होता है ।

देवायु, नारकायु, देवगति, नरकगति, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय जाति,

सुस्वर-आदेज्ज-जसकित्ति-णिमिण-तित्थयरुच्चागोद-पंचंतराइयाणं को  
बंधो को अवंधो ? ॥ २८१ ॥

एत्य अक्खसचार काऊण पण्णारस पण्णभंगा उप्पायय्वा । सेस सुगम ।

असंजदसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव अप्पमतसंजदा बंधा । एदे  
बंधा, अवंधा णत्थि ॥ २८२ ॥

एदस्स देसामासियसुत्तस्स परूवणा कीरदे— देवगइ वेउच्चियदुग्गणमसजदसम्मा-  
दिट्ठिम्हि उदओ वोच्छिणो पुव्वमेव । बधवोच्छेदो णत्थि, उवरिम्हि धुवुलभादो । तित्थ-  
यरस्स णत्थि उदयवोच्छेदो, एदेसु उदयामावादो । बधवोच्छेदो वि णत्थि, उवलममाणत्तादो ।  
अवसेसाण पयडीण ववोदयाण दोण्ण पि वोच्छेदामावादो उदयादो बंधो पुव्व पच्छा वा  
वोच्छिणो त्ति ण परीत्तया कीरदे ।

पचणाणावरणीय चउदसणावरणीय पचिन्द्रियजादि-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण गध रस-  
फास-अगुरुवल्हुव-तस-आदर-वज्जत्त थिर-सुह-णिमिण-पचतराइयाण सोदओ बंधो, एत्य धुवो-

पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, स्थिर, शुभ, सुगम, सुस्वर, आदेय, यशकीर्ति, निर्माण, तीर्थकर, उच्चगौरव  
और पाच अन्तराय, इनका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ २८१ ॥

यहा अक्षसचार करके चौदह गुणस्थान और सिद्धोंके आश्रयसे एक सयोंती  
पन्द्रह प्रश्नभगोंको उत्पन्न करना चाहिये । शेष सूत्रार्थ सुगम है ।

असयतसम्यग्दृष्टिसे लेकर अप्रमत्तसयत तक बन्धक हैं । ये बन्धक हैं, अबन्धक  
नहीं हैं ॥ २८२ ॥

इस देशामशोक सूत्रकी प्ररूपणा करते हैं—देवगति और वैकल्पिकद्विकका  
उदय असयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें पूर्वमें ही व्युत्पिद्य हो जाता है । बन्ध-व्युच्छेद नहीं  
है, क्योंकि, ऊपर बन्ध पाया जाता है । तीर्थकर प्रवृत्तिका उदयव्युच्छेद नहीं है, क्योंकि,  
शारीरपद्मिकसम्यग्दृष्टियोंमें उसके उदयका अभाव है । उसके बन्धका व्युच्छेद भी नहीं है,  
क्योंकि, वह पाया जाता है । शेष प्रकृतियोंके बन्ध और उदय दोनोंके भी व्युच्छेदका  
अभाव होनेसे 'उदयकी अपेक्षा बन्ध पूर्वमें अथवा पश्चात् व्युत्पिद्य होता है' यह  
परीक्षा नहीं की जाती है ।

पाच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, पचेन्द्रिय जाति, तेजस व कामेण शरीर,  
बन्ध, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुवल्हु, तस, वादर; पर्याप्त, स्थिर, शुभ, निर्माण और बंध

चित्तिव वत्तन्वो । पयडिबध्मयभेदपरुवणइमुत्तरसुत्त भणदि—

णवरि सादावेदणीयस्स को वंधो को अवंधो ? ॥ २७९ ॥

सुगम ।

असंजदसम्मादिट्टिप्पहुडि जाव सजोगिकेवली वंधा । सजोगि-  
केवलिअद्दाए चरिमसमयं गतूण वंधो वोच्छिज्जदि । एदे वंधा,  
अवसेसा अवंधा ॥ २८० ॥

एद पि सुगम, उहमो उत्तत्थत्तादो ।

वेदयसम्मादिट्टीसु पंचणाणावरणीय-छदसणावरणीय सादावेद-  
णीय-चउसजलण पुरिसवेद हस्स रदि-भय दुगुछ देवगदि-पंचिंदियजादि-  
वेउव्विय तेजा-कम्मइयसरीर समचउरससठाण वेउव्वियअगोवग-वण्ण-  
गध रस-फास देवगइपाओग्गाणुपुव्वी-अगुरुवलहुव-उवघाद-परघाद-  
उस्सास-पसत्थविहायगइ-त्तम-चादर पज्जत्त पत्तेयसरीर-धिर-सुभ सुभग-

विशेषता है तो उस विचारकर कहना चाहिये । प्रश्न-निबन्धगत भेदके प्ररूपणार्थ उत्तर  
सूत्र कहते हैं—

विशेष यह कि सातावेदनीयका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥२७९॥

यह सूत्र सुगम है ।

असयतसम्यग्दष्टिसे लेकर मयोगकेतली तक बन्धक हैं । सयोगकेतलिकालके अन्तिम  
समयकी जाकर बन्ध व्युच्छिन्न होता है । ये बन्धक हैं, शेष अबन्धक हैं ॥ २८० ॥

यह सूत्र भी सुगम है, क्योंकि, इसका अर्थ बहुत चार कहा जा चुका है ।

वेदकमम्यग्दष्टियोंमें पाच ज्ञानावरणीय, छह दर्शनावरणीय, सातावेदनीय, चार  
सज्वलन, पुरुषवेद, हास्य, रति, भय, जुगुप्सा, देवगति, पंचेन्द्रिय जाति, वैक्रियिक, तैजस  
व कार्मण शरीर, समचतुरस्रसस्थान, वैक्रियिकशरीरागोपाग, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, देवगति-  
प्रायोग्यानुपूर्वी, अगुरुलघु, उपघात, परघात, उच्छ्वास, प्रशस्तविहायोगति, व्रस, धादर,

एगसमएण धेधुवरमाभावादे । सादावेदणीय हस्स-रदि-थिर-सुम-जसकित्तीण असंजदसम्मादिट्ठि-  
प्पहुडि जाव पमत्तसज्जे ति वधो सांतरो । उवरि णिरत्तरो, पडिवक्खपयडिच्चथाभावादे ।

पञ्चया सुगमा, ओघपचणहितो विसेसाभावादे । देवगइ-वेउच्चियदुगाण, देवगइ-  
संजुत्तो । सेसाण पयडीण असजदसम्मादिट्ठीसु वधो दुगइसजुत्तो । उवरिमेसु देवगइसजुत्तो ।  
देवगइ-वेउच्चियदुगाण तिरिकर-मणुमअसजदसम्मादिट्ठि-सजदासजदा सामी । तित्थयरस्स  
तिगइअमजदसम्मादिट्ठिणो सामी, तिरिक्खगइए अभावादे । उवरिमा मणुसा चेष,  
तेसिमण्णत्थाभावादे । सेसाण पयडीण चउगइअसजदसम्मादिट्ठिणो दुगइसजदासजदा मणुसगइ-  
सजदा च सामी । वधद्वान्ण सुगम । वधवोच्छेदो णत्थि, 'अचधा णत्थि' ति वयणादे ।  
धुवबंधीण तिचिहो वधो, धुवाभावादे । सेसाण सादि-अहुवो, अहुवधवित्तादे ।

असादावेदणीय-अरदि-सोग-अथिर-असुह-जसकित्तिणामाणं  
को बंधो को अवंधो ? ॥ २८३ ॥

एत्थ पण्णभगा जाणिय वत्तन्वा ।

एक समयसे इनके बन्धविश्रामका अभाव है । सादावेदनीय, हास्य, रति, स्थिर, शुभ  
और यशकीर्तिका असयतसम्यग्दृष्टिसे लेकर प्रमत्तसयत तक सान्तर बन्ध होता है ।  
ऊपर निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, वहा प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धका अभाव है ।

प्रत्यय सुगम हैं, क्योंकि, ओघप्रत्ययोंसे कोई विशेषता नहीं है । देवगतिद्विक और  
वैकियिकद्विकका देवगतिसंयुक्त बन्ध होता है । शेष प्रकृतियोंका असयतसम्यग्दृष्टियोंमें  
दो गतियोंसे संयुक्त बन्ध होता है । उपरिम गुणस्थानोंमें देवगतिसंयुक्त बन्ध होता है ।  
देवगतिद्विक और वैकियिकद्विकके तिर्यंच व मनुष्य असयतसम्यग्दृष्टि देव न्यतासयत  
स्वामी हैं । तीर्थंकरप्रकृतिके तीन गतियोंके असयतसम्यग्दृष्टि स्वामी हैं, क्योंकि, तिर्यंगतिमें  
उल्लेख बन्धका अभाव है । उपरिम गुणस्थानवर्ती मनुष्य ही स्वामी हैं, क्योंकि, उनका  
अन्य गतियोंमें अभाव है । शेष प्रकृतियोंके चारों गतियोंके असयतसम्यग्दृष्टि, दो गतियोंके  
सयतासयत और मनुष्यगतिके सयत स्वामी हैं । बन्धाज्ञान सुगम है । बन्धव्युच्छेद  
नहीं है, क्योंकि, 'अबन्धक नहीं है' ऐसा सूत्रमें निर्दिष्ट है । ध्रुवबन्धी प्रकृतियोंका तीन  
प्रकारका बन्ध होता है, क्योंकि, ध्रुव बन्धका अभाव है । शेष प्रकृतियोंका सादि घ अधुव  
बन्ध होता है, क्योंकि, वे अधुवरन्धी हैं ।

असादावेदनीय, अरति, शोक, अस्थिर, अशुभ और अयशकिर्ति नामकर्मका कौन  
बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ २८३ ॥

वहा प्रश्नभर्गोंको जानकर कहना चाहिये ।

दयत्तादौ । णिहा पयला सादोपेदणीय-चउसजलण पुरिसवेद-हस्म-रदि-भय दुगुछ-समचउरस-  
मठाण पम-थनिहायगइ मुम्मराण सोदय-परोदओ वधो, दोहि नि पभोरिहि वधुवलमादो ।  
देवगइ-चेउच्चियदुग तित्थयराण परोदओ वधो, सोदएण वधपिरोहादो । उवघाद-परघाद-  
उस्साम पत्तेयसरीराण अमजदमम्मादिट्ठिहि वधो सोदय परोदओ । उवरि सोदओ चेव, तत्थ  
अपज्जत्तद्धाए अभावादो । णवरि पमत्तसजदमिं परघादुस्सासाण सोदय परोदओ । सुभगादेज-  
जसक्किणीणममजदमम्मादिट्ठिहि वधो सोदय परोदओ । उवरि सोदओ चेव, पडिवक्खुदया-  
भावादो । उच्चगोदस्स असजदसम्मादिट्ठिसु सजदासजजेसु वधो सोदय-परोदओ । उवरि  
सोदओ चेव, पडिवक्खुदयामावादो ।

पचणाणारणीय छन्दसणारणीय चदुसजलण पुरिसवेद-भय-दुगुछ-देवगइ-पविदिय-  
जादि-वउच्चिय तेजा कम्मइयसरीर समचउरससठाण-वेउच्चियसरीरअगोरग-वण्ण-गध-रस-  
फास-देवगइयाओग्गाणुपुत्ती अगुरुवल्लुअ-उपघाद-परघाद-उस्सास-पसन्थविहायगइ तस वादर-  
पज्जत्त-पत्तेयसरीर-सुभग सुस्वर-आदेज्ज णिमिण-तित्थयरुवागोद पचतराहयाण वधो णिरतरो,

अन्तरायका स्वोदय बन्ध होता है, क्योंकि, यहा ये भ्रुचोदयी हैं । निद्रा, प्रचला,  
सातावेदनीय, चार सज्जन, पुरण्येद, हाम्य, रति, भय, जुगुप्सा, समचतुरस्रसस्थान,  
प्रशस्तविहायोगति और सुस्वरका स्वोदय परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, दोनों भी  
प्रकारोंसे उनका व य पाया जाता है । देवगतिद्विक, त्रिक्रियिकद्विक और तीर्थकरका परोदय  
बन्ध होता है, क्योंकि, स्वोदयसे इनके बन्धका विरोध है । उपघात, परघात, उच्छ्वास और  
प्रत्येकशरीरका अमयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें स्वोदय परोदय बन्ध होता है । ऊपर  
स्वोदय ही बन्ध होता है, क्योंकि, यहा अपयाप्तकालका अभाव है । विशेषता इतनी है  
कि प्रमत्तसयत गुणस्थानमें परघात और उच्छ्वासका स्वोदय परोदय बन्ध होता है ।  
सुभग, आदेय और यशकैर्तिका अमयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें स्वोदय परोदय बन्ध  
होता है । ऊपर स्वोदय ही बन्ध होता है, क्योंकि, यहा प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धका  
अभाव है । उच्चगोत्रका अमयतसम्यग्दृष्टि और सयतासयताओंमें स्वोदय परोदय बन्ध  
होता है । ऊपर स्वोदय ही बन्ध होता है, क्योंकि, यहाँ प्रतिपक्ष प्रकृतिके उदयका  
अभाव है ।

पाच क्षानावरणीय, छह दर्शनावरणीय, चार सज्जन, पुरण्येद, भय, जुगुप्सा,  
देवगति, पवेदिय जाति, वैक्रियिक, तैजस व कर्मण शरीर, समचतुरस्रसस्थान, वैक्रियिक  
शरीरामोषाण, वण, गन्ध, रस, स्पर्श, देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, अगुरुवल्लु, उपघात,  
उच्छ्वास, प्रशस्तविहायोगति, अस, वादर, पयाप्त, प्रत्येकशरीर, सुभग, सुस्वर,  
निर्माण, तीर्थकर, उच्चगोत्र और पांच अन्तरायका निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि,

एगसमरण वंधुवरमांभावादे । सादावेदणीय हस्त रदि-धिर-सुम-जसकितीण असंजदसम्मादिडि-  
पहुडि जाव पमत्तसजदे ति वधो सांतरो । उवरि गिरतरो, पडिक्खपयडिक्खामावादे ।

पच्चया सुगमा, ओघपच्चण्हिनेा निसैसामावादे । देवगइ-वेउच्चियदुगाण देवगइ-  
सजुत्ते । सेसाण पयडीण असजदसम्मादिडीसु वधो दुगइसजुत्ते । उवरिमेसु देवगइसजुत्ते ।  
देवगइ-वेउच्चियदुगाण तिरिक्ख मणुसअसजदसम्मादिडि-सजदासजदा सामी । तित्थयरस्त  
तिगइअमजदसम्मादिडिणो सामी, तिरिक्खगईए अमावादे । उवरिमा मणुसा चैव,  
तेसिमणत्थाभावादे । सेसाण पयडीण चउगइअसजदसम्मादिडिणो दुगइसजदासजदा मणुसगइ-  
सजदा च सामी । वधवोच्छेदो णत्थि, 'अधघा णत्थि' ति वयणादे ।  
धुववणीण तिविहो वधो, धुयामावादे । सेसाण सादि-अहुवो, अहुवनधिचादे ।

असादावेदणीय-अरदि-सोग-अथिर-असुह-जसकित्तिणामाणं  
को वंधो को अवंधो ? ॥ २८३ ॥

एत्थ पण्णमगा जाणिय वत्तन्वा ।

एक समयसे इनके बन्धविधामका अभाव है । सादावेदनीय, हास्य, रति, स्थिर, शुभ  
और यशकीर्तिका असंयतसम्यग्दृष्टिसे लेकर प्रमत्तसयत तक सान्तर बन्ध होता है ।  
ऊपर निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, वहा प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धका अभाव है ।

प्रत्यय सुगम है, क्योंकि, ओघप्रत्ययोंसे कोई विशेषता नहीं है । देवगतिद्विक और  
धैक्रियिकद्विकका देवगतिसंयुक्त बन्ध होता है । शेष प्रकृतियोंका असंयतसम्यग्दृष्टियोंमें  
दो गतियोंसे संयुक्त बन्ध होता है । उपरिम गुणस्थानोंमें देवगतिसंयुक्त बन्ध होता है ।  
देवगतिद्विक और धैक्रियिकद्विकके तिर्येच व मनुष्य असंयतसम्यग्दृष्टि एव सयनासयत  
सामी हैं । तीर्थेकर प्रकृतिके तीन गतियोंके असंयतसम्यग्दृष्टि स्वामी ह, क्योंकि, तिर्येगातिमें  
उसके बन्धका अभाव है । उपरिम गुणस्थानवर्ती मनुष्य ही स्वामी हैं, क्योंकि, उनका  
बन्ध गतियोंमें अभाव है । शेष प्रकृतियोंके चारों गतियोंके असंयतसम्यग्दृष्टि, दो गतियोंके  
सपतासपत और मनुष्यगतिके सयत स्वामी हैं । बन्धोघान सुगम है । बन्धयुच्छेद  
नहीं है, क्योंकि, 'अबन्धक नहीं है' ऐसा सूत्रमें निर्दिष्ट है । धुववणी प्रकृतियोंका तीन  
प्रकारका बन्ध होता है, क्योंकि, धुव बन्धका अभाव है । शेष प्रकृतियोंका सादि व अधुव  
बन्ध होता है, क्योंकि, वे अधुववन्धी हैं ।

असादावेदनीय, अरति, शोक, अस्थिर, अशुभ और अयशकीर्ति नामकर्मका कौन  
बन्धक और कौन अध्वक है ? ॥ २८३ ॥

यहा प्रश्नमार्गको जानकर कहना चाहिये ।



आहारसरीर-आहारसरीरंगोवंगणामाणं को वंधो को अवंधो ?  
॥ २९१ ॥

सुगम ।

अप्पमत्तसजदा वंधा । एदे वंधा, अवसेसा अवंधा ॥ २९२ ॥

एदस्स अत्थो सुगमो ।

उवसमसम्मादिट्ठीसु पचणाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-जस-

कित्ति उच्चागोद पंचंतराइयाणं को वंधो को अवधो ? ॥ २९३ ॥

सुगम ।

असंजदसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव सुहुमसांपराइयउवसमा वंधा ।

सुहुमसांपराइयउवसमद्वाए चरिमसमय गतूण वंधो वोच्छिज्जदि ।

एदे वधा, अवसेसा अवधा ॥ २९४ ॥

पचणाणावरणीय चउदसणावरणीय नसकित्ति उच्चागोद पचनराइयाण वधवोच्छेदो

आहारसरीर और आहारसरीरगोपाग नामकमौला कौन बन्धक और कौन  
अबन्धक है ? ॥ २९१ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

अप्रमत्तमयत बन्धक हैं । ये बन्धक हैं, शेष अबन्धक हैं ॥ २९२ ॥

इस सूत्रका अर्थ सुगम है ।

उपशमसम्यग्दष्टि जीनेमें पाच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, यशकीर्ति, ऊच-  
गोत्र और पाच अन्तरायका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ २९३ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

असयतमभ्यग्दष्टिमें लेकर सूक्ष्मसांप्रगयिक उपशमक तक बन्धक हैं । सूक्ष्मसांपरा-  
यिकउपशमककारके अन्तिम समयको जाकर बन्ध व्युच्छिन्न होता है । ये बन्धक हैं, शेष,  
अबन्धक हैं ॥ २९४ ॥

पाच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, यशकीर्ति, उच्चगोत्र और

चेव । उदयबोच्छेदो णत्थि, खीणकसायाडिसु वि एदासिं पयडीण उदयदसणादो । तेण उदय-  
बोच्छेदादो बधवोच्छेदो पुव्व पच्छा वा होदि ति विचरो णत्थि, सतासताण सीणियास-  
विरोहादो । पचणाणावरणीय-चउदसणावरणीय पचतराइयाण सोदओ बधो । जसकितीए  
असजदसम्माडिड्डीसु सोदय परोदओ । उवरि सोदओ चेव, पडिवक्खुदयाभावादो । उच्चा-  
गोदस्स असजदसम्मादिड्ढि-मजदासज्जेसु सोदय-परोदओ । उवरि सोदओ चेव, पडिवक्खु-  
दयाभावादो । पचणाणावरणीय-चउदसणावरणीय उच्चागोद-पचतराइयाण बधो णिरतरो, धुन-  
वधित्तादो । जसकितीए असजदसम्माडिड्ढिप्पहुडि जाव पमत्तसजदो ति बधो सातरो । उवरि  
णिरतरो, पडिवक्खुपयडिबधाम्भावादो । पच्चया सुगमा । णवरि असजदसम्मादिड्ढीसु ओरा-  
लियमिस्सपच्चओ, पमत्तसजदेसु आहारदुगपच्चओ णत्थि । असजदसम्मादिड्ढीसु पदासिं  
पयडीण बधो देव-मणुसगइमजुत्तो । उवरिमेसु गुणङ्गोणुसु देवगइसजुत्तो अगइसजुत्तो वा ।  
चउगइअसजदसम्मादिड्ढी दुगइसजदासजदा मणुसगइसजदा सामीओ । बधद्वाण बधवोच्छिण्ण-  
द्वाण च सुगम । धुवबधीण तिनिहो बधो, धुनाभावादो । अवसेसाण सादि-अद्दुवो, अद्दुव-  
वधित्तादो ।

रायका बन्धव्युच्छेद ही है । उदय-युच्छेद नहीं है, क्योंकि, क्षीणकसायादिक गुणस्थानोंमें  
भी इन प्रकृतियोंका उदय देखा जाता है । इसी कारण उदय-युच्छेदसे बन्धव्युच्छेद पूर्वमें  
या पश्चात् होता है, यह विचार नहीं है, क्योंकि, सत् और असत्की तुलनाका विरोध है ।

पाच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय और पाच अन्तरायका स्वोदय बन्ध  
होता है । यशकीर्तिका असयतसम्यग्दृष्टियोंमें स्वोदय परोदय बन्ध होता है । ऊपर स्वोदय  
ही बन्ध होता है, क्योंकि, वहा प्रतिपक्ष प्रकृतिके उदयका अभाव है । उच्चगोत्रका  
असयतसम्यग्दृष्टि और सयतासयत गुणस्थानोंमें स्वोदय परोदय बन्ध होता है । ऊपर  
स्वोदय ही बन्ध होता है, क्योंकि, वहा प्रतिपक्ष प्रकृतिका उदयाभाव है ।

पाच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, उच्चगोत्र और पाच अन्तरायका बन्ध  
निरन्तर होता है, क्योंकि, वे ध्रुवबन्धी हैं । यशकीर्तिका असयतसम्यग्दृष्टिसे लेकर  
प्रमत्तसमत् तक सान्तर बन्ध होता है । ऊपर निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, ऊपर  
प्रतिपक्ष प्रकृतिके बन्धका अभाव है ।

प्रत्यय सुगम है । विशेष इतना है कि असयतसम्यग्दृष्टियोंमें औदारिकमिथि प्रत्यय  
और प्रमत्तसयतोंमें आहारकट्टिक प्रत्यय नहीं है । असयतसम्यग्दृष्टियोंमें इन प्रकृतियोंका  
बन्ध देव व मनुष्य गतिसंयुक्त होता है । उपरिम गुणस्थानोंमें देवगतिसंयुक्त या अगति  
संयुक्त बन्ध होता है । चारों गतियोंके असयतसम्यग्दृष्टि, दो गतियोंके सयतासयत, और  
मनुष्यगतिके सयत स्वामी हैं । बन्धाध्वान और बन्धव्युच्छिन्नस्थान सुगम हैं । ध्रुवबन्धी  
प्रकृतियोंका तीन प्रकारका बन्ध होता है, क्योंकि, उनके ध्रुव बन्धका अभाव है । शेष  
प्रकृतियोंका भादि व अधुव बन्ध होता है, क्योंकि, वे अधुवबन्धी हैं ।

असंजदसम्मादिद्विष्णुहृडि जाव पमत्तसंजदा बंधा । एदे बंधा,  
अवसेसा अवंधा ॥ २८४ ॥

एदस्सन्थो बुधदे— अरदि सोग-असादावेदणीय अथिर असुमाण बधवोच्छेदो चव ।  
उदयवोच्छेदो गन्धि, उवरिग्दि उदयस्सुवलमादो । अजसकितीप पुव्वमुदयस्स पच्छा बधस्स  
वोच्छेदो, पमत्तासजदसम्मादिद्वीसु बधोदयवोच्छेदुवलमादो । असादावेदणीय-अरदि-सोगाण  
बधो मोदय-परोदओ, दोहि वि पयोरोहि बधुवलमादो । अथिर-असुहाण मोदओ चव,  
धुवोदयत्तादो । अजमकितीप अमजदसम्मादिद्विग्दि सोदय-परोदओ । उवरि परोदओ चव,  
पडिबक्खुदयामावादो । एदारिं छण्ह पयडीण बंधो सातरो, एगममएण वि बधुवरमदसणादो ।

पन्चया सुगमा, बहूसो उत्तत्तादो । देव-मणुमगइसजुत्तो चव, अण्णगइबधामात्तादो ।  
चउमइअसजदसम्मादिद्विणो दुगइसजदासजदा मणुसगइसजदा च सामी । बधद्धान बध-  
वोच्छिष्णद्धान च सुगम । सन्वासिं बधो सादि अद्दुवो, अद्दुवबधित्तादो ।

असंजदसम्भ्यग्दष्टिसे लेकर प्रमत्तसयत तक बन्धक हैं । ये बन्धक हैं, शेष अपन्धक  
हैं ॥ २८४ ॥

इस सूत्रका अर्थ कहते हैं—अरति, शोक, असातावेदनीय, अस्थिर और अशुभका  
बन्धव्युच्छेद ही है । उदयव्युच्छेद नहीं है, क्योंकि, ऊपर उनका उदय पाया जाता है ।  
अयशकीर्तिके पूर्वमें उदयका और पश्चात् बन्धका व्युच्छेद होता है, क्योंकि, प्रमत्तसयत  
और असंजदसम्भ्यग्दष्टि गुणस्थानोंमें क्रमसे उसके बन्ध और उदयका व्युच्छेद पाया जाता  
है । असातावेदनीय, अरति और शोकका स्वोदय परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, दोनों  
ही प्रकारोंसे बध पाया जाता है । अस्थिर और अशुभका स्वोदय ही बन्ध होता है,  
क्योंकि, ये धुयोदयी हैं । अयशकीर्तिका असयनसम्भ्यग्दष्टि गुणस्थानमें स्वोदय परोदय  
बन्ध होता है । ऊपर परोदय ही बन्ध होता है, क्योंकि, यहा प्रतिपक्ष प्रकृतिके उदयका  
अभाव है । इन छह प्रकृतियोंका बन्ध सात्तर होता है, क्योंकि, एक समयसे भी  
उनका बधविधाम देखा जाता है ।

प्रत्यय सुगम हैं, क्योंकि, बहुत धार कहे जा चुके हैं । देव और मनुष्य गतिसे  
सयुक्त ही बध होता है, क्योंकि, यहा अन्य गतियोंके बन्धका अभाव है । आरों गतियोंके  
असंजदसम्भ्यग्दष्टि, दो गतियोंके सयतासयत, और मनुष्यगतिके सयत स्वामी हैं ।  
बधापान और बधव्युच्छिष्णस्थान सुगम हैं । सब प्रकृतियोंका बन्ध सादि व अधुब  
होता है, क्योंकि, ये अधुबबधी हैं ।

अपञ्चक्खाणावरणीयकोह-माण-माया-लोह-मणुस्ताउ-मणुसगइ-  
ओरालियसरीर-ओरालियसरीरअंगोवंग-वज्जरिसहसंधडण-मणुसाणु-  
पुव्वीणामाणं को वंधो को अवंधो ? ॥ २८५ ॥

सुगम ।

असंजदसम्मादिट्ठी वंधा । एदे वंधा, अवसेसा अवंधा  
॥ २८६ ॥

अपञ्चक्खाणावरणचउत्तक मणुसगइपाओग्गाणुपुव्वीण चउदया सम वोच्छिण्णा,  
असंजदसम्मादिट्ठिमिह तदुहयवोच्छेदुवलभादो । मणुसगइ-मणुसाउ-ओरालियसरीरअगोवग-  
वज्जरिसहसंधडणाण बधउच्छेदो चेव, उव्वरिं पिं उदयदसणादो । अपञ्चक्खाणचउत्तकस्से  
बधो सोदय-परोदओ । सेसाण परोदओ चेव, सोदरण उव्विरोहादो । दमण्ण पयडीण बधो  
णिरतरो, एगसमएण बधुवरमाभावादो । अपञ्चक्खाणचउत्तकस्स चालीम पचया । मणुसाउअस्स  
चादालीस, ओरालियदुग-वेउव्वियमिस्स-कम्मइयपञ्चयाणमभावादो । सेसाण चोदालीस,

अप्रत्याख्यानारणीय मोध, मान, माया, लोम, मनुष्यायु, मनुष्यगति, औदारिक-  
शरीर, औदारिकशरीरागोपाग, उज्जर्षमसहनन और मनुष्यानुपूर्वी नामकर्मका कौन बन्धक  
और कौन अनन्धक है ? ॥ २८५ ॥

यह सब सुगम है ।

अमयतमम्यग्दष्टि बन्धक हैं । ये बन्धक हैं, शेष अनन्धक हैं ॥ २८६ ॥

अप्रत्याख्यानारणचतुष्क और मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वीका बन्धक च उदय दोनों  
साथमें व्युच्छिन्न होते हैं क्योंकि, असयतसम्यग्दष्टि गुणस्थानमें उन दोनोंका व्युच्छेद  
पाया जाता है । मनुष्यगति, मनुष्यायु, औदारिकशरीरागोपाग और उज्जर्षमसहननका  
केवल बन्धक व्युच्छेद ही है, क्योंकि, ऊपर भी उनका उदय देखा जाता है । अप्रत्याख्यान  
वरणचतुष्कका उज्जर्षमसहनन परोदय होता है । शेष प्रकृतियोंका परोदय ही बन्धक होता है,  
क्योंकि, उज्जर्षमसे उनके बन्धका निरोध है । दशों प्रकृतियोंका बन्धक निरन्तर होता है,  
क्योंकि, एक समयसे उनके बन्धविश्रामका अभाव है । अप्रत्याख्यानारणचतुष्कके चालीस  
प्रत्यय हैं । मनुष्यायुके चालीस प्रत्यय हैं, क्योंकि, औदारिककठिक, केतिकियकमिध और  
कर्मण प्रत्ययोंका अभाव है । शेष प्रकृतियोंके चालीस प्रत्यय हैं, क्योंकि, उनके औदा

१ मतिउ ' व ' इति पाठ ।

आहारसरीर-आहारसरीरंगोवंगणामाणं को वंधो को 'अबंधो' ?

॥ २९१ ॥

सुगम ।

अप्पमत्तसजदा वधा । एदे वंधा, अवसेसा अवधा ॥ २९२ ॥

णदस्स अत्थो सुगमो ।

उवसमसम्मादिट्ठीसु पचनाणावरणीय-चउदंसणावरणीय-जस-

कित्ति उच्चागोद पचतराइयाणं को वंधो को अबंधो ? ॥ २९३ ॥

सुगम ।

असजदसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव सुहुमसांपराइयउवसमा वंधा ।

सुहुमसांपराइयउवसमद्वाए चरिमसमय गतूण वधो वोच्छिज्जदि ।

एदे वधा, अवसेसा अवधा ॥ २९४ ॥

पचनाणारणीय चउदसणावरणीय नमकित्ति उच्चागोद पचतराइयाण वधवोच्छेदो

आहारसरीर और आहारसरीरागोपाण नामकमोंका कौन बन्धक और कौन अबंधक है ? ॥ २९१ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

अप्रमत्तमयत बन्धक हैं । ये बन्धक हैं, शेष अबंधक हैं ॥ २९२ ॥

इस सूत्रका अर्थ सुगम है ।

उपशममम्यग्दष्टि जीवोंमें पाच ज्ञानारणीय, चार दर्शनावरणीय, यशकीर्ति, ऊंच-  
गोत्र और पाच अन्तरायका कौन बन्धक और कौन अबंधक है ? ॥ २९३ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

अमयतसम्यग्दष्टिमे लेकर सूक्ष्मसाम्परायिक उपशमक तक बन्धक हैं । सूक्ष्मसाम्परा-  
यिकउपशमककालके अन्तिम समयमें जाकर बन्धक व्युच्छिन्न होता है । ये बन्धक हैं, शेष  
अबंधक हैं ॥ २९४ ॥

पाच ज्ञानारणीय, चार दर्शनावरणीय, यशकीर्ति, उच्चगोत्र और पाच अन्त

चेव । उदयवोच्छेदो णत्थि, खीणकसायादिसु वि एदासिं पयडीण उदयदसणादो । तेण उदय-  
वोच्छेदादो बधवोच्छेदो पुव्व पच्छ वा होदि ति विचारो णत्थि, सतासताण सण्णियास-  
विरोहादो । पचणाणावरणीय-चउदसणावरणीय-पचतराइयाण सोदओ बधो । जसकित्तीए  
असजदसम्मादिट्ठीसु सोदय परोदओ । उवरि सोदओ चेव, पडिवन्खुदयाभावादो । उच्चा-  
गोदस्स अमजदसम्मादिट्ठि-मजदासज्जेसु सोदय-परोदओ । उवरि सोदओ चेव, पडिवक्खु-  
दयाभावादो । पचणाणावरणीय-चउदसणावरणीय उच्चागोद-पचतराइयाण बधो णिरतरो, धुव-  
पधित्तादो । जसकित्तीए असजदसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव पमत्तसजदो ति बधो सातरो । उवरि  
णिरतरो, पडिवक्खुपयडिवभाभांजादो । पच्चया सुगमा । णवरि असजदसम्मादिट्ठीसु ओरा-  
लियमिम्मपच्चओ, पमत्तसजदेसु आहारदुगपच्चओ णत्थि । असजदसम्मादिट्ठीसु एदासिं  
पयडीण बधो देव मणुसगइमजुत्तो । उवरिमेसु गुणद्वानेसु देवगइसजुत्तो अगइसजुत्तो वा ।  
चउगइअसजदसम्मादिट्ठी दुगइसजदासजदा मणुसगइसजदा सामीओ । बधद्वान्ण उधवोच्छिण्ण-  
द्वान्ण च सुगम । धुवबन्धीण तिविहो बधो, धुवाभावादो । अवसेसाणं सादि-अहुवो, अहुव-  
पधित्तादो ।

रायका बन्धन्युच्छेद ही है । उदयव्युच्छेद नहीं है, क्योंकि, क्षीणकसायादिक गुणस्थानोंमें  
भी इन प्रकृतियोंका उदय देखा जाता है । इसी कारण उदयव्युच्छेदसे बन्धन्युच्छेद पूर्वमें  
या पश्चात् होता है, यह विचार नहीं है, क्योंकि, सत् और असत्की तुलनाका विरोध है ।

पाच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय और पाच अन्तरायका स्वोदय बन्ध  
होता है । यशकीर्तिका असयतसम्यग्दृष्टियोंमें स्वोदय परोदय बन्ध होता है । ऊपर स्वोदय  
ही बन्ध होता है, क्योंकि, वहा प्रतिपक्ष प्रकृतिके उदयका अभाव है । उच्चगोत्रका  
असयतसम्यग्दृष्टि और सयतासयत गुणस्थानोंमें स्वोदय परोदय बन्ध होता है । ऊपर  
स्वोदय ही बन्ध होता है, क्योंकि, वहा प्रतिपक्ष प्रकृतिका उदयाभाव है ।

पाच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, उच्चगोत्र और पाच अन्तरायका बन्ध  
निरन्तर होता है, क्योंकि, ये धुवबन्धी ह । यशकीर्तिका असयतसम्यग्दृष्टिसे लेकर  
प्रमत्तसयत तक सान्तर बन्ध होता है । ऊपर निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, ऊपर  
प्रतिपक्ष प्रकृतिके बन्धका अभाव है ।

प्रत्यय सुगम है । विशेष इतना है कि असयतसम्यग्दृष्टियोंमें औदारिकमिश्र प्रत्यय  
और प्रमत्तसयतोंमें आहारफट्टिक प्रत्यय नहीं ह । असयतसम्यग्दृष्टियोंमें इन प्रकृतियोंका  
बन्ध देव व मनुष्य गतिसयुक्त होता है । उपरिम गुणस्थानोंमें देवगतिसयुक्त या अगति  
सयुक्त बन्ध होता है । चारों गतियोंके असयतसम्यग्दृष्टि, दो गतियोंके सयतासयत, और  
मनुष्यगतिके सयत स्वामी हैं । बन्धाध्वान और बन्ध युच्छिन्नस्थान सुगम हैं । धुवबन्धी  
प्रकृतियोंका तीन प्रकारका बन्ध होता है, क्योंकि, उनके धुव बन्धका अभाव है । शेष  
प्रकृतियोंका सादि व अधुव बन्ध होता है, अधुवबन्धी हैं ।

णिदा पयलाण को वंधो को अवधो ? ॥ २९५ ॥

सुगम ।

असजदसम्मादिट्टिप्पहुडि जाव अपुव्वकरणउवसमा वंधा ।  
अपुव्वकरणउवसमद्वाए सखेज्जदिम भागं गंतूण वंधो वोच्छिज्जदि ।  
एदे वधा, अवसेसा अवधा ॥ २९६ ॥

एदासिं वधो पुंर वोच्छिज्जदि । उदयवोच्छेदो णत्थि, स्त्रीणकमाण्णु सि उदय-  
दसणादो । सोदय परोदधो वंधो, अनुवोदयत्तादो । गिरत्तो, धुववधित्तादो । असजदसम्मा-  
दिट्टीसु पचेतालीस पच्चया, ओरानियमिस्मपच्चयाभावादो । पमतमनदग्धि बावीस<sup>१</sup> पच्चया,  
आहारदुगाभावादो । सेमगुणद्वाणेसु ओषपच्चओ, तिसमाभावादो । असजदसम्मादिट्टिद्धि  
देव मगुसगइसजुतो, ठवारिमेसु देवगइमजुतो, चउगइअसजइसम्मादिट्टि-दुगइसजदासजद-

निद्रा और प्रचयाका कौन बन्धक और कौन अवधक है ? २९५ ॥

यह सुगम सुगम है ।

असयतसम्यग्दृष्टिमे लेपर अपूर्वकरण उपशमक तक बन्धक हैं । अपूर्वकरण उपशम  
कालका मर्यातरा भाग नाकर चन्द्र व्युत्थित्तन होता है । ये बन्धक हैं, शेष अबन्धक  
हैं ॥ २९६ ॥

इसका वचन पूर्वमें युक्तिव्रत होता है । उदय-व्युच्छेद नहीं है, क्योंकि, क्षीणरूपाय  
जीवोंमें भी उनका उदय देखा जाता है । सोदय परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, वे  
अधुवोदयो हैं । गिरत्तर बन्ध होता है, क्योंकि, धुववन्धी है । असयतसम्यग्दृष्टियोंमें  
पचेतालीस प्रत्यय हैं, क्योंकि, ओदारिणमिथ्र प्रत्ययका यहा अभाव है । प्रमत्तसयत गुण  
स्वानमें गहम प्रत्यय है, क्योंकि, यहा आहारकट्टिकका अभाव है । शेष गुणस्थानोंमें ओष  
प्रत्ययोंमें सयुक्त वचन होता है, क्योंकि ओषसे यहा कोई विशेषता नहीं है । असयत  
सम्यग्दृष्टि गुणस्वानमें द्वय व मनुष्य गतिसे सयुक्त तथा उपरिम गुणस्थानोंमें देवगति  
सयुक्त होता है । चारों गतियोंके असयतसम्यग्दृष्टि, देव गतियोंके सयतासयत, और मनुष्य

<sup>१</sup> अथवा 'पमतमज्जदा दि बावीस', अथवा 'पमतमज्जदा बावीस', कायतो पमतमज्जदा बावीस'  
पाठ ।

मणुसगइसजदमामीओ, अत्रगयनधद्धानो, अपुव्वकरणद्धाने संखेज्जदिमे भागे गयनिणासो,  
धुवधधित्तादो तिविहाणो णिहा पयलाण वधो ।

सादावेदणीयस्म को वंधो को अवंधो ॥ २९७ ॥

सुगम ।

असंजदसम्मादिट्टिप्पहुडि जाव उवसंतकसायवीयरगछ्दुमत्था  
वंधा । एदे वंधा, अवंधा णत्थि ॥ २९८ ॥

न'योच्छेद मोत्तूण उदयवोच्छेदाभासादो, सोदय-परोदयनवादो, असजदप्पहुडि जाव  
पमतसजदो ति सातर धधिट्ठणुवीरे णितरनवितादो, ओपचचर्णहिंते) असजदसम्मादिट्टि-  
पमतसजदे मोत्तूण अणत्थ समाणपचयत्तादो, असजदसम्मादिट्टि-पमतसंजदेसु ओरालिय-  
मिस्साहारदुगामासादो, असंजदसम्मादिट्टीसु दुगइमज्जुत्तादो उरि देवगदसजुत्तवधादो,  
चउगइअसजदसम्मादिट्टि दुगइसजदासजद-मणुमगइसजदसामिनधादो, नधेण सादि-अद्दुन-  
त्तादो सुगममेदं ।

गतिके सयत स्वामी ह । वन्धान्नान प्रात ही ह । अपूर्णकरणकालका सख्यातना भाग  
धीतनेपर वन्ध व्युच्छिन्न होता है । धुनग्रन्धी होनेसे निम्न न प्रचलाका तीन प्रकार वन्ध  
होता है ।

सातावेदनीयका कौन वन्धक और कौन अवन्धक है ? ॥ २९७ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

असयतसम्यग्दष्टिसे लेकर उपशान्तकपाय वीतराग छद्मस्थ तरु वन्धक हैं । ये  
वन्धक हैं, अवन्धक नहीं है ॥ २९८ ॥

सातावेदनीयके वन्ध युच्छेदको छोडकर उदय-युच्छेदका अभाव होनेसे, स्वोदय  
परोदय वन्ध होनेसे, असयतसम्यग्दष्टिसे लेकर प्रमत्तमयत तक सान्तर धधकर ऊपर  
निरतरवन्धी होनेसे, असयतसम्यग्दष्टि और प्रमत्तसयतोंको छोडकर अन्यत्र ओषके समान  
प्रत्यय युक्त होनेसे, असयतसम्यग्दष्टियोंमें औदारिकमिध और प्रमत्तसयतोंमें आहारडिक्का  
अभाव होनेसे, असयतसम्यग्दष्टियोंमें दो गतियोंसे सयुक्त तथा ऊपर देवगतिसयुक्त वन्ध  
होनेसे; चारों गतियोंके असयतसम्यग्दष्टि, दो गतियोंके नयतासयत, और मनुष्यगतिके  
सयत स्वामी होनेसे, तथा वन्धसे सादि व अधुन होनेसे यह सूत्र सुगम है ।



असादावेदणीय-अरदि-सोग अधिर-असुह-अजसकित्तिणामाणं  
को वधो को अवंधो ? ॥ २९९ ॥

सुगम ।

असंजदसम्मादिट्टिप्पहुडि जाव पमत्तसंजदा वधा । एदे वंधा,  
अवसेसा अवंधा ॥ ३०० ॥

सुगममेद, मदिणाणमग्गणाए परूविदत्तत्तादो ।

अपच्चक्खाणावरणीयमोहिणाणिभगो ॥ ३०१ ॥

अपच्चक्खाणचउक्क-मणुसाइ-ओरालियसरीर-ओगालियमरीरअगोण-वज्जरिसिह-  
सघडण मणुसगइपाओग्गणुपुच्चीण एत्थ गहण कायव्व, देसामासियत्तादो । सेस सुगम ।  
णवरि ओरालियमिस्तपच्चओ अक्केयव्वो । कए वेउविज्जयमिम्म कम्मइयाणमुवलमो ? उव-  
सममम्मेतेण उवमममेडि चडिय काल काऊग देवेसुप्पण्णाण तदुवलभादो ।

अमातापेइनीय, अरति, शोक, अस्थिर, अशुभ ओर अयशकीर्ति नामकर्मोंका कौन  
बन्धक और कौन अबन्धक है ? ॥ २९९ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

असयतसम्यग्दृष्टिसे लेकर प्रमत्तसयत तक बन्धक है । ये बन्धक हैं, शेष अबन्धक  
हैं ॥ ३०० ॥

यह सूत्र सुगम है, क्योंकि, मतिज्ञान मार्गणमें इसके धर्मकी प्ररूपणा की  
जाचुकी है ।

अप्रत्यारयाणारणीयकी प्ररूपणा अविज्जानियोंके ममान है ॥ ३०१ ॥

अप्रत्यारयानाररणचतुष्क, मनुष्यगति, औदारिकशरीर, औदारिकशरीरानोपाय,  
यज्ञकर्मसहनन और मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वीका यहा ग्रहण करना चाहिये, क्योंकि, यह  
सूत्र देशामर्शक है । शेष प्ररूपणा सुगम है । विशेष इतना है कि औदारिकमिथ प्रत्ययको  
कम करना चाहिये ।

शका—चैत्रियकर्मिण ओर कामण काययोग यहा कैसे पाये जाते हैं ?

समाधान—उपशमसम्यक्त्वके साथ उमशमभ्रेणि चढकर और मरकर देवोंमें  
उत्पन्न हुए जीवोंके धे दोनों प्रत्यय पाये जाते हैं ।

णवरि आउवं णत्थि ॥ ३०२ ॥

कुदो ? सम्मामिच्छाद्दृष्टिसेव, मच्चुवसमसम्माद्दृष्टीणमाउव्वस्स वधाभावादो ।

पच्चक्खाणावरणचउक्कस्स को वंधो को अवंधो ? ॥ ३०३ ॥

सुगम ।

असंजदसम्मादिट्ठी संजदासंजदा [बंधा] । एदे वंधा, अवसेसा  
अबंधा ॥ ३०४ ॥

एद पि सुगम, सुदणाणपरूवणापरूविदत्थत्ताये ।

पुरिसवेद-कोधसंजलणाणं को वंधो को अवंधो ? ॥ ३०५ ॥

सुगम ।

असंजदसम्मादिट्ठिप्पहुट्ठि जाव अणियट्ठी उवसमा वंधा । अणि-  
यट्ठिउवसमाद्वाए सेसे संखेज्जे भागे गंतूण वंधो वोळ्ळिज्जदि । एदे  
बंधा, अवसेसा अबंधा ॥ ३०६ ॥

विशेष इतना है कि उनके आयु कर्मका बन्ध नहीं है ॥ ३०२ ॥

क्योंकि, सम्यग्मिथ्यादृष्टिके समान ही सर्व उपशमसम्यग्दृष्टियोंके आयुके बन्धका  
अभाव है ।

प्रत्याख्यानावरणचतुष्करा कौन बन्धक और कौन अनन्धक है ? ॥ ३०३ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

असयतसम्यग्दृष्टि और सयतासयत [ बन्धक ] हैं । ये बन्धक हैं, शेष अनन्धक  
हैं ॥ ३०४ ॥

यह भी सूत्र सुगम है, क्योंकि, इसके अर्थकी प्ररूपेणा श्रुतज्ञानप्ररूपणामे की  
जा चुकी है ।

पुस्पेद और सज्जलन मोघका कौन बन्धक और कौन अनन्धक है ? ॥ ३०५ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

अमयतसम्यग्दृष्टिमे लेकर अनिवृत्तिकरण उपशमक तक बन्धक हैं । अनिवृत्तिकरण-  
उपशमककालके शेषमें संख्यात बहुभाग जाकर बन्ध व्युच्छिन्न होता है । ये बन्धक हैं, शेष  
अबन्धक हैं ॥ ३०६ ॥

सुगममेद ।

माण मायसंजलणाणं को वंधो को अवंधो ? ॥ ३०७ ॥

सुगम ।

असंजदसम्मादिट्टिप्पहुडि जाव अणियट्ठी उवसमा वंधा । अणि यट्ठीउवसमद्दाए सेसे सेसे सखेच्जे भागे गतूण वंधो वोच्छिज्जदि । एदे वधा, अवसेसा अवंधा ॥ ३०८ ॥

एद पि सुगम, बहुसो परुदितादो ।

लोभसंजलणस्स को वंधो को अवंधो ? ॥ ३०९ ॥

सुगम ।

असंजदसम्मादिट्टिप्पहुडि जाव अणियट्ठी उवसमा वंधा । अणियट्ठीउवसमद्दाए चरिमसमय गंतूण वधो वोच्छिज्जदि । एदे वधा, अवसेसा अवंधा ॥ ३१० ॥

यह सूत्र सुगम है ।

सज्वलन मान और मायाका कौन बन्धक और कौन अनन्धक है ? ॥ ३०७ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

असयतसम्यग्दृष्टिसे लेकर अनिवृत्तिरूप उपशमक तरु बन्धक हैं । अनिवृत्तिकरण उपशमकालके शेष शेषमे सरपात बहुभाग जाकर बन्ध व्युच्छिन्न होता है । ये बन्धक हैं, शेष अनन्धक हैं ॥ ३०८ ॥

यह सूत्र भी सुगम है, क्योंकि, बहुत बार इसकी प्ररूपणा की जा चुकी है ।

सज्वलन लोभका कौन बन्धक और कौन अनन्धक है ? ॥ ३०९ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

असयतसम्यग्दृष्टिसे लेकर अनिवृत्तिरूप उपशमक तरु बन्धक हैं । अनिवृत्तिकरण उपशमकालके अन्तिम समयको जाकर बंध व्युच्छिन्न होता है । ये बन्धक हैं, शेष अनन्धक हैं ॥ ३१० ॥

एदं पि सुगम ।

हस्र रदि-भय-दुगुंछाणं को वंधो को अवंधो ? ॥ ३११ ॥

सुगम ।

असंजदसम्माइट्टिप्पहुडि जाव अपुव्वकरणउवसमा वंधा ।  
अपुव्वकरणवसमद्धाए चरिमसमयं गतूण वंधो वोच्छिज्जदि । एदे वंधा,  
अवसेसा अवंधा ॥ ३१२ ॥

एद पि सुगम ।

देवगइ-पांचिंदियजादि-वेउव्विय-तेजा-कम्मइयसरीर समचउरस-  
संठाण वेउव्वियअंगोवंग-वण्ण-गंध-रस-फास-देवाणुपुव्वी-अगुरुअलहुअ-  
उवघाद-परघाद उस्सास-पसत्थविहायगदि-तस वादर पज्जत्त पत्तेयसरीर-  
थिर-सुभ-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज णिमिण-तित्थयरणामाणं को वंधो को  
अवंधो ? ॥ ३१३ ॥

सुगम ।

यह सूत्र भी सुगम है ।

हास्य, रति, भय और दुगुप्ताका कौन बन्धक और कौन अवन्धक है? ॥ ३११ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

असंजदसम्पत्तिसे लेकर अपूर्णकरण उपशमक तरु बन्धक हैं । अपूर्णकरण उपशमक  
कालके अन्तिम समयको प्राप्त होकर बन्ध व्युच्छिन्न होता है । ये बन्धक हैं, शेष अवन्धक  
हैं ॥ ३१२ ॥

यह सूत्र भी सुगम है ।

देवगति, पचेन्द्रिय जाति, वैक्रियिक, तैजस व कार्मण शरीर, समचतुरमसस्थान,  
वैक्रियिकशरीरागोपाग, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, देवानुपूर्वी, अगुरुलघु, उपपात, परघात,  
उच्छ्रमस, प्रशस्तविहायोगति, त्रस, वादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, स्थिर, शुभ, सुभग, सुस्वर,  
आदेय, निर्माण और तीर्थकर नामकर्मका कौन बन्धक और कौन अवन्धक है ? ॥ ३१३ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

असंजसम्मादिट्टिप्पहुडि जाव अपुव्वकरणउवसमा बंधा ।  
 अपुव्वकरणुवसमद्दाए संखेज्जे भागे गंतूण वधो वोच्छिज्जदि । एदे  
 वधा, अवसेसा अवधा ॥ ३१४ ॥

एद पि सुगमं, बहुसो कयपरुवणादो ।

आहारसरीर-आहारसरीरअगोवगाणं को वंधो को अवधो ?  
 ॥ ३१५ ॥

सुगम ।

अप्पमत्तापुव्वकरणउवसमा वधा । अपुव्वकरणुवसमद्दाए संखेज्जे  
 भागे गंतूण वधो वोच्छिज्जदि । एदे, वंधा, अवसेसा, अवंधा  
 ॥ ३१६ ॥

एद पि सुगम ।

सासणसम्मादिट्टी मदिणाणिभगो ॥ ३१७ ॥

असयतसम्यग्दष्टिसे लेकर अपूर्वकरण उपशमक तक बन्धक हैं । अपूर्वकरण उपशम-  
 कालके सख्यात बहुभाग जाकर बन्ध व्युच्छिन्न होता है । ये बन्धक हैं, शेष अवधक  
 हैं । ३४ ॥

यह सूत्र भी सुगम है क्योंकि, बहुत बार इसकी प्ररूपणा की जा चुकी है ।

आहारकशरीर और आहारकशरीरागोपागसा कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ?  
 ३१५ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

अप्रमत्त और अपूर्वकरण उपशमक, बन्धक हैं । अपूर्वकरण उपशमकालके, सरयात  
 भाग जाकर बन्ध व्युच्छिन्न होता है । ये बन्धक हैं, शेष अबन्धक हैं ॥ ३१६ ॥

यह सूत्र भी सुगम है ।

सासादनसम्यग्दष्टियोंकी प्ररूपणा मतिज्ञानियोंके समान है ॥ ३१७ ॥

पंचणाणावरणीय-णवदसणावरणीय सादामाद-सोलसकसाय-अद्वणोक्तसाय-तिरिक्ख-  
मणुम-देवाउ तिरिक्ख मणुस-देवगइ पंचिदियजादि-ओरालिय-वेउव्विय-तेजा-कम्मइयसरीर-पच-  
सठाण-ओरालिय वेउव्वियअगोवग-पंचसघडण वण्ण-गघ रस-फास-तिरिक्ख-मणुस-देवगइपाओ-  
गाणुपुन्नी-अगुरुवलहुअ-उवघाद-परघाद-उस्सास-उज्जोव-दोविहाप्रगड-त्तस नादर-पज्जत्त-पत्तेय-  
सरीर धिराधिर-सुहासुह-सुमग-दूमग सुस्सर-दुस्सर-आदेज्ज अणादेज्ज-जमकित्ति-अजसकित्ति-  
णिमिण णीसुच्चाओद-पचतराइयपयडीओ सासणसम्मादिडीहि धज्जमाणियाओ । एदासिमुदयादो  
घघो पुच्च पच्छा [प] वोच्छिण्णो ति विचारो णत्थि, एत्थ एदासिं घघोदयवोच्छेदाभावादो ।

पंचणाणावरणीय-चउदसणावरणीय पंचिदियजादि-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गघ-रस-  
पास अगुरु-उलहुअ-त्तस-नादर-पज्जत्त-धिराधिर-सुहासुह-णिमिण-पचंतराइयाण सोदओ बंधो,  
धुवोदयत्ताओ । देवाउ-देवगइ-वेउव्वियदुगाण परोदओ घघो, सोदएण न प्रविरोहादो । अव-  
सेसाण पयडीण घघो सोदय-परोदओ, उहयहा वि घधुवलमादो ।

पंचणाणावरणीय-णवदसणावरणीय-सोलसकसाय भय-दुगुत्ता-तिरिक्ख-मणुम-देवाउ-  
पंचिदियजादि तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गघ-रस-फास-अगुरुवलहुअ उवघाद परघाद-उस्सास-

पाच ज्ञानावरणीय, नौ दर्शनावरणीय, साता व असाता वेदनीय, सोलह कपाय,  
गाढ नोकपाय, तिर्यगायु, मनुष्यायु, देवाउ, तिर्यग्गति, मनुष्यगति, देवगति, पचेन्द्रिय  
जाति, औदारिक, वैक्रियिक, तैजस व कामेण शरीर, पाच सस्थान, औदारिक व वैक्रियिक  
अगोपाग, पाच सहनन, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी, मनुष्यगति-  
प्रायोग्यानुपूर्वी, देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, अगुरुलघु, उपघात, परघात, उच्छ्वास, उद्योत, दो  
विहायोगतिया, प्रस, वादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुभग,  
दुभग, सुस्सर, दुस्सर, आदेय, अनदेय, यशकीर्ति, जयशकीर्ति, निर्माण, नीच व ऊच गोत्र  
और पाच अन्तराय, ये प्रकृतिया सासादनसम्यग्दृष्टि जीवों द्वारा बध्यमान हैं । इनका बन्ध  
उदयसे पूर्वमें या पश्चात् व्युच्छिन्न होता है, क्योंकि, यह विचार नहीं है, क्योंकि, यहा इनके  
बन्ध और उदयके व्युच्छेदका अभाव है ।

पाच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, पचेन्द्रिय जाति, तैजस व कामेण शरीर,  
वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, प्रस, वादर, पर्याप्त, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ,  
निर्माण और पाच अन्तरायका स्वोदय बन्ध होता है, क्योंकि, ये ध्रुवोदधी हैं । देवायु,  
देवगतिष्ठिक और वैक्रियिकद्विकका परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, स्वोदयसे इनके बन्धका  
चिरोदय है । दोष प्रकृतियोंका बन्ध स्वोदय परोदयसे होता है, क्योंकि, दोनों प्रकारोंसे भी  
उनका बन्ध पाया जाता है ।

पाच ज्ञानावरणीय, नौ दर्शनावरणीय, सोलह कपाय, भय, दुगुप्ता, तिर्यगायु,  
मनुष्यायु, देवायु, पचेन्द्रिय जाति, तैजस व कामेण शरीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरु

असंज्ञसम्मादिद्विष्णुहृदि जाव अपुव्वकरणउवसमा बंधा ।  
अपुव्वकरणुवसमद्वाए संखेज्जे 'भागे' गंतूण बंधो 'वोच्छिज्जदि' । एदे  
बंधा, अवसेसा अवधा ॥ ३१४ ॥

एद पि सुगम, बहुसो कयपरूपादो ।

आहारसरीर-आहारसरीरअगोवंगाणं को बंधो को अवधो ?  
॥ ३१५ ॥

सुगम ।

अप्पमत्तापुव्वकरणउवसमा बंधा । अपुव्वकरणुवसमद्वाए संखेज्जे  
भागे गंतूण बंधो 'वोच्छिज्जदि' । एदे बंधा, अवसेसा अवंधा  
॥ ३१६ ॥

एद पि सुगम ।

सासणसम्मादिद्वी मदिणाणिभगो ॥ ३१७ ॥

असयतसम्यग्दृष्टिसे लेकर अपूर्वकरण उपशमक तक बन्धक हैं । अपूर्वकरण उपशम-  
कालके सरयात बहुभाग जाकर बन्ध व्युच्छिन्न होता है । ये बन्धक हैं, शेष अबन्धक  
हैं ॥ ३१४ ॥

यह सूत्र भी सुगम है, क्योंकि, बहुत चार इसकी प्ररूपणा की जा चुकी है ।

आहारकशरीर और आहारकशरीरागोपागका कौन बन्धक और कौन अबन्धक है ?  
॥ ३१५ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

अप्रमत्त और अपूर्वकरण उपशमक बन्धक हैं । अपूर्वकरण उपशमकालके सरयात  
बहुभाग जाकर बन्ध व्युच्छिन्न होता है । ये बन्धक हैं, शेष अबन्धक हैं ॥ ३१६ ॥

यह सूत्र भी सुगम है ।

सासादनसम्यग्दृष्टियोंकी प्ररूपणा मतिज्ञानियोंके समान है ॥ ३१७ ॥

देवाउ-देवगड-त्रैउत्रियदुगाण वधो देवगइसजुतो । मणुसाउ-मणुसगइदुगाण मणुस-  
गइसजुतो । तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइदुगुज्जोवाण तिरिक्खगइसजुतो । ओरालियसरीर-  
मज्झिमचउमठाण-ओरालियसरीरअगोत्रग पचसबडण अप्पसत्यविहायगइ दुभग-दुस्सर अणादेज-  
णीचागोदाण तिरिक्ख मणुसगइसजुतो वधो । उच्चागोदस्स देव मणुसगइसजुतो वधो,  
तिरिक्खेसुच्चागोदाभावादो । अवसेसाण पयडीण वधो तिगइसजुतो, णिरयगइवधाभावादो ।  
देवाउ-देवगड-त्रैउत्रियदुगाण तिरिक्ख-मणुसा सामी । सेसाण पयडीण वधस्स सामी चउगइ-  
सामणा । वपद्धान वधवोउडेदो च णत्थि । छद्दालीसधुवजयपयडीण तिविहो वधो, धुवा-  
भावादो । अवसेसाण सादि-अट्टो, अट्टववधित्तादो ।

### सम्भामिच्छाइट्टी असंजदभंगो ॥ ३१८ ॥

पचणाणावरणीय-छदसणावरणीय-सादामाद-वारसकसाय पुरिसवेद-हस्स-रदि-अरदि-  
सोग भय-दुगुठा मणुसगद देवगड-पच्चिन्दियजादि-ओरालिय-त्रैउत्रिय-तेजा-कम्मइयसरीर समचउ  
रससठाण-ओरालिय-त्रैउत्रियअगोवग-वज्जरिसहमघडण-वण्ण गध रस फास-मणुसगइ-देवगइ-

देवायु, देवगतिद्विक और वैक्रियिकद्विकका वध देवगति सयुक्त होता है । मनुष्यायु  
और मनुष्यगतिद्विकका वन्ध मनुष्यगति सयुक्त होता है । तिर्यगायु, तिर्यगगतिद्विक और  
उद्योगता वन्ध तिर्यगगति सयुक्त होता है । भौदारिकशरीर मध्यम चार स्थान,  
भौदारिकशरीरामोपाग, पाच सहनन, अप्रशस्तविहायोगति, दुर्भंग दुस्सर, अनादेय और  
नीचगोत्रता तिर्यगगति और मनुष्यगतिसे सयुक्त वन्ध होता है । उच्चगोत्रका देव व  
मनुष्य गतिसे सयुक्त वध होता है, क्योंकि, तिर्यचोम उच्चगोत्रका अभाव है । शेष  
प्रकृतियोंका वन्ध तीन गतियोंसे सयुक्त होता है, क्योंकि, सासादनसम्यग्दृष्टियोंके नरक  
गतिके वन्धका अभाव है ।

देवायु, देवगतिद्विक और वैक्रियिकद्विकके तिर्यच व मनुष्य स्त्रामो ह । शेष प्रकृतियोंके  
वधके सामी चारों गतियोंके सामादनसम्यग्दृष्टि है । वन्धाज्ञान और वन्धयुच्छेद नहीं  
है । छ्यानीस धुचवन्धों प्रकृतियोंका तीन प्रकारका वन्ध होता है, क्योंकि, उनके धुच  
वन्धका अभाव है । शेष प्रकृतियोंका सादि व अधुच वन्ध होता है, क्योंकि, वे अधुच  
वधो हैं ।

सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंकी प्रकृषणा अमयत जीवोंके समान है ॥ ३१८ ॥

पाच ज्ञानावरणीय, छद्द दर्शनावरणीय, साता व अमाता वेदनीय, वारह कषाय,  
पुरावेद, दान्य, रति अरणी, शोक, भय, नुगुप्पा, मनुष्यगति, देवगति, पच्चिन्दिय जाति,  
भौदारिक, वैक्रियिक, तेजस व कामण शरीर, समचतुरस्रसंस्थान, भौदारिक व वैक्रियिक  
अमोपाग, वज्जरिसहनन, वण, गन्ध, रस, स्पर्श, मनुष्यगति व देवगति प्रायोग्यानु-



तस बादर पञ्जत्त पत्तेयमरीर णिमिण-पचतराइयाण णिरतरो वधो, एगसमएण वधुवरमाणु-  
लमादो । सादासाद-इस्स-रदि-अरदि सोगिरिथियद्-मज्झिमच उसठाण-पचमवडण उज्जेव दो-  
विहापगड भिराधिर-सुहासुह दुभग-दुस्सर अणदेज्ज जसकित्ति-अजसकित्तीण सानगे वधो, एग  
समएण वि नुवरमदसणादो । पुरिसवेदस्म वधो सातर-णिरतरो, पम्म सुक्कलेस्सिण्णु  
तिरिस्स मणुस्सेसु णिरतर-धुवलमादो । देवगइ-वेउअियदुग समचउरमसठाण सुभग सुस्सर  
ओदेज्जुच्चागोदाण वधो सातर-णिरतरो, असखेज्जनासाउएसु सुहत्तिलेस्सिसयतिरिक्क मणुस्सेसु  
च णिरतर-धुवलमादो । मणुसगइदुगस्स वधो सातर णिरतरो, आणदादिदेवेषु णिरतर-धुवल-  
लमादो । तिरिस्सवगइदुग-णाचागोदाण वधो सातर णिरतरो, सत्तमपुट्ठीणेरइएसु णिरतर  
वधुवलमादो । ओरालियसरीरदुगस्स वि सातर णिरतरो वधो, देव णेरइएसु णिरतर-वधुवलमादो ।

देवाउ-देवगइ वेउअियदुगाण छादालीस पच्चया, वेउअियदुगोरालियमिस्स कम्म-  
इयाणमभावादो । मणुस निरिक्खाउआण सत्तेनालीस पच्चया, ओरालिय-वेउअियमिस्स कम्म-  
इयपच्चयाणमभावादो । अन्नसेमाण पयडीण पचाम पच्चया, पचमिन्ठत्तपच्चयाणमभावादो ।

लघु, उपघात, परघात, उच्छ्वाम, व्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, निर्माण और पाच  
अंतरायका निरंतर बंध होता है, क्योंकि, एक समयसे इनका बंधविधायक नहीं पाया  
जाता । साता व असाता घेनीय, हाम्य, रति, अरति, शोक, खोपेद, मध्यम चार सस्थान,  
पाच सहनन उयात्त, दो विहायोगिनिया, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, दुर्भग, दुस्वर,  
अनादेय, यशकीर्ति और अयशकीर्तिका सान्तर रन्ध होता है, क्योंकि, एक समयसे भी  
इनका रंधविधायक देखा जाता है । पुणवेदका रन्ध सातर निरन्तर होता है, क्योंकि, पस  
और शुक्ल लेश्याको नियेच व मनुष्योंमें उनका निरन्तर बन्ध पाया जाता है । देवगतिद्विक,  
वैश्विकद्विक, समचतुरस्रसस्थान, सुभग, सुस्सर, आदेय और उच्चगोरका सान्तर निर-  
न्तर बन्ध होता है, क्योंकि, असत्पातवर्षायुष्क और शुभ तीन लेश्यावाल् तिर्येच व मनुष्योंमें  
उनका निरंतर रंध पाया जाता है । मनुष्यगतिद्विकका व असातर निरन्तर होता है क्योंकि,  
आनतादिक देवोंमें उनका निरंतर बंध पाया जाता है । तिर्यगतिद्विक और नीचगोरका  
बन्ध सातर निरन्तर होता है, क्योंकि, सप्तम पृथिवीके नारकियोंमें उनका निरन्तर बंध  
पाया जाता है । औदारिकशरीरद्विकका भी सातर निरंतर बंध होता है, क्योंकि, देव व  
नारकियोंमें उनका निरन्तर बंध पाया जाता है ।

द्वयायु द्व्यगतिद्विक और वैश्विकद्विकके छादालीस प्रत्यय हैं, क्योंकि, वैश्विकद्विक,  
औदारिकमिथ और कामण फाययोग प्रत्ययोंका अभाव है । मनुष्यायु और तियगायुके  
संतालीस प्रत्यय हैं, क्योंकि, औदारिकमिथ, वैश्विकमिथ और कामण प्रत्ययोंका अभाव  
दोय प्रकृतियोंके पचास प्रत्यय हैं, क्योंकि, सासादनसम्यग्दृष्टियोंके पाच मिथ्याव  
अभाव है ।

देवाउ-देवगइ-वेउच्चियदुगाण बधो देवगइसजुतो । मणुसाउ मणुसगइदुगाण मणुस-  
गइसजुतो । तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइदुगुज्जेणार्णं तिरिक्खगइसजुतो । ओरालियसरीर-  
मज्झिमचउसठाण-ओरालियसरीरअगोवग पचसघडण अप्पसत्थविहायगइ दुमग-दुस्सरं अणादेज्ज-  
णीचागोदाण तिरिक्ख-मणुसगइसजुतो बधो । उच्चागोदस्स देव मणुसगइसजुतो बधो,  
तिरिक्खेसुच्चागोदाभावादो । अवसेसाण पयडीण बधो तिगइसजुतो, गिरयगइवधाभावादो ।  
देवाउ-देवगइ-वेउच्चियदुगाण तिरिक्ख-मणुसा सामी । सेसाण पयडीण बधस्स सामी चउगइ-  
सासणा । बधद्धण बधवोच्चेदो च णत्थि । छद्दालीसधुवनधपयडीण तिविहो बधो, धुवा-  
भावादो । अवसेसाण साट्ठि-अट्ठो, अट्ठवधधितादो ।

### सम्मामिच्छाइट्ठी असंजदभंगो ॥ ३१८ ॥

पचणाणावरणीय-छदसणावरणीय सादासाद-वारसकसाय पुरिसवेद-हस्स-रदि-अरदि-  
सोग-भय-दुगु ३-मणुसगइ देवगइ-पच्चिन्द्रियजादि-ओरालिय-वेउच्चिय तेजा-कम्मइयसरीर समचउ  
रससठाण-ओरालिय-वेउच्चियअगोवग-वज्जरिसहसघडण-वण्ण गध रम फास मणुसगइ-देवगइ-

देवायु, देवगतिद्विक और वैक्रियिकद्विकरुका य ध देवगति सयुक्त होता है । मनुष्यायु  
और मनुष्यगतिद्विकका बन्ध मनुष्यगति सयुक्त होता है । तिर्यगायु, तिर्यग्गतिद्विक और  
वद्योतका बन्ध तिर्यग्गति सयुक्त होता है । औदारिकशरीर मध्यम चार सस्थान,  
औदारिकशरीरागोपाग, पाच सहनन, अप्रशस्तविहायोगति, दुर्भग दुस्सर, अनादेय और  
नीचगोत्रका तिर्यग्गति और मनुष्यगतिसे सयुक्त बन्ध होता है । उच्चगोत्रका देव व  
मनुष्य गतिसे सयुक्त बन्ध होता है, क्योंकि, तिर्यच्चोम उच्चगोत्रका अभाव है । शेष  
प्रकृतियोंका बन्ध तीन गतियोंसे सयुक्त होता है, क्योंकि, सासादनसम्यग्दृष्टियोंके नरक  
गतिके बन्धका अभाव है ।

देवायु, देवगतिद्विक और वैक्रियिकद्विकके तिर्यच व मनुष्य स्वामी ह । शेष प्रकृतियोंके  
बन्धके स्वामी चारों गतियोंके सासादनसम्यग्दृष्टि हैं । यन्धाध्यान और बन्धव्युच्चेद नहीं  
है । छद्दालीस धुवनन्धी प्रकृतियोंका तीन प्रकारका बन्ध होता है, क्योंकि, उनके ध्रुव  
बन्धका अभाव है । शेष प्रकृतियोंका सादि व अधुन बन्ध होता है, क्योंकि, वे अधुव  
बन्धी हैं ।

सम्यग्मिध्यादृष्टि जीवोंकी प्ररूपणा असयत जीवोंके समान है ॥ ३१८ ॥

पाच ज्ञानावरणीय, छद्द दर्शनावरणीय, सात्ता व असात्ता घेदनीय, वारह क्पाय,  
पुरुषवेद, हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, मनुष्यगति, देवगति, पचेन्द्रिय जाति,  
औदारिक, वैक्रियिक, तैजस व कामेण शरीर औदारिक व  
अगोपाग, वज्रपंभसहनन, वण्ण, गन्ध, मनुष्यगति व देवगति

पाओग्गाणुपुञ्जी-अगुरुवलहुअ-उपघाद परघाद-उस्साम-पसत्थविहायगइ-तस-धादर-पञ्जत्त-पत्तेय-  
 सरीर-थिराथिर सुहासुह सुभग सुस्सर-आदेज्ज जसकित्ति अजमकित्ति णिमिणुवागोद-पञ्जतराइय-  
 पयडीओ सम्माभिच्छाइद्दीहि वज्जमाणियाओ । उदयादो बधो पुञ्च पञ्च [ वा ] वोच्छिण्णो  
 ति एमो विचारो प्पत्थि, पयडीणमेत्थ बधोदयनेच्छेदाणुत्थमादो ।

पचणाणावरणीय-चउदसणावरणीय-पचिंदियजादि-तेजा कम्मइयसरीर-यण्ण-गंध-रस-  
 फाम अगुरुवलहुअ-उपघाद-परघाद-उस्सास-तस-धादर-पञ्जत्त पत्तेयमरीर-थिराथिर-सुहासुह-  
 णिमिण पचतराइयाण मोदओ बधो, एत्थ धुवोदयत्तादो । णिहा-पयला-सादामाद-नारसकमाध-  
 पुरिसवेद-हस्स-रदि-अरदि-सोग-भय दुगुळा-समचउरससठाण-पसत्थविहायगइ-सुभग-सुस्सर-  
 आदेज्ज-जसकित्ति-अजसकित्ति-उच्चागोदाण बधो सोदय-परोदओ, उहयहा वि बधुत्थलमादो ।  
 मणुसगइ-देवगइ-वेउब्बियसरीर-ओगलिय वेउब्बियसरीरअगोवग-वज्जरिसहसघडण-मणुसगइ-  
 देवगइपाओग्गाणुपुञ्जीण परोदओ बधो, सोदएण बधविरोहादो ।

पचणाणावरणीय छदसणावरणीय नारसकमाय पुरिसवेद-भय दुगुळा मणुसगइ-देवगइ-  
 पचिंदियजादि-ओरालिय-वेउब्बिय-तेजा-कम्मइयसरीर-समचउरससठाण ओरालिय वेउब्बियअगो

पूर्वी, अगुरुलघु, उपघात, परघात, उच्छ्वास, प्रशस्तविहायोगति, प्रस, वादर, पर्याप्त,  
 प्रत्येकशरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुभग, सुस्वर, सोदय, यशकीर्ति, अयशकीर्ति,  
 निर्माण, उच्चगोत्र और पाच अन्तराय प्रकृतिपा मन्थमिथ्यादृष्टि जीवों द्वारा बधमान हैं ।  
 उदयसे बन्ध पूर्वमे या पश्चात् व्युच्छिन्न होता है, यह विचार यहां नहीं है, क्योंकि,  
 यहां उक्त प्रकृतियोंके बध और उदयका व्युच्छेद नहीं पाया जाता है ।

पाच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, पचेन्द्रिय जाति, तैजस व कामेण शरीर,  
 घर्ण, गंध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, उपघात, परघात, उच्छ्वास, प्रस, वादर, पर्याप्त,  
 प्रत्येकशरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, निर्माण और पाच अन्तरायका सोदय बध  
 होता है, क्योंकि, यहां ये धुवोदयी हैं । निद्रा, प्रचला, साता व अमाना वेदनीय, बारह  
 कषाय, पुरुषवेद, हास्य, रति, अरति शोक, भय, जुगुप्सा समचतुरस्रसस्थान, प्रशस्त  
 विहायोगति, सुभग, सुस्सर, आदेय, यशकीर्ति, अयशकीर्ति और उच्चगोत्रका बन्ध  
 सोदय परोदय होता है, क्योंकि, दोनों प्रकारोंसे भी इनका बन्ध पाया जाता है । मनुष्य  
 गति, देवगति, वैभियिकशरीर, औदारिक व वैक्रियिक शरीरगोपाग, वज्रपंभसहनन,  
 मनुष्यगतिप्रायाग्यानुपूर्वी और देवगतिप्रायाग्यानुपूर्वीका परोदय बध होता है, क्योंकि,  
 सोदयसे इनके बधका विरोध है ।

पाच ज्ञानावरणीय, छह दर्शनावरणीय, बारह कषाय, पुरुषवेद, भय, जुगुप्सा,  
 देवगति, पचेन्द्रिय जाति, औदारिक, वैक्रियिक, तैजस व कामेण शरीर,

वग-वज्जरिसहस्रघडण वण्ण गध रस फास-मणुसगइ-देवगइपाओग्गाणुपुञ्ची-अगुरुबलहुअ-उच-  
पाद-परघाद-उस्सास पसत्थविहायगइ तस-चादर-पञ्जत्त-पत्तेयसरीर-सुभग-सुस्सर-आदेवज्ज-  
णिमिणुच्चागोद पचतराइयाण णिरतरो बधो, एत्थ धुववधदसणादो । सादासाद-हस्स-रदि-  
अरदि-सोग-धिराथिर सुहासुह-जसकित्ति-अजसकित्तीण सातरो, एगसमएण वि च्चुव्वरम-  
दसणादो ।

मणुसगइ-मणुसगइपाओग्गाणुपुञ्ची-ओरालियसरीर-ओरालियसरीरगोवग-वज्जरिसह-  
सघडणाण वादालीस पचया, ओरालियकायजोगाभावादो । देवगइ-देवगइपाओग्गाणुपुञ्ची-  
वेअवियसरीर-वेअवियसरीरअगोवगाण पि वादालीस पचया, वेअवियकायजोगा-  
भावादो । अवसेसाण तेदालीस पचया, पचमिउत्ताणुवधिचउक्कोरालिय-वेअविय-  
मिस्स-कम्मइयपचयाणमभावादो । मणुसगइदुगेरालियदुग वज्जरिसहस्रघडणाण वधो  
मणुसगइसजुतो । देवगइ-वेअवियदुगाण देवगइसजुतो । सेससव्वपयडीण देव-  
मणुसगइसजुतो । मणुमगइदुगेरालियदुग-वज्जरिसहस्रघडणाण देव-गेरइया सामी ।  
देवगइ-वेअवियदुगाण तिरिक्ख-मणुमा सामी । सेसाण पयडीण वधस्स सामी

समचतुरअसस्थान, औदारिक च वैक्रियिक शरीरगोपाग, वज्जर्षभसहनन, वर्ण, गन्ध, रस,  
स्पर्श, मनुष्यगति च देवगति प्रायोग्यानुपूर्वी, अगुरुबल, उपघात, परघात, उच्छ्वास,  
प्रशस्तविहायोगति, अस, वादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, सुभग, सुस्वर, आवेय, निर्माण,  
उच्चगोत्र और पाच अन्तरायका तिरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, यहा इनका धुवबन्ध  
देखा जाता है । साता च असाता वेदनीय, हास्य, रति, अरति, शोक, स्थिर, अस्थिर,  
शुभ, अशुभ, यशकीर्ति और अयशकीर्तिका सान्तर बन्ध होता है, क्योंकि, एक समयसे  
भी इनका बन्धविध्राम देखा जाता है ।

मनुष्यगति, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, औदारिक शरीर, औदारिकशरीरगो-  
पाग और वज्जर्षभसहननके ज्वालाम प्रत्यय है, क्योंकि, औदारिककाययोगका  
अभाव है । देवगति, देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, वैक्रियिकशरीर और वैक्रियिक  
शरीरगोपागके भी ज्वालाम प्रत्यय है, क्योंकि, यहा वैक्रियिककाययोगका अभाव है । शेष,  
प्रकृतियोंके तेदालीस प्रत्यय हैं, क्योंकि, पाच मिथ्यात्व, अनन्तानुबन्धितचतुष्क, औदारिक  
मिश्र, वैक्रियिकमिश्र और कामेण प्रत्ययोंका मिश्रगुणस्थानमें अभाव है ।

मनुष्यगतिद्विक, औदारिकद्विक और वज्जर्षभसहननका बन्ध मनुष्यगतिसे समुक्त  
होता है । देवगतिद्विक और वैक्रियिकद्विकका बन्ध देवगति समुक्त होता है । शेष सत्र प्रकृ-  
तियोंका बन्ध देव च मनुष्य गतिसे समुक्त होता है । मनुष्यगतिद्विक, औदारिकद्विक व वज्ज-  
र्षभसहननके देव च नारकी सामी हैं । देवगतिद्विक और वैक्रियिकद्विकके तिर्येच व मनुष्य  
सामी हैं । शेष प्रकृतियोंके बन्धके स्वामी चारों गतियोंके सम्यग्मिथ्याहाष्टे हैं । बन्धाध्यान

चउगइसम्मामिच्छाडिणो । चउद्धान णत्थि, एस्सम्हि अद्धानविरोहादो । वधवोच्छेदो वि  
णत्थि, एत्थ सत्तासिं वधुवलभादो' । उवधधिपयडीण तिविहो वधो, धुवाभावादो । सस्राण  
सादि-अहुवो, अहुवधित्तादो ।

मिच्छाडिणीमभवसिद्धियभगो ॥ ३१९ ॥

सुगममेदं सुत्त, विंससामावादो । णत्थरि उवधत्रिपयडीण चउत्विहो वधो, सादि-सानर  
वधुवलभादो ।

सण्णियाणुवादेण सण्णीसु जाव तित्थयरे त्ति ओघभगो  
॥ ३२० ॥

एहदिय श्रीइदिय-तीइदिय चउरिदियजादि-आदान-थावर-सुहुम-साहारणाण परोदयत्तु  
लभादो पचिदियजादि-त्तस वादराण सोदयवधुवलभादो णेद सुत्त जुज्जदे ? ण, देसामासिय

नहीं है, क्योंकि, एक गुणस्थानमें अध्यानका विरोध है । बन्ध-युच्छेद भी नहा है,  
क्योंकि, यहा सब प्रकृतियोंका बन्ध पाया जाता है । ध्रुवबन्धी प्रकृतियोंका तीन प्रकारका  
बन्ध होता है, क्योंकि, ध्रुवबन्धका यहा अभय है । दोष प्रकृतियोंका सादि व अधुय बन्ध  
होता है, क्योंकि, ये अधुयबन्धी हैं ।

निव्यारण जीवोंकी प्ररूपणा अभव्यसिद्धिक जीवोंके समान है ॥ ३१९ ॥

यह सूत्र सुगम है, क्योंकि, यहा कोई विशेषता नहीं है । भेद इतना है कि ध्रुव  
बन्धी प्रकृतियोंका यहा चारों प्रकारका बन्ध होता है, क्योंकि, सादि व सातर अर्थात्  
अधुय बन्ध पाया जाता है ।

संज्ञिमार्गणानुसार सजी जीवोंमें तीर्थकर प्रकृति तक ओघके समान प्ररूपणा है  
॥ ३२० ॥

शङ्का—चूँकि यहा पंचेन्द्रिय, षोडशेन्द्रिय, श्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय जाति, अन्ताप,  
स्वावर, सूक्ष्म और माधारण प्रकृतियोंका बन्ध परोदयसे और पंचेन्द्रिय जाति, व्रत  
व वादरका बन्ध सोदयसे पाया जाता है, अतएव यह सूत्र युक्त नहीं है ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, देशामार्शक-सूत्रोंमें इस प्रकारकी

सुतेसु एवविहभेदापिरोहादो । पयडिषजन्दाणणिनधणभेदपदुप्पायणइमाह—

णवरि विसेसो' सादावेदणीयस्स चक्खुदंसणिभंगो ॥ ३२१ ॥

सुगममेद ।

असणीसु अभवसिद्धियभंगो ॥ ३२२ ॥

पचणाणावरणीय-णवदसणावरणीय सादासाद-मिच्छन्त-सोलस-रुसाय-णवणोकासाय-चउ-  
आउ चउगइ-पचजाट्टि-ओरालिय-वेउच्चिय तेजा-कम्मइयसरीर-छसठाण-ओरालिय वेउच्चियअंगो-  
वग ठसपडण वण्ण गध रस-फाम-चउआणुपुव्वी-अगुखवलहुअ-उपघाद परघाद-उस्सास-आदा-  
उज्जेव-दोविहायगइ-तस-थावर-चादर-सुहुम-पज्जतापज्जत्त-पत्तेय साहारणसरीर धिराथिर-सुहा-  
सुह सुभग-दूमग सुस्सर-दुस्सर-आदेज्ज अणादेज्ज-जसकित्ति-अजसकित्ति-णिमिण पीसुच्चागोद-  
पचतराइयपयडीओ असणीहि वज्जमाणियाओ । उदयादो वयो पुव्व पच्छा वा वोच्छिण्णो ति  
परिक्खा णट्ठिय, एत्थेदासिं धघोदयवोच्छेदाभावादो ।

विशेषता विरोधसे रहित है ।

प्रकृतियोंके बन्धाधानमिमित्तक भेदके प्ररूपणार्थ सूत्र कहते हैं—

परन्तु विशेषता इतनी है कि सातावेदनीयकी प्ररूपणा चक्षुदर्शनी जीवोंके समान  
है ॥ ३२१ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

असज्ञी जीवोंमें बन्धोदयव्युच्छेदादिकी प्ररूपणा अभव्यसिद्धिक जीवोंके समान है  
॥ ३२२ ॥

पाच घानावरणीय, नौ दर्शनावरणीय, साता व असाता वेदनीय, मिथ्यात्म, सोलह कपाय, नौ नोकराय, चार आयु, चार गतिया, पाच जातिया, औदारिक, वैक्रियिक, तैजस व कामण शरीर, छह सस्यान, औदारिक व वैक्रियिक शरीरागोपाग, छह सहनन, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, चार आनुपूर्वा, अगुरलघु, उपघात, परघात, उच्छ्र्वास, आताप, उद्योत, दो विहायोगतिया, भ्रस, स्यावर, चादर, खड्म, पर्याप्त, अपर्याप्त, प्रत्येक व साधारण शरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुभग, दुर्भग, सुस्वर, दुस्वर आदेय, अनादेय, यश-कीर्ति, अयशकीर्ति, निर्माण, नीच व ऊच गोत्र और पाच अन्तराय, ये प्रकृतिया असज्ञी जीवोंके द्वारा बध्यमान हैं । उदयसे बन्ध पूर्वमें या पश्चात् व्युच्छिन्न होता है, यह परीक्षा पहा नहीं है। क्योंकि, यहा इन प्रकृतियोंके बन्ध और उदयके व्युच्छेदका अभाव है ।

पचणाणावरणीय-चउदसणावरणीय मिच्छत-तेजा कम्मइयसरीर-वण्ण-गं-रस-फस-अगुरुअलहुअ धिराधिर-सुहासुह गिमिण-णीचागोद-पचतराइय तिरिक्खगईण धधो सोदओ । गिरय-देवाउ गिरय-देवगइ-वेउअियमगी गेउअियमगीअगोवग-गिरय-देवगइपाओग्गाणुपुव्वी-उच्चागोद-मणुसाउ मणुसगइदुगाण परोदओ धधो । पचदसणावरणीय-सादासाद-मोलस-कमाय णवणोकमाय-पचनादि-ओरालियसरीर-छसठाण ओरालियसरीरअगोवग छसपडण-तिरि-क्खणुपुव्वी आदाउज्जेव देविहायगइ तम थाअ धादर सुहुम पज्जतापज्जत-पतेय-साहाण-सरीर सुभग दूभग सुस्मर दुस्सर आदेज्ज [ अणादेज्ज- ] जसकिति अजसकित्तीण धधो सोदय परोदओ, उहयहा नि चअविरोहामाजादा । उवघाद परघाद उस्सासाण पि मोदय-परोदओ, अपज्जत्तकाले उदएण निणा वि धधुवलभादो ।

पचणाणावरणीय णउदसणावरणीय मिच्छत सोलमकसाय भय दुगुठ-चउआउ-तेजा-कम्मइयसरीर वण्ण गंध-रस फास अगुरुअलहुअ उपघाद गिमिण-पचतराइयाण गिस्तरो धधो, एगसमएण धधुवरमाभावाओ । सादामाद मत्तणोकमाय गिरय-मणुस-देवगइ-पचिंदियजादि-वेउअियसरीर छसठाण ओरालिय-वेउअियसरीरअगोवग छसपडण गिरय-मणुस देवाणुपुव्वी-पर-

पाच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, मिथ्यात्व, तैजस व कामण शरीर, घर्ष, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, निर्माण, नीचगोत्र, पाच अन्तराय और तियग्गतिका व च स्वोदय होता है । नारकाय, देवाय, नरकगति, देवगति, वैक्रियिकशरीर, वैक्रियिकशरीरागोपाग, नरकगति व देवगति प्रायोग्यानुपूर्वी, उच्चगोत्र, मनुष्याय और मनुष्यगतिद्विकका परोदय बंध होता है । पाच दर्शनावरणीय, साता व असाता चेदनीय, सोलह कपाय, ना नोकपाय, पाच जातिया, औदारिकशरीर, छह सस्थान, औदारिकशरीरागोपाग, छह सहजन, तियगानुपूर्वी, आताप, उद्योत, दो विहायोगनिया, प्रस, स्वाधर, धादर, सूक्ष्म, पयाण, अपयाण, प्रत्येक व साधारण शरीर, सुभग, दुर्भग, सुस्वर, दुस्वर, आदेय, [ अनादेय ], यशकान्ति और अयशकीतिका बन्ध स्वोदय परोदय होता है, क्योंकि, दोनों प्रकारोंसे भी इनके बंधका कोई विरोध नहीं है । उपघात, परघात और उच्छ्वासका भी स्वोदय परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, अपयाणकालमें उदयके बिना भी इनका बंध पाया जाता है ।

पाच ज्ञानावरणीय, नी दर्शनावरणीय, मिथ्यात्व, सोलह कपाय, भय, जुगुप्सा, चार आयु, तैजस व कामण शरीर, वण, गंध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, उपघात, निर्माण और पाच अन्तरायका निरंतर बंध होता है, क्योंकि, एक समयसे इनके बंधविधामका प्रभाव है । साता व असाता चेदनीय, सात नोकपाय, नरकगति, मनुष्यगति, देवगति, वैक्रिय ज्ञानि, वैक्रियिकशरीर, छह सस्थान, औदारिक व वैक्रियिक शरीरागोपाग,

षादुस्साम-आदानुजोव-दोविहापगइ तस-थावर चादर-सुहुम-पञ्जत्तापञ्जत-पत्तेय-साहारणसरीर-  
थिराथिर-सुहासुह सुमग-दूमग-सुस्सर दुस्सर-अदेज्ज अणादेज्ज-असकिति-अजसकिति-उच्चा-  
गोदाण मातरो षवो, एगसमण वि धधुवरमदसणादो । तिरिक्खगइ-तिरिक्खगइपाओग्गाणु-  
पुत्री ओरालियसरीर णीचागोदाण षवो सातर-णिरतरो, तेउ वाउकाइएसु णिरतरधधुवलमादो ।

असग्गीसु पणदालीस पच्चया सच्चपयडीण, वेउच्चियदुग-चउविहमण-तिविहवचिजोग-  
माणमासनामावादो । णवरि णिरय-देवाउअ-णिरय-देवगइ-णिरयगइ-देवगइपाओग्गाणुपुत्री-  
वेउच्चियसरीर-वेउच्चियसरीरअगोवगाण तेदालीस पच्चया, ओरालियमिस्स-कम्मइयपच्चयाण-  
ममावादो । मणुस्स तिरिक्खाउअण चोदालीस पच्चया, कम्मइयपच्चयामावादो । सादा-  
वेदणीय इत्थि-पुरिसवेद हस्स रदि-समचउरससठाण-पसत्थविहायगइ-थिर-सुह-सुमग-सुस्सर-  
ओदेज्ज जमकित्तीण यत्रो तिगइमजुतो, णिरयगइए अमावादो । णिरयाउ णिरयगइ-णिरयगइ-  
पाओग्गाणुपुत्रीण णिरयगइसजुतो । मणुमाउ मणुमगइ मणुसगइपाओग्गाणुपुत्रीण मणुमगइ-  
संजुतो । देवाउ-देवगइ-देवगइपाओग्गाणुपुत्रीण देवगइसंजुतो । तिरिक्खाउ-तिरिक्खगइ-

एह सहनन, नारकानुपूर्वी, मनुष्यानुपूर्वी, देवानुपूर्वी, परघात, उच्छ्वास, आताप, उद्योत,  
दो विहायोगतिया, प्रस, स्थावर, यादर, सुहम, पर्याप्त, अपर्याप्त, प्रत्येक व साधारण  
शरीर, शिपर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुभग, दुर्मग, सुस्सर, दुस्सर, आवेय, अनावेय,  
यशकीर्ति, अयशकीर्ति और उच्चगोत्रका सान्तर बन्ध होता है, क्योंकि, एक समयसे  
भी इनका बन्धविधाम देखा जाता है । तिर्यग्गति, तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी, औदारिकशरीर  
और नीचगोत्रका बन्ध सान्तर निरतर होता है, क्योंकि, तेज व धायुकायिक जीवोंमें  
इनका निरतर बन्ध पाया जाता है ।

अमर्शा जीवोंमें सब प्रकृतियोंके पैतालीस प्रत्यय हैं, क्योंकि, उनके वैकल्पिकद्विक,  
चार प्रकारका मन, अनुमय घचनयोगके बिना तीन प्रकारका घचन योग और मन जनित  
असपम प्रत्ययोंका अभाव है । विशेषतया यह है कि नारकायु, देवायु, नरकगति, देवगति,  
नरकगति व देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, वैकल्पिकशरीर और वैकल्पिकशरीरानुपागके  
पैतालीस प्रत्यय हैं, क्योंकि, औदारिकमिध्र और कामेण प्रत्ययोंका अभाव है । मनुष्यायु  
और तिर्यग्गायुके चवालीस प्रत्यय हैं, क्योंकि, कामेण प्रत्ययका अभाव है ।

मातापेदनीय, स्त्रीपेद, पुरुष्येद, हास्थ, रति, समचतुरस्रसंख्यान, प्रशस्तविहयो  
गति, शिपर, शुभ, सुभग, सुस्सर, आवेय और यशकीर्तिके बन्ध तीन गतियोंसे संयुक्त  
होता है, क्योंकि, इनके साथ नरकगतिके बन्धका अभाव है । नारकायु, नरकगति और  
नरकगतिप्रायोग्यानुपूर्विका बन्ध नरकगतिसंयुक्त होता है । मनुष्यायु, मनुष्यगति और  
मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्विका मनुष्यगतिसंयुक्त बन्ध होता है । देवायु, देवगति और देवगति  
प्रायोग्यानुपूर्विका देवगतिसंयुक्त बन्ध होता है । तिर्यग्गायु, तिर्यग्गति और तिर्यग्गति



पचणाणावरणीय-चउदसणावरणीय मिच्छत्त-तेजा कम्मइयसरीर-वण्ण-गघ-रस-फास-अगुरुअल्हूअ धिराधिर सुहासुह-णिमिण णीचागोद-पचतराइय निरिस्सवर्गईणं धयो सोदओ । णिग्य-देवाउ-णिरय-देवगइ-वेउ-वियसरीर पेउ-वियसरीरअगोवग णिरय-देवगइपाओग्गाणुपुव्वी-उच्चागोद-मणुसाउ मणुसगइटुगाण परोदओ धयो । पचदसणावरणीय-सादासाद-सोलस-कसाय णवणोकमाय-पचजादि-ओरालियसरीर-छमठाण ओरालियसरीरअगोवग छमघडण-तिरि-क्खाणुपुव्वी आदाउज्जेव-द्वेविहायगइ तम धापर-धादर-सुहुम पज्जत्तापज्जत्त-पत्तेय-साहारण-सरीर सुभग दूभग सुस्सर दुस्सर आदेज्ज [अणादेज्ज-] जसकिति अजसकित्तीण धयो सोदय परोदओ, उदयहा वि धधविरोहाभाजादा । उवघाद परघाद उस्सासाण पि सोदय-परोदओ, अपज्जत्तकाले उदएण विणा वि धधुवन्ममादो ।

पचणाणावरणीय णवदसणावरणीय मिच्छत्त-मोलसकमाय भय-दुगुछ-चउआउ-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण गघ रस फास अगुरुअल्हूअ उवघाद णिमिण-पचतराइयाण णिरतरो बंधो, एगममएण चधुवरमाभाजादो । सादामाद मत्तणोकमाय णिरय-मणुस-देवगइ-पचिंदियजादि वेउ-वियसरीर-छसठाण ओरालिय पेउ-वियसरीरअगोवग छसघडण णिरय-मणुस देवाणुपुव्वी-पर-

पाच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, मिथ्यात्व, तैजस व कामण शरीर, धर्म, गंध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, निर्माण, नीचगोत्र, पाच अन्नराय और तियग्गातेका वध स्त्रोदय होता है । नारकायु, देवायु नरकगति, देवगति, वैश्विकशरीर, वैश्विकशरीरागोपाग, नरकगति व देवगति प्रायोग्यानुपूर्वी, उच्चगोत्र, मनुष्यायु और मनुष्यगतिविक्रका परोदय वध होता है । पाच दर्शनावरणीय, साता व असाता वेदनीय, सोलह कपाय, नौ नोकपाय, पाच जातिया, ओदारिकशरीर, छह सन्धान, औदारिकशरीरागोपाग, छह सहनन, तियगानुपूर्वी, आताप, उद्योत, दो विहायोगतिया, ब्रस, स्वाघर, धादर, सूक्ष्म, पर्याप्त, अपर्याप्त, प्रत्येक व साधारण शरीर, सुभग, दुर्भग, सुस्वर, दुस्वर, आदेय [अनादेय], यशकीर्ति और अयशकीर्तिका बन्ध स्त्रोदय परोदय होता है, पर्याप्त, दोनों प्रकारोंसे भी इनके बधका कोई विरोध नहीं है । उपघात, परघात और उच्छ्वासासका भी स्त्रोदय परोदय वध होता है, क्योंकि अपर्याप्तकालमें उदयके बिना भी इनका वध पाया जाता है ।

पाच ज्ञानावरणीय, नौ दर्शनावरणीय, मिथ्यात्व, सोलह कपाय, भय, जुगुप्सा, चार आयु, तैजस व कामण शरीर, वण, गंध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, उपघात, निर्माण और पाच अन्नरायका निरन्तर वध होता है, क्योंकि, एक समयसे इनके वधविधामका है । साता व असाता वेदनीय, सात नोकपाय, नरकगति, मनुष्यगति, देवगति, पचेन्द्रिय जानि, वैश्विकशरीर, छह सन्धान, औदारिक व वैश्विक शरीरागोपाग,

## अणोहारएसु कम्महयभंगो ॥ ३२४ ॥

पचणाणावरणीय-उदसणावरणीय-असादावेदणीय-आरसकमाय-पुरिसवेद-हस्स-रदि-  
 [अदि] सोग मय-दुगुळा मणुसगइ-पचिन्द्रियजादि ओरालिय तेजा कम्महयमरीर समचउरससठाण  
 ओरालियअगोवग-वज्जरिसहसघडण-वण्ण गघ रस फास मणुसगइपाओग्गानुपुब्बी-अगुरुवल्लुअ-  
 उवचाद परघाद-उस्सास पसत्थविहायगइ-तस-आदर-पज्जत-पत्तेयसरीर-थिराथिर सुहासुइ-सुभग-  
 सुस्सर आदेज्ज जसकित्ति अजमत्तिक्कि णिमिण्णुआगोत्र-पचतराइयपयडीओ तीहि गुणट्ठणोहि वज्ज-  
 भाणियाओ । एदासिसुदयपुत्तावरकालमपिबधवोच्छेदपरीक्खा णत्थि, स नासिमेत्थ, बधोदय-  
 दसणादो ।

पचणाणावरणीय-उदसणावरणीय तेजा कम्महयसरीर-वण्ण-गघ-रस-फास-अगुरुव-  
 ल्लुअ-थिराथिर-सुहासुइ-णिमिण्ण-पचतराइयाण सोइओ बधो, धुवोदयत्तोदो । 'ओरालियसरीर-  
 समचउरससठाण ओरालियसरीरअगोवग-वज्जरिसहसघडण उवचाद-परघाद-उस्सास-पसत्थ-  
 विहायगइ पत्तेयसरीर सुस्सरण परोदओ बधो, सोइएण-एत्थ वचपरोहादो । 'णिदा-पयला-  
 असादावेदणीय-आरसकमाय-पुरिसवेद-हस्स-रदि-अरदि-सोग-मय-दुगुळा-सुभग-आदेज्ज-जस-

अनाहारक जीवोंमें कार्मणकाययोगियोंके समान प्ररूपणा है ॥ ३२४ ॥

पाच ज्ञानावरणीय, उह दर्शनावरणीय, असादा वेदनीय, आरह कपाय, पुरषवेद,  
 हास्य, रति, [अरति], शोक, मय, जुगुप्सा, मनुष्यगति, पचेन्द्रिय जाति, औदारिक, तैजस व  
 कार्मण शरीर, समचतुरस्रस्थान, औदारिकशरीरागोपांग, वज्रर्षभसहनन, वर्ण, गन्ध, रस,  
 स्पर्श, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी, अगुरुल्लु, उपघात, परघात, उच्छ्वास, प्रशस्तविहायो-  
 गति, त्रस, वादर, पर्षाप्त, प्रत्येकशरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुभग, सुस्वर,  
 आदेय, यशकीर्ति, अयशकीर्ति, निर्माण, उच्चगोत्र और पाच अन्तराय प्रकृतिया तीन  
 [मिध्याद्यष्टि, सासादन, अविरतसम्पद्यष्टि] गुणस्थानों द्वारा व्यथ्यमान हैं । इन प्रकृतियोंके  
 उदय युच्छेदके पूर्वापर कालसम्यन्धी बन्ध-युच्छेदको परीक्षा नहीं है, क्योंकि, सब  
 प्रकृतिपौका यहा बन्ध और उदय देखा जाता है ।

-पाच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, तैजस व कार्मण शरीर, वर्ण, गन्ध, रस,  
 स्पर्श, अगुरुल्लु, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, निर्माण और पाच अन्तरायका स्वोदय  
 वच हाता है, क्योंकि, ये ध्रुवोदयी हैं । औदारिकशरीर, समचतुरस्रस्थान, औदारिक  
 शरीरागोपांग, वज्रर्षभसहनन, उपघात, परघात, उच्छ्वास, प्रशस्तविहायोगति, प्रत्येक  
 शरीर और सुस्वरका परोदय बन्ध होता है, क्योंकि, स्वोदयसे यहा इनके बन्धका  
 विरोध है । निद्रा, प्रचला, असादा वेदनीय, आरह कपाय, पुरषवेद, हास्य, रति, अरति,  
 शोक, मय, जुगुप्सा, सुभग, आदेय, यशकीर्ति, अयशकीर्ति और उच्चगोत्रका स्वोदय

तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुत्री एइदिय-यीइदिय-तीइदिय-चउरिदियजादि-आदावुज्जोव-थावर-  
सुहुम-साहारणमरीरण तिरिक्खगइसजुतो बधो । वेउव्वियमरीर-वेउव्वियसरीरअगो-  
वगाण देव गिरयगइमजुतो । भेराळियसरीरअगोवग-मज्झिमचउसठाण-छमचइण, अपज्जत्ताण  
तिरिक्ख-मणुसगइमजुतो बधो । णउसयवेद हुडसठाण अप्पमत्थविहायगइ-दुमग दुस्सर-  
अणादेव णीचागोदाण तिगइमजुतो बधो, देवगइए अमावादे । उच्चगोइस्म दुगइसजुतो,  
गिरय तिरिक्खगइण अमावादे । अवसेसाण पयडीण बधो चउगइसजुतो ।

तिरिक्खा चैव सामी, अण्णत्यासण्णीणमभावादे । धवद्धान णत्थि, एककहि  
अद्धानविरोहादे । नधरोच्छेदे वि णत्थि, वधुवळमादे । सत्तेतालीसधुववनिपयडीण चउ-  
व्विहो बधो । सेसाणं सादि-अद्भवो, पडिवम्बवधानुवळमादे ।

## आहारानुवादेण आहारएसु ओधं ॥ ३२३ ॥

एदम्म सुत्तम्म त्था ओधम्मि परूवणा कदा तथा कायध्वा । णवरि सज्वरथ कम  
इयपन्चओ अवणेयन्ओ । चदुण्णमाणुपुत्रीण बधो परोदओ । उपघादम्म सोदओ ।

पूर्वा, एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय जाति, आताप, उद्योत, स्थावर, सूक्ष्म और  
साधारणशरीरका तिर्यग्गतिसयुक्त बंध होता है । वैश्रियिकशरीर और वैक्रियिक  
शरीरागोपागका देव च नरक गतितसे सयुक्त बन्ध होता है । औदारिकशरीरागोपाग, मध्यम  
चार सस्थान, छह सहजन और अपर्यन्तका तिर्यग्गति च मनुष्यगतितसे सयुक्त बन्ध होता  
है । नपुंसकपेद, टण्डसस्थान, अप्रशस्तविहायोगति, दुर्भग, दुस्वर, अनादेय और नीच  
गोत्रका तीन गतियोंसे सयुक्त होता है, क्योंकि, इनके साथ देवगतिके बन्धका अभाव है ।  
उच्चगोत्रका दो गतियोंसे सयुक्त बन्ध होता है, क्योंकि, उसके साथ नरक और तिर्य  
ग्गतिका बंध नहीं होता । दोष प्रकृतियोंका बंध चारों गतियोंमें सयुक्त होता है ।

तिर्यच जीव ही स्वामी है, क्योंकि, अन्य गतियोंमें असही जीवोंका अभाव है ।  
बन्धाध्वान नहीं है, क्योंकि, एक गुणस्थानमें अध्यानका विरोध है । बन्ध युच्छेद भी नहीं  
है, क्योंकि, बंध पाया जाता है । सतालीस ध्रुवबन्धी प्रकृतियोंका चारों प्रकारका बंध  
होता है । दोष प्रकृतियोंका सादि च अद्यु पन्ध होता है, क्योंकि, इनके प्रतिपक्ष  
अर्थात् अनादि च ध्रुव बंध नहीं पाये जाते है ।

आहारमार्गानुसार आहारक जीवोंमें ओधके समान प्ररूपणा है ॥ ३२३ ॥

इस सूत्रकी जैसे ओधमें प्ररूपणा की गई है उसी प्रकार यहा भी करना चाहिये ।  
पिशोपता केवल इतनी है कि स्वप्न कामण प्रत्ययको कम करना चाहिये । चार आनु-  
पूर्वियोंका बंध परोदय होता है । उपघातका स्वोदय बन्ध होता है ।

१, ३२४ ]

असजदसम्मादिङ्गीसु गिरतरो, पडिवक्खपयडिअभाभावादो । पंचिदियजादि-ओरालियसरीर-  
बगोरग-परघादुस्याम-त्तम चादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीराण मिच्छाद्विड्ढि सातर-भिरंतरो, सण-  
क्कुमारोदिदेव णेरइएसु गिरतरबधुवलभादो । विग्गहगदीए कध गिरंतरदा ? ण, सत्तिं पडुच्च  
गिरतरत्तुवदेसादो । सासणसम्मादिङ्घि असजदसम्मादिङ्गीसु गिरतरो, पडिवक्खपयडिअभा-  
भावो । एअमोरालियसरीरस्स वि वत्तव ।

मिच्छाद्विड्ढिस्स तेदालीस, सासणस्स अट्टत्तीम, असजदसम्मादिङ्घिस्स तेत्तीसं  
पच्चया । मणुसगह-मणुसगइपाओगगणुपु-णीण बधो मणुसगइमजुत्तो । ओरालिय-  
सरीर-ओरालियसरीरगोवगाणं मिच्छाद्विड्ढि-सायणसम्मादिङ्घीसु तिरिक्ख-मणुसगइसजुत्तो ।  
असजदसम्मादिङ्घीसु मणुसगइसजुत्तो । एअ वज्जरिसहवडरणारायणसरीरसवडणस्स, वि  
वत्तव । उच्चगोदस्स मिच्छाद्विड्ढि-सासणसम्मादिङ्घीसु मणुसगइसजुत्तो, असजदसम्मा-  
दिङ्घीसु देअ मणुसगइसजुत्तो । सेसाणं पयडीण बधो मिच्छाद्विड्ढि-सासणसम्मादिङ्घीसु तिरिक्ख-  
मणुसगइसजुत्तो, एदेसिमपज्जत्तकाले देअ गिरयगईण बधाभावादो । असजदसम्मादिङ्घीसु देव-

असयतसम्पगदृष्टियोंमें निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, उनमें प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धका  
अभाव है। पंचेन्द्रिय जाति, ओदारिकशरीरागोपाग, परात, उच-द्व्यास, अस, वादर, पर्याप्त  
और प्रत्यक्षशरीरका मिथ्यादृष्टि गुणस्थानमें सान्तर निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि,  
मनुमानादि देअ और नारकियोंमें उनका निरन्तर बन्ध पाया जाता है।

शका—विग्रहगतिमें बन्धकी निरन्तरता कैसे सम्भव है ?

समाधान—नहा, क्योंकि, शक्तिकी अपेक्षा उसकी निरन्तरताका उपदेश है।

सासादनसम्पगदृष्टि और असयतसम्पगदृष्टियोंमें उनका निरन्तर बन्ध होता है,  
पर्यन्त, उनके प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धका अभाव है। इसी प्रकार ओदारिकशरीरके भी  
बन्धना चाहिये।

मिथ्यादृष्टिके तेतालीस, सासादनसम्पगदृष्टिके अट्टत्तीस, ओर असयतसम्पगदृष्टिके  
तेत्तीस प्रत्यय हैं। मनुष्यगति और मनुष्यगतिप्रयोगानुपूर्वीका बन्ध मनुष्यगतिसयुक्त  
होता है। ओदारिकशरीर और ओदारिकशरीरागोपागका मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्प-  
गदृष्टियोंमें तिर्यग्गति च मनुष्यगतिसे सयुक्त बन्ध होता है। असयतसम्पगदृष्टियोंमें  
मनुष्यगतिसयुक्त बन्ध होता है। इसी प्रकार चर्यभभवज्जनाराचशरीरसहननके भी कहना  
चाहिये। उच्चगोपका मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्पगदृष्टियोंमें मनुष्यगतिसयुक्त, तथा  
असयतसम्पगदृष्टियोंमें देव च मनुष्य गतिसे सयुक्त बन्ध होता है। शेष प्रकृतियोंका बन्ध  
मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्पगदृष्टियोंमें तिर्यग्गति और मनुष्यगतिसे सयुक्त होता है,  
क्योंकि, इनके अपर्याप्ततामें देव च नरक गतिके बन्धका अभाव है। असयतसम्प

किति अजसकिति उच्चागोदाण सोदय परोदओ, उहयहा ि बध्विरोहाभावादे । मणुसगइ-  
मणुसगइपाओगगाणुपुञ्जीण बधो मिच्छाइडि-सासणसम्मादिद्वीसु सोदय-परोदओ । असज्ज-  
सम्मादिद्वीसु परोदओ चेव, मोदण्ण बध्विरोहादे । पचिन्दियजादि तस थादर-पञ्जताण  
मिच्छाइद्वीसु बधो सोदय-परोदओ, पडिवक्खसुदयदसणादे । सासणसम्मादिद्वि अमज्जदसम्मा  
दिद्वीसु सोदओ चेव, पडिनस्खुदयाभावादे ।

पचनाणारणीय छद्मणावरणीय धारमकसाय भय दुगुठ-तेजा-कम्मइयसगीर-वण्ण-  
गघ्न-रस-फास अगुरुवलहुअ उवघाद णिमिण पचतराइयाण गिरतरो बधो, धुवधवित्तादे ।  
असादानेदणीय-हस्स-रदि अरदि सोग थिराधिग-सुहासुह-जसकिति अजमकित्तीण सातरो बधो ।  
पुरिसवेदस्स मिच्छाइडि-सामणसम्मादिद्वीसु सातरो । असज्जदसम्मादिद्वीसु गिरतरो, पडिवक्ख  
पयडिनधाभावादे । एउ समचउरममठाण-वज्जरिसहसघडण पसत्थविहायगइ-सुभग-सुस्स-  
आदेज्जुच्चागोदाण पि वत्तव । मणुसगइ मणुसगइपाओगगाणुपुञ्जीण मिच्छाइडि-सासणसम्मा  
दिद्वीसु सातरो गिरतरो, आणशदिदेवसुण्णज्जिय विग्गहगईए वट्टमाणेसु गिरतरबधुवलभादे ।

परोदय व व होता है, क्योंकि, दोनों प्रकारसे भी इनके बन्धका विरोध नहीं है । मनुष्य  
गति और मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्विका बन्ध मिथ्यादृष्टि व सासादनसम्यग्दृष्टि गुण  
स्थानोंमें स्वोदय परोदय होता है । असयतसम्यग्दृष्टियोंमें परोदय ही बन्ध होता  
है, क्योंकि, वहा स्वोदयसे इनके बन्धका विरोध है । पचेन्द्रिय जाति, प्रस, थादर और  
पयाप्तका बन्ध मिथ्यादृष्टियोंमें स्वोदय परोदय होता है, क्योंकि, यहा इनकी प्रतिपक्ष  
प्रकृतियोंका उदय देखा जाता है । सासादनसम्यग्दृष्टि और असयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें  
उनका स्वोदय ही बन्ध होता है, क्योंकि, वहा प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके उदयका अभाव है ।

पाच ज्ञानावरणीय, छद्म दर्शनावरणीय, धारह कषाय, भय, जुगुप्सा, तेजस व  
कार्मण शरीर, घण, गन्ध, रस, स्पश, अगुरुलघु, उपघात, निर्माण और पाच अन्तराय,  
इनका निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, ये ध्रुवबन्धी हैं । असातवेदनीय, हास्य, रति, अरति,  
शोक, रिपर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, यशकीर्ति और अयशकीर्तिका सान्तर बन्ध होता है ।  
पुरुषवेदका मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें सान्तर होता है । असयतसम्य  
ग्दृष्टियोंमें उसका निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, उनमें प्रतिपक्ष प्रकृतियोंके बन्धका अभाव  
है । इसी प्रकार समचउरममठाण, वज्जर्यममहनन, प्रशस्तविहाययोगनि, सुभग, सुस्वर,  
आदेय और उच्चगात्रके भी कहना चाहिये । मनुष्यगति और मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्विका  
द्वेषोंमें उत्पन्न होकर विग्रहगतिमें घनमान जीवोंमें उनका निरन्तर बन्ध पाया जाता है ।

मे, पपुदयाभावादे । शीणगिद्धितिय अणताणुअधिचउक्काण गिरतरो बधो, अणेगसमय-  
 वरुत्तिसंबुत्तादे । निरिक्खगद-तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुच्चि णीचागोदाण मिच्छाइड्डीसु सातर-  
 निग्गे, तेउचाउक्काणसु विग्गह काऊणुपुष्णणं तदे विग्गहगईए गयाण सत्तमपुढवीडे  
 सिग्ग काऊा णिग्गायाण च गिरतरअधुवलभाडे । सासणम्मि सांतरो, एगसमएण वि बधु-  
 समसंअदसुवाणे । मेमाण पयडीण बधो सव्वत्थ सातरो, सामावियादो । पच्चया सुगमा ।  
 तिक्खगदपाओग्गाणुपुच्चि उज्जोण तिरिक्खगइमजुत्तो । चउमअण-चउसघडणाण तिरिक्ख-  
 गज्जमजुत्तो । इथियेदस्स दुगइसजुत्तो, देव गिरयगईणमभावादे । अप्पसत्थविहायगइ-  
 द्दुग्ग दुम्मर अगादेज्ज णीचागोदाण बधो मिच्छाइड्ढिहि सासणे दुगइसजुत्तो, देव-गिरय-  
 गइयनभावादे । शीणगिद्धितिय-अणताणुअधिचउक्काण मिच्छाइड्ढिहि सासणे दुगइसजुत्तो,  
 निग्गदेवगईणमभावादे । चउमइमिच्छाइड्ढि सासणमम्माड्ढिणो सामी । बधद्धाण बंध-  
 रोउदद्वान च सुगमं । धुअधधीण वेणो मिच्छाइड्ढिहि चउत्तिहो । सासणे तिविहो,

होता है, क्योंकि, यहा उनका उदयाभाव है । स्थानगृद्धित्रय और अनन्तानुबन्धिचतुष्कका  
 निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि, ये अनेक समयरूप बंधशक्तिसे सयुक्त हैं । तिर्यग्गति, तिर्य-  
 ग्गप्रस्थानानुपूर्वी और नीचगोत्ररा मिथ्यादृष्टियोंमें सान्तर निरन्तर बन्ध होता है, क्योंकि,  
 दशकालिक और धार्मिक जीवोंमें विग्रह करके उत्पन्न हुए, उनमेंसे विग्रहगतिमें  
 सब हुए, तथा मज्जम धृष्टियोंमें विग्रह करके निकले हुए जीवोंके उनका निरन्तर बन्ध पाया  
 जाता है । सामादन गुणस्थानमें उनका सातर बन्ध होता है, क्योंकि, एक समयसे भी  
 स्थानान्तरणके दृष्टी जाती है । दोष प्रकृतियोंका बन्ध सर्वत्र सातर होता है, क्योंकि,  
 ऐसा अभाव है । प्रपथ सुगम हैं । तिर्यग्गतिप्रायोग्यानपूर्वी और उद्योतका तिर्यग्गतिसे  
 अनुहृत हो जाता है । चार अस्थान और चार सहननरा तिर्यग्गति और मनुष्यगतिसे सयुक्त  
 बंध होता है । मर्यादका दो गतियोंमें सयुक्त बन्ध होता है, क्योंकि, यहा उक्त दो गुणस्थानोंमें  
 दो प्रकारके गतिके बंधका अभाव है । अप्रशस्तविहायोगति, दुर्मग, दुस्वर, अनाद्रेय और  
 अज्ञानके बंध निश्चादृष्टि य सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें दो गतियोंसे सयुक्त होता है,  
 क्योंकि, दोष बन्धके गतिके बंधका अभाव है । स्थानगृद्धित्रय और अनन्तानुबन्धिचतुष्कका  
 निरन्तर बंध य सामादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें दो गतियोंसे सयुक्त बन्ध होता है, क्योंकि,  
 शक्य बंधके गतिके बंधका अभाव है । चारों गतियोंके मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि  
 बंध हैं । बंधाग्यान च बन्धस्युक्तउदन्धान, सुगम हैं । धुअधधी प्रकृतियोंका बन्ध  
 निरन्तर बंध गुणस्थानमें चारों प्रकारका होता है । सामादन गुणस्थानमें तीन प्रकारका बन्ध

१ शक्ति ' इत्यु ' इति पाठ । २ प्रकृत ' तस्य ' इति पाठ ।  
 ३ अज्ञान ' निश्चयदृष्टि ' इति पाठ ।

मणुसगइसजुतो, तत्पण्णमर्दण वधाभाजादो ।

मणुसगइ मणुसगइओग्माणुपुव्वी ओरालियसरीर ओरालियसरीरअगोवगाण चउणइ-  
मिच्छाइडि-सासणसम्मादिड्डी सामी, देर गिरयगइअसजदसम्मादिड्डी सामी । एव वज्ज  
रिसहसवडणस्स वि वत्तय । सेमाण पयडीण चउणइमिच्छाइडि-सासणसम्मादिडि अमजद-  
सम्मादिडिणो सामी । वधद्धान सुगम । वधवोच्छेदो च सुगमो । धुमग्धीण वधो मिच्छाइड्डीसु  
चउच्चिहो, सासणसम्मादिडि अमजदसम्मादिड्डीसु तिनिहो । सेमाण पयडीण सच्चत्थ  
सादि-अहुवो ।

धीणमिद्धित्तिथ अणताणुसचउक्कित्थियेद तिरिकरगइ चउसवडण चउमउण तिरिकस  
गइओग्माणुपुव्वी-उज्जेव-अणसत्थविहायगइ-दुमग दुम्मर-अणाडेज्ज-णीचागोदाण दुड्डाण-  
पयडीण वुच्चदे — अणताणुसचउक्कित्थियेदाण वधोदया सम वोच्छिण्णा । दुमगाणादेज्ज  
णीचागोद तिरिकरगइण पुत्र यो पच्छा उदओ वोच्छिज्जदि । अवसेसाण पयडीण  
वधोच्छेदो चेव, एत्थुदयपिरोहादो । अणताणुसचउक्कित्थियेद-तिरिकरगइदुग दुमगाणा-  
देज्ज णीचागोदाण वधा सोदय परोदओ, उहयहा वि वप्रपिरोहाभाजादो । सेसाण परोदओ

गृहियोंमें देर व मनुष्य गतिसे संयुक्त बन्ध होता है, क्योंकि, उनमें अन्य गतियोंके बन्धका  
अभाव है ।

मनुष्यगति, मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वा, औदारिकशरीर और औदारिकशरीरागो  
पागके चारों गतियोंके मिथ्यादृष्टि व सासादनसम्यग्दृष्टि, तथा देवगति व नरक  
गतिके असयतसम्यग्दृष्टि स्वामी हैं । इसी प्रकार वज्रवभसहननक भी बहना चाहिये ।  
शेष प्रवृत्तियोंके चारों गतियोंके मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि और असयतसम्यग्दृष्टि  
स्वामी हैं । वधाध्यान सुगम है । बन्ध-युच्छेद भी सुगम है । धुमवधी प्रवृत्तियोंका  
वध मिथ्यादृष्टियोंमें चारों प्रकारका होता है । सासादनसम्यग्दृष्टि और असयतसम्य  
ग्दृष्टियोंमें तीन प्रकारका वध होता है । शेष प्रवृत्तियोंका सर्वत्र सादि व अधुव वध  
होता है ।

स्वयानवृद्धिप्रय, अनन्तानुसचउत्तुप्फ, स्वपिद, तिर्यग्गति, चार सहनन, चार  
सस्यान, नियमगतिप्रायोग्यानुपूर्वा, उद्योत, अपरास्त्रविहायगति, दुमग, दुस्वर, अनादेय  
और नीचगोत्र, इन छिस्थान प्रवृत्तियोंकी प्ररूपणा करते हैं — अनन्तानुसचउत्तुप्फ और  
स्वपिदका वध व उदय दोनों साथ व्युच्छिन्न होते हैं । दुमग, अनादेय, नीचगोत्र और  
तिर्यग्गतिस्त्रिणा पूर्वमें बन्ध और पश्चात् उदय व्युच्छिन्न होता है । शेष प्रवृत्तियोंका  
वध वध-युच्छेद ही है, क्योंकि, यहा उनके उदयका विरोध है । अनन्तानुसचउत्तुप्फ,  
१, तिर्यग्गतिद्विज, दुमग, अनादेय और नीचगोत्रका वध स्वोदय परोदय होता है,  
दोनों प्रकारमें भी इनके वधका विरोध नहीं है । शेष प्रवृत्तियोंका परोदय वध

पारिशिष्ट





१

## बंधसामित्तविचय-सुत्ताणि ।

सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ मूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
१	जो सो बंधसामित्तविचयो णाम तस्स इमो दुग्घो णिद्देशो ओघेण बोदसेण य ।		गतूण बधो वोच्छिज्जदि । एदे बधा, अत्रसेसा अबधा ।	१३
२	ओघेण रधसामित्तविचयस्स चोद्दसनीरसमासाणि णाद ध्याणि भयति ।	१	७ णिहाणिहा-पयलापयला-धीण-गिद्धि अणताणुग्घि-कोह-माण-माया लोभ-इत्थिवेद तिरिक्खाउ तिरिक्खगह चउसट्ठाण चउसघ डण-तिरिक्खगइपाओग्गाणु-पुग्घि उज्जोव अणसत्यविहायगादि-दुभग दुस्सर अणादेज्ज-णीचा-गोदाण को बधो को अबधो ?	३०
३	मिच्छाइट्ठी सासणसम्माइट्ठी सम्मामिच्छाइट्ठी असज्जदसम्मा इट्ठी सज्जदासज्जदा पमत्तसंज्जदा अप्पमत्तसज्जदा अपुव्वकरणपइट्ठ उरममा खवा अणियट्ठिगदर सापराइयपइट्ठउवसमा खवा सुहुमसापराइयपइट्ठउवसमा खवा उरमतक्कसायणीयरगछदुमत्या दीणक्कसायणीयरगछदुमत्या सज्जोगिकेउली थज्जोगिकेउली ।	४	८ मिच्छाइट्ठी सासणसम्माइट्ठी बधा । एदे रधा, अबसेसा अत्रधा ।	३०
४	एदेसि चोद्दसण्ह जीरसमासाण पयान्निधयोच्छेदो षादन्वो भवति ।	४	९ णिहापयलाण को रधो को अत्रधो ?	३१
५	परण्ण णाणावरणीयाण चट्ठण्ह दमणावरणीयाण जमकित्ति उच्चागोद-पचण्हमतराइयाण को बधा को अत्रधो ?	५	१० मिच्छाइट्ठिपहुडि जाव अपुव्व-करणपविट्ठसुद्धिसज्जदेसु उव-समा खवा बधा । अपुव्वकरण द्वाए सखेज्जदिम भाग गतूण रधो वोच्छिज्जदि । एदे बधा, अत्रसेसा अबधा ।	३५
६	मिच्छादिट्ठिपहुडि जाव सुहुम सापराइयसुद्धिसज्जदं सु उवसमा खवा बधा । सुहुमसापराइय सुद्धिसज्जदं द्वाए चरिमसमय	७	११ सादावेदणीयस्स को बधो को अबधो ?	३६
			१२ मिच्छाइट्ठिपहुडि जाव सज्जोगि केउलि ति बधा । सज्जोगि केउलिअद्वाए चरिमसमय गतूण बधो वोच्छिज्जदि । एदे बधा, अत्रसेसा अत्रधा ।	३८
			१३ असादावेदणीय-अरदि-सोग-	३९



# बंधसामित्तविचय-सुत्ताणि ।

सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ	सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
१	जो सो बधसामित्तविचयो णाम तस्स इमो दुग्घो णिद्वेसो ओघेण आदेसेण य ।			गतूण बधो घोच्छिज्जदि । एदे बधा, अउसेसा अबधा ।	१३
२	ओघेण बधसामित्तविचयस्स चोहसजीवसमासाणि णाद् व्वाणि भवति ।	१	७	णिहाणिहा-पयलापयला-धीण-गिद्धि अणताणुवधि-कोह-माण-माया लोभ-इत्थिवेद तिरिक्खाउ तिरिक्खगह चउसठाण चउसघ डण-तिरिक्खगइपाओग्गाणु-पुत्ति उज्जोव अप्पसत्यविहायगदि दुभग दुस्सर अणादेज्ज-णीचा-गोदाण को बधो को अबधो ?	३०
३	मिच्छाइट्ठी सासणसम्माइट्ठी सम्मामिच्छाइट्ठी असजदसम्मा इट्ठी सजदासंजदा पमत्तसजदा अप्पमत्तसजदा अपुञ्जकरणपइट्ट उवसमा खवा अणियट्ठियादर सापराइयपइट्टउवसमा खवा सुहुमसापराइयपइट्टउवसमा खवा उवसतकसायवीयरागछदुमत्था खीणकसायवीयरायछदुमत्था सजोगिकेवली भजोगिकेवली ।	४	८	मिच्छाइट्ठी सासणसम्माइट्ठी बधा । एदे बधा, अवसेसा अबधा ।	३१
४	एदेसि चोहसण्ह जीवसमासाणं पयडियधवोच्छेदो फादव्वो भवदि ।		९	णिहा पयलाण को बधो को अबधो ?	३५
५	पचण्ण णाणावरणीयाण चदुण्ह दसणावरणीयाण जसकित्ति उच्चागोद-पचण्हमतराइयाण को बधो को अबधो ?	४	१०	मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव अपुञ्ज करणपविट्टसुद्धिसजदेसु उव समा खवा बधा । अपुञ्जकरण द्दाए सखेज्जदिम भाग गतूण बधो घोच्छिज्जदि । एदे बधा, अउसेसा अबधा ।	३६
६	मिच्छादिट्ठिप्पहुडि जाव सुहुम सापराइयसुद्धिसजदेसु उवसमा खवा बधा । सुहुमसापराइय सुद्धिसजदद्दाए चारिमसमय	५	११	सादावेदणीयस्स को बधो को अबधो ?	३८
			७	मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव सजोगि केवलि ति बधा । सजोगि केवलिअद्दाए चरिमसमय गतूण बधो घोच्छिज्जदि । एदे बधा, अवसेसा अबधा ।	३९
			८	असादावेदणीय-अरदि-सोग-	

सूत्र सख्या	सूत्र	पृष्ठ	सूत्र सख्या	सूत्र	पृष्ठ
	अधिर-असुह-अज्ञसकिति- णामाण को बधो को अयधो ?	४०	२०	मिच्छाद्विपहुडि जाय अणि यद्विवादरसापराह्यपविट्टुवसमा सखा यथा । अणियद्वि वादरद्वाए सेसे सखेज्जाभाग गतूण बधो वोच्छिज्जदि । एदे बधा, अवसेसा अयधो ।	५२
१४	मिच्छाद्विपहुडि जाय पमत्त सजदा बधा । एदे बधा, अव सेसा अयधो ।	४१	२३	माण भायसजलणाण को बधो को अयधो ?	५५
१५	मिच्छत्त-णुसपवेद-णिरयाउ- णिरयगह-वइदिय-वेइदिय-ती- इदिय-अउरिदियजादे हुटसठाण असपत्तमेवट्ठमरीरसघडण- णिरयगहपाओग्गाणुपुवि आदान थावर सुहुम अपज्जत्त-साहारण सरोरणामाण को बधो को अयधो ?	४२	२४	मिच्छाद्विपहुडि जाय अणि यद्विवादरसापराह्यपविट्टुवसमा सखा यथा । अणियद्विवादरद्वाए सेसे सेसे सखेज्जाभाग गतूण बधो वोच्छिज्जदि । एदे बधा, अवसेसा अयधो ।	५६
१६	मिच्छाद्विपहुडि बधा । एदे बधा, अवसेसा अयधो ।	४३	२५	लोमसजलणस्स को बधो को अयधो ?	५८
१७	अपच्चकजाणावरणीय-कोध- माण माया लोम मणुसगह ओरा लियसरीर ओरालियसरीरअगो- घग धजरिसइवररणारायणसघ- डण-मणुसगहपाओग्गाणुपुवि- णामाण को बधो को अयधो ?	४६	२६	मिच्छाद्विपहुडि जाय अणि यद्विवादरसापराह्यपविट्टुवस- समा सखा यथा । अणियद्वि वादरद्वाए चरिमसमय गतूण बधो वोच्छिज्जदि । एदे बधा, अवसेसा अयधो ।	५९
१८	मिच्छाद्विपहुडि जाय असजद सम्माद्विपहुडि बधा । एदे बधा, अव सेसा अयधो ।	४७	२७	हस्स रदि मय दुगुछाण को बधो को अयधो ?	६०
१९	अपच्चकजाणावरणीयकोध माण माया लोमाण को बधो को अयधो ?	४८	२८	मिच्छाद्विपहुडि जाय अपुण्व- करणपविट्टुवसमा सखा, बधा । अपुण्वकरणद्वाए चरिमसमय गतूण बधो वोच्छिज्जदि । एदे बधा अवसेसा अयधो ।	६०
२०	मिच्छाद्विपहुडि जाय सजदा- सजदा बधा । एदे बधा, अव सेसा अयधो ।	४९	२९	मणुस्साउअस्स को बधो को अयधो ?	६१
२१	पुरिसवेद-कोधमजलणाण को बधो को अयधो ?	५२	३०	मिच्छाद्विपहुडि सासणसम्माद्वि असजदसम्माद्विपहुडि बधा । एदे बधा, अवसेसा अयधो ।	६२

सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ नूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
३१	देवाउअस्स को यधो को अबधो ?	६४	यधा । अपुञ्जकरणद्वाए सखेज्जे भागे गतूण यधो घोच्छिज्जदि । एदे यधा, अउसेसा अबधा ।	७३
३२	मिच्छाइट्ठी स्तासणसम्माइट्ठी असजदसम्माइट्ठी सजदासजदा पमत्तसजदा अप्पमत्तसजदा यधा । अप्पमत्तसजदद्वाए सखे ज्जदिभाग गंतूण यधो घोच्छिज्जदि । एदे यधा, अवसेसा अबधा ।	"	३० कदिहि कारणेहि जीवा तित्थयरणामगोद कम्म यधति ?	७६
३३	देवगइ-पच्चिदियजादि घेउठिय-तेजा कम्मइयसरीर समचउरस-सुठान-वेउठियसरीरअगोउग-घण्ण-गध रस-फास देवगइ-याओग्गाणुपुण्ड्रि अगुरुबलहुव-उवघाद परघाद उस्सास-पसत्थ विहायगइ-तस-यादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-थिर-सुम-सुमग-सुस्सर-आदेज्ज-णिमिणणामाण को यधो को अबधो ?	६६	४७ दसणविसुज्जदाए विणयसपण्ण दाए सील उदेसु णिरदिचारदाए आवाम्पसु अपरिहीणदाए सण लवपडिबुज्जणदाए लद्धिसवेग सपण्णदाए जघायामे तथा तथे साहूण पासुअपरिचागदाए साहूण समाहिसधारणाए साहूण वेज्जावच्चजोगजुत्तदाए अरहत भत्तीए बहुसुदभत्तीए पयण भत्तीए पयणवच्छलदाए पव यणप्पभाउणदाए अभिक्खण अभिक्खण णाणोवजोगजुत्तदाए इच्चेदेहि सोलसेहि कारणेहि जीवा तित्थयरणामगोद कम्म यधति ।	७८
३४	मिच्छाइट्ठिपहुडि जाय अपुञ्ज करणपइट्टउवसमा सवा यधा । अपुञ्जकरणद्वाए सखेज्जे भागे गतूण यधो घोच्छिज्जदि । एदे यधा, अवसेसा अबधा ।	"	४२ जस्स इण तित्थयरणामगोद कम्मस्स उदण्ण मदेवासुरमाणु-सस्स लोगस्स अच्चाणिज्जा पूज णिज्जा घट्टणिज्जा णमसणिज्जा णेदारा धम्मतित्थयरा जिणा केधलिणो हवति ।	७९
३५	आहारसरीर-आहारसरीरअगो-घण्णामाण को यधो को अबधो ?	७७	४३ आदेसेण गदियानुवादेण णिरय गदीए णेरइएसु पचणाणाउरण छदसणावरण सादासाद यारस-कसाय-पुरिसवेद-हस्स-रदि-अरदि-सोग भय दुग्घा-मणुम-गदि-पच्चिदियजादि-ओरालिय-	९१
३६	अप्पमत्तसजदा अपुञ्जकरण पइट्टउवसमा सवा यधा । अपुञ्जकरणद्वाए सखेज्जे भागे गतूण यधो घोच्छिज्जदि । एदे यधा, अउसेसा अबधा ।	"		
३७	तित्थयरणामस्स को यधो को अबधो ?	७३		
३८	असजदसम्माइट्ठिपहुडि जाय अपुञ्जकरणपइट्टउवसमा सवा			

सूत्र सरया	सूत्र	शृष्ठ सूत्र सरया	सूत्र	शृष्ठ
तेजा-कम्मइयसरीर-समचउरस- सटाण ओरालियसरीरअगोउग- वज्जरिसहसघडण-चण्ण-गध- रस फास-मणुसगइपाओग्गाणु- पुब्धि अगुरुलहुग-उवघाद-पर- घाद उस्सास पसत्थविहायगदि तस-यादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर- थिराथिर सुहासुह सुभग-सुस्सर आदेज्ज जसकित्ति अजसकित्ति- णिमिणुच्चागोद-पचत्तराइयाण को यधो को अबधो ?			५० मिच्छाइट्ठी सासणसम्माइट्ठी असजदसम्माइट्ठी यथा । पदे यथा, अवसेसा अयथा ।	१०३
५४ मिच्छाइट्ठीप्पहुडि जाव असजद सम्माइट्ठी यथा । पदे यथा, अयथा णत्थि ।			५१ तित्थयरणामकम्मस्स को यधो को अबधो ?	"
५५ णिहाणिहा-पयलापयला-थीण- गिद्धिअणताणुयधिकोध-माण- माया लोभ इत्थियेद-तिरिक्खाउ तिरिक्खगह-चउसटाण-चउसघ- टण-तिरिक्खगइपाओग्गाणु- पुब्धि उज्जोव-अप्पसत्थविहाय- गइ-सुभग-सुस्सर-अणादेज्ज- णाच्चागोदाण को यधो को अबधो ?			५२ असजदसम्माइट्ठी यथा । पदे यथा, अवसेसा अबधो ।	"
५६ मिच्छाइट्ठी सासणसम्माइट्ठी यथा । पदे यथा, अवसेसा अबधो ।			५३ एउ तिसु उउरिमासु पुदवीसु णेय-उ ।	१०४
५७ मिच्छउत्त णउसयवेद-हउसटाण- असपत्तसेवट्टसरीरसघडण- णामाण को यधो को अबधो ?			५४ चउत्थीए पचमीए छट्ठीए पुत्तवीए एव चेय णेदव्वं । णयरि विसेसो, तित्थयर णत्थि ।	१०५
५८ मिच्छाइट्ठी यथा । पदे यथा, अवसेसा अबधो ।			५५ सत्तमाए पुदवीए णेरइया पच णाणाउरणीय-छदसणावरणीय- सादासाइ थारसकसाय-पुरिस- वेद हस्स रदि अरदि-सोग भय- उगछा पच्चिदियजादि ओरालिय तेजा-कम्मइयसरीर समचउरस- सटाण ओरालियसरीरअगोउग- वज्जरिसहसघडण-चण्ण-गध- रस फास अगुरुवलहुव-उवघाद- परघाद उस्सास-पसत्थविहाय- गइ-तस-यादर-पज्जत्त-पत्तेय- सरीर थिराथिर [ सुहा ] सुह सुभग सुस्सर आदेज्ज जसकित्ति अजसकित्ति-णिमिण-पचत्तरा- इयाण को यधो को अबधो ?	१०५
५९ मणुस्साउअस्स को यधो को अबधो ?			५६ मिच्छादिट्ठीप्पहुडि जाव अस जदसम्माइट्ठी यथा । पदे यथा, अयथा णत्थि ।	१०६
			५७ णिहाणिहा-पयलापयला-थीण- गिद्धि अणताणुयधिकोध माण- माया-लोभ-इत्थियेद-तिरिक्ख- गइ चउसटाण-चउमघटण-	

सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
	तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुञ्जी— उज्जोव अप्पसत्थविहायगइ दुभग दुस्सर-अणादेज्ज-णीचागोदाण को बधो को अबधो ?	१०९	किसि णिमिण-उच्चागोद पचंत- राइयाण को बधो को अबधो ?	११०
५८	मिच्छाइट्ठी सासणसम्माइट्ठी यथा । पदे यथा, अवसेसा अबधा ।	"	६४ मिच्छाइट्ठिप्पहडि जाय सजदा सजदा यथा । पदे यथा, अबधा णरिय ।	११३
५९	मिच्छत्त-णयुसयवेद तिरिक्खाउ हुडसठाण असपत्तसेवट्टसघडण णामाण को बधो को अबधो ?	१११	६५ णिद्धानिहा-पयलापयला-थीण- गिद्धि-अणताणुबधिकोध-माण- माया लोभ-इत्थियेद तिरिक्खाउ मणुसाउ तिरिक्खगइ मणुसगइ ओरालियसरीर-चउसठाण ओर लियसरीर-अगोवग पचसघडण- तिरिक्खगइ-मणुसगइपाओ- ग्गाणुपुञ्जी-उज्जोव-अप्पसत्थ- विहायगइ दुभग-दुस्सर-अणा- देज्ज णीचागोदाण को बधो को अबधो ?	११९
६०	मिच्छाइट्ठी यथा । पदे यथा, अवसेसा अबधा ।	"	६६ मिच्छाइट्ठी सासणसम्माइट्ठी यथा । पदे यथा, अवसेसा अबधा ।	"
६१	मणुसगइ-मणुसगइपाओग्गाणु- पुञ्जी-उच्चागोदाण को बधो को अबधो ?	"	६७ मिच्छत्त-णयुसयवेद-णिरयाउ- णिरयगइ-पइदिय थीइदिय तीइ- दिय-चउरिंदियजादि हुडसठाण- असपत्तसेवट्टसघडण-णिरय- गइपाओग्गाणुपुञ्जि-आदाव- थावर सुहुम अपत्तजस साहारण सरीरणामाण को बधो को अबधो ?	१२३
६२	सम्मामिच्छाइट्ठी असजदसम्मा इट्ठी यथा । पदे यथा, अवसेसा अबधा ।	११२	६८ मिच्छाइट्ठी यथा । पदे यथा, अवसेसा अबधा ।	"
६३	तिरिक्खगदीण तिरिक्खा पचिं- दियतिरिक्खा पचिंदियतिरिक्ख- पज्जत्ता पचिंदियतिरिक्खजोणि णीसु पचणाणावरणीय उदसणा घरणीय-सादासाद-अट्टकसाय- पुरिसवेद-इस्स-रदि अरादि-सोग भय-दुमुछा-देवगइ-पचिंदिय- जादि-वेउधिय-तेजा-कम्मइय- सरीर-समचउरससठाण-वेउ- धियसरीर-अगोवग चण्ण-गध- रस-फास-देवगइपाओग्गाणु- पुञ्जी अगुहवलहव उयघाद-पर- घाद-उस्सास-पसत्थविहायगइ- तस-चादर पज्जत्त-पत्तेयसरीर- [ थिरा ] थिर-सुहासुह सुभग सुस्सर आदेज जन्मविसि अज्जम		६९ अपच्चक्खणकोध माण-माया- लोभाण को बधो को अबधो ?	१२५
			७० मिच्छाइट्ठिप्पहडि जाय अस जदन्मम्माइट्ठी यथा । पदे यथा, अवसेसा अबधा ।	"



हस्त रदि अरदि-सोग-भय-  
दुगुछा-मणुस्साउ-मणुनगर-  
पंचिदियजादि ओरालिय-तेजा  
कम्मइयसरीर-समचउरस-  
सठाण-ओरालियसरीरअगो-  
घग यज्जरिसहसघडण-वण्ण-  
गध रस फास-मणुसगइपाओ-  
ग्गानुपु-नी अगुरुमलहुअ-उय-  
याद् परघाद् उस्साम्-परतय-  
विहायगइ तस याद्-पजत्त-  
पत्तेयसरीर धिराधिर सुहासुह  
सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-जम्-  
फित्ति-अजसकित्ति-णिमिण-  
तित्थयर उच्चागोद् पचतराइ-  
याण को वधो को अबधो ?

१५५

१०१ असजदसम्मादिद्वी वधा। अबधा  
णत्थि।

१५६

१०२ इदियाणुयादेण परदिया बादरा  
सुहुमा पज्जत्ता अपज्जत्ता  
वीइदिय तीइदिय-चउरिदिय-  
पज्जत्ता अपज्जत्ता पंचिदिय  
अपज्जत्ताण पंचिदियतिरिक्ख  
अपज्जत्तभगो।

१५८

१०३ पंचिदिय-पंचिदियपज्जत्तपसु  
पचणाणायरणीय चउदसणा-  
वरणीय जसकित्ति-उच्चागोद्  
पचतराइयाण को वधो को  
अवधो ?

१७०

१०४ मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव सुहुम  
सापरइयसुद्धिसजदेसु उय  
समा खवा वधा। सुहुमसाप  
राइयसुद्धिसजदइय चरिम  
समय गतूण वधो घोच्छि  
ज्जदि। एदे वधा, अवसेसा  
अवधा।

१७२

१०५ निहाणिदा पयलापयला धीण-  
गिदि अणताणुयधिफोब माण-  
माया लोभ-इत्थियेद्-तिरि-  
क्खाउ तिरिक्खगइ-चउसठाण  
चउसघडण तिरिक्खगइपाओ  
ग्गानुपुव्वा उज्जाव-अप्पसत्थ-  
विहायगइ दुमग दुस्सर अणा-  
देज्ज णीच्चागोदाण को वधो  
को अबधो ?

१७३

१०६ मिच्छाइट्ठी सासणसम्माइट्ठी  
वधा। एदे वधा, अवसेसा  
अवधा।

”

१०७ निहा पयलाण को वधो को  
अवधो ?

१७७

१०८ मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव अपुव्व  
करणपविट्ठसुद्धिसजदेसु उय  
समा खवा वधा। अपुव्वकरण  
सजदइय सरेज्जदिम भाग  
गतूण वधो घोच्छिज्जदि। एदे  
वधा, अवसेसा अवधा।

”

१०९ सादावेदणीयस्स को वधो को  
अवधो ?

”

११० मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव सजोगि  
केवली वधा। सजोगिकेवलि  
अइय चरिमसमय गतूण वधो  
घोच्छिज्जदि। एदे वधा, अव  
सेसा अवधा।

१७८

१११ असादावेदणीय-अरदि-सोग-  
अधिर असुद्-अजसकित्ति-  
णामाण को वधो को अबधो ?

”

११२ मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव पमत्त  
सजदोत्ति वधा। एदे वधा,  
अवसेसा अवधा।

१७९

सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ	
११३	मिच्छत्त-णपुसयवेदं गिरयाउ गिरयगइ एइदिय धीइदिय तीइ दिय-चउरिंदियजादि हुडसठाण असपत्तसेउट्टसघडण गिरयाणु पुग्गी आदाय थावर-सुहुम अप-ज्जत्त—साहारणसरीरणामाण को बधो को अबधो ?	१८०	१२१	माण मायासजलणाण को बधो को अबधो ?	१८५
११४	मिच्छाइट्ठी बधा । एदे बधा, अवसेसा अबधा ।	”	१२२	मिच्छादिट्ठिप्पहुडि जाव आणि यट्ठी उवसमा खवा बधा । अणियट्ठियादरद्दाए सेसे सेसे सखेज्जे भागे गतूण बधो वोच्छिज्जदि । एदे बधा, अवसेसा अबधा ।	”
११५	अपच्चक्खाणावरणीयकोध—माण-माया-लोभ-मणुसगइ—ओरालियसरीर—ओरालिय—सरीरअगोवग यज्जरिसहवहरणारायणसरीरसघडण-मणुस-गइपाओग्गाणुपुयिणामाण को बधो को अबधो ?	१८०	१२३	लोभसजलणस्स को बधो को अबधो ?	”
११६	मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव अस जदसम्मादिट्ठी बधा । एदे बधा, अवसेसा अबधा ।	१८३	१२४	मिच्छादिट्ठिप्पहुडि जाव आणि यट्ठी उवसमा खवा बधा । अणियट्ठियादरद्दाए चरिम समय गतूण बधो वोच्छिज्जदि । एदे बधा, अवसेसा अबधा ।	”
११७	पच्चक्खाणावरणकोध माण—माया लोभाण को बधो को अबधो ?	१८४	१२५	हस्स-रदि भय दुग्गुछाण को बधो को अबधो ?	१८६
११८	मिच्छादिट्ठिप्पहुडि जाव सजदा सजदा बधा । एदे बधा, अवसेसा अबधा ।	”	१२६	मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव अपुञ्च करणपविट्ठुवसमा खवा बधा । अपुञ्चकरणद्दाए चरिमसमय गतूण बधो वोच्छिज्जदि । एदे बधा अवसेसा अबधा ।	”
११९	पुरिसवेद कोधसजलणाण को बधो को अबधो ?	”	१२७	मणुस्साउअस्स को बधो को अबधो ?	”
१२०	मिच्छादिट्ठिप्पहुडि जाव आणि यट्ठियादरसापराइयपविट्ठुवसमा खवा बधा । अणियट्ठियादरद्दाए सेसे सखेज्जाभागे गतूण बधो वोच्छिज्जदि । एदे बधा, अवसेसा अबधा ।	”	१२८	मिच्छाइट्ठी सासणसम्माइट्ठी असजदसम्माइट्ठी बधा । एदे बधा, अवसेसा अबधा ।	”
			१२९	देवाउअस्स को बधो को अबधो ?	१८७
			१३०	मिच्छाइट्ठी सासणसम्माइट्ठी असजदसम्माइट्ठी सजदासजदा पमत्तमजदा अप्पमत्तसजदा बधा । अप्पमत्तद्दाए सखे	

सूत्र सप्तम्या

सूत्र

पृष्ठ सूत्र सप्तम्या

सूत्र

पृष्ठ

जदिम भाग गतूण व वा वोचिउ  
चदि । एदे वधा, असेसा  
अवधा ।

१८७

१३१ देवगद्-पचिदियजादि वेडा उय  
तजा उम्मइयसरण समउउरस  
सठाण वेडा उयसरीर उगाग-  
वणण मय रस फास देवगद्  
पा वेगगाणुपुत्री उगुग्गउव-  
उयवाद् परघाद्-उम्माम-  
पसवधिहायगद्-तल-जादर-  
पञ्जत्त पत्तेयसरीर विर-सुभ  
सुभय सुस्सर गादेउज णिमिण  
णामाण को वधो को अवधा ?

”

१३२ मिच्छाद्विपट्टि जाय अपुत्र  
करणपइदुउममा मया वधा ।  
अपुत्रकरणद्वारे ससेजे भाग  
गतूण वधो वोचिउ-जदि । एदे  
वधा, अवसेसा अवधा ।

१८८

१३३ आहारसरीर आहारअगोवग-  
णामाण को वधो को  
अवधो ?

१९१

१३४ अप्पमत्तजडा अपुत्रकरण  
पइदुउवसमा सवा उवा ।  
अपुत्रकरणद्वारे ससेजे भाग  
गतूण वधो वोचिउ-जदि । एदे  
वधा, अवसेसा अवधा ।

”

१३५ तित्थयरणामाण को उवो को  
अवधो ?

”

१३६ असजदम्मदिट्ठिपट्टि जाय  
अपुत्रकरणपइदुउममा सवा  
वधा । अपुत्रकरणद्वारे ससेजे  
भाग गतूण वधो वोचिउ-जदि ।  
एदे वधा, अवसेसा अवधा ।

”

१३७ कायाणुवादेण पुढविवाइय  
आउवाइय-वणणफदिवाइय-  
णिगोदणीय-जादर-सुहम-  
पञ्जत्तापञ्जत्ताण गा-उरण  
फदिवाइयपत्तेयसरीरपञ्जत्ता  
पञ्जत्ताय च पचिदियनिगिर  
अय जत्तभगो ।

१९०

१३८ तेउवाइय-आउवाइय-गा-  
सुहम पञ्जत्तापञ्जत्ताण सा  
चेय भगो । णरि पिसेसो  
मणुस्ताउ मणुसगइ मणुसगइ  
पा वेगगाणुपुत्री-उउगागोद्  
णरि ।

१९९

१३९ तसवाइय तमवाइयपञ्जत्ताण  
मात्र णद्वय जाय तित्थये  
त्ति ।

२००

२० जोगाणुवादेण पव्वमणजागि  
पव्वचिजागि कायजोगीसु जोग  
णेयय जाय ति थयेर ति ।

२०१

१४१ सादवेदणीयस्स को वधो को  
अवधो ? मिच्छाद्विपट्टि  
जाय सजोगिक्खली उवा ।  
एदे वधा अवधा णत्थि ।

२०२

१४२ जेरात्थियमायजोगीण मणुस-  
गइभगो ।

२०३

१४३ णरि पिसेसो सादोउद्  
णत्थिस्स मणुवेगिभगो ।

२०४

१४४ थोरात्थियमिस्सकायजागीसु  
पव्वणाणारणीय छदसणाउर-  
णीय-असादवेदणीय-वारस-  
कसाय-पुरिमवेद हस्स-इदि-  
अरदि सोग मय दुगुछा-पचि-  
दियजादि तेवा कम्मइयसरण-  
समउउरससठाण-वणण-गध

सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
	रस फाल-अशुभबलहुअ-उप- पाद परघाद उस्साम-पसत्त- विहायगइ तस पादर-पज्जत्त- पत्तेयसरीर यिरायिर सुहासुह सुभग-सुस्मर-आदिज-जस- कित्ति णिमिण उच्चागोद पच- तरादयाण को वधो 'को अवधो ?	२०५	साहारणसरीरणामाण को वधो को अवधो ?	२१३
१४५	मिच्छाइट्ठी सासणमग्गाइट्ठी असज्जसग्गाइट्ठी वधा । एदे वधा, अवसेसा अवधा ।	२०६	१' १ मिच्छाइट्ठी वधा । एदे वधा, अवसेसा अवधा ।	"
१४६	णिहाणिहा-पयलापयला थीण- गिद्धि-अणताणुअधिक्कोध माण माया लोभ इत्थियेद-तिरिक्ख- गइ मणुसंगइ ओरालियसरीर- चउसटाण ओरालियसरीर-अगो- वग पचसघटण तिरिक्खगइ- मणुसंगइपाओग्गाणुपु-री- उज्जोव अप्सत्थविहायगइ- दुभग-दुस्सर अणादेज्ज णीचा- गोदाण को वधो को अवधो ?	२०९	१५२ देवाइ वेडियसरीर वेडिय सरीर-अगोवग-देवगइपाओ- ग्गाणुपु-री तिवयरणामाण को वधो को अवधो ?	२१४
१४७	मिच्छाइट्ठी सासणमग्गाइट्ठी वधा । एदे वधा, अवसेसा अवधा ।	"	१५३ असज्जसग्गाइट्ठी वधा । एदे वधा, अवसेसा अवधा ।	२१५
१४८	सादावेदणीयस्स को वधो को अवधो ?	२१२	१५४ वेडियकायजोगीण देवगईप भगो ।	"
१४९	मिच्छाइट्ठी सासणमग्गाइट्ठी असज्जसग्गाइट्ठी सजोगि केवली वधा । एदे वधा, अवधा णत्थिव ।	"	१५५ वेडियमिस्सकायजोगीण देव गइभगो ।	२१२
१५०	मिच्छात्त-णउमयवेद-तिरि- फलाउ मणुसाउ-चदुजादि हुड- सटाण अमपत्तमेवट्टमपट्टण- आदाव धावर-सुट्टम अज्जत्त-	"	१५६ णवरि विसेसो वेट्ठाणियासु तिरिक्खताउण णत्थिव मणु स्साउण णत्थिव ।	२०९
			१५७ आहारकायजोगि आहारमिस्स कायजोगीसु पचणाणावरणीय- उट्टमणावरणीय-सादासाद- चदुसज्जलण पुरिस्सवेद-दस्स- रदि अरदि चोग-भय-दुगुळा- देवाउ देवगइ पचिदियजादि- वेडिय-तेजा-कम्मइयमरीर- समचउरससटाण-वेडिय- सरीर-अगोवा उण्ण-अच-रस- फाल-देवगइपाओ-ग्गाणुपु-री- अशुभबलहुअ-उपघाद परघाद- स्साम पमर-विहायगइ-नस- घादर पज्जत्त-पत्तेयसरीर- यिरायिर-सुहासुह-सुभग- सुस्मर आदिज-जमकित्ति- अनमकित्ति णिमिण तिथयर- उच्चागो-पचतरादयाण को	

सूत्र सख्या	सूत्र	पृष्ठ सूत्र सख्या	सूत्र	पृष्ठ
	बधो को अबधो ?	२२०	१६३ सादावेदणीयस्स को बधो को अबधो ?	२३८
१५८	पमत्तसजदा बधा । पदे बधा, अबधा णत्थि ।	२३०	१६४ मिच्छाहट्ठी सासणसम्माहट्ठी असजदसम्माहट्ठी सजोगि केवली बधा । पदे बधा, अबधा णत्थि ।	२३९
१५९	कम्मइयकायजोगीसु पचणाणा वरणीय—छद्दसणावरणीय—असादावेदणीय—धारसकसाय—पुरिसवेद—हस्स रदि—अरदि—सोग भय दुगुछा मणुसगह—पचिदियजादि ओरालिय तेजा—कम्मइयसरीर—समचउरस—सठाण ओरालियसरीरअगोवग वज्जरिसहसघडण घण्ण—रथ—रस—फास मणुसगहपाओग्माणु पुब्बि अगुरुवलहुत्त—उवघाद—परघादुसास पसत्थयिहायगह तस दादर पज्जत्त पत्थेयसरीर धिराधिर सुहासुह—सुभग—सुस्सर आदेज्ज—जसवित्ति—अजसकित्ति—णिमिणुच्चगोद—पचतराइयाण को बधो को अबधो ?	२३२	१६५ मिच्छत्त—णधुमयवेद चउजादि हुडसठाण—असपत्तमवट्टसघ—एण आदाघ धाथर—सुदुम अप—उज्जत्तसाहारणसरीरणामाण को बधो को अबधो ?	२४०
१६०	मिच्छाहट्ठी सासणसम्माहट्ठी असजदसम्माहट्ठी बधा । पदे बधा, अबसेसा अबधा ।	२३३	१६६ मिच्छाहट्ठी बधा । पदे बधा, अबसेसा अबधा ।	२४०
१६१	णिहाणिहा—पयलापयला धीण—मिद्धि अणत्ताणुबधिकोघ माण—माया लोम इत्थियेद तिरिक्कस—रह—चउसठाण—चउसघट्टण—तिरिक्कउरगहपाओग्माणुपुब्बि—उज्जोव अप्पसत्थयिहायगह—दुमग दुस्सर अणदेज्ज—णीचा गोदाण को बधो को अबधो ?	२३७	१६७ देवगइ वेउवियसरीर—वेउ—वियसरीरअगोवग—देउमइ—पाओग्माणुपुब्बि—तिरिथयर—णामाण को बधो को अबधो ?	२४१
१६२	मिच्छाहट्ठी सासणसम्माहट्ठी बधा । पदे बधा, अबसेसा अबधा ।	२३७	१६८ असजदसम्माहट्ठी बधा । पदे बधा, अबसेसा अबधा ।	२४१
			१६९ वेदानुवादेण इत्थियेद पुरिस वेद णधुसयवेदएत्तु पचणाणा वरणीय—चउदसणावरणीय—सादावेदणीय—चहुसजठण—पुरिसवेद जसकित्ति—उच्चागोद पचतराइयाण को बधो को अबधो ?	२४२
			१७० मिच्छाहट्ठिप्पहुडि जाय अणि यट्ठिउवसमा खवा बधा । पदे बधा, अबधा णत्थि ।	२४५
			१७१ वेदानी ओघ ।	२४५
			१७२ णिहा पयला य ओघ ।	२४८
			१७३ असादावेदणीयमोघ ।	२४९
			१७४ पक्कणी ओघ ।	२४९

सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
१७५	अपचक्षणाणावरणीयमोघ ।	२५१	१८६ लोमसंजलणस्त को यधो को अयधो ?	२६८
१७६	पचक्षणाणावरणीयमोघ ।	२५३	१८७ अणियट्टी उवसमा खवा यधा । अणियट्टियादरद्दाए चरिम समय गतूण यधो घोच्छिज्जदि । एदे यधा, अयसेसा अयधा ।	२६९
१७७	हस्त रदि जाव तित्थयेरे त्ति ओघ ।	"	१८८ कसायाणुवादेण कोधकसाईसु पचणाणावरणीय [ चउदसणा यरणीय-सादावेदणीय ] चउदसज लण जसकित्ति उच्चागोद पच-राइयाण को यधो को अयधो ?	"
१७८	अवगदपेदपसु पचणाणावरणीय-चउदसणावरणीय जस-कित्ति-उच्चागोद पचतराइयाण को यधो को अयधो ?	२६४	१८९ मिच्छाइट्टिपहुडि जाय अणियट्टि त्ति उवसमा खवा यधा । एदे यधा, अयधा णत्थिय ।	२७०
१७९	अणियट्टिपहुडि जाव सुहुम सापराइयउवसमा खवा यधा । सुहुमसापराइयसुद्धिसजदद्दाए चरिमसमय गतूण यधो घोच्छिज्जदि । एदे यधा, अवसेसा अयधा ।	"	१९० वेट्टाणी ओघ ।	२७२
१८०	सादावेदणीयस्त को यधो को अयधो ?	२६५	१९१ जाय पचक्षणाणावरणीयमोघ ।	२७४
१८१	अणियट्टिपहुडि जाव सजोगि केरली यधा । सजोगिकेवलि अद्दाए चरिमसमय गतूण यधो घोच्छिज्जदि । एदे यधा, अवसेसा अयधा ।	"	१९२ पुरिसवेदे ओघ ।	२७५
१८२	कोधसजलणस्त को यधो को अयधो ?	२६६	१९३ हस्त रदि जाय तित्थयेरे त्ति ओघ ।	"
१८३	अणियट्टी उवसमा खवा यधा । अणियट्टिबादरद्दाए सखेज्जे भागे गतूण यधो घोच्छिज्जदि । एदे यधा, अयसेसा अयधा ।	"	१९४ भाणकसाईसु पचणाणावरणीय चउदसणावरणीय सादा-वेदणीय तिणिसजलण-जस-कित्ति-उच्चागोद-पचतराइयाण को यधो को अयधो ?	"
१८४	माण मायासजलणाण को यधो को अयधो ?	२६७	१९५ मिच्छाइट्टिपहुडि जाय अणियट्टी उवसमा खवा यधा । एदे यधा, अयधा णत्थिय ।	२७६
१८५	अणियट्टी उवसमा खवा यधा । अणियट्टिबादरद्दाए सेसे सेसे सखेज्जे भागे गतूण यधो घोच्छिज्जदि । एदे यधा, अवसेसा अयधा ।	"	१९६ वेट्टाणि जाव पुरिसवेदे कोध सजलणाणमोघ ।	"
			१९७ हस्त-रदि जाय तित्थयेरे त्ति ओघ ।	२७७
			१९८ मायकसाईसु पचणाणावरणीय चउदसणावरणीय सादा-वेदणीय-वोणिसजलण-जस-	

सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
	किति-उच्छ्रागोद पचतराह्याण को बधो को अयधो ?	२७३	दियजादि ओरालिय वेउदिय-तेजा कम्मइयसरर पचसठाण ओरालिय वेउदियसरर अगो-वग पचसघडण वण्ण गध रन काम् तिरिक्कगइ-मणुसगइ-देवगइ पाभोगाणुपु-मी अगुसभ लहुव उवघाद परघाद उस्तान उज्जोव दोत्रिहायगइ-तस-यादर पज्जस-पत्तेयसरर-प्रिथिर-सुहासुइ-सुमग-दुमग सुस्सर दुस्सर आदज्ज-अणादिज्ज जसकिति-अजस-किति णिमिण णिसुच्छ्रागोद-पचतराह्याण- को बधो को अयधो ?	२८०
१०९	मिच्छाइट्ठिप्पहुटि जाव अणि यट्ठी उवसमा सवा बधा । एदे बधा, अयधा णत्थि ।	"	२०८ मिच्छाइट्ठी सान्णसम्माइट्ठी बधा । एदे बधा, अयधा णत्थि ।	"
२००	वेट्ठाणि जाव माणसजलणे त्ति ओघ ।	"	२०९ एकवट्ठाणी ओघ ।	२८५
२०१	हस्म-रदि जाव तित्थयरे त्ति ओघ ।	२७८	२१० आभिणिपोहिय-सुद-—पोहि-णाणीसु पचणाणावरणीय चउदसणावरणीय जसकिति उच्चा रोद पचतराह्याण को बधो को अयधो ?	२८६
२०२	लोमकसारंसु पचणाणावरणीय चउदसणावरणीय सदावेदणाय जसकिति उच्छ्रागोद पचतराह्याण को बधो को अयधा ?	"	२११ असज्जदसम्माइट्ठिप्पहुटि जाव सुहुमसापराह्यउवसमा सवा बधा । सुहुमसापराह्यअद्दाए चरिमसमय गतूण बधो बोत्थि उज्जदि । एदे बधा, अयसेसा अयधा ।	"
२०३	मिच्छाइट्ठिप्पहुटि जाव सुहुमसापराह्यउवसमा सवा बधा । एदे बधा, अयधा णत्थि ।	"	२१२ जिहा पयला य ओघ ।	२८७
२०४	सेस जाव तित्थयरे त्ति ओघ ।	"	२१३ सादावेदणीयस्स को बधो को अयधो ?	२८८
२०५	अस्सरसु सादावेदणीयस्स को बधो को अयधो ?	"		
२०६	उवसतवसापरीदरागछदुमत्था खीणअमायवीदरागउदुमत्था सजोगिकेवली बधा । सजोगि केवल्लअद्दाए चरिमसमय गतूण बधो बोत्थि उज्जदि । एदे बधा, अयसेसा अयधा ।	२७९		
२०७	णाणाणुवादेण मदिअण्णाणि सुदअण्णाणि विभ्रगणाणीसु-पचणाणावरणीय जवदसणा-वरणीय-सादानाद-सोल्ल-कमाय अट्टणेक्कसाय-तिरि-फलाउ-मणुसाउ-देवाउ तिरि-फलाउ-मणुसगइ देवगइ पचि-			

सूत्र सत्या	सूत्र	पृष्ठ सूत्र सत्या	सूत्र	पृष्ठ	
२१४	असजदमग्मादिद्विप्लुडि जात्र खीणफसायत्रीदरागछदुमत्या वधा । एदे वधा, अत्रधा णिय ।	२८८	२२४	सजागिक्कवली वधा । सजागिक्कवलि अद्दाए चरिमसमय गतूण उघो णोच्छिज्जदि । एदे उघा, अत्रसेमा अत्रधा ।	२९७
२१५	सेसमोत्र जात्र तित्थयेर-त्ति । णत्ररि असेजदमग्मादिद्विप्लुडि त्ति भाणिद्वय ।	२८९	२२५	सजमाणुवादेण सजदेसु मण पज्जणणिभगो ।	२९८
२१६	मणपत्रणणांसु पचणाणा वरणीय-चउदसणावरणीय-जसकित्ति उद्यागोद पचतराइ-याण को वधो को अत्रधो ?	२९५	२२६	णवरि त्रिसेमो सादावेदणीयस्स को उघो को अत्रधो ?	"
२१७	पमत्तसजदप्पहुडि जात्र सुधुम सापराहयउवसमा सवा वधा । सुधुमसापराइयसजदप्पाए चरिमसमय गतूण उघोच्छिज्जदि । एदे उघा, अत्रसेमा अत्रधा ।	"	२२७	पमत्तसजदप्पहुडि जात्र सजागिक्कवली वधा । सजागिकेवलि अद्दाए चरिमसमय गतूण वधो णोच्छिज्जदि । एदे वधा, अत्रसेमा अत्रधा ।	"
२१८	णिद्दा पयलाण को वधो को अत्रधो ?	"	२२८	सामाइयछेदोउट्टाउणसुद्धि-सजदेसु पचणाणावरणीय-सादावेदणीय-लोभसजलण-जमन्ति उच्छागोद पचतराइयाण को वधो को अत्रधो ?	"
२१९	पमत्तसजदप्पहुडि जात्र उणुत्र करणपइद्वउवसमा सवा वधा । उणुत्रकरणद्दाए संखेज्जदिम भाग गतूण वधो णोच्छिज्जदि । एदे वधा, अत्रसेमा अत्रधा ।	२९६	२२९	पमत्तसजदप्पहुडि जात्र अणि यट्टिउवसमा सवा वधा । एदे वधा, अत्रधा णत्थिय ।	२९९
२२०	सादावेदणीयस्स को उघो को अत्रधो ?	"	२३०	सेसं मणपज्जणणिभगो ।	३००
२२१	पमत्तसजदप्पहुडि जात्र खीण फसायत्रीपरायछदुमत्या वधा । एदे वधा, अत्रधा णत्थिय ।	"	२३१	परिहारसुद्धिसजदेसु पचणाणावरणीय छदसणावरणीय सादावेदणीय-चहुसजुलण-पुरिमवेद-हस्स-रदि-भय-दुगुछा वेवगइ-पच्चिदियजादि-वेउत्थिय तेजा-अम्मइयसरीर-समचउरससठाण-वेउत्थिय-सरीरअगोत्रग वणण गध-रस-फास देवाणुपुवि अगुरुत्तहुअ उवघाद परघाहुम्सास पसत्थ-विहायगइ तस पादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर थिर-सुह-सुभग-	"
२२२	सेसमोत्र जात्र तित्थयेर-त्ति । णवन्नि-पमत्तसजदप्पहुडि त्ति भाणिद्वय ।	"			
२२३	वेउलणाणींसु सादावेदणीयस्स को वधो को अत्रधो ?	२९७			



सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ	सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
	सुस्मर-आदेज्ज-जसकित्ति- णिमिण तित्थयरुच्चागोद-पच तराहयाण को बधो को अबधो ?	३०३	२४२	उयसतकमायवीदरागछदुमत्था खीणकसायथीयरायछदुमत्था सजोगकेयली यधा । सजोग केयलिअद्याए चरिमसमय गतूण [ यधो ] योच्छिज्जदि । एदे यधा, अयसेसा अबधा ।	३०९
२३२	पमत्त अप्पमत्तसजदा बधा । एदं बधा, अबधा णत्थि ।	३०४	२४३	सजदासजदेसु पचणाणाघर णीय छदसणावरणीय-साग्- साद् मट्टकसाय-पुरिसवेद- हस्स-रदि-सोग-भय-दुगुछ- देयाउ देवगइ पच्चिदियजादि- येउधिययत्तेजा-कम्मइयसरीर- समचउरससठाण-येउधिय- सरीरअंगोधग-यण्ण-गध-रस- फास-देवगइपाओग्गाणुप्प-री- अगुदपलहुय-उवघाद् परघाद्- उस्सास-पसत्थविहायगइ-सस बाद्द-पज्जत्त-पत्तेयसरीर- धिरायिद-सुहासुह-सुभग- सुस्सर-आदेज्ज-जसकित्ति- अजसकित्ति-णिमिण-तित्थ- यरुच्चागोद पचतराहयाण को बधो को अबधो ?	३०९
२३३	असादावेदणीय-अरदि-सोग- अधिर-असुह-अजसकित्ति- णामाण को बधो को अबधो ?	३०५			
२३४	पमत्तसजदा बधा । एदं यधा, अयसेसा अबधा ।	३०६			
२३५	देघाउअस्स को बधो को अबधो ?	"			
२३६	पमत्तसजदा अप्पमत्तसजदा बधा । अप्पमत्तसजदद्द्याए सखेज्जे भागे गतूण यधो योच्छिज्जदि । एदे यधा, अय सेसा अबधा ।	३०७			
२३७	आहारसरीर-आहारसरीरगो- चगणामाण को बधो को अबधो ?	"			
२३८	अप्पमत्तसजदा बधा । एदे यधा, अयसेसा अबधा ।	"	२४४	सजदामजदा यधा । एदे यधा, अबधा णत्थि ।	"
२३९	सुहुमसापराहयसुद्धिसजदेसु पचणाणाघरणीय-चउदसणा- वरणीय-सादावेदणीय-जस- कित्ति-उच्चागोद-पचतराहयाण को बधो को अबधो ?	३०८	२४५	असजदेसु पचणाणाघरणीय छदसणावरणीय-सादासाद्- वारसकसाय पुरिसवेद-हस्स- रदि-अरदि-सोग भय दुगुछा- मणुसगइ-देवगइ-पच्चिदिय- जादि-ओरालिय येउधिययत्तेजा कम्मइयसरीर-समचउरस- सठाण ओरालिय येउधियअगो धग-यज्जरिसहसघडण-यण्ण- गध-रस-फास-मणुसगइ-देवगइ	
२४०	सुहुमसापराहयउयममा खधा यधा । एदे यधा, अबधा णत्थि ।	"			
२४१	अहास्सादविहारसुद्धिसजदेसु सादावेदणीयस्स को बधो को अबधो ?	३०९			

सूत्र सत्या	सूत्र	पृष्ठ सूत्र सख्या	सूत्र	पृष्ठ
पाशोग्गानुपुत्री अगुरुअलहुअ उवघाद-परघाद-उस्मास- पसत्यविहायगइ-तस-यादर- पज्जत्त पत्तेयसरीर-थिरायिर- सुहासुह सुभग-सुस्तर जादेज्ज जसकित्ति प्रजसकित्ति णिमिणु च्चागोद पचतराइयाण को बधो को अबधो ?		३१०	णीलेस्सिय काउलेस्सियाणम सजदभगो ।	३१०
२४६ मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव अस जदसम्माइट्ठी यथा । एदे यथा, अवघा णत्थि ।		"	२५९ तेउलेस्सिय-पम्मलेस्सियसु- पचणाणावरणीय छदसणावर- णीय-सादावेदणीय-चउसज- लण पुरिसवेद-इस्स रदि-भय- दुगुछा देवगइ-पच्चिदियजादि- वेउत्तिय-तेजा-कम्मइयसरीर- समचउरससठाण-उत्तिय- सरीर-अगोत्तग वण्ण गध-रस- फास-देउगइपाओग्गानुपुत्री- अगुरुअलहुअ-उवघाद-परघादु स्सास पसत्यविहायगइ-तस- यादर पज्जत्त-पत्तेयसरीर- थिर सुह सुभग सुस्तर जादेज्ज जसकित्ति णिमिणुच्चागोद पच तराइयाण को बधो को अबधो ?	३१३
२४७ वेट्ठानी ओघ ।		३१७	२६० मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव अप्प मत्तसजदा यथा । एदे यथा, अवघा णत्थि ।	"
२४८ एकट्ठानी ओघ ।		"	२६१ वेट्ठानी ओघ ।	३३७
२४९ मणुस्साउ वेउत्त-जाण को उधो को अबधो ?		"	२६२ अत्तादेदणीयमोघ ।	३३९
२५० मिच्छाइट्ठी मासणसम्माइट्ठी असजदसम्माइट्ठी यथा । एदे यथा, अवसेसा अबघा ।		३१८	२६३ मिच्छत्त-णउत्तययेद एइदिय- जादि हुउसठाण अत्तपत्तसजद सघडण-आदाव-थाउरणामाण को बधो को अबधो ?	३४०
२५१ तित्थयरणामस्म को बधो को अबधो ?		"	२६४ मिच्छाइट्ठी यथा । एदे यथा, अवसेसा अबघा ।	"
२५२ असजदसम्माइट्ठी यथा । एदे यथा, अवसेसा अबघा ।		"	२६५ अपचचक्खणाणवरणीयमोत्र ।	३४१
२५३ दसणाणुपादेण चक्रवुदम्भणि अचक्रवुदसणीणमोघ णेदन्न जाव तित्थयेरत्ति ।		"	२६६ पच्छदक्खणचउक्कमोघ ।	३४३
२५४ णयरि विसेसे, सादावेदणी यस्स को बधो को अबधो ?		३१९	२६७ मणुस्साउअस्स ओघभगो ।	"
२५५ मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव मीण वसायवीपराय उदुमत्था यथा । एदे यथा, अवघा णत्थि ।		"	२६८ देघाउअस्म ओघभगो ।	३४४
२५६ ओहिदसणी ओहिणाणिभगो ।		"		
२५७ केउलदसणी केउलणाणिभगो ।		"		
२५८ लेस्साणुवादेण किण्हलेस्सिय				

सूत्र सारया	सूत्र	पृष्ठ सूत्र सारया	सूत्र	पृष्ठ
२६९ आहारसरीर आहारसरीरभगो यगणामाण को यधो को अबधो? अप्पमत्तसज्जा यधा। एदे यधा, अबसेसा अबधा।	३२४	अणादेज्ज जसक्खि-अजस- क्खि मिमिण णीचुन्वागोद- पच्चतराहयाण को यधो को अबधो?	३५९	
२७० तिथयरणामाण को यधो को अबधो? असज्जदसम्माइट्ठी जाव अप्पमत्तसज्जा यधा। एदे यधा, अबसेसा अबधा।	३३५	२७३ खये एदे यधा, अबधा णत्थि।	”	
२७१ पम्मलेस्सिण्णमु मिच्छत्तदडओ णेरइयभगा।	३३६	२७८ सम्मत्ताणुवादेण सम्माइट्ठीसु खइयसम्माइट्ठीसु आभिणि योहियणाणिमपो।	३६३	
२७२ सुक्खलेस्सिण्णसु जाव तिथयरे त्ति भोधभगा।	”	२७९ णवरि सादावेदणीयस्स को यधो को अबधो?	३६४	
२७३ णवरि त्तिसेसो सादावेदणीयस्स मणजोगिभगो।	३५६	२८० असज्जदसम्माइट्ठिण्णहुडि जाव सजोगिण्णली यधा। सजोगि केवल्लिअद्वए चरिमसमय गतुण यधो वोच्छिज्जदि। एदे यधा, अबसेसा अबधा।	”	
२७४ वेट्ठाणि-एक्खट्ठाणीण णवगेज्ज विमाणवासियदेवाण भगो।	”	२८१ वेदयसम्माइट्ठीसु पचणाणा वरणीय छइसणावरणीय सादा वेदणीय-चउसज्जलण-पुरिस- वेद हम्मस-रदि भय दुगुछ-देव- गदि पचिदियजादि-वेडीयय- तेजा कम्मइयसरीर समचउरस सटाण वेडीययभगोवग वण्ण- गध रस-फास-देवगइपओ- ग्गाणुपुक्की-अगुरुवल्लहुव-उव- घाद-परघाद उस्सास-पसत्थ- विहायगइ तस थादर-पज्जत्त- पत्तेयसरीर धिर-सुभ-सुभग- सुस्सर-आदेज्ज-जसक्खि- मिमिण त्तिथयण्णच्चागोद पच तराहयाण को यधो को अबधो?	”	
२७५ भवियाणुवादेण भवसिद्धियाण मोघ।	३५	२८२ असज्जदसम्माइट्ठिण्णहुडि जाव अप्पमत्तसज्जा यधा। एदे यधा, अबधा णत्थि।	३६५	
२७६ अभयसिद्धिपरु पचणाणावर- णीय णवदसणावरणीय सादा- साद मिच्छत्त-सोलसयसाय- णउणोक्साय-चदुआउ चदुगइ पचजादि ओरालिय-वेडविय- नेजा-कम्मइयसरीर-छसटाण- ओरालिय-वेडविय णो- वग छसघडण वण्ण गध-रस- फास चत्तारिआणुपुक्की अगुरुव लहुव उवघाद परघाद उस्सास आदाउजोय-ओविहायगइ तस- थादर-थाउर-सुहुम-पज्जत्त- अपज्जत्त पत्तेय साहारणसरीर धिराधिर-सुहासुह-सुभग- दुभग-सुस्सर दुस्सर आदे ज-				

सूत्र सख्या	सूत्र	पृष्ठ सूत्र सख्या	सूत्र	पृष्ठ
२८३	असादावेदणीय अरादि सोग— अथिर असुह—अजसकित्ति— णामाण को बघो को अयघो ?	३६७	२०३ उवसमसम्मादिट्टीसु पचणाणा वरणीय-चउदसणावरणीय— जसकित्ति उच्चागोद पचतराह- याण को बघो को अबघो ?	३७२
२८४	असजदसम्मादिट्टिप्पहुटि जाव पमत्तसजदा यथा । एदे यथा, अयसेसा अबघा ।	३६८	२९४ असजदसम्मादिट्टिप्पहुटि जाव सुहुमसापराइयउवसमा यथा । सुहुमसापराइयउवसमहाए चरिमममय गतूण यधो योच्छिउ ज्जदि । एदे यथा, अयसेसा अयथा ।	"
२८५	अपच्च फ़त्ताणावरणीयकोह— माण—माया-लोह मणुस्साउ- मणुमगह—आराखियसरीर— आराखियसरीरअगोउग वज्जरि सहसघटण—मणुसाणुपुन्वी— णामाण को बघो को अयघो ?	३६९	२०५ णिदा पयलण को बघो को अयघो ?	३७४
२८६	जमजदसम्मादिट्टी यथा । एदे यथा, अयसेसा अयथा ।	"	२०६ असजदसम्मादिट्टिप्पहुटि जाव अपुउउकरणउवसमा यथा । अपुउउकरणउवसमहाए सखे ज्जदिम भाग गतूण यधो योच्छिउज्जदि । एदे यथा, अय सेसा अयथा ।	"
२८७	पच्च फ़त्ताणावरणीयकोह माण माया लोभाण को यधो को अयघो ?	३७०	२०७ सादावेदणीयस्स को बघो को अयघो ?	३७५
२८८	असजदसम्मादिट्टी सजदा सजदा यथा । एदे यथा, अय सेसा अयथा ।	"	२०८ असजदसम्मादिट्टिप्पहुटि जाव उवसतन्साय वीयरागछुदुमत्था यथा । एदे यथा, अबघा णत्थि ।	"
२८९	देवाउअस्स को बघो को अयघो ?	३७१	२०९ असादावेदणीय-अरादि-सोग- अथिर-असुह-अजसकित्ति— णामाण को बघो को अयघो ?	३७६
२९०	असजदसम्मादिट्टिप्पहुटि जाव अपमत्तसजदा यथा । अप्प मत्तहाए सखेजे भागे गतूण यधो योच्छिउज्जदि । एदे यथा, अयसेसा अयथा ।	"	३०० असजदसम्मादिट्टिप्पहुटि जाव पमत्तसजदा यथा । एदे यथा, अयसेसा अबघा ।	"
२९१	आहारसरीर-आहारसरीरयो- यगणामाण को बघो को अयघो ?	३७२	३०१ अपच्च फ़त्ताणावरणीयमोहि— णाणिभगो ।	"
२९२	अपमत्तसजदा यथा । एदे यथा, अयसेसा अबघा ।	"	३०२ णवरि आउव णत्थि ।	३७७

सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
३०३	पञ्चफलाणां वरणचक्रस्म को बधो को अबधो ?	३७७	३१३ देवगद्-पंचिदियजादि-वेड- त्रिय तेजा-यम्मइयसरीर सम चउरमसटाण-वेडि-त्रयभगो- यम वण्ण मध रम फास देवाणु पु-जी-अगुरु गल्लुअ उवघाद्- परघाद् उस्साम पम-वविहाय गदि-त्तस याद्दर पज्जत्त पत्तेय- सरीर थिर सुह सुभग सुस्मर- आदेज्ज णिभिण तित्थवरणामाण को बधो को अबधो ?	३७७
३०४	असजदसम्मादिट्ठी सजदासजदा [ यथा ] । एदे यथा, अवसेसा अयथा ।	"	३१४ असजदसम्मादिट्ठीपट्टि जाव अपुव्वकरणउवसमा यथा । अपुव्वकरणउसमद्दाए सखेज्जे भागे गत्तूण यधो वोच्छिज्जदि । एदे यथा, अवसेसा अबधो ।	३७८
३०५	पुरिसोदेद कोधसजलणाण को बधो को अबधो ?	"	३१५ आहारसरीर आहारसरीरभगो यगाण को यधो को अबधो ?	"
३०६	असजदसम्मादिट्ठीपट्टि जाव अणियट्ठी उवसमा यथा । अणि यट्ठिउवसमद्दाए सेसे सेसे सखेज्जे भागे गत्तूण यधो वोच्छिज्जदि । एदे यथा, अय सेसा अबधो ।	३७८	३१६ अप्पमत्तापु-उकरणउवसमा यथा । अपु-उकरणुवसमद्दाए सखेज्जे भागे गत्तूण यधो वोच्छि ज्जदि । एदे यथा, अवसेसा अयथा ।	३८०
३०७	माण मायसजलणाण को बधो को अबधो ?	"	३१७ सासणसम्मादिट्ठी मदि अण्णाणिभगो ।	"
३०८	असजदसम्मादिट्ठीपट्टि जाव अणियट्ठी उवसमा यथा । अणि यट्ठिउवसमद्दाए सेसे सेसे सखेज्जे भागे गत्तूण यधो वोच्छिज्जदि । एदे यथा, अय सेसा अबधो ।	"	३१८ सम्मामिच्छाईट्ठी असजदभगा ।	३८३
३०९	लोभसजलणस्स को बधो को अबधो ?	"	३१९ मिच्छाईट्ठीणमभवसिद्धियभगो ।	३८६
३१०	असजदसम्मादिट्ठीपट्टि जाव अणियट्ठी उवसमा यथा । अणि यट्ठिउवसमद्दाए चरिमसमय गत्तूण यधो वोच्छिज्जदि । एदे यथा, अवसेसा अबधो ।	"	३२० सण्णियाणुवादेण सण्णीसु जाय तित्थयेरे त्ति भोधभगो ।	"
३११	हस्स रदि मय दुग्गुलाण को बधो को अबधो ?	३७९	३२१ णयदि विलेसो सादावेद् णायस्स चरग्गुदन्निभगो ।	३८७
३१२	असजदसम्मादिट्ठीपट्टि जाव अपु-उकरणउवसमा यथा । अपुव्वकरणुवसमद्दाए चरिम समय गत्तूण यधो वोच्छिज्जदि । एदे यथा, अवसेसा अबधो ।	"	३२२ असण्णीसु अभवसिद्धियभगो ।	"
		"	३२३ आहारानुवादेण आहारएसु ओघ ।	३९०
		"	३२४ अणाहारएसु कम्मइयभगो ।	३९१

## २ अवतरण-गाथा सूची

क्रम संख्या	गाथा	पृष्ठ अथवा पंक्तियाँ	क्रम संख्या	गाथा	पृष्ठ अथवा पंक्तियाँ
१६	अगुरुअल्लु उवघाद्	१७	२२	पणउण्णा इर उण्णा	२४
२४	जागमचक्खु साह	२६३ प्र सा ३ ३४	९	पण्णरस कमाया विणु	१०
१७	इत्थि णउसयनेदा	१८	१८	पचासुहसघडणा	१८
२१	उवरिल्लण्णप पुण	२४ गो क ७८८	१०	पुत्तवसेसाओ	१३
२०	चदुपन्चइगो उघो	" " ७८७	१	उधेण य सजोगो	३
१५	णाणतरायदमय	१७	३	उण्णय पुत्त वा	८
१२	णाणतरायदसण	१५	५	" " "	"
११	तित्थयय रणिरयदेवाउअ	१४	०	उघो उधविही पुण	"
२३	दस अट्टारस दसय	२८ गो क ७२२	८	मिउत्त भय दुगुल्ला	१०
६	दस चदुरिगि सत्तारस	११ " २६३	१३	सत्ताउसेदाओ	१५
७	देनाउदेवचउफ्फाहार	" "	१४	सत्तेताल धुमाओ	१६
४	पच्चयमामित्तविही	८	१९	सातरणिरनेरण य	१९

## ३ न्यायोक्तियाँ

क्रम संख्या	न्याय	पृष्ठ क्रम संख्या	न्याय	पृष्ठ
१	'जहा उहेम्मो तहा णिहेम्मो' ति जाणावणट्टमोघेणे ति उत्त ।	४	इति दो वि णए अविठविऊण द्विण्णेगमणयस्म भावाभाय उयहार विरोहाभावादो ।	६
२	'पदमि न तद् दयमतिलस्य वर्त्तत'			

## ४ ग्रन्थोल्लेख

### १ कर्मायपाहुड

कर्मायपाहुडसुत्तेणेद सुत्त विग्गज्जदि त्ति उत्ते सच्च विहज्जइ किंतु । ५६

### २ चूर्णिसूत्र

सुष्णिगसुत्तकत्ताराणमुधपसेण पचण्ण पयटीणमुदयधोच्छेदो, चदुजादि धावरारण सासणसग्गादिट्ठिम्हि उदयधोच्छेदमुपगमादो । ९

### ३ महाकर्मप्रकृतिप्राभृत

मिच्छत्त परदिय धीरदिय तीरनिय-च उरिंदियजादि-आदाय-धावर-सुद्धम-भय-अस साहारणाण दसण्ह पयटीण मिच्छाइट्टिसस चरिमसमयम्मि उदयधोच्छेदो । एसो महाकम्मपयडिपाहुडउवपसो । ९

### ४ व्याकरणसूत्र

'एए उच्च सामणा' त्ति सुत्तेण आदिवुड्डीए कयअफारसादो । ९०

### ५ सूत्र पुस्तक

अपमत्तदाए सयेज्जेसु भागसु गदेसु देवाउअस्स यधो योच्छिज्जदि त्ति केसु वि सुत्तपोत्थपसु उतरम्मइ । ६५

## ५ पारिभाषिक शब्दसूची

शब्द	पृष्ठ	शब्द	पृष्ठ
अ		अज्ञानमिध्याय	२०
अगतिसयुक्त		अतिचार	८२
अगुदलपु	८	अध्वान	८, ३१
अजसुवर्धनी	२०	अधुय	८
	३१८	अन्यतानुबन्धी	९

शब्द	पृष्ठ	शब्द	पृष्ठ
अनपित	६	अष्टस्थानिक	२०५
अनादिक	८	असम्प्रातवर्षायुष्क	११६
अनादेय	९	असन्नी	३८७
अनाहारक	३९१	असम्प्राप्तसृपाटिकासहनन	१०
अनिवृत्तिकरण	४	असयत	३१२
अनुभाग बन्ध	२	असयतसम्यग्दृष्टि	४
अनेकान्त	१४५	असयम	२, १९
अन्तर	६३	असंयम प्रत्यय	२५
अन्तरकरण	५३	असातादण्डकं	२४९, २७४
अन्तराय	१०	अस्थिर	१०
अपगतवेद	२६५, २६६		
अपर्याप्त	९	आ	
अपूर्वकरण	४	आचार्य	७०, ७३
अष्कायिक	१९२	आताप	९, २००
अप्रत्यय	८	आदेय	११
अप्रत्याख्यानावरणदण्डक	२५१, २७४	आदेश	९३
अप्रमत्तसयत	४	आनुपूर्वी	९
अभ्यसिद्धिक	३५९	आभिनियोधिक्रमानी	२८६
अभिधेय	१	आभ्यन्तर तप	८६
अभीक्षण अभीक्षणज्ञानोपयोगयुक्तता	७९, ९१	आवश्यक	८४
अयत्नकार्ति	९	आवश्यकपरिहीनता	७९, ८३
अयोगिकेधली	४	आहारक	३९०
अरति	१०	आहारककाययोगी	२०९
अरहत	८९	आहारकमिश्रकाययोगी	"
अरहतभक्ति	७९, ८९	आहारकशरीरविक	९
अचना	९०		
अर्थापत्ति	२७४	इ	
अर्धनाराचसहनन	१०	इन्द्रियामयम	६१
अर्पणामूत्र	१९०, १९९, २००		
अपित	५	उ	
अवधि	२६४	उच्चगोत्र	११
अवधिवहानी	२८६	उच्छ्वास	१०
अवधिदर्शनी	३१९	उत्तरप्रवृत्तिबन्ध	२
अव्योगादमूलमृत्तिबन्ध	२	उत्तर प्रत्यय	२०
अगुप्त	१०	उद्योत	९, २००
		उपघात	१०



शब्द	पृष्ठ	शब्द	पृष्ठ
उपशमक	२६५	क्षपक	
उपशमसम्यग्दृष्टि	३७२	क्षायिकसम्यग्दृष्टि	२६५
उपशांतकपाय	४	क्षीणकपाय	३६३
उपसहार	५७		४
ए		ग	
एक एक मूलप्रवृत्तिय ध		गतिसयुक्त	
एकस्थानदण्डक	२	गध	८
एकस्थानिक	२७८		१०
एकात्मिण्यात्प्र	२४९	च	
एकेन्द्रिय	२०	चन्द्रशानी	३१८
ऐ		चतुरिन्द्रिय	९
ऐन्द्रध्वज	९०	चारित्र्यनिनय	८०, ८१
		चूर्णिसूत्र	९
औ		ज	
औदारिककाययोगी		जीवसमास	
औदारिकमिश्रकाययोगी	२०३	जीवस्थान	४
औदारिकशरीर	२०५	जुगुप्सा	५
औदारिकशरीरगोपाय	१०	ज्ञाननिनय	१०
क		ज्ञानाचरणीय	८०
कल्पवृक्ष		ज्योतिषी	१०
कपाय	९२		१४६
कपायप्रत्यय	२, १९	त	
कापोतलेक्ष्या	२१, २५	तिर्थगायु	९
कामणकाययोगी	३२०, ३३२	तिर्थगति	
कामणशरीर	२३२	तिर्थेच	"
कालितसहनन	१०	तीर्थे	१९२
शक्ति	"	तीर्थेकर	९२
कृष्णलेक्ष्या	२	तीर्थेकरनामगोश्रकम	११, ७२, ७३
केवल	३२०	तीर्थेकरसन्तरुमिक	७६, ७८
केवलज्ञानी	२६४	तेज	३३२
केवलदशानी	२९६	तेजकायिक	२००
क्षण लयप्रतियाधनता	३१९	तेजोलेक्ष्या	१९२
	७९, ८५	तेजसशरीर	३३३
		त्रस	१०
		त्रीन्द्रिय	११

शब्द	पृष्ठ	शब्द	पृष्ठ
		निरन्तरबन्धप्रकृति	१७
दर्शनविनय	८०	निर्माण	१०
दर्शनविशुद्धता	७९	नीचगोत्र	९
दर्शनावरणणीय	१०	नील्लेश्या	३००, ३३१
दुर्भंग	०	नैगमनय	६
दुस्वर	१०		
देवगति	९		
देवायु	"	पद्मलेदया	३३३, ३४५
देशप्रती	२५५, ३११	परघात	१०
द्रव्यभूत	९१	परिहारशुद्धिसयत	३०३
द्रव्यार्थिकनय	३	परोदय	७
द्विस्थानदण्डक	२७४	पर्याप्त	११
द्विस्थानी	२४५, २७२	पर्याप	५, ६
द्विन्द्रिय	९	पर्यायार्थिकनय	३, ७८
		पचेन्द्रियजाति	११
		पचेन्द्रियतिर्यच	११२
धर्म	९२	पचेन्द्रियतिर्यचअपर्याप्त	१२७
ध्रुव	८	पचेन्द्रियतिर्यचपर्याप्त	११२
ध्रुवबन्ध	१७	पचेन्द्रियतिर्यचयोनिमती	"
ध्रुवबन्धप्रकृति	"	पुरुषवेद	१०
ध्रुवबन्धी	"	पुरुषवेददण्डक	२७५
		पृथिवीकायिक	१९२
		प्रकृतिबन्ध	२, ७
न		प्रकृतिबन्धन्युच्छेद	५
नपुसकवेद	१०	प्रकृतिसमुत्कीर्तना	७
नमसन	९२	प्रकृतिस्थानबन्ध	२
नरकगति	०	प्रचला	१०
नारकायु	"	प्रचलाप्रचला	९
नाराचसहनन	१०	प्रतिक्रमण	८३, ८४
निगोदजीव	१९२	प्रत्यक्षज्ञानी	५७
निद्रा	१०	प्रत्ययविधि	८
निद्रादण्डक	२७४	प्रत्याख्यान	८३, ८५
निद्रानिद्रा	९	प्रत्याख्यानदण्डक	२७४
निरतिचारता	८०	प्रत्याख्यानानावरण	९
निरन्तर	८	प्रत्यासासि	६
निरन्तरबन्ध	१७		

शब्द	पृष्ठ	शब्द	पृष्ठ
प्रत्येकशरीर	१०		
प्रदेशबन्ध	२	म	
प्रमत्तसयत	४	मतिभ्रमानी	२७९
प्रमोक्ष	३	मन पर्ययज्ञानी	२९५
प्रयोजन	१	मनुष्यत्रपर्षाप्त	१३०
प्रवचन	७२, ७३, ९०	मनुष्यगति	११
प्रवचनप्रभावना	७९, ९१	मनुष्यनी	१३०
प्रवचनभक्ति	७९, ९०	मनुष्यपयाप्त	"
प्रवचनवत्सलता	"	मनुष्यायु	११
प्राण्यसयम	२१	महाकर्मप्रकृतिप्राशृत	९
प्राणिकपरित्यागता	७९, ८७	महामह	९२
		महावर्ती	२५५, २५६
घ		मानदण्डक	२७५
घन्धक	२, ३, ८	मार्गणास्थान	८
घन्धन	२	मिथ्यात्व	२, ९, १९
घन्धनीय	"	मिथ्यादृष्टि	४, ३८६
घन्धनिधान	"	मूत्रप्रवृत्तिबन्ध	२
घन्धविधि	"	मूलप्रत्यय	२०
घन्धयुक्तेद्	८		
घन्धस्त्रामित्वाविचय	५	य	
घन्धाध्वान	३	यथाख्यातसयत	३०९
घहुधृत	८	यथाशक्तितप	७९, ८६
घहुधृतभक्ति	७२, ७३, ८९	यशकीर्ति	११
घादर	७९, ८९	योग	२, २०
घाह्यतप	११	योगप्रत्यय	२१
	८६		
भ		र	
भय		रति	१०
भयनशामी	१०	रस	"
भयसिद्धिक	१४६		
भग	३५८	ल	
भायधृत	१७१	लब्धि	८६
भुजगारवघ	९१	लघिसवेगसम्पन्नता	७९, ८६
	२	लेख्या	३५६
		लोभदण्डक	

शब्द	पृष्ठ	शब्द	पृष्ठ
वज्रनाराचसहनन	१०	श्रुतब्रह्मानी	२७२
वज्रनृपभनाराचसहनन	"	श्रुतकेवली	५७
वनस्पतिकायिक	१९०	श्रुतज्ञानी	२८६
चन्दना	८३, ८४, ९२		
वर्गणा	२	स	
वर्ण	१०	समता	८३, ८४
वानयन्तर	१४६	समाधि	८८
वायुकायिक	१९२	सम्बन्ध	१, २
विग्रहगति	१६०	सम्यग्दृष्टि	३६३
विनय	८०	सम्यग्मिथ्यादृष्टि	४, ३८३
विनयसम्पन्नता	७२, ८०	सयोगकेवली	४
विपरीतमिथ्यात्वं	२०	सर्वतोभद्र	९२
विभगज्ञानी	२७९	सत्यातवर्षायुष्क	११६
विरति	८२	सर्गी	३८६
विद्यायोगति	१०	सञ्चलन	१०
वेदकसम्यक्त्व	"	सयत	२९८
वेदकसम्यग्दृष्टि	३६४	सयतासयत	४, ३१०
वेदना	२	सत्वेग	८६
वेदनीय	१२	सम्यान	१०
वैश्विकिकाययोगी	२१५, २२२	सादिक	८
वैश्विकिकशरीर	९	साधारण	९
वैश्विकिकशरीरागोपान	"	साधु	८७, २६४
वैश्विकिकमिथ्यात्वं	२०	साधुसमाधि	७२, ८८
वैषामत्य	८८	सान्तर	७
वैषामत्ययोगयुक्तता	७२, ८८	सान्तर निरन्तर	८
व्यभिचार	३०८	सान्तरव्यन्धप्रवृत्ति	१७
व्युत्सर्ग	८३, ८५	सामायिकछेदोपस्थापनशुद्धिसयत	२९८
व्रत	८३	सासादनसम्यग्दृष्टि	४, ३८०
		साशयिकमिथ्यात्वं	२०
श		सुभग	११
शील	८२	सुस्वर	१०
शीलव्रतेषु निरतिचारता	७२, ८०	सूक्ष्म	९
शुक्ललेइया	३४६	सूक्ष्मसाम्परायिक	४
शुभ	१०	सूक्ष्मसाम्परायिकसयत	३०८
शोक	"	सूक्ष्म	५७

शब्द	पृष्ठ	शब्द	पृष्ठ
स्तव			
स्त्यानगृद्धि	८३, ८४	स्वप्रत्यय	८
स्त्रीषेद	९	स्वामित्व	"
स्थावर	१०	स्योदय	७
स्थितिवन्ध	९	स्योदय परोदय	"
स्थिर	२		
स्पर्श	१०		६
	"	हास्य	१०



